प्राकृत भारती पुष्प - 82

दादा गुरु भजनावली

(विविध संज्ञक, विविध भाषाओं में एवं शताधिक कवियों द्वारा रचित दादा गुरुदेवों के अद्यावधि प्राप्त 721 भजनों का अपूर्व संग्रह)

सम्पादक
महोपाध्याय विनयसागर
निदेशक,
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर.

प्रकाशक
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
कान्ति प्रकाशन, बाडमेर
जितयशाश्री फाउंडेशन, कलकत्ता.
श्रीमति उगमकुंवर सिंघवी, दिल्ली
हरखचन्द नाहटा, दिल्ली

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्रोत

देवेन्द्रराज मेहता
सचिव,
प्राकृत भारती अकादमी,
3826, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता,
जयपुर–302 003.

द्वारकादास, डोसी,
सचिव,
कान्ति प्रकाशन,
चौहटन रोड़,
बाड़मेर–344001.

प्रकाशचन्द्र दफतरी
जितयशाश्री फाउंडेशन
9–सी, एस्प्लानेड रो (इस्ट)
कलकत्ता–700069.

श्रीमति उगमकुंवर सिंघवी
ई–227, इस्ट आफ कैलाश,
नई दिल्ली–110 065

हरखचन्द नाहटा
21, आनन्द लोक, नई दिल्ली–110 049

प्रथम संस्करण : जुलाई 1993.

मूल्य · 150 रुपये 50/–

मुद्रक :
International Print-O-Pac Equipment Limited
B-204, Phase-I, Okhla Ind. Area, New Delhi-110 020.

DADA GURU BHAJANAVALI
MAHOPADHYAY VINAYASAGAR/1993

प्रकाशकीय

प्राकृत भाषा एवं जैन साहित्य के प्रौढ़ विद्वान् महोपाध्याय श्री विनयसागर जी द्वारा संकलित एवं सम्पादित "दादा गुरु भजनावली" को प्राकृत भारती के पुष्प 82 के रूप में प्रकाशित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है।

किसी भी धर्म के साहित्य में स्तुतियों, स्तवनों, भजनों तथा अन्य भक्तिपरक रचनाओं का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। ऐसी रचनाएं सहज मानवीय भावनाओं तथा गंभीर आध्यात्मिक चिन्तन के बीच की कड़ी होती हैं। इनके बिना गंभीर दार्शनिक सिद्धान्त सामाजिक जीवन में प्रभावी नहीं बन पाते ओर न ही व्यापक हो पाते। भजन उस आध्यात्मिक यात्रा का सूत्रपात है जो आत्मकल्याण की ओर जाती है। दर्शन की नीरसता में भजन रस-स्रोत का काम करते हैं।

जैन साहित्य में यह विधा बहुत पुरानी है और तीर्थंकरों को संबोधित भक्ति रचनाओं का अपार भंडार है जैन वाङ्मय में। जिन आचार्यों तथा गुरुओं को संबोधित कर भक्ति साहित्य की रचनाएं हुई हैं उनमें शीर्षस्थ हैं चार दादागुरु। जातीय तथा सांप्रदायिक संकीर्णता से ऊपर उठे अहिंसा और संयम के ये चार पुंज तब भी जैन तथा जैनेतर लोगों में उतने ही लोकप्रिय थे जितने आज हैं।

जन-मानस से जुड़ी ऐसी विभूतियों का जीवन चमत्कारों से भरा होता है। दादागुरुओं से जुड़े चमत्कार काल से बाधित नहीं रहे। आज भी दादा-भक्तों के बीच उनके चमत्कारों की अर्वाचीन घटनाएं सुनने को मिलती हैं। दादागुरुओं के प्रभाव क्षेत्र तथा लोकप्रियता का अनुमान सारे देश में फैली दादाबाड़ियों से लगाया जा सकता है। दादागुरुओं के ये सुरम्य पूजास्थल मरुभूमि में भी मिलेंगे, पर्वत शिखरों पर भी, हरे-भरे मैदानों में भी, भीड़ भरे शहरों में भी और जन-शून्य एकान्त में भी।

आध्यात्मिक उत्कर्ष और तपोबल के साथ सशक्त संगठन - क्षमता तथा वात्सल्य से ओतप्रोत ये चार आकर्षक व्यक्तित्व समस्त जैन परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए हैं। जैनों में इनके प्रति केवल श्रद्धा ही नहीं अपितु स्नेह तथा आत्मीयता की भावनाएं भी हैं। इन चारों महामनीषियों ने अपने-अपने काल में अपने-अपने संपर्क क्षेत्र को इतना व्यापक रूप से प्रभावित किया है कि जैन मतावलम्बियों की संख्यावृद्धि का श्रेय इन्हें प्राप्त हुआ। जैन समाज का जो संगठित रूप आज विद्यमान है उसके सूत्रधार ये दादागुरु ही थे।

ऐसे जनप्रिय युगप्रधान महापुरुषों की स्तुतियाँ भी उनके प्रभाव क्षेत्र के समान समय तथा स्थान के अंतराल से अबाधित, अत्यन्त विस्तीर्ण रही हैं। अनेकों छोटे-बड़े संकलन अनेकों भाषाओं में प्रकाशित हुए हैं, कुछ उपलब्ध भी हैं। किन्तु, इस स्तुति साहित्य का कोई सुनियोजित संकलन अभी तक नहीं बन पाया था। यद्यपि ऐसे संकलन की उपयोगिता तथा आवश्यकता सदा ही रही है किंतु संभवतः संख्या तथा व्यापकता के कारण ही किसी विद्वान् ने इस ओर कोई प्रयत्न करने का साहस नहीं किया।

हम आभारी हैं वयोवृद्ध मनीषी श्री भंवरलालजी नाहटा के जिन्होंने भजनों का एक आरंभिक संकलन तैयार कर म० विनयसागरजी को इस योजना को कार्यान्वित करने की प्रेरणा सहित उपलब्ध कराया।

हमें प्रसन्नता है कि प्राकृत भारती को कान्ति प्रकाशन बाडमेर, श्री जितयशाश्री फाउण्डेशन, कलकत्ता, श्रीमति उगमकुंवर सिंघवी, नई दिल्ली एवं हरखचन्द नाहटा, नई दिल्ली के सहयोग से इस महत्वपूर्ण कार्य को प्रकाशित करने का अवसर मिला है। हमें विश्वास है हमारा यह प्रयास ऐसी बिखरी तथा लुप्त होती साहित्य निधि को संरक्षित करने की ओर एक महत् चरण सिद्ध होगा।

महोपाध्याय विनयसागरजी की विद्वत्ता तथा कर्मठता अपरिचित नहीं है। पर, इस भजनावली को संकलित करने तथा सुव्यवस्थित रूप से संपादित करने में उन्हें भी 6 वर्ष लग गये। यह इस कार्य से जुड़ी कठिनाइयों का द्योतक है। उन्हें बधाई है तथा धन्यवाद भी। आशा है हमारे पाठकगण, दादा-भक्त, तथा विद्वत् समुदाय इस प्रकाशन से लाभान्वित होंगे तथा इसे सराहेंगे।

इसके प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी व्यक्तियों तथा संगठनों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करते हैं।

देवेन्द्रराज मेहता
सचिव,
प्राकृत भारती अकादमी,
जयपुर

सच्चारित्रनिष्ठ पूज्यपाद महोपाध्याय

श्री सुमतिसागरजी महाराज

के चरण कमलों में सविनय समर्पित

अग्रिम ग्राहकों की शुभ नामावली

	पुस्तक संख्या	नाम
1.	500	कान्ति प्रकाशन, बाडमेर
2.	500	जितयशाश्री फाउण्डेशन, कलकत्ता
3.	500	श्री हरखचन्दजी नाहटा, नई दिल्ली
4.	100	श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरिजी ट्रस्ट, मद्रास
5.	100	पोलाल (केसरवाड़ी) दादाबाड़ी, मद्रास
6.	100	श्री अमोलकचंदजी सिंघवी, हैदराबाद
7.	100	श्री दुलीचंदजी टांक, जयपुर
8.	11	श्री महेन्द्र सिंह जी नाहटा, कलकत्ता
9.	10	जैन श्वे0 खरतरगच्छ पेढ़ी, कोटा

सम्पादकीय

श्रमण भगवान महावीर के शासन में समय-समय पर अनेक युगप्रधान/युगप्रवर्तक आचार्य हुए हैं, जिन्होंने अपने आत्मिक ओज एवं तपोयोग के बल से जनमानस को प्रभावित किया। उन्होंने आम आदमी के अन्तःस्थल में अहिंसा को प्रतिष्ठित कर, उनका आचार और जीवन शुद्ध बनाया है। जातीय भेद से ऊपर उठकर व्यक्ति-व्यक्ति को कर्म से जैन बनने की शिक्षा दी और लक्षाधिक जैन बनाकर जैन संघ की अभिवृद्धि की। इतना ही नहीं, बल्कि इन नूतन जैनों को गोत्र व्यवस्था प्रदान कर ओसवंश-श्रीमालवंश को और अभिवर्धित किया।

दादा गुरुदेव

इन्हीं प्रभावक आचार्यो की श्रृंखला में अनेकों आचार्य युगचेतना के संवाहक हुए हैं। विगत दस शताब्दियों में जैन संघ की अभिवृद्धि करने वाले आचार्यों में चार प्रमुख आचार्य हुए हैं :— 1. युगप्रधान जिनदत्तसूरि, 2. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, 3. जिनकुशलसूरि और 4. युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि। इन चारों युग – प्रभावक आचार्यो ने लक्षाधिक नूतन जैन बनाकर जैन संघ के अभ्युदय में असाधारण योगदान किया है।

यह संयोग की बात है कि चारों ही महापुरुष आचार्य जिनेश्वरसूरि[1] द्वारा प्रवर्तित शास्त्र–सम्मत विशुद्ध श्रमण परम्परा "खरतरगच्छ"[1] में ही हुए हैं तथापि अपने अद्वितीय कार्यकलापों से शताब्दियों से समस्त श्वेताम्बर जैन समाज के ही नहीं, अपितु इतर धर्मावलबियों/अन्य जातियों के जन–मानस के भी आराध्य बने हुए हैं। इन युगद्रष्टाओं ने अपने जीवन काल में तो जैन वर्ग को समृद्ध किया ही था और आज भी ये अपने चमत्कारिक प्रभावों से सभी के प्रातः स्मरणीय पूज्य हैं। इन चारों आचार्यो को समस्त समाज ने श्रद्धाभिभूत होकर "दादागुरु" के नाम से अभिहित किया और आन्तरिक भक्ति को प्रदर्शित करते हुए पूजा-अर्चना हेतु स्थान-स्थान पर विशाल भूखण्डों पर "दादाबाड़ी" का निर्माण करवाकर उनमें चरण-मूर्तियां प्रतिष्ठित करवाई। सम्पूर्ण भारत में ये दादावाड़ियां आज आराधना-पूजास्थल बनी हुई हैं, जहां प्रतिदिन हजारों भक्त पूजन-आराधन कर, मनोवांछित प्राप्त करते हैं।

यह एक परम आश्चर्य की बात है कि भगवान् महावीर की परंपरा में एक से एक बढ़कर सहस्राधिक युगप्रधान हुए हैं तथापि जनमानस "दादागुरु" शब्द से इन चार

युगप्रधान आचार्यों को ही प्रतिष्ठा देता रहा है और "दादाबाड़ी" शब्द से इन चारों में से किसी एक अथवा समवेत को पूजास्थल मानता रहा है।

दादा गुरुदेव : कुछ उल्लेखनीय जानकारियां

इन चारों दादागुरुओं के बारे में कुछ जानकारियां उल्लेखनीय हैं :-

1. प्रथम दादागुरु जिनदत्तसूरि :- जन्म - वि. सं0 1132, धोलका। स्वर्ग. - वि. सं0 1211, अजमेर। अजमेर में इनका प्रमुख स्मारक/स्तूप बना जिसकी प्रतिष्ठा वि. सं0 1221 में मणिधारी जिनचन्द्रसूरि ने करवाई। वि. सं0 1235 में आचार्य जिनपतिसूरि के उपदेश से इस स्तूप का जीर्णोद्धार कर उसे विशाल आकार दिया गया। अनन्तर, समय-समय पर जीर्णोद्धार होते रहे। प्राचीन चरणों के घिस जाने पर नये चरण प्रतिष्ठापित हुए, जो वि. सं0 1878 में अजमेर संघ द्वारा निर्मित एवं जिनहर्षसूरि द्वारा प्रतिष्ठित हैं।[2]

2. द्वितीय दादागुरु मणिधारी जिनचन्द्रसूरि :- जन्म - वि. सं0 1197, विक्रमपुर (वीकमपुर)। स्वर्गवास - 1223 द्वि. भादवा वदि 14, योगिनीपुर - दिल्ली। इनका अन्त्येष्टि-संस्कार महरौली में किया गया था। उस समय के प्रतिष्ठापित चरण महरौली (दिल्ली) दादाबाड़ी में आज भी विद्यमान हैं।

3. तृतीय दादागुरु जिनकुशलसूरि :- जन्म - वि. सं0 1337, गढसिवाणा। स्वर्गवास वि. सं0 1389 फाल्गुन वदि 5 (परम्परागत मान्यतानुसार फाल्गुन वदि अमावस्या) देवराजपुर (देराउर)। सं0 1390 में ही दाह-संस्कार-स्थान पर रीहड गोत्रीय हरिपाल श्रावक ने विशाल स्तूप बनवाया[3] और जिनपद्मसूरि ने प्रतिष्ठा करवाई। भारत विभाजन के पश्चात् यह देरावर पाकिस्तान में चला गया। स्वर्गवास के बाद मालपुरा में आपने भक्तों को दर्शन दिये, अतः मालपुरा में निर्मित दादाबाड़ी को आपका धाम माना जाता है।

4. चौथे दादागुरु अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि :- जन्म - वि. सं0 1598, वडली गांव। स्वर्गवास - वि. सं0 1670, आश्विन वदि 2, बिलाडा। दाह-संस्कार-स्थल पर स्तूप बनवाकर चरण स्थापित किये गये। इन चरणों की प्रतिष्ठा वि. सं0 1670 मिगसर सुदि 10 के दिन जिनसिंहसूरि ने करवाई थी। यह प्राचीन स्तूप बिलाडा स्टेशन के सामने ही विशाल भूखण्ड पर अवस्थित था। बाद में वे प्राचीन चरण बिलाडा गांव की नवीन दादाबाड़ी में स्थापित किये गये। प्राचीन स्तूप का खण्डहर अब भी वहां विद्यमान है।

इन प्रमुख धामों के अतिरिक्त भायखला, बंबई, अहमदाबाद, शत्रुंजय, फलौदी, कापरडा, जैतारण, नाकोड़ा बाडमेर, जैसलमेर, बीकानेर, नाल उदरामसर, चूरू, सांगानेर, जयपुर, कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, आगरा, कानपुर, दिल्ली, सिरसा आदि 600 से अधिक स्थानों पर स्वतन्त्र दादाबाडियां विद्यमान हैं। कवि राजसोम ने मात्र तीसरे दादा जिनकुशलसूरिजी के 108 ग्रामों में चरण और स्तूप होने का उल्लेख किया है।[4] इन स्थानों के अतिरिक्त शताधिक नगरों के मंदिरों तथा उपाश्रयों में भी इन दादा गुरुओं के चरण एवं मूर्तियां स्थापित हैं।

दादा गुरुओं की संस्तुति

युगप्रधान आचार्यो एवं विशिष्ट आचार्यों के गुण–स्तवन की प्राचीन परम्परा रही है। उदाहरण के तौर पर पहले दादा जिनदत्तसूरिजी की रचना "गणधार सार्द्ध शतक" को रख सकते हैं। यह प्राकृत भाषा में है। इसमें गौतम गणधर से लेकर जिनवल्लभसूरि तक के प्रमुख-प्रमुख आचार्यो का गुणानुवाद किया गया है। समवेत रूप से पट्टावलियों में भी गुणगान प्राप्त होता है। परम्परागत आचार्यो की स्तुति ग्रन्थों की रचना प्रशस्तियों में भी प्राप्त होती है। नाम-विशिष्ट आचार्यों की गुण गाथा रास, चौपाई, गीतादि संज्ञक साहित्य में प्राप्त होती है, जो ऐतिहासिक भी हैं। यथा – जिनपतिसूरि धवलगीत (13 वीं शती), सोममूर्ति रचित जिनेश्वरसूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास (14 वीं शती), धर्मकलश रचित जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास (14 वीं शती), सारमूर्ति रचित जिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास (14 वीं शती), ज्ञानकलश रचित जिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रास एवं मेरुनन्दन रचित जिनोदयसूरि विवाहलउ (15 वीं शती) आदि।

प्रस्तुत पुस्तक केवल चार दादागुरुओं से ही संबंधित है, अतः इनसे संबंधित गुण–गाथाओं पर ही विचार करना अभीष्ट है। ग्रन्थगत प्रशस्तियों में वर्णित गुणवर्णनाम्मक पद्यों के अतिरिक्त स्वतन्त्र रूप से इन आचार्यों से संबंधित स्तोत्र, अष्टक, स्तुति, गीत, स्तवन, भास, घग्घर निसाणी आदि संज्ञक रचनाएं विपुल मात्रा में प्राप्त होती हैं। कुछ कृतियां तो ऐसी भी प्राप्त हैं जो उनके जीवन काल में ही निर्मित हो चुकी थी। जैसे : पल्ह कवि कृत जिनदत्तसूरि स्तुति, (ज्ञातव्य है कि जिनदत्तसूरिजी को आचार्य पद वि. सं0 1169 में प्राप्त हुआ था और इस स्तुति की प्रति 1170 की लिखित प्राप्त है),[5] धर्मकलश रचित जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास (1377, आचार्य पदारोहण के समय)। ऐसे ही युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि से संबंधित तो तत्कालीन अनेक कवियों की रचनायें प्राप्त होती

हैं। इनमें से मुख्य कवि हैं :– महोपाध्याय साधुकीर्ति, कनकसोम, महोपाध्याय जयसोम, महोपाध्याय समयसुन्दर, उपाध्याय गुणविनय, उपाध्याय समयनिधान, उपाध्याय समयराज, उपाध्याय सूरचन्द्र, लब्धिकल्लोल आदि।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन दादागुरुओं से संबंधित स्तवन-गीतादि प्रचुर साहित्य का निर्माण हुआ होगा, किंतु आज 12 वीं शती से 16 वीं शती के मध्य की केवल दो ही कृतियां प्राप्त हैं :– 1. पल्ह कवि की जिनदत्तसूरि स्तुति और 1481 में जयसागरोपाध्याय रचित जिनकुशलसूरि चतुःसप्ततिका। अन्य कृतियों की खोज अभी जारी है।

17 वीं शती से लेकर वर्तमान समय तक में तो इन गुरुओं से संबंधित गुणवर्णनात्मक गीत-स्तवनादि की परम्परा अजस्र रूप से प्रवहमान दृष्टिगत होती है, जो इन दादागुरुओं के प्रति अगाध श्रद्धा को अभिव्यक्त करती है। शताब्दी क्रम से इस संग्रह में संग्रहीत प्रमुख कवियों के नाम अकारानुक्रम से इस प्रकार हैं :–

17 वीं शती :– उदयरत्न, कनककीर्ति, कनकसोम, कुशललाभ, उपाध्याय गुणविनय, उपाध्याय जयसोम, जिनरंगसूरि, जिनराजसूरि, पुण्यसागरोपाध्याय, पद्ममराज गणि, भुवनकीर्ति, महिमराज गणि, महिमामेरु, उपाध्याय रत्ननिधान, रत्नसुन्दर, लब्धिकल्लोल, विनयमेरु, समयप्रमोद, महोपाध्याय समयसुंदर, सहजहर्ष, उपाध्याय समयराज, उपाध्याय सूरचन्द्र, महोपाध्याय साधुकीर्ति, सुमतिकल्लोल, श्रीसुन्दर, वादी हर्षनन्दन आदि।

18 वीं शती – उदयचन्द्र, उदयहर्ष, कमलहर्ष, कुशलक्षेम, कुशलधीर, क्षमानन्दन, क्षमारत्न, क्षेमहर्ष, गुणवर्धन गणि, जिनोदयसूरि, जिनभक्तिसूरि, जिनलाभसूरि, जिनहर्ष गणि, ज्ञानहर्ष, ज्ञानतिलक, दयाभक्ति, धर्मचन्द, उपाध्याय धर्मवर्धन, मानसागर, रंगविनय, राजसागर, राजहर्ष, रामचन्द्र गणि, महोपाध्याय रामविजय, उपाध्याय लक्ष्मीकल्लोल, लालचन्द, समर्थ मुनि, सुमतिरंग, सोमसुंदर आदि।

19 वीं शती – अगरचन्द, अमरसिन्धुर, आनन्दचंद, आलमचंद, कल्याणविजय, कुशलां, उपाध्याय क्षमाकल्याण, खुशालचन्द, गुणकमल, चारित्रसुन्दर, जयकीर्ति, जयचंद, जयरंग, जिनचन्द्रसूरि, जिनपद्मसूरि, जिनमहेन्द्रसूरि, जिनसौभाग्यसूरि, जिनहर्षसूरि, ज्ञानसार, दयामेरु, दयामंदिर, दुरंग, गणि पुण्यशील, प्रीतिसुन्दर, गणि बालचन्द्र, महिमाभक्ति, महिमाशील, मेरुकुशल, रुघपति, लाभोदय, वसता मुनि, विद्याहेम, विद्याविशाल, विनयहर्ष, उपाध्याय शिवचन्द्र, सत्यरत्न, हर्षविशाल आदि।

20 वीं शती – क्षेमसागर, जिनआनन्दसागरसूरि, जिनकवीन्द्रसागरसूरि, जिनकृपाचन्द्रसूरि, जिनधरणीन्द्रसूरि, जिनहरिसागरसूरि, दौलत, प्रवर्तिनी प्रमोदश्री, महेन्द्रसागर, मुक्तिमोहन, महोपाध्याय ऋद्धिसार, (रामलाल गणि), यति सूर्यमल्ल आदि।

21 वीं शती – गुलाब, महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर, चन्द्रयशाश्री, जिनकान्तिसागरसूरि, जिनविजयसेनसूरि, तिलकश्री, प्यारे, भद्रमुनि, भंवरीबाई, मंजुलाश्री, मदनश्री, गणि मणिप्रभसागर, गणि महिमाप्रभसागर, मनोहर, मेघराज नाहटा, लख्मीचंद भंसाली, प्रवर्तिनी विचक्षणश्री, विजय, महोपाध्याय विनयसागर, विनीताश्री, शशिप्रभाश्री, प्रवर्तिनी सज्जनश्री, श्रीगोपाल, सौभाग्यचन्द्र नाहटा आदि।

इस संग्रह में निम्नांकित कवियों की रचनाओं का संकलन भी है, जिनका समय निर्धारण करना संभव नहीं है। यथा – अभय, अमृत, आनन्द, कविराज, कानसुन्दर, क्षेमरत्न, खेत, चारित्र, धर्ममाणिक्य, पदम, मगन, मोहनमुनि, मुनि विमल, राजिंद्र, राजेश, रूपचन्द, लब्धिशेखर, साधुवर्धन, सोहगसुन्दर, सुगुण, हर्ष, हर्षचन्द आदि।

संकलन का शुभारम्भ

लगभग 6 वर्ष पूर्व मैं पर्युषण पर्व पर जैन भवन, कलकत्ता में व्याख्यान देने गया था। एक दिन वार्तालाप के दौरान विद्वद्वर्य श्री भंवरलालजी नाहटा ने कहा "दादा गुरुदेवों के स्तोत्र-भजनों का कोई व्यवस्थित एवं संपादित संस्करण अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। आपको इसका संपादन अवश्य करना चाहिए। मैंने और काकाजी (स्व० श्री अगरचन्दजी नाहटा) ने जो संग्रह कर रखा है, उसे आप ले जाये और इस कार्य को अवश्य ही संपादित करें।" मैंने उनकी भावना को स्वीकार किया और उन से पाण्डुलिपि ले आया। जयपुर आने के पश्चात् दादा गुरुओं के भजनों से संबंधित अद्यावधि मुद्रित/अमुद्रित सामग्री एकत्रित की। हस्तलिखित सामग्री को बटोरना/संजोना कठिन काम था, पर प्रयास से सफलता अर्जित हुई। जिस सामग्री के आधार पर मैंने संकलन प्रारंभ किया वे हैं :–

1. स्वर्गीय पंडित भगवानदासजी जैन, जयपुर के संग्रहस्थ प्रति, पत्र 22, लेखन संवत 1878। इस प्रति में लगभग 125 भजनों का संग्रह है।

2. श्री अगरचन्दजी भंवरलालजी नाहटा द्वारा संकलित भजनों की पाण्डुलिपि जिसमें लगभग 150 भजन संकलित हैं।

3. श्री गुरुगुणरत्नावली : प्रणेता उपाध्याय रामलालजी गणि, प्रकाशक :– विद्याशाला, बीकानेर, विक्रम संवत 1977।

4. दादा साहेब के प्राचीन स्तोत्र-स्तवन संग्रह, प्रकाशक : उपाध्याय सुखसागरजी के उपदेश से जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार, सूरत। इसमें 160 भजनों का संग्रह है।

5. गुरुगुण मौक्तिक माला – संग्राहिका : प्रवर्तिनी प्रमोदश्रीजी, प्रकाशक :– विमल प्रमोद ज्ञान भंडार, फलौदी, विक्रम संवत 2020। इसमें 324 भजनों का संग्रह है।

6. दादा गुरु स्तवनावली – जयपुर से प्रकाशित विक्रम संवत 2037।

7. दादा भक्ति सुधा – संग्राहिका :– भंवरीबाई रामपुरिया, प्रकाशक :– पुण्य सुवर्ण ज्ञानपीठ, जयपुर।

8. विचक्षण कल्प मंजरी – संपादिका :– तिलकश्री, प्रकाशक :– खरतरगच्छ जैन संघ, बंबई, विक्रम संवत 2040 में प्रकाशित।

9. विचक्षण गीतांजली – संग्राहिका :– संयमपूर्णाश्री, विक्रम संवत 2041 में प्रकाशित।

10. दादा भक्ति माला –संपादिका – साध्वी लक्ष्यपूर्णाश्री, दिल्ली से प्रकाशित।

11. गुरु पुष्पांजलि – जैनपरिषद् बीकानेर से प्रकाशित विक्रम संवत 2037।

12. समयसुन्दर ग्रन्थावली – सम्पादकः अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, वि. सं. 2013 में प्रकाशित

13. जिनराजसूरि ग्रन्थावली – सम्पादकः अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, वि. सं. 2017 में प्रकाशित

14. धर्मवर्धन ग्रन्थावली – सम्पादकः अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, वि. सं. 2017 में प्रकाशित

15. जिनहर्ष ग्रन्थावली – सम्पादकः अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, वि. सं. 2018 में प्रकाशित

16. बंबई चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवनादि पद संग्रह – सं. अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, वि. सं. 2014 में प्रकाशित

17. ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह–संपादक : अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, प्रकाशक : अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर।

18. रत्नसागर आदि।

इन पुस्तकों के आधार पर मैं चयन और संकलन करता गया। इस प्रकार प्रारंभ से लेकर अद्यावधि गुरुभक्तों द्वारा रचित 700 से अधिक भजनों का संकलन हो गया। इस चयनित सामग्री को व्यवस्थित और संपादित करने के पूर्व ही मैं दुविधा में फंस गया।

दुविधा थी कि इस विशाल संग्रह को प्रकाशित कौन करेगा? इसी पशोपेश में आगे का कार्य अवरुद्ध सा हो गया। संयोग से प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के माननीय सचिव श्री देवेन्द्रराज मेहता से इसके प्रकाशन के संबंध में चर्चा हुई। श्री मेहताजी ने इस कार्य को सराहा और प्राकृत भारती अकादमी की प्रबंध समिति द्वारा प्रकाशन योजना में स्वीकृत करवाकर मुझे प्रोत्साहित किया कि इस कार्य को आप शीघ्र ही पूर्ण करिये। बाद में श्री कान्ति प्रकाशन, बाड़मेर एवं श्री जितयशाश्री फाउंडेशन, कलकत्ता ने भी इस ग्रन्थ के सहप्रकाशक के रूप में स्वीकृति प्रदान कर दी।

सम्पादन शैली

इस संग्रह में प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी और गुजराती भाषाओं में रचित सात सौ से अधिक भजनों का संकलन है, जो छः खण्डों में प्रस्तुत है। प्रथम खण्ड में युगप्रधान दादा जिनदत्तसूरि, द्वितीय खण्ड में मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, तृतीय खण्ड में जिनकुशलसूरि और चतुर्थ खण्ड में युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि से संबंधित कृतियों का चयन है। पंचम खण्ड भजन विविधा के नाम से रखा है। इसमें प्रारंभ में दो दादागुरुओं, तीन दादागुरुओं और चार दादागुरुओं के नाम से संबधित कृतियों को रखा है। अनन्तर नाम-संकेत से रहित दादा गुरुदेवों के भजनों का संकलन है। छठे खण्ड में महोपाध्याय ऋद्धिसार रचित दादा गुरुदेव की पूजा और जिनचन्द्रसूरि रचित अष्टप्रकारी पूजा दी गई है।

मैंने प्रत्येक खण्ड में कृति, कर्ता और आदि पद में अकारानुक्रम से चयन करने का पूर्ण प्रयत्न किया है। जैसे :– कृति नामों में स्तुति, स्तोत्र, अष्टक, छन्द, छप्पय, लावणी, सवैया, स्तवन और अन्त में आरती संज्ञक कृतियां एक साथ दी हैं, वैसे ही तत्संज्ञक कृतियों के रचनाकारों के नाम भी अकारानुक्रम से दिये हैं। इसी प्रकार एक रचनाकार के अनेक भजन हैं तो उनको भी अकारानुक्रम से दिये हैं। फोटोटाइप कम्पोजिंग का कार्य प्रारंभ होने के पश्चात् भी कुछ स्फुट कृतियां प्राप्त होती रही, जिन्हें मैंने कम्पोजिंग की सुविधानुसार स्थान दिया है। प्रूफ संशोधन में यद्यपि सावधानी बरती गई है, फिर भी दृष्टिदोष के कारण अशुद्धियां रह सकती हैं।

अन्त में परिशिष्ट के रूप में भक्त पाठकों की सुविधा के लिये भजन के आदि पदों का भी अकारानुक्रम दिया है।

आभार - ज्ञापन

इस प्रकाशन के लिये प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के पदाधिकारी एवं सदस्यगण, विशेषकर श्री देवेन्द्रराज मेहता, सचिव तथा कान्ति प्रकाशन, बाडमेर एवं जितयशाश्री फाउंडेशन कलकत्ता के मान्य न्यासियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं, जिनके सहयोग से यह पुस्तक पाठकों के कर-कमलों में पहुंच रही है।

जैन जगत के उद्भट मनीषी, भाषा एवं कलाविद श्री भंवरलालजी नाहटा का मैं ऋणी हूं, जिन्होंने मुझे इस कार्य में अथ से इति तक पूर्णरूपेण प्रत्येक प्रकार से सहयोग दिया है। महोपाध्याय ललितप्रभसागरजी का भी मैं आभारी हूं, जिन्होंने इस पुस्तक को सजाने, संवारने और प्रकाशन में सप्रेम सहकार दिया है। महोपाध्याय श्री चन्द्रप्रभसागरजी का मैं हृदय से कृतज्ञ हूं जिन्होंने मेरे अनुरोध को स्वीकार कर इस पुस्तक की भूमिका लिखी। प्रस्तुत पुस्तक में जिन-जिन पुस्तकों से भजनादि का चयन किया गया है, उन सबके लेखक, संपादक एवं प्रकाशकों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

प्रस्तुत पुस्तक के संकलन एवं टंकण कार्य में आयुष्मान पुत्र मंजुल जैन ने तत्परता के साथ सहयोग दिया है, वह साधुवाद का पात्र है।

अन्त में परमा ाध्य सच्चारित्रनिष्ठ पूज्य गुरुदेव स्व. श्री जिनमणिसागरसूरिजी म० का कृतज्ञ हूं, जिनके शुभाशीर्वाद ने दीप बनकर मेरे सम्पादन-कार्य का मार्ग प्रशस्त किया।

ग्रन्थ समर्पित है दादा गुरुदेवों को, उन भक्त हृदयों को, जिन्हें यह ग्रन्थ पाकर प्रसन्नता होगी।

महोपाध्याय विनयसागर

1. जिनेश्वरसूरि और खरतरगच्छ के संबंध में विस्तृत जानकारी द्रष्टव्य है :- म० विनयसागर लिखित "वल्लभ-भारती" और म० चन्द्रप्रभसागर लिखित "खरतरगच्छ का आदिकालीन इतिहास"।
2. देखिये :- म० विनयसागर : प्रतिष्ठा लेख संग्रह, भाग-2 लेखांक 447.
3. म० विनयसागर खरतरगच्छ का इतिहास पृष्ठ 171.
4. द्रष्टव्य : 108 नाम गर्भित जिनकुशलसूरि स्तवन, दादा गुरु भजनावली, पृष्ठ 170.
5. जैसलमेर ज्ञान भंडार।

भूमिका

भारत संसार के सम्पूर्ण अध्यात्म–जगत् का हृदय–स्थल है। यह केवल भूगोल या इतिहास का अंग ही नहीं है, कुछ विशिष्ट ऊर्जा–तरंगों से स्पन्दित भी है। वैदिक परम्परा के अनुसार परमात्मा के चौबीसों अवतार इसी देश की पुण्य–भूमि पर हुए। जैनों के चोवीस तीर्थंकरों ने भी इसी भारत में सत्य की खोज पूरी की थी। बौद्ध–मान्यतानुसार बुद्ध का बोधिसत्वों के रूप में इसी आर्यावर्त में आगमन हुआ था। सचमुच, भारत का सम्पूर्ण अतीत अध्यात्म की ही उर्वर भूमि का इतिहास है।

जेन धर्म की अध्यात्म–सहिता का प्रतिनिधित्व करते हैं तीर्थंकर। तीर्थंकर और सिद्ध – एक ही साध्य–सिद्ध के दो अलग–अलग सम्बोधन हैं। सिद्ध आत्म–विकास की आखिरी पहुँच है। तीर्थंकर सिद्धत्व की आभा से तो अभिषिक्त होते ही हैं, वे मानवता के सद्य-जात मसीहा भी होते हैं।

वर्तमान युग में "शलाका–पुरुषों" को परम्परा में चोबीस तीर्थंकर हो चुके हैं। प्रत्येक तीर्थंकर स्वतन्त्र हुआ करते हैं। तीर्थंकर चौबीस ही होते हों, ऐसा कोई अनुबन्ध नहीं है। कालचक्र की अबाध गति में पता नहीं, अब तक कितने तीर्थंकर हो चुके हैं ओर कितने होंगे। सम्भावनाओं से साक्षात्कार भले ही हम न कर पायें, पर उनको अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

तीर्थंकरत्व न किसी का अनुदान है और न किसी का अनुग्रह। यह आत्म–समीकरण, आत्म–विशोधन और विश्व–वात्सल्य का अनुष्ठान है। गोया एक तीर्थंकर के बाद दूसरा तीर्थंकर होता है, परन्तु कोई भी तीर्थंकर अपने पूर्ववर्ती तीर्थंकर से पारम्परिक अनुदान प्राप्त नहीं करता। समय के अन्तराल के कारण यह भले ही कह लें कि पहले तीर्थंकर ऋषभदेव और अन्तिम तीर्थंकर वर्धमान, किन्तु इनमें कोई भी दो नम्बर नहीं होते। सब एक ही नम्बर के तीर्थंकर होते हैं। सभी ज्येष्ठ होते हैं और सभी श्रेष्ठ। एक तीर्थंकर के बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे – इस प्रकार हर युग–युगान्तर में तीर्थंकर प्रकट होते रहे और जैनधर्म के अस्तित्व को शाश्वत धर्म की अभिव्यक्ति देते रहे।

वर्तमान युग के अन्तिम तीर्थंकर महावीर थे। जैन धर्म की वर्तमान व्यवस्था के निर्देशक महावीर ही रहे। महावीर के बाद विगत पच्चीस सौ वर्षो में कोई भी तीर्थंकर नहीं हुआ। महावीर की परम्परा को संरक्षण एवं विस्तार देने का काम उनके धर्मसंघ एवं संघ के नेतृत्व करने वाले आचार्यो ने किया। आचार्य वास्तव में भगवान् महावीर की धर्म–परम्परा के परम संरक्षक एवं अमृत संवाहक हैं।

भगवान् महावीर के उत्तरवर्ती काल में, प्रभावापन्न आचार्यों की एक लम्बी श्रृंखला रही है। यद्यपि यह सच है कि प्रत्येक आचार्य युग–पुरुष नहीं होते, फिर भी हर शताब्दी में ऐसे आचार्य होते रहे हैं, जिन्होंने अपने आत्म–बल, श्रुत–बल, मन्त्र–बल और चरित्र–बल से मानवता की प्रतिष्ठा और शासन की प्रभावना बढ़ाई।

भगवान् महावीर के अस्तित्व–काल में नौ गण और ग्यारह गणधर थे। गण और गणधरों की यह अनेकता वास्तव में व्यवस्था–संचालन के लिए किया गया संविभाग मात्र था। सबके नियम तो एक ही थे। यद्यपि परवर्ती काल में गण भी बंटे, सामुदायिक भेद भी बढ़ा, तथापि गण की परम्परा कायम रखने के प्रयत्न बने रहे। जैनत्व की सामयिक अस्मिता उन्हीं प्रयत्नों की बदौलत सुरक्षित है।

जैन आचार्यों की स्वर्ण–परम्परा में विगत पच्चीस सौ वर्षों में अनेक प्रभावशाली, सृजन–मेधा–सम्पन्न एवं अध्यात्म–अनुपेक्षी आचार्य हुए हैं। आचार्य–परम्परा का शुभारम्भ सुधर्मा से स्वीकृत है। यद्यपि भगवान् महावीर के प्रथम शिष्य इन्द्रभूति गौतम थे, परन्तु संघ–व्यवस्था का दायित्व सुधर्मा को प्रदान किया गया था। इसीलिए सुधर्मा से ही आचार्य–परम्परा का सूत्रपात माना जाता है।

सुधर्मा स्वामी के बाद अब तक अनेक प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं, जिनमें जम्बू, शय्यम्भव, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, कालक, वज्रस्वामी, पुष्पदन्त, उमास्वाति, कुन्दकुन्द, देवर्द्धिगणी, सिद्धसेन, समन्तभद्र, जिनभद्र, मानतुंग, हरिभद्र, अभयदेव, जिनदत्त, हेमचन्द्र, जिनचन्द्र, मल्लिषेण, जिनकुशल, हीरविजय, राजेन्द्रविजय, कृपाचन्द्र आदि के नाम विशेष चर्चित एवं प्रतिष्ठित हुए है।

प्रस्तुत सम्पादन में जिन चार महाप्रभावी आचार्यों का स्तवन–समाकलन हुआ है, वे जैनधर्म की एक विशेष परम्परा के प्रतिनिधि हैं। वह परम्परा है– खरतरगच्छ। गच्छ का अर्थ होता है धर्म के पारम्परिक स्वरूप तक ले जाने वाला। "खरतर" शब्द अपने–आप में बड़ा विशद, सूक्ष्म और गरिमापूर्ण अर्थ लिए है। "खर" का अर्थ तीव्र, तेजोमय, गतिमय, शक्तिमय है। संस्कृत का "तरप्" प्रत्यय, जिसका "तर" अवशिष्ट रहता है, "खर" के आगे जुड़कर उसकी तीव्रता, गतिमयता, शक्तिमत्ता को और बढ़ा देता है। बड़ा प्रेरणाप्रद है यह शब्द, जिसने युग–युग तक धर्मानुप्राणित समाज को स्फूर्ति प्रदान की।

खरतरगच्छ को अस्तित्व में आये करीब हजार वर्ष होने जा रहे हैं। ज्ञान और क्रिया के सम्मेलन, उद्भावन और अभ्युदय के लिए ही खरतरगच्छ अस्तित्व में आया। वास्तव में खरतरगच्छ एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है, जैन धर्म का सुधारवादी आम्नाय है, जिसने विपथगामी धर्म के रथ को सन्मार्ग पर लाने का अप्रतिम पुरुषार्थ किया। इसका क्रान्तिकारी

अभियान विक्रम की ग्यारहवीं शदी से लेकर ठेठ अठारहवीं शदी तक चला। खरतरगच्छ ने जो क्रान्तियां कीं, वैसी और कम हुई। जबकि ऐसे क्रान्तिकारी अभियान तो हर युग मे होने चाहिए। वैयक्तिक जीवन मे तो "क्रियोद्धार" की सम्भावनाएं निरन्तर पूरी होती रही हैं, पर जरुरत है समाज के आम जीवन के उद्धार की। खरतरगच्छ ने जो कायाकल्प किया, उसकी पुनरावृत्ति की आवश्यकता पुन. लग रही है।

खरतरगच्छ की आध्यात्मिक क्रान्ति के सूत्रधार बने–महामहिम आचार्य जिनेश्वरसूरि। वह ऐतिहासिक प्रसंग, जहाँ अणहिलपुर पत्तन मे वहाँ के राजा दुर्लभराज और सम्भ्रान्त जनों की सन्निधि मे चैत्यवासियों के साथ आचार–परीक्षण, जीवन–परीक्षण, चर्यानुशीलन आदि के सन्दर्भ मे न केवल विचार–मन्थन हुआ, अपितु साक्षात् पर्यावलोकन भी हुआ। वहाँ सबको उनके विद्या–जीवितव्य और चरित्र–जीवितव्य की सच्चाई ने भी प्रभावित किया। ऐतिहासिकों के अनुसार राजा द्वारा आचार्यवर के लिए अभिहित "खरतर" शब्द उनके जीवन की वैचारिक और कार्मिक पवित्रता का संवाहक बन गया, जो उनके आध्यात्मिक शक्ति–पुंज पर टिकी थी। व्याकरण द्वारा प्रस्तुत अर्थ ने सहज ही अपनी संगति साध ली।

वास्तव मे खरतरगच्छ जैन–परम्परा का वह ज्योतिर्मय आम्नाय है, जिसने जिनेश्वरसूरि, अभयदेवसूरि, जिनवल्लभसूरि, जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि, अकबर–प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि, महोपाध्याय समयसुन्दर, योगीराज आनन्दघन, उपाध्याय देवचन्द्र जैसे प्रखर प्रज्ञा एवं गहन साधना के धनी सृजनशील महापुरुषों को जन्म दिया, जिन्होंने न केवल जैन–परम्परा को वरन् भारतीय चिन्तनधारा और जीवन–धारा को एक नया आलोक दिया, पथ–दर्शन दिया। साध्वीवर्ग मे प्रवर्तिनी विचक्षणश्री जैसी महिमामण्डित समत्व–साध्वी और गृहस्थों मे करमचन्द बच्छावत जैसे योद्धा एवं मन्त्री, मोतीशाह सेठ जैसे दानवीर और अगरचन्द नाहटा जैसे राष्ट्रीय स्तर के साहित्य-सेवी इसी गच्छ की देन हैं। सचमुच, वे सब भारतीय इतिहास के शाश्वत प्रकाश-स्तम्भ बन गये। खरतरगच्छीय इतिहास के ये ही तो आधार बीज हैं, जिनके बल पर खरतरगच्छ का बहुशाखी वटवृक्ष खूब फला-फूला। जिसकी सघन छाया में लक्ष-लक्ष कोटि धर्म-प्राण नर-नारियों ने विश्रान्ति की, आत्म-शान्ति की अनुभूति की।

खरतरगच्छ में चार महापुरुष ऐसे हुए हैं, जिनकी "दादा गुरुदेव" के नाम से पूजा-अर्चना होती है। "दादा-गुरुदेव" के मायने हैं गुरुओं-के-पितामह। ये युग-पुरुष/अमृत पुरुष, जो गुरुओं के गुरु हैं, आचार्यों-के-आचार्य-आराध्य हैं, वे दादा गुरुदेव हैं। लोक-मानस में इनके प्रति इतनी श्रद्धा है कि संसार के सम्राटों का इतिहास भुला दिया जाएगा, पर दादा गुरुदेव लोक-मानस में अमर रहेंगे।

दुनिया में प्रतिदिन हजारों जन्म लेते हैं। कुछ इतिहास में अपना नाम लिखा जाते हैं, कुछ बेनाम ही मर जाते हैं। मगर कभी-कभी ऐसे अमृत-पुरुष भी जन्म लेते हैं, जो अपना नाम, अपनी याद, तारीख में नहीं, लोगों के दिलों में अंकित कर जाते हैं। दादा गुरुदेव चार हैं – महामहिम आचार्य जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि, अकबर-प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि। ये चार गुरुदेव वास्तव में जैनों की प्रार्थना के "चतुर्याम" हैं। इनकी जीवनी अहिंसा, प्रेम, शान्ति और प्रगति की कहानी है। इसलिए इन महापुरुषों को लोगों ने ही प्यार और श्रद्धा से नाम दिया–दादा गुरुदेव।

दादा गुरुदेवों का राजाओं और प्रजाजनों – सबको धार्मिक उपदेश देने की दृष्टि से, सामुदायिक रूप में, जातीय रूप में, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक ज्योति जगाने की दृष्टि से जो अकथनीय/अप्रतिम योगदान रहा है, उसे कभी नहीं भुलाया जा सकता। आज ऐसे हजारों-लाखों लोग हैं, जिनके रोम-रोम में दादा गुरुदेवों के प्रति श्रद्धा और आस्था बसी है। आज धार्मिक मर्यादाओं में जहां एक व्यक्ति को दीक्षित कर पाना दुष्कर प्रतीत होता है, वहां जरा कल्पना कीजिये, कितनी प्रभावकता इन महापुरुषों में थी कि उन्होंने लाखों-के-लाखों व्यक्तियों को जैनत्व की अस्मिता प्रदान की। कितनी उदारता थी उनकी। जिनको भी उन्होंने जैनत्व में प्रवर्तित किया, वहां उन्हें समग्र जैनत्व से जोड़ा है, न कि मात्र अपने गच्छ से। आज संसार में जहां भी जैन रहते हैं, दादा गुरुओं की पूजा-आराधना करते हैं। खरतरगच्छ के अनुयायियों की तो वर्तमान संख्या लाख के करीब होगी, पर दादा गुरुदेव के पुजारियों की संख्या कई लाख है। उनके नाम पर देश में सैकड़ों मन्दिर, स्मारक, स्मृति–स्तम्भ, चरण-पादुकाएं प्रतिष्ठित हैं। हजारों स्तोत्र पाठ/स्तवन बने हुए हैं। सचमुच, तीर्थंकरों के बाद लोक-मानस से जितने दादा गुरुदेव जुड़े हैं, उतना और कोई जैनाचार्य नहीं।

आचार्य जिनदत्तसूरि (वि. स. 1132 से 1211) प्रतिभा, प्रसिद्धि एवं कार्यकलाप की दृष्टि से अद्वितीय आचार्य हुए हैं। उसी युग में हेमचन्द्राचार्य, वादिदेवसूरि, मलयगिरि, कवि-चक्रवर्ती श्रीपाल जैसे महाप्रतिभावान व्यक्ति हुए, किन्तु जिनदत्तसूरि को जितनी जनप्रतिष्ठा प्राप्त हुई, उतनी सम्भवतः अन्य किसी को प्राप्त नहीं हो पायी थी। जैन संघ के पुनर्वर्धन एवं पुनरुद्धार हेतु जिनदत्तसूरि का श्रम अनुपमेय रहा।

जैन समाज में "बड़े दादा" के नाम से विश्रुत युगप्रधान आचार्य जिनदत्तसूरि ने जैनधर्म के व्यापक विस्तार की दृष्टि से बहुत बड़ा कार्य किया। लाखों अजैनों को जैन धर्म में प्रवृत्त किया। उन्होंने अपने त्याग-तपोमय आदर्शों और उपदेशों से लाखों क्षत्रियों को प्रभावित किया। ओसवाल जाति जो आज लाखों की संख्या में है, उसी क्षत्रिय परम्परा की आनुवंशिकता लिए हुए है।

आचार्य जिनदत्तसूरि ऐसे राष्ट्र सन्त हुए, जिन्होंने आम जनता के दु:ख-दर्दो को गहराई से समझा और उसे दूर करने के लिए भरसक कोशिश की। जनता ने आचार्य की आत्मा में स्वयं की आत्मा का दर्शन किया और उन्हें "जन-उद्धारक" एवं "जन-मसीहा" के रूप में स्वीकार किया। आचार्य ने मानवता को जो सम्मान दिया, उसे सच्चाई की राह से जोड़ने का जो प्रयास किया, क्या उसे कभी भुलाया जा सकता है? हजारों-लाखों लोग उस आचार्य की पगडण्डी पर चले और उन्होंने जैनत्व के मानवीय धर्म को अपने व्यावहारिक जीवन में बड़े गर्व के साथ अपनाया। न केवल उन्होंने अपनाया, वरन् उनकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी भी इस धर्म की अनुयायी बनी रही है। आज भी ऐसे लाखों जैन हैं, जिन्हें जैनत्व "बड़े दादा" के कारण ही पैतृक-सम्पत्ति के रूप में मिला हुआ है। जैनत्व के विस्तार के लिए आचार्य जिनदत्तसूरि युग-युग तक धर्मसंघ के आदर्श रहेंगे।

आचार्य जिनदत्तसूरि की नई सूझबूझ ने धर्म विस्तार के लिए नये आयाम खोले। जैनीकरण का महत्वपूर्ण कार्य उनके जीवन की अभूतपूर्व देन है। यदि आचार्य जिनदत्तसूरि की इस प्रवृत्ति का अनुकरण सम्पूर्ण जैन समाज कर पाता, तो जैनों की संख्या सम्भवतः कई करोड़ों तक पहुंच जाती।

आचार्य जिनदत्तसूरि के सम्बन्ध में एक तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो उनकी महनीयता पर सर्वोपरि प्रकाश डालता है, वह है युगप्रधान-पदारोहण। घटना है, नागदेव नामक श्रावक के मन में यह जिज्ञासा हुई कि इस समय युगप्रधान आचार्य कौन है? उसने समाधान पाने के लिए देवी अम्बिका का ध्यान-स्मरण किया। देवी ने उसके करतल में एक पद्य लिखा और कहा कि जो व्यक्ति इसको प्रगट कर दे, वही युगप्रधान है। वह आलेखन नागदेव के लिए तो अपाठ्य था, अदृश्य था। नागदेव ने अनेक आचार्यों को अपना करतल दिखाया, किन्तु अन्ततः मात्र एक ही आचार्य उस पर "वासक्षेप" (अभिमन्त्रित चन्दन चूर्ण) देकर प्रगट कर सके और वे थे आचार्य जिनदत्तसूरि। प्राप्त सन्दर्भों के अनुसार नागदेव के करतल में निम्नांकित श्लोक अंकित था –

दासानुदासा इव सर्व देवा, यदीय पादाब्ज-तले लुठन्ति।
मरुस्थली कल्पतरुः स जीयात् युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः।।

– वृद्धाचार्य प्रबन्धावली (5)

भावानुवाद–

सर्व देव हैं दास जिन्हों के, चरणों में सौभाग्य लुटाते।
मरुस्थली में कल्पतरु ज्यों, 'युगप्रधान' जिनदत्त कहाते।

आचार्य जिनदत्तसूरि एक महान् अमृत-पुरुष थे। उनके यौगिक और चारित्रिक बल से निष्पन्न अनेक विलक्षण कार्य प्रसिद्ध हैं। जैसे – स्तम्भों में संगोपित अनुयोग ग्रन्थों को मन्त्र बल से प्राप्त करना, सोमराज प्रभृति देवों द्वारा भक्ति करना, भयंकर विद्युतपात को छोटे से पात्र में संकुचित/नियंत्रित कर लेना, मृतक गौ को जीवित करना, डूबती नौका को पार लगाना, चादर पर बैठकर नदी पार करना, छलने वाली योगिनियों को स्तम्भित करना आदि।

आचार्य जिनदत्तसूरि के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में छत्तीस राजवंशों को प्रतिबोध, सामाजिक व्यवस्था के लिए विभिन्न गोत्रों की स्थापना, सहस्राधिक लोगों का दीक्षा-संस्कार एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

दूसरे दादा हैं मणिधारी जिनचन्द्रसूरि (वि. स. 1197 से 1223), जो "बड़े दादा" के पट्टधर थे। बताया जाता है कि उनके भालस्थल में एक अद्भुत दिव्य मणि थी, अतः इनकी प्रसिद्धि "मणिधारी" के रूप में हुई थी। कम उम्र में अधिक सफलता – यह उनके अस्तित्व-काल की सबसे बड़ी विशेषता है। यद्यपि मात्र 26 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया था, किन्तु इस अल्प जीवन-क्रम में भी उनकी असाधारण प्रतिभा ने समाज पर अमिट प्रभाव डाला। उनके पुण्य इतने प्रबल थे कि मात्र नौ वर्ष की आयु में उन्हें आचार्य जैसा सर्वोच्च्य पद प्राप्त हो गया था – सात वर्ष की आयु में दीक्षाभिषेक और दो वर्ष बाद आचार्य-पदारोहण। मात्र चौदह वर्ष की उम्र में खरतरगच्छ के विशाल समुदाय के "गच्छनायक" का पद प्राप्त हो जाना भी उनकी विलक्षण प्रतिभा का सूचक है। इतनी अल्पायु में ऐसी उपलब्धि शायद ही अन्य किसी जैनाचार्य को प्राप्त हुई होगी।

मणिधारी ने दिल्ली में मृत्यु-पूर्व एक भविष्यवाणी की थी कि नगर से जितनी दूर मेरा दाह-संस्कार किया जाएगा, नगर की आबादी उतनी ही दूर तक बढ़ जाएगी। अतः उनका अन्त्येष्टि-संस्कार दिल्ली से दूर महरौली में किया गया। उनके सम्बन्ध में यह भी प्रसिद्ध है कि उनकी शवयात्रा जब महरौली पहुंची, तो श्रावक-वर्ग ने विश्रान्ति के लिए अर्थी को भूमि पर रख दिया। जब अर्थी को पुनः उठाया गया, तो वह एक सूत भी हिल न सकी। यहां तक कि हाथी भी अर्थी को चलायमान करने में असफल रहा। अतः वहीं पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

यह बड़ी दिलचस्प बात है कि सभी दादा गुरुओं की जीवन-गाथा विलक्षण कार्यों से अभिसिंचित है। "मणिधर" होना ही मणिधारी की पहली विलक्षणता है। संघ की सुरक्षा तो मणिधारी के जीवन की पुण्य-अस्मिता है। तीर्थ-यात्रा के लिए निकले एक पद-यात्री संघ को डाकू-लुटेरों से बचाने के लिए उन्होंने एक ऐसी व्यूह-रेखा खींची, जिसने

लक्ष्मण-रेखा का काम किया। तीर्थ-यात्री-संघ के सदस्य डाकुओं को देख रहे थे, पर डाकू उनके पास से गुजरकर भी उन्हें न देख पाये। पता नहीं, कितने ऐसे ही अलौकिक प्रसंग मणिधारी से सम्बद्ध हैं।

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि के बाद यशस्वी नाम आता है आचार्य जिनकुशलसूरि (वि. सं. 1337–1389) का। चार दादा गुरुओं में इनका क्रम तीसरा है। पहले दो दादा गुरुदेव "बड़े दादा" के नाम से पहचाने जाते हैं। जबकि तीसरे "छोटे दादा गुरु" के नाम से। यद्यपि जिनकुशलसूरि का नाम मणिधारी के बाद आता है, पर जिनकुशलसूरि के दीक्षागुरु मणिधारी जिनचन्द्रसूरि नहीं थे। इन दोनों के बीच तो एक सौ चौदह वर्षों का अन्तर है। जिनकुशलसूरि तो उन जिनचन्द्रसूरि के शिष्य थे, जिनके गुरु जिनप्रबोधसूरि थे।

आचार्य जिनकुशलसूरि प्रत्यक्ष-प्रभावी गुरु माने जाते हैं। चाहे नौका डूब रही हो या सन्तान का अभाव हो, व्यवसाय में घाटा लग रहा हो या कोई प्राकृतिक विपदा आ पड़ी हो, कुशल गुरुदेव का नाम-स्मरण गुरुभक्त के लिए "कल्पतरु" के समान है। भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने के लिए कुशल गुरु के ढेरों चमत्कार प्रसिद्ध हैं।

चौथे दादा हुए हैं आचार्य जिनचन्द्रसूरि (वि. सं. 1598 से 1670)। "यथा नाम तथा काम" को आत्मसात् कर दिखाने वाले जिनचन्द्रसूरि द्वितीया के चन्द्र की तरह उदित हुए और पूर्णिमा के चन्द्र की तरह निरन्तर चमकते रहे। वैयक्तिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय चरित्र को सुदृढ़ बनाने की दिशा में इनकी पहल श्लाघनीय है। आम जनता से लेकर बड़े-बड़े राजवंशों तक इनकी पहुंच थी। सम्राट अकबर से तो इनका इतना निकटवर्ती सम्बन्ध रहा कि जिनचन्द्रसूरि की पहचान भी अकबर-प्रतिबोधक के रूप में होने लग गई।

आचार्य जिनचन्द्रसूरि के प्रति सम्राट अकबर की हृदय से निष्ठा थी। अकबर ज्ञान का पिपासु और सत्य का खोजी था। अकबर ने पचास साल तक भारत की बागडोर संभाली। उसके व्यक्तित्व की एक बहुत बड़ी विशेषता रही कि वह सच्चे ज्ञान का महत्वाकांक्षी था। मजे की बात तो यह है कि वह पढ़ना-लिखना भी नहीं जानता था, किन्तु सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के लिए उसकी जो चेष्टा और सद्भावना रही वह बेमिसाल थी। मुगल सम्राटों में अकबर ही सबसे बेहतर सम्राट हुआ जिसने विभिन्न धर्मों के दावे पर भारतीय राष्ट्रीयता की गाथा लिखी। अकबर के इन सारे प्रयत्नों के पीछे आचार्य जिनचन्द्रसूरि का मुख्य हाथ रहा।

सम्राट अकबर के निवेदन पर आचार्य जिनचन्द्रसूरि गुजरात से हजारों मील का सफर कर लाहौर आए। अकबर ने जिनचन्द्रसूरि की इस लम्बी पद-यात्रा को स्वयं पर उनका अनुग्रह माना। उसने न केवल उनका तहेदिल से स्वागत किया, अपितु लाहौर में चातुर्मास करवाकर ज्ञान एवं सत्संग का लाभ भी प्राप्त किया। वास्तव में आचार्य

जिनचन्द्रसूरि की ही अकबर को यह प्रेरणा रही कि तुम साम्प्रदायिक नहीं, वरन् धार्मिक बनो। इसीलिए अकबर के दिल में यह बात घर कर गई थी कि सब धर्मों में समझदार आदमी हैं और सब कौमों में संयमी, विचारक और चामत्कारिक लोग हैं। इसलिए हमें भी सभी धर्मों के प्रति विनम्र व्यवहार रखना चाहिये और उनकी अच्छी बातों को सीखना चाहिये। सम्राट पर आचार्य का इतना प्रभाव था कि वह अपनी कश्मीर-यात्रा से पूर्व आचार्य का आशीर्वाद पाने गया। इतिहास के अनुसार जब उसने लाहौर से कश्मीर-विजय के लिए प्रस्थान किया था, तो वह अपने साथ ज्ञान-चर्चा के लिए जैन-धर्म के सन्तों को लेकर गया था। वास्तव में वे सन्त आचार्य जिनचन्द्रसूरि के ही प्रबुद्ध शिष्य थे।

सम्राट अकबर आचार्य जिनचन्द्रसूरि के प्रवचनों से अत्यधिक प्रभावित था। बादशाह ने उन्हें सर्वोच्च सम्माननीय युगप्रधान पद से अलंकृत किया। बादशाह ने आचार्यश्री से प्रभावित होकर कई बार पर्व-दिवसों पर राज्य में पशु-बलि निषेध के फरमान जारी किये। व्यसन-मुक्त और हिंसा-रहित जीवन-प्रणाली ही एक जैन की पहचान हो सकती है और जिनचन्द्रसूरि ने इस बात को बादशाहों और प्रजाजनों में प्रतिष्ठित किया।

सम्राट ने आचार्य को न केवल अपना ज्ञान-गुरु माना, अपितु अलौकिक पुरुष के रूप में भी स्वीकार किया। जिनचन्द्रसूरि द्वारा अमावस्या को पूर्णिमा में बदल देना, काजी की टोपी को वशीकृत करना, तलघर में छिपायी गई बकरियों का रहस्योद्घाटन करना–जैसे कई चमत्कार अकबर की आंखों के सामने घटित हुए।

आचार्य के शिष्यों में कईयों की प्रतिभा से तो स्वयं बादशाह और उसके सभासद चमत्कृत थे। उनके शिष्यों में एक – महोपाध्याय समयसुन्दर के अर्थरत्नावली/अष्टलक्षी ग्रन्थ का विमोचन स्वयं बादशाह अकबर के करकमलों से हुआ था। सम्राट ने विद्वत्-मंडली के साथ इस पूरे ग्रन्थ का श्रवण किया और उसे ज्ञान-क्षेत्र का आश्चर्य माना। वास्तव में इस ग्रन्थ-लेखन का प्रेरक भी सम्राट अकबर ही था।

जिनचन्द्रसूरि आखिरी दादा हुए। जैन-समाज में चारों दादा गुरुदेवों के प्रति अगाध श्रद्धा एवं समर्पण है। हर प्रदेश में उनके मन्दिर एवं स्मारक बने हुए हैं। जैन लोग उन्हें अपने गुरु-पितामह एवं संकट-मोचक के रूप में याद करते हैं और श्रद्धा भरी कुसुमांजलि अर्पित करते हैं।

चारों दादा गुरुओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करने के लिए अनेक कवियों एवं भक्तों ने रचनाएं/स्तवनाएं लिखी हैं। ये रचनात्मक काव्यात्मकता की बजाय भावात्मक अधिक हैं। प्राचीन साहित्य-संरक्षक पुस्तकालयों में उन रचनाओं की पाण्डुलिपियां उपलब्ध होती हैं। जिस ढ़ंग से रचनाएं धीरे-धीरे प्रकाश में आ रही हैं,

उससे लगता है कि उनकी संख्या सहस्राधिक होनी चाहिये। प्रस्तुत संकलन वह दस्तावेज है, जिसमें बिखरी रचनाओं को एक स्थान पर सम्पादित किया गया है। यह एक बहुत बड़ा कार्य हुआ है। वर्षों की सारस्वत-संकलन-साधना की निष्पत्ति है यह।

प्रस्तुत संकलन में सारी रचनाएं दादा गुरुदेव की स्तवना से सम्बन्धित हैं। इस विराट संकलन को देखकर मन गद्गद हो जाता है। यह संकलन मात्र सम्पादन नहीं है भक्ति-साहित्य का स्तबक है। यद्यपि अब तक छोटे-मोटे संकलन तो प्रकाश में आये हैं, पर यह प्रस्तुति तो अनुपम है, अद्वितीय है। एक आवश्यकता की महती आपूर्ति हुई है और वह भी आशातीत।

प्रस्तुत संकलन के संग्राहक/सम्पादक महोपाध्याय विनयसागर जी जैन साहित्य एवं परम्परा के मंजे हुए विद्वान् हैं। पता नहीं, अब तक कितने सैकड़ों-हजारों ग्रन्थों की हस्तलिखित पाण्डुलिपियां उनके हाथों से निकली हैं। भला, जो व्यक्ति बचपन में ही साहित्य एवं शिक्षा से मनोयोगपूर्वक संलग्न हो गया, उसकी ज्ञान-अस्मिता गहरी हो, इसमें आश्चर्य कैसा? संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश जैसी प्राच्य भाषाओं पर उनका अधिकार है। विविध प्रकार के स्तरीय अनुवाद एवं शोध इसके साक्ष्य हैं। जीवन भर उन्होंने सत्साहित्य की विभिन्न विधाओं में जो अमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं, मेरे लिए वह पक्ष प्रशंसनीय है।

मैं महो. विनयसागर जी के प्रस्तुत श्रम-कार्य की अनुमोदना करता हूं। मुझे विश्वास है, प्रस्तुत भजनावली समाज के लिए भक्तिवर्द्धक सिद्ध होगी। दादा गुरुदेवों का आशीर्वाद भक्तों की मनोकामनाओं का अभिषेक करे, यह कामना है।

ऋषिकेश : 10.7.91 — महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर

विषयानुक्रम

प्रथम खण्ड

युगप्रधान जिनदत्तसूरि

68	स्तवन	ज्ञानमंडल	दादा तुम्हारे	7	73
69	स्तवन	ज्ञानसार	जिनदत्त सुगुरु	4	74
70	स्तवन	तिलकश्री	खम्मा माहरा	6	74
71	स्तवन	तिलकश्री	गाव गावरे गीत	6	75
72	स्तवन	तिलकश्री	गुरुजी ज्ञान ना	4	75
73	स्तवन	तिलकश्री	दादा गुरु चरणों	4	75
74	स्तवन	तिलकश्री	दादा दत्त गुरु	5	76
75	स्तवन	तिलकश्री	दादा दत्तसूरि	5	77
76	स्तवन	तिलकश्री	मेरा गुरु है	4	77
77	स्तवन	धर्मवर्धन	यात्रा ए वडली	7	78
78	स्तवन	पद्मोदय	सद्गुरु चरणकमल	5	78
79	स्तवन	प्यारे	ओ रे जिनदत्त	5	79
80	स्तवन	प्यारे	दर पे कोई आके०	4	79
81	स्तवन	प्यारे	न छिटकाओ गुरु	6	80
82	स्तवन	प्यारे	भव भव की तू प्यास	4	81
83	स्तवन	प्यारे	मानो तो ये जगतारक	3	81
84	स्तवन	प्रमोदश्री	दादा दत्त सूरिन्द	9	82
85	स्तवन	प्रीतिसुंदर	आज हमारे आनन्द	13	83
86	स्तवन	भंवरीबाई	वडभागी वे	2	83
87	स्तवन	मंजुलाश्री	गुरु दर्शन थी	5	84
88	स्तवन	मंजुलाश्री	धर्म नो डंको	5	84
89	स्तवन	महिमाभक्ति	सद्गुरु श्री जिनदत्तसूरि	6	85
90	स्तवन	महेन्द्रसागर	उपदेशामृत का स्त्रोत	5	86
91	स्तवन	महेन्द्रसागर	जिनदत्तसूरि गुरु के	16	86
92	स्तवन	महेन्द्रसागर	भावे भेट्या गुरुदेव	5	87
93	स्तवन	वा० रत्नसुंदर	श्री जिनदत्त जुहारा	4	88
94	स्तवन	राजहर्ष	हारे लाला श्री जिन०	9	88
95	स्तवन	म० रामलाल	गुरुदेव आपने	8	89
96	स्तवन	म० रामलाल	आज रंग बरसे रे	6	90
97	स्तवन	म० रामलाल	गुरु दत्त जती	7	90
98	स्तवन	म० रामलाल	चलो प्यारे सयान	5	91
99	स्तवन	म० रामलाल	चाल चाल म्हारा	15	92
100	स्तवन	म० रामलाल	जाय फंसा कुगुरु के	5	93
101	स्तवन	म० रामलाल	तेरा अमृत प्याला	4	93
102	स्तवन	म० रामलाल	दत्त गुरु दरस	7	94
103	स्तवन	म० रामलाल	दिल चंचल को काबू	4	95
104	स्तवन	म० रामलाल	होरी खेलो भविक	7	95
105	स्तवन	रुघपति	श्री जिनदत्तसूरि	8	96
106	स्तवन	लाभोदय	माहरा दादउ	4	96

द्वितीय खण्ड
मणिधारी दादा जिनचन्द्रसूरि

तृतीय खण्ड
युगप्रधान दादा जिनकुशलसूरि

54	स्तवन	आलमचन्द	कुशल गुरु कुशल करो	2	225
55	स्तवन	आलमचन्द	नित कुशल सूरीसर	4	225
56	स्तवन	आलमचंद	मोहि एक भरोसो	5	226
57	स्तवन	आलमचंद	श्री जिनकुशल सूरिंद	3	226
58	स्तवन	आलमचंद	सद्गुरु श्री जिनकुशल	15	226
59	स्तवन	उदयरत्न	आज मच्यो रे उछाह	13	228
60	स्तवन	उदयहर्ष	जी हो भाव धरी	17	228
61	स्तवन	उदयहर्ष	श्री जिनकुशल सूरीश	5	230
62	स्तवन	कनककीर्ति	दादोजी दौलति	2	230
63	स्तवन	कमलहर्ष	श्री जिनकुशल सूरीसरु	3	230
64	स्तवन	कल्याणविजय	दरसन दो दुख भाजे	5	231
65	स्तवन	कविरंग	चढते दिवाजे हो	5	231
66	स्तवन	कविराज	हूं तो अरज करूं कर	6	231
67	स्तव	कानसुन्दर	आज भलो दिन	10	232
68	स्तवन	कुम्भ	श्री जिनकुशल सूरीस	3	233
69	स्तवन	कुशलखेम	कुशल करण अब कुशल	7	233
70	स्तवन	कुशलखेम	कुशल नामे सकट दूर	5	234
71	स्तवन	कुशलो	श्री जिनकुशल0	8	234
72	स्तवन	क्षमाकल्याण	श्री व्रधमान जिनेसरु	11	235
73	स्तवन	क्षमानन्दन	सागानेर विराजे गुरु	6	236
74	स्तवन	क्षमारत्न	सद्गुरुजी सुणो मोरी	5	236
75	स्तवन	क्षेमरत्न	कुशल गुरु दरसन	4	237
76	स्तवन	क्षेमरत्न	पूजवा चाली रे सुगुरुने	5	237
77	स्तवन	क्षेमरत्न	मेरे होउ सहाई	3	238
78	स्तवन	क्षेमरत्न	सद्गुरु विन मोहि	3	238
79	स्तवन	क्षेमरत्न	हमकूं शरण तिहारी	5	239
80	स्तवन	खुशालचंद	कुशल सूरीसर सेविये	7	239
81	स्तवन	खुशालचद	तु चेतन गुरु मांन रे	6	240
82	स्तवन	खुशालचंद	मेरे तुम्ह हो स्याम	5	240
83	स्तवन	खुशालचंद	श्री जिनकुशल सूरीसरु	13	241
84	स्तवन	खुशालचंद	सद्गुरु मेरे कुशल	5	242
85	स्तवन	खेत	कुशल सूरिंद गुरु	5	242
86	स्तवन	गुणकमल	श्री जिनकुशलसूरीसरु	2	242
87	स्तवन	गुणवर्धन गणि	श्री जिनकुशलसूरि	2	243
88	स्तवन	उ0 गुणविनय	दादा पूरउ हो वंछित	4	243
89	स्तवन	गुलाब	उँ उँ श्री जिनकुशलसूरि	5	243
90	स्तवन	गूजर	कैसे कैसे अवसर में गुरु	4	244
91	स्तवन	चन्द	कुशल गुरु कुशल	3	244
92	स्तवन	चन्द	मुझ पूर मनोरथ आज	3	244

287	स्तवन	विचक्षणश्री	हे कुशल करण गुरु	6	357
288	स्तवन	विजय	अब तो कुशल गुरु	3	358
289	स्तवन	विजय	सुनो सुनोजी	4	358
290	स्तवन	विद्याविशाल	बलिहारी तोरे नाम	7	359
291	स्तवन	विद्याहेमगणि	सहाई मेरे श्रीजिन	5	359
292	स्तवन	विनयमेरु	श्रीजिनकुशलसूरीसरजी	7	360
293	स्तवन	म० विनयसागर	कुशल गुरु	5	360
294	स्तवन	विनयहर्ष	सखी री गुरु की	3	361
295	स्तवन	विनीताश्री	कुशल कारक कुशल	4	361
296	स्तवन	शशिप्रभाश्री	करो कुशल गुरुदेव	5	362
297	स्तवन	शशिप्रभाश्री	गुरुवर हमारी	3	362
298	स्तवन	शशिप्रभाश्री	जैन शासन ताज हो	3	363
299	स्तवन	शशिप्रभाश्री	दादा के चरणों में	3	363
300	स्तवन	शशिप्रभाश्री	दादा श्रीजिनकुशलगुरु	4	364
301	स्तवन	शशिप्रभाश्री	मेरी नाव करो	3	364
302	स्तवन	शिवचन्द्रोपाध्याय	दादा कुशल सुरिंद	5	365
303	स्तवन	शिवचन्द्रोपाध्याय	बलिहारी हूं कुशल	4	365
304	स्तवन	शिवचन्द्रोपाध्याय	श्रीजिनकुशल सूरीसर	5	366
305	स्तवन	सज्जनश्री	अब तो दर्शन दो	3	366
306	स्तवन	सज्जनश्री	आओ आओ दादा	5	366
307	स्तवन	सज्जनश्री	कुशल कुशल दातार	4	367
308	स्तवन	सज्जनश्री	गुरुजी अब होली	4	368
309	स्तवन	सज्जनश्री	दादा सा म्हाने	6	368
310	स्तवन	सज्जनश्री	मेरे दादा कुशल	7	369
311	स्तवन	सत्यरत्न	आज करो रे उच्छाह	5	369
312	स्तवन	सत्यरत्न	आज मानूं दरसण	2	370
313	स्तवन	सत्यरत्न	कुशल सुरिंद गुरु	4	370
314	स्तवन	सत्यरत्न	कुशल सुरिंद सुखकारी	2	370
315	स्तवन	सत्यरत्न	कुशल सुरिंदा गुरु	5	371
316	स्तवन	सत्यरत्न	गणधर सेवे गुरु	5	371
317	स्तवन	सत्यरत्न	दरसण दीजे राज	5	371
318	स्तवन	सत्यरत्न	भाव भगत धरी	5	372
319	स्तवन	सत्यरत्न	मैं निरख्यां गुरु	5	372
320	स्तवन	सत्यरत्न	मोतीड़े तूठा में	5	373
321	स्तवन	सत्यरत्न	श्री सद्गुरु जिनकुशल	5	373
322	स्तवन	सत्यरत्न	श्री सद्गुरु म्हाराज	5	374
323	स्तवन	समयसुंदर	आज आणंदा हो	3	374
324	स्तवन	समयसुंदर	आयो आयोजी	3	375
325	स्तवन	समयसुंदर	उदय करो संघ	6	375

चतुर्थ खंड
युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि

पंचम खंड
दादा गुरुदेव भजन विविधा

षष्ठ खण्ड

पूजा विभाग

परिशिष्ट-1




मणिधारी श्री
सूरीश्वर मूर्ति. दिल्ली मेहरोली दादा वाडी मध्ये
प्रतिष्ठापित खरतर गच्छीय श्री बुद्धिमुनि शिष्य जयानंद मुनि

प्रथम खंड

युगप्रधान जिनदत्तसूरि



युगप्रधान दादा जिनदत्तसूरि

गणधर सुधर्मास्वामी की परंपरा में सुविहितपक्ष/ विधिपक्ष/खरतरगच्छ के संस्थापक आचार्य जिनेश्वरसूरि के चौथे पाट पर, नवांगवृत्ति और स्तंभन पार्श्वनाथ के प्रादुर्भावक आचार्य अभयदेवसूरि के दूसरे पाट पर , आचार्य अभयदेव से उपसंपदा प्राप्त पट्टधर आचार्य, असाधारण प्रतिभा-संपन्न महाकवि एवं परम गीतार्थ जिनवल्लभसूरि के पट्टधर युगप्रधान जिनदत्तसूरि हुए । जो बड़े दादा या प्रथम दादा के नाम से विख्यात है ।

आप धोलका के निवासी थे । इनके माता-पिता के नाम थे — हुम्बड़ ज्ञातीय वाछिग शाह एवं बाहड़ देवी । इनका जन्म ११३२ में हुआ था । विदुषी साध्वियों के उपदेशों से प्रतिबुद्ध होकर इन्होंने संवत् ११४१ में धर्मदेव उपाध्याय के पास दीक्षा ग्रहण की । इनका दीक्षा नाम था — सोमचन्द्र । इनके शिक्षा गुरू थे — सर्वदेवगणि, अशोकचन्द्राचार्य और हरिसिंह आचार्य । स्वर्गस्थ होने पर भी हरिसिंह आचार्य प्रत्यक्ष सहायक थे ।

आचार्य जिनवल्लभसूरि के आकस्मिक देहावसान हो जाने से आचार्य देवभद्र ने संवत् ११६९ वैशाख सुदि एकम को बड़े महोत्सव के साथ आचार्य पदारोहण के समय नाम परिवर्तन कर जिनदत्तसूरि नाम रखा ।

आचार्य बनने के पश्चात् जिनदत्तसूरि चैत्यवास को निर्मूल करने में कटिबद्ध हो गए और निर्भीकता एवं प्रखरता के साथ चैत्यवास की मान्यताओं का खण्डन करते हुए सुविहित /विधिपक्ष का प्रबल प्रचार करने लगे । इनकी उत्कृष्ट चारित्रिक सम्पदा और तप-त्याग को देखकर बड़े बड़े चैत्यवासी आचार्य

जयदेवाचार्य, जिनप्रभाचार्य, विमलचन्द्र गणि, मंत्रवादी जयदत्त, गुणचन्द्र, ब्रह्मचन्द्र गणि आदि ने भी चैत्यवास का त्याग कर इनके पास दीक्षा ग्रहण की थी । अजमेर के तत्कालीन नृपति अर्णोराज, त्रिभुवनगिरि के महाराजा कुमारपाल आदि भी आपके भक्त थे और आपको उच्च सम्मान देते थे । त्रिभुवनगिरि के महाराज कुमारपाल के साथ आपके चित्र की काष्ठपट्टिका आज भी जैसलमेर ज्ञान भंडार में विद्यमान है । अनेक स्थानों पर विचरण करते हुए अजमेर, त्रिभुवनगिरि आदि स्थानों पर विधि-चैत्यों की प्रतिष्ठाएं कराई थीं । लगभग सहस्राधिक साधु-साध्वियों को दीक्षा दी थी ।

'खरतरगच्छ का इतिहास' के अनुसार इनके द्वारा प्रतिष्ठापित अन्य तीर्थों के भी उल्लेख प्राप्त होते हैं :-

१. विक्रम संवत् १३४० में आचार्य जिनप्रबोधसूरि जी ने विक्रमपुर से आए हुए संघ की प्रार्थना से विक्रमपुर जाकर वहां पर युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरिजी म. द्वारा संस्थापित श्री महावीर वर तीर्थ की विधिपूर्वक वंदना की । (पृष्ठ १२६)

२. विक्रम संवत् १३३५ में श्री जिनप्रबोधसूरिजी वद्रदहा गांव में पधारे । वहां पर जिसकी प्रतिष्ठा कभी श्री जिनदत्तसूरिजी म. ने करवाई थी उसी श्रीपार्श्वनाथ विधिचैत्य का जीर्णोद्धार महण, झांझण आदि पुत्रों के पिता श्री सेठ आल्हक ने करवाकर , उस पर चित्तोड़ में प्रतिष्ठित ध्वज-दंड का आरोपण फागुन सुदि चतुर्दशी को विस्तार से करवाया । (पृष्ठ १२३)

३. विक्रम संवत् १३७५ में कलिकाल कल्पतरु आचार्य जिनचन्द्रसूरिजी बागड़देश के ग्राम -नगरों के निवासी लोगों के मनोरथों को पूर्ण करते हुए उत्साह

से श्री कन्यानयन में जाकर स्वर्गीय श्रीजिनदत्तसूरिजी महारज द्वारा स्थापित, वर्तमान कल्प के ातिशय धारी श्री वर्द्धमान स्वामी को नमन किया । (पृष्ठ १४१)

किंतु खेद है कि आचार्यश्री प्रतिष्ठापित अजमेर, त्रिभुवनगिरि , विक्रमपुर वद्रदहा और कन्यानयन के मदिर मुगल काल में नष्ट कर दिये गए । इनके आज ध्वंसावशेष भी प्राप्त नहीं हैं ।

उच्चतम आध्यात्मिक साधना और अत्युतम एवं प्रखर संयम साधना के कारण आचार्यश्री को अनेक सिद्धियां प्राप्त थीं । इन्हीं सिद्धियों के बल पर विक्रमपुर आदि स्थानों पर अनेक उपद्रवों को दूर किया । इसी के फलस्वरूप क्षत्रिय, ब्राह्मण और वैश्यों को प्रतिबोध देकर, मांस -मदिरा आदि का त्याग करवाकर, एक लाख तीस हजार व्यक्तियों को जैन बनाकर ओस-वंश को समृद्ध किया । आपके द्वारा प्रतिबोधित एवं ओस-वंश में संस्थापित भणसाली, काकरिया, नवलखा, बरमेचा , डांगी, रांका, कानूगा, वैताला, नाहटा , बाफना, बुच्चा मालू, लोढ़ा, बरड़िया, सोनी, लूणिया, डागा आदि गोत्रों की संख्या ५२ हैं ।

महादेवी अम्बिका के द्वारा आपको युगप्रधान पद प्राप्त हुआ था । परम्परागत पट्टावालियों के अनुसार आप बड़े चमत्कारी भी थे । प्रथम अनुयोग/मंत्रग्रंथ की प्राप्ति भी आपको हुई थी । चौसठ योगिनियों को प्रतिबोध दिया था । ५२ वीर एवं ५ पीर भी आपकी सेवा में उपस्थित रहते थे ।

विक्रम संवत् १२११ आषाढ़ वदि ग्यारस परम्परा के अनुसार आषाढ़ सुदि ग्यारस को आपका स्वर्गवास अजमेर में हुआ था । भारत के कोने- कोने में प्रख्यात दादाबाड़ियों में आपके चरण या मूर्ति प्रतिष्ठापित हैं । आज भी आपके चमत्कार सर्वत्र देखे व सुने जाते हैं और आज भी आप भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हैं । न

केवल श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समुदाय ही अपितु स्थानकवासी, तेरापंथी एवं कई ब्राह्मण और अग्रवाल भी आपकी उपासना करते हैं ।

आपके द्वारा निर्मित कोई बड़ी कृतियाँ तो प्राप्त नहीं हैं । गणधर सार्द्धशतक, सन्देह दोलावली, उपदेश कुलक आदि छोटी -मोटी २७ कृतियां प्राप्त होती हैं । इनमें से चर्चरी, उपदेश रसायन और काल स्वरूप कुलक अपभ्रंश भाषा की रचनाएं हैं , जो हिंदी के आदिकाल में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं ।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

१. खरतरगच्छ-परंपरा

शासनपति वर्द्धमान ने, नमन करी कर जोड़।
गणधर-पद गुण-वर्णना, करतां वंछित कोड़।।१।।
प्रथम पाट महावीर नै, स्वामी सुधर्मा जाण।
तिम जंबू थी इग्यार में, आर्य सुस्थित जाण।।२।।
कोटि सूरि-मंत्र जाप थी, प्रगट्यो कौटिक गच्छ।
वज्रस्वामी थी ते वली, वज्र शाख थई स्वच्छ।।३।।
सूरि श्री वज्रसेन से, पाटे चन्द्र सूरीश।
चन्द्र-कुल तेहथी थयुं, जैन श्रमण गुण ईश।।४।।
प्रभु पाटे अडत्रीश मै, प्रगट्या उद्योतन सूर।
तस पद वर्द्धमाने लह्यो, करि चैत्यवास ने दूर।।५।।
सोमनाथ ना वयण थी, सुणी शिवदाता वर्द्धमान।
बहनि युत ले बे वांधवा, जिन दीक्षा गुणखान।।६।।
पाटे श्री वर्द्धमान ने, सूरि जिनेश्वर ठाण।
बंधव बुद्धिसागर थया, आर्या सरस्वती जाण।।७।।
अणहिलपुर पाटण सभा, गुर्जर देश मझार।
पृथ्वीपति दुर्लभ वसे, श्रावक गुणना धार।।८।।
चर्चा चैत्यवासि थी, करी जिनेश्वर ताम।
श्रमण गुणथी जीतिया, खरतर नाम सुधाम।।९।।
विक्रम सहस ने असीये, विरुद अेह गुण खाण।
दुर्लभ नृप अर्पण करे, विबुध सभाअे ठाण।।१०।।
तस पदे जिनचन्द्र थया, अभयदेवसूरि तास।
थंभण पास प्रगटाविया, वृत्ति नवांगी जास।।११।।
छंडी कुर्चपुर चैत्य ने, थया अभयदेव सुसीस।
विधिमारग पूरण वर्णव्यो, जिनवल्लभसूरीस।।१२।।
भव्य उद्धारक प्रगटीया, श्री जिनदत्तसूरिन्द।

युगप्रधान पद शोभता, समरे सुरनर इन्द॥१३॥
मणि मण्डित भालस्थले, श्री जिनचन्द्र अणगार।
उभय लोक सु क्रांति कर, दत्तसूरिन्द पटधार॥१४॥
जिनपति जिनेश्वर वली, जिनप्रबोध ने जिनचन्द।
चार राज शिर आण वहे, राजगच्छ गुण कन्द॥१५॥
आशा पूरण देव थया, दादा कुशलसूरिन्द।
पूनम सोम दर्शन करी, लहे वंछित जन वृन्द॥१६॥
कुशल पदे पद्मसूरि ने, प्रगटयुं ज्ञान अमंद।
भारति कंठ विरुद लह्युं, भवियण नयनानन्द॥१७॥
लब्धिसूरि जिनचन्द्र गुरु, जिनोदय ने जिनराज।
भद्रसूरि जिनचन्द्र गुरु, समुद्र नमो हित काज॥१८॥
तस पदे जिन हंस गुण, उज्वल हंस सूरि राज।
गुण माणिक निर्मल वली, माणिक्य सूरि मुनिराज॥१९॥
स्वामी सुधर्म-परंपरा पाटे अेकसठ में जाण।
चकित कर्यो अकबर शाह ने, श्री जिनचन्द्र गुणखाण॥२०॥
तास गुण बर्णन करूं, भाषा गुर्जर सार।
'समय सुन्दर' जेवर्णव्युं, तस लेश अे निर्धार॥ २१ ॥

२. अम्बिकादेवी प्रदत्त युगप्रधानपद सूचक स्तुति

दासानुदासा इव सर्व देवा,
यदीय पादाब्जतले लुठन्ति।
मरुस्थलीकल्पतरुर्स जीयाद्,
युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः॥

चिन्तामणिः कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्या।
प्रसीदतः श्री जिनदत्तसूरेः, सर्व पदं हस्तिपदे प्रविष्टम्॥२॥
नो योगी न च योगिनी न च धराधीशस्य नो शाकिनी।
नो वेताल-पिशाच-राक्षसगणा नो रोग-शोकौ भयम्।
नो मारी न च विग्रहप्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः।

यस्ते श्रीजिनदत्तसूरिगुरवो नामाऽक्षरं ध्यायति।।३।।

कवि पल्ह विरचित

३. श्री जिनदत्तसूरि स्तुति

जिण दिट्ठइं आणंदु चडइ अइ रहसु चउग्गुणु।
जिण दिट्ठइं झडहडइ पाउ तणु निम्मल हुइ पुणु।।
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुक्किउ नासइ।
जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु पणासइ।।
जिण दिट्ठइ हुइ सुइ धम्ममइ अबुहहु काइ उइखहु।
पहु नवफणि मंडिउ"पास"जिणु"अजयमेरि"किन पिक्खहु।।१।।
मयण मकरि धरि धणुहु बाण पुणि पंच म पयडहि।
रूविण पिम्म पयावि बंभ हरि हरुमत्त विनडहि।।
रुउ पिम्मु ता बाण मयण ता दरिसहि थणुहरु।
नव फणि मंडिउ सीसि जाव नहु पक्खहि जिणवरु।।
जइ पडिहसि"पास"जिणिद वसि नाणवंत निम्मल रयण।
न सु धणुहरु बाण न रूव नहि न रुय पिमु हइ हइमयण।।२।।
नव फणि "पास"जिणिदु गढिउ अन्नलि जु दिट्ठउ।
"अजयमेरि""संभरि नरिंदु"ता नियमणि तुट्ठउ।।
कंचणमउ अइ कलसु सिहरि साणउ रंजविअउ।
जणु सुतरणि तउ तवइ तिव्वु [त्थु]आयासि सउन्नउ।।
जा वुक्कमिसिण ढक्कारविण करु उब्भवि फरहरइ धय।
"जिणदत्तसूरि"धर धवलि जसि तापसिद्धि सुर भुयणि कय।।३।।
"देवसूरि पहु""नेमिचंदु"बहु गुणिहि पसिद्धउ।
"उज्जोयणु"तह"वद्धमाणु""खरतर"वर लद्धउ।।
सुगुरु"जिणेसरसूरि"नियमि"पिणचंदु"सुसंजमि।
"अभयदेउ"सव्वंगु नाणि"जिणवल्लहु"आगमि।।
"जिणदत्तसूरि"ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ जिण-वयणु।
सावइहिं परिक्खिवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउ जिव रयणु।।४।।

धणुहर धयवड वरिय सारि सिंगार सुसज्जिय।
सोहग्गिण गुडगुडिय पंच[व]र पडिम निमज्जिय।।
ति= यड [रू]अ ते अ ग्गलिय पिम पडिकार निरुत्तिय।
रइ रणरह सुच्चलिय गरुय माणिण म अमन्निय।।
करि कडयड मुणि महिवइहिं रहिय रूवय संपुन्न भय।
"जिणदत्तसूरि" सीहह भयण मयण करडि धड विहडि गय।।५।।
तव तलप्फ भीसणह धम्म धीरिमसुरिम सुविसालह।
संजम सिर भासुरह दुसहद(व)य दाढ करालह।।
नाण नयण दारुणह नियम निरु नहर समिद्धह।
कम्म कोय(व) निट्ठरह विमलपह पुंछ पसिद्धह।।
उपसमण उयर धर दुव्विसह गुण गुंजारव जीहह।
"जिणदत्तसूरि"अणुसरहु पय पावक-रडि-घड-सीहह।।६।।
जर-जल-बहल-रउद्दु लोह-लहरिहिं गज्जंतउ।
मोह मच्छ उच्छलिउ कोव कल्लोल वहंतउ।।
मयमयरिहि परिवरिउ वंच बहु वेल दुसंचरु।
गव्व गरुय गंभीरु असुह आवत्त भयंकरु।।
संसार समुद्दु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिवि दरियइ।
"जिणदत्तसूरि उवएसु मुणि पर तरंडइ तरियइ।।७।।
सावय किवि को यलिय केवि खरह (य) रिय पसिद्धिय।
ठाइ ठाइ लक्खियइ मूढ निय वित्ति विरुद्धिय।।
दरहि न किपि परत्र वेविसु परुप्परु जुज्झहि।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पट्टंतरु बुज्झहि।।
"जिणदत्तसूरि"जिन नमहि पय पउम मच्चु (गव्वु) नियमणि वहहि
संसार उयहि दुत्तरि पडिय तिनहु तरंडइ चडि तरिहि।।८।।
तव-संजम-सयनियम-धम्म-कंमिण वावरियउ।
लोह-कोह मय-मोह तहव सव्विहि परिहरियउ।।
विसम छंदलक्खणिण सत्थ अत्थत्थ विसालह।

"जिणवल्लह"गुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह।।
अन्निहि वि गुणिहि संपुन्न तणु दीन दुहिय उद्धरणु धर।
"जिणदत्तसूरि"पर पल्ह भणु तत्तवंतु सलहियइ धर।।९।।
वक्खाणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ।
आरहियइ त "वीरनाहु"कइ"पल्हु" पयासइ।।
धम्मु तु दय संजुत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ।
चाउ त अणखँडियउ जु वंदिणु सलहिज्जइ।।
जइ ठाउ त उत्तिमु मुणिवरहवि [पवर]वसहिहो चउर नर।
तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर"खरतर सिरि""जिणदत्त"वर।।१०।।

[इति श्री पट्टावली पद् पदानि। सवत् ११७० वर्षे अश्व युगाद्य पद्ये तियौ श्री मद्धारानगर्यां श्रीखरतरगच्छे विधिमार्ग- प्रकाशि वसतिवासि श्रीजिणदत्तसूरीणा शिष्येण जिनरक्षित साधुना लिखितानि।]

भद्रमुनि (सहजानन्द) रचित

४. जिनदत्तसूरि स्तोत्र

(स्रग्धरा छन्द)

ओम् ऱ्हीँ गिव्वाणचक्कप्फुड-मउड-मणिग्घिट्ठ-पायारविन्दो, णे
अंवा दिन्नप्पहाणा जुगवरपय-संवाहगावतारी।
श्रीँ क्लीँ व्लूँ ठड्ढ विज्जू! मयणयविजई! जोइणीच्चक्क थंभा,
सड्ढाणं खत्तिएसाइवर सहस-तीसेग-लक्खाण कत्ता।।१।।
रोगा सोगाहिवाही समर-डमर-सतापहन्तार! देव!,
श्रीविज्जा-मंत-तंतागर महिमहिआ! बाहडं बापसूअ।
वेराटी हुँवड़क्खक्कुलतिलय सुमंतीस-वाछीगपुत्त,
मिच्छालावी कुकुंभीदमणमिगवई! दत्तसूरिन्द! एहि।।२।।
विण्णाणी! एहि सामी! वर वरद! वरं देहिणे दंसणं य,
सूरक्खो! सुप्पसण्णो भवविहिपहलग्गाण भव्वाण खिप्पं।
अण्णाणं णाणदाया कुरु कुरु मम संईहितं दिव्वकंती,
ऱ्हीँ स्वाहॉते त्ति झाणा कुसलकर! सया रक्ख मं रक्ख ताय!।३।।

(तीहि-विसेसयं)

मंतं लक्खं सवायं किर सुहविहिणा बंभचेरं धरंतो,
अेगावण्णा दिणन्ते विमलहियययो सुध्ध जावं जवन्तो।
णिच्चं अेगासणी जो अमलतणु अकंपासणो धम्मरत्तो,
सक्खं णासग्गदिटठी सुगुरु दरिसणं लेइ सो दुल्लहं वि।।४।।
सच्चारित्ताण सीसेण जिणरयणसूरीण मंतप्पभावा,
'भद्देण' थुत्तमेयं सिरि खरयरगच्छाहिवाणं कयं जे।
लध्धध्धीदं सपेम्मं सरलयरहिया सत्तहुत्तं थुणंति,
णिच्चं सुक्खं अखंडं अमिययर-सुहग्गं पगे ते लहंति।।५।।

राजवैद्य उदयचन्द्र रचित

५.जिनदत्तसूरि स्तोत्र (अष्टक)

(तर्ज-चिन्ता चूर चिन्तामणि पास प्रभो)

वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।
योगस्यातिबलेन सुशोभि मुखम्, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।१।।
पद्मासन – द्युति – शोभितं, श्वेताम्बरेण समन्वितम्।
भक्त्या नौमि जनार्चितपादयुगं, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।२।।
पीयूष-सार-समोपदेशं, प्राप्य मुग्धा मानवाः।
ध्याये जीवदयानुरतम्प्रवरं, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।३।।
विद्युद्विमानविमर्दकं, भूतादिसिद्धिसमन्वितम्।
ध्याये मिथ्याधर्मनिशापहरं, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।४।।
विद्याबलैर्जितभूतलं, जिनशासन-प्रबलान्वितम्।
ध्याये श्रीजिनधर्मविधुविमलं, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।५।।
आषाढ-शुक्लैकादशी-दिवसे वपुः प्रविसर्जितम्।
ध्याये देववरं जिनदत्तगुरुं, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।६।।
देवेश! सम्प्रति भारतं, दुःखैरनन्तैः पीडितम्।
यत्नं वारयितुं कुरु तच्च शुभं, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।७।।
पुनरस्तु भारतवर्षमध्ये, तेऽवतारः साम्प्रतम्।
याचे वैद्योदयचन्द्रस्सततम्, वन्दे सूरिवरं जिनदत्तमहम्।।८।।

क्षमाकल्याणोपाध्याय रचित

६. जिनदत्तसूरि स्तोत्र (अष्टक)

श्रीवीरतीर्थेश्वरशासनस्य, प्रभावकः कौटिकगच्छनेता।
चान्द्रकुलेऽभूद्वरवज्रशाखा-प्रभाकरः श्रीजिनदत्तसूरिः ॥१॥
सदम्बिकादत्तयुगप्रधानः, पदं प्रधानोतिशयद्ध्युपेतः।
विद्याचणः सूरिगुणान्वितो यः, सूरीश्वरः सर्वनतो व्यराजत् ॥२॥
धुन्धूकाऽभिधसत्पुरे समजनि श्रीवाच्छिगौत्रीसखः,
श्रीमद्वाहडदेव्युदारचरिता तस्याऽभवद् गेहिनी॥
तत्कुक्षाऽववतीर्य हुम्बड़कुलोत्तंसः शिशुत्वेऽपि यः,
श्रीमद्पाठक-धर्मदेव-सनिधे, जग्राह सत्संयमम्॥३॥
श्रीयुक्ताऽभयदेवसूरिसुगुरोः, शिष्यैर्वराचार्यकैः,
श्रीमद्भिःकिल देवभद्रगुरुभिः, श्रीचित्रकूटे स्वयम्।
सूरेः श्रीजिनवल्लभस्य सुगुरोः पट्टे निवेश्याऽग्रिमे,
यः श्रीमज्जिनदत्तनाम विधिना, श्रीसोमचन्द्राह्वयः ॥४॥
ततः स्वकीयोत्तममूलविद्या, त्रिकोटीसंख्यस्मरणाद्विशुद्धा।
सुरासुरा भूरितरा यदीयौ, पादौ नमन्ति स्म सुहर्षवन्तः॥५॥
सुसाधु-साध्वीसमुदाययुक्ताः, सुश्रावकाणां बहवश्च वर्गाः।
प्रबोधिता येन कृपापरेण, सद्धर्ममार्गप्रथनेन लोके॥६॥
क्रमेण कृत्वाऽनशनं विशुद्धं, पुरोत्तमे श्री अजयादिमेरौ।
आयुः क्षये स्वर्गमवाप सम्यक्, यः श्रीगुरुर्ज्ञानसमाहितात्मा॥७॥
इत्थं स्तुतः श्रीजिनदत्तसूरिः, '**क्षमादिकल्याण**'-सुपाठकेन।
सूरीश्वरः सर्वगुणाकरोऽसौ, भव्यात्मनां वांछितपूरकोऽस्तु॥८॥

महो. ऋद्धिसार रचित

७. जिनदत्तसूरि स्तोत्र

यो दृष्टः स्मरणं गतोऽपि सततं दिव्यैः स्तवैः संस्तुतैः,
भक्तैर्भक्तिपरैः श्रुतोऽपि कुरुते सर्वार्थसम्पादनम्।
दुःखान्तं तनुते ददाति सुमति कारुण्यवारांनिधिः,

स श्रीमान् जिनदत्तसूरिरवतादस्मान् स्वपक्षाश्रितान्।।१।।

तव उति नति नामान्यप्यघं पावयन्ति,
ददति परमशान्ति दिव्यभोगान् जनेभ्य:।
जिनपदयुत तस्मादादरात् दत्तसूरे:,
रुचिरवचनपुष्पैरर्चन ते करोमि।।२।।

अशुभमतिरसत्प्रवृत्तिसक्त:, सततमनार्यविशालसंगमत्त:।
अनुदिनकृतपापबन्धयुक्त:, पुरुषपशुर्यदि मादृशोऽर्चये त्वाम्।।३।।
विमलमतिरमत्तर: प्रशान्त:, शुचिचरितोऽखिलसत्त्वमित्रभूत:।
प्रियहितवचनस्तव प्रसादाद्भवति,
भवति जनो जिनदत्तसूरिवर्य:।।४।।
सकलशीलगुणांबुधिरापद:, सपदि यो विनिवर्तयति स्मृत:।
सकलसौख्यकर: सकलान् जनान-- वतु सूरिरसौ जिनदत्तक:।।५।।
यस्य प्रसाद कलया सहसान्धपंगु-
मूंकाकुलीन गदिनोऽपि निरस्तदोषा:।
दोपाधिनाथसुभगा: सकलार्थपूर्णा-
स्तुष्टिकृतादिकवयो: कवयो भवन्ति।।६।।
स त्वं निजानुचरदुर्गतिदौर्मनस्य, दु:स्वप्नसंकटहरो निजदर्शनेन।
उद्धर्तुमात्मचरणप्रवणान्मनुष्या-
नागत्य तिष्ठति यतो मरुदेशमध्ये ।।७।।
उद्यद्दिवाकरकरप्रतिमप्रभावो, लोके विनाशयति जाड्यतमोवितानम्।
उद्बोधयन् सुजनबोधसरोजवृन्दं,
श्रीमानयं विजयते जिनदत्तसूरि:।।८।।
तावद्भयं द्रविणगेहसुहृन्निमित्तं,यावन्न ते स्मरति पादयुगं मनुष्य:।
संसेवतां सुरतरोरिव ते प्रसाद:,सेवानुरूपफलदो जिनदत्तसूरि:।।९।।
त्वामात्तरूपमनघं जगतीह लोका, आचक्षते हि जिनशासनपालनाय।
मां देहगेहधनधर्मजनाद्युपेतं,पाहीश! विक्रमपुरे जिनदत्तसूरि:।।१०।।
नीहारांशुतनूनपद्गगनसत्सर्वसहासंसिते,

गच्छत्यच्छगणे धरापतिवर श्रीविक्रमादित्यतः।
मासि पोष्यपदाभिधे सितदले राका तिथौ शोभने,
प्रातर्निचर्गशिखण्डिसूनुदिवसे श्रीलोकबन्धूदये।।११।।
वीकानेरपुरे वरे खरतराम्नायाधिराजे जनान्,
पूज्यश्रीजिनहससूरिसुगतो धर्माय संशाम्यति।।
रत्नौघैर्गुणवृन्दछन्दकलितैः भूयात्सदा श्रेयसे,
व्यालेखि स्तवनामिमासु गुरुकं विद्रामलालेन वै।।१२।।

समर्थ मुनि रचित

८. जिनदत्तसूरि स्तोत्र

सुरकिन्नरवन्दितपत्कमलं, यशसा समलकृतभूमितलम्।
गतपापमलं चरितैर्विमलं, जिनदत्तगुरुं प्रणताविरलम्।।१।।
भुवनत्रयसारियशःपटलं, खलमण्डलखण्डनतः प्रबलम्।
विपमायुधवर्गदल सरलं, जिनदत्तगुरुं प्रणमामि कलम्।।२।।
विपमस्थलपानिजनोद्धरणं, शरणं महसा भविनां शरणम्।
हरणं तमसा कमलाकरणं, प्रणमामि गुरु शरण प्रबलम्।।३।।
वरपालितदुष्करसच्चरणं, सुरमानुपकीर्तितसच्चरणम्।
जितदुर्जयच्च लभृत्करणं, सुगुरु प्रणमामि लसत्करणम्।।४।।
नरपेर्महित मुनिपैर्विनुतं, प्रमदै रहित क्षमया सहितम् ।
न परैश्चलित न भयैः स्खलितं,प्रणमामि गुरु भुवने विदितम्।।५
परमाऽऽगमशुद्धमति प्रथित, रमया ललित मुजनैर्मिलितम्।
सरसैः कथितं रुचिभिर्लसितं, प्रणमामि गुरुं कविभिर्ध्वनितम्।।६।
भवतापहर शिवशर्मकरं, धनधान्यभर कृतमुत्प्रचुर।
करुणानिलय मुनिदुःखहरं, जिनदत्तगुरुं पणमामि वरम्।।७।।
धरवाच्छगमन्त्रिसुतं सुखदं, कृतबाहडदेविमन प्रमुदम्।
विगतव्यसनं हितद समुदा, मुनिराजमह प्रणमामि सदा।।८।।
श्रीमच्छ्रीजिनदत्तसूरिसुगुरोः कल्याणवल्लीतरोः-
र्लब्धैरेक- निधे सुबद्धिजलधेर्भापां निधेश्चिन्निधेः।

प्रत्युषे विधिना 'समर्थमुनिना' लब्धं गुरोष्टकं,
ये ध्यायन्ति नरा भवन्ति सततं वागीश्वरा: श्रीधरा:।।९।।

९. जिनदत्तसूरि स्तोत्र

नमाम्यहं श्रीजिनदत्तसूरिं, गुणाकरं किन्नरपूज्यपादम्।
यतीश्वरं तुष्टिकरं स्वरूपं, लावण्यगात्रं बहुसौख्यकारम्।।१।।
भूपा नरा ये प्रणमन्ति नित्यं, तेषां मनीषा सफलीकरोति।
लक्ष्मीर्यशोराज्यरतिप्रसूते, विद्यावरं श्रीललनासुखानि।२।
भक्त्या नरा ये तव पादसेवां, कुर्वन्ति सत्पुत्र लभंत एव।
न दु:खदौर्भाग्यभयं न मारी, स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरिम्।३।
कवि: स्वबुद्ध्या गुरुसन्निभोऽपि, नास्ते गुणान् वर्णयितुं समर्थ:।
तथापि त्वद्भक्तिरतो मुनीन्द्र, करोमि किंचिद् गुणवर्णनं ते।।४।।
महार्णवे भूधरमस्तकेऽपि, स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरिम्'
सुखै: सहायान्ति जना: स्वधाम्नि,
ततो भवन्तं प्रणमामि कामम्।।५।।
जैनाब्ज-संबोधन- पूर्णचन्द्र:, सत्सेवकं कामितकल्पवृक्ष:।
युगप्रधान-स्तुतसाधुसूरि:, सूरीश्वरं श्रीजिनदत्तसूरिम्।।६।।
न रोगशोका रिपुभूतयक्षा:, न च ग्रहा राक्षसदेवचौरा:।
न पीडयन्ति तव नाममन्त्रात्, तस्मान्नराणां शिवदायकत्वम्।।७।।
इत्थं गुरोरष्टकमुत्तमं य:, प्रभातकाले प्रपठेत्सदैव।
किं दुर्लभं तस्य जगत्त्रयेऽपि, सिद्ध्यन्ति सर्वाणि समीहितानि।।८।।

पुण्यसागरोपाध्याय रचित

१०. जिनदत्तसूरि उत्पत्ति स्तोत्र

सिरि सुयदेवि पसाय करि, गुरु श्री जिनदत्तसूरि।
वंदिसु खरतरगच्छ रमण, सूरि जेम गुण पूरि।१।
संवत इग्यारह वरसइ, बत्तीसइ जय सुजम्म।
वाछग मंत्रि पिता जणणी, बाहड़देवि सुरम्म।२।
इगतालइ जिण वय गहीय, गुणहत्तरइ सुपाटि।

वैशाख वदि छठी दिने, पय पणमइं सुर थाट।३।
अंवड सावय कर लहिय, सोवन अक्खर अंब।
जुगपहाण जगि पइठियउ ए, सिरि सोहम पडिबिम्ब।४।
जिणि चउसठि जोगिणि जणिय, खित्तवाल बावन्न।
साइणि डाइणि विज्झलिय, ए हुवइ नामन इन्न।५।
सूरिमंत्र वलि करे सहिय, साहिय जिण धरणिद।
सावय साविय लक्ख इग, पडिवोहिय जिण वृन्द।६।
अरि करि केसरी दुट्ठ दल, चउविह देव निकाय।
आंण न लोपइ कोइ जगि, पय प्रणमइं नर राय।७।
संवत बार इग्यार समइं, अजयमेरु पुर तांण।
इग्यारसि आषाढ सुदि, सग्गि पत्त सुह झांण।८।
श्री जिनवल्लहसूरि पए, श्री जिनदत्त मुणिद।
विघन हरण मंगल करण, करउ 'पुण्य' आणंद।९।

भद्रमुनि (सहजानन्दघन) रचित

११. जिनत्तसूरि चरित अष्टपदी

[दोहा]

शासननायक वीर जिन, गणधर गौतम स्वाम।
बोधि ज्ञान दाता गुरु, कर के तास प्रणाम।१।
प्रभाविक अड शास्त्र मे, उपदेशे वागीश।
भद्रबाहु आदिक भये, वैसे दत्तसूरीश।२।
उपगारी गुरुराय को, पद्य चरित बनाय।
संक्षेपे श्रोता सुनो, भक्ति भाव जमाय।३।

[राग-भैरवी]

श्री जिनदत्तसूरि सुगुरुवर, युगप्रधान-धुरी सुगुरुवर।श्री०।
हुम्बड कुल ज्ञाति दीपक जो, मन्त्रीश्वर वाछग श्रावक वो।
धवलक रम्य पुरी, सुगुरुवर।श्री०४।
बाहड़देवी उदरे आये, ग्यारे बत्तीसे जन्म निपाये।

सोमचन्द्र नूरी, सुगुरुवर।श्री०५।

खरतर विरुदी जिनेश्वरसूरि, धर्मदेव पाठक हजूरी।

पावे ज्युं लोह तुरी, सुगुरुवर।श्री०६।

सोमचन्द्र वैरागे भीना, ग्यार इकताले दीक्षित कीना।

पाई सिद्धान्त भूरि, सुगुरुवर।श्री०७।

[दोहा]

अंगोपांगाध्ययन कर, भये गीतारथ आप।
मिथ्यामत तम भेदिने, स्याद्वाद शर चाप।८।
रची वृत्ति नव अंग की, अभयदेव सूरीश।
जिनवल्लभ तस पाट पर, भये परमयोगीश।९।
ग्यारह गुणहत्तर समे, पद ठावै गच्छ ईश।
चउविह संघ चित्तोड़ मे, श्रीजिनदत्तसूरीश।१०।

[राग आसावरी]

भये गुरु अतिशय महिमाधारी, पाई शासन रखवाली।भ०।
चित्तोड़ अरु विक्रमपुर नयरे, वज्र स्तम्भ मन्दिरों।
मन्त्र पोथी ग्रही निज शक्ते, जीते बावन वीरों।भ०११।
जोगणियां चौसठ व्याख्याने, गुरु छलने कुं आवे।
खीली गई तब शीश नमावे, वर सप्तक बगसावे।भ०१२।
सिन्धु पंच नदी पंच पीरो, पंथिक जन दुखकारी।
आत्म बले निज दास बनाये, ऐसे गुरु उपकारी।भ०१३।
पक्खी पडिकमणे अजमेरे, जगमग बिजल आवे।
पात्र तले स्थंभी गुरुवर ने, वरदेई अदृश थावे।भ०१४।
युगप्रधान इच्छुक अंबड़ को, अंबिका ने लिख दीना।
युगप्रधान जिनदत्त सूरीश्वर, सच्चारित्र तप पीना।भ०१५।

[दोहा]

पादकमल सेवे सदा, देव देवी तस ईश।
मरुभूमि में कल्प सम,जय जिनदत्तसूरीश।१६।

मरु मालव मेवाड अरु, पजाव सिन्धु देश।
मगध मिथिला गुर्जरि, विचरे मुल्क अशेष।१७।

[राग आसावरी]

समर्या संकट टाले सूरीश्वर।स०।
बड़नगरी ब्राह्मण निज चैत्ये, गरी गौ रख दीनी।
व्यन्तर द्वारा वो गुरुवरने, शिव-पिण्डाधीन कीनी।स०१८।
विक्रमपुर माहेश्वरियो को, हैजा रोग सताया।
जैन बनाकर कष्ट मिटाया, मिथ्या तिमिर हटाया।स०१९।
भणसाली का गोत्र बचाया, सेवक जहाज तिराया।
कष्ट क्षयादि कइयक रोगी, गुरु कृपामृत पाया।स०२०।

[दोहा]

मंडोवर जालोर अरु, रत्नपुरा नरेश।
लौद्रव जेसलमेर अरु, चन्देरी पुरेश।२१।
अम्बागर पुर राजवा, बोधे भविक अनेक।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य मिल, सहस तीस लख एक।२२।
सर्व-देश-विरति धरा, केइक समकितवन्त।
जैन संघ-वृद्धि करा, उपगारी भगवन्त।२३।

[राग - वेर वेर नही आवे]

अजमेर नगरे आवे, गुरुवर।अ०।
शेषायु निज ज्ञाने जानी, अन्तिम अनशन ठावे।यु०२४।
वार इग्यारे देवशयनी दिन, सुधर्म कल्पे जावे।यु०२५।
टक्कलक नामे विमाने, मह ऋद्धिक सुर थावे।यु०२६।
एक अवतारी कारज सारी, मुक्तिनगर मे जावे।यु०२७।
ओम् न्हीं श्रीं क्लीं व्लूँ गुरुनामे,जपते दर्श दिखावे।यु०२८।
दो न्यूना दो सहस विक्रम(१९९८),गुरु वियोग दिन आवे।यु०२९।
श्री जिनरत्नसूरि चरणानुज, 'भद्र' गुरु स्तव गावे।यु०३०।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

१२. जिनदत्तसूरि अष्टक

(हरिगीतिका छन्द)

जो जैन-शासन-भवन के पावन परम आधार थे।
संसार के उपकार-कारक धर्म के अवतार थे।।
दादा प्रभावक नामकं गुरुदेव दिव्य गुणाकरं।
जिनदत्त-सूरीश्वरमहं वन्दे परम - योगीश्वरम्।।१।।
निज योग-बल वर ब्रह्म-बल खींचे असुर-सुर सर्वथा।
सेवक बने सविनय करे जिनकी सदा कीरति-कथा।।
सत्यार्थ-बोध-निधान पुण्य-प्रधान नत जन सुखकरं।
जिनदत्त-सूरीश्वरमहं वन्दे परम-योगीश्वरम्।।२।।
तत्काल युग कल्याण हित जिनने विहार यहाँ किये।
उपदेश दे लाखों जनों को सत्य-पथगामी किये।।
अज्ञान का अन्धेर हर कर भर दिया तेजो भरं।
जिनदत्त-सूरीश्वर-महं वन्दे परम-योगीश्वरम्।।३।।
पंजाब पंच नदी किनारे पीर पांच उपद्रवी।
जिनके प्रतापाक्रान्त हो हो शान्त वे सेवें सभी।।
संयमि-शिरोमणि पूज्यपाद गुणाभिरामं युगवरं।
जिनदत्त-सूरीश्वरमहं वन्दे परम-योगीश्वरम्।।४।।
की क्षेत्रपालक खोड़िया ने एक बार कुचाल थी।
पर पास उन गुरुदेव के सच्ची क्षमा की ढाल थी।।
आखिर स्वयंसेवक बना बस मान गुरु को हितकरं।
जिनदत्त-सूरीश्वरमहं वन्दे परम-योगीश्वरम्।।५।।
देवोपसर्ग विशेष से जब पंचनद जल बढ़ गया।
आश्रित मनुज तारक तभी गुरुदेव कम्बल हो गया।।
महिमामयं परमोदयं विशदान्वयं सुखसागरं।
जिनदत्त-सूरीश्वरमहं वन्दे परम-योगीश्वरम्।।६।।

वर योगिनी चोसठ व बावन वीर जिनके दास थे।
अजमेर आदिक के नृपति भी भक्त जिनके खास थे।।
भगवान् जिनहरि पूज्य श्री विभु वीर-शासन-भास्करं।
जिनदत्त-सूरीश्वरमहं वन्दे परम-योगीश्वरम्।।७।।
सुकवीन्द्र कीर्तित दिव्य जीवन भाव वे प्रख्यात है।
इतिहास मे वर्णित सभी दर्शन सुखद आवाद हैं।।
निर्भयकरं भव-भय-हरं अजरामर जय-जय-करम्।
जिनदत्त-सूरीश्वरमहं वन्दे परम-योगीश्वरम्।।।८।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

१३. जिनदत्तसूरि अष्टक

(हरिगीतिका छन्द)

श्री सिद्धाचल रैवतगिरि से पावन सोरठ देश जहाँ।
श्रीधवलक्का उत्तम पत्तन स्वर्गपुरी को जीत रहा।।
वही जिन्हो का जन्म हुआ था मलयाचल मे ज्यो चन्दन।
उन दादा जिनदत्तसूरि वर, पद-कमलो में हो वन्दन।।१।
पवित्र हुम्बड़ गोत्रिय मंत्री वाछिगसा गृहिणी आर्या।
रोहण पर्वत भूमिसी थी श्री वाहड़ देवी वर्या।।
रत्न रूप जो जन्मे उससे हृदय तिमिर हरने वाले।
सत्सुवर्ण सद्रूप विधाता शिव पथ दिखलाने वाले।।२।।
वीत-कलंक कलानिधि जो सर्वज्ञ मौलि मणि रूप हुये।
सोमचन्द्र शुभ संज्ञा वाले दोषाकर तो भी न हुये।।
तीक्ष्ण बुद्धि से बाल काल मे जानी थी जिनने सारी।
विद्या साक्षी मात्र गुरु के सर्व शास्त्र में संचारी।।३।।
वरतर खरतरगच्छीय वाचक धर्मदेव गणिवर मुख से।
भोग भुजंग महाविष नाशक उपदेशामृत पी सुख से।।
शिशु होकर भी मधुर युक्ति से, मात पिता की आज्ञा ले।
उन सद्गुरु का चरणाश्रय ले,साधुमार्ग मे शीघ्र चले।।४।।

इन्द्रिय मत्त गजेन्द्र वृन्द को विना यत्न ही वशी किया।
श्रवण मात्र में गुरु विनय से जैन तत्त्व को जान लिया।।
सोमचन्द्र मुनिवर्य गुणाम्बुधि ज्ञाननिधि जब योग्य हुये।
श्री श्री श्री युगवर श्रीजिनवल्लभ सूरीश्वर स्वर्ग गये।।५।।
देवभद्र सूरीश्वर ने तब जाना गुण पूरण उनके।
पट्ट प्रभाकर सोमचन्द्र का लायक नायक मुनिगण के।।
सम्मान स्नेह से दे शुभ समये,सूरिमंत्र की शुद्ध क्रिया।
संज्ञा श्री जिनदत्तसूरि दे वर्याचार्य पदस्थ किया।।६।।
श्री चितौड़ दुर्ग मे पाकर ज्ञान-भूरि सूरि पद को।
प्रवचन युक्ति प्रौढ शक्ति से नाश किया वादी मद को।
बावन वीर योगिनी चौसठ पंच पीर प्रभृति उनके।
ब्रह्मचर्य तप योगशक्ति से थे सेवक नित चरणन के।।७।।
अम्बड़ श्रावक शस्त हस्त मे अम्बा लेखित लेख लिये।
युगप्रधान दर्शन को फिरता भूरि सूरिजन देख लिये।।
आया इनके पास दिखाया हाथ शीघ्र ही तब उसने।
किसी शिष्य ने वांच दिया जब,वासचूर्ण डाला उनने।।८।।
मरे हुये भी धर्मोन्नति-हित, जीवित जैसे बना दिये।
व्यन्तर द्वारा दया-सिन्धु ने, कितने ही उपकार किये।।
पात्र मात्र मे पड़ती बिजली रोकी थी जिन ने भारी।
दूर किये थे जहां गये वहां भूत प्रेत व्यन्तर मारी।।९।।
संघ समुन्नति करके जिन ने एक लाख पर तीस हजार ।
सर्व जाति के जैनेतर को देकर के नित बोध अपार।।
जैन धर्म में वीर वनाये श्रावक के व्रत को धरनार।
पन्द्रहसौ के करीव जिनके था साधु साध्वी विस्तार।।१०।।
जिन की यशः सिन्धु महिमा से, स्पर्द्धा को कटिबद्ध हुआ।
मल मलिन जड़ता परिपूरण, सागर गागर रूप हुआ।।
जिससे तो यह नीच आज भी निज छीछरता दुर्गुण से।

ईर्ष्या क्षार विप सदा उगलता,
त्याज्य हुआ सज्जन गण से।।११।।
ऐसे यशोधन महा तपोधन चारु चरित्र पवित्र सदा।
उत्सूत्रोद्घाटन परिपाटन करते उचित विहार मुदा।।
सत्य अवाध्य सदा श्रद्धेय सु स्याद्वाद शैली धरते।
मरुधर वर अजमेर नगर मे,
भव्य जीव अघ को हरते।।१२।।
वारह सौ ग्यारह आपाढ सुदि ग्यारस को स्वर्ग गये।
पुण्य मूर्त्ति पूर्णायु होकर आत्म ध्यान मे लीन हुये।।
इकावतारी भवभय-हारी, सीमन्धर स्वामी बोले।
उन दादा जिनदत्त सूरि की,
हरि 'कवीन्द्र' जय जय वोले।।१३।।

जिनहरिसागर-सूरि रचित

१४. जिनदत्तसूरि अष्टक

(हरिगीतिका छन्द)

साधु वेश ने पासत्यो ने जव पाखण्ड जमाया था।
अविधि पूरण आडम्वर का अन्धकार अति छाया था।।
दिव्यज्योति प्रकटाई जिनन तब सुविहित-पथ दिनकर की।
जय हो युगवर परमप्रभावक,
श्रीजिनदत्त-सूरीश्वर की।।१।।
वाच्छिग मंत्री बाहड़देवी-नन्दन नन्दन रूप हुये।
कल्याणाचल राजित विबुधानन्दन यतिजन भूप हुये।।
जिनकी सेवा करते सुर-नर वृत्ति धरते अनुचर की।
जय हो युगवर परम प्रभावक,
श्री जिनदत्त-सूरीश्वर की।।२।।
धर्मदेव पाठक से पंच महाव्रत वीर-प्रतिज्ञा ले।
बालकपन की लीला मे ही दुर्गुण दोष सभी टाले।।

आतम बल से परिषह-सेना जिनने जल्दी से सर की।
जय हो युगवर परम प्रभावक,
श्री जिनदत्त-सूरीश्वर की।।३।।
श्री जिनवल्लभ-सूरीश्वर गुरु पट्ट कमल उल्लासन में।
षड् द्रव्यों की बाह्याभ्यन्तर प्रकृति के प्रभासन में।।
जड़ता हरने में फिर करते बराबरी जो भास्कर की।
जय हो युगवर परम प्रभावक,
श्री जिनदत्त-सूरीश्वर की।।४।।
सुविधि विषय गुरु पारतंत्र्य की पावन गंगा प्रकटाई।
त्रिविध तापमय कुविधि विषय कश्मलता जिनने विघटाई।।
निर्भय हो दी भव्य जीव को भव्य देशना अवसर की।
जय हो युगवर परम प्रभावक,
श्री जिनदत्त-सूरीश्वर की।।५।।
जिनने शुद्ध सरलता से ही जिन-सिद्धान्त विचारा था।
सच्चा है सो मेरा है यों सत्याग्रह को धारा था।।
हित शिक्षा दे युक्ति-पुरस्सर कुमति हरते जो पर की।
जय हो युगवर परम प्रभावक,
श्री जिनदत्त-सूरीश्वर की।।६।।
जिनके नाम मन्त्र जपते ही मिलते है वांछित मेवा।
योग-तपो-बल खींचे योगिनी वीर पीर करते सेवा।।
जिनके भक्तों को न सतावे भूत-प्रेत-व्यन्तर मरकी।
जय हो युगवर परम प्रभावक
श्री जिनदत्त-सूरीश्वर की।।७।।
सुखसागर भगवान् सुगुरु है सच्चे जग में उपकारी।
ग्राम-नगर-पुर-थम्भ विराजे परतिख परचा जयकारी।।
'हरि' गुरु पूजो ध्यावो प्रेमे पावो पदवी शिवपुर की।
जय हो युगवर परम प्रभावक,

श्री जिनदत्त-सूरीश्वर की।।८।।

जयचन्द रचित

१५. जिनदत्तसूरि छन्द

(तर्ज-जय जय आचारज)

जसु हृदयकमल गुरु नाम वसे, तसु सरसति वदन सदा उलसे।
वरसाते हाथ लिये धरती, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।१।।
संवत् ग्यारे सौ वरसे, वत्तीसे जनम्या शुभ दिवसे।
जसु वाच्छग वाहड़दे मुंहती, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।२।।
इगताले शुभ व्रत ग्रहण कियो, गुणहतरे जिन सूरि मन्त्र लियो।
थाप्या जिनवल्लभ पाट पती, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।३।।
लिख दीधो अम्वा अम्वड़ करे, दासानुदास सोवन अक्षरे।
वांच्यो पद जुग वर निज उगति,जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।४।।
जोगण जिन थंभी नें राखी, वरसात लियां गुरु सहु साखी।
थंभी वली विजली भुंय पड़ती,जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।५।।
दिल्ली ने भरुअच्छ उज्जयणी, अजमेर बसे चौसठ जोगणी।
मन में अभिमाने जे वहती,जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।६।।
प्रतिवोध्या श्रावक लाख जिणे, वश कीधा सुर नर नार तिणे।
तसु वरस गुण्यासी आयु वरती,जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।७।।
सम्वत् वार इग्यार समें, आषाढां जाणो शुभ दिवसे।
शुभ ध्यान थई सुरलोक गती, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती ।।८।।
अजमेरे सद्गुरुना पगला, समरथ जे आय नमे सगला।
खेवे धूप करे आरती, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती ।।९।।
न्हाही निर्मल धोती पहरी, घस केशर चन्दन अति सखरी।
शुभ भक्ते पूज करो सुमति, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती ।।१०।।
सुर किन्नर नर नारी राया, आवी लागे जेहने पाया।
जसु आणा मांने महियपति, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती ।।११।।
परदेशे भमंता कांई फिरो, घर बैठा सद्गुरु ने समरो।

जेहने न हुवे दोषी कुमती, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती ।।१२।।
जिनदत्त सूरिजी ना गुण गावे, तसु विघन व्यथा दूरे जावे।
पावे 'जयचन्द' दौलत चढ़ती, जपिये श्री जिनदत्तसूरि यती।।१३।।

जिनहर्षसूरि रचित

१६. जिनदत्तसूरि छन्द

(देशी - विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, एहनी)

मुझ सकल मनोरथ आज फल्या, दुख दोहग दालिद दूर टल्या।
सुकृत संयोगे सुदिन वल्या, जिनदत्तसूरि सूरीस मिल्या।१।
लाधी कमला लील घणी, अब आव्या अजमेर भणी।
तव भाग्यदशा भली आज वणी, जब मया हुई श्री सुगुरु तणी।२।
थुम्भ सकल नयणें निरख्यौ, मुझ अंग अमी सम घन वरस्यौ।
जात्रा करी जीउ मैं हरख्यौ, अरि दल बल गंजण गुरु परख्यौ।३।
चौसठि जोगिणी आंण वहे, मुख अहनिसि सद्‌गुरु सुगुण कहे।
व्यंतर वीज गुमान वहे, तुझ नाम लिया कर जोड़ि रहे।४।
जे आपे सबला सात वरो, जे सकल संघ उपगार परो।
वसुधा वडभागी विघन हरो, श्री खरतरगच्छ आणंद करो।५।
तुम नांमे भवियण भय भाजे, घर पंच सबद वाजित्र वाजे।
हीसंता हयवर बहु छाजे, वलि मयमत्ता मैगल गाजे।६।
कामकुम्भ कामित पाया, वलि नव निधान मुझ घर आया।
सकल कुशल निरमल काया, जब तूठा श्री सद्‌गुरु पाया।७।
करे कुंकुम चन्दन कुसुम करैं, वलि मगद मनोहर थाल भरै।
पूज करी सद्‌गुरु समरै, ते नर जग मांहे लच्छि वरै।८।
श्रीजिनवल्लभसूरि तणे, पाटे गुरु उदयो सुजस घणे।
सेवक ना संकट सकल हणे, इम 'श्रीजिनहर्ष' मुणीस भणे।९।

जिनोदयसूरि रचित

१७. जिनदत्तसूरि छन्द

(देशी-विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली)

वर लच्छि विलास सुवास मिले, गुरु नामे मन री आस फले।
दोषी दुश्मन सब दूर टले, सहसा बहु संपति आय मिले ।।१।।
जय जय जिनदत्त सूरिन्द यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती।।
जसु नाम रहे नही पाप रति,जेहनी महिमा जग मांहि अति ।।२।।
शुभ मंगल लील विलास सदा, दुःख रोग दुकाल न होय कदा।
आराध्यां आवे सुगुरु मुदा, सुप्रसन्न हाजर होय तदा ।।३।।
जिण जीती चौसठ योगिनियां, वश बावन खेतल वीर किया।
जसु नाम न पड़े वीजलियां,भूतप्रेत न कर सके छल वलियां।।४।।
जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण पुल बांधी।
उपगार किया कीरत लाधी, वरसात लियां गुरु सिद्ध वाधी ।।५।।
सुत मुगल कियो सरजीत वहू, पाये लागा नर नार सहू।
जिण साधी विद्या वेश लहू, प्रतिवोधी श्रावक कीध बहू ।।६।।
वड़नगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लई जिन चैत्य धरी।
गुरु मंत्र वले जीवित उधरी, विप्र वेश सहू गुरु पाय परी ।।७।।
वज्रमय थंभो दोय खण्ड कियो, पोथी परगट परभाव थियो।
विद्या सोवन वरणे सझियो, वर नगर उज्जैनी सुयश लियो ।।८।।
गुरु हुँवड़ वंशे जीव दया, मंत्री वाछिग परसिद्ध थया।
वाहड़दे कूखे जनम भणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ।।९।।
इग्यारे बत्तीसे जनम भणूं, इग्यार इगताले दीक्षा थुणूं ।।
युगवर इग्यारे गुणहत्तरे, स्वर्गे बारे सै इग्यार करे ।।१०।।
जिनवल्लभसूरि पटो धरणं, परभाव उदेसर भय हरणं।
नवनिधि लछमी संपति करणं,
वलि विकट संकट आरति हरणं।।११।।
थुंभ सकल श्री अजमेरे, गढ मंडोवर बीकानेरे।
सुखदायक श्री जेसलमेरे, दीपे गुरु गाजीखान डेरे ।।१२।।
मुलतान नगर महिमा सागे, भावत दारिद्र दूरे भागे।
डेरे इस्माइल खान सोभागे, गुरुवर पुर मे कीरति जागे ।।१३।।

धन धन जे सद्गुरु ध्यान धरे, तेरे न्हवन पूजा जेह करे
गच्छ खरतर नी महिमा पसरे,
कवि 'सूरि उदयजिन' कीरति करे ॥१४॥

दयामेरु रचित

१८. जिनदत्तसूरि छन्द

(तर्ज -- विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली)

मन वंछित पूरण जग चावो, जिनदत्त सूरीश्वर गुरु ध्यावो।
आपद तसु नाम थकी विघटे, अणचिन्ती लच्छी घरे प्रगटे॥१॥
तुम्ह सुजस तणो पार न पाऊं, पिण भक्ति थकी तुझ नै ध्याऊं।
हुँवड़ गोत्रे बाहड़दे माता, धुंधुका नगरी वाछिग ताता ॥२॥
संवत् इग्यारे बत्तीसे, जनम्या शुभ महुरत शुभ दिवसे॥
दीक्षा इग्यारे इकताले, गुरु षट काया आश्रव टाले ॥३॥
गुणहत्तर छट्ठ वैशाख वदी, चित्रकूटे थाप्या गच्छपति ।
मन्दिर थंभे पोथी जाणी, विद्याबल निज पासे आणी ॥४॥
जोगणियां श्राविका रूप कियो, उज्जयणी मै उपयोग दियो ।
बैसण बाजोटा तासु छले, गुरु कीली ततखिण मंत्र बले ॥५॥
बड़नगरे ब्राह्मण मृतक गऊ, जिन मन्दिर द्वारे जाण सहू ।
विद्याबल ब्राह्मण पाय नम्या, गुरु महर धरी अपराध खम्या॥६॥
तिहां मुगल तणे सुत जीव दियो, सांभेला मांहे संग कियो।
वीजली पात्र तले राखी, ये विरुद तणा छे सहु साखी ॥७॥
गिरनार-मंडण अम्बा देवी, अट्ठम भजे अंवड़ सेवी।
हुय परगट करतल वरण लिख्या, बाचंता युगपरधान लख्या॥८॥
भर दरिये प्रवहण पार कर्यो, समरन्तां पंखी रूप धर्यो।
जल अगन चोर श्वापद केरा, भयभंजन नाम सुगुरु तेरा ॥९॥
तुझ सुनिजर शत्रु पाय नमै, सुत हीण स्त्रियाँरै पुत्र रमैं।
खरतर गच्छ नायक गुरु राया,वहु पुण्य थकी दरसण पाया॥१०॥
संवत् बारे से इग्यारे, सुर असुर नमे त्रिहुँ जग सारे।

इग्यारस सुदि आषाढ तणी, अजमेरे पहुँता स्वर्ग भणी ॥११॥
थिर थापना थुंभे नित राजे, गुरु सुजस तणा वाजित्र वाजै।
बड़ बड़ा नरपति तुम ध्यावे, दरसण करवा जात्री आवे ॥१२॥
समर्था सद्गुरु सुखकारी, जिनदत्त सूरीसर बलिहारी।
चिन्तामणि रयण समो देवा, 'दयामेरु' चाहे सुगुरु सेवा ॥१३॥

सूरचन्द रचित

१९. जिनदत्तसूरि छन्द

(तर्ज - विलसे ऋद्धि समृद्धि मिलि)

आसा पूरण काम गवी, भवियंबुज बोधन चारु रवी।
जिनदत्तसूरि गुण तवउ कवी,
जिम दीपति नितु नितु अधिक छबी ॥१॥
श्री खरतर गच्छि गुरुराजई, जसु महिमा महियल महि गाजई।
जिनवल्लभसूरि पाटि छाजई,
पय पंकय पणमउ हित काजई ॥२॥
संवत इग्यारह ऊपरई, बत्तीसइ जनम्या रयणि भरई।
वर वाछिग मन्त्री नाम धरई, अवतरिया बाहड़दे उअरई ॥३॥
इगतालइ वय गहण करई, गुणहतरई पाटइ राजवरई ।
माहव वदि छट्ठि दिनि सुथिरई,
सुर दानव मानव पाय परई ॥४॥
अंबड सावग लिहिय करई, सिरि अंबा सोवनमय अक्खरई।
वांची प्रगटिउ ओणिअरइ, वर जुगवर महिअलि पुण्य भरई ॥५॥
ततखिणी दिल्ली नाम पुरई, जसु चउसट्ठि योगिणी वर सुधरई।
ग्राम ग्राम प्रति प्रथम वरई,
इक्क उदयी श्रावक तिम नगरई ॥६॥
खरतर श्रावक सधन धरई, तिम खरतर कुमरणि कदि न मरई।
खरतर यतिनी पुष्पु टरई, गुरु नामइ साईणी थी न डरई ॥७॥
गुरु समरणि विज्जुरी न परई, जो सिधि वसई सो धन उधरई।

अे वर सात वरी उपरई, सव जोगिणी हरखित दुख हरई ।।८।।
माणिभद्र तदनन्तरई, वली सात सुवर अे ऊचरई।
जो जिनदत्त पाटइ पसरई, साधेवि पंच नदी सुगुरुई ।।९।।
वी सहस गुणीयई सूरि वरई, सूरि मंत्र पवित्र निरंतरई।
बि सहस साधु सिज्झाय करई, तिम श्रावक साते समरणई।।१०।।
खरतर संघि सदा त्रिसती, खीचड़ी य गुणेवि सासती।
मास मांहि घर घर ही प्रति,
बे आंबिल करवा सगति छती ।।११।।
आतम सगति अनुसारि सदा, अेकासण साधु करई प्रमदा।
माणिभद्र वर सात हुदा, सुणि भगतिइ प्रणमइ सुगुरु पदा ।।१२।।
चउसठी जोगिणी जीपी करी, जस बावन वीरे आण धरी।
सूरिमंत्र जिणि ध्यान धरी, धरणिन्द सुसाध्यउ सगति खरी।।१३।।
अेक लाख श्रावक श्राविका, पड़िबोहिय गुरु सप्रभाविका।
सुर नर असुर सवे भावी, जसु सेव करई गुरु गुण गावी ।।१४।।
अजमेर उज्जेणी नई दिल्ली, भरुअच्छई जोगिणी जिण खिल्ली।
अवर अनेक असुर पिल्ली,
जिणि कीरति तिहुअण मइं घिल्ली ।।१५।।
संवत बार इग्यार समई, आसाढ इग्यारसि सुद्धतमई।
अजयमेरु पुरि सयर समइ, श्री जुगवर सुरवर ठाणि रमई।।१६।।
जुगवर जिनदत्तसूरि गुणा, जे ध्यावई अहनिसि भविय जणा।
राज रिद्धि तसु अतिय घणा,
गणि 'सूरचन्द' हिव सफल दिणा ।।१७।।

रुघपति पाठक रचित

२०. जिनदत्तसूरि छन्द

दोहा

वरदायक हंसवाहिनी, शारद मात सहाय।
त्रिभुवन सुख दातार तू, कीरती किती कहाय।।१।।

जग मांहे पण्डित जिके, बांचे अविरल वाण।
ते प्रसाद सहु ताहरो, अगम निगम अहिनाण।।२।।
वाणी वलि व्याकरण री, वैदक तेम विन्नाण।
कवि मुख वासो तूं करे, तद रीझे राजान।।३।।
श्री सद्गुरु सीखाविया, भाषा षट् रस भेद।
जण जण मुख वाणी जुई, सुणतां वधे उमेद।।४।।
गाऊँ गुण गच्छपति तणा, पदवी युगप्रधान।
जग पुर महिमा जागती, श्री जिनदत्त सुजाण।।५।।
ज्यां सेव्यो त्यां जाणियो, ओ अवलियो मरद्द।
जलवट थलवट जुगती सुँ, समर्या दिये सबद्द।।६।।
इण खोटे पंचम अरे, पुहवी बड़ी प्रसिद्ध।
गाम गाम कोटे गढ, नगर नगर नव निद्ध।।७।।

(छन्द-जात सारसी)

नवनिद्ध रिद्ध प्रसिद्ध वाधे गुरु जप्यां गहगाट अे,
सुर असुर ऊभा करे ओलग थांन आगल थाट अे।
परचा देखालण कष्ट टालण, गच्छ खरतर खन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त अे ।।८।।
संवत इग्यारेसै बत्तीसे सागवाड़ सुराज अे,
मन्त्रवी वाच्छिग गोत्र हूँबड गूंजता गजराज अे।
तसु धरणी बाहड़ देवी नामे सत्तशील सझन्त ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।९।।
शुभ स्वप्न सूचित पुत्र जनम्यो वदे कवि वंसावली,
वाजिया ताल कंसाल बहुविध राग रंगे मन रली।
दश दिवस बोल्यां हिव दसूठण पोखिया कर पंत अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।१०।।
तिण काल तिणहिज समे तिण पुर देख उच्छव हरख सूं,
गुरु नाम जिनवल्लभ जतीसर पूजिया कर परख सूं।

तप जप्प संयम दयापालक किरण जिम जसु क्रान्तए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ॥११॥
तसु पाय प्रणमी अंग उल्लट आण मन उछरंग अे,
इग्यारसै इकताल संवत ग्रह्या व्रत गुरु संग अे।
जिन वचन किरिया शुद्ध साधन आण मन एकान्त ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ॥१२॥
इग्यार अंग उपांग वारे भेद भाव भला भण्या,
गुरु वचन सहितां विनय वहिताँ सूत्र सहि अरथे सुण्या।
सत शील संजम शुद्ध समकित सहू विध सीखन्त ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ॥१३॥
गुरु देख अणिमा शिष्य महिमा वलिय गरिमा गंज ए,
सगला ही शिष्यों मांहि दीपक राव राणा रंज अे॥
उद्योतकारी ने आचारी शुद्ध धर्म सझन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ॥१४॥
अनुक्रमे दिन दिन पुण्य वधते ऊपनी मन आसता,
परसिद्ध घट वयराग प्रगट्यो सरदहे गण सासता।
परिणाम गंगा नीर निरमल खरी धर मन खन्त ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ॥१५॥
निज पाट थाप्या करी महोच्छव इग्यारसै गुणहोत्तरे,
सूरिमन्त्र साधन गुरु आराधन, चंडिका सेवा करे।
मन मांहि आंणि गुरु परंपर मन्त्र शक्ति महन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ॥१६॥
गुरु विधे पुर गिरि नयर परिसर सुख विहारे विचरता,
संवेग रंगे साधु संगे धर्म चरचा चरचता।
राजान राणा पाय आवे भेटवा वहु भंत अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ॥१७॥
'जालोर' नयरे मरिय जाणि 'सगर' नृप चहुआण अे,

तसु पुत्र 'बोहित्थ' तेण गुरु पय प्रणमिया गुण जाण ए।
जीवाड़ियो कर जाप जिनदत्त जैन धर्म सझन्त ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।१८।।
अजमेर नयरे तीर्थ पुहकर 'राव नाहड' रंग ए,
तस पोतरो वामदेव नामें कियो उज्जल अंग ए,
कूकड़ा वरणी गायनो घी चोपड़ायो सन्त ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।१९।।
परचा दिखाले दुरिय टाले मन्त्र शक्ते मोहनी,
उपगारकारी दयाधारी शोभ जग मे सोहनी।।
सोवर्ण वर्णी कीध काया राव सहु रीझंत अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२०।।
बड़ बड़े गामें ठाम ठामे भूपति प्रतिबोधिया,
इक लक्ख ऊपर सहस तीसां कलू में श्रावक किया।
परचा देखाड़्या रोग झाड़्या लोक पाय लसन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२१।।
मुलतान मीरां पंच पीरां पंच नदियां परिसरे,
चौसट्ठि जोगणि वीर बावन देख दुनिया थरहरे ।
जपमाल जपतां जापसुं सब आय पाय पडन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२२।।
वर सात चौसठ जोगणी वलि दिया लीया गुरु कने,
इण ठाम वहिने जिको आसी मान बलबाकल मने ।
परिवार पूरे पाटधारी वचनसिद्ध बधन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२३।।
पडिकमण मांहे वीजलीना देख बहु झबकार अे,
तैं मन्त्र राखी संघ साखी जग सुजस जयकार अे ।
तुम्ह पाय लागी सीख मांगी दुघड़िये दीसंत अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२४।।

अंबड़ सुसावग हाथ अक्षर दासानुदासादिक सही,
गुण युक्त प्रगटे प्रगट अक्षर जाणजे जुगवर वही ।
परसिद्ध जुगप्रधान पदवी अंबिका बगसंत अे,
जिनदत्त सूरीस सद्‌गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२५।।
'सेतरामरे' 'सीह' सामन्त, तासु सुत 'आस्थान' अे,
गुरु पाय लागी ऋद्धि मांगी सकल विधि सुविधान अे ।
पच्छिम दिसि तुम्ह भाग्य फलसी, 'राष्ट्र वंस' वधन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्‌गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२६।।
हिव 'उच्चनगरे' बड़े उच्छव आविया इण थानकै,
सुरपति पुत्र प्रमाण जाणी अंजस मन में आणकै ।
करी जाप विद्याबल बुलाओ हर्ष लोक हसन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्‌गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२७।।
इण विधे 'विक्रमपुर' विहारे मरि उपद्रव मेटियो,
करि शान्त वाणी छांट पाणी सर्व रोग समेटियो ।
श्री संघ सघलो सुयश आखे कवि कीर्ति कहंत अे,
जिनदत्त सूरीस सद्‌गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२८।।
'बड़नगर' मांहे अेक ब्राह्मण जैनद्वेषी जाण अे,
देहरा द्वारे मृतक गमनी घींस नांखी आण ए ।
परकाय में परवेश विद्या प्रकट करे पर सन्त अे,
जिनदत्त सूरीस सद्‌गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।२९।।
उज्जैन नगरे देव यात्रा वज्र थम्भ विचाल अे,
प्रच्छन्न विद्या सोवनी विधि, तिण समै ततकाल ए ।
लघु लाघवी करी उरी लीधी दिवस तिण दीपन्त ए,
जिनदत्त सूरीस सद्‌गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।३०।।
सम्वत बार इग्यार वच्छर गुरु थया निरवाण ए,
आषाढ मासे तिथि इग्यारस शुक्ल पक्ष सुजाण ए ।
अजमेर नगरे बड़े उच्छव पादुका पूजन्त ए,

जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।३१।।
इम विरुद बहुला जगत मांहे, कवी कहो कुण कहि सके,
सुर असुर सगला पाय नामी ताहरो सरणो तके ।
दौलत्त दाता सुक्ख साता पुहवी जस पसरंत ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।३२।।
छल छिद्र साइणी डायणी सहि भूत प्रेत भयंकरा,
जिनदत्त जापे तुरत त्रापे प्रसन्न होय जावे परा ।
वली रोग सोग कदे न व्यापे गुणीजन गहकंत अे,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।३३।।
वली वाट घाटे शत्रु साटे कष्ट काटे केतला,
शुभ रूप पुत्र कलत्र संतति जीव चाहे जेतला ।
भूखियां तिसियां दिये भोजन अचल जस आखंत ए,
जिनदत्त सूरीस सद्गुरु सेवतां सुख सन्त ए ।।३४।।

(कलस - कवित्त)

श्री जिनदत्त सुरिन्द जसु आखे जग सारो,
श्री जिनदत्त सुरिन्द आज थांरो वरतारो ।
श्री जिनदत्त सुरिन्द सेवतां ऋद्धि समप्पे,
श्री जिनदत्त सुरिन्द कष्ट कंदल सब कप्पे ।।
विद्यानिधान पाठक विनय, श्री 'रुघपति' पाठक सरु ।
गुणताल समे गहगाहट सूं, रचियो छन्द मनोहरु ।।३५।।

वादी हर्षनन्दन रचित

२१. जिनदत्तसूरि छन्द

जोगीसर जिणदत्तं, सूरीसर अजयमेरु संपत्तं ।
खरतरगच्छ सुभत्तं,पणमिसु पयकमल तासु हुं नित्तं ।।१।।
बाहड देवी मात बखाणं, वाछग मंत्रि पिता जसु जाणं ।
हुँबड़ वंश विभूसण भाणं, सो सद्गुरु सेवो सुविहाणं ।।२।।
इग्यारह बत्तीस मई, जनम दीख शुभ ध्यान ।

इगतालईं गुणहत्तरईं, प्रतप्यउ पाटि प्रधान ।।३।।

छन्द

बालवई भावे जिण लीध दिक्खा, सहज मई साधु सिध्धन्त सिक्खा।
सर्व शास्त्रां तणउ सार सोहउ, मूल सूत्रे मिली मन्न मोहउ ।।४।।
पूज्य जिनवल्लभई पाटी दीधउ, सूरि मंत्रई जपई सर्व सिध्धउ ।
अंबिका दीध सोवन्न वण्णे, युगप्रधान जागउ सुवण्ऐ ।।५।।
शाकिनी डाकिनी सेव धावई, वीर बावन्न सरण मां जावई ।
भूत प्रेतां तणा लाभ भंजई, भीर भांगी महामन्न गंजई ।।६।।
अगम मरकी महा संकट कापी, शिष्यणी शिष्य थिर आप थापी ।
चमकती वीज घण साथ चूकी,
काचली मंत्री तलि घाली मूकी ।।७।।
पाटला पूठी पर ठेप धारी, योगिनी साठि अरु चार हारी ।
सहम धरि देखी गुरु हाथ साचा,
आय साणी दियई सात वाचा ।।८।।
ध्याविइ पद्मावती धरणिन्द देव, लाख सेवक करई पाय सेव ।
चैत्य शिव शासनि मारि गोवउ,
रुद्र सिर पर ठव्य उसोई सावउ ।।९।।
पाखंडि प्रीत तउ प्रथम जोड़ि, कार सेवा करामाति फोडी ।
उच्चनगर इम उच्छव प्रवेश, म्लेच्छ निर्जीव सजीव वेश ।।१०।।
पंच नदियां जिठइ नीर भेला, नावि थंभावि मझराति वेला ।
जन्नु मांगा मिलन हांक वीरा, साधिया पंच उल्लंठ पीरा ।।११।।
सूरि हरिभद्र सुभ मंत्र पोथी, सोधतां कीध निज हाथ सोथी ।
चित्रकूटई महा थंभ चंप्यउ, देव सगतई सिलामंत्र सुप्यउ ।।१२।।
बार इग्यार आषाढ मासई, स्वर्ग सुख संपत्तउ शुभ निवासई ।
ध्यान धरि जेह नर चित्त ध्यावई,
ऋद्धि अड़ सिद्धि नव निद्धि पावई ।।१३।।

कलश - (छप्पय)

काचवत निकलंक शील गंगेव संभारी,
भविक भूख भावठि भीम भय भंजन भारी ।
भगति मुगति दातार सयल संघह सुख कारण,
अड़वड़ियां आधार पार संसार उतारण ।
जागतउ मर्द जिणदत्त, भेटि मेटि आपद मरण ।
कर जोड़ि 'हर्षनंदन' कहई,
सुप्रसन्न होई अशरण शरण।।१४।।

२२. जिनदत्तसूरि छन्द

(तर्ज -- विलसे ऋद्धि समृद्धि मिलि)

जन जन मुखसे निकली वाणी, जिनदत्तसूरीश्वर महाज्ञानी ।
ध्यानी तपसी सानिधकारी, वचनामृत जिनके दुखहारी ।।१।।
बाहड़दे कुक्षी धन मानी, पितु वाछिग सा कुल नही सानी ।
धन्य धौलका जहां जन्मे, अरु अजयमेरु गुरु निर्वाणी ।।२।।
जय जय जयन्ति गुरुवर की, अक्षय सुख के अधिकारी की ।
अेक भव अवतारी युगवर की, जिन शासन के गणधारी की।।३।।
विद्वज्जन प्रेम का भाजन मुनि, बाल सोमचन्द्र अतिशयधारी।
विनयी विद्यार्थी शीघ्र हुवा, सब शास्त्र ज्ञान का अधिकारी ।।४।।
जग जीवो पर अनुकम्पा से, गुरु हृदय सदा ओत प्रोत रहा ।
जिनशासन-रसी बनाने का, इक ध्यान सदा ही बना रहा ।।५।।
गुरु वल्लभ के पट्ट पर स्थापा, सहु संघ ने आज्ञा शिर धारी ।
अम्बिका दत्त युगप्रधान पद, दीपाया गुरु की बलिहारी ।।६।।
सत्य मार्ग के व्याख्याता, अरु जगजीवन साताकारी ।
कुमति को सुमति का दाता, है विरुद आपका उपकारी ।।७।।
क्या हुई खता हम से गुरुवर, जो किरपा कल्पलता रूठी ।
खड़े द्वार हम है अधीर, दो भीख दया की अनूठी ।।८।।
जिससे सत्य मारग जान सके, अरु विषय पाश को काट सके ।
निजी स्वारथ अरु अहं से बनी, इस फूट खाई को पाट सकेहम

हम अनेक हों अेक रूप, पहिचाने अनेको के स्वरूप ।
ढह जाय फूट का गहन कूप, हो जाय धर्म का सरल रूप ॥१०॥
आवो मिल गुरुवर गुण गावे, अरु प्रेरणा निज आतम पावें ।
करें शान्त कषायों की भट्टियां,समता रस अहोनिसि वर्षावें॥११॥
गुरु चरणां मे नतमस्तक हो, श्रद्धा के पुष्प चढावे हम ।
बाहड़दे कुंवर की जय हो,मन वांछित फल को पावे हम ॥१२॥

कवि ज्ञानहर्ष कृत

२३. जिनदत्तसूरि अवदात छप्पय

..............................बत ज्ञान रिक्ख थिर ॥२१॥
जनम भयउ व्रातकउ, नाम दियउ चाचक ताकउ ।
दुआदस वरस जब भए, कर्यउ राज "कनवज" अवाकउ ।
चढे "सीह" "द्वारिका", जाति करणण कु निश्चल ।
लयउ कुंयर "आसथान", राणी जादुंकउ अट्टल ॥
राव "वरनाथ" साहसीक मणि, जाति चले "सीह" "द्वारिका" ।
"ज्ञानहर्ष" लहे पंचसै सुहड, परभु पर दल मारका ॥२२॥
अस्सुवार सइ पंच लेहु, "सीहउ" यू चल्ले ।
पट्ट थप्पि लहु अनुज, सुहड संग रक्खे भल्ले ॥
सबहु सुं करि भिक्ख, ...स "द्वारामति" डेरे ।
दिद्ध "सींह" महाराज, सुभ्भ महुरत सबेरे ॥
"आसथान" कुंवर आसाढ सिधि, लेहु संग दरकूच चलि ।
"ज्ञानहर्ष"कहइ तिस वार बिच,भयउ इक्क अचरिज्ज इलि॥२३॥
"सिंह" आए "मरुदेस", सुपन इक देख्यउ रानी ।
वृक्ष पाहर सब देस, हम्म अन्तरि बींटानी ॥
चयण सुणि "सीह" यु, चोट वाही हुइ समुहां ।
दिवस ऊगत "सीह" कहत, हुइगउ केर उपणउ जहां तहां ॥
मम करहु राणी क्रोध हम, नीद गमावण हेत हूय ।
'ज्ञानहर्ष' वदति तिस हेत करि, भए राव वर सव्व भूय ॥२४॥

अत्र आख्यान कवित्त

"मारुयारि" कइ देसि, सहिर "पल्लीपुर" अक्खुं ।
तहां हइ पुर नाह, वं (बं?) भ "जस्सोहर" दक्खुं ।।
"खेरनगर" "महेश", "गुहिल-वंशी" हइ राजा ।
मारण "पल्लीनगर" , चढ्यउ सो करत दिवाजा ।।
तिनवार "बंभ जस्सोहरु", वदइ क्युंहि "पल्ली" रहइ ।
कोऊ रखुं आणि आषाढ सिधि, "ज्ञानहर्ष" कवि युं कहइ ।।२५।।
"पल्लिनगर" चउमास, रहे खरतरगच्छ नायक ।
तिन गुरु कउ जस बहुत सुण्यउ, विप (प्र?) लोकां वाइक ।।
ताकउ नाम "जिनदत्त सूरि", मंत्र धारी सूर वर ।
पंच नदी पंच पीर साधि, लिद्धउ सुर कउ वर ।।
"माणभद्द" जक्ख हाजर रहइ, तरउ खरउ सेवा करइ ।
"ज्ञानहर्ष" कहइ गुरु कित्त बहु, पार न सुरगुरु नहु करइ।।२६।।
गुरु पहुंचे "मुलतान", पीर पंच आए नाम सुणि ।
पत्थर पारे पीर, गुरु वरसे कंचण मणि ।।
पीर ग्रहे गुरु पाइ, संघ पइसारउ कीनउ ।
मूयउ मुगल कउ पूत, जीउ गुरु घाले दीनउ ।।
सहु लोग देखि अचरिज भए, इन गुरुका अवदात बहु ।
"ज्ञानहर्ष", कहत "जिणदत्त" की, करत देव कीरत सहु ।।२७।
गुरु करत बखाण, धरे आगे चउसठि गिणी ।
छोटे से पाटले, आइ बइठी तिहां जोगिणि ।।
चउसठि तिय कइ रूप, आई गुरु छलवइ कुं ।
गुरु यूं तिण कूं छली, लेहु उठी पटलइ कुं ।।
पट्टले रहे आसण चढे, करामात गुरु की बड़ी ।
"ज्ञानहर्ष" कहत कर जोड़ि कर, रही देवि चउसठ खड़ी ।।२८।।
करहु दूर पाटले, गुरु हारे हम तुम्ह पइ ।
चाहीजइ कछु बात, लेहु गुरु यूं तुम हम पइ ।।

कहइ गुरु हम साधु, लोभ ममता नहीं करनां ।
परतिख भइ तब देव, रूप बहु चउसठि भइनां ।।
वर सात दइत हरखित भइ, सहु लोगां सुणतां समुख ।
"ज्ञानहर्ष" कहत अवदात यउ,परसिध हइ सब लोक मुख।।२९।।
हइ हइ देव वर सत्त, नाम गुरु लेतां बिजुरी ।
परइ नहीं किस परइ, प्रथम अयउ वर द्यइ सगरी ।।
गाम नगर मणिमत्थ, एकु हुइगउ तुम्ह श्रावग ।
तुम श्रावग "सिन्धु" गयउ, खाट ल्यावइ व्यापारग ।।
वर चउथउ भूत प्रेत ज्वर, आधि व्याधि सबही टरइ ।
"जिणदत्तसूरि" मुखि जप्पतां, "ज्ञानहर्ष" कवि उच्चरइ ।।३०।।
चोर धाडि संकट्ट मिटति, गुरु नामे पंचम वर ।
छठ्ठउ जलहुं तरइ, जउ लूं मुख समरइ सदगुर ।।
सातमउ वर साधवी, ऋतु नावइ खरतर की ।
अयउ वर दे पग परी, बाल सहू कही कइ उर की ।।
समरतां आइ खड़ी रहइ, वीर बावन्ने परवरी ।
"ज्ञानहर्ष"कहत निस निति प्रतइ,करइ नृत्य चउसठ सुरी ।।३१।।
"उज्जेनी" गुरु गए, देखि थांभउ गुरु हरखे ।।
जप्यउ मन्त्र करि ध्यान, लिद्ध पोथी आकरखे ।।
तिस बिच सोवन सिद्ध, गुरु बहु विद्या पाइ ।
"चित्रोर" कइ भण्डार, तहां गुरु जाइ रखाइ ।।
उस पोथी की बात, "कुंयरपाल" राजा सुणी ।
"ज्ञानहर्ष" कहइ "पाटणनगर" नवलख असवारां धणी ।।३२।।
"कुंयरपाल" जिनधर्म, हइ श्रावक पूनम गच्छ ।
श्रावक सर्व बुलाइ, संघ नायक खरतर गच्छ ।।
गुरु यू कुं तुम लिखउ, हेम सिध पोथी आवइ ।
कागद संघ दरहाल, भेज पोथी मंगावइ ।।
गुरु लिख्यउ वचल पोथी परइ, छोर न पोथी बांचनी ।

"ज्ञानहर्ष" कहइ भण्डार बिच, रख कइ पोथी पूजनी ।।३३।।
गुरु "कुंयरपाल" कउ, "हेम" नामइ आचारिज ।
तिण पइ पोथी धरी, छोरि बांचउ गुरु आरिज ।।
कहत गुरू हम वतई, अया छोरी नवि जावई ।
साधवी गुरु की भइन, छोरितां आंख गमावइ ।।
पुस्तक्कि उडि भण्डार बिच, "जेसलमरन" कइ परी ।
"ज्ञानहर्ष" कहत तिस जाइगा, रक्खइ बहु चउसठ सुरी ।।३४।।
परकमणइ बिच बीज, परत रक्खी गुरु ततखिण ।
"बिकमपुर" परी मृगी, गमी गुरु स्तोत्र तंजयउ भण ।।
पनरइसइ गृह तहां, महेसरी डागा लूण्या ।
परबोधे श्रावक्क, - - - - - - - - - - - - - ।।(अपूर्ण)

हर्ष रचित

२४. जिनदत्तसूरि लावणी

[तर्ज - लावणी]

जगत मे सद्‌गुरु उपकारी, नाम जिनदत्तसूरि भारी । टेर।
फिरो क्यो भवि सभी वन वन, गुरु का ध्यान करो तन मन ।
सोम और पूनम को दरशन, करो जो गुरु होय प्रसन्न ।
दोहा--केशर अगर कपूर ले, चन्दन सरस मिलाय ।
चरणाम्बुज सेवो सदा, ज्यो सम्पति सुख थाय ।।
परम गुरु जग मे उपकारी ।। जगत० १।।
किये वश आपने बावन वीर, नदी बिच साधे पांचो पीर ।
योगिनी चौसठ हाजिर वीर, दामिनी जैसे पिंजर कीर ।
दोहा - तारे जहाज समुद्र मे, सो जाने संसार ।
नाम से बिजली ना पड़े, सेवक जन आधार ।।
दरश सद्‌गुरु का उपकारी ।।जगत० २।।
सेवक को संकट से टारन, विपत मे सहाय करन धारन ।
नाम ले घट मे अन्तर जन, तुरत बरसावे अद्‌भुत धन ।।

दोहा -- उत्सव करता उच्च में, मुआ मुगल का नन्द ।
मंत्र शक्ति से जीवित किय, भयो सकल आनन्द ।
जैन की कीरति विस्तारी ।।जगत० ३।।
नहीं सद्गुरु की करे कोई होड़, देश विदेश देखलो दोड़ ।
'हरष' धर अर्ज करे कर जोड़, विपति संकट को जरा दो तोड़।।
दोहा -- ऐसे गुरु को ध्याईये, सब संकट कट जाय ।।
रोग शोक दालिद्र दुःख, दोहग दूर पलाय ।।
जैन में भये परचा धारी ।।जगत में ४।।

धर्मवर्धनोपाध्याय रचित

२५. जिनदत्तसूरि सवैया

बावन वीर किये अपने वश चौसठ जोगिणि पाय लगाई ।
डाइणि साइणि व्यंतर खेचर भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई ।
बीज तडक्क कडक्क भटक्क अटक्क रहे जु खटक्क न कांई ।
कहे 'ध्रमसिंह' लंघे कुण लीह दियै जिनदत्त की एक दुहाई ।।१।।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

२६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग - वसन्त)

श्री जिनदत्तसूरि सुखदायक, लायक दीजे माता ।श्री०।
रात दीह अहनिस इक रंगै,
गुण मणि तोरा गाता ।।श्री०१।।
अरियण कंद उदालीयै साहिब, अलगी हरो जी असाता ।
वल्लभ ना पट्टधर वडाला, पालौ पुत्र ज्युं माता ।श्री०२।।
महिरवान हिव महिर निजर कर,
तुम हिज मात नै ताता।
'अमरसिन्धुर' वीनति अवधारी,
दीजै वंछित दाता ।श्री०३।।

आलमचन्द रचित

२७. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी - वावहियानी जी हो डूगरै, एहनी)

दस दिन दादो जी हो दीपतो, श्री जिनदत्तसूरिन्द, चतुर नर ।
परतिख परताजी हो पूरवै, सुखदायक सुखकंद, चतुर नर ।
आपे अधिक आणंद चतुर नर, सेव करै सुर इन्द चतुर नर ।
जी हो भेटीयौ श्री जिनदत्तसूरिद,
चतुर नर, जी हो भेटीयौ ।१। आंकड़ी
मन वचन काया हो बस करी, जे तुम्ह सेव करंत, चतुर नर ।
ते फल पांमे जी हो अतिभला,
वंछित सकल मिलंत ।च० जी हो० ।२।
विकट संकट सहू जी हो उपसमे, जपतां सद्‌गुरु नाम ।च०।
अधिक सुलीला जी हो भोगवे, सीझे वंछित कांम ।च०जी हो०३।
जीती चौसठि जी हो जोगिणी, वसि किया वीर बावन्न ।च०।
सुर नर सेवा जी हो साचवे,गिणतां जनम सुधन्न ।च०जी हो०४।
इण कलिजुग मे जी हो तू जयो, जंगम जुगह प्रधान ।च०।
पद ए आप्यो जी हो अम्बिका,रीझविया राय रांण ।च०जी हो०५।
सिन्धु देस मे जी हो ते बसी, पंच नदी पंच पीर ।च०।
साध्या विरुद जी हो पाइयो, सूरि सिरोमणि धीर ।च०जी हो०६।
माणभद्र यक्ष जी हो वस करी, सद्‌गुरु लह्या वर सात ।च०।
तिणसुं जग मे जी हो ताहरी,
महिमा अधिक विख्यात ।च० जी हो० ७।
थांनक थांनक जी हो दीपतो, सद्‌गुरु थुम्भ कहाय ।च०।
पूंनिम पूंनिम जी हो पूजतां, दुख सहू दूर पुलाय ।च०जी हो० ८।
थिर थुम्भ थाप्यो जी हो अतिभलो, मकसूदाबाद मझार ।च०।
कातेला गोत्रे जी हो जांणियै, भ्रातृ युगल सिरदार ।च०जी हो०९।
साह सोभाचन्द जी हो सोभता, मोतीयचन्द सुजान ।च०।
सद्‌गुरु सेवा जी हो सांचवे,

इक चित्त धरी गुरु ध्यान । च ० जी०१०।
तुम्ह जस महिमा जी हो जे कहे, ते लहे सुक्ख अपार ।च०।
जलवट थलवट जी हो जुद्ध में,
तूं ल्यै तुरत उबार ।च० जी हो० ११।
आधि व्याधि अरि जी हो हरि करी, तस्कर भय अस्ट ।च०।
सद्गुरु नांमे जी हो उपसमें, संकट कष्ट अनिष्ट ।च०जी हो०१२।
इम सद्गुरु शोभा जी हो अति घणी, कहितां नांवै पार ।च०।
खरतर गच्छ नो जी हो राजियो,सेवक नें साधार।च०जी हो०१३।
कीधी जात्रा जी हो कार्तिकी, पूंनिम ने सोमवार ।च०।
विधि सुं सद्गुरुजी हो वांदतंउ,
वरत्यौ जय जयकार । च० जी हो०१४।
दायक सहु सुख जी हो तूं अछे, परगट इण जग मांहि ।च०।
तिण करि करुणा जी हो दीजिये,
आणंद अधिक उच्छाह ।च० जी०१५।

कलस

इम थुण्यो सद्गुरु सकल सुखकर भविकजन मनरंजणो,
श्री जिनदत्त सूरीसर नमत सुर नर शत्रुदल बल गंजणो।
श्री आसकरण जी शिष्य 'आलम' वीनवै कर जोड़ ए,
मुझ विघन वारो दुख निवारो पूरवो सहु काम ए ।।१६।।

आलमचन्द रचित

२८. जिनदत्तसूरि स्तवन

समरुं श्री जिनदत्तसूरिन्दा, प्रहसम मनधर अधिक आणंदा ।
सद्गुरु समर्या होवे सुखकंदा, दूर टले सब ही दुख-दंदा ।स.१।
जगति सिरोमणि तूं ही कहंदा, माता बाहडदे सुखकंदा ।
नर नारी सहु पास नमंदा, वाछिग साह जू के नंदा ।स.२।
संवत इग्यारे सै बत्तीसे, सद्गुरु जनम्या अधिक जगीसे ।
हुम्बड गोत्र प्रसिद्ध कहंदा, जग मे सद्गुरु सुजस लहंदा ।स.३।

संवत इग्यारे अरु इकताले, ग्रह्यौ सुसंयम सुध व्रत पाले ।
सकल सुसाधु गुणै सोहंदा, भवियण जन के मन मोहंदा ।स.४।
गुणहोत्तरे चित्तोड़ मझारे, भये भटारक अधिक उछाहे ।
जग सब वन्दन कुं आवन्दा, प्रमुदित चित गुरु गुण गावंदा ।स.५।
संवत बारह सै इग्यारै, सुरपद लह्यौ अजमेर मझारै।
प्रतपौ सद्गुरु तेज दिणंदा, विनवै सेवक 'आलमचन्दा' ।स.६।

उदयरत्न रचित

२९. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी - सहियर सावणियै झड़ लागौ, एहनी)

गुणियण जिनदत्तसूरि गुरु पूजो ।
जिनदत्तसूरि गुरु पूजो, सद्गुरु सम देव न दूजो रे ।गु.।
सव मिल बाल गोपालो, पग निरमल नीर पखालो रे ।गु.१।
घस केसर घनसार, अंगी अरचो सुखकार रे ।गु.।
फूल सुगंध पंचरंगा, चित चोखे चाढे चंगा रे ।गु.२।
कृष्णागर अगर कपूर, खेवंता दुख हुवे दूरे रे ।गु.।
मंगल दीपक कीजै, गुरु भक्ति नो लाहो लीजे रे ।गु.३।
अक्षत लेई अखण्ड, स्वस्तिक करवो आलस छंड रे ।गु.।
सखर सहु पकवान, नैवेद्य ढोवो गुरु थान रे ।गु.४।
फल श्रीफल ने आणी, नित चाढो फल विधि जाणी रे ।गु.।
अडविधि पूजन करिये, ध्यान सद्गुरु नो चित्त धरिये रे ।गु.५।
पूज्यां वंछित पावै, ध्यान धरतां संकट जावै रे ।गु.।
दुश्मन ने करै दूरै, परतिख परचा पिण पूरै रे ।गु.६।
सद्गुरु जिण रै सहाई, कमणा तिण रै नही कांई रे ।गु.।
समरंतां सद्गुरु तूठो, 'उदयरत्न' नै अमी रस वूठो रे ।गु.७।

कनककीर्त्ति रचित

३०. जिनदत्तसूरि स्तवन

सद्गुरुजी थे सांभलो, श्री जिनदत्त सूरिस हो ।

सेवक ने सांनिध करो, पूरो मनह जगीस हो ।।
दौलत दौहि दादाजी संपत्ति दौ ।।१।।
दौलत दो गुरु मांहरा, थांरा विरुद अनेक हो।
थां समर्या संकट टले, याही दादाजी थांरी टेक हो ।।दौ.२।।
जीती चौसठ योगिनी, वस कीया बावन वीर हो ।
सिंध मांहे दादाजी साधिया, पंच नदी पंच पीर हो ।।दौ.३।।
पडिक्कमणा मांहे बीजली, बलिय बली झबकाय हो ।
थे मंत्रे राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ।।दौ.४।।
उच्छव करतां उच्च में, मूँओ मुगल रो पूत हो ।
जाप करीने जीवाड़ीयो, संघ मांहै राख्यो दादे सूत हो ।।दौ.५।।
बड़नगर रे ब्राह्मणे, देहरे धरी मृतक गाय हो ।
पर प्रवेश विद्या बले, पिशुन लगायो दादे पाय हो ।।दौ.६।।
विक्रमपुर व्यापी मरी, दूर कियो सहु दुःख हो ।
परिवार पिण पोतै कियो, सहु नै दियो दादा सुक्ख हो ।।दौ.७।।
अंबड हाथे अक्षरे, थे प्रगटिया ततखेव हो ।
युगप्रधान पद तूं जयो, आखे अम्बिका देव हो ।।दौ.८।।
थांभो वज्र विदार ने, पोथी परगट कीध हो ।
विद्या सोवन अक्षरे, उज्जेणी मांहे लीध हो ।।दौ.९।।
इम विरुद घणा छै दादा ताहरा, कहतां नावै पारहो ।
भाग्य संयोगे दादा भेटिया, अड़बड़िया आधार हो ।।दौ.१०।।
हूॅं छूं सेवक ताहरो, थे आपो धन ऋद्ध हो ।
'कनककीरति' सुपसाउले, लाभ उदय सुख सिद्ध हो ।।दौ.११।।

क्षमाकल्याणोपाध्याय रचित

३१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी - नेम नगीनो मोरे मन वस्यो, एहनी)

राज श्री जिनदत्तसूरीसरु, सेवक जन रिछपाल,
होजी हो साहिब माहरां ।

राज वंछित पूरण सुरतरु, साहिब परम कृपाल ।हो.१।
राज आज वधावो सुगुरु भणी, आणी अधिक उल्हास ।हो.।
राज आज मनोरथ सब फल्या, आज फली सहु आस ।हो.२।
राज नांमै न पड़ै बीजली, तिसियां पावै नीर ।हो.।
राज दुख दोहग संकट टले, समर्यां सुगुण सधीर ।हो.३।
राज वस करि चौसठ जोगिणी, तिम वलि बावन वीर ।हो.।
राज कर जोड़ी सेवा करे, पंच नदी पंच पीर ।हो.४।
राज विरुद घणा सुण ताहरा, आयो राज हजूर ।हो.।
राज दरसण देख्यो ताहरो, चढते पुण्य पण्डूर ।हो.५।
राज धन धन दिन मुझ आज को, धन्य घड़ी धन मास ।हो.।
राज श्री अजमेर मे जावसुं, पायो दरसण उल्हास ।हो.६।
राज यात्रा करण आवे घणा, भाव धरी नर वृन्द ।हो.।
राज लुलि लुलि श्री गुरुराजनां, प्रणमै पद अरविन्द ।हो.७।
राज कर लेइ श्रीफल कामिनी, कर सोले सिणगार ।हो.।
राज सुजस तुम्हीणा गावती, आवे गुरु दरबार ।हो.८।
राज भाव धरी ओलग करे, मन धरी अधिक जगीस ।हो.।
राज प्रसन दृष्टि करी सदा, सारे वंछित काम ।हो.९।
वरस अठार गुणोत्तरै, माघ किसन सुभ वार ।हो.।
राज इग्यारस दिन भाग्य थी, यात्रा थइ सुखकार ।हो.१०।
राज पाठक पद कर दीपता, सुगुरु 'क्षमाकल्याण' ।हो.।
राज तसु सेवक वीनति करे, कीजे नित कल्याण ।हो.११।

क्षमाकल्याणोपाध्याय

३२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज -- होरी)

सद्गुरु का ध्यान हृदय मेरे ।। टेर ।।स०।।
श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब, पद पंकज प्रणमुॅ तेरे ।।स०१।।
श्री जिनवल्लभसूरि पटोधर, करुणाकर सब जग केरे ।स०२।।

संघ सकल कूं सांनिधकारी, दुःख दोहग देरे गेरे ।स०३॥
सुण के शुद्ध उपदेश सुगुरु को, बूझे भविजन बहुतेरे ॥स०४॥
वैमानिक सुरपदवी पाई, परतिख प्रभु विखमी वेरे ॥स०५॥
कहत 'क्षमाकल्याण'अहो निशि,सुनिजर करियो गुरु मेरे ॥स.६॥

क्षेमसागर रचित

३३. जिनदत्तसूरि स्तवन

स्तवन

श्री जिनदत्त के चरणों में आया,
चरणो मे आया गुरु शीश नमाया ॥टेर॥

वाच्छग मंत्री पिता कहाया, बाहड़ देवी उयरे जाया । श्री० १॥
हुम्बड़ वंश में आप सुहाया, सकल जीव हरषाया ।श्री० २॥
गच्छ चौरासी में श्रृंगार हारा, युगप्रधान पद छाया ॥ श्री० ३॥
देश देश में परचा पाया, सकल संघ सुखदाया ॥ श्री० ४॥
चरण शरण ग्रही आज उमाया,तारो मुझको अनेक तराया॥श्री०५
हर्ष धरी दिल काय झुकाया, नमी नमी अर्ज मे लाया ।श्री०६॥
ध्यावो ध्यावो संघ दिल हर्षाया,पावो मन वांछित माया ॥श्री०७॥
उद्रामसर में दर्शन पाया, आनन्द हर्ष वधाया ॥श्री० ८॥
वीर चौवीसे वर्ष बायाला, चैत्र चोथ सुदि आया ॥ श्री० ९॥
कृपाभिलापी सहु गुण दाया, सुखसागर मन भाया ॥ श्री० १०॥
पूर्ण गुरु के चरण पसाया, 'क्षेमसागर' गुण गाया ॥ श्री० ११॥

खुशालचन्द रचित

३४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी - गहमहमाती चोहटे, एहनी)

अम्ह घर रंग वधावणां, गुरु वन्द्यां हो गिरुवा गणधार ।
वधावो हे म्हारे जिणदत्तसूरि,
मल्हावो जी हो पूज वन्दो महाराज ।१।
सहियां मिल-मिल हेत सुं, गुण गावे है साहिव सुखकार ।व.२।

सद्‌गुरु महिमा अतिघणी, ते कहितां हो किम आवे पार ।व.३।
जीती चौसठि जोगिणी, वस कीधा हे वीर महाबलधार ।व.४।
मांणभद्र यक्ष वसि करी , तिहां पाम्या हे सद्‌गुरु वर सात ।व.५।
युगप्रधान पद पांमियो, अम्बड हाथे हे अंबिका लिखि बात ।व.६।
सिन्धु मांहे ते साधीया, पंच नदियां हे बलि पांचे पीर ।व.७।
बीज झलहल झबकती, वस कीधी हे धर मन मे धीर ।व.८।
वीकमपुर दुख दूरि कियो, वलि कीधो हे सद्‌गुरु परिवार ।व.९।
जिनवल्लभ सद्‌गुरु तणो, पाटधारी हे महाजसधार ।व.१०।
मांने सकल जिहांन मे, गुण गावे हे मोटा राय रांण । व.११।
वंछित आसा पूरवे, जसु महिमा हे कवि करे वखाण ।व१२।

कलश

इम थुण्यो भवियण कहे कवियण श्री जिनदत्तसूरीसरू,
प्रभु थांन थाप्यो सुजस व्याप्यो सोमचन्द वखतावरू ।
मोतीचन्द.... सुनन्द तिनके गुजर तनसुख कुं सही,
करो सुखानन्द 'चंद खुश्याल' बीनती करे एक ही ।१३।

खुशालचन्द रचित

जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी – श्री जिनवचन वैरागियो रे धन्ना)

सद्‌गुरु सेवा भाव सुं रे प्राणी, आणी चित्त उदार ।
प्रभु समरंतां पामिये रे प्राणी, सुरतरु सुख श्रीकार ।
वारी गुरु हम पर महिर करो ।
महिर करो मुझ ऊपरे हो गुरु, वीनति ए अवधार । वा.१।
मुझ आसा सफली करो रे गुरु, जाणी आपणां दास ।
सुख संपत्ति मुझ वेलवे हो प्राणी, कर दुःख दोहग तास ।वा.२।
मन वंचन कर तन सुन मेरे प्राणी, जे नर आंणी भाव ।
सुख सुन्दर फुनि ते लहे रे प्राणी, सीझे सब ही दाव । वा.४।
संवत इग्यार बत्तीस मे रे प्राणी, जनम्या श्रीगुरुराज ।

इकताले संजम लीयो रे प्राणी, साधन आतम काज । वा.५।
सहर चित्तोड़े थापीयो रे प्राणी, गुणहत्तरे प्रभु पाट ।
जीती चौसठि जोगिणी रे प्राणी, वस किया वीर ना थाट ।वा.६।
पंच नदी तिण साधतां रे प्राणी, सेवे पांचो पीर ।
मांणभद्र यक्ष जीपियो रे प्राणी, वर लीलाधर धीर ।वा.७।
अम्बड़ हाथे पामियो रे प्राणी, युगप्रधान पद सार ।
बीझ झबकती वस करि रे प्राणी, सबही दुरति निवार । वा.८।
संवत वार इगोत्तरे रे प्राणी, अजमेरे सुखकार ।
अणसण कर सुर पद लह्यो रे प्राणी, पूरे निज मन धार ।वा.९।
विघन टाले अरि करि तणा रे प्राणी, सिंह पिशाच वेताल ।
जल अटवी दु:ख उपसमे रे प्राणी, पांमे सुख विशाल ।वा.१०।
गाम नगर पुर पाटणे रे प्राणी, देस विदेस मझार ।
नरनारी करकमलसुं रे प्राणी, पूजे दिन प्रति बार ।वा.११।
पुत्र कलत्र धन धांन नी रे प्राणी, विद्या वूठ विचार ।
चिन्ता मन नी दूरे करे रे प्राणी, सरे कारज निरधार ।वा.१२।
कातल गोत्रे दीपता रे प्राणी, भ्रातृ युगल सिरदार ।
सोभाचन्द सुख-सागरु रे प्राणी, मोतीचन्द मल्हार । वा.१३।
थांन थाप्यो छे सद्‌गुरु तणो रे प्राणी, मकसूदावाद मझार ।
वच्छर अठार इकवीस में रे प्राणी, माघी पूनिम क्रुजवार ।१४।
संवत अठार बावीस में रे प्राणी, जात्रा कीनी मनरंग ।
कातिग पूनिम तिथि रे प्राणी, वार भलो सोमवार ।वा.१५।
सत्यसागरजी पसाय सुं रे प्राणी, मुनि कहे एम 'खुश्याल' ।
सद्‌गुरु भेटंतां फली रे प्राणी, सकल मनोरथ माल ।वा.१६।

गुलाब रचित

३६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज –चौदहवी का चांद हो या आफताव हो)

जि – जिनदत्त का ध्यान हो, मन में न मान हो,

न — नश्वर शरीर से ही जुदा, जिस वक्त प्राण हो ।।टेर ।।
द — दरबार मे अरदास है, चरण चित्त मे रमे ।
त्त — तज अष्ट कर्म भोग रोग, ज्ञान मगन मे ।।
गु — गुण गान लहर तान से आनन्दवान हो ।।१।।
रु — रुम झुम तमाम शक्तियें, गुरु दत्त जप जपे ।
दे — देवाधिदेव आपकी, ज्योति मे मन भमे।।
व — वरदान देवो दीन दया दिल विचार हो ।।२।।
की — कीर्ति तुम्हारी कौन से, मुख से बयां करुं ।
ज — जय जय जितेन्द्री देव के, चरणो मे नित रमे ।।
य — यह 'गुलाब' दीन जान मिले मुक्तिराज हो ।।३।।

गुलाब रचित

३७. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – तदबीर से बिगडी हुई तकदीर बनाले)

श्री वीर के महाधीर है गुरुदेव हमारे,
जिनदत्त सूरि जपे नाम, काज सुधारे, काज सुधारे ।।टेर ।।
नमते थे बावन वीर महा, योगनीये चौसठ भी,
योगनीये चौसठ भी ।
दरबार इनका भारी है भक्तो के है प्यारे ।।जिन.।।१।।
तम छा रहा था जग मे, अम्मावस की रात का,
अम्मावस की रात का।
सूरि ने पूनम करके किया उज्जल चान्द रे ।।जिन. २ ।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता, गुरु है देव दयालु, गुरु है देव दयालु ।
जीवन को अब गुलाब ने गुरु अर्पण किया रे ।
शरण है तेरे 'गुलाब' गुरु पार लगारे ।। जिन.३।।

गोपाल रचित

३८. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – धीरे-२ आरे बादल धीरे-२ आरे)

धीरे धीरे गारे गुरु गुण धीरे धीरे गा, हां हां धीरे धीरे गा ।
अपनी मीठी राग सुर से गुरु की महिमा गा,
हां हां गुरु की महिमा गा ।। टेर ।।
मेरे गुरु जिनदत्त दादउ, नाम उजियाला, हां हां नाम उजियाला।
है बड़ा गुण का भरा, गुण नाम का प्याला ।
प्रेम भक्ति से तूं मन में प्रेम भर कर गा ।। धीरे.।।१।।
अंधे की मेरे गुरु ने, खोलदी आंखें, हां हां खोलदी आंखे ।
बे परों के फिर लगादी, सोहनी पांखे, हां हां सोहनी पांखे ।
सप्त सुर को साध कर फिर मधुर ताल मिला ।।धी.।।२।।
सब सुखो के देने वाले, दादा गुरु दाता,
हां हां दादा गुरु दाता, हां हां दादा गुरु दाता ।
दास श्री गोपाल के, तुम ही माता पिता,
हां हां तुम ही माता पिता ।।
मेरी नईया कै खिवैया बन के पार लगा ।। धीरे. ।।३।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

३९. जिनदत्तसूरि स्तवन

आओ मनाये आज यों गुरु की जयन्तियां ।
आओ मनायें आज यों दादा की जयन्तियां ।।
दोहा – भूले भटके हों, अगर भाई अपने आज ।
अपना कर उनको करें, शुद्ध सिद्ध सरताज ।।
लहराने लगे विश्व में, वैजयन्तियां ।।
आओ मनायें आज यों दादा की जयन्तियां ।।१।।
दोहा : संघ शक्ति संसार में, होती है बलवान ।
शक्ति का संचार हो, वैसा करे विधान ।
होवे न कही फिर हमे, जीवन अशान्तियां ।
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तियां ।।२।।
दोहा : दादा श्री जिनदत्त ने, ब्रह्म योग वलधार ।

जन जन में जग में किये, अनुपम पर-उपकार ॥
इतिहास ताजा करें, ताजी कहानियाँ।
आओ मनायें आज हम गुरु की जयन्तियां ॥३॥
दोहा : जल थल नभ मे उड़ रहे, जब दुनियां के लोक ।
क्यो हम फिर सोते रहे, है यह आलस रोग ॥
आलस मिटे विशेष रूप फैले क्रान्तियां
आओ मनाये आज यो दादा की जयन्तियां ॥४॥
दोहा : रहता आलस फूट मे, सदा दरिद्दर जोग ।
हो पुरुषार्थी संगठित, साधे सद्‌गुरु योग ॥
संपत्तियां बढने लगे, रहती न भ्रान्तियां ।
आओ मनाये आज हम गुरु की जयन्तियां ॥५॥
दोहा : वीर पीर और जोगनी, दादा गुरु वश कीन ।
ब्रह्म योग बल साधना, करलो बनो न दीन ॥
बढ़ने लगेगी बन्धुओ ! फिर खूब शान्तियां ।
आओ मनाये आज हम गुरु की जयन्तियां ॥६॥
दोहा : सुखसागर भगवान गुरु, जिनहरि सूर समान ।
नित 'कवीन्द्र' जय जय कहो, दादा युगपरधान ॥
जिनदत्त नाम जाप आप, मिटती क्लान्तियां ।
आओ मनाये आज हम गुरु की जयन्तियां ॥७॥

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – भीमपलास श्री)

आज मनावो शुद्ध भाव से गुरु दत्त जयन्ती ॥टेर ॥
लाखों जन जैन बना कर, बिगड़ो को शुद्ध करा कर ॥
शासन रक्षा मे होके धीर, मनाओ दत्त जयन्ती ॥१॥
सत्याग्रह ज्योति जगा के, मिथ्यातम दूर भगा के ।
निश्चल वृत्ति वीर, मनाओ दत्त जयन्ती ॥२॥

झूठे आडम्बर टारो, संयम जीवन धन धारो ।
दुःखियों की दूर हरो पीर, मनाओ दत्त जयन्ती ।।३।।
परमारथ प्रेम धरेगे, सुरनर सब सेव करेंगे ।
पहुँचेंगे भवोदधि तीर, मनाओ दत्त जयन्ती ।।४।।
मृत्यु जीवन सम जानो, दादा गुरु को पहिचानो ।
प्रकटा दो पावन हीर, मनाओ दत्त जयन्ती ।।५।।
मौजूदा हालत देखो, करके फिर देखो लोको ।
वरसेंगे नयनो से नीर, मनाओ दत्त जयन्ती ।।६।।
दादा जिनदत्त हमारे, सबके समरथ रखवारे ।
करो 'कवीन्द्र' तदबीर मनाओ दत्त जयन्ती ।।७।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४१. जिनदत्तसूरि स्तवन

उनका जीना मंगलकारी, उनका मरना मंगलकारी ।
जो अमर रूप अवतारी ।।टेर ।।
जगत जीव के हित सुख चिन्तन में जो जीवन बीते ।
वे जीवन पावन पद पद में मर कर भी है जीते ।
उनका आना मंगलकारी उनका जाना मंगलकारी ।
जो आप रूप उपकारी ।। उन. ।।१।।
दादा श्री जिनदत्त गुरु की गुण गरिमा अविकारी ।
वर्ष आठ सौ बीते पर है जो जग में जयकारी ।
उनका शरणा मंगलकारी उनका मिलना मंगलकारी ।
जो त्याग तपो गुणधारी ।। उन. ।।२।।
ज्ञान महाविज्ञान भाव के जो थे सहज प्रचारी ।
दुखिये जन सुखिये होते हैं चरण शरण अधिकारी ।
उनका दर्शन मंगलकारी, जय बोलो सब नरनारी ।।उन. ।।३।।
जो आचार विचारों में भी सत्संस्कार जगावे ।
रूढ कुसंस्कारो को जड़ से जो जन दूर भगावे ।

उनका पूजन मंगलकारी, उनका कीर्तन मंगलकारी ।
जो है सुविहित पन्थ विहारी ।।उन. ।। ४।।
सुखसागर भगवान महोदय श्री जिनदत्त जयन्ती ।
हरि 'कवीन्द्र' जन जय गावे विनय भाव प्रणमन्ति ।
उनका यहां भी मंगलकारी उनका वहां भी मंगलकारी ।
जो है आतम भाव विहारी ।।उन. ।। ५।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – पपैया काहे मचावत शोर)

गुरु की जय जय हो ।। टेर ।।
जिनके अनुचर के अनुचर बन, सब सुर सेव करे ।।
मरु मण्डल सुरतरु जैसे जो, इच्छित पूर्ण भरे ।।गुरु.१।।
धवलक्का के मंत्रीश्वर श्री, वाच्छिगसा शुभ गेह ।
बाहड़ देवी दिव्य कुक्षि से, प्रकटे पावन-देह ।।गुरु. २।।
धर्मदेव गणी गुरु दीक्षक, शिक्षक गुण गंभीर ।
अभयदेव पटधर जिनवल्लभ, पटधर त्रिभुवन वीर ।।गुरु. ।।३।।
ब्रह्म योग बलधारी भारी, अतिशय युगपरधान ।
धीर पीर योगिनियां चौसठ, सेवे विनय विधान । गुरु. ।।४।।
सवा लक्ष जन जैन बनाये, करके शुद्धि महान ।
सत्याग्रह से जिनने तोड़ा, मिथ्या मत अभिमान ।। गुरु. ।।५।।
मृत जीवन से बना दिये थे, शासन रक्षा हेतु ।
विद्युत को बांधि थी जिनने, आत्म विजय जय केतु ।।गुरु. ।।६।।
सिंहाजी राठोड़ मुख्य ने, मरुधर का अधिकार ।
दादा गुरु की दिव्य दया से, पाया नय निर्धार ।।गुरु.।।७।।
प्रतापगढ़ का पंवार राजा, अजमेर अर्णोराज ।।
श्री गुरु को निज गुरु पद थापे, तारण तरण जहाज ।।गु. ।।८।।
आषाढ सुदि ग्यारस को पाये, स्वर्गवास सुखकार ।

जीवन मृत्यु महोत्सव मय गुरु, पाये जय जय कार ।।गु. ।।९।।
सुर 'गणनायक हरि' पूजित पद, स्मारक सुन्दर रूप ।
देश देश में प्रकटित महिमा, राजे आज अनूप ।। गुरु. ।।१०।।
सुखकर सपावन संघ सघन वन, नन्दन नन्दन धाम ।।
'हरि कवीन्द्र' गुरुदेव जयन्ती,जय जय जय अभिराम ।।गुरु.।।११।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४३. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – कही हँसना कही रोना इसी का नाम दुनिया है)

गुरु जिनदत्त की महिमा, बतायें हम कहो कैसे ।
मचकती दिव्य ज्योति को, बतायें हम कहो कैसे ।।टेर ।।
कहें गर चान्द तो उसमें, हमेशा दाग दिखता है।
सदा बेदाग गुरु महिमा, बतायें हम कहो कैसे ।।१।।
कहें गर सूर्य तो उसमें, भरा सन्ताप भारी है ।
गुरु सन्ताप हर महिमा, बतायें हम कहो कैसे ।।२।।
कहें गर हम समुन्दर तो, भरा है खार ही उसमें ।
परम अमरित गुरु महिमा, बतायें हम कहो कैसे ।।३।।
कहे गर हम सुमेरु तो, बना है रजकणों से वह ।
रजो गुण मुक्त गुरु महिमा, बतायें हम कहो कैसे ।।४।।
गुरु जैसे गुरु ही हैं, गुरु जिनदत्त उपकारी ।
जयन्ती आज है, महिमा, बतायें हम कहो कैसे ।।५।।
गुरुजी जैन मंडल की विनतियां आप सुन लेना ।
'कवीन्द्रों' की जवानो से, बताये हम कहो कैसे ।।६।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – गरवो)

चालो पुण्य प्रतापी दादा ना दरवार मां रे ।
दादा श्री जिनदत्त, सूरीश्वर दीनदयाल ।

दादा गुरुजी जग मां, शरणागत प्रतिपाल ।
जेना समरणथी सुख थाये आ संसार मां रे।।आंकणी

साखी

आत्म योग बल साधना, वश कीधा गुरुदेव ।
देव अने दानव बधा, सेवा करे स्वयमेव ।
जे नी सेवा मेवा मन इच्छित दातार ।चा.१ ।।

साखी

परम अहिंसा धर्म नी, दीधी जेणे दीख ।
पापी आतम धर्म नी, सद्गुरु साची सीख ।
लाखो जैन बनाव्या, कीधो धर्म प्रचार । चा.२।

साखी

पंच पीर ने जोगणी, चौसठ बावन वीर ।
सेवा सद्गुरु नी करे, सद्गुरु गुण गम्भीर ।
जेना दर्शन आपे, आतम दर्शन सार । चा.३ ।

साखी

रोग शोक व्यापे नही , रहे नही भय भोग ।
आंखो पांमे आंधला, श्री दादा गुरु योग ।
चमत्कारो जेना, गावे नर ने नार । चा.४।

साखी

भर दरिया में डूबता, जेणे झेल्यो हाथ ।
सद्गुरु नो समरण करो, सद्गुरु जीवन नाथ ।
दादा देव दयालु, भव जल तारणहार ।चा.५।

साखी

निर्धन धन पामे वली, पामे लीला लहेर ।
श्री दादा गुरुदेव नी, माथे होवे महेर ।
दादा गुरु नी देखी, महिमा अपरंपार । चा.६।

धवलक्का जनम्या गुरु, अमर थया अजमेर ।
गुरु भेटो भावे टले, जन्म मरण ना फेर ।
दिव्य 'कवीन्द्र' गुरु नी, बोले जय जयकार ।।चा.७।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – प्रभु का नाम लेने से)

दयामय मेहुला आजे, अही वरसावजो दादा ।
थयेलुं शुष्क जीवन वन, वली सरसावजो दादा ।।१।।
हृदय भूमि थई नीरस, त्रिविध सन्ताप ना योगे ।
सरस रस पूर झरना वो, तमे प्रगटावजो दादा ।।२।।
हमेशा थाय नव सरजन, बने आदर्श नव जीवन ।
पुनित आदर्श ते पोते, तमे समझावजो दादा ।।३।।
रजो गुण डूंगरा जेवा, सुजनता ने सतावे छे ।
बधते प्रेम पानी थी, बहावी नाखजो दादा ।।४।।
सुगुरु जिनदत्त सूरीश्वर, विनय युत वन्दना साधे ।
'कवीन्द्रो' नी विनन्ति आ, तमे अवधारजो दादा ।।५।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – जिन धर्म का डंका आलम मे)

यह आज जयन्ती है जिन की, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।
जिन शासन के विस्तारक की, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की।।टेर ।।
होती है शुद्धि अशुद्धो की, यह सिद्ध सनातन सूत्र सदा ।
स्वीकृत कर शुद्धि की जिन ने , जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।१।।
है जैनेतर सब वर्णो से, ये ओसवाल श्रीमाल भये ।
पीकर के वोध सुधा जिनकी, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।२।।

सत्याग्रह दृढ़ व्रत धारण कर, अन्याय अधर्माचारो का ।
बस खण्डन खूब किया जिन ने, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।३।।
निर्निमित्त दुश्मनता धारक, जीवो को अपने जीवन मे ।
ना कभी सताया था जिन ने, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।४।।
क्रान्तिमय जीवन से सच्ची, निज जीवन ज्योति जगा करके ।
जो युगपरधान महान हुअे, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।५।।
शुभ सत्य तत्त्व संशोधन मे, नित पूर्ण स्वतन्त्र रहे थे जो ।
फिर नही दुराग्रह था जिनमे जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।६।।
जिनके तप बल को देख सभी, सुरनर नत होकर रहते थे ।
निस्वार्थ भाव धरने वाले, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।७।।
योगीन्द्र जितेन्द्रिय थे सच्चे, थे कीर्तित दिव्य कवीन्द्रो से ।।
सब मिलकर सविनय आज कहो, जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।८।।
यह आज जयन्ती है जिन की,जय हो जिनदत्त सूरीश्वर की ।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

जिनदत्तसूरि स्तवन

हे युग-परधान पधारो, जन जीवन काज सुधारो । हे युग० ।।टेर।।
वर्ष आठ सौ बीते गुरुवर, अब लो खबर हमारी ।
हम तो सब गुमराह बने है, राह न दिखे तुम्हारी ।। हे० ।।२।।
गिरती बिजली काष्ठपात्र मे, रोकी तुमने स्वामी ।
वह विज्ञान हमें सिखलादो, रहे न हम मे खामी । हे ०।।३।।
मुगल पुत्र को मरी गाय को, जीवन दान दिलाया ।
वही योग बल हमे दिखाओ, क्यो गुरु हमे भुलाया । हे ०।।४।।
वीर पीर जोगनियां ये सब, ब्रह्म शक्ति से खीचे ।
सेवा करते सदा तुम्हारी, हम क्यो रह गये नीचे । हे ०।।५।।
धन बाछिगसा धन बाहड़दे, धन धवलक्का भारी ।
धन जिनवल्लभ के पटधारी, जिन शासन जयकारी । हे०।।६।।

हरि 'कवीन्द्र' कीर्तित गुरु गावें, आकर दरस दिखावें ।
सुखसागर भगवान आदीश्वर – मण्डल जय जय गावें । हे०७॥

जिनकान्तिसागरसूरि रचित

जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – चान्द खिलौना ले दे री मईया चान्द खिलौना ले दे)

पूछे सोमचन्द माताजी ने धरी प्रेम सूं रे ।
खौले बैसारी ने बुचकारि मां हेज सूं रे ।
पाडोसी ने घर यह रंग वधावा साज ।
एह नूं कारण सूं छे अम्मा कहो नी आज ।
जल्दी से बतला दे यह उत्सव मैं देख सूं रे ।
दोहा – मात कहे वच्छ सांभलो, पाडोसी घर व्याह ।
चवरी में बैठा अच्छे दूल्हा दुल्हिन आय ।
बस इस कारण बाजे बाज रहे है हर्ष सूं रे ॥१॥
माता कहती बेटा देखे यह व्याह,
इस से भी बढ़ कर मैं करूंगी हर्ष उच्छाव ।
सहणाई बाजा सूं नभमंडल गुंजाव सूं रे,
नन्ही लाड़ी लावसूं तेरे लिये पूत ॥
दोहा – सुन्दर ने सुख मालिनी, राखेगी घर सूत ।
रम झम रम झम करती, छम छम विच्छियानो झणकार ॥
मंगल गाती शोभा वढ़ाव सी रे ॥२॥
बात करतां हो गई मां बेटा में देर,
हाहाकार मच गयो पाडोसी के घेर ।
रोवे छाती माथो पीटे है वीहु जोर सूं रे ॥
दोहा – सोमचन्द्र पूछे वली, माताजी कहो वात ।
पड़ोसी घर रोवणे, जीव वड़ो दुःख पात ॥
थर थर काया धूजे माहरी अति जोर सूंरे ॥३॥

कहे माता तूं सुण वच्छ दुःख नो है नही छै पार।
चौ फेर में लाड़लड़ो पहुँतो स्वर्ग मझार ।
चवरी मांहे बैठो को बैठो को बैठो लुढकी गयो रे ।
सुन्दर नन्हे हाथ की दीधी चूड़ी फोड़ ।।
दोहा – सौभाग्य बिन्दी दूर कर, बाला करती शोर ।
त्राहि त्राहि मच रही, करता हा हा रव जान पुकार ।
घर मांही शोर बकोर करे अति जोर ।।४।।
दोहा – सोमचन्द्र वर चमकीयो, सुन कर यह संवाद ।
दो आज्ञा मम मातजी, मत करो वाद विवाद ।।
नही छोड़े वह कालज पापी किसको ही सही रे।
शिवरमणी के साथ मे, माता करसूं व्याह ।।
लगी लगन मन मे सही मुक्ति वधू परणाय।
तोडी राम को बंधन दो आज्ञा हिवे प्रेम सूं रे ।।५।।
मात पिता की ले आज्ञा को, ले रहे संयम धार ।
लघु वय मे हो गये सोमचन्द्र अणगार ।
श्री जिनदत्त सूरि सूरि पद को शोभावतारे ।।
दोहा – सहस्त्र तीस लक्ष एक को, प्रतिबोधे गुरुराय ।
श्री हरि गुरु के शरण मे, 'कान्ति' गुरु गुण गाय ।।
दादा नाम सूँ जग मे ख्याति पा गये रे ।।६।।

जिनकृपाचन्द्रसूरि रचित

४९. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – त्रिशलाना जाया रे, महावीर अम घर आवजो)

सद्गुरु न्यारा रे मोहन गारा रे, विनती सांभलो ।
सांभलो ने गुरु करो सेवक प्रतिपाल ।।
सद्गुरु म्हारा रे, विरुद घणेरा रे, निसुण्या तुम तणा ।
तुमछो प्रभु आतमना रखवाल ।। सद्. ।।१।।

जिन शासन जगमां जयो, सर्व जीवन सुखकार ।।
जंगम सुरतरु प्रगटीयो, सद्गुरु तारणहार ।
तुम छो गुरु सब जन ने सुख आल ।। सद्.।।२।।
पंच नदी पर साधिया, पाँचो पीर परधान ।
शोभाव्यो जिन धर्म ने, सार्यो वांच्छित काम ।
करो प्रभु वांच्छित पूर्ण दयाल ।। सद्.।। ३।।
जीती चौसठ जोगिनी, बस कीया बावन वीर ।
झबका करती बीजली, स्थंभित करी गुणधीर ।
करजो प्रभु अमची सार कृपाल ।। सद्.।।४।।
प्रतिबोध्या नर नारी ने, शासन शोभा वधार ।
चारित्र पाली निरमलो, स्वर्ग लह्यो सुखकार ।
तुम्हें प्रभु संपदा पामी रसाल ।। सद्.।। ५।।
युगप्रधान जग परगड़ो, अम्बा अक्षर दीध ।
जगगुरु चिन्तामणि समो, मन वांच्छित फल लीध ।
सहुना मन वाच्छित पूरो रसाल ।।सद्.।।६।।
इत्यादिक जस गुरु तणो, जाणे सकल जहान ।
परचा जग में परगड़ा, सेवे राव राजान ।
सेवानो फल तुरत लहे निहाल ।।सद्.।।७।।
संघ उदय करो साहेबा, दया करो गुरुराज ।
अलिय विघन दूरे हरो, पूरो सहु जन काज ।
पूरी ने प्रभु मेटो भव जंजाल ।।सद्.।।८।।
ठाम ठाम गुरु शोभता, थुंभ घणा महिराण ।
भावे सेवे भविजना, सदा सुरंगे वाण ।
तुम छो प्रभु भक्त तणा रखवाल ।।सद्.।।९।।
सद्गुरु सम जग को नहीं, जीवन प्राण आधार ।
कान्ति-पूरण सुरगवि, सुखकारण दिलधार ।
गुण निधि अमचा परम कृपाल ।।सद्.।। १०।।

श्री जिनदत्त सूरीसरु, मणियाला जिनचन्द ।
कुशल करण कुशलेसरु, प्रणमे 'जिन कृपाचन्द' ।
कर जो प्रभु शासन नी संभाल ।।सद्.।। ११।।

श्री जिनचन्द्रसूरि रचित

५०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग – धमाल)

श्री खरतर गच्छ सिरतिलो हो, दुरति निवारण सिंह ।
सेवक ने सुख पूरवे हो, एकलमल्ल अबीह ।
जिनदत्तसूरीसर पूजीये हो।
अहो मेरे ललना पूजतां सिवसुख थाय ।।जि.।।
जीती चौसठ जोगिणी हो, बस किया बावनवीर ।।ल.।।
कर जोड़ी सेवा करे हो, नित प्रति पांचु पीर । जि.२।।
बाहड़दे कूखे अवतर्या हो, वाछिग साह मल्हार ।ल.।
संवत ग्यारह बत्तीसे हो, जनम हुओ शुभवार ।जि.३।
इगताले दीक्षा ग्रही हो, आंणी मन वैराग ।ल.।
गुणहतरे पाटे प्रभु थाप्या हो, श्रीसंघ सेवे बड़ भाग ।।जि.४.।।
युगप्रधान पद पांमिया हो, अंबड श्रावक हाथ ।ल.।
इच्छा कर सेवे जिको हो, पासे लछमी भर बाथ ।जि.५।
साईणि डाइणि बीजली हो, विघन टले तेरे नाम ।ल.।
दु:ख आरति दूरे गमे हो, सारे मन वंछित काम ।जि.६।
संवत बारह इग्यार मे हो, अजयमेरु पुर ठाई ।ल.।
अणसण आराधन करी हो, पुंहता देवलोक मांहि ।जि.७।
संवत सतरह अठावने हो, माह वदि बीज रविवार ।ल.।
जात्रा करी मनरंग सुं हो, साथ करी परिवार । जि.८।
हिव माहरी ए वीनती हो, पूर मनोरथ वृन्द ।ल.।
श्रीजिनरत्न पसाय सुं हो, इम जंपे श्री 'जिनचन्द' ।।जि.९।।

जिनमहेन्द्रसूरि रचित

५१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – होरी)

जय बोलो सद्गुरु राया की, जय बोलो ।। टेर।।
चौसठ योगिनी बावन भेंरू, जीत्या जीत नगारा की,जय बोलो ।।१।।
श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहब, पूजा करो साकारा की, जय बोलो ।।२।।
चिन्ताचूरो ने सुख भरपूरो, 'श्रीजिनमहेन्द्र' तुम्हारा की,जय बोलो।।३।।

जिनरंगसूरि रचित

५२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी – आराधउ अरनाथ अहो निशि – ए जाति)

अरज सुणउ जिनदत्तसूरीसर, खरतरगच्छ–नायक तू देव
सेवक नइ मनवंछित दायक, पायकमल प्रणमु नितमेव ।अ.१।
युगपरधान सदा सुखदाई, वरदाई, साचउ दीवाण ।
दानव भूत टलइ तुझ ध्यानइ, मानइ सहु को ताहरी आण ।अ.२।
कुशल करइ नइ संकट टालइ, इण कलिकालइ पूरइ आस ।
आस करी जे चरणे आवइ, पावइ ते नर लील विलास । अ. ३।
मो मन गयवर गुरु पग देवा, सेवा सायर मो मन मीन ।
लीन हूअउ तू कामित सुरतरु, अवर न आगइ आखूं दीन । अ. ४।
'रंगविजय' निज भगत गिणीजई, दीजइ हिव दादा दीदार ।
आरति सिघली दूर करीजइ, जिम रीजइ मो मन इण वार । अ. ५।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

५३. जिनदत्तसूरि स्तवन

पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा होत सवाई ।।पूजो०।। टेर ।।
मृगमद केशर चन्दन अरचो, सुन्दर पुष्प चढ़ाई ।।पू.।।१।।
तन मन वश कर ध्यान हिये धर, जिनदत्त जप वरदाई ।।पू.।।२।।
भविक जीव मिल गुरु गुण गावे, सद्गुरु होत सहाई ।।पू.।।३।।

या गुरु की मै कब लग वरणूं, कीरत धीर बड़ाई ।।पू.।।४।।
श्री 'जिनसौभाग्यसूरि' सुगुरु मेरे, निश दिन हर्ष बधाई । पू. ।।५।।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

५४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – होरी)

सद्गुरु के चरण चित लाय लाय ।
जिनदत्त सूरिन्द गुरु करो रे सहाय ।। सद्०।। टेर।।
बावन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ।
विद्या पुस्तक सोवन अक्षर, थांभो वज्र विडार पाय ।।स०।।१।।
मुलतान में पंच पीर महाबल, पंच नदी साधी चित्त लाय ।
इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समर्या सब दुःख जाय ।।स०।।२।।
गुरु के नाम से अठ सिद्धि नवनिधि, गुरु गुण गावो सब ही धाय।
श्री 'जिनसौभाग्यसूरि' सुगुरु पर, महेर करो गुरु सुखदाय ।।स०।।३।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

५५. जिनदत्तसूरि स्तवन * कव्वाली *

(तर्ज–रोशन तो हो रहा है।)

अति पुण्य नाम वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।
परिपूत धाम वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। टेर ।।
शिशु काल मे सुदीक्षा, ले साधु हो गये जो ।
उन ब्रह्मचर्य वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० १ ।।
सब शास्त्र पारगामी, होकर स्वमत बढ़ाया ।
नाना विधान वाले, जिनदत्तसूरि की जय ।। अ० २ ।।
जिनके लिए स्वयं ही, वरदान देव देते ।
उन पुण्य भाग्य वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ३ ।।
संसार बीच तप से, बन कर प्रभावशाली ।
दादा-भिधान वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ४ ।।

उपकार राशि जिनकी, कोई न वर्ण सकता ।
सु उदार भाव वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ५ ।।
लाखो मनुष्य तारे, जिन ने सुबोध देकर ।
उन भव्य कर्म वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ६ ।।
बीजली का पात्र नीचे, स्तम्भन किया जिन्होंने ।
उन मंत्र सिद्ध वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ७ ।।
उपदेश जिन का सुनते, थे देव योगिनी गण ।
परिपूर्ण योग वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ८ ।।
लिख ग्रन्थ भी अनेकों, जिन धर्म को बढ़ाया ।
उन पूर्ण ज्ञान वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ९ ।।
निष्प्राण जीव जिन ने, केई जगह जिलाओ ।
करुणा विधान वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।।अ० १०।।
सब देव योगिनियां, अणिमादि सिद्धियों के ।
उन वश्य मंत्र वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० ११ ।।
आज्ञा जिन्हों की सिर पर, धरते थे देव व्यन्तर ।
उन मंत्र ध्यान वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० १२ ।।
अव भी स्वनाम लेने, या ध्यान के किये से ।
मन इष्ट देने वाले, जिनदत्त सूरि की जय ।। अ० १३ ।।
ऐसे परम गुरु का, मन वीच ध्यान धर कर ।
'हरि' वोल ले वुलाले, जिनदत्त सूरि की जय ।।अ०१४ ।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

५६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—आधार मेरे प्यारे पारस प्रभु है आधार ।)

दातार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ।। टेर ।।
दत्त सूरीश्वर दादा गुरु हैं, कल्पतरु के अवतार ।
अवतार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ।।१।।
निपूतियों को सुपूत देते, निर्धन को धन के भण्डार ।

भण्डार मेरे प्यारे दादा गुरु है दातार ।।२।।
रोगी कुरूप के रोग मिटाते, जल्दी से रूप सुधार ।
सुधार मेरे प्यारे, दादा गुरु है दातार ।।३।।
निर्बुद्धियो मे शुद्धि प्रयोग ते, करते सुबुद्धि प्रचार ।
प्रचार मेरे प्यारे, दादा गुरु है दातार ।।४।।
सेवो सुगुरु भवि सुरगण नायक, 'हरि' करे जयकार ।
जयकार मेरे प्यारे, दादा गुरु है दातार ।।५।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

५७. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—सावरो सुखदाई जांकी छवि वरणी न जाई)

परम गुरु सेवा पाई, निजातम ज्योति जगाई ।।टेर।।
श्री जिनदत्त सूरीश्वर दादा, महिमा जिनकी सवाई ।
सेवा करते सेवक जिनकी, विपदा दूर हटाई ।
गुरु मेरे है वरदाई ।। परम०।।१।।
गढ़ गिरनार पे नागदेव को, लिख दे अम्बा माई ।
युगवर मरुधर सुरतरु जैसे, वांच्छित सुख फलदाई ।
सेवे सुर सीस नॅवाई ।। परम०।।२।।
वीर पीर अरु जोगणियां सब, जो छलने को आई ।
गुरु के ब्रह्म-योग बलिहारी, देवे नित्य दुहाई ।।
गुरु जग कीर्ति जमाई ।।परम०।।३।।
देश देश मे थुम्भ विराजे, परचा प्रकट सवाई ।
सुखसागर भगवान महोदय, पूजो गुरु होके अमाई ।।
सदा गुरु होत सहाई ।। परम०।।५।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

५८. जिनदत्तसूरि स्तवन

श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब, दर्शन दो सुखकारा ।।

मैं बारी जाऊं दर्शन दो सुखकारा ॥ टेर ॥
वाच्छगसा मंत्री है पिता तुम, बाहड़ देवी है माता ॥मैं वारी०॥
हुँबड़ कुल भूषण हो गुरुवर दो सुख संपत्ति शाता ॥मैं वारी०॥१॥
उद्रामसर में चरण आपके, सेवे भविजन सारा ॥मैं वारी०॥
चरण कमल में सीस नमाके, जन्म सफल कीया सारा ॥मैं वारी०२॥
तीन लोक में परचा आपका, देखे लोक हजारा ॥मैं वारी० ॥
मेरे लीये क्यों देर करो अब, तरस रहा दुखियारा ॥मै०वारी ३॥
ऋद्धि सिद्धि और शिव सुखदाता, तुम हो दीनदयाला ॥मै वारी०॥
सेवक को वांच्छित फल दीजे, करुणा नजर निहाला ॥मैं वारी०॥४॥
संवत् उन्नीसे तीहोत्तर वरसे, चैत्र सुदि गुरुवारा ॥मैं वारी०॥
चौथ दिवस गुरु दर्शन कीना, 'हरि' को हर्ष आपरा ॥मै वारी० ॥५॥

जिनहरिसागरसूरि रचित

५९. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—मैं वनकी चिड़िया वनकर वन २ डोलूं रे)

श्री दादा गुरु का दिल में ध्यान लगाऊं रे ।
जिनदत्त सूरि दादा गुरु के गुण गाऊं रे ॥टेर॥
गुरु दत्त जगत जयकारी, शुभ नाम मंत्र सुखकारी ।
गुरु दत्त सत्य गुणधाम नित्य,निज मन मन्दिर में लाऊं रे ॥श्री०॥१॥
दादा गुरु आप पधारो, सेवक के काज सुधारो ।
गुरु दर्श-हर्ष पावन प्रकर्ष मैं अपने मे लख पाऊं रे ॥ श्री दादा०२॥
गुरु सुखसागर भगवाना, 'हरिसागर-सूर' समाना ।
गुण भूप-रूप करके अनूप-दर्शन दुख दूर गमाऊं रे ॥ श्री दादा० ॥३॥

जिनहरिसागरसूरि रचित

६०. जिनदत्तसूरि स्तवन

श्री सद्गुरु तुम चरण कमल में, करूं मैं वन्दन वारंवार ॥टेर॥
सेवक विनति सुनो हमारी, दीजिये मन को शिव सुख सार ।

नही रहे कोई दु:खी जगत मे, घर घर हो मंगलाचार ।। श्री स०।।१।।
देश जाति मे न्याति कुटुम्ब मे, प्रेम प्रवाह बहे मनोहर ।
जैन धर्म के गहन मार्ग को, समझाओ सबको सुविचार ।।श्री स०।।२।।
सम्वत् उन्नीसो वर्ष चउत्तर, आषाढ मास शुक्ल रविवार ।
अेकादशी दिन अेक भाव से, गावे गुणीजन तव गुणसार ।।श्री०।।३।।
प्रौढ शक्ति देना सब संघ को, 'हरि' कहे मन हर्ष अपार ।।
जामनगर मे दत्त सूरीन्द की,जयन्ती रहो जय जयकार।।श्री स०।।४।।

जिनहर्ष रचित

६१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग - सारग कहरवा)

वारी जाऊं गुरुराय चरणन की, वा०।टेर।
श्री जिनदत्तसूरीश्वर सद्‌गुरु, सफल घड़ी सेवा चरणन की ।वा.१।।
प्रथम मंगल गुरुराय की सेवा, अशुभ करम सब हरन की ।वा.२।।
दारिद्र भंजन अरि सब गंजन, पग पग सांनिध करन की ।वा.३।।
मोहे नहि परवाह अनेरी, शरण गही इन नरन की ।।वा.४।।
श्री 'जिनहर्ष' तुम चरण को दासा, आश पूरो सुख करन की ।।वा.५।।

जिनहर्षसूरि रचित

६२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी - गरबा मे)

अरज करूं कर जोड़ नै रे, चरण कमल चित लायरे, सद्‌गुरुजी ।
श्री जिनदत्तसूरीसरु रे, सुणियै श्री गुरुराय रे ।स.१।
श्री जिनवल्लभसूरि पटोधरु रे, जिनशासन दीवान रे ।स.।
उपगारी सिर सेहरो रे, खरतर गच्छ राजान रे ।स.२।
संवत बार इग्यार मे रे, अजयमेर सुभ ध्यान रे ।स.।
सुदि आसाढ एकादसी रे, पायो अमर विमान रे ।स.३।
देव सकल जोतां थकां रे, नावै ताहरी जोड रे ।स.।

सुरतरु सुरमणि सारिखो रे, पूरि वांछित कोड़ि रे ।स.४।
तुम्ह नामें नवनिधि हुवै रे, दरसण ऋद्धि समृद्धि रे ।स.।
सेव्यां सुख संपति सदा रे, सकल मनोरथ सिद्ध रे ।स.५।
दुरजन सब दूरे हरै रे, विपति विदारण देव रे ।स.।
समरण श्री गुरराय नो रे, सहिया सानिध नितमेव रे ।स.६।
पांगलिया पग तूं दियै रे, नेत्र हीणां ने नेत्र रे ।स.।
निरधनियां धन तू दियै रे, पुत्र हीणा दीयै पुत्र रे ।स.७।
तुम सरिखा सिर पर धणी रे, गंज न सक्कै कोय रे ।स.।
इस विरियां भूल क्युं गए रे, ए अचरिज मुझ होय रे ।स.८।
ऐसे हो सद्गुरु नवि घटै रे, गिरुवा नदीयै छेह रे ।स.।
पोतावट निज जाणि नै रे, धरिये परम सनेह रे ।स.९।
चरण सरण गुरुराय नो रे, श्री 'जिनहरपसूरीस' रे ।स.।
सानिधकारी संघ भणी रे, रहिज्यो तुम निसदीस रे ।स.१०।

जिनहर्पसूरि रचित

६३. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग - मल्हार, विहाग; देशी - आज ऋपभ घर आवे)

वन्दौ श्री जिनदत्तसूरि भविक जन ।वन्दो०।
श्री खरतर गच्छ नायक लायक, वांछित आपे पूर ।भ.१।
सकल थुम्भ थिर थानक दीपे, दिन दिन अधिके नूर ।
नवनिधि अप्ट महासिधि आपे, विघन विणासे दूर ।भ.२।
कुंकुम चन्दन नेवज नव फल, पूजो अगर कपूर ।
श्री 'जिनहर्पसूरि' नित जपतां, कमला होय हजूर ।भ.३।

जिनहर्पसूरि रचित

६४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - सहाना धमाल)

श्री जिनदत्त सूरिन्दा, परम गुरु श्री जिनदत्त सूरिन्दा ।

परम दयाल दयाकर दीजे, दरशण परमानन्दा ।। परम० १।।
जंगम सुरतरु वांच्छित दायक, सेवक जन सुखकन्दा ।। परम० २।।
सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुःख दन्दा ।। परम० ३।।
निज पद सेवक सांनिधकारी, रखिये गुरु राजिन्दा ।। परम० ४।।
कर जोड़ी विनय युत विनवे, श्री 'जिनहरखसूरिन्दा' ।। परम० ५।।

जिनहर्षसूरि रचित

६५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - राणपुरो रलियामणो रे लाल)

श्री जिनदत्त सूरीसरु रे लो, जिनशासन दीवान सुखकारी रे ।।
भेटोभवि भावे मुदा रे लो,खरतरगच्छ राजान,म्हारा वाला रे।।श्री०१।।
गुरुवारे सुरपद लह्यो रे लो, अजयमेरु थिर थान ।।म्हा०।।
वांछित कारज साधवा रे लो, सेवे सकल जिहान ।।म्हा०२।।
यात्री जन आवे घणा रे लो, परतिख परचो पेख ।।म्हा०।।
आस विलूधा मानवी रे लो, पूरे आस अशेष ।।म्हा०३।।
चौसठ वस करी जोगणीरे लो, वलि वस बावन वीर ।।म्हा०।।
सांनिधकारी सेवकां रे लो, राखो सुगुन सधीर ।।म्हा०४।।
दिवस बहू मन मे हुती रे लो, भेटवा श्री गुरु पाय ।।म्हा०।।
ते आशा सफली थई रे लो, भेट्या श्री गुरु पाय ।।म्हा०५।।
आधि व्याधि आतापना रे लो, पिंड तणी हरे पीड ।।म्हा०।।
दुःख दोहग दूरे हरो रे लो, भांजो भावठ भीड़ ।।म्हा०६।।
लाज थानूँ इण गच्छनी रे लो, उदयक नयण निहाल ।।म्हा०।।
पोता वटपोते राखस्यो रे लो, तो करस्यो संभाल ।।म्हा०७।।
जे विलग्या तुम केड़ले रे लो, ते किम मूंके केड़ ।।म्हा०।।
रुठड़ो बालम मनावियेरे लो, ते किम मूंके केड़ ।।म्हा०८।।
तुम्ह जेहवा धणी मुज्झने रे लो, केहने कहिये जाय ।।म्हा०।।
कहिवा बल थां लगे रे लो, करिवो श्री गुरु पाय ।।म्हा०९।।

तिल अे सुनिजर जो हुवे रे लो, तो सरे वांछित कोड़ ॥म्हा०१०॥
मात तात बन्धव तूं ही रे लो, तूं सांचो गुरुदेव ॥म्हा०॥
भोलां ढालां बालकां रे लो, चरण शरण नित मेव ॥म्हा०११॥
विनय सझी इम विनवे रे लो, श्री 'जिनहर्षसूरीश' ॥म्हा०॥
महिर नजर मुज्झ ऊपरे रे लो, धरज्यो विसवा वीस ॥म्हा०१२॥
सम्वत् अठारह सडसठ में रे लो, वदी फागुण शुभ नूर ॥म्हा०॥
युक्ति सहित यात्रा करी रे लो, चढते पुण्य पंडूर ॥म्हा०१३॥

जिनानन्दसागरसूरि रचित

६६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - आशावरी)

आज तो दर्शन पायाजी।
श्री जिनदत्तसूरीश्वर स्वामी हर्ष न मायाजी ॥टेर॥
नगर उद्रामसर गुरु विराजे, महिमा अपरंपार ।
देश देश के आवे जातरी, दर्शन की बलिहार ॥आज०॥१॥
काम मोह को मार हटाया, सकल जीव आधार ।
षड् विध जीव की रक्षा करते, करुणा रस भण्डार ॥आज०॥२॥
पांचों सुमति तीनो गुप्ति, पंच महाव्रत धारी ।
सकल गुणों करी शोभे गुरुवर, कहेतां न आवे पारी ॥आज०॥३॥
विश्व विख्यात तूं दातारा, चमत्कार है भारी ।
जैन धर्म दीपाया जग मे, जय बोले नर नारी ॥आज०॥४॥
जैन धर्म दीपे जग मे गुरु, ऐसी इच्छा हमारी ।
इसमें साह्य करो गुरु हमको, वीर धर्म जयकारी ॥आज०॥५॥
मैंने शरण चरण का धारा, अर्जी आन गुजारी ॥
वांच्छित पूरो मेरे गुरुवर, हो जाऊं भवपारी ॥आज०॥६॥
चौवीसे बायालिस वीरे, चैत्र चौथ सुदि सारी ।
दास 'आनन्द' गुण गाया गुरु का, सहु संघ आनन्दकारी ॥

आज तो दर्शन पायाजी ।।७।।

जिनानन्दसागरसूरि रचित

६७. जिनदत्तसूरि स्तवन

गुरुदेव जिनदत्त सूरिन्द को, वन्दन करूं में वारंवार ।।टेर।।
तुम अलौकिक ज्ञानी ध्यानी, अेकावतारी जग आधार ।
युगप्रधान हितकारी जगद्गुरु, चमत्कारी निर्मल जसधार ।।गुरु०।।१।।
अैसी कृपा तुम करो दयालु, सुखी बने सब ही संसार ।
जैन धर्म दीपे जग मे गुरु, घर घर वर्ते मंगलाचार ।।गुरु०।।२।।
आज गुरु दिन धन्य हमारा, जयन्ती उत्सव है सुखकार ।
'आनन्द रत्नाकर' गुण गाया, आनन्द वर्षे हर्ष अपार ।।गुरु०३.

ज्ञान-मंडल रचित

६८. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - मै तो दर्शन करने आयी नाथ)

दादा तुम्हारे चरणो मे आज आई हैं,
दर्शन करके हृदय मे दादा, अति हर्षाई है।
दादा दत्त सूरीश्वर तुम हो भक्त जन-रक्षक,
त्रिभुवन मे तुम्हारी महिमा खूब छाई है ।।१।।
गुरु पॉच नदी पर पांचो पीर वश करके।
कम्बल की नौका को जल मे शीघ्र तिराई है ।२।
छलने को जोगिनियॉ श्राविका रूप धर आई ।
पटो पर स्तम्भित हो लज्जित भाव लाई है ।३।
विक्रमपुर मे फैला था रोग भारी मरकी का ।
करके करुणा कइयो की तुमने जान बचाई है ।४।
लाखो हिसक बनाये जैन गुरुवर आपने ।
कई गोत्र स्थापित कर जैन-जाति बढ़ाई है ।५।
दिये कई वरदान देवी और देवो ने ।

आपके तप-त्याग की महिमा मन भाई है ।६।
दो ज्ञान ऐसा हमको भी ज्यों साधना करें ।
'ज्ञानमण्डल' ने चरणों में अरदास सुनाई है ।७।

ज्ञानसार गणि रचित

६९. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - सुगुरु तेरी पूजन)

जिनदत्त सुगुरु बलिहारी-सुखकारी ।।जि०।।टेर।।
संघ सकल नो संकट वारो, पंच नदी जिन तारी ।।सु०१।।
विद्या पोथी परगटकारी, थांभो वज्र विदारी ।।सु०।।२।।
मृतक गऊ जिन जिन मन्दिर तैं, मन्त्र तैं करिया उठारी ।।सु०।।३।।
'ज्ञानसार' गुरु चरण कमल पर, वारी जाऊं वार हजारी ।।सु०४।।

तिलकश्री रचित

७०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - खम्मा मारा०)

खम्मा माहरा वाहड ना लाल, वाणी नी बंसरी वगाड़ी ।
मोरली ना नादे जैनो जगावीया, भान भूलेला ने मार्ग बतावीया ।
जिन शासन रखवाल । वाणी०१।
उज्ज्वल संयम त्यागमय जीवन, अध्यात्मज्ञानी गुरु जीवन धन ।
महिमा अपरंपार । वाणी नी०२।
जादू भरी गुरु वाणी रसीली, त्याग करावे दुनिया रंगीली ।
प्रगटावे ज्ञान दीपमाल। वाणी नी०३।
स्नेहे खोल्या म्हारा अंतर ना बारणा,केशर कंकु थी रंग्या छे आंगणा।
आपो दर्शन एक वार । वाणी नी०४।
एकावतारी जिनदत्तसूरीश्वर, बालब्रह्मचारी मस्त योगीश्वर ।
विलक्षण हैया ना हार। वाणी नी०५।
आतम ज्ञान नी ज्योत प्रगटावजो, कर्म बन्धन थी हवे बचावजो ।

सुणो 'तिलक' अरदास। वाणी नी०६।

तिलकश्री रचित

७१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - नाव नाव रे सूरज)

गाव गाव रे गीत दादागुरु नाम ना,आव आव रे दादागुरु दरबार मां,
नम नम रे दादा गुरु चरणो मां ।टेर।
गुरु नी भक्ति आपे छे शक्ति, मुक्ति मले शुभ ध्यान मां। आव.१।
अजमेर मां गुरु अनशन लीधुं, मोक्ष जशे एक अवतार मां ।आ.२।
भद्रेश्वर मां मनहर मूर्ति, यश पसर्यो देशो देश मां ।आ.३।
दश हजार थी अधिक विराजे, दादावाड़ी गामो गाम मां ।आ.४।
विचक्षणमण्डल गुरु गुण गावे, मस्त थई एक तान मां ।आ.५।
शिशु 'तिलक' ने पार उतारजो, फेरा टले भवो भव ना ।आ.६।

तिलकश्री रचित

७२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - है अपना . 'आवारा')

गुरुजी ज्ञान ना दरिया, रमे नित ध्यान उपवन मां ।
जो गुरु गुण गावे, आपदा दूर जावे, मनोवांछित फले सारा ।
जपे गुरु नाम की माला, रहे नही कष्ट जीवन मां। गु.१।
शासन ना सितारा, भक्तो ना प्राण प्यारा, प्रभावक धर्म ना सुन्दर।
मुनिवर मोह मद त्यागी, थया वैरागी बचपन मां ।गु.२।
अजयमेर आवे, अनशन शुभ ठावे, रमे अर्ह नमः प्यारा।
थया एकावतारी जो, बनी ने मस्त भक्ति मां ।गुरु.३।
सुवर्णमण्डल बोले , न कोई गुरुजी तोले, बहाई ज्ञान नी गंगा ।
विचक्षण सन्त नी सेवा, रहे तिलक तन मन मां ।गु.४।

तिलकश्री रचित

७३. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - सावन का महीना ...)

दादा गुरु चरणों मां हो वन्दन वारंवार
दादा अमारी नावडी ने करजो भवथी पार ।टेर।
तारा विना नथी कोई नो सहारो, दीनबन्धु दया नज़र निहारो ।
हो प्रत्यक्ष प्रभावी, शासन ना सिणगार ।दादा.१।
संघ नो उदय करो श्रमण वधारी, पाट दीपावे एवा मुनि प्रगटावो।
हो खरतर गच्छ नो हीरलो, जगमग ज्योति अपार ।दादा.२।
आषाढ सुदि अग्यारस भारी, बारसौ अग्यार नी साल मझारी ।
हो लाखो जैन बनाव्या, अहिंसा धर्म प्रचार ।दादा.३।
आत्म-साधना अनुपम तारी, एकावतारी थया कर्म विदारी ।
हो सन्त विचक्षण सेवो, 'तिलक' हर्ष अपार ।दादा.४।

तिलकश्री रचित

७४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - सिद्धाचल ना वासी ..)

दादा दत्त गुरु, निशदिन ध्यान धरूं, ओ गुरु जी ।
कोटि कोटि वन्दन अमारा ।टेर।
बाहड देवि नन्दन प्यारा, मन्त्री बाछग कुल उजियारा ।
खरतर गच्छ नो दीवो, अमी रस पीवो, ओ गुरुजी ।को०१।
तमे लाखो जैन बनाव्या, शुद्ध सम्यक् व्रत उचराया ।
जैन धर्म तणा, कीधा काम घणा, ओ गुरुजी ।को०२।
जड़ सुख मां काल गुमायो, अन्ते शरण तमारे आयो ।
करुणा नजर करो, सुख शान्ति करो, ओ गुरुजी ।को०३।
अजमेर नगरी गुरुजी पधार्या, अन्ते अनशन व्रत आदरीया ।
एकावतारी थया, सौधर्म देव गया, ओ गुरुजी ।को०४।
बेहजार तीस असाडी, जामनगर मां जयन्ति मनाई ।

विचक्षण बुद्धि आपो, 'तिलक' दुःख कापो, ओ गुरुजी ।को०५।

तिलकश्री रचित

७५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - विमलाचल ना वासी ..)

दादा दत्तसूरि, दर्शन दे दो फरी, ओ गुरु जी
कोटि कोटि वन्दन अमारा ।
माता बाहड देवी दुलार, मन्त्री वाछग कुल उजियारा ।
ब्रह्मचारी यति धारी शुद्ध मति, ओ गुरु जी ।को०१।
गुरु नाम थी दुक्ख दूर जावे, मनवांछित फल शुभ पावे ।
गुरु मन्त्र रहे, भवरोग हटे, ओ गुरु जी ।को०२।
लाखो जन ने जैन बनाव्या, दान संयम आपी सुधार्या ।
देव देवी नमे, भव मां न भमे, ओ गुरु जी ।को०३।
गुरु अजमेर नगर पधारे, करी अनशन स्वर्ग सिधारे ।
महाविदेह जइ, जाशे मुक्ति पुरी, ओ गुरु जी ।को०४।
ज्ञान विचक्षण संयम धारी, त्रिभुवन 'तिलक' यशकारी ।
आतम ज्ञान ज्योति, अहो शान्तमूर्ति, ओ गुरुजी ।को०५।

तिलकश्री रचित

७६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - माता यशोदा पूछे)

मेरा गूरु है सब से निराला, मेरे मन बस गया अजमेर वाला ।
महिमा निराली तेरी सब जग गाये, तेरे दरशन को जीया ललचाये।
पुण्य से पाया मैने, गुरु रत्न आला, अजमेर वाला ।१।
भक्तो नी भीड भगाई थी क्षण मे, डूबती जहाज तिराई थी पल मे।
अब तो है मेरा तू ही, जग रखवाला, अजमेर वाला ।२।
आत्म योग बल तेज तुमारा, तेरे चरणो मे है जीवन हमारा ।
प्रेम से फेरो सब, गुरु गुण माला, अजमेर वाला ।३।

सन्त विचक्षण ज्योत जगाई, घर घर में धर्मध्वज लहराई ।
कहे 'तिलक' पीओ, शमरस प्याला, अजमेर वाला ।४।

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

७७. जिनदत्तसूरि वडली यात्रा स्तवन

यात्रा ए वडली जास्यां, गुरुदेव तणां गुण गास्यां हो ।
जिहां जिनवर मूरति राजइ, वलि जिनदत्तसूरि विराजे हो ।१।
पाटण अणहलपुर पासइ, एह कीजै यात्रा उल्हासइ हो ।
सुणि तीरथ महिमा सारी, आवइ भावइ नर नारि हो ।२।
पूज्यां सहु इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासै दूरै हो ।
जिण चौसठ योगिणी जीती, वरतइ ए बार वदीती हो ।३।
वीर बावन पणि वसि कीधा, जगगुरु एहवा जस लीधा हो ।
साकिणि डाकिणि उपशामइ, न पडै बिजली तसु नामै हो ।४।
घर पुर वलि वाटइ घाटइ, दुश्मन भय दूरै दाटै हो ।
खरतर गुरु इम जस खाटइ, वरतै जे सुधरम वाटै हो ।५।
पारिख गुल्लाल पुण्याइ, जेहनइ सुत यात्र कराइ हो ।
श्रीपूज जिनसुखसूरि साथइ, लाभ लीधो लालचन्द नाथइ हो ।६।
सत्तरइ सतसट्ठ वरिसई, मिगसर वदि दुतीया दीसइ हो ।
सहु संघ मनोरथ साधिया, इम कहै 'धर्मसीह' उपाध्याय हो ।७।

पद्मोदय रचित

७८. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – सहाना – धमाल)

सद्गुरु चरणकमल चित्त लाव, मन वांछित फल तुरत ही पाव।।सद्०१।।
वल्लभसूरि पटोधर कहिये, दत्तसूरि गुरु नाम कहाव ।।सद०२।।
चौसठ योगिनी बावन वीर ही, वस किये गुरु तुमरो गुण गाव।।सद्०३।।
मृतक गऊ जिनवर मन्दिर से, मन्त्र से करके सजीव उठाव ।। सद्०४।।
महिमाभक्ति गुरुचरणकमल में, 'पदमोदय' मुनि यह चित्तचाव।।सद०५।।

प्यारेलाल मूथा रचित

७९. जनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - ओ रे बामरिया बीरा . राजस्थानी)

ओ रे जिनदत्त गुरुवर, थोड़ी तो करुणा लाव रे,
बीच भंवर म्हारी नांव रे ।।

करम दाह सू बलतां-बलतां, झुलसी जिणरी काया ।
लाख चौरासी भटक्या ज्यांने, थेहिज नाथ बचाया ।
ठंडी हे थांरी छांव रे ।।१।।

सांसां म्हारी रोय पुकारे, जिनदत्त गुरुवर आजा ।
म्हे मुश्किल मे, जग है बेरी, राखो म्हारी लज्जा ।
जनम लखायो दांव रे ।।२।।

देवलोक म्हारा साजन बैठा, किण-विध दरसण पाऊँ ।
किण-विध भेजूँ पतियाँ प्रभु ने, किण-विध हरख मनाऊँ?
घणी दरस री चाव रे ।।३।।

धरती सूं आभा तक परचो, प्रभुजी थारो छाजे ।
जैन धरम रो पंथ उजाल्यो, चिहुं दिस डंको बाजे ।
जाग्या विचक्षण भाव रे ।।४।।

इण भव रा 'प्यारा' सुख चावे, चावे सुख मुगती रो ।
हिवड़े मन्दिर दीप बालजे, गुरुवर री भगती रो।
महिमा तूं गुरु री गाव रे ।।५।।

प्यारेलाल मूथा रचित

८०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - श्याम तेरी बशी)

दरपे कोई आके पुकारे दादा नाम,
उसके सारे बन जाते है बिगड़े काम ।
नाम रटो दादा का नही लागे दाम
जिसने इन्हे ध्याया पाया है बिसराम ।१।

हो छोड़ सारी दुविधाये मन को मना ले,
चित्तवृत्ति गुरुवर के चरणे लगाले ।
दुःख मिटे सारे भला हो अंजाम,
जिसने इन्हें ध्याया पाया है बिसराम ।२।
हो मोह माया केवल, शीशे का खिलौना,
टूट जाये शीशा तो हाथ लगे रोना ।
ऐसी मोहमाया से करो राम राम
जिसने इन्हें ध्याया पाया है बिसराम ।३।
हो हृदय से पीले तूं आंखो से पी ले।
दत्त नाम प्याला तू पीकर के जी ले,
विश्व 'प्यारा' हो जायेगा फिर तमाम।
जिसने इन्हे ध्याया पाया है बिसराम ।४।

प्यारेलाल मूथा रचित

८१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - न झटको ज़ुल्फ से पानी ...)

न छिटकाओ गुरु मुझको, ये किश्ती डूब जायेगी ।
विरह मे चैन आयेगा न मुझको नींद आयेगी ।।
तुम्हारी मेहरबानी के सहारे जी रहा हूँ नाथ।
अगर तुमने भी मुँह मोड़ा तो आशा टूट जायेगी ।१।
रे मेरी चीख को सुनकर भी तुम खामोश बैठे हो ।
सहारा किसका है तुम बिन, ये नैया डगमगायेगी ।२।
के जल धाराएँ सावन-सी मेरी आँखों से बहती हैं
घटाएँ गम की जो छाई, तुम्हे 'दत्त जी' सुहायेगी?।३।
तुम्हारे नाम मे भी तो कुछ ऐसी शक्ति है गुरुवर!
उसी श्रद्धा का संबल हो तो मुक्ति मिल ही जायेगी ।४।
मैं पामर नीच हूँ तो क्या मुझे चरणो का है शरणा ।
भवोभव भ्रमर मेरी तुम जो चाहो छूट जायेगी ।५।

बहुत सहना पड़ा है गम अनादि से मुझे 'प्यारे' ।
तो सेवा गुरु चरण की ज्योत-ज्योति से मिलायेगी ।६।

प्यारेलाल मूथा रचित

८२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज-दुनिया ने सुन ली प्रेम कहानी राजा जानी शराफत)

भव भव की तू प्यास बुझा दे, मेरे अन्तर-जामी,
मेरे स्वामी ... मेरे स्वामी ।
मुझ को शिवरमणी मिलवा दे, नामी दिल विसरामी,
मेरे स्वामी .. गुरुवर नामी ।।१।
छाया कूप की कूप समाये, वैसे मन की मन रह जाये,
... है नाथ, मुश्किल ।
जीवन कर्मी, धर्म सिखा दे, छूटे कर्म गुलामी । मेरे स्वामी ।।२।
तेरी महिमा जब पहचाना, मूरख मैं भया तब दीवाना,
भाव बना दे सम्यग् ।
ज्ञान विचक्षण सज्जन ला दे, ना चाहूँ बदनामी। मेरे स्वामी ।।३।
इतनी 'दत्त' से अरजी मेरी, 'प्यारे' चाहूँ मरजी तेरी,
.... तेरे दम से जीऊँ ।
जन्म जनम की आस फला दे, मिट जाये मन की खामी ।मे.।।४।

प्यारे लाल मूथा रचित

८३. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - गंगा की सौगन्ध)

मानो तो ये जग तारक है, न मानो तो है अवतारी ।
मेरा गुरुवर है सुखकर्त्ता, चहुं दिशि मे यश विस्तारी ।१।
हो पुण्य प्रबल तो पाये, गुरुदेव के पावन दर्शन ।
निर्मल उज्ज्वल हो जाये, मानस का मैला आंगन ।
सबके है दत्त दयालु, है महिमा इनकी भारी ।।मानो तो २।
कई रोग मिटे भक्ति से, कोई दर से खाली न जाये ।

निश्चित बने वो प्राणी, जो गुरुवरजी को ध्याये ।
पूरी हो जाये मन्शा, जिसने जो मन में धारी ।मानो तो ३।
जब संकट में घिर जाओ, दिन रात गुरु को ध्यावो।
कोई देश देशान्तर जाओ, दादा को दिल मे बसावो ।
जब वल्लभ गुरुवर 'प्यारा',रहता है सानिधकारी। मानो तो ४।

प्र. प्रमोद श्री रचित

८४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज--काली कमली वाले तुमको)

दादा दत्त सूरिन्द गुरु को कोटि नमन, कोटि कोटि नमन ।।टेर।।
कच्छ मांडवी दर्शन पाया, आधि व्याधि सब दूर भगाया ।
संकट के रखवाला, गुरु को०१।।
अजब दृश्य वाड़ी का पाया, पार्श्व देव है शिवसुख दाया ।
तीन जगत के पाल, गुरु को०२।।
श्री जिनचन्द्र-कुशल सूरीश्वर, युगल चरण मध्य गुरुवर ।
शोभो दीन दयाल, गुरु को०३।।
अहनिश ध्यान आपका धरती, भवदरिया से शीघ्र ही तरती।
हो भक्तो के प्रतिपाल, गुरु को०४।।
मनवांछित सब पूरण करदो, भक्ति रस को हृदय में भरदो ।
करो मेरी संभाल, गुरु को०।। ।।६।।
त्राण शरण गुरुदेव हमारे, पल पल में भक्तों को निहारे ।
है हम तुमरे बाल, गुरु को०।।७।।
वीर चौबीस सड़सठ में आई, ज्येष्ठ कृष्णा तीज सुहाई ।
तुम दर्शन पाया कृपाल, गुरु को०।।८।।
विमल निर्मल मेरा मन करदो, 'प्रमोद' में मोद सदाही भरदो ।
दादा पूज्य दयाल, गुरु को०।।९।।

प्रीतिसुन्दर रचित

८५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग -- कहरवो)

आज हमारे आनन्द भया, मै भेट्या श्री गुरुराज जी ।।आ०।।टेर।।
खरतरगच्छपति दीपतो रे, जिनदत्त सूरिन्द कहाय जी ।।आ०१।।
यात्री आवे बहु देशना रे, पूजा रचे बहु भाय जी ।।आ०२।।
निरमल गंगा जल भरी रे, चरण प्रक्षाल कराय जी ।।आ०३।।
केशर चन्दन घसि करी रे, मृगमद मांहि मिलाय जी ।।आ०४।।
धूप दीप नैवेद्य थी रे, पंच रंग पुष्प चढाय जी ।।आ०५।।
तीन प्रदक्षिणा देईने रे, लुल लुल शीश नमाय जी ।।आ०६।।
इत्यादिक वहु भेद सुं रे, भक्ति करो चित्त लाय जी ।।आ०७।।
निश्चय सुगुरु ने भजे रे, कमणा न रहे काय जी ।।आ०८।।
आधि व्याधि दोपी पुन दुशमन, गुरु नामे मिट जाय जी।।आ०९।।
सेवक कुँ संकट पड्यां रे, समर्या होत सहाय जी ।।आ०१०।।
संवत् ओगणतिहोतरे रे, भाद्रव मास सुहाय जी ।।आ०११।।
शुक्ल पक्ष पूनम दिने रे, दरशण पायो मै आय जी ।।आ०१२।।
हर्पविशाल शिष्य तुम हीरे, 'प्रीतिसुन्दर' गुण गाय जी।।आ०१३।।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - जाने वो)

वडभागी वे लोग जिन्होने सद्गुरु शरण लिया,
दूर किया दु:ख द्वन्द्व जगत का सुख सौभाग्य लिया ।
निश दिन अन्तर मे गुरु समरण रसना मे गुरु नाम,
नयनों मे डोले गुरु सूरत गुरु विन और न काम ।
अपना आप मिटा कर सब कुछ गुरु के चरण दिया,
वडभागी वे लोग जिन्होंने सद्गुरु शरण लिया ।१।
गुरु की सेवा अन्न धन वैभव लक्ष्मी सुख भरती,
अन्त मे शुद्ध ज्ञान विचक्षण दिव्य प्रभा करती ।

दादा जिनदत्त चरण कमल मे 'भ्रमर' ज्युं वास किया ।
वड़भागी वे लोग जिन्होंने सद्गुरु शरण लिया ।२।

मंजुलाश्री रचित

८७. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - झुले झुले छे त्रिशला.)

गुरु दर्शन थी दुखड़ा जाय, दीवो शासन नो ।
गुरु वन्दन थी वांछित थाय, दीवो शासन नो ।
ए तो गुजरातनो साचो हीरो हतो,पितामंत्री वाछगनो प्यारो हतो।
माता बाहड़ नो नन्द कहाय, दीवो शासन नो ।१।
गुरु आठ वरस ना संयम लीधो, भोग वैभव नो मोह त्यजी दीधो।
थया सोमचन्द्र मुनिराय, दीवो शासन नो ।२।
तप त्याग प्रभाव थी शोभी रह्या,ज्ञान ध्यान ना झूले झूली रह्या।
पद युगप्रधान कहेवाय, दीवो शासन नो ।३।
गुरु ज्ञानी विना पाट खाली पड्या,गामो गामे भक्ते पोकारी रह्या।
हवे आवो ने कोई योगिराय, दीवो शासन नो ।४।
'तिलक मंजु' नी वीनती स्वीकार करो,
गुरु नाम विचक्षण अमर रहो।
जो जो नैया न डूबी जाय, दीवो शासन नो ।५।

मंजुलाश्री रचित

८८. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - ज्योत से ज्योत.)

धर्म नो डंको बजावी गया, दादा गुरु स्वर्ग सिधावी गया ।
जिन शासन चमकावी गया, दादा गुरु स्वर्ग सिधारी गया ।
धन्य छे बाछग बाहड देवी, धन्य गुरु गुणवंता ।
नव वरस ना संयम लीधो, सोमचन्द्र जयवंता ।
संयम मार्ग बतावी गया, दादा गुरु०१।।
सात राजा ने प्रतिबोध आपी, सत्य अहिंसा समझावे ।

मांस मदिरा त्याग करावी, श्री जिन धर्मी बनावे ।
दया नो डंको बजावी गया, दादा गुरु०।२।
देव देवी राजा राणा, सेवा करे सुखकारी ।
मानव मन अति निर्मल करता, एक लख तीस हजारी ।
नूतन जैन बनावी गया, दादा गुरु०३।
अजमेर मां गुरु अनशन लीधुं, आतम ज्योत जगाई ।
एकावतारी शिव तुख आशी, भवनी भीड भवाई ।
मोक्ष नो मार्ग बतावी गया, दादा गुरु०४।
'भुजनगर' मा स्वर्ग जयन्ती, उजवे छे मनहारी ।
सन्त विचक्षण तीन भुवन मां, नमे 'तिलक मजु' भारी ।
जय जय नाद गुंजावी गया, दादा गुरु०५।

महिमाभक्ति रचित

८८. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी - फतमल्ल की)

सद्गुरु श्री जिनदत्तसूरि, चिन्ता चूरी माहरी जी ।स.।
दयाधर मुनिवर देव, आंण मांने ताहरी जी ।स.१।
नही ध्यावुं देव, तुम्ह तणो, नाम सदा धरे जी ।स.।
तसु घर मंगल माल, कमला नवी नवी विस्तरे जी ।स.२।
पंचम काल मझार, जंगम सुरतरु सारिखा जी ।स.।
तुम्ह पद एह प्रताप, न धरे तुझ सुं कोई ईरपा जी ।स.३।
श्री जिनहर्षसूरीस, तासु राज भवि सिर धरे जी ।स.।
'बालूचर' पुर सार, श्री संघ मिल उच्छव करे जी ।स.४।
वरस अठार पच्यास, ज्येष्ठ सुकल तृतीया दिने जी ।स.।
भई प्रतिष्ठा शुक्रवार, भाव भगति हरखे घने जी ।स.५।
चारित्रनन्दन साथ, दयावर्धन भली भावना जी ।स.।
'महिमाभक्ति' प्रधान, इन्द्र करे तसु सेवना जी ।स.६।

मुनि महेन्द्रसागर रचित

९०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - जिन मत का डंका आलम मे)

उपदेशामृत का स्रोत बहाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।
नव तत्त्वों का प्रतिबोध कराया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।।उ.१।
आत्मिक बल के कारण से, देवों का दल सब दास बना ।
चारित्र कुसुम से प्रेम जगाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।।उ.२।
अपनी अलौकिक शक्ति से, लाखों जन का उद्धार किया ।
मुक्ति ललना से स्नेह लगाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।।उ.३।
अनेक ग्रन्थ की रचना करके, भूरि भूरि उपकार किया ।
जिन भक्तों का समुदाय बढाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने।।उ.४।।
गुरु परमानन्द के धारी हैं महिमा मही में जयकारी हैं ।
शिशु 'महेन्द्र' को जल्दी अपनाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने।उ.५।

मुनि महेन्द्रसागर रचित

९१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - अपनी अतीत हालत अये हिन्द तूँ दिखादे)

जिनदत्त सूरि गुरु के, चरणों मे शीस नमाऊँ ।
गुण ग्राम गान करके, आनन्द कन्द पाऊ ।। जिन०१ ।।
सौराष्ट्र देश सुन्दर, समृद्धि से भरा है ।
प्रत्यक्ष पुण्य भूमि, इसमें न शक जरा है ।। जिन० २ ।।
श्री धंधुका नगर की, शोभा है चित्तहारी ।
जन्मे पुनीत पुर में, सूरि एकावतारी ।। जिन० ३ ।।
बाहड़ देवी माता, कुक्षि से रत्न जाया ।।
वाच्छग मंत्रि कुल को, इस रत्न ने दीपाया ।। जिन० ४ ।।
संसार दुःख समझे, वैराग्य रंग धारे ।
सुत मंत्री बाल वय में, चारित्र को स्वीकारे ।। जिन० ५ ।।
क्षमादि गुण अपनाये, दोपों का वृन्द वाला ।

आत्मा विकाश अर्थे, मुनि धर्म शुद्ध पाला । जिन ० ६ ॥
दर्शन सकल के ज्ञाता, व्याख्यान मधुर सुनाते ।
प्रवचन पीयूष द्वारा, श्रोता के रोग जाते ॥ जिन० ७ ॥
चौसट्ठ योगिनी ने, वरदान सात अर्पे ।
सेवा करो श्री गुरु की, सुख वल्ली को समर्पे ॥ जिन० ८ ॥
भडुचाभिधान नगरे, आचार्य देव आवे ।
सम्राट् मुगल पूत को, मृत्यु से आप बचावे ॥ जिन० ९ ॥
विद्युत के विजय की, आश्चर्यकारी घटना ।
मुनिवर्य्य ने दिखा दी, 'जिनदत्त' नाम रटना ॥ जिन० १०॥
दीक्षित किये श्री गुरु ने, शत पंच दिव्य मुनिवर ।
सुसाध्वी सप्त शत का, परिवार है श्रेयस्कर ॥ जिन० ११ ॥
एक लाख ऊपर, तीस हजार जन को ।
बनाये जैन धर्मी, उपदेश देके उनको ॥ जिन० १२ ॥
पंजाव पूर्व मरुधर, गुर्जर सौराष्ट्र विचरे ।
उपकार अपूर्व करके, भव सिन्धु पार उतरे ॥ जिन० १३ ॥
अतिशय प्रभावशाली, शिरताज है हमारे ।
कलिकाल कामधेनु, पूरे अभीष्ट हमारे ॥ जिन ० १४ ॥
सुख ध्येय है हमारा, भगवान श्रेयकारी ।
त्रैलोक्य शान्तिकर्त्ता, आनन्द ज्ञानधारी ॥ जिन० १५ ॥
धन्य भाग्य आज हमारा, उत्सव जयंति भावे ।
गुरुराय की यह स्तवना, 'महेन्द्र सिन्धु' गावे ॥ जिन० १६ ॥

मुनि महेन्द्रसागर रचित

९२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज – छोड वृथा अभिमान)

भावे भेट्या गुरु देव, आज मे श्री जिनदत्त सूरीन्द ॥ टेर ॥
पालीतणा मां गुरु तमारी, देहरी छे मनुहार ।
तेमां चन्द्र मुखी प्रतिमां विराजे, दर्शक थाय भव पार ॥आ०१॥

मुनि महेन्द्रसागर रचित

९०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - जिन मत का डंका आलम मे)

उपदेशामृत का स्रोत बहाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।
नव तत्त्वों का प्रतिबोध कराया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।।उ.१।
आत्मिक बल के कारण से, देवो का दल सब दास बना ।
चारित्र कुसुम से प्रेम जगाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।।उ.२।
अपनी अलौकिक शक्ति से, लाखों जन का उद्धार किया ।
मुक्ति ललना से स्नेह लगाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने ।।उ.३।
अनेक ग्रन्थ की रचना करके, भूरि भूरि उपकार किया ।
जिन भक्तो का समुदाय बढाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने।।उ.४।।
गुरु परमानन्द के धारी हैं महिमा मही में जयकारी है ।
शिशु 'महेन्द्र' को जल्दी अपनाया, श्री जिनदत्त सूरीश्वर ने।उ.५।

मुनि महेन्द्रसागर रचित

९१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज - अपनी अतीत हालत अये हिन्द तूँ दिखादे)

जिनदत्त सूरि गुरु के, चरणों मे शीस नमाऊँ ।
गुण ग्राम गान करके, आनन्द कन्द पाऊ ।। जिन०१ ।।
सौराष्ट्र देश सुन्दर, समृद्धि से भरा है ।
प्रत्यक्ष पुण्य भूमि, इसमें न शक जरा है ।। जिन० २ ।।
श्री धंधुका नगर की, शोभा है चित्तहारी ।
जन्मे पुनीत पुर मे, सूरि एकावतारी ।। जिन० ३ ।।
बाहड़ देवी माता, कुक्षि से रत्न जाया ।।
वाच्छग मंत्रि कुल को, इस रत्न ने दीपाया ।। जिन० ४ ।।
संसार दुःख समझे, वैराग्य रंग धारे ।
सुत मंत्री बाल वय मे, चारित्र को स्वीकारे ।। जिन० ५ ।।
क्षमादि गुण अपनाये, दोपों का वृन्द बाला ।

पुण्यपुरुष युगपरगडो,जिण करणी उज्जल कीध रे लाला।।श्री०५।।
प्रतिबोध्या श्रावक श्राविका, मिल लाख सवा सहु देश रे लाला ।
जैन धरम दीपावियो,खरतरगच्छ कमल दिनेश रे लाला।।श्री०६।।
संवत् बारह से ग्यारह, आषाढ़ शुक्ल पक्ष जान रे लाला ।
इग्यारस सद्गुरु तणो, अजमेर नगर निरवाण रे लाला।।श्री० ७।।
कामितदायक कलयुगे, साचो सुरतरु अवतार रे लाला ।
समस्त श्याम घटाकरी, महियल वरसे जलधार रे लाला।।श्री०८।।
महिर करि मुझ ऊपरे, गुरु पूर निजर निहाल रे लाला ।
'राजहरख'[1] कर जोड़ने,वन्दे मन शुद्धचरण त्रिकाल रे लाला।।श्री.९।।

यति रामपाल रचित

९५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—आनन्द का डंका दुनिया में बजवा दिया शिवपुर०)

गुरुदेव आपने भूले पथिको को, सत्य मारग दिखलाया था ।
संतप्त दुक्खी पीड़ित पतितो को, फिर से गले लगाया था ।।टेर।।
इक चमत्कार दिखलाया था, तुमने अनुपम निज शक्ति का ।
जब पात्र के नीचे बिजली को, झट तुमने देव दबाया था ।।१।।
प्रतिक्रमण बाद यह वचन दिया, बिजली ने करके विनय बड़ी ।
नही आपका भक्त सताऊंगी, सुन रहम आपको आया था ।।२।।
जिनदत्त सूरिजी महाराज, उपदेश दे रहे थे भारी ।
उस समय विलक्षण एक दृश्य, वहां पर लोगो ने पाया था ।।३।।
चौसठ योगिनियां आई थी, पर महाराज को पहिले ही ।
था ज्ञान जल्द चौसठ पट्टो को, बनवा तय्यार करवाया था ।।४।।
फिर किया श्राविकाओ को था, आदेश उन्हे बैठाने का ।
जब बैठ गई तो कील दिया, वह समय अति रग लाया था ।।५।।
उपदेश खत्म होने पर उठने, लगी मगर वह उठ न सकी ।
तो क्षमा मांग गुरु दत्तसूरि, से वरदानो को पाया था ।।६।।
दासियां बनी थी छलने को, लेकिन वे छली गई खुद ही ।

अप्रतिम ज्ञानी परमार्थ जीवी, युग प्रधान जयकार ।
लाखों जन ने प्रतिबोध्या गुरु, श्रमण श्रमणी परिवार ।।आ०२ ।।
साचा मन थी समरे तमने, मन वांच्छित फल पाय ।
सांप्रत समय मां ज्योति तमारी, झलहले छे जग मांय ।।आ०३ ।।
महिमां सुणीने दास तमारो, आव्यो तुझ दरबार ।
उत्कट भाव थी वन्दन कीधां, उलट्यो मोद अपार ।। आ० ४ ।।
चिन्ता चूरो वांछित पूरो, कुमति करो अति दूर ।
आनन्दसिन्धु ना चरण प्रतापे, 'महेन्द्र' लहे ज्ञान नो सूर ।।आ०५।।

वाचक रत्नसुन्दर रचित

९३. जिनदत्तसूरि स्तवन

श्री जिनदत्त जुहारा, धन भाग हमारा ।श्री०।
देवी देवा बहु है जग मे, तुम सम नांही निहारा ।ध० १।
जीति चौसठि जोगिणि देवी, युगप्रधान पद धारा ।ध०२।
प्रेम सुधारस गुण रतनागर, करुणा सिन्धु अपारा ।ध०३।
'रतनसुन्दर' वाचक कुं दीजे, तुम चरनन आधारा ।ध०४।

राजहर्ष (राजसागर) रचित

९४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज--चा·र)

हां रे लाला श्रीजिनदत्त सूरीश्वरु, दादा प्रकट उगमता सूर रे लाला।
भाव धरी पूजे सदा, घसी कुंकुम गलि कपूर रे लाला ।।श्री०१।।
जीती चौसठ योगिनी, वस किया बावन वीर रे लाला ।
मन्त्रबले करी साधिया, जिन पंच नदी पंच पीर रे लाला।।श्री०२।।
हिंसा टाली जीवनी, जय सिन्ध सवा लख देश रे लाला ।
दानव मानव देवता, माने सहु आण नरेश रे लाला ।। श्री०३ ।।
आज विषम पंचम अरे, जेहना मोटा अवदात रे लाला ।
नामे न पड़े वीजली, छलछिद्र न होय तिलमात्र रे लाला।।श्री०४।।
युगप्रधान पद जेह ने, देवे प्रत्यक्ष होई दीध रे लाला ।

पुण्यपुरुष युगपरगडो,जिण करणी उज्जल कीध रे लाला।।श्री०५।।
प्रतिबोध्या श्रावक श्राविका, मिल लाख सवा सहु देश रे लाला ।
जैन धरम दीपावियो,खरतरगच्छ कमल दिनेश रे लाला।।श्री०६।।
संवत् बारह से ग्यारह, आषाढ़ शुक्ल पक्ष जान रे लाला ।
इग्यारस सद्गुरु तणो, अजमेर नगर निरवाण रे लाला।।श्री० ७।।
कामितदायक कलयुगे, साचो सुरतरु अवतार रे लाला ।
समस्त श्याम घटाकरी, महियल वरसे जलधार रे लाला।।श्री०८।।
महिर करि मुझ ऊपरे, गुरु पूर निजर निहाल रे लाला ।
'राजहरख'[1] कर जोडने,वन्दे मन शुद्धचरण त्रिकाल रे लाला।।श्री.९।।

यति रामपाल रचित

९५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—आनन्द का डंका दुनिया मे बजवा दिया शिवपुर०)

गुरुदेव आपने भूले पथिको को, सत्य मारग दिखलाया था ।
संतप्त दुक्खी पीड़ित पतितो को, फिर से गले लगाया था ।।टेर।।
इक चमत्कार दिखलाया था, तुमने अनुपम निज शक्ति का ।
जब पात्र के नीचे बिजली को, झट तुमने देव दबाया था ।।१।।
प्रतिक्रमण बाद यह वचन दिया, बिजली ने करके विनय बड़ी ।
नही आपका भक्त सताऊंगी, सुन रहम आपको आया था ।।२।।
जिनदत्त सूरिजी महाराज, उपदेश दे रहे थे भारी ।
उस समय विलक्षण एक दृश्य, वहां पर लोगो ने पाया था ।।३।।
चौसठ योगिनियां आई थीं, पर महाराज को पहिले ही ।
था ज्ञान जल्द चौसठ पट्टो को, बनवा तय्यार करवाया था ।।४।।
फिर किया श्राविकाओ को था, आदेश उन्हे बैठाने का ।
जब बैठ गई तो कील दिया, वह समय अति रंग लाया था ।।५।।
उपदेश खत्म होने पर उठने, लगी मगर वह उठ न सकी ।
तो क्षमा मांग गुरु दत्तसूरि, से वरदानो को पाया था ।।६।।
दासियां बनी थी छलने को, लेकिन वे छली गई खुद ही ।

अब इन बातों को 'रामपाल', यति ने सब समझाया था ।।७।।
गुण गान कहां तक जाय किया, महिमाये अमित तुम्हारी है।
तुमने बावन वीरो तक पे, शासन अपना प्रगटाया था ।।८।।

महो. ऋद्धिसार रचित

९६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–आज दिल हर्षे)

आज रंग वरसे रे ।
वरसे सुगुरु दरश को, जियरा तरसे रे। आज० ।।टेर।।
सायर ज्युं गंभीर अतुल बल, धीरज मेरुज बरसे रे ।।
मेघ घटा ज्युं भक्त जीव पर, अमृत सरसे रे ।। आज० १ ।।
जिन वच सेती हिल मिल सद्गुरु, भाखे बचन निडर से रे ।।
कंचन ज्युं निरमल ज्ञान गुण, भविजन फरसे रे ।। आज० २ ।।
अवनीतल ज्युं क्षमा शीतलता, बावना चन्दन करसे रे ।।
तप आतम गुण तेज दिवाकर, शम शशिधर से रे ।। आज०३ ।।
सेवे सुर नर हाथ जोड़ कर, सुरपति ज्युं गुरु दरसे रे ।।
कल्पवृक्ष ज्युं वंछित पूरण, आनन्द हरसे रे ।। आज० ४ ।।
गच्छ चौरासी के गुरु रक्षक, भूप रूप खरतर से रे ।।
श्री जिनवल्लभ पाट दीपावन, रत्न अमर से रे ।।आज० ५।।
दश विध यती धर्म के पालक, प्रगटे रतनाकर से रे ।।
'राम' वारणा लेत चरण का, ऋद्धि सिद्धि घर से रे।।आज०६।।

महो. ऋद्धिसार रचित

९७. जिनदत्तसूरि स्तवन

गुरुदत्त जती, शुद्ध साधु व्रती मेरी नैया कूं पार लगा दो जती।।टेर।।
मैने कुगुरु कुदेव को सत्त समझा,सारे मिथ्यामति में रहा उरझा।।
मैने कुमती से किया कुकर्म कृति,
मेरी नैया कूं पार लगा दो जती ।।१।।

फिर होय अनारज कर्म करा, छल बल कर माया उदर भरा ।
ऐसी कर करणी से होगी कैसी गती,
मेरी नैया कूं पार लगा दो जती ।।२।।
कोई पुण्य उदय गुरु दत्त मिला,जाकी जागती ज्योति जगत्र कला।
जिन धर्म की संगत सुधरी मती,मेरी नैया कूं पार लगा दो जती।।३।।
व्याख्यान तुम्हारा श्रवण किया, मैंने और जंजाल को छोड़ दिया ।
तेरी फूल वासना महके अती, मेरी नैया कूं पार लगा दो जती।।४।।
तेरी आत्मशक्ति से योग वधा, इसभव परभव उपगार सधा ।।
गुण गाऊं कहां तक अल्पमती,मेरी नैया कूं पार लगा दो जती ।।५।।
नही मांगूं धन कंचन माया, तेरे सुनजर की चाहुं छाया ।
अब आनन्द पाई ऋद्धि छती,मेरी नैया कूं पार लगा दो जती ।।६।।
तेरी पाठक 'राम' कवित्त कहै, चिरंजीओ गुरु भव पार लहै ।
अब तारोजी खरतर गच्छपती,मेरी नैया कूं पार लगा दो जती।।७।।

महो. ऋद्धिसार रचित

९८. जिनदत्तसूरि स्तवन

चलो प्यारे सयान, मेरा कहा लो मान ।
गुरु है सुविहान, जाने सारी जहान ।। टेर।।
पूरे मन की जो आश, मानूं दीपे कैलाश ।
नर नारी है दास, रखे शक्ति सैं मान ।। चलो०।।१।।
जिनवल्लभ के पाट, जिसका बड़ा है ठाट ।
देवे संकट कूं काट, देवे लक्ष्मी निधान ।।चलो० २।।
तेरी जागती है जोति, वारूं हीरा और मोती ।
तेरी महिमा जो होती, कर दे मेरा कल्याण ।।चलो०३।।
तुझे कहै जिनदत्त, तूं देता संपत्त ।
मेरी काटो विपत्त, देता शान्ति सुथांन ।।चलो० ४।।
चिरं जीवो कृपाल, चाढूं फूलों की माल ।
करो दुश्मन पैमाल, 'राम' धरता है ध्यान ।।चलो० ५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

९९. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—पास पियारो लागे प्यारो)

चाल चाल म्हारा सुगुणा श्रावक,
सद्‌गुरु पूजो रे सुगुरु के चालोरे ।।टेर।।

अरिहन्त देव सुसाधु गुरु पद, जिन भापित धर्म कहियो रे ।।
समकित श्रद्धा नव तत्व भाखे, गुरु गहगहियो रे ।। सु० १ ।।
राजन्य कुल से श्रावक कीना, भक्षाभक्ष दिखाया रे ।।
कृत्य अकृत्य ने पेयापेयी, ज्ञान सिखाया रे ।। सु० २ ।।
थूल हिंसा का त्याग कराया, पांच अणुव्रत दीना रे ।।
तीन गुण व्रत चार शिक्षा व्रत, जैनी कीना रे ।। सु० ३ ।।
कष्ट आपदा सब ही टाली, ऊंचे पद पहुँचाया रे ।।
अनेक राजा सेवा सारे, गुरु मन भाया रे ।। सु० ४ ।।
रत्न चिन्तामणि जिन धर्म दीनों, गुरु परम उपगारी रे ।।
केई भव्यो ने चारित्र देकर, भवजल तारी रे ।। सु० ५ ।।
कर अणसण आराधनकारी, प्रथम स्वर्ग में जावे रे ।
वड गच्छ नायक देव प्रगट हुआ, यूं फरमावे रे ।। सु० ६।।
खरतर संघ सुणो इक चित्तसुं, तुम गुरु टक्कल विमाने रे ।।
हुआ देव महर्द्धिक समकिती, सुर सुख माने रे ।। सु० ७ ।।
संघ कहे भव निश्चय कीजै, पूछो जिनवर राया रे ।।
देव जाय सीमंधर पूछे, जिन फरमाया रे ।। सु० ८ ।।
चार पल्य के आयु अन्ते, महाविदेह उपजसी रे ।।
ले दीक्षा केवल पद पासी, शिव पद वरसी रे ।। सु० ९ ।।
दो गाथा सीमंधर भाखी, देव संघ ने दीधी रे ।।
हर्ष भरी श्री संघ पुर ग्रामे, थापना कीधी रे ।। सु० १०।।
ये गुरु प्रवहण सम भव दरिये, कवलो वर्णन कीजे रे ।।
इक अवतारी मोक्ष सिधासे, पद पूजीजे रे ।। सु० ११ ।।

इहभव परभव वंछित पूरण, कर सेवा सुखदाई रे ॥
खरतर गच्छ नायक गुरु लायक, सुरतरु छांही रे ॥ सु० १२ ॥
किम उपगार भूले गुरु गुण का, भूले कृतघ्नी होई रे ॥
धिग् धिग् जन्म वृथा तिण पायो, देखो जोई रे ॥ सु० १३ ॥
आज नही है ऐसा समरथ, राजन को प्रतिवोधे रे ॥
ओशवंश कुलवृद्धिकारक, श्रावक सोधे रे ॥ सु० १४ ॥
रांधे को रांधे जो भोला, इसने कहा वड़ाई रे ॥
गुरु गुण अतुल तणा मे रसिया, भूलो म भाई रे ॥ सु० १५ ॥
गछनायक जिनचारित्रसूरि, 'पाठक राम' सवाया रे ।
जन्म मरण मेटन गुरु समरथ, सत गुण गाया रे ॥ सु० १६ ॥

महो. ऋद्धिसार रचित

१००. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–जाय वसे उन देश पियारे-प्रीत निभाना छोड दिया)

जाय फसा कुगुरु के फन्द मे, गुरु गुण गाना छोड दिया ॥टेर॥
तापस वृत्ति आन कष्ट से, जिन आज्ञा को तोड दिया ॥जा० १॥
पन्थ अघोर मलीन चला कर, मन माना ज्यो जोड दिया ॥
नही पढ़ा षट्शास्त्र अज्ञानी, जिन मुद्रा मुख गोड लिया ॥ज०२॥
विषम जाल मे फंस गया सद्गुरु, जिन मारग को छोड़ दिया ॥
मिले सुज्ञानी गुरु गुण पूरे, भरम जाल को फोड दिया ॥जा०३॥
अव शरणागत तेरे सद्गुरु, पार करो मेरा खोलो हिया ॥
शुद्ध मन तेरी पूज रचाऊं, कोई न तेरी होड किया ॥जा०४॥
श्री जिनवल्लभ पाट उद्योतक, तत्त्व वचन को निचोड़ लिया ॥
श्री जिनदत्त सूरीस हमारे, 'ऋद्धिसार' गुण जोड दिया ॥जा०५॥

महो. ऋद्धिसार रचित

१०१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–मेरे नाथ धुलेवा वुलाले मुझे)

तेरा अमृत प्याला पिलादो मुझे, तेरे अनुभव रंग मे लगादो मुझे।

मैं तो परदे पर जमी के, तूं रहा असमान में ॥
कैसे सोहबत होय तेरी, नही मेरे आसान में ॥
मेरा खत सन्देशा न पहुँचे तुझे ॥ तेरा० १ ॥
अगर तूं अरजी पै मरजी, करो मुझ पर कर रहम ॥
बन्दा अपना जान माहिर, दे दरस का दे मरहम ॥
अैसा तेरा भरोसा है पूरा मुझे ॥ तेरा० २ ॥
लौ लगी कीया उजेरा, पाक मोहब्बत के तएे ॥
दीदार का पाया नफा, जब दूर हट गये दुःख घणे ॥
सब हांसिल मेरी मिलादो मुझे ॥ तेरा० ३ ॥
बैन तेरे हैं रसीले, नयन में रहमी भरी ॥
शान्ति मूरत कुशल सूरत, दत्त गुरु महिमा वरी ॥
शुद्ध मन से ध्यावत 'राम' तुझे ॥ तेरा० ४ ॥

महो. ऋद्धिसार रचित

१०२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–होरी)

दत्त गुरु दरश दिखा दो ज़ी, मै प्यासा तेरे दरशन का ॥टेर॥
कीर्ति सुणी सन्तन मुख, तेरी दूर देश से आया ॥
नेक नजर कर सद्गुरु मुझ पर, चरणां शीश नमाया ॥दत्त०१॥
अन धन लक्ष्मी सुख संपत का, भरा खजाना पूर ॥
दीजे मुझ को घटे न तिल भर, दुःख दालिदर दूर ॥ दत्त०२ ॥
आगे विरुद किया बहु तुमनें, अब क्यूं करते देरी? ॥
अेक चित्त से ध्यान लगाता, शुद्ध मन देता फेरी ॥ दत्त० ३ ॥
आशा धर कर करूं प्रार्थना, वांछित पूरण कीजै ॥
लीला लहर पलक मे पाऊं, यो जश सद्गुरु लीजे ॥ दत्त० ४ ॥
मांझल रात दिया गुरु दर्शन, तेज झलामल पूर ॥
भक्त वच्छल वरदाई प्रगटे, चन्द सूरसा नूर ॥ दत्त० ५ ॥
श्री जिनवल्लभ पाट प्रदीपक, खरतरगच्छ राजान ॥

उदय उदय कर संघ सकल का, जाए सकल जिहान ।।दत्त०६।।
भक्तो के आधीन परमगुरु, किया शत्रु दल नाश ।।
चरण शरण का लिया आसरा, 'राम' चरण का दास ।।दत्त०७।।

महो. ऋद्धिसार रचित

१०३. जिनदत्तसूरि स्तवन

दिल चंचल को कावू मे कैसे लायंगे ।। दि० ।।
कैसे लायेगे, हम अैसे लायेगे,
तेरे वचनो का टुक जो इशारा पायंगे ।। दिल० ।। टेर ।।
नादान वेईमान सयतान तोफान, मन एबी बड़ा है सैलान ।
गुरु चितवन से कावू मे ले आयेगे ।। दिल० १ ।।
शुद्ध ज्ञान फरमान इकतान पुनवान,तेरे कदमूं से धर लूंगा ध्यान।
सब अैवो को दिलसे हटाते जायेगे ।। दिल० २ ।।
तूँ सत्त शुद्धमत जिनदत्त रखपत्त, तेरी महर से लीला संपत्त ।
सारे दुश्मन हमारे मुरझा जायेंगे ।। दिल० ३ ।।
कहे'राम'गुणग्राम सिद्ध काम शिवधाम,चिरफलो से पूजूँ तेरे पांव।
तुझे छोड़ के न और कूँ कभी ध्यायेगे ।। दिल० ४ ।।

महो. ऋद्धिसार रचित

१०४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–होरी)

होरी खेलो भविक जिनदत्त के संग,
दादा के सग सद्गुरु के संग-नित आनन्दउच्छव होत रंग।होरी०।।टेर।।
मस्त महीना फागुण आया, श्रीसंघ से हिलमिल के संग ।।हो०१।।
कोयल शब्द करत स्वर झीणा, अली कली के संग रंग।।हो०२।।
ऋतु वसन्त आनन्द पिया संग, गोरी गावत बजत चंग।।हो०३ ।।
अैसे साज समाज भक्ति ले,गुण गुलाल लिये गुरु के अभंग।।हो०४।।
निरमल मन मकरंद सुधाकर,अतर पुष्प सैं चरचो अंग ।।हो०५।।

ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, छिरको महकत सुरभि गंग ।।हो०६।।
करत चैन दरशण सै नैण, 'ऋद्धिसार' के मन उमंग ।। हो०७ ।।

रुघपति पाठक रचित

१०५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(देशी – खटमलीया नी)

श्रीजिनदत्तसूरि जुहास्यां, मनना जी सहि कारज सास्यां हो,
दादोजी सुखदाई ।
प्रह सम पगला पूजो, इण सम बड देव न दूजो हो । दादो० १ ।
श्री जिनवल्लभ पाटधारी, इल में अखीयात उबारी हो । दा० ।
पग पग परचा पूरे, हितवंता रे होय हजूरै हो । दा० २ ।
जे धन ने काजे ध्यावे, मनमांनी संपत्ति पावे हो । दा० ।
अपुत्रिया ने पुत्तर आपे, कष्ट कन्दल सकलाई कापे हो । दा०३।
चोर चरड भय टाले, भूलां मारग संभाले हो । दा० ।
तिसियां ने पाणी पावे, मुहमांग्या भेट वरसावे हो । दा० ४ ।
वावन वीर वुलाया, आसत अकल गुण गाया हो । दा० ।
चौसठि जोगिणि साधी, अद्‌भुत मंत्र अराधी हो । दा० ५ ।
सांनिधकारी होवे, खरतर गच्छ सन्मुख जोवे हो । दा० ।
जगि मरता केइ जीवाया, राय राणा थांरे पाय आया हो ।दा०६।
पर मत मे जस लीधा, नरपतियां ने श्रावक कीधा हो । दा० ।
लिछमी नी लील लहीजे, थांरा जुग जुग अवदात कहीजे हो।दा०७।
ग्यानाधिप गुण गावे, तो पिण गुण पार न पावे हो । दा० ।
श्री 'रुघपति' सुखसाता, दादो जी मन वंछित दाता हो ।दा०८ ।

लाभोदय रचित

१०६. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग – सोरठ)

माहरइ दादउ दौलति आपइ हो, आपइ हो ।
दालिद्री दुखिया जे ध्यावइ, ते धन धानइ धापइ हो ।मा० १।

हीर चीर पुत्र पदमणि पामइ, सद्‌गुरु तणइ पसायइ हो लाल-२ ।
चोर चरड दुसमण मुख दाटइ, सुप्रसने सगले जापइ हो ।मा०२ ।
श्री जिनदत्तसूरि वडली पुरि,विरह विजोग रोग कापइ हो लाल२।
भूत प्रेत वीजलि छल डाकणि, नामई तेह न व्यापइ हो ।मा०३ ।
वखांण करंता जोगिनी जीती, वर तिहां सात समापइ हो लाल२।
'लाभउदय' कहइ खरतरगछ गुरु,मन वछित सुख थाइ हो।मा०४।

लाभोदय रचित

१०७. जिनदत्तसूरि स्तवन

सद्‌गुरुजी तुमे सांभलो, श्री जिनदत्त सूरीस हो ।
सेवक नै सानिध करो, पूरो मनह जगीस हो ।१।
दौलत दो दादाजी दौलत दो ।।
दौलत द्यो गुरु माहरा, ताहरा विरुद अनेक हो ।
थां समरयां संकट टलै, एहिज ताहरी टेक हो । दौ० २ ।।
जीती चोसठ जोगणी, वस कीया वावन वीर हो ।
सिध मांहे ते साधिया, पंच नदी पंच पीर हो । दौ० ३ ।।
पडिकमणा मांहे वीजली, वलिय वलिय झुबकाय हो ।
ते मंत्रै राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो । दौ० ४ ।।
अंवड़ हाथे अक्षरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ।
युगप्रधान पद तुं जयो, आखे अंबिका देव हो । दौ० ५ ।।
उच्छव करतां उच्च मे, मूओ मुगल रो पूत हो ।
जाप करी तै जीवाड़ियो, संघ मांहे राख्यो दादै सूत हो।।दौ० ६।।
विक्रमपुर व्यापी मरी, दूर कियौ सहु दुःख हो ।
परिवार पिण पोते कियो, सहु नै राख्यो दादा सुख हो ।।दौ०७ ।।
वड़नगर रै ब्राह्मणै, देहरै धरी मृत गाय हो ।
पर-परवेस विद्या बले, पिशुन लगायो दादै पाय हो ।।दौ० ८ ।।
थांभो वज्रविदार नै, पोथी परगट कीध हो ।
विद्या सोवन अक्षरै, उजेणी मांहे लीध हो ।। दौ० ९ ।।

'कोमल' बुद्धि 'विचक्षण' वन्दो, श्री सद्गुरु महाराज ।। पू०५ ।।

विचक्षणश्री रचित

११०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–राजा राजमहल ने त्यागी)

सद्ज्ञान के उज्ज्वल दानी, गुरुदत्त मिले शुद्ध ज्ञानी ।
जिन शासन के सेनानी । गुरु० ।। टेर ।।
गुरु बाहडदेवी-नन्दा, वाछग मंत्रि कुल-चन्दा ।
हरे जन्म-मरण दुःख द्वन्दा, नही कोई गुरु का सानी ।।गुरु०१ ।।
बालक-वय संयम पाया, गुरु वल्लभ पाट दिपाया ।
शुभ प्रवल पुण्य प्रगटाया, हुए युगप्रधान पदवानी ।। गुरु० २ ।।
लाखो जन जैन बनाया, भूलो को पथ पकड़ाया ।
शासन झण्डा लहराया, जग-गुरु महिमा पहचानी ।। गुरु० ३ ।।
मुझ जन्म-मरण दुख मेटो, तृष्णा की ज्वाल समेटो ।
निज आतम आनन्द भेटो, दो 'विचक्षण' शिव निशानी ।।गु०४ ।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

१११. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–गजल)

सुगुरु जिनदत्त सूरीश्वर, सदा वन्दन सदा वन्दन ।
स्वीकारो नाथ करुणाकर, सदा वन्दन सदा वन्दन । टेर ।
सौराष्ट्रे धोलका सुन्दर, सोहे मंत्रीश वाछिग-वर ।
बाहडदेवी तणा नन्दन, सदा वन्दन सदा वन्दन । सु० १ ।
आठ वर्षी लघु वयमां, तजी संसार संयम मां ।
मिटाव्युं रागनुं बन्धन, सदा वन्दन, सदा वन्दन । सु० २ ।
गच्छ खरतर ना उजियारा, जैन शासन ना सितारा ।
सूरि वल्लभ ना कुल चन्दन, सदा वन्दन सदा वन्दन । सु० ३ ।
करूं हूँ अर्ज सिरनामी, जगत पर कर कृपा स्वामी ।
करो सब दुःख निष्कन्दन, सदा वन्दन सदा वन्दन । सु० ४ ।

इम विरुद घणा छै थांहरा, कहितां नावै पार हो ।
भाग संजोगे भेटियो, अड़वड़ियां आधार हो ।। दौ० १० ।।
हूं छुं सेवक थांहरो, थे आपो धन रिद्ध हो ।
भुवनकीरत सुपसाउलै, 'लाभउदय' सुख सिद्ध हो ।। दौ० ११ ।

लालचन्द रचित

१०८. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग-जय जयवन्ती)

पूजो नित चित लाय मनां रे ।
श्री जिनदत्त सुगुरु चरणां सुं,अहोनिस रहो रे लुभाय।मनां रे०।१।
मन सूधे हित धर आराधो, दुख सहु दूर पुलाय ।
रोग दोस कोउ निकट न आवे, दिन दिन मंगल थाय । म० २ ।
तूं प्रभु तूं अन्तरजामी, जय जय श्री गुरुराय ।
'लालचन्द' निज सेवक जांणी, दीजे सुख समुदाय । म० ३ ।

प्र. विचक्षणश्री रचित

१०९. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज– आओ आओ आदीश्वर दादा)

पूजो पूजो जिनदत्त सूरीश्वर, चरण कमल मनुहार ।
ध्याओ ध्याओ जिनदत्त सूरीश्वर, वाँछित फल दातार ।। टेर ।।
वाहडदेवी सुत-वर वन्दो, खरतरगच्छ श्रृंगार ।
गुरु शताब्दि ग्यारहवीं में, प्रगटे युग आधार ।। पू० १ ।।
वाछग मंत्रीश्वर कुलदीपक, जगमग ज्योति अपार ।
सत्यधर्म का शंख वजाकर, जगा दिया संसार ।। पू० २ ।।
यौगिक-वल आत्मिक-वल पूरण, चमत्कार उपकार ।
आज जयंती उन दादा की, वोलो जय जयकार ।। पू० ३ ।।
'झुंझुनु' सुन्दर गुरु मन्दिर में, दर्शन दिल हरनार ।
दोय सहस पर एक महोत्सव, जाऊँ मैं वलिहार ।। पू० ४ ।।
पुण्योदय गुरु सुवर्ण शरण, मिला यत्न से आज ।

'कोमल' बुद्धि 'विचक्षण' यन्दो, श्री सद्गुरु महाराज ।। पू०५ ।।

विचक्षणश्री रचित

११०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–राजा राजमहल ने त्यागी)

सद्ज्ञान के उज्ज्वल दानी, गुरुदत्त गिले शुद्ध ज्ञानी ।
जिन शासन के सेनानी । गुरु० ।। टेर ।।
गुरु वाहडदेवी-नन्दा, वाछग मंत्रि कुल-चन्दा ।
हरे जन्म-मरण दु:ख द्वन्दा, नही कोई गुरु का सानी ।।गुरु०१ ।।
वालक-वय संयम पाया, गुरु वल्लभ पाट दिपाया ।
शुभ प्रवल पुण्य प्रगटाया, हुए युगप्रधान पदवानी ।। गुरु० २ ।।
लाखो जन जैन वनाया, भूलो को पथ पकड़ाया ।
शासन झण्डा लहराया, जग-गुरु महिमा पहचानी ।। गुरु० ३ ।।
मुझ जन्म-मरण दुख मेटो, तृष्णा की ज्वाल समेटो ।
निज आतम आनन्द भेटो, दो 'विचक्षण' शिव निशानी ।।गु०४ ।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

१११. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–गजल)

सुगुरु जिनदत्त सूरीश्वर, सदा वन्दन सदा वन्दन ।
स्वीकारो नाथ करुणाकर, सदा वन्दन सदा वन्दन । टेर ।
सौराष्ट्रे धोलका सुन्दर, सोहे मंत्रीश वाछिग-वर ।
वाहडदेवी तणा नन्दन, सदा वन्दन सदा वन्दन । सु० १ ।
आठ वर्षी लघु वयमां, तजी संसार संयम मां ।
मिटाव्युं रागनुं वन्धन, सदा वन्दन, सदा वन्दन । सु० २ ।
गच्छ खरतर ना उजियारा, जैन शासन ना सितारा ।
सूरि वल्लभ ना कुल चन्दन, सदा वन्दन सदा वन्दन । सु० ३ ।
करूं हूँ अर्ज सिरनामी, जगत पर कर कृपा स्वामी ।
करो सब दु:ख निष्कन्दन, सदा वन्दन सदा वन्दन । सु० ४ ।

स्वर्ण कोमल शरण दीजो 'विचक्षण' बुद्धि मुझ कर जो ।
करूं ज्यो कर्म का मंथन, सदा वन्दन सदा वन्दन । सु० ५ ।

विचक्षण मण्डल रचित

११२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—ले तो आये हो हमे सपनो के)

चल के आये हैं गुरु तुमरे हम गांव मे
दया की छांव मे बिठाये रखना, सुनना-SSS ।। टेर ।।
तुमको देखे तो फूल खिल गये मन में,
आशा के दीप जले उठे लगन के ।
मिलन की वेला ये आयी मिलन करे,
प्रीत की पायल बंधी, बंधी मेरे इन पांवो मे ।।दया० १।।
मूरत तेरी देखो हमें प्यारी लागे,
दर्शन कर मनवा के किस्मत जागे।
देख नयन हर्षित होवे मूरतियां को,
ऐसी ना लीला देखी ऊँची दस गांव मे ।। दया० २ ।।
आषाढ सुदी ग्यारस दिन आये,
अजमेर तेरे भक्त चल आये ।
अर्पण करे तुम्हें भावों की माला झूम झूम के,
'विचक्षण' मंडल आयी तुमरे इस गॉव मे ।। दया० ३ ।।

विनयहर्ष रचित

११३. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग सोरठी)

मेरे जुगवर सार करउ हमारी ।
श्री जिनदत्त सूरीश्वर ध्यावउ, संकट विकट विडारी । मे.१।
दीनदयाल कृपाल परम गुरु, सब ही कुं उपगारी ।
तूं समरथ तूं अनाथ नाथ हइ, सेवक दुक्ख निवारी । मे. २।
रोग शोक चिन्ता भय चूरइ, अति कठोर जे मारी ।

अजयमेरु गढि थुभ की महिमा, जसु गावइ दुनिया सारी ।मे.३।
वडलीपुर मंडन रिपु बलखंडन, मूरति सरुल तुम्हारी ।
परता पूरइ वर भवियण का, 'विनयहरख' सुखकारी ।मे.४।

सत्यरत्न रचित

११४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग -सारग)

आनंद रंग वधाई आजु मेरे । आ. ।
श्री जिणदत्तसूरिजी को दरसन, देखत हरख सवाई ।आ.१।
श्री खरतर गच्छ नायक स्वामी, सेवक जन सुखदाई ।आ.२।
परम पुरुष गुरु पर-उपगारी, चरण कमल चित्तलाई ।आ.३।
हितकर सद्गुरु दरसण दीजे, ज्युं पातिक दूर पुलाई ।आ.४।
श्री जिनहर्ष सूरीसर राजा, 'सत्यरतन' मन भाई ।आ.५।

सत्यरत्न रचित

११५. जिनदत्तसूरि स्तवन

स.१८६८

(ध्रुपद– धन धन पारकर देस. ए देसी)

परचा जग सगले पूरे, सेवक नां संकट चूरे ।
परतिख गुरु उपगारी, वारी हुं जावुं वार हजारी ।
परमगुरु अन्तरजांमी ।।१।। आंकणी ।
गुरु पूजन यात्री आवे, भर मोतीडे थाल वधावे ।
नर नारी मंगल गावे, भावे नित भावना भावे । प०२ ।
गुरु सेव्यां सांनिधकारी, जगवच्छल गुरु हितकारी ।
निज कारज देवे राया, गुरु चरणे आवे धाया । प०३ ।
गुरु जिणदत्तसूर सदाई, जसु कीरत जग वर्ताई।
गुरु नांमे पाप पुलावे, गुरु नामे नवनिध पावे । प०४ ।
गुरु महिर निजर अवधारो, दिन दिन मुझ काज सुधारो ।
गुरु महिमावंत विख्याता, गुरु मात तात गुरु भ्राता । प० ५ ।

गुरु अमल विमल अविनासी, गुरु लीला जाहिर विलासी ।
गुरु सोहे तेज दिणंदा, गुरु देखत परम आनंदा । प० ६ ।
गुणहत्तर सै अठारै, इग्यारस माह वदि धारै ।
श्री जिनहर्षसूर महाराजा, 'सत्यरतन' करे सुभ काजा । प०७ ।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

११६. वडली मण्डन जिनदत्तसूरि स्तवन

दादाजी वीनती अवधारो । दा० ।
वडली नगर श्री शान्ति प्रसादें, जागतउ पीठ तुम्हारो । दा० १ ।
तूं साहिब हूँ सेवक तोरो, वंछित पूर हमारो ।
प्रारथियां पहिडइ नहीं उत्तम, ए तुमे बात विचारो । दा० २ ।
सेवक सुखियां साहिब सोभा, ते भणी भक्त संभारो ।
'समयसुन्दर' कहइ भगति जुगति करि, जिनदत्तसूरि जुहारो। दा०३।

सुगुण रचित

११७. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग – कहरवा)

गुरुवन्दन आये विबुधपति ।।टेर।।
सुरगण आये सीस नमाये, गुण गावे गंधर्व गति । गु. १ ।।
युगप्रधान जगगुरु जग वालग, आलिम जिनदत्त सूरपति ।।गु.२ ।।
वरदाई वाचा जग जाचा, साचा साहिबवन्ता सती ।। गु. ३ ।।
विपद विडारण संपत कारण, विरुद वधारण बड वखती ।।गु.४।।
सद्गुरु दरस सुधारस वरसत, पाप सन्ताप रहै न रति ।। गु.५।।
चन्दचकोर मोर घन गरजन, चित चाहत नित चरण नति।।गु.६।।
श्री जिनहरषसूरिन्द गुरु सेवत, सेवक 'सुगुण' करे विनती।। गु.७।।

सुगुण रचित

११८. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज– बगालो घाटो)

चलो सखी पूजवा जइये, जिनदत्त सूरि गुरुराज ।। चलो०।।

हिये भाव अधिक धरीने, पूजो पूजो शुभ काज ।।च० १ ।।
सहु संघ यात्री आवे, सझ सामग्री साज ।। च० २ ।।
पूजा कर अष्ट प्रकारी, शुभ मारगनी पाज ।। च० ३ ।।
वोहिथरा समरण करते, तारी तुरत जहाज ।। च० ४ ।।
दरशण 'सुगण' ने दीजे, सद्‌गुरु गरीबनिवाज ।। च० ५ ।।

सोहगसुन्दर रचित

११९. जिनदत्तसूरि स्तवन

(राग - सोरठ)

जिनदत्तसूरि जागतउ तीरथ, गढ अजमेरइ गाजइ ।
श्रीखरतर गछि सोह चढावइ, दुसमन का दल भाजइ ।। १ ।।
सुरतरु मउरियउ महिमंडलि साचउ, गुण जाणी जण राचउ ।सु.
सेवक नी चिति चिन्ता चूरइ, सासणि शेखर सम खरतर गच्छ ।
सह गुरु हीरउ जाचउ । सु०। आंकणी ।
सेवक नी चिति चिन्ता चूरइ, पुत्र कलत्र धन पूरइ ।
राखइ गछपति पुण्य पडूरइ, आपद टालइ दूरइ । सु० २ ।
सेवइ सुर किन्नर नर राजा, विधि विधि वाजइ वाजा ।
तूठइ गुरि गज हय वर ताजा, रथ पायक दइ बाजा । सु० ३ ।
दिनि दिन अधिक प्रताप वधारइ, संकट विकट विडारइ ।
भूत प्रेत डाइणि भय वारइ, नाम तणइ बलिहारइ । सु० ४ ।
युगप्रधान जग सगलउ जाणइ, सुर वरदान प्रमाणइ ।
'सोहगसुन्दर' सुगुण वखाणइ, भली भगति मन आणइ । सु०५ ।

हर्ष रचित

१२०. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–प्रभाती)

ऐसे गुरु ध्याऊं मन वांछित फल पाऊं ।। टेर ।।
जल चन्दन और पुष्प मनोहर, धूप दीप ले आऊं ।।
अक्षत और नैवेद्य मधुर रस, विविध भान्त फल लाऊं ।।ऐसे०१।।

श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब, तुम बिन अवर न ध्याऊं ।।
ताल कंसाल मृदंग झांझ डफ, थेई थेई ताल बजाऊं ।।ऐसे०२।।
दीन दयाल दया कर दीजे, सुख सम्पत्ति मैं चाऊं ।।
सेवक जाणी सदा सुख दीजे, 'हरष' हरष गुण गाऊं ।।ऐसे०३ ।।

१२१. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–जय रघुनन्दन जय सियाराम)

ओम् अर्ह जय हे गुरुदेव, श्री जिनदत्त परम गुरुदेव ।।
चरण शरण दो हे गुरुदेव, ओम् अर्ह जय हे गुरुदेव ।।टेर।।
आवो पधारो हे गुरुदेव, दो दर्शन दादा गुरुदेव ।।
आठ शती बीती गुरुदेव,अब दर्शन दो आ स्वयमेव ।।ओम्.अर्ह.१।।
कायरता हम से हो दूर, हममें चमके भारी नूर ।
यही हमारा इच्छित देव, दो दर्शन दादा गुरुदेव ।।ओम् अर्ह.२ ।।
दुर्व्यसनों से हों हम दूर, घर घर मे सुख हो भरपूर ।।
करो कृपा अब हे गुरुदेव, आओ पधारो हे गुरुदेव ।।ओम् अर्ह.३।।
संघ शान्ति से हो वलवान, ज्ञानवान गुणवान महान ।।
सुनो सुनो दादा गुरुदेव, दो वरदान हमें नितमेव ।।ओम् अर्ह.४ ।।
जय गुरुदेव जय गुरुदेव, जय गुरुदेव जय गुरुदेव ।।
जिनवल्लभ पटधर गुरुदेव, ओम् अर्ह जय हे गुरुदेव ।।५।।

१२२. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–गोविन्द जय जय गोपाल जय जय)

गुरु की जय जय,दादा की जय जय।
दादा गुरु जिनदत्त की जय जय।। टेर।।
गुरु कृपा सब पाप मिटावे, गुरु कृपा भव ताप मिटावे ।।
गुरु शरण जन होते हैं निर्भय,
गुरु की जय जय दादा की जय जय ।
दादा गुरु जिनदत्त की जय जय ।।१।।
गु-शब्द अर्थ अन्धकार है होता, रु-शब्द अन्धकार है खोता ।।

गुरु देव हैं दिव्य ज्योतिर्मय,
गुरु की जय जय दादा की जय जय ।
दादा गुरु जिनदत्त की जय जय ।।२।।
युगप्रधान गुरु युग निरमाता, गुरु का ज्ञान जन-जन को है भाता।
गुरु शरण जन होते हैं निर्भय,
गुरु की जय जय दादा की जय जय ।
दादा गुरु जिनदत्त की जय जय ।।३।।

१२३. जिनदत्तसूरि स्तवन

र.सं.१८८३

(तर्ज–केशरिया थांसू प्रीत करीरे)

गुरुदेव मनावो साचा दादा सा बैठा बाग में ।। टेर ।।
केशर चन्दन घसूं बाग में, अंगीयां खूब रचाऊं ।
पुष्पादिक पूजा में लाऊं, इतर और चढ़ावूं जी ।। गुरु. १ ।।
जंगम युग प्रधान भट्टारक, दादा दत्त सुरिन्द ।
ध्यावे पूजे जो नर पावे, सहज शान्ति सुख कन्द जी ।। गुरु. २।।
सम्वत् गुन्नीसे साल बयासी, कार्तिक मास शुभवार ।
श्री संघ की यही अर्ज है, कर जो बेड़ा पार जी ।। गुरु. ३ ।।

१२४. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज–रतन का गाना)

जब तुमहीं चले परलोक, लगा दिल शोक हो गुरुवर प्यारा।
इस जग में कौन हमारा ।।टेर।।
जब बादल घिर घिर आयेंगे, बीते दिन याद दिलायेंगे ।
तुम्हीं ने गुरुवर हमसे किया किनारा ।। इस. १ ।।
नयनो से आंसू बहते हैं, दिल रो रो कर यूं कहता है।
अब तुम बिन जग में हमको नहीं सहारा ।। इस.२ ।।
आषाढ़ अेकादशी आती है, जिनदत्त की याद दिलाती है ।
अब दास को सूरि बिन नहीं है सहारा ।। इस० ३ ।।

१२५. जिनदत्तसूरि स्तवन

(तर्ज—झण्डा ऊंचा रहे हमारा)

श्री जिनदत्त जगत-रखवारे । जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।
ज्योतिर्धर जीवन उजियारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।टेर।।
वर्द्धमान प्रभु पाट परम्पर, शासन थम्भ समान शुभंकर ।
जग उपकारी जग के प्यारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।१।।
देव जिनेश्वर दर्शन-भावन, प्रबल प्रचारक जीवन पावन ।
प्राणि मात्र के हित-सुखकारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।२।।
नव-अंग टीकाकार प्रशिष्य, श्री जिनवल्लभ सद्गुरु शिष्य ।
अतिशय मय निर्भय अविकारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।३।।
मंत्री वाच्छिग शाह जनक धन, बाहड़ देवी माता धन धन ।
जिनवल्लभ गुरु धन अवतारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।४।।
एक लाख पर तीस हजारा, किये जैन जिनधर्म प्रचारा ।
दुर्व्यसनो को दूर निवारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।५।।
ग्राम नगर पुर भारत भर मे, सद्गुरु परसिध है घर-घर में ।
दादावाड़ी जग [illegible]ारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।६।।
संवत् बारह में ग्यारह मे, आषाढ़ सुद एकादशी दिन मे ।
तारणहारे स्वर्ग-सिधारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।७।।
आठ शताब्दी आज है पूरण, गुरु कृपा हो इच्छित पूरण ।
जन जन [illegible] जयनाद उचारे, जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ।।८।।

जिनलाभसूरि रचित

१२६. जिनदत्तसूरि आरती

जय जय [illegible]गुरु आरती कीजै, श्री जिनदत्तसूरि [illegible]रीजे । ज० ।
पहली आरती दादाजी नी कीजे, दुःख दोहग सब दूर हरीजे।ज०१।
बीजी [illegible] पढंती धारा, भय वारण तुहिज सुखकारा । ज० २ ।
तीजी [illegible] पूरक तेरी, दूर हरो दुःख दुरगति मेरी । ज. ३ ।
चौथी [illegible] पूर, जीवदायक, सुर नर हुक्म धरे जसु पायक।ज.४।

पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ सकल नो संकट वारी ।ज.५।
छट्ठी थांभो वज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी । ज. ६ ।
सातमी चौसठ योगिणि साधी, सूरिमन्त्र सुर मे आराधी। ज. ७ ।
इण विध सात आरती कीजे, मन वंछित फल संपत्ति लीजै।ज.८।
'जैनलाभ' खरतर गणधारी, सद्गुरु चरण कमल बलिहारी ।ज.९।

जिनहरिसागरसूरि रचित

१२६. जिनदत्तसूरि आरती

आरति हर गुरु आरति कीजे, आरात्रिक दुख दामी ।
श्री जिनदत्त सूरीश्वर दादा, साता दै अविरामी ।।१।।
तीजे पद परमेष्ठी स्वामी, आचरण गुण धामी ।
सीमंधर जगदीश्वर वाणी, अेक भवे शिवगामी ।।२।।
वीर जिनेश्वर शासन वासित, संघ सकल विसरामी ।
युगवर अतिशय-महिमा धारी, जग जश-कीरति जामी ।।३।।
सेवा करते सुर-नर नायक, श्री गुरु पद शिर नामी ।
कलियुग मे कल्पद्रुम जैसे, वांछित दें अभिरामी ।।४।।
जैनेतर जन जैन बनाये, सवा लक्ष सुखकामी ।
शुद्धि का मारग दिखला कर, दूर करी सब खामी ।।५।।
सुखसागर भगवान परमगुरु, पूजो पाप विरामी ।
नित सुर गणनायक 'हरि' कहते, श्री गुरु चरण नमामि ।।६।।



द्वितीय खण्ड

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि

द्वितीय खण्ड

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि

मणिधारी दादा जिनचन्द्रसूरि

बड़े दादा युगप्रधान जिनदत्तसूरि के पट्टधर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि हुए जो दूसरे दादा या दिल्ली वाले दादा या मणिधारी दादा के नाम से प्रसिद्ध है ।

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि के माता-पिता सेठ रासल और देल्हण देवी थे । ये जैसलमेर के निकट विक्रमपुर के निवासी थे। इनका जन्म विक्रम संवत् ११९७ भाद्रवा सुदि आठम को हुआ था। ये जन्म से ही विलक्षण, अनेक शुभ लक्षणो से युक्त, प्रतिभावान एवं संस्कारयुक्त थे । माता-पिता के साथ आचार्य जिनदत्तसूरि के दर्शनार्थ अजमेर पहुंचे और आचार्यश्री की देशना से प्रतिबुद्ध होकर अजमेर मे ही संवत् १२०३ फाल्गुन सुदि नवमी को आचार्य से ही दीक्षा ग्रहण की । गणनायक जिनदत्तसूरि ने इनकी विशिष्ट प्रतिभा और योग्यता को देखकर इनके जन्म स्थान विक्रमपुर मे ही संवत् १२०५ मे वैशाख सुदि छठ के दिन इन्हे आचार्य पद प्रदान किया और नामकरण किया जिनचन्द्रसूरि । सम्भवत: जैन समाज मे यह प्रथम ही उदाहरण होगा जबकि अत्यल्प ९ वर्ष की अवस्था मे कोई व्यक्ति आचार्य बना हो । गणनायक जिनदत्तसूरि का स्वर्गवास होने पर संवत् १२११ मे ये गच्छनायक बने ।

संवत् १२१४ मे इन्होने त्रिभुवनगिरि मे शांतिनाथ मंदिर के शिखर की प्रतिष्ठा की । इसके बाद हेमदेवी नाम की आर्या को प्रवर्तिनी पद दिया । संवत् १२१७ मे मथुरा मे नरपति आदि आठ मुमुक्षुओ को दीक्षा दी । इसी वर्ष मे क्षेमन्धर सेठ को प्रतिबोध दिया और वैशाख शुक्ला दसमी को मरुकोट मे चन्द्रप्रभ स्वामी के विधिचैत्य मे कलश एवं ध्वज दंड की प्रतिष्ठा की । संवत् १२१८ मे ऋषभदत्त आदि पांच साधु एवं जगश्री आदि तीन साध्वियो को दीक्षित किया । १२२१ मे सागरपाट मे

पार्श्वनाथ विधि चैत्य में देवकुलिका की प्रतिष्ठा की । वहां से अजमेर पधारकर श्री जिनदत्तसूरिजी के स्मारक स्तूप की प्रतिष्ठा की। तत्पश्चात् बब्बेरक ग्राम में गुणभद्र गणि आदि पांच शिष्यों को दीक्षित किया । आशिका नगरी में नागदत्त मुनि को वाचनाचार्य पद दिया । महावन में अजितनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा की । इन्द्रपुर में गुणचन्द्र गणि के पितामह लाल श्रावक द्वारा बनाए हुए शांतिनाथ विधि चैत्य में दंड, कलश और ध्वजा प्रतिष्ठित की । तगला ग्राम में अजितनाथ विधि चैत्य की प्रतिष्ठा की । संवत् १२२२ में वादली नगर में पार्श्वनाथ मंदिर में दंड, कलश, ध्वजा आदि की प्रतिष्ठा की, अंबिका शिखर पर स्वर्ण कलश की स्थापना करवाई । नरपालपुर में एक अभिमानी ज्योतिषी को ज्योतिष शास्त्र में पराजित किया ।

वहां से आचार्य जिनचन्द्र रुद्रपल्ली आए। रुद्रपल्ली में वहां राज्य सभा में पद्मचन्द्राचार्य के साथ तमोवाद पर शास्त्रार्थ हुआ और इस शास्त्र-चर्चा मे जिनचन्द्रसूरि ने विजय प्राप्त की । इस विजय के कारण वहां के आचार्यश्री के भक्त जयतिहट्ट के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

विहार करते हुए चौरसिन्दानक ग्राम के पास श्री संघ के साथ आचार्य ने पडाव डाला । वहां पर लूटपाट करते हुए म्लेच्छों के भय से संघ आकुल-व्याकुल हो गया । आचार्यश्री ने अपने तपोबल से संघ का यह कष्ट दूर किया । म्लेच्छ सैनिक पास होकर निकल गए । वे संघ के पडाव को न देख सके ।

आचार्य विचरण करते हुए दिल्ली के निकट पहुंचे । दिल्ली के मुख्य-मुख्य श्रावक अपने परिवारों के साथ बड़े आडम्बर से आचार्य के दर्शन के लिए वहां जाने लगे । दिल्ली के तत्कालीन महाराजा मदनपाल (अनंगपाल, जो कि पृथ्वीराज चौहान के नाना थे) भी आचार्य के दर्शन के लिए आचार्य की

सेवा में पहुंचे । पूर्व संकेत और स्वयं की अनिच्छा होते हुए भी दिल्ली नरेश और प्रमुख श्रेष्ठियों के अत्याग्रह को आचार्य टाल न सके और दिल्ली आए तथा १२२३ का चातुर्मास दिल्ली में ही किया । दिल्ली में ही अपने अनन्य भक्त कुलचन्द्र को एक यंत्र पट्ट दिया, जिसकी उपासना से वह समृद्धिशाली सेठ बन गया । एक बार दिल्ली के बाहर जंगल में दो मिथ्यादृष्टि देवियो को मांस के लिए लड़ते हुए देखा । करुणार्द्र हृदय सूरिजी ने अधिगाली नामक देवी को प्रतिबोध देकर मांस बलि का त्याग करवाया और पार्श्वनाथ विधि चैत्य के दक्षिण स्तम्भ मे रहने के लिए आवास प्रदान किया ।

विक्रम संवत् १२२३ भाद्रवा वदि चौदस के दिन इनका स्वर्गवास हुआ । शरीर त्यागते समय आचार्यश्री ने अपने पार्श्ववर्ती लोगो से कहा था "नगर से जितनी दूर हमारा दाह संस्कार किया जाएगा, नगर की आबादी उतनी ही दूर तक बढेगी ।" इनका दाह संस्कार महरोली मे किया गया, जहां आज भी इनका स्तूप विद्यमान है और चमत्कारों का केन्द्र है । जहां आज भी जैन, अजैन सभी इनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने हेतु उनके समाधि स्थल का दर्शन करते हैं । आपके जन्म दिन भादवा सुदिन को यहाँ मेला भी भरता है ।

कहा जाता है कि आपके भालस्थल पर मणि थी, अतः आप मणिधारी जिनचन्द्रसूरि के नाम से ही जैन समाज मे दूसरे दादा के नाम से विख्यात हुए ।

आपने भी अनेक अजैनो को प्रतिबोध देकर महत्तियाण जाति की स्थापना कर जैन समाज की वृद्धि की थी ।

परम्परा के अनुसार भाटी, खींची और पंवार राजपूतों को प्रतिबोध देकर जैन बनाये थे । आपके द्वारा प्रतिबोधित ओसवंश के ३ गोत्र दूगड, सूगड और मोहीवाल भी थे ।

मोहीवाल गोत्र की १६ शाखाएं भी हुई :—

१. मोहीवाल, २. आलावत, ३ पालावत, ४. दूधेडिया, ५. गोय, ६. थरावत, ७. सुखडा, ८. टोडरवाल, ९. माधोटिया, १०. बंभी, ११. गिडिया, १२. गोडवाड्या, १३. पटवा, १४. वीरावत, १५. गांग और १६. गोधा.

इनके द्वारा रचित कोई विशिष्ट और विशाल कृति प्राप्त नही है। केवल लघुकायिक दो कृतियां प्राप्त है:- व्यवस्था शिक्षा कुलक एवं पार्श्वनाथ स्तोत्र । इनके पठनार्थ कागज पर लिखी हुई प्राचीनतम "ध्वन्यालोकलोचन" की प्रति जो जैसलमेर ज्ञान भंडार की थी, वह आज राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के संग्रहालय की शोभा बढा रही है । जिसमे इनके लिए विशेषण दिया गया है --

"प्रतिवादिकरटिकरटविकटरद ।"

खरतरगच्छ एवं इसकी अन्य सभी शाखाओ की आचार्य परम्परा में चतुर्थ पाट पर जिनचन्द्रसूरि नाम रखने की प्रथा प्रारम्भ से ही प्राप्त होती है । कई विद्वानो के मतानुसार यह प्रथा संवेगरंगशालाकार जिनचन्द्रसूरि से प्रारंभ हुई, परन्तु अधिकांश विद्वानो का मत है कि यह चतुर्थ नाम की परम्परा मणिधारी जिनचन्द्रसूरि से ही प्रारम्भ हुई है ।

महो. पुण्यसागर रचित

१. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तोत्र

श्री जिनदत्तसूरिन्दपय, श्रीजिनचन्द-मुणिन्द ।
नरमणिमंडित भाल यस, कुसल-कुमुद-वणचंद ॥१॥
संवत सिव-सत्ताणवय, भद्दट्ठमि सुदि जम्मु ।
रासल तात सुमातु जसु, देल्हणदेवि सुधम्मु ॥२॥
संवत बार-तिरोत्तरय, फागुण नवमि विसुद्ध ।
पंच महव्वय भरि धरिय, बालत्तणि पडिबुद्ध ॥३॥
बारह-सइ-पंचोतरइ अे, वैशाखह सुदि छट्ठि ।
थापिउ विक्कमपुर नयरि, जिणदत्तसूरि सुपट्टि ॥४॥
तेविसइ भाद्रव कसिणि, चवदसि सुह परिणामि ।
सुरपुरि-पत्तउ मुणिपवर, श्रीजोयणिपुर ठामि ॥५॥
सुह गुरु पूजा जे करइ अे, नासय तासु किलेस ।
रोग-सोग आरति टलइ अे, मिलई लच्छि सुविशेष ॥६॥
नाम मंत्र जे मुख जपइ अे, मणु तणु सुद्धि तिसंझ ।
मनवंछित सवि तसु हुवई, कज्जारंभ अबंझ ॥७॥
जासु सुजसु जगि झिगमिगै ए, चंदुज्जल निकलंक ।
प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ, हरइं डमर अरि संक ॥८॥
इम श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, संथुणिउ गुणि पुन्न ।
श्री 'पुण्यसागर' वीनवई, सद्गुरु होउ सुप्रसन्न ॥९॥

२. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि छन्द

(षट्पदी छन्द)

अभयसूरि सिरि सीसु सगुण जिणवल्लहु दिट्ठउ ।
तसु पट्टह जिणदत्तसूरि अम्ब दुम्भि न इट्ठउ ॥
दिव्वं नाण पहाण वरत्ति जं कियउ अचम्भमु ।
बालत्तणि लिउ मग्गि सगुरि, रासल अंगुब्भमु ॥
गुरु-पारतन्तु अंग महि भत्तु जिणदत्तसूरि फुड्डु उच्चरिवि ।

दुप्पसहु जाव पढियई सुहु तुज्झ धम्मु कमि कमि करिवि ॥१॥
वहु विहारु पच्छिम तुझ हउ पुव्व वओ सह ।
जाणउ न हु गुण दोस घुणउ किर काइ विसेसह ॥
परजु कित्ति पर मुहिण साम निसुणिज्जइ समणह ।
हुणु पच्चक्खु चिदिट्ठु भत्ति भिट्टिय निय नयणह ॥
जिणदत्तसूरि पट्टु धरणु म किउ कच्चारम्भुरहु ।
विन्नत्तिय सुणि लखेणु भणउ अहिणव गुरु जिणचंद पहु ॥२॥
तक्कगहिर साहित्त सगुण वायरण वियक्खणु ।
गुण-गरुउ पावह पमुक्कु पर मन्तिहि लक्खणु ।
वुद्धिमन्तु जिण तत्तिवन्तु तिहुयण चड्ढिय जसु ।
चन्दु गच्छु उद्धरिउ दच्छु उम्मजहि पहु कसु ॥
परम पवित्ति लक्खणु भणइ जिणदत्तह पट्टुद्धरणु ।
जिणदत्तसूरि माणुस मिसिण अवयरियउ तारण तरणु ॥३॥
तव संजम सहित्त चित्त चारित्त विचित्तह ।
नाण झाण विन्नाण धय धारण झायंतह ॥
लक्खण छन्द पमाण तक्क सज्झाय गुरुक्कम ।
सत्तसील सब्भाव भाव जिणदत्ति-भकुक्कम ॥
धुरधम्म धेय धारण गुणह कलिकालह परिसु परिसु ।
जइ अत्थि कहवि किम कुवि कहइ पहु जिणचन्दह सगसरिसु॥४॥
पंचिंदिय गय पंच जेण नाणंकुसि दारिय ।
सुमरि मन्तु लिद्धन्तु विसम विसहर जिण वारिय ॥
मोहु जीहु पसरन्तु झाण दढ खग्ग खरप्पिउ ।
चन्द गच्छु उद्धरिउ पट्ट, जिणदत्तह चप्पिउ ॥
जिण भत्ति रयणि कय कुसुम भरु गन्ध लुद्ध पुंडणभसलु ।
जिणचन्दसूरि सूरह सरिसु पाव तिमिर फेडण कुसलु ॥५॥
जिणरि मोहि मोहियहु जिणरिच्छय लियहु करि फाल्ह ।
तिट्ठ जिणं रिट्ठ निट्ठह हु जिण रीझहु व भय जाल्ह ॥

लोहि जिणरि वड हक्कियह जिणरि वरसिय रंजिज्जहु ।
जिण करहु गव्वु धणु धणिय किसु म कुवि अणु एवइ खिवइ ।।
जिणचन्दसूरि सुविहार मिसि भवियह फिरि फिरि सिक्खवइ ।।६।।
जिम निसि सोहइ चन्दु जेम कल्लु तरलच्छिहिं ।
हंसु जेम सरवरह जिम सोहइ लच्छिहि ।।
कंचणु जेम हीरयह जेम कुलु सोहइ सासंत्तिहि ।
रमणि जेम भत्ता तु राउ सोहइ पुत्तिहि ।
सुरनाह जेम सोहइ सुरह जगि सोहइ जिणधम्म भरु ।
आयरिय मझि सीहासणह तिम सोहइ जिणचन्दगुरु ।।७।।
अज्ज दियहु सुकयत्थु अवजु नक्खन्तु सुहावउ ।
अज्जु वाह रमणीउ अज्जु सवच्छऊ आवउ ।।
अज्जु जोउ जयवन्तु अज्जु मट्ठ, करणु पियंकरु ।
अज्जु मित्तु सुह महत्तु अज्जु गगह रासि सुहंकरु ।।
सकयत्थु अज्जु लोयण जुयलु हिअइ अज्जु वढियइ सुहु ।
गउ पाउ अज्ज दूरं तिण दिट्ठइ गुरु जिणचन्द पहु ।।८।।

आतमचन्द रचित

३. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन.

(तर्ज - ओ मालिक तेरे वन्दे हम)

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि आते है तेरे जो द्वारे ।
तुम ही स्वामी हो, मिट जाते है संकट सारे ।।टेर।।
माता देल्हण देवी के प्यारे, पिता रासल के हो दुलारे ।
आयु छ:वर्ष की मनमे भावना जगी,तजके वैभव को निकल पड़े।।१।।
आठ साल की उमर मे पायी पदवी आचार्य तूने ।
मणि मस्तक मे ज्ञान की चमके, मणिधारी कहलाए आप रे।।२।।
सारा श्रीसंघ था साथ मे, घेरा डाकुओ ने आके राह मे ।
ऐसी लकीर खिंची संघके चहूं ओर, डाकू देख ना सके आंखसे ।।३।।
भूल गया श्रीसंघ शोक मे, बीच वासा दे माणक चौक मे ।

अर्थी हिल ना सकी शाही फरमान से, हाथीके वहुत जोर से।।४।।
भादो वदि चौदस दिन आए दिल्ली में, गुरु स्वर्ग सिधारे ।
आतम शरणे आया,श्रद्धांजलि भर लाया स्वीकार करो आप रे ।।५।।

गुलाब रचित

४. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - तेरे कूचे मे अरमांनो की दुनियां लेके आया हूँ)

श्री— श्री जिनचन्द मणिधारी की, जय जय हो सदा जय हो ।
म— महा गुरुदेव उपकारी, सदा जय हो सदा जय हो ।।टेर।।
णि— नित्य नत नमन करता हूँ, बचालो भव के चक्कर से।
बचालो भव के चक्कर से ।
धा— धाम शिवपुरके अधिकारी,सदा जय हो सदा जय हो।।१।।
री— रीझ कर रिध सिध करे, कृपा कर शुभ नजर करदो ।
कृपा कर शुभ नजर करदो ।
जि— जिसी से पार हो बेड़ा, सदा जय हो सदा जय हो ।।२।।
न— न रागी हो न द्वेषी हो, सकल जग हित के कर्ता हो ।
चं— चन्द्रसी कान्ति उज्ज्वल हो,सदा जय हो सदा जय हो।।३।।
द— दयालो तम मेरा मेटो,उजाला ज्ञान का करदो ।।
सू— सूर्य सम ज्ञान चमका दो, सदा जय हो सदा जय हो।।४।।
री— रीति और नीति के दाता, सेवक गुरुदेव गुण गाता ।
की— कीर्ति तव जगतमे जाहीर,सदा जय हो सदा जय हो।।५।।
ज— जपूं दिन रात गुरुवर नाम, रहे दिल वास गुरुवर का ।
रहे दिल वास गुरुवर का ।
य— यही आशा 'गुलाब'ने की,सदा जय हो सदा जय हो।।६।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

५. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - [illegible])

दादा दया करो श्री जिनचन्द गुणीगर,हम पर दया करो।आंकणी।

दादा श्री जिनदत्तसूरि पाटे, दादा गाजे गुणिजन गहगाटे ।
दादा सेवक ना दुश्मन दाटे ।दा.१।
दादा आस धरी अलंगा थी आवे, दादा भर झारी गंगा थी ल्यावे।
दादा न्हवरावें सुध मन भावे ।दा.२।
दादा घसि केसर सुं कनक कचोली, दादा मनहर मांहे मृगमद भेली।
म्हारे दादा ने पूजे मन रंगरोली ।दा.३।
दादा केवड़ा केतकि चंपा चमेली, दादा मोगरा मचकुंद ---।
दादा पूजत आवे अति अलवेली ।दा.४।
दादा अगर सेल्हारस धूप सुचंगा, दादा कंचन दीपे सूत्र सुरंगा ।
दादा पूजे निर्मल करि करि अंगा ।दा.५।
दादा उजल अक्षत आखा आणे,दादा मनहर मोदक बहुफल माणे।
दादा आरती करे बहु गुण गावे ।दा.६।
दादा संवत इग्यार सत्ताणु वरसे, दादा भाद्रव वदि आठम ने दिवसे।
दादा धन गुरु जनम्या गृहजन हरखे।दा.७।
दादा दिल्ली नयर बार-तेइसें, भाद्रव वुदि चौदस ने दिवसे ।
दादा अणसण करि सरग जगीसे ।दा.८।
दादा माणकचोक सदा सुखकारी, दादा राजे तिहां थांनक थिर धारी।
दादा जांणे सहु सुर नर नारी ।दा.९।
दादा जग जन नां सदा परचा पूरे, दादा सेवक नी नित चिन्ता चूरे।
दादा सुरतरु ज्युं मन वंछित पूरे ।दा.१०।
दादा संवत अठार इकोत्तर सारु, दादा माधव सित द्वादस तिथ वारु ।
दादा आनंद अति सुखकारु ।दा.११।
दादा धन्न घड़ी पूरव पुण्याई,दादा श्री संघ सांनिध अति सुखदाई।
दादा कर दरसण करि हरख वधाई ।दा.१२।
दादा मणिधारी खरतर गछ राजा, दादा 'चन्दमुनीसर'ना सारे काजा।
दादा नामे वाजे सुजस नां वाजा ।दा.१३।

जिनचन्द्रसूरि रचित

६. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - प्रभाती तेताला)

मणि मस्तक पर दीपे जिनके, बड़े हुए जयकारी जी ।।टेर।।
श्री जिनचन्द्र सूरि मणियाले, गुण गावे नर नारी जी ।
औरन को तो और भरोसा, मुझको शरण तुम्हारी जी ।।१।।
जल चंदन अरु पुष्प मनोहर, अक्षत उज्ज्वलकारी जी ।
धूप दीप नैवेद्य आरती, पूजो सकल विस्तारी जी ।।२।।
अल्प बुद्धि मैं गुण समुद्र तुम, कैसे करूँ विचारी जी ।
शशि मंडल जिम जल के भीतर, वाल ग्रहे करधारी जी ।।३।।
नाम प्रताप हमु पर कीनो, कृपा आपकी भारी जी ।
श्री 'जिनचन्द्र' हर्ष हृदय मे, आयो शरण तुम्हारी जी ।।४।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

७. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - सारंग - तेताला)

मन वांछित काज करो मेरे ।।मन.।।
सुर नर पूजे पद तेरे ।।मन.।।
मणिधारक वरदायक गुरु के, गाजे जग यश बहुतेरे ।।मन.१।।
पूरण ज्योति उदय जिन शासन,पाटवी वीर जिनन्द केरे।।मन.२।।
सुर मुनिजन गुरु चरणकमल मे, यही नित ध्यान हृदय मेरे।।मन.३।।
श्री 'जिनचन्द्र' अक्षय सुख दीजे,अविचल आनन्द बहुतेरे।।मन.४।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

८. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(देशी - मधुकर माधव ने कहेज्यो, [illegible])

श्री गुरुवर दरसण करिये, मन वंछित आनन्द पूरे ।श्री.।
मणिधारी श्री जिनचंदा, दत्त गणीसर पट्ट दिणंदा।
सेवत पामे परमाणंद रे ।श्री.१।

वरदाई खरतरगच्छ राजा, सेवक जननां सारें काजा ।
नित नवला वाजे वाजा रे ।श्री.२।
श्री जिनशासन प्रेम वधायो, भविजन मनड़े मोद सवायो ।
श्री सुलतान सकल परचायो रे ।श्री.३।
संवत अठार तिहोत्तर वरसे, दिल्लीपुर श्री संघ हरसे ।
------------ ।श्री.४।
वर जीरण उधार करायो, पूजत हियड़े हरख भरायो ।
अनुपम आनन्द रूप धरायो रे ।श्री.५।
दिल्ली नगर में परचा पूरे, समरयां भय जावे दूरे ।
दुख दोहग दालिद्र चूरे ।श्री.६।
श्री 'जिनचन्द' उदै नित दीजे, नव निध सिध अक्षय आपीजे ।
मन चिन्तित कारज सहु कीजे ।श्री.७।

जिनचन्द्रसूरि रचित

९. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – इमन – तेताला)

सद्गुरु मणिधारी महाराज ।
श्री जिनदत्तसूरीश्वर साहिब, दर्शन दीजे राज ।।१।।
महिर करी प्रेम धरीने, निज जन ने चित्त धार ।
जिनदत्त पटोधर मुनिवर, आनन्द सुखदातार ।।२।।
जन दु:ख भंजन विरुद तुमारो, जाए सहु नर नार ।
श्रावक जन मन वांछत पूरण, सुरतरु ज्यो जग सार ।।३।।
वाद विवादे जग यश पावे, तारे जलधि जहाज ।
वाट घाट भव संकट टाले, समरण श्री गुरुराज ।।४।।
पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपे लक्ष्मी नार ।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत घर में, बल भरियो भण्डार ।।५।।
आरत चूरो वांछित पूरो, अवधारो अरदास ।
'श्रीजिनचन्द्र' अक्षयनिधि दायक, सफल करो हम आश ।।६।।

जिनविजयसेनसूरि रचित

१०. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – काली कमलीवाले)

गुरु चन्द कहाने वाले तुम को लाखों प्रणाम ।
साह रासल के घर में आये, देल्ह देवी के पुत्र कहाये ।
रासलनन्दन नाम धराये, आप थे दयानिधान ।तु.।१।।
दत्तसूरि की परम्परा पर, बारह शत में तीन मिलाकर ।
शिष्य हुए मुनि पदवी पाकर, मणिधारी गुणग्राम ।तु.२।।
जैनागम के हुए अभ्यासी, ज्योतिष में थे पूर्ण विलासी ।
मन्त्र तन्त्र विद्या के ज्ञानी, धर्म प्रसारण काम ।तु.३।
जीवों को उपदेश सुनाकर, महिप मदन के राज्य में आकर ।
इन्द्रप्रस्थ (महरोली) में स्वर्ग सिधाकर, 'सूरि विजय' के स्वांम ।तु.४।

पद्मोदय रचित

११. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – कालिंगड़ा – तेताल)

सद्गुरुजी मैं शरणे आयो, जन्म मरण को दुःख मिटावो।।सद्.।।१।।
श्री मणिधारी चन्द्रसूरि गुरु, तुम सम दूजो कोई न पायो।।सद्.२।।
इन्द्रप्रस्थ में थंभ विराजे, दरशन करके मन हरखायो ।।सद्.३।।
इह कलिकाले प्रगट प्रतापी, विरुद देख के दिल ललचायो।।सद्.४।।
महिमा भक्ति सुनी कर जोड़ी, 'पद्मोदय' गुरु के गुण गायो ।।सद्.५।।

प्यारेलाल मूथा रचित

१२. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – गंगा मैया में, सुहाग रात)

ऊँचे अम्बर के चन्दा-सितारों में तुम ।
नीचे धरती की मुकुलित बहारों में तुम ।।
जैन शासन के सर पे थे छाता,
ज्योतिषी तुम जगत के विधाता ।

देव, नृप के धणी, भाल में थी मणि,
सदी तेरह के ऊँचे कगारों में तुम ।।
हो गये छ बरस में विरागी,
तुमने लघु वय में जग-ममता त्यागी ।
थे भले जैन सन्त, हिंदू-मुस्लिम के कंत,
जीव-रक्षा के अनुपम नजारो में तुम ।।
दिल्ली में है जिनचंद समाधी,
किन्तु कीरत अखिल भू पे साधी ।
ज्ञान में तुम अमर, तुम विचक्षण प्रवर,
'प्यारे' दिन रात दिल के विचारों मे तुम ।।

प्यारेलाल मुथा रचित

१३. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज– बहारो फूल बरसाओ ,सूरज)

गुरु गौतम अभयदाता, अभयसूरी सवाया है ।
के खरतरगच्छ मे जिनचन्द्र ने जादू जगाया है ।।
है संवत बीस सत्ताईस, विक्रम की सुहानी ये,
अमर होगी युगान्तर तक, महोत्सव की कहानी ये,
गुरु मणिधर है देहली का, महत् सद्भाग्य लाया है ।।१।।
है द्वय-जिनचन्द, कुशलजी दत्त; नैया भव के सागर मे,
है अनुनय आज, भर दो धर्मजल जीवन की गागर मे,
दहकते कर्म की उष्मा में, गुरु ही शीत छाया है ।।२।।
छलक जाये अगर पापों से इन ऑखों का पैमाना,
मुझे क्या डर, क्षमाधर, मुश्किलों में मेरे बन जाना,
तो भव-भव की करम-कालिख का सचमुच ही सफाया है ।।३।।
सितारे आसमॉ से तोड़ना आसान हो जाये,
जहॉ में क्या असंभव हो ? तू मेहरबान हो जाये,
यही अरमॉ लिये 'प्यारा,' चरण में सर झुकाया है ।।४।।

भद्रमुनि (सहजानन्दघन) रचित

१४. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - भारत का डंका आलम में)

दादाजी श्री जिनचन्द्रसूरि, गुरु दर्शन अमने आपो ने ।
गुरु दर्शन अमने आपो ने, अम दुख दोहग सहु कापो ने ।दा.१।
श्री संघ तणी छिन्न भिन्न दशा, छेदी करी एकता थापो ने ।
निर्नायकता दूरे करवा, अम युगप्रधान एक आपो ने ।दा.२।
जिनरत्न - त्रयी अवलम्बन ना, सुणीए उपदेश आलापो ने ।
सुणी वीनती अम बालाओ नी, सद्बुद्धि सहु ने आपो ने ।दा.३।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

१५. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - छुप गया कोई रे)

कितने ही तार दिए, मुझ को विसार रे,
भूल न जाओ कहते भक्त पुकार रे ।।टेर।।
मानू मैं तेरी बड़ी गुनहगार रे,
पर तू कहलाता भगवन्! अधम उद्धार रे ।
मुझ को तो भूले अपना विरुद सम्भार रे ।भूल.१।।
पतित पावन तूँ जगत विख्यात रे,
पापी पुरातन मैं तो विश्व प्रख्यात रे,
भक्तों को तारा तूँ ने, दिया मोहे टार रे ।भूल.२।
मणिमय मण्डित तेरा दीदार रे,
चन्द्र सूरि गुरु जगत श्रृंगार रे ।
स्वर्ण विचक्षण बगिया 'भ्रमर' गुंजार रे ।भूल.३।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

१६. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - तुम्ही हो माता पिता तुम्हीं हो)

खड़े हैं द्वारे, हाथ पसारे, अर्जी सुनो हे जग रखवारे ।।टेर।।

तुम्ही हो स्वामी,तुम्ही हो मालिक,तुम्ही हो रक्षक,तुम्ही हो पालक।
तुम्ही हो सच्चे साथी हमारे, अर्जी सुनो हे जग रखवारे ।१।
मिथ्या निशा भी डाले हैं घेरे, हाल हुए बेहाल हैं मेरे,
लाख चौरासी जन्मा मरा रे, अर्जी सुनो हे जग रखवारे ।२।
विश्व सागर की तूफानी लहरे, नाव धंसी है जाकर गहरे ।
तूँ ही तारे तो पार उतारे, अर्जी सुनो हे जग रखवारे ।३।
चन्द्र सूरि गुरुवर मणियालें, करुणा नजर से दास निहाले ।
स्वर्ण विचक्षण 'भ्रमर' निवारे, अर्जी सुनो हे जग रखवारे ।४।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

१७. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - फूल तुम्हे भेजा है खत मे)

तारने वाला एक है तूँ ही, तूँ ही है जीवन आधार ।
तेरे ही हाथों मे मैने सौपी है जीवन पतवार ।।टेर।।
निराधार का तूँ आधारा, निर्नाथो का तूँ ही नाथ ।
जिसका कोई संगी न जग में, देता हरदम उसका साथ ।।
निर्भय हो वह जीता प्राणी, जिस पर तेरा करुणा हाथ ।।१।।
मैं ही क्या तूँ ने तो तारे, मुझ से पापी लाख हजार ।
जो तेरे आश्रम मे आता, करता उसका बेड़ा पार ।।
दिल्ली के मणिधारी दादा, करते संकट से उद्धार ।
बन जाते वे लोग विचक्षण 'भ्रमर' करे भवपार ।।२।।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

१८. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - चल अकेला ३)

तूं ही है मेरा! तूं ही है मेरा!! तूं ही है मेरा!!!
हे दादा गुरुदेव! साथी तूं ही है मेरा .... ।
हे मणिधारी जिनचन्द्र! साथी तूं ही है मेरा ।।टेर।।
दुनियाँ की आधि-व्याधि मे मैं मूरख उलझाया ।

कदम-कदम पर माया के रोड़ों ने मुझ को अटकाया ।
चौरासी चक्कर में दादा! फिर-फिर खाता हूँ फेरा ॥१
दीनानाथ दयालु तूँ ही, तूँही रक्षक जगपाला ।
तूं विपद आपदा में है सच्चा, तारक तूँ ही रखवाला ।
स्वर्ण विज्ञान विचक्षण तूँ ही, हरो 'भ्रमर' मन अंधेरा ॥२

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

१९. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - फूल तुम्हें भेजा है खत में)

नयन बावरे ढूँढ फिरे, किया कौन दिशा में वासा है ।
दूर करो व्यवधान की चादर, दिल दर्शन का प्यासा है ॥टेर॥
हरी भरी ये जीवन बगिया, तेरे बिन सूनी भगवान!
व्याकुल होकर तुम्हें पुकारे, मेरे तन मन जीवन प्राण ॥
आओ दादा! दादा! आओ, मणिधारी जिनचन्द्र सूरीश,
तुम ही तारक, तुम ही उद्धारक,
तुम ही तारक विसवाबीस ॥नयन.१॥
स्वजन सनेही सुख के संगी, तूँ सुख दुःख में देता साथ ।
निस्संग जीवन जीता प्राणी, जिसके सिर पर तेरा हाथ ।
मिथ्या पर्दा दूर हटा दो, पाऊँ दर्शन आत्माकार ।
जड़ बुद्धि मैं बनूँ विचक्षण
पा जाऊँ भव 'भ्रमर' उद्धार ।नयन.२॥

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

२०. मणिधारी जिनचन्द्र स्तवन

(तर्ज - ढूँढो रे साजना २ मेरे कान का बाला)

पाया पाया हो गुरु जी, पाया हो गुरु जी, तुम सम तारणहार रे।
तेरा नाम रटे सुखकार रे, वह तो पा जाएँ हाँ२ भव से किनारा रे॥
तूँ ही सब सुख देने वाला, भक्तों का दुःखहारा,
जिस को केवल आस है तेरी, तूँ उसका रखवारा॥हो प्रभु जी.१।

मैं ही क्या तूॅं ने तो लाखों, पापी पार उतारे,
डूब रहे थे भवसागर में, उनको तुरत संभारे ।हो प्रभु जी.२।
मणिधारी गुरु तूॅं जिनचन्दा, द्वार खड़ा तेरा बन्दा।
मेहर करो दो ज्ञान विचक्षण हरो भव'भ्रमर'दुःख द्वन्दा।हो प्रभु जी.३।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

२१. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - धरती की तरह सब दुःख सह ले)

भव भय त्राणं, नमो भव भय त्राणम् ।।टेर।।
विसराओ न दिल से गुरुवर को, गुरु संकट में रखवारे है ।
जो इनकी शरण में आ जाता, ये उसके तारणहारे हैं ।
ये नैया खेवनवारे है, भव भय त्राणं० ।।१।।
ये दीनबंधु हैं, दीनानाथ, भव भटकों के सथवारे हैं ।
अज्ञान-तिमिर पटवालों के, निर्मल आतम उजियारे हैं ।भव० २।
तूफानी जीवन सागर में, हाथों से नैया छूट गई ।
उसको आशा है दादा से, जिसकी आशाऍं टूट गई ।भव०३।
गर चूक गए मानव भव में, चौरासी चक्कर खानी है।
मणिधारी ज्ञान विचक्षण दो, नैया भव भ्रमर फंसानी है ।भव०४।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

२२. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - अपने पिया की मै तो बनी रे जोगनिया)

मेरी नैया को दादा, पार लगाना,
मणिधारी दादा, मोहे भूल न जाना ।
दादा पार लगाना ।।टेर।।
नीर अपार फंसी है नैया, दूर पड़ा है किनारा,
मध्यधार में डगमग डोले, छूट गया पतवारा ।
संकट के रखवारे हो, संकट के रखवारे,
दादा राह दिखाना,

नहीं माँगूँ मैं राजऋद्धि, नहीं माँगू धन की ढेरी,
मैं माँगू बनूँ जन्म-जन्म में, तुम चरणों की चेरी।
दिल में अरमान भरे हो, दिल में अरमान भरे,
आज पुराना दादा राह दिखाना ॥२॥
तुम को तो भक्तों ने घेरा, मैं रह गया अनेरा,
समदर्शी है नाम तुम्हारा, दूर करो भव फेरा ।
ज्ञान विचक्षण दाता हो -- ज्ञान विचक्षण दाता,
'भ्रमर' बचाना दादा राह दिखाना ॥३ ॥

मंजुलाश्री रचित

२३. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - तारी ज्योति ने -------)

तारी मूर्ति मैं जोइ ज्यारे, मारा कोठे कोठे दीवा प्रगट्या त्यारे ।
गुरु तारा दर्शन नी बलिहारी ।
तारी वाणी ने मैं झीली ज्यारे१मारा रोमे रामे फूल खिल्या त्यारे।
गुरु तारा वचन नी बलिहारी ।
गुरु दर्शन करतां करतां, मारा नयनो कदी न धराये ।
तारुं प्रवचन सुणतां सुणतां, मारुं मनडुं कदी न भराये ।
एवो ज्ञान नो प्रकाश, करे जीवन विकास ।गु०१।
गुरु त्याग योग नी महिमा एवी, नर नारी सहु आवी नमे छे ।
प्रभु भक्ति नो रंग अनेरो, भविजन ने खूब गमे छे ।
ज्यारे आवुं गुरु द्वार, पामुं आनन्द अपार ।गु०२।
तारा तपनुं तेज छे भारी, भवि जीवन ज्योति जगावे ।
शुभ संयम सरिता मजानी, भव भवना ताप शमावे ।
रूडो दीपो तारो त्याग, मने गमे वीतराग ।गु०३।
जिनचन्द्र गुरु गुण गावो, मणिधारी जग जन जाया ।
जय जय हो सद्गुरुवर नी, घर घर में आनन्द छाया ।
'तिलक मंजु' जोडे हाथ, मांगे मुक्तिपुरी नो साथ ।गु०४।

माणक

२४. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - देशी - चाल)

लीजे लीजे अरजी मोरी मान ।
कीजे कीजे करुणानिधान, दीजे मोहे सुमत ज्ञान ।।१।।
श्री जिनचन्द सूरि मणिधारी, उपगारी दूजो नहीं तुम सम ।
'माणक' चाकर की विनती, सुनिये धर के ध्यान ।।२।।

माणक रचित

२५. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - होली)

श्री जिनचन्द सुखकारी, अरज सुन लीजे हमारी ।।टेर।।
खरतर गच्छ नायक सुखदायक पर उपगारी ।
भट्टारक गुरु जंगम सुरतरु, सहस किरण अवतारी ।
सुगुरु मस्तक मणिधारी ।।श्री जिन०१।।
विपत विदारण कष्ट निवारण, सेवक जन हितकारी ।
चिन्तामणि और कामधेनु सम, वांछित फल दातारी ।
खलक जाने गुरु सारी ।।श्री जिन०२।।
दीनदयाल दयानिधि दाता, तुम महिमा जग भारी ।
सोमवार पूनम दिन थारो, पूजे चरण नर नारी।
लिये केशर जल झारी ।।श्री जिन०३।।
तुम सम दाता और न जग में, यह मन मांहे विचारी ।
श्री सतयुग 'माणक' चाकर ने, लीनी शरण तिहारी ।
जाए चरनन परवारी ।।श्री जिन०४।।

मुनि कपूर रचित

२६. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

जय जय जग जन दयाल, सद्गुरु मणिधारी ।।जय०।।टेर।।
ओस विमल वंश मान, समरालज साह जान ।

रासल पितु देवी मात, देल्हण सुखकारी ।। जय०।।१।।
कोटिक गण कुल चन्द सार, खरतर शुभ विरुदधार ।
नायक जिनचन्द सूरि, महिमा भुवि भारी ।।जय०२।।
जंगम युगवर प्रधान, श्रीजिन उपपद वखाण ।
दत्तसूरि पाट उदय, गिरि रवि अवतारी ।।जय०३।।
किंकर सम अमर खास, सेवत कृत निकट वास ।
दिल्लीपति निपट दास, ध्यावत नर नारी ।।जय०४।।
दौलत घर भरत भूरि, संकट दल करत चूरि ।
प्रणमत नित 'मुनि कपूर,' दरशन बलिहारी ।।जय०५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२७. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

झुक झुक नमूँ रे तोहे मणिधारी।
झुक झुक नमूँ रे तोहे गणधारी ।।टेर।।
तूँ तार भव तार अब तार।
अब तार तार तार अब तार रे ।। झुक० १।।
दिलदार सुखकार आधार कर पार।
अब पार पार पार भव पार रे ।। झुक०२।।
तेरी आन ली मान, तूँ प्रान, दिल जान ।
दिल जान जान जान दिल जान रे ।। झुक०३।।
अरदास, रख पास, सुखरास, भर आस ।
अब आस आस आस भर आस रे ।। झुक०४।।
आनन्द, जिनचन्द, गणइन्द, सुखकन्द ।
सुख कन्द कन्द कन्द सुख कन्द रे ।। झुक०५।।
गुण मूल, मत भूल, तेरी रूल, चिर फूल ।
चिर फूल फूल फूल चिर फूल रे ।। झुक०६।।
कहे 'राम,' गुण ग्राम, दिल थाम, चित्त थाम ।
अब थाम थाम थाम चित्त थाम रे ।।झुक०७।।

लक्ष्मीचन्द भंसाली रचित

२८. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज - मिलू न तुम से जी घबराए (फिल्म : हीर राझा)

तेरे दरस को जी ललचाए, देखूं तो झूमे गाये ।
हमें गुरु मिल गया है ।।
देहली का राजा, तेरी अर्थी उठी ना माणक चौक सें ।
शाही फरमान से भी, हिल न सकी हाथी के जोर से ।
राजा राणा सीस नमावे वही चरण पधराये ।।हमें० १।
छ: साल की उमर मे, तूने तोड़ी ममता की जंजीर को ।
दो ही वर्ष में पदवी, आचार्य मिली आपको ।
मणि मस्तक में ज्ञान की चमके, मणिधारी कहलाये ।। हमे० २।
सारा श्री संघ साथ घेरा, डाकुओ ने आके तुझे राह मे ।
वाह रे फकीर खैची, ऐसी लकीर तूने राह मे ।
देख देख डाकू घबराये, ऑख से ना दिख पाये ।।हमे० ३।
ओ मन वसिया, देखी महिमा तेरे नाम की ।
दर पे सवाली पड़े, जपते हैं माला तेरे नाम की ।
लक्ष्मी तुम्हीं से प्रीत लगाये, तुम्हीं को हाल सुनाये ।।हमे० ४।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

२९. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – मेरी पत राखो गिरधारी)

गुरु चरणों की बलिहारी सब भव भय भीति टाली ।।टेर।।
भीषण दु:ख मे सदियॉ बीती जन्म मरण भय भीति ।
भव्य स्वभाव परिपक्व बने कब, जानूं मोक्ष की रीति ।
करूँ मोह गगरिया खाली ।। गुरु.।।१।।
जीवन है एक क्षणिक सपना, मोह माया मे खपना ।
वीर प्रभु को नित्य ही जपना, अन्य नही कोई अपना ।
गुरुदेव ! तुमही रखवाली ।। गुरु. ।।२।।

तरुवर तुम हो प्रगट प्रभावी, दत्तसूरि पटधारी ।
सजीवन है शक्ति तुम्हारी, ध्यान धरे नर नारी ।
गुरु 'विचक्षण' करुणा निहाली ॥ गुरु.॥३॥

प्र. विचक्षणश्री रचित

३०. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – खुशी खुशी कर दो विदा)

चरणों में आये दादा ! नैया मेरी पार लगेगी ।
ले श्रद्धा का सम्बल आया, अरज मेरी सुननी पड़ेगी ।
द्वार पे आये शीश झुकाये, भाग्य से अनुपम दर्शन पाये ।
जीवन ज्योति जला ॥ अरज.॥१॥
दिव्य ज्ञानमय हो मणिधारी, कीर्ति तुम्हारी जग फैलाई ।
जिनचन्द्र सूरीश्वर दादा ॥ अरज.॥२॥
कर्म खाई जीवन में आई, हुई हैरान राह नहीं पाई ।
अब पाये सद्गुरु महान ॥अरज.॥३॥
गुण गायो मनहर 'विचक्षण' तेरा।
तुम चरणों में दादा नित्य रहे डेरा ।
माँगू मैं भव से विश्राम ॥अरज.॥४॥

प्र.विचक्षणश्री रचित

३१. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – चान्द सी महबूबा हो तुम)

जगमग ज्योति जग मे चमके, चन्द्र सूरि गुरु राया ।
राजधानी दिल्ली नगरी मे, गुरुवर दर्शन पाया ।
सुरतरु सम सुखकारी दादा, जग मे नाम तुम्हारा है।
दर्शन आज प्रत्यक्ष मैं पाये, पुण्य प्रभात हमारा है।
मन की आशा पूर्ण करो गुरु, रत्नत्रयी वरदाया ॥जग.॥१॥
क्षणिक विकल्पित सुख के पीछे, यह संसार बढ़ाया है ।
भव-भव भटका, फिर भी न झटका, जन-रंजन मन भाया है ।

व-भव भटका, फिर भी न झटका, जन-रंजन मन भाया है ।
भव दुःखहारी, अर्ज हमारी, सम्यग् ज्ञान प्रदाया ।।जग.।।२।।
भक्त अनेकों तुम भक्ति से, मनवांछित फल पाते हैं ।
शुद्ध स्वरूप स्वयं प्रगटा कर, मोक्ष नगर पहुँचाते है।।
आत्मानन्दी मैं बनूँ 'विचक्षण' त्यागूं, ममता माया है ।जग.।।३।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

३२. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – चन्दन सा बदन चंचल चितवन)

जिनचन्द्रसूरि दादा मणिधारी चरणो मे अर्ज स्वीकारो मेरी ।
तुम भूल न जाओ भक्तो को, तुम हम सब के आधारी हो।।टेर।।
सुना है नाथ दुनिया में तेरा, परचा जग मे भारी है ।
दुःखहर सुखकर तू है जग का, श्रद्धा ले शरणे आई हूँ ।
अगर नही सम्भाल करो, रुल जाएगी यह जिन्दगानी ।।जिन.१।।
नहीं पाया धर्म का पानी कही, जीवन की गगरिया खाली है।
धधकती आग मे झुलस रही, जीवन हो रहा धूलधानी है ।
सम्यग् बुंदियाँ देदो मुझको, पाऊँ जन्म मरण विश्रांती ।।जिन.२।।
विज्ञान सूर्य सदा खिले, 'विचक्षण' गुरुवर जब मिले।
भव भ्रमण से छूट जाएँ, स्वज्ञान स्वराज्य पा जाएँ ।
इतना वर देदो ओ दादा,जिनचन्द्र सूरि तुम रखवारी।।जिन.।।३।।

प्र.विचक्षणश्री रचित

३३. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – विमलाचलना वासी)

तुम हो तारण तरण, हम आये शरण, मणिधारा,
कर दो झटपट जग से किनारा ।टेर ।
यहाँ बीते काल अनन्ते, लाख चौरासी योनि भटके ।
अब तुम शरण मिला, जीतुं मोह किला, मणिधारा,
दे दो आत्म विजय मे सहारा ।तु.१।।

मेरी बीच भंवर में नैया, गुरु पार करो बन खिवैया ।
करुणा नजर करो, अज्ञान हरो, मणिधारा,
जल्दी दूर करो भव फेरा ।तु.२।
मैं हूँ दुःखिया दया दिखलाओ, प्रभो ! रत्नत्रयी प्रगटावो ।
स्वर्ण संयम वरुं, तप में यत्न करुं, मणिधारा,
'विचक्षण' के हो प्राण आधारा ।तु.३।।

प्र.विचक्षणश्री रचित

३४. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – कजरा मोहब्बत वाला)

तूँ ही जग का रखवारा, भक्तों का तूँ प्रतिपाला ।
निर्धन हो या धनवान, तेरे तो सब ही समान ।
तूँ दादा ! दिल्लीवाला, मणिधारी चन्द्र उजाला,
देता इच्छित वरदान ।तेरे तो.।।१।।
बचपन में दीक्षा देकर, गुरुवर ने ज्ञान पढ़ाया ।
आठ वर्ष की वय में, आचार्य पदवी पाया ।
दत्तसूरि का प्यारा, पटधारी संघ रखवाला ।
भक्त अनेकों तारा, बिगड़ा सब काम संभाला ।
मूर्ख हो या गुणवान ।तेरे तो. ।२।
निर्धन धनवान बनाता, भूलों को मार्ग लगाता ।
अज्ञानी ज्ञान सिखाता, संकट में प्राण बचाता ।
शासन के गगन मण्डल पर, स्वर्ण रवि प्रगटाया ।
दुनिया के हर कोने में, तेरा जय नाद गुंजाया ।
'विचक्षण' हो या हो नादान । तेरे तो. ।।३।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

३५. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – नगरी -नगरी द्वारे द्वारे)

भव-भय भंजन, करो ज्ञानांजन, चन्द्र सूरि गुरुराज रे ।

माता देल्हण के तुम नन्दन, पद कज वन्दन आज रे ।।टेर।।
जग मे जीवन की सब किरिया, स्वार्थ मोह वश होती है.... । २।
बिना स्वार्थ सब जग को तूँ ही, देता ज्ञान की ज्योति है ....। २।
इसीलिए सद्‌गुरु की महिमा, सब धर्मो मे आज रे ।। माता.१।।
श्रद्धा सम्बल साथ में लाया, एक तेरा विश्वास रे । २ ।
शक्तिबल दो भक्त बनूँ मै, नाम रटूँ प्रति श्वास रे ..... ।२।
तूं है मेरा, मै तुझ चेरा, छोडुँ सब जग काज रे ।।माता.२।।
दूर देश से हम सब चल कर, आये गुरु तुम धाम रे ..... । २।
एक नजर जो हम पर कर दो, सफल बने सब काम रे ..... ।२।
नम्र याचना, एक कामना, पार करो सिरताज रे ।।माता.३।।
सुखमय शासन पाया मैने, मानूं धन्य तकदीर रे ..... ।२।
आत्मिक शान्ति पाने हेतु, खूब करुँ तदबीर रे ..... ।२।
स्वर्ण समान बने शुद्ध जीवन,'विचक्षण'सजे शिव-साज रे ।।माता.४।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

३६. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज -- बार बार तोहे क्या कहे स्वामी)

मणिधारी जिनचन्द्र सूरीश्वर, नमन करें शतवार ।
गुरु बिन जग मे कोई न तारणहार ।।टेर।।
भूमण्डल की परिक्रमा मे, बीता काल अनन्ता है ।
सुख दुःखमय जीवन जीने मे, आत्मा स्वयं नियन्ता है ।
भूल भयंकर आज समझ मे, आई गुरु तुम द्वार ।।गुरु.१।।
आत्मा चेतन, कर्म अचेतन, इनका सम्मिश्रण कैसा ?
सत्-चित् आनन्दमय स्वभाव को, समझा कनकोपल जैसा ।
हे गुरो ! पुरुषार्थ जगादो, हो जाऊँ भवपार ।।गुरु.२।।
सुखसागर-मय स्वर्ण साधना करते है जो जित-रागी ।
धन्य जगत मे जन्म उन्हीं का, बनते हैं वे बड़भागी ।
जल पंकज सम शुद्ध अवस्था, 'विचक्षण' करे स्वीकार ।।गुरु.३।।

प्र.विचक्षणश्री रचित

३७. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – घर आया मेरा परदेसी)

सूखे चमन में आए बहार, गुरु की महिमा अपरम्पार ।।टेर ।।
ऐसे गुरु की जय बोलो, अन्तर घट के पट खोलो ।
करलो वन्दन बारम्बार । गुरु. १।
भूखे को भोजन देते, दुखियों की पीड़ा लेते ।
अन्धे नयन हों ज्योतिदार ।गुरु. २।।
रोग शोक दुःख दूर कर, अशुभ कर्म चकचूर करे ।
दीनों के भरते भण्डार ।गुरु. ३।
राग द्वेष बंधन टूटे, भव भ्रमण मेरा छूटे ।
मणिधारी अर्जी स्वीकार ।गुरु.४।।
मानव-भव यह स्वर्ण समान, ज्ञान 'विचक्षण' दो वरदान ।
जन्म मरण भ्रम को अब टार ।गुरु. ५।।

शशिप्रभाश्री रचित

३८. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – अजी रूठ कर अब)

तुम्हारी शरण में दादा आयेंगे हम,
तुम्हारे सुयश को सदा गायेंगे हम ।।स्थायी ।।
तुम्ही देव माता पिता हो हमारे,
तुम्ही जिन्दगी के हो मात्र सहारे ।
तुम्हें छोड़ गुरुवर कहाँ जायेंगे हम,
तुम्हें मणिधारी सदा ध्यायेंगे हम ।।तुम्हारी.१।।
क्रोधादि शत्रु सताते हमे है,
नरकादि जीव में भ्रमाते हमे हैं
इन्हें अब जीवन से हटायेंगे हम,
तुम्हारी कृपा से मुक्ति पायेंगे हम ।।तुम्हारी .२।।

करदो कृपा गुरु हम पै अब ऐसी,
पायें जो शक्ति मिटा पायें वैसी ।
तुम जैसा दाता कहाँ पायेगे हम,
'शशि' को यह कह दो न विसरायेगे हम ।।तुम्हारी .३।

प्र. सज्जनश्री रचित

३९. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – मै एक छोटा सा मै इक नन्हा सा)

तुम ही स्वामी हो अन्तर्यामी हो, दादा सा शरण आयी हूँ ।
गुरुदेव विनति स्वीकार करो । स्थायी ।
मणिधारी दादा की गरिमा, तीन भुवन में छाई ।
अद्भुत है महिमा की गाथा, सुरनर ने मिल गाई । तुम ही. १।
बड़े-बडे राजा महाराजा, चरणो मे शीश झुकाते ।
बड़े-बड़े पण्डित मानी भी, वाद से गुरु कतराते । तुमही.२।
समता कर सके ज्ञान विज्ञान मे, नहीं ऐसा कोई ज्ञानी ।
त्रयोदश वर्ष के युगप्रधान का, नहीं दूसरा सानी ।।तुमही.३।
वीर-शासन को खूब दीपाया, लघु वय मे ही गुरुने।
महत्तियाण जाति प्रतिबोधी, पाया सुयश था गुरुने ।।तुमही.४।
आज आपकी पुनीत परम्परा, क्षीण है होती जाये ।
अभ्युदय हो दादा गच्छ का, 'सज्जन' विनय सुनावे ।। तुमही.५।

प्र. सज्जनश्री रचित

४०. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – वीणावादिनी वरदे ऽ ऽ ऽ)

दादा आपकी जय हो ... जय हो जय हो ... दादा ।
खरतर-नभरवि वादि अद्रि पवि,मणिधारी की जय हो...दादा।।टेर।।
शिशुवय मे ही व्रतधारी बन, अद्भुत प्रतिभा से विद्यार्जन ।
कर आचार्य पद प्राप्त गच्छ के ... बाल सूर्य जय हो ... दादा।१।

त्रयोदश वर्ष के युगप्रधान की, विम्भयकारी ज्ञान ध्यान की ।
कोटि-कोटि जनमुक्त कण्ठ से कहते थे जय हो ... दादा ।२।
जागृत ज्योति मिहिरावलि में, प्रत्यक्ष प्रभावक हो इस कलि मे।
ज्ञान मण्डली विनय भक्ति से बोले 'सज्जन' जय हो.... दादा ।३।

प्र. सज्जनश्री रचित

४१. मणिधारी जिनचन्दसूरि स्तवन

(तर्ज – प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो)

मणिधारी दादा संघ में उदय करो ।।स्थायी ।।
विक्रमपुर अवतार तुम्हारा, पितु राशल देल्हणदे-दुलारा ।
हुआ बालमुनि सखरो ।मणि.१।
दादागुरु का पाट दिपाया, नव वर्ष के सूरिपद पाया ।
तेरह वर्षीय युगप्रवरो । मणि.२ ।
अद्‌भुत प्रतिभा के तुम स्वामी, वादिमद-खण्डन हुए नामी ।
जग में है सुयश खरो ।। मणि.३।
दादागुरु आदेश भुलाए, भावि-भाव-वश दिल्ली आए ।
स्वर्ग प्रयाण करो ।।मणि. ४।।
बिच बाजार में दाह कराया, मस्तक मणि श्रावक विसराया ।
मुस्लिम हाथ परो ।। मणि. ५।
मिहिरावलि में आप विराजे, कीर्ति आपकी विश्व मे गाजे ।
भक्त भण्डार भरो ।।मणि.६।
'ज्ञानमण्डली' शरण मे आयी, 'सज्जन' ने यह महिमा गाई ।
नैया पार करो ।।मणि.।।६।।

सुवर्णमण्डल रचित

४२. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – हो भारत के रखवारे)

हे ज्ञान दीप, भारत प्रदीप, तव पद कज शीश झुकाये,
हम दर्शन करने आये ।

मदनपाल नृप अति आग्रह से, गुरुवर दिल्ली आये ।
सोई मानवता विकसित करने, दिव्य सन्देश सुनाये ।
जीओ और जीने दो ऐसा, गुरु वाणी ज्ञान जगाये ।।हम.१।।
सन्त शिरोमणि चन्द्र सूरीश्वर, सब ही के मन भाये ।
छह वर्षो की बालक वय में गुरु दत्त से दीक्षा पाये ।
उनके पट्ट विभूषित तुम, सूरि सम्राट कहलाये ।।हम.२।।
पूरे भारत का भक्त संघ मिल, जयन्ति आज मनाये।
तव गुण-स्तवना-अर्चन करके, पुण्य अनन्त कमाये ।
सन्त, भक्त सब ही मिल करके, गौरव गाथा गाये ।।हम.३।।
अस्सी वर्ष की उम्र में देखो, मील आठ सौ आये ।
विज्ञानश्री जी नाम है उनका, त्याग मूर्ति कहलाये ।
गुरु की श्रद्धा भक्ति ने ही, अरमान सफल है कराये ।।हम. ४।
'सुवर्ण मंडल' है अति हर्षित, सब साथ मे दर्शन पाये ।
सन्त विचक्षण चरण शरण मे, जीवन सफल बनाये,
ऐसा दो वरदान सभी को, सम्यग् दर्शन पायें ।।हम.५।।

सूरज रचित

४३. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – जब तुम्ही चले परदेस, लगाकर ठेस)

क्यूं गये गुरु दिल तोड़, हमे यहां छोड़ कहो मणिधारी।
आये हैं शरण तुम्हारी ।टेर।
लाखो को तुमने तारे है, हम भी तो भक्त तुम्हारे है ।
अब तुम बिन स्वामी कौन करे रखवारी ।। आये. ।।१।।
इस मन ने मार्ग हटाया है, कंटक मे जाय फंसाया है ।
तुम बिन अब किसके होय सहारी ।।आये. २।।
घर घर मे बाट तुम्हारी है, भक्तों पर विपदा भारी है ।
टक टकी लगाये देखे वाट तुम्हारी ।।आये.।।३।।
जब तुमको ऐसा करना था, क्यों इतना प्रेम बढाना था ।

तुम बिना 'सूरज' कैसे हो भवपारी ॥आये. ४॥

४४. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

तुम तो भले विराजो जी,
मणिधारी महाराज दिल्ली में भले विराजो जी ॥ टेर ॥
नर नारी मिल मन्दिर आवे, पूजा आन रचावे ॥
अष्ट द्रव्य पूजा में लावे, मन वांछित फल पावे ॥ तु० १ ॥
आशा पूरो संकट चूरो, ये है विरुद तुम्हारो ।
आधि व्याधि सब दूरे नाशो, सुख सम्पत दे तारो ॥ तुम०२॥
वाद विवाद जन जय पामें, तारे जलधि जहाज ।
वाट घाट भय पीड़ा भाजे, समरण श्री गुरुराज ॥ तुम० ३ ॥
पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपे लक्ष्मी नार ।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत्ति दीजे, भल भरजो भण्डार ॥ तुम. ४॥
सेवक ऊपर करुणा करजो, महिर नजर तुम धरजो ।
लक्ष्मी लीला घर में भरजो, एतो काम तुम करजो ॥तुम०५ ॥

४५. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

महिमा तेरी सबसे निराली, जय गुरुवर मणिधारी ॥टेर॥
तेरे द्वार पर जो कोई आवे, तुम चरणन में शीश झुकावे ।
श्रद्धा से तोहे पखरावे, तिनके संकट हारी ॥ महिमा. १ ॥
चमत्कार तेरो परतिख सद्गुरु, कलयुग को तूं है अवतारी ।
नाम उच्चारत कारज सारे, बांह गहै मझधारी ॥ महिमा. २ ॥
जंगम युग प्रधान भट्टारक, श्री जिनचन्द्रसूरि मणिधारी ।
सकल मनोरथ पूरे होवें, तुझ दरिशन बलिहारी ॥ महिमा. ३ ॥

४६. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(वन्दे मातरम्)

वन्दे SSS ... गुरुवरम्
खरतरं, व्रतधरं, परमत-जयकरं,
भाले-मणिधरम् ..... गुरुवरम् ॥ वन्दे० १ ॥

दिव्यरूपजित कुसुम-सायकं, प्रज्ञान्यक्कृत् देवनायकम् ।
ज्ञायकं वांछित-दायकं, वरदं सुखदं युगवरं ।।वन्दे० २।।

४७. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग-सोरठ तेवडा)

श्री जिनचन्द सूरि दयाल, मुझ पर महेर करो मयाल ।
जन सुनि ढरंत सहज ही, दुःख हरत ततकाल ।।१।।
कृपा मौजु दीन पर किये, वरद परम कृपाल ।
दिल्लीपति होइ कर्यो उत्सव, गुरु प्रवेश तिहिं काल ।।२।।
पद्म धनपालादि कितने ही, बेग कीन निहाल ।
हम हूं पर जब परत संकट, देत ततखण आवी टाल ।।३।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

४८. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि आरती

जय जय मणिधारी,
आरति करूँ हितकारी, सुख सम्पति कारी ।। जय० ।।
गुण मणि आगर महिमा सागर, भवि जन हितकारी ।
दीनदयाल दया कर मोपर, जिन शासनवारी ।। जय० १ ।।
ग्यारहसे सत्तानवे वरसे, अपनी हरख वधाई ।
बारेसें तेवीसे वर्षे, सुर पदवी पाई ।। जय० २ ।।
कर जोड़ी सेवक गुण गावे, मन वंछित पावे ।
श्री 'जिनचन्द्र' कृपा कर मोपर, मंगल माला घर आवे।।जय०३।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

४९. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि आरती

जय जय मणिधारी, जग जन उपकारी ।
ओम् जय जय मणिधारी ।।टेर।।
शासन थंभ समाना सद्गुरु, आरति हितकारी ।
दिल्ली में दरशन कर परसन, होवे नर नारी ।

ओम् जय जय मणिधारी ।।१।।
मदनपाल नरपति प्रतिबोधक, संघ वृद्धिकारी ।
महतियाण महती जाति तें, समकित ५रचारी ।।
ओम् जय जय मणिधारी । २।।
'जिन हरि' पूज्य परमगुरु शरणा, भव भव सुखकारी ।
ध्याऊं पूजूं पुण्य योग से जय मंगलकारी ।।
ओम् जय जय मणिधारी ।।३।।

महोपाध्याय ऋद्धिसार रचित

५०. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि आरती

जय जय आरती मणिधर चंदा, श्री जिनकुशल करो आनन्दा।ज०।
प्रथम आरती ऋद्ध सिद्ध दाता, सांगा सा गुरु परचा पाता।ज०१।
दूजी आरती अरिभय परिहर, सुजाणसिंह बीकाणा नरवर।ज०२ ।
तीजी आरती जहाज तिराई, गूजरमल्ल बोथरा सहाई ।ज०३।
चौथी आरती परतिख दरसण,कर्म बच्छावत कूं किया परसन। ज०४।
पांचमी आरती श्रावक वृद्धि, राजन प्रतिबोधे दे सिद्धि ।ज० ५।
छट्ठी आरती बन्ध छुड़ावे, रूपचन्द को दरस दिखावे ।ज० ६।
सातमी आरती भक्त सहाई, समरयां सानिध दे गुरुराई ।ज० ७।
जिनचारित्रसूरि पद ध्यावे, पाठक 'राम' सदा फल पावे ।ज०८।

महेन्द्रप्रभाश्री रचित

५१. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

तेरा आज स्वर्ग दिन आया, हो गुरुवर दर्श दिखा ।मणि.१।
देल्हण देवी की कुक्षी से जन्मे,कि देख देख पिता हर्षे हर्षे।मणि.२।
गुरुदेव बड़े उपकारी, कि गुण गावे नर नारी । मणि.३।
जो उनका ध्यान लगाते, कि मन वांछित पाते । मणि.४।
छ: वर्ष की उम्र है आई, कि पावन दीक्षाधारी । मणि.५।
आठ वर्ष में आचार्य पद पाया, कि जग का उद्धार किया।मणि.६।

स्वर्गवास पाया देहली में, कि भादो वदी चौदस आयी ।मणि.७।
'महेन्द्रप्रभा' तेरे चरणे आये, कि भक्ति से शीष झुकाए ।मणि.८।

महेन्द्रप्रभाश्री रचित

५२. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – यशोमति मैया से)

रास जी के नन्द्र, देल्हण देवी प्यारा ।
मणिधारी तुम हुए, जग प्रतिपाला ।
इस पृथ्वी पर अवतारी आया ।
जीयो और जीने दो संदेश लाया ।
चमका दुनिया में तेर ऽऽ ..... नाम निराला .....
देल्हण देवी प्यारा ।१।
छः वर्ष की उम्र मे, तोड़ा कर्म भारी ।
आठ वर्ष की उम्र मे, आचार्य पद धारी ।
ज्ञान-ध्यान देकर तूने हो ऽऽ किया उद्धारा ।
देल्हाण देवी प्यारा ।२।
पाया देवलोक तूने दिल्ली मे आके ।
'महेन्द्रप्रभा' ने तेरे गुण गाके ।
दर्शन देना दादा हो ऽऽ भक्त की आके .....
मणिधारी दादी ..... ।३।

५३. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – गोरी है कलाइया)

गुरु की नगरियां, है आई देखो, झूम झूम दुनियां ।
समां है, सुहाना, करो वन्दना ।
होऽऽ गुरु हो लगाले प्रीत – आ के मतवाले,
जो भी मांगे, इच्छित फल पा ले ।
विपदा को टारे वो ही, तेरे है सहारे ये ही ।
गुरु है बड़े ही दिलवाले ऽ गुरु की नगरियां ।

दिल में बा के जो भी – नाम रहेगा,
दरस गुरु का उसे, आज मिलेगा।
बन के दिवाना, जो आके, इस दर पे झुकेगा,,
जिन्दगी में पाए, खुशहालियां ।।गुय. ।।१।।
शान है निराली कैसी, झूमे महरौली ,
मस्तक पे चमके देखो, ज्योत मणी की ।
गूँज रही है, चहूँ पे जयकार गुरु की ।
बाजे बाजे, गुरु की बधाईयां ।।गुरु.।।२।।
हिली ना जो ताकतों से, यही वो रथी है,
चन्द्रसूरि के पावन, चरण यही है ।
शीष नवाले मिली है तुझे आज मिला है,
दयालु गुरु की मेहरबानियां ।।गुझ.।।३।।

५४. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – हम प्यार करने वाले ....)

गुरु नाम, लेने वाले – इस दर पे, ओ आने वाले,
इस दर पे ओ, आने वाले ।
नाम लेनेवाले, तर जाएंगे शान से जीएंगे, मुस्काएंगे ।
प्रीत लगाई, जिसने गुरु से, उसका जीवन, धन्य हुआ ।
दर्श किया है, जिसने गुरु का, उसका सोया भाग्य जगा ।।
लाखो आएं, इन चरणो में, तू भी आ के, शीश नवा ।
मांगा है जिसने, जो भी गुरु से, पाया वो भी उसने गुरु से ।
आशाओ के, दीप जलेंगे, जो भी श्रद्धा से, आएंगे ।।
नाम लेनेवाले, तर जाएंगे, शान से जीएंगे, मुस्काएंगे ।।१।।
कितना है पावन, आज ये शुभ दिन, मंगलमय है, दादावाड़ी।
भक्तजनों को, गुरु भक्ति से, महक रही है, ये फुलवारी ।
जय मणिधारी, जय मणिधारी, गाए, डारी - डारी ।
कण कण मे है, ज्योति मणि की, झूम के नाचे, आज हवा भी ।

आज दरस, साक्षात गुरु के, किस्मत वाले. पाएंगे ।।
नाम लेने वाले, तर जाएंगे, शान से जिएंगे, मुस्काएंगे ।।२।।

५५. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – हमने घर छोडा है ....)

गुरु नाम सहारा है, लाखो को तारा है,
नाम लिए जाएंगे, इस दर पे आएंगे ।
दर्शन बिना, दादा मेरे, दिल न कभी चैन आए,
जब तक रहेगा, ये जीवन गुरु, प्रीत ना टूट जाए ।
जब जब नाम लिया है, तू ने थाम लिया है,
हम तेरे चरणों में, आए है आएंगे ।।१।।
सद्ज्ञान की, ज्योति प्रखर तूने गुरुवर जलाई,
मंजिल मिली है, सच्ची हमें, जब से लगन है लगाई ।
ओ महरौली वाले दादा आप निराले ....
हम तेरे चरणों मे आए है आएंगे ।।२।।

५६. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – लगी आज सावन की . ..)

गुरुवर तुम्हारी, शरण मिल गइ है ।
हुई आज पावन, मेरी जिन्दगी है ।।
तू मुझपे दया का, सदा हाथ रखने,
कि सद्राह पर है, गुरु मुझको चलाना ।
मैं दर्शन दिवाना, प्रभु आन देना,
कि ऐसी लगन आज, दिल मे लगी है ।।१।।
है श्वासों की धड़कन मे, सुमरण तुम्हारा,
गुरु तेरी भक्ति ने, जीवन संवारा।
करुं क्या मैं अर्पण, न कुछ पास मेरे,
तूं मेरा, मै तेरा, यही बन्दगी है ।।२।।
लगी प्रीत तुमसे, न ये टूट जाए,

ये विश्वास का दीप, बुझने न पाए ।
ले श्रद्धा सुमन आज, दर पे खड़ा हूँ,
मेरे दिल में मूरत, तुम्हारी बसी है ॥३॥

५७. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – जीना है प्यार मे जीना .. लव-लव-लव)

जाना है, जग से जाना, जाने से फिर क्या डरना,
जाने से डरने वाले, पार वो करें ।
आज चरणों में आजा, लिए जा नाम गुरु का,
भक्ति से हो जाएगा, पार, पार पार ॥
मणिधारी का, नाम ले देखो, दिल में धर के ध्यान तो देखो,
इस जीवन में ज्ञान भरेगा – मानव ।
महिमा है गुरुदेव की भारी, कैसी पावन दादाबाड़ी,
पल-पल गुणगान किए जा मानव ।
श्रद्धा से, ध्यान लगाना, कर्मो से मुक्ति पाना,
भक्ति से हो जाएगा, पार, पार पार ॥१॥
सच्चे दिल से, प्रीत लगाना, आशाओ के दीप जलाना,
भक्ति धुन में, झूम के गाना – मानव ।
काया का है, क्या ठिकाना, ओ प्राणी तूं, भूल न जाना,
पल में हो क्या, ये किसने जाना ।
क्या लेके, आया है तूं, क्या ले के जाएगा तूं,
भक्ति से हो जाएगा – पार, पार, पार ॥२॥

५८. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़िया)

जिन शासन के उजियारे हो, मणिधारी चन्द्र सूरीश्वर,
दर्शन दो आज दया कर २ ।
जिनदत्तसूरि के पट्टधारी, जैनो में एक प्रभाकर,
दर्शन दो आज दयाकर ॥

गुरु मदनपाल महाराज को, तुमने ही दी थी दीक्षा,
प्रचार कराया जैनधर्म का, सच्ची दी थी शिक्षा २ ।
यहाँ त्याग और तप-संयम का, उपदेश दिया समझकर ।।१।।
था अलौकिक वो चमत्कार, जो रथी न उठने पाई,
तब हुआ प्रभावित बादशाह, मिल महिमा सबने गाइ २।
यह महरौली की दादाबाड़ी, वही धरा है मन हर ।।२।।
हम नत मस्तक हो चरण कमल में, श्रद्धा सुमन चढाएं,
है कोटि-कोटि उपकार संघ पे, कभी भूल ना पाए २।
चहूँ गूंज रही जयकार तुम्हारी, आज विश्व मे गुरुवर ।।३।।
है जन्म महोत्सव आज गुरु का, मंगल दीप जले है,
इस पुण्यधरा के कण-कण मे, भक्ति के फूल खिले है २।
यहाँ झूम-झूम के दिवाने, आए भक्ति मे रंग कर ।।४।।

५९. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – मुझे नीद न आए)

तूं ही प्रीत निभाए, हमे राह बताए,
दिल गाए गुरु, झूम के गाए ।
महरौली मे ये, दिल खो गया २।।
प्राण से प्यारा हमको, गुरु का नाम है,
महरौली की दादाबाड़ी, धाम है ।
दादा मेरे दादा, क्या शान है,
सब की जुबां पे, नाम है ।
इस दर पे जो आए, उसे अपना बनाए,
दिल गाए गुरु, झूम के गाए ।।१।।
दर्शन की अभिलाषा, से हम आए है ।
तुम पे श्रद्धा, विश्वास का दीपक लाए हैं ।
गुरु मेरे चन्द्र महान है, कोटि कोटि प्रणाम है ।
हम शीष झुकाए, तेरी शरण मे आए ।

दिल गाए गुरु, झूम के गाए ।
महरौली में ये, दिल खो गया ।।२।।

६०. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – कबूतर जा – जा – जा)

दिवाने गा– गा– गा, दिवाने आ– आ– आ–
धूम मची है महरौली में, भक्ति से खो जा। दिवाने गा–गा–गा–
ओ महरौली, आनेवालो, श्रद्धा गुरु पे, रखना तुम,
शीश नंवाना, सच्चे दिल से, नाम गुरु का लेना तुम ।
झूम-झूम के, आज गुरु की, जय जय करता जा ।।१।।
चन्द्रसूरि की महिमा भारी, लाखों दर पे आते है,
इन चरणों में ध्यान लगाकर, मन इच्छित फल पाते हैं ।
नमस्कार है, चमत्कार को, दादा के गुण गा.।।२।।
कितनी है ये, पावन धरती, कण कण, मंगल गाए ,
करके दर्शन, मणिधारी के, कली कली, मुस्काए ।
दिल में गर, विश्वास हो तेरे, भक्ति करता, जा. ।।३।।

६१. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि स्तवन

सररर –रर–रर – भक्तजनों की रेल, चली है – गुरु द्वार ।
मणिधारी जिनचन्द्रसूरि की, करती, जय-जयकार ।।
विक्रमपुर का, नन्हा वालक, चन्दसूरि, कहलाया,
अल्पायु में, दीक्षा लेकर, जेन धरम, चमकाया २
जिनशासन की शान निराली, गाओ, मंगलाचार ।।१।।
है अपार महिमां, गुरुवर की, जान सका है कौन,
बीचवास दे, गुरु रथी को, हिला सका था कौन २
किए कोटि, वन्दन चरणों मे, गूँज उठी, जयकार ।।२।।
महरौली की, दादावाड़ी, पहुँच गई है, मेल,
करके दरसन गुरुदेव के, धन्य हुई ये रेल २
इस गाड़ी का, खेल निराला, आए, बारम्बार ।।३।।



तृतीय खण्ड

युगप्रधान जिनकुशलसूरि

दादा श्री जिनकुशलसूरि

प्रत्यक्ष प्रभावी युगप्रधान तीसरे या छोटे दादाजी के नाम से विख्यात जिनकुशलसूरि एक असाधारण महापुरुष थे। आपका जन्म सिवाणा में संवत् १३३७ मिगसर वदि तीज के दिन हुआ था। छाजेड गोत्रीय मंत्री देवराज आपके पितामह थे और जैसल / जिल्हागर आपके पिता थे। आपका जन्म नाम कर्मण था। कलिकालकेवली जिनचन्द्रसूरि जो कि संसार पक्ष मे आपके चाचा होते थे के उपदेश से प्रतिबोध पाकर उन्ही के करकमलो से संवत् १३४५ फाल्गुन शुक्ला अष्टमी के दिन गढसिवाणा में अर्थात् अपनी जन्मभूमि मे ही दीक्षा ग्रहण की। आपका दीक्षित होने पर नाम रखा गया था कुशलकीर्ति। तत्कालीन गच्छ के वयोवृद्ध गीतार्थ उपाध्याय विवेकसमुद्र के पास समस्त शास्त्रो का अध्ययन किया था। १३७५ माघ सुदि बारस को बड़े महोत्सव के साथ जिनचन्द्रसूरि ने कुशलकीर्ति गणि को नागोर मे वाचनाचार्य पद प्रदान किया था। गच्छनायक जिनचन्द्रसूरि का स्वर्गवास हो जाने पर उनके निर्देशानुसार ही संवत् १३७७ ज्येष्ठ वदि ग्यारस के दिन अणहिलपुर पाटन में महामहोत्सव के साथ अनेक देशो के संघ के समक्ष वाचनाचार्य कुशलकीर्ति को आचार्य पद पर स्थापित किया गया और इनका नामकरण किया गया जिनकुशलसूरि । इस उत्सव का सारा आयोजन पाटण के सेठ तेजपाल रुद्रपाल ने किया था।

संवत् १३७८ का चातुर्मास भीमपल्ली मे किया। वहां हेमभूषण गणि को उपाध्याय पद और मुनिचन्द्र गणि को वाचनाचार्य पद दिया और अनेको को दीक्षा दी। विवेकसमुद्रोपाध्याय का सांध्यकाल निकट जानकर पुनः पाटण आये और उन्हें विधि पूर्वक अनशन करवाया। संवत् १३७८

ज्येष्ठ शुक्ला दूज को उनका स्वर्गवास हुआ। आषाढ शुक्ला तेरस के दिन पाटण में ही उनके स्तूप की प्रतिष्ठा करवाई। विवेकसमुद्रोपाध्याय ने ही तत्कालीन गणनायक कलिकालकेवली जिनचन्द्रसूरि, दिवाकराचार्य, राजशेखराचार्य, वाचनाचार्य राजदर्शनगणि, वाचनाचार्य सर्वराजगणि आदि अनेक मुनिगणो को आगम, व्याकरण, न्याय, आदि शास्त्रों का अभ्यास करवाया था।

संवत् १३७९ मिगसर वदि पांचम को पाटण के शांतिनाथ विधि चैत्य में एक विशाल प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। सेठ तेजपाल ने यह महोत्सव करवाया। इस प्रतिष्ठा के अवसर पर रत्नादि निर्मित १५० प्रतिमाएं एवं जिनचन्द्रसूरि, जिनरत्नसूरि आदि विम्वों की प्रतिष्ठा की थी।[१] इसी दिन शत्रुंजय महातीर्थ पर खरतरवसही में मानतुंग प्रासाद का शिलान्यास भी किया गया था। प्रतिष्ठा के पश्चात् सूरि महाराज बीजापुर, त्रिश्रृंगम, तारंगा आदि होकर पाटण आये और चातुर्मास पाटण में किया।

संवत् १३८० कार्तिक सुदि चौदस के दिन आचार्य महाराज ने सेठ तेजपाल रुद्रपाल द्वारा निर्मापित मानतुंग विहार जिनालय मे आदिनाथ भगवान की २७ अंगुल की प्रतिमा, जिनप्रवोधसूरि, जिनचन्द्रसूरि आदि अनेक प्रतिमाओ की प्रतिष्ठायें करवाई।

---

१. संवत १३७९ मिगसर वदि पांचम के दिन प्रतिष्ठित कुछ मूर्तियां आज भी निम्न स्थानो मे प्राप्त हैं :—

१. समोसरणपट्ट, पार्श्वनाथ मंदिर हाला, २. महावीर मूर्ति, कुन्थुनाथ मंदिर अनतगढ, ३. जिनचन्द्रसूरि मूर्ति, शांतिनाथ मंदिर नाफोडा, ४. जिनरत्नसूरि मूर्ति, शत्रुंजय देहरी नं. ७८४/३४/२, ५. पद्मप्रभुमूर्ति, शत्रुंजय देहरी नं. ११४ खरतरवसही, ६. महावीर मूर्ति, शत्रुंजय देहरी नं. १०१ खरतरवसही, ७. अनन्तनाथ मूर्ति, शत्रुंजय देहरी नं. ९७/२ ८. आदिनाथ मूर्ति, शत्रुंजय देहरी नं. ९७/३३ समोसरण परिसर, ९ पार्श्वनाथ पंचतीर्थी, पद्मप्रभ मंदिर लखनऊ.

दिल्ली निवासी श्रीमालकुलोत्पन्न सेठ रयपति ने सम्राट गयासुद्दीन तुगलक से तीर्थ-यात्रा का फरमान प्राप्त किया कि "जिनकुशलसूरिजी महाराज की अध्यक्षता मे सेठ रयपति श्रावक का संघ शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थयात्रा के निमित्त जहां-जहां जाये वहां-वहां इसे सभी प्रान्तीय सरकारे आवश्यक मदद दे और संघ की यात्रा मे बाधा पहुंचाने वाले लोगो को दंड दिया जाये।" फरमान प्राप्त करने के पश्चात् संघ यात्रा के लिए सेठ रयपति ने आचार्यश्री से अनुमति चाही। आचार्यश्री से तीर्थ-यात्रा का आदेश प्राप्त कर सेठ रयपति ने वैशाख वदि सातम को विशाल संघ के साथ दिल्ली से प्रस्थान किया। संघ कन्यानयन, नरभट, फलौदी होता हुआ पाटण पहुंचा। वहां सूरिजी से संघ मे साथ पधारने की प्रार्थना की। जिनकुशलसूरिजी भी अपने विशाल समुदाय के साथ संघ यात्रा मे सम्मिलित हुए। संघ आषाढ वदि छठ को शत्रुंजय पहुंचा। वहां दो दीक्षाएं हुई। सप्तमी के दिन समवसरण, जिनपतिसूरि, जिनेश्वरसूरि आदि गुरुओ की प्रतिष्ठाये करवाई। आषाढ वदि नवमी के दिन व्रतग्रहण समारोह हुआ और उसी दिन सुखकीर्तिगणि को वाचनाचार्य पद प्रदान किया। यह विशाल यात्री संघ शत्रुंजय से प्रस्थान कर आषाढ सुदि चौदस के दिन गिरनार पहुंचा। यात्रा संपन्न कर सूरिजी पाटण पधार गये और संघ वहां से वापस दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गया।

संवत् १३८१ वैशाख वदि पांचम को पाटण के शांतिनाथ विधि चैत्य में सूरिजी की अध्यक्षता मे विराट प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। [१] इसमे अनगिनत जिन प्रतिमाएं जिनप्रबोधसूरि,

---

१. मुनिसुव्रतमूर्ति, शत्रुंजय देहरी नं. १०० खरतरवसही परिसर,
महावीर मूर्ति, जैन मंदिर सराणा
पचतीर्थी, भाभा पार्श्वनाथ मंदिर पाटण
अबिका मूर्ति, पार्श्वनाथ मंदिर हाला

[२] जिनचन्द्रसूरि, अम्बिका[३] आदि मूर्तियों की प्रतिष्ठा करवाई। वैशाख वदि छठ के दिन जयधर्मगणि को उपाध्याय पद दिया।

भीमपल्ली के श्रावक वीरदेव ने सम्राट गयासुद्दीन से तीर्थ-यात्रा का आदेश प्राप्त कर सूरिजी की निश्रा मे ज्येष्ठ वदि पांचम को भीमपल्ली से संघ निकाला। यह विराट संघ वायड, सेरीसा, सरखेज, आसापल्ली, खम्भात होता हुआ शत्रुंजय पहुंचा। वहां आदिनाथ मंदिर के विधिचैत्य में नवनिर्मित चतुर्विंशति जिनालय एवं देवकुलिकाओं पर कलश व ध्वज आदि का आरोपण हुआ। तीर्थ यात्रा सानन्द संपन्न कर संघ वापस लौटता हुआ सेरीसा, शंखेश्वर, पाडल होते हुए श्रावण सुदि ग्यारस को भीमपल्ली पहुंचा।

संवत् १३८२ वैशाख सुदि पांचम को भीनमाल में श्रावक वीरदेव ने महामहोत्सव किया जिसमें अनेक संघो की उपस्थिति में विनयप्रभ आदि अनेकों को आचार्यश्री ने दीक्षा प्रदान की। वहां से सूरिजी साचोर, लाटहृद होकर बाडमेर पधारे। वही जिनदत्तसूरि रचित चैत्यवंदन कुलक पर विस्तृत टीका की रचना आपने की। संवत् १३८३ पोष सुदि पूनम को अनेको को दीक्षाएं दीं। वहां से लवणखेटक होकर समियाणा होते हुए जालोर पधारे। फाल्गुन वदि नवमी को विविध उत्सव हुए और अनेक जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा करवाई एवं अनेकों को दीक्षित किया।

जालोर से चैत्र मास में विहार कर समियाणा, खेड, जैसलमेर होते हुए देरावर नगर पधारे। वहां स्व-प्रतिष्ठित आदिनाथ प्रभु को वंदन किया। संवत् १३८४ माघ सुदि पांचम को प्रतिष्ठा महोत्सव आदि संपन्न हुए और वहां पद्ममूर्ति आदि अनेको को दीक्षा प्रदान की।

---

२. जिनप्रबोधसूरि मूर्ति, पार्श्वनाथ मंदिर, [illegible].

३. अंबिका मूर्ति, [illegible] का महावीर मंदिर, [illegible]

संवत् १३८५ फाल्गुन सुदि चौथ के दिन अनेकों को दीक्षा दी और कमलाकर गणि को वाचनाचार्य पद दिया। संवत् १३८६ में बहीरामपुर आए और वहां से क्यासपुर होकर १३८६ का चातुर्मास देरावर मे किया। १३८७ का चातुर्मास भी वही किया।

संवत् १३८८ मे मिगसर सुदि दशमी को महोत्सव पूर्वक तरुणकीर्ति को आचार्य पद देकर तरुणप्रभाचार्य नाम प्रदान किया और लब्धिनिधान को उपाध्याय पद दिया।

संवत् १३८९ का चातुर्मास देरावर में किया। वहीं तरुणप्रभाचार्य और लब्धिनिधान उपाध्याय को स्याद्वादरत्नाकर, महातर्करत्नाकर आदि सिद्धान्तो का परिशीलन करवाया। वही माघ शुक्ला मे सूरिजी अस्वस्थ हो गये और अपना अंतिम समय निकट जानकर तरुणप्रभाचार्य और लब्धिनिधान उपाध्याय को निर्देश दिया कि 'पद्ममूर्ति को गच्छनायक पद पर बिठाना।' तत्पश्चात् आचार्यश्री ने माघ सुदि को विधि सहित अनशन ग्रहण किया। संवत् १३८९ फाल्गुन वदि पांचम, परम्परा के अनुसार फाल्गुन वदि अमावस को देरावर मे ही आपका स्वर्गवास हुआ। फाल्गुन वदि छठ को आपका विधिवत् अग्निसंस्कार किया गया और उसी स्थान पर श्रीसंघ ने उनका स्तूप बनवाया।

जिनकुशलसूरिजी ने अपने जीवन काल मे ५० हजार नये जैन बनाकर शासन की महति प्रभावना की। आपकी रचित दो कृतिएं प्राप्त है– चैत्यवंदन कुलक टीका और जिनचन्द्रसूरि चतुःसप्ततिका एवं संस्कृत भाषा में नव स्तोत्र प्राप्त हैं।

जिस प्रकार अपने जीवन काल मे जैन संघ के लिये ये परमोपकारी थे वैसे ही स्वर्गवास के पश्चात् भी आज भी भक्तो के मनोवांछित पूर्ण करने में कल्पवृक्ष के सदृश है, हाजरा हजूर है। आज सारे भारत वर्ष मे आपके जितने चरण, मूर्तियां व दादाबाडियां है अन्य किसी की नहीं। ां ेर, नाल आदि शताधिक स्थल तो चमत्कारी हां

आज भी हजारों लोग भक्तिपूर्वक पूजन अर्चन करते हैं। कई स्थलों पर फाल्गुन वदि अमावस को मेला भी भरता है।

आपकी शिष्य परम्परा भी विशाल रही है। आपके शिष्य उ. विनयप्रभ हुए। विनयप्रभ के पौत्र शिष्य क्षेमकीर्ति हुए। इन्हीं के नाम से क्षेमकीर्ति उपशाखा निकली। इस शाखा मे सैकड़ो प्रौढ विद्वान हुए। इनमें से उपाध्याय जयसोम, उपाध्याय गुणविनय आदि के नाम उल्लेखनीय है। इस शाखा मे अंतिम यति श्यामलालजी के शिष्य विजयचन्द्र हुए जो बीकानेर की गद्दी पर जिनविजयेन्द्रसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए। अब यह परम्परा लुप्त हो गई है।

आपके शासनकाल में अनेकों दिग्गज विद्वान हुए जिनमे से कतिपय के नाम इस प्रकार है:—

पडावश्यक बालावबोधकार तरुणप्रभसूरि, लब्धिनिधान उपाध्याय, कवि पद्म, ठक्कर फेरू, धर्मकलश, सारमूर्ति, समधरू, राजशेखराचार्य, दिवाकराचार्य, गौतमरासकार विनयप्रभ आदि ।

॥१॥

कुरंगीयति

निर्दग्धवत

शाकिन्यो नैव भूताः परिभवति पुनो नैव सौदामिनी च ।
कोशाकृष्टैः कृपाणै रविसुतरसनादारुणैर्व्याप्तहस्ता,
भीष्माकाराः करालाः परविभवमुखो दस्यवो नाक्रमन्ति ॥८॥
कर्णाटे मेदपाटे क्षितिधरविकटे सद्भवे कर्कटेऽपि,
सौवीरे सिन्धुतीरे मगधजनपदे जंगले मध्यदेशे ।
काश्मीरे कामरूपे प्रतिवसमवतो मालवे दक्षिणेऽपि ।
सौराष्ट्रे गौर्जरे श्रीजिनकुशलगुरोः सद्यशः स्थैर्यमेति ॥९॥
नरीनर्तियशः प्रोक्तं, मरीमर्तित्रिविष्टपम् ।
सरीसर्ति चतुर्दिक्षु, वरीवर्ति महीतले ॥१०॥
सायं प्रभाते दिन मध्यभागे, पितामहानां पदमर्चयन्ति ॥
क्षेमं च सौख्यं गुरु हर्षयुक्तं, विद्याविलासं विपुलं लभन्ते ॥११॥

जिनधरणीन्द्रसूरि रचित

२. जिनकुशलसूरि अष्टक

(सुन्दरी छन्द)

कुशलमंगलकारणयोः प्रभुः, चरणपंकजयोः शरणं सदा ।
उपगतोऽस्मि ततोऽस्मि मुदा जिन,कुशलसूरि पितामह!रक्ष माम्।१।
खरतरोत्तरवंशविभूषणः, सुजनमानसहंससुपक्षभाक् ।
परमपावन भावन हे जिन, कुशलसूरि पितामह! रक्ष माम्।२।
अतिशयैकनिधे गुणसेविधे, सुविहितात्मविधे नतसन्निधे ।
भुवनविश्रुतपुण्ययशो जिन– कुशलसूरि पितामह! रक्ष माम्।३।
विकटसंकटकोटिविघट्टनं, स्मरणमस्ति तवेह सुदर्शनम् ।
अशुभतां जयदं जयदं गुरो!, कुशलसूरि पितामह! रक्ष माम्।४।
तव पदैक सुभक्तिभृता महा-भयभवारिपराजयशोचनम् ।
भवति न क्वचिदेव विभो!जिन, कुशलसूरि पितामह!रक्ष माम्।५।
त्वयि चकासति भास्वति मे मन, कमलमत्र कथं न विकाशयेत् ।
अपि तमोभि भवेत् किमहो जिन,कुशलसूरि पितामह!रक्ष माम्।६।
जिनमताम्बुधिवर्धन चन्द्रमा, भविकपंकजबोधकृतेऽर्यमा ।

अघवनक्षयपावक भो जिन– कुशलसूरि पितामह! रक्ष माम् ।७।
प्रणवमन्त्रविराजितसेवना, त्वदभिधानपदं स्मृतिमानयन् ।
इह सुखी सघनः प्रभवेज्जिन– कुशलसूरि पितामह! रक्ष माम् ।८।

(शार्दूलविक्रीडित-छन्द)

इत्थं श्रीजिनवीरशासनमहाराज्यप्रधानो युगा–
ग्रीयोऽयं परमप्रभावक इह श्रेयस्करः श्रीकरः ।
सद्भक्त्या 'धरणीन्द्र' वृन्दमहितः पूज्यः सुखाम्भोनिधिः
दादा श्रीकुशलाह्वयो जिनपदाज्जीयात् सदेष्टार्थदः ।९।

जिनपद्मसूरि रचित

३. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

(शिखरिणी-छन्द)

सुखं सर्वा संपद् वसति पदयोर्यस्य वदने,
विनिद्रा वागीशा हृदयकमले संविदधिकम् ।
विरागः सर्वांगेष्वपि च भगवद्भक्तिरनिशं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥
निशि स्वापाधीनं निशदिनमधीनौ समयितां,
परे वाणीर्लक्ष्म्योर्निलयमपि तद्दाननिपुणौ ।
सदा यौ वर्तेते जयत इव पाथोजयुगलं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥२॥
क्षिपन्तौ तौ प्रेक्षां सरसिरुहयोर्यो मृदुलयो-
र्जपापुष्पाभासोः किशलयजिताशेषमहसोः ।
लसल्लेखालक्ष्मप्रकटितपराः श्रीसदनयोः,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥३॥
सुरेभ्यः स्वस्थेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमथो,
कदाचित्तेद्राकश्रियमपि दरिद्राय परमाम् ।
सुरद्रुं त्यक्तोपासत इति बुधौ यौ भुवि गतौ,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४॥

सुरैरास्वाद्यन्ते परमगुरुधर्मोपदिशत:,
सदा कामं पीतामृतरसवरांशैरपि गिर: ।
श्रुता यस्य श्रेय: श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधियां,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥५॥
निधिस्सर्वाश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदां,
मृदुस्निग्धौ शोणानुपचितनखौ गूढघुटिकौ ।
समानौ प्रोत्तुंगप्रपदपदशाखाविलसितौ,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥६॥
ययोरर्च्चा सूते धनसुखधरा-धामरमणि:,
शरीरारोग्यत्वं विनयनय-विद्या-निपुणताम् ।
गुणानौदार्यादीनपि तनयलक्ष्म्याश्रितनृणां,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥७॥
भयंकारागारामयसमरपारीन्द्रफणभृ-
न्महापारावारद्विरदवनवैश्वानरभवम् ।
न डाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं यत्स्मरणत:,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥८॥
इत्थं श्री 'जिनपद्मसूरि' रचितं दिव्याऽष्टकं सद्गुरो:,
पुण्यं मन्त्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंसनम् ।
भक्त्या य: पठति प्रभातसमये सर्वत्र तस्य ध्रुवं,
वश्या भूपतयो भवन्ति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ॥९॥

ज्ञानतिलक रचित

४. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

(छन्द त्रिभंगी)

ो भूमीपृष्ठे पृथुलवरिष्ठे गाढगरिष्ठे भातितरां,
: कृच्छ्रं कक्षं मौर्व्याध्यक्षं सर्वसमक्षं दातितराम् ।
ुर्वन्निरपायं सौख्यन्तरायं छेदितमायं बुद्धिगुरुं,
वारंवारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥१॥

यं दर्पकरूपा मधुरसकूपाः शश्वद् भूपाः सेवन्ते,
यं नामं नामं सदा प्रकामं पूरितकामं देवं ते ।
भास्वद्वेषा सुषमारेखा दृप्यल्लेखा विश्वगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥२॥
येन च धनदावं प्रज्वलदावं संभृतभावं पुरं कृतं,
यन्निशितं शस्त्रं मृदुशतपत्रं पत्रीपत्रं विषममृतम् ।
धरणीगमनानां त्वद्ध्यानानान्तरमानानां साधुगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥३॥
यस्मै भूहरये दीप्त्या हरये भयगजहरये भवतु नमः,
कामितफलकर्त्रे अमरविहर्त्रे जगतो भर्त्रे पुनर्नमः ।
श्रीकरणप्रभवे मुनिताप्रभवे विभुताविभवे सफलतरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥४॥
यस्माद् गुरुनाम्नो बहुगुणधाम्नस्तव गुणदाम्नो नुः परमा—
न्नेशुः सपायाः सदान्तराया दुःखनिकाया गतभूमात् ।
स भवति श्रेयो यस्माच्छ्रेयो बहुलप्रेयो धर्मगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥५॥
यस्य श्रीस्तूपाः पूता यूपा इव सद्रूपा भुवनतले,
सत्केतूलंगा लसत्सुरंगा नानाभंगा सन्त्यखिले ।
चन्दनघनसाराद्याश्रितसारा गन्धोदाराः शान्तगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥६॥
यस्मिन् मार्त्तण्डे तेजश्चण्डे भारतखण्डे सामुदिते,
तम इव न व्याधि क्वेव दुराधिः स्वान्तसमाधिः स्यात् प्रीते ।
न च बन्दी रोगा न च दुर्योगा भासुरभोगा भूमितरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥७॥
करुणारससागर! नूतननागर! जनकृतजागर! शुभशालिन्!,
देवेष्टं पूरय दुःखं दूरय शत्रुश्चूरय मुनिमालिन्! ।
भक्त्या भक्तानां त्वत्सक्तानां त्वद्रक्तानां सुखितमरुं,

सुरैरास्वाद्यन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,
सदा कामं पीतामृतरसवरांशैरपि गिरः ।
श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधियां,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥५॥
निधिस्सर्वाश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदां,
मृदुस्निग्धौ शोणानुपचितनखौ गूढघुटिकौ ।
समानौ प्रोत्तुंगप्रपदपदशाखाविलसितौ,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥६॥
ययोरर्च्चा सूते धनसुखधरा-धामरमणिः,
शरीरारोग्यत्वं विनयनय-विद्या-निपुणताम् ।
गुणानौदार्यादीनपि तनयलक्ष्म्याश्रितनृणां,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥७॥
भयंकारागारामयसमरपारीन्द्रफणभृ-
न्महापारावारद्विरदवनवैश्वानरभवम् ।
न डाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं यत्स्मरणतः,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥८॥
इत्थं श्री 'जिनपद्मसूरि' रचितं दिव्याऽष्टकं सद्गुरोः,
पुण्यं मन्त्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंसनम् ।
भक्त्या यः पठति प्रभातसमये सर्वत्र तस्य ध्रुवं,
वश्या भूपतयो भवन्ति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ॥९॥

ज्ञानतिलक रचित

४. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

(छन्द त्रिभंगी)

यो भूमीपृष्ठे पृथुलवरिष्ठे गाढगरिष्ठे भातितरां,
यः कृच्छ्रं कक्षं मौर्व्याध्यक्षं सर्वसमक्षं दातितराम् ।
कुर्वन्निरपायं सौख्यन्तरायं छेदितमायं बुद्धिगुरुं,
तं वारंवारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥१॥

यं दर्पकरूपा मधुरसकूपाः शश्वद् भूपाः सेवन्ते,
यं नामं नामं सदा प्रकामं पूरितकामं देवं ते ।
भास्वद्वेषा सुषमारेखा दृप्यल्लेखा विश्वगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥२॥
येन च धनदावं प्रज्वलदावं संभृतभावं पुरं कृतं,
यन्निशितं शस्त्रं मृदुशतपत्रं पत्त्रीपत्रं विषममृतम् ।
धरणीगमनानां त्वद्ध्यानानान्तरमानानां साधुगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥३॥
यस्मै भूहरये दीप्त्या हरये भयगजहरये भवतु नमः,
कामितफलकर्त्रे अमरविहर्त्रे जगतो भर्त्रे पुनर्नमः ।
श्रीकरणप्रभवे मुनिताप्रभवे विभुताविभवे सफलतरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥४॥
यस्माद् गुरुनाम्नो बहुगुणधाम्नस्तव गुणदाम्नो नुः परमा—
न्नेशुः सपायाः सदान्तरााया दुःखनिकाया गतभूमात् ।
स भवति श्रेयो यस्माच्छ्रेयो बहुलप्रेयो धर्मगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥५॥
यस्य श्रीस्तूपाः पूता यूपा इव सद्रूपा भुवनतले,
सत्केतूलंगा लसत्सुरंगा नानाभंगा सन्त्यखिले ।
चन्दनघनसाराद्याश्रितसारा गन्धोदाराः शान्तगुरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥६॥
यस्मिन् मार्त्तण्डे तेजश्चण्डे भारतखण्डे सामुदिते,
तम इव न व्याधि क्वेव दुराधिः स्वान्तसमाधिः स्यात् प्रीते ।
न च बन्दी रोगा न च दुर्योगा भासुरभोगा भूमितरुं,
तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥७॥
करुणारससागर! नूतननागर! जनकृतजागर! शुभशालिन्!,
देवेष्टं पूरय दुःखं दूरय शत्रुश्चूरय मुनिमालिन्! ।
भक्त्या भक्तानां त्वत्सक्तानां त्वद्रक्तानां सुखितमरुं,

तं वारम्वारं सेवे स्फारं सच्छ्रीकारं कुशलगुरुम् ॥८॥

॥ कवित्वम् ॥

विघ्नद्रुमगजराज! रुचिरविरुदानां धारय,
कलियुगसुरघटतुल्य! विपुलविद्यानां पारय ।
विजयहर्षभृतां नृणां विजयवर्द्धनसत्कारां,
विदधच्चरितदेवं धरणितलजीवाधाराम् ॥
जिनचन्द्रसूरिपट्टे स्थितस्तावद् विजयस्व द्रुतम् ।
यावत् सुराद्रिसूरौ त्वकं 'ज्ञानतिलक' दो विश्रुतम् ॥९॥

धर्मवर्धनोपाध्याय रचित

जिनकुशलसूरि स्तोत्र

(शार्दूलविक्रीडित - छन्द)

यो नप्तृनिव सेवकानपि सदा बर्भर्ति कुर्वन्मुदं,
विच्छिन्दन् विपदं ददच्छुभपदं सम्पादयन् सम्पदम् ।
मन्यन्ते च यकं पितामहतया विश्वेत्र विश्वे जनाः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥१॥
येऽरण्येषु पिपासवः प्रपतिता दध्युर्गुरुं मानसे,
तानागत्य वितत्य मेघमतुलं वाः पाययामास यः ।
योऽद्याप्येष उदन्यतो बहुजनान् कं धापयेद् ध्यानतः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥२॥
लोलोल्लोलतिमिंगिलाकुलतमे सिन्धावगाधे भृशं,
मज्जन्तं प्रविलोक्य सेवकगणं सत्त्रा वहित्रेण वै ।
यास्तूर्ण तमतीतरत् सकुशलं दोर्भ्यां गृहीत्वा दृढं,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥३॥
वारीशोत्तरणे रणे प्रहरणे नागे नगे पन्नगे,
झंझायां विकटे झषे झषकुटे घट्टेऽरघट्टेऽवटे ।
ध्यानाद् यस्य मनागपीह लभते नो इति-भीती नरः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥४॥

त्वं चेदेनमनेनसे सकृदपि स्नेहादसेविष्यथ,
रामेवैत्य रमा मनोरमतमा त्वां पर्य्युपासिष्यत ।
इत्यादिश्य वयस्यमिभ्य मनुजा यस्यांन्हिमर्च्चन्त्यहो?,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥५॥
धन्या जैतसिरीप्रसूर्जनयिता मन्त्री च जेल्हागरो,
यस्मै जन्म ददौ ददौ यतिगुणान् श्री जैनचन्द्रो गुरुः ।
व्युत्पन्नाय तु सूरिमन्त्रसहितं सौवं पदं दत्तवान्,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥६॥
श्रेयः श्रेयस ओजसा शुभयशा यः स्वर्गमध्यासितो,
नेदीयानिव हर्षयत्यनुदिनं भक्तान् दवीयानपि ।
यो लोके कमलाकरान् रविरिव प्रौढप्रतापोद्यतः,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥७॥
दद्यादद्य धनीयते बहुधनं स्त्रीकाम्यते सुस्त्रियं,
यो भक्ताय जिगीषते च विजयं सुत्यै सुतान् दासते ।
यत्कीर्तिः प्रसरीसरीति सततं कौ कौमुदीव स्फुटं,
सोऽयं वः कुशलानि जैनकुशलश्चर्कर्त्तु विद्याचणः ॥८॥
सत्काव्याऽष्टकमष्टधी गुणयुतोऽदः पूतरूपः पटुः,
सच्चेता उपवैणवं ह्यदरहर्यः सप्तकृत्वः पठेत् ।
तस्मै श्रीविजयादिहर्षगुरुतां 'सद्धर्मशीलो'दयो,
दादाति प्रभुरेष जैनकुशलः साक्षादिव स्वर्द्रुमः ॥९॥

रत्नसोम रचित

६. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

श्रीदेवराजपुरमण्डनमाप्तपूज्य,
आनन्दचन्द्रजलराशिमनन्तलाभम् ।
श्रीजैनचन्द्रगुरुपट्टसुवर्णशैल,
सत्पुष्पफुल्लितसुवासववविष्टराभम् ॥१॥
वन्दे नित्यं सुजिनकुशलं पापवन्ह्यम्बुतुल्यं,

लक्ष्मीवल्लीजलधरसमं रोगरेवाशुगाभम् ।
यस्तानन्ताः खखनखमिता बिभ्रदेषाऽपि लोला,
पारं नासादयति कथयन् सद्गुणानां कुतोऽमी।।२।।
भीष्माकारस्सकलजनतास्त्रासयन् भिल्लतुल्यो,
नभ्राड्दुष्टं रसितमसितं चक्रमित्थं विधाय ।
नीरं दत्ते जिनकुशलगुरुनिर्मलस्याम्बुजस्य,
साम्यं कुर्यात्कथमथघनो ग्रीष्मदत्तोदकस्य ।।३।।

द्वासप्ततिस्तास्सुगुरोः प्रपूर्णाः, कलामनित्यं महिषोडशापि ।
अेवं सचिन्तस्य निशाधिपस्य, च्छायाकदम्बाद्वदने बभूव ।।४।।
किं मन्त्रतन्त्रजटिकौषधियन्त्रमुख्यैः,कार्यं यदा भवति चेत्तव सूरिराजः।
प्रोद्यत्प्रतापसहितस्तमसोपहन्ता,किं दीपकैरहनि चेदुदिते दिनेन्द्रः?।।५।।

चेतश्चेतस्ततो नैव, कार्यमार्यजनैकदा ।
ध्येयोमेयो गुणैः सिद्धि प्राज्यसाम्राज्यदः प्रभुः ।।६।।
तेषामशेषामाधत्ते, रामामामापहः प्रभुः ।
गेहे स्नेहेन ये कुर्युः, शुद्धं ध्यानं गुरोस्सदा ।।७।।
जिनकुशलगुरूणां बुद्धितः सद्गुरूणां,
द्युतिजिततरणीनां दानचिन्तामणीनाम् ।।
क्रमकजपरिचर्या यो विधत्तेतिवर्या,
स भवति नरनाथः सिद्धिलक्ष्मीसनाथः ।।८।।

कष्टकंदलमष्टकं मयाऽकारि खरतरगच्छसद्गुरोः ।
ईप्सितप्रदमनल्पसौख्यदं, 'रत्नसोम' समसद्य शोभदम् ।।९।।

रामविजयोपाध्याय (रूपचन्द्र) रचित

७. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

(शिखरणी छंद)

मिथः प्रश्ने पुसां शुचिरसमयात्संगति मतां,
यदीयं नामैव प्रणगदितमादौ सुखकरम् ।
तथा पत्रप्रेपः लिखितमपि तावत्सुवचसा,

स चायं जीयाच्छ्रीजिनकुशलसूरिर्गुरु-गुरुः ॥१॥
यदीयानुक्रोशात्सकलपरिवारेषु कुशलं,
गिरौ दुर्गे मार्गे विकटमटतां चापि कुशलम् ।
दिवा वा नक्तं वा भवतु कुशलं सेवक नृणां,
सहाये सत्यस्मिन् जिनकुशलसूरौ गणगुरौ ॥२॥
यतो जन्मस्थानं भवति गुणिनामुत्तमनृणां,
ततोऽयं देशानां खलु नरसमुद्रो मरुरिति ।
जनोक्तिः सत्येयं यदिय समीयाणाख्यनगरे,
समुत्पत्ति लेभे खरतरगणाधीश्वरगुरौ ॥३॥
मतं जैनं ह्येषः प्रथयति पुरोः द्योतयति च,
स्वमत्या मत्तेति सुहृदि जिनचन्द्रोपि सुगुरोः।
पदं प्रौढं यस्मै गणधरपदार्हाय ददेदे,
स चायं श्रीपूज्यो जिनकुशलनामा विजयताम् ॥४॥
विवेकः साधूनामशुलभ इहासुभृतव्रतां,
शतैः साध्वाभासै सह विहरतामेकविधया ।
ततो वन्हिध्मातं कनकमिव संधाय मनघं,
वदित्वां वन्दिष्ठेष्टमिव गुरुराजः स भवताम् ॥५॥
महावातोद्घातोच्छलतिजलनिर्द्धूमविदलत्,
ब्रुडत्पोतं धृत्वा निजकरतले कूलमनयत् ।
स्मृतं शास्त्रं वाख्यानमपि सदसि स्वेदकलितः,
सपाया वा पायाज्जिनकुशलसूरि सुविहितः ॥६॥
पुरेषु ग्रामेषूपरि विमलशैलाह्वयगिरिः,
प्रतिष्ठायामासौ यतमकृतमार्हत्प्रतिकृतौ ।
अकार्षीत् सद्यापि प्रकटित महिम्नो स्तुतितरां,
ततोऽत्र प्रत्यक्षो जिनकुशलसूरेर्हि महिमा ॥७॥
दिवं यातोप्येषः न्यतरनररूपेण गहने,
तृषाक्रान्तानां स्वासयति सलिलं पाययति च ।

स्वरूपं स्वप्नेऽपि प्रकटयति भक्त्या नतजनान्,
सहायोतो नित्यं जिनकुशलसूरिर्भवतु नः ॥८॥
इत्थं श्रीजिनशासने खरतरं गच्छन्नयत्युन्नतां,
सान्निध्यं जनयञ्जिनादिकुशलः सूरीश्वरः सेव्यताम् ।
एतद्गोत्रज 'रूपचंद्र' कविना काव्याष्टकं कीर्त्तितं
कण्ठाग्रे क्रियतां भवंतु भवतां तेनामितं सम्पदः॥९॥

लक्ष्मीवल्लभोपाध्याय रचित

८. जिनकुशलसूरि अष्टक

(स्रग्धरा छंद)

लक्ष्मीसौभाग्यविद्यासुतनयललनाभोगनैरुज्य योगा–
दानन्दवृन्दकन्दप्रसवजलदभः पापसन्तापहन्ता ।
सल्लोकास्तोकशोकप्रशमननिपुणप्रौढभास्वत्प्रतापः,
सश्रीमान् भूरिशक्तिर्जिनकुशलगुरुः स्यान्मनोऽभीष्टदाता ॥१॥
श्रद्धासक्तातिभक्तप्रणुतसुरनरव्रातकोटीरकोटी-
कोटीरुग्रंजितांन्हिं मनुजनवृषभैर्ध्यायमाना निजांन्हिम् ।
श्रीमज्जैनेन्द्रपट्टं रुचिरतरतपस्तेजसा भासयन्तं,
हृत्पद्मे श्रीजिनादिं कुशलगुरुवरं सर्व्वदा चिन्तयामि ॥२॥
उच्चैः पद्मासनस्थं वरकनकरुचिं दत्तनासाग्रदृष्टिं,
पूज्यं श्वेताम्बराणां धृतमुखववसनं साधुधर्म्मध्वजांकम् ।
वक्षःसन्यस्तसेव्येतरकरकमले जापमालां दधानं,
संसेव्यं शिष्यवृन्दैर्जिनकुशलगुरुं चेतसा संस्मरामि ॥३॥
वर्षे व्योमाग्निशक्तीन्दुमित इह जनिः श्रीसमीयाणकेऽभूत्,
यस्य श्रीजैनचान्द्री मुनिजलधिमितेब्दे समासीच्च दीक्षा।
द्वीपद्वीपप्रमेब्दे लभत निजगुरोः पट्टमाप्तोत्तमो यो,
दुर्ग्गे श्रीदेवराजे सुरपदमगमन्नन्दसिद्धिप्रमे च ॥४॥
तं वन्दे श्रीजिनादिं कुशलगुरुवरं देवराजाख्य-दुर्ग्गे,
सत्पुण्यस्तोमयूपप्रकटितमहिमा स्तूपसत्स्थानसंस्थम् ।

भास्वद्दिव्यानुभावं यम-नियमभृतां सार्वभौमं यतीनां,
भक्तवृन्दैरुपास्यं खरतरगणपं वत्सलं सेवकानाम् ।।५।।
सौरभ्योद्यच्छिताभ्रप्रवरमृगमदस्फारकाश्मीरजन्मा,
श्रीखण्डाम्भःसुघर्षप्रभवपरिमलापूरपंतेन भक्ताः ।
पुष्पैर्दीपैः सुधूपैः शुभतरफलदैः श्रीफलैर्मिष्टभोज्यैः,
पादाब्जं स्नानपूर्व जिनकुशलगुरोः पूजयन्तीह धन्याः ।।६।।
नो व्याधिर्नैव चाधिर्न्न च कुमतितततिर्नो ग्रहार्त्तिर्न चेति,
नो दौर्भाग्यं न दौस्थ्यं न रिपुकरिहरिव्यालभूपालभीतिः ।
नो रक्षः क्षेत्रपालोड्डमरकरमहाडाकिनीदोषपोषः,
स्वप्नेऽपि स्यात्कदाचिज्जिनकुशलगुरोः पत्कजाभ्यर्चकानाम् ।।७।।
बद्धानां बन्धमोक्षं पथितृषितनृणां नीरपूरं प्रदत्ते,
मार्ग मार्गच्युतानां स्मृत इह सहसा सार्थ-सार्थ च सत्रे ।
निःपुत्राणां च पुत्रान् मतिविनययुतान् निर्द्धनानां धनौघं,
पोतस्थानं च पारं जिनकुशलगुरोः क्षेमलाभेन सार्द्धम् ।।८।।
इत्थं कौटिकसंज्ञया किल पुरा ख्यातस्य गच्छस्य राट्,
पश्चाद्वादजयात्पुनः खरतर प्राप्ताभिधानस्य यः ।
पूज्यश्रीभरयुक् जिनादिकुशलश्चन्द्रस्य चान्द्रे कुले,
श्री 'लक्ष्म्यादिमवल्लभ' स्तुत गुणो भूयात्सतां श्रेयसे ।।९।।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

९. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

र.सं. १६५९

(द्रुतविलम्बित छन्द)

नतनरेश्वरमौलिमणिप्रभा, प्रवरकेशरचर्चितपद्मयुगम् ।
मरुषु मुख्यगडालयमण्डितं, कुशलसूरिगुरुं प्रयतः स्तुवे ।।१।।
कति न सन्ति कियद्वरदायिनो, भुवि भवान् सुगुरुर्मयिकाश्रितः ।
सुरमणिर्यदि हस्तगतो भवेत्, किमपरैर्किल काचकपर्दकैः ?।।२।।
कठिनकष्टसमाकुलवर्त्मनि, प्रवरसौख्यसमन्वितसद्मनि ।

मम हृदि स्मरणं तव सर्वदा, भवतु नाम जपस्तु मुदाप्तये ।।३।।
विकटसंकटकोटिषु कल्पिता, तनुभृतां विषमा नियमा समा ।
सुगुरुराज! तवेप्सित दर्शना-दनुभवन्ति मनोरथपूर्णताम् ।।४।।
नृपसभासु यशो बहुमानतां, विवदमानजने जयवादताम् ।
सुपरिवार - सुशिष्य - परम्परा— स्तव गुरो सुदृशस्फुरतेतराम् ।।५।।
न खलु राजभयं न रणाद्भयं, न खलु रोगभयं न विपद्भयम् ।
न खलु बन्दिभयं न रिपोर्भयं, भवतु भक्तिभृतां तव भूस्पृशाम् ।।६।।
अपर-पूर्व - सुदक्षिण- मण्डले, मरुषु मालवसन्धिपु जंगले ।
मगध - माधुमतेष्वपि गुर्ज्जरे, प्रतिपुरे महिमा तव गीयते ।।७।।
मम मनोरथकल्पलतामतां, कुशलसूरिगुरो! फलिताधुना ।
प्रबलभाग्यबलेन मया रयात्, यदमृतं ददृशे तव दर्शनम् ।।८।।
शशिधर-स्मर-बाण-रसं क्षिति- प्रमितविक्रमभूपतिसंवति ।
'समयसुन्दर'-भक्तिनमस्कृतः, कुशलसूरिगुरोर्भवताच्छ्रिये ।।९।।

१०. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

(आर्या छन्द)

जिनकुशलं सूरीशं, रत्नत्रयप्रभृतिवारीशम् ।।
गायामि मुनिगणेशं, वागनवद्यैः शुभैः पद्यैः ।।१।।
पंचे पंचम अरके, विषमे घनतापकारके तप्तान् ।
सुरतरुरिव यो जीवान्, सुखयति सच्छायमधिक ददः ।।२।।
यत्कीर्त्तिप्रस्फूर्त्या, विचित्रमपि चित्रितं हि भुवनतलम् ।
विशदमिव भाति सर्वं, तं सततं कीर्तयामि हितात् ।।३।।
योऽरण्येषूदन्यत, इह चापः पाययत्यहो अभिकान् ।
असमयजातघनौघं, विकुर्व्य विद्युत्स्तनितमिश्रम् ।।४।।
धनी धनीरपि मनुजः, सुतीरपि स्यात् सुती परमभक्तः ।
सुखी सुखीरपि नित्यं, भवतः शुभदृष्टिसृष्टिचयात् ।।५।।

११. जिनकुशलसूरि स्तोत्र

(स्रग्धरा छन्द)

पद्मा - कल्याणविद्या - कमलपरिमलस्फुर्तिभानुप्रकाशं,
प्रीतिस्फीत्याभिनुत्य क्रमकमलमिलन्मानवामर्त्यनागैः ।
प्रौढाचार्यावलीभिः सदतिशयकृते ध्येयज्ञेयं स्वभाव-
स्त्राता देरावरे श्रीजिनकुशलगुरो! स्तूपरूपप्रसीद ॥१॥
संघे ग्रामे पुरे वा सकलजनपदे राजवर्गे कुटुम्बे,
गच्छे संघाटके वा प्रमुदितमनसा वासरे वा निशायाम् ।
यन्नामस्मर्यमाणं भवति भयहरं सर्वसंपत्तिकारी,
श्रीमान् दाता प्रतापी जिनकुशलगुरुर्न त्वदन्योस्ति लोके ॥२॥
सर्वक्ष्मापालमालापरिषदि विबुधश्रेणिवेणीसभायां,
वादव्याख्यानगोष्ठीसुललितवचनव्यासविन्यासजन्यम् ।
सौभाग्यं त्वत्प्रसादाद्विमलशशिकलाकान्तिकीर्तिप्रसादात्,
त्रैलोक्यख्यात सूरेर्जिनकुशलगुरो! वांछितं मे प्रदेहि ॥३॥
सामर्थ्य सर्वशास्त्रे स्ववचनपटुतां तार्किकत्वं कवित्वं,
निष्णातं शब्दशास्त्रे समयनिपुणतां चारुनैमित्तिकत्वम् ।
ईहध्वं जागरूकं यदि महिमकरीं निर्मलां सर्वविद्यां,
सेवध्वं तत्त्रिशुद्ध्या जिनकुशलगुरुं कामिते कल्पवृक्षम् ॥४॥
अंगे बंगे कलिगे मगधजनपदे गुर्ज्जरे मालवे वा,
सौराष्ट्रे मेदपाटे मरुषु किमपरं भूर्भुवः स्वस्त्रयेऽपि ।
ग्रीष्मे निर्नीरदेशे सलिलवितरणाभीष्टदानप्रसूता,
कीर्तिस्ते विस्तृतेयं जिनकुशलगुरो! पावयत्येव विश्वम् ॥५॥
सिद्धिः स्वपाणिपद्मे विलसति हियया स्वान्यसौख्योदयः स्याद्
भाले सौभाग्यलक्ष्मीरधिवसति ययोत्सर्पति श्रीरभीष्टा ।
बुद्धिः सा कापि चित्ते स्फुटति किल ययाकृष्यते शास्त्रदाक्ष्यं,
त्वद्भक्तानां नराणां जिनकुशलगुरो! दुर्ल्लभं नैव किंचित् ॥६॥
वार्धौ वायुप्रवेगप्रजनितवहनोत्पातसंपातमध्ये,

ज्वालाजिव्हे कराले ज्वलति च परतस्तस्करोपद्रवे वा ।
क्ष्मापाले क्रोधरुद्रे हरिकरिभुजगाभोगरोगादियोगे ।
ध्यायन्तस्त्वत्प्रभावं जिनकुशलगुरो! नैव कष्टं लभन्ते ॥७॥
सूरीन्द्र - श्रीसुधर्माप्रभवविदधताचार्यवर्यानुधुर्य-
मासाद्योद्यत्प्रभावं विशदखरतरश्लाघ्यगच्छेश्वरत्वम् ।
सम्यग्ज्ञानक्रियाभ्यां जिनमतमतुलं प्रौढिमारोप्य रुच्यां,
प्राप्तः स्वर्गश्रियं श्रीजिनकुशलगुरुर्वांछितं वः पिपर्तुः ॥८॥
श्रीजिनकुशलगुरुणा-मिदमष्टकमिष्टसिद्धिबुद्धिकरम् ।
यः पठति गुणति सततं, सः स्यादभोक्ता च वक्ता च ॥९॥

राजहर्ष रचित

१२. जिनकुशलसूरि स्तम्भाष्टोत्तरशतस्थान नाम गर्भित - स्तवन

वंदीजइ सद्गुरु वरदाई, श्री जिनकुशल सूरि सिरदार ।
महियल मांहे मोटइ दावई, दीपइ जिम पूरव दिनकार ॥व०१॥
मूल थुम्भ देराउर महियल, गुण गिरुओ श्रीगाम गडाल ।
परचा पूरई परतिख पगि पगि, पर उपगारी परम दयाल ॥व०२॥
महिमावंत अधिक मुलताणइ, उच्च अनोपम छइ अधिकार ।
सिद्धपुरइ समरुं सचवायउ, नयर किरहोरइ नवसरहार ॥व०३॥
जेशलमेर सकल जोधाणइ, नागोरइं प्रणमइ नरवृंद ।
मेदनीतटइ देखी मन उल्हसइ, देवलवाड़इ जाणि दिणन्द ॥वं०४॥
उग्रसेनपुर पाटल अलवर, अमरसरइं अउरंगाबाद ॥
नाडुलाई वर्द्धनपुर नवहर, उद्योतनपुर अहमदाबाद ॥वं०५॥
सांगानेर विहार सुशोभित, मालपुरइ मनमोहन रूप ।
जयतारणि अरियण सहु जीपइ, भाव धरी नइं वन्दे भूप ॥वं०६॥
किसनगढ़इ कल्पतरु कहीयइ, राजगढ़इ चंपा रतलाम ॥

समियाणइ सोझित अति सोहइ, साचौरइ सारे सब काम ।।वं०७।।
सोवनगिरि मंडण सीरोही, नूतनपुर नित चढ़तउ नूर ।
पूजउ शत्रुंजइ पद-पंकज, सूरति वंदु ऊगत सूर ।।वं०८।।
गिरनारइ तुझ गुण सहु गावइ, जावइ दुख दोहग जंजाल ।
दीव नगर देख्या तुझ दरसण, मांगि फलइ मनोरथ माल ।।वं०९।।
ईडर थूम्भ अनोपम ओपइ, आसोपइ सुरतरु अवतार ।
पुर खंभाइत पाटण पाली, दिल्ली गढ़ दउलति दातार ।।वं०१०।।
मांगलउर वीरमपुर मनहर, अंजारइ मन अधिक उल्हास ।
भली वात करइ भुजनगरइ, मांडवी मंदिर महिम निवास ।।वं०११।।
लखपति महिमपुरी लाहौरइ, वंदइ कर जोड़ी वड़गात ।
भेहरइ मांहे दालिद्र भंजइ, अजमेरइ मोटी अखियात ।।वं०१२।।
पूगल जंगल पूनासर प्रभु, पहुँचाड़इ सब बात प्रमाण ।
डिंडूआणइ आनइ सहु डेरइ, सेरगढई सबल उनमाण ।।वं०१३।।
फतेपुर बहु फल फुलइ करि, पूजइ गुरु पद पंकज सार ।
भाव भगति भटनेर भली विधि,फलवर्द्धिपुर कलियउ सहकार।।वं०१४।।
मइडीचक्क सुथान मरोटइ, अमरकोट मानइ सहु आण ।।
सम्बल कम्बल मंइ सद्गुरुना, सेवइ पदयुग चतुर सुजाण ।।वं०१५।।
दुख भंजन कहीयइ देवीझर, ग्वालेरइं कहीयइ गुण गेह।
सलहीजइ सिरवाड़ी सिजरुंइ, देखी विकसइ सारी देह ।।वं०१६।।
विक्कमपुर वड़ली बीजापुर, खीमसरइ प्रणम्यां नितु खेम ।
बाहड़मेरु नूर विलासइ, पहुकरणइ पाल्हणपुर प्रेम ।।वं०१७।।
चन्द समान कहुं चंदेरी, तोड़इ वंच्छित द्यइ ततकाल ।
कुंभलमेरु सकल सुखकारण, सहर रिणी मांहे सुविशाल ।।वं०१८।।
सरसइ धन वरसइ सेवक धरि, लूणकरणसर लील विलास ।
खरी बात कहां खेजड़लइ, पचीयाखइ नितु पुण्य प्रकाश ।।वं०१९।।
देवीखेड़इ दुसमण फेरई, सइंभर पूरइ सगला थोक ।।
झुंठइ रायपुरइ जस झलकह, राधनपुर द्यइ वंछित थोक ।।वं०२०।।

मउज करइ सेवक नइं महेवइ, गुन्दवचइ सद्‌गुरु गुणवंत ।
सारणपुर सुणीयइ सेत्रावइ, जयतपुरइं जुगवर जयवंत ।।वं०२१।।
बीलाड़इ वंदु बडलु दइ, पीपाड़इ जस प्रबल पडूर ।
कामित दायक कापरहेडइ, दुखीयां दुख गमाड़इ दूर ।।वं०२२।।
लाभ घणउ द्यइ सुगुरु लवेरइ, बालरवइ तिमरी सुखवाल ।
कीरति अधिकी कुंडकी कहीयइ, रोहिठ पिण सुणीय उरहवास।।वं.२३।।
महर करी महाजन प्रतिपालइ, संभालइ निज सेवक आय ।
सुप्रसन्न होवइ सांनिधकारी, पड़िया अटवी पाणी पाय ।।वं०२४।।
आसति अधिकी जे मन आणी, चरण कमल सेवइ चित लाय ।।
तिहां घरि नव निधि होवइ ततखिण,
कलिमे निरमल सुजस कहाय ।।वं०२५।।
बड़ दरबारइ दोषी दुरजन, करी न सकइ कांइ भूंडउ काम ।।
सद्‌गुरु सुनिजरि करी सेवकनी, महीयल मांहि वधारइ नांम ।।वं.२६।।
पूरब दक्षिण उत्तर पश्चिम, जोति सकल त्रिहुँ लोकइ जास ।
अेक अनेक प्रकारइं इणि जुगि, ईहक जननी पूरइ आस ।।वं०२७।।
तीर वहइ जिहां वखतर तूटइ, तेज असम झलकइं तरवारि ।।वं.२८।।
पाठक ललितकीरति सुपसायइ, 'राजहरष' वंदइ धरि राग ।
अट्‌ठोत्तर सउ नामइं अद्‌भुत, सुख संपति होवइ सोभाग ।।वं०२९।।

दुरंग रचित

१३. जिनकुशलसूरि गीत

(गीत जाति सपक्खरौ)

ऊंची तलाई री पाल नाल पाखती वाघोड़ा वाली पीपलारां वृख हेठै
जैरै पूठै नव चौक्यौ थान थूम पादुका अधिक नूर
दु:ख दूर हरै वानूं दादौ श्री जिनकुशलसूर
वीकाणै रौ धणी राजा सुजाणै नूं वाचा दीधा
अरि हर थट्टां आय उठाय चौट सू चुकाय कोट आणीया

कमधज्जांउ वरदाउ, गुरु खरतर सदाउ वडाउ
घूघरां रा घात झूलां ऊंठां असवार पापां वागां वण साह
केसर कचोर घोर न्हाय धोय पूजा करै अंग मे उछाह
गंजी खाना मिसटानां खीचड्यांरा चरु चढै
चूंटाला चूरम्मा जीमै प्याला कसूंबा रा पीयै चाखता तंबोल
दादा थांरै दरबार सदा रंगरोल रीझां
संघा मै वडाल संघ देख करामात केंई जात्री आवै देसांतरा
कहै 'दुरंग' सेवक जिहांरी जपो जपमाल ऊंची तलाई री पाल

उदयरत्न रचित

१४. जिनकुशलसूरि - घग्घर निसांणी

(र सं १८७४)

सद्गुरु गच्छनायक वंछितदायक श्रीजिनकुशल सूरिन्दा है ।
जाके गुण गावत अति सुख पावत मेरा मन उलसन्दा है ।।
थिर थुंभ गडाले पख उजवाले मुनिजन लोक मिलन्दा है ।
पूनम सोमवारे सांझ सवारे इण विध पूज रचन्दा है ।।१।।
गुरु पादुका निरखत सब मन हरखित प्रथम सुन्हवण करन्दा है ।
घस केसर चंगी रचते अंगी बरग बीच फावन्दा है ।
केतकि फूल फूले गुलाब अमूले सुशुभ सोरंभ बासन्दा है ।
कृष्णागर आगर मेली तग्गर धूप सुगन्ध खेवन्दा है ।।२।।
मोली की वरती घृत से झरती मंगल दीप जगन्दा है ।
वर अक्षत थाल भरी सुविशाल सूपूजत्रय पूरन्दा है ।।
विदाम अखोड़ा श्रीफल जोड़ा गुरु चरणे चाढन्दा है ।
भर मोदक थाला अतिहि रसाला नैवेद्य बहु ढोवन्दा है ।।३।।
अब आरती करियां तब तिण बिरियां झल्लर शंख वजन्दा है ।
करनाला कुहके मद्दल गहके नग्गारा घुरन्दा है ।।
बीच झांझरताला ताल कंशाला सरणाई बोलन्दा है ।

भेरी निफाई सखरी आई जाण की घन गाजन्दा है ।।४।।
गुरु भावना भावत गंधर्व आवत खूब बणाव बनन्दा है ।
पंचरंगी पगड़ी बंधी तकड़ी जरकस पेच लहन्दा है ।।
वागा अति चंगा पहर सुरंगा उत्तरासंग सझन्दा है ।
कर मस्तक टीका अतिहि नीका विच तन्दूल ओपन्दा है ।।५।।
मुक्ताफल माला गलबिच डाला करणाभरण ठवन्दा है ।
कर कंकण पहरा हूआ गहरा पग घूघर घमकन्दा है ।।
मन आपण उलट्टां भरियां थट्टां नाटक खेल मचन्दा है ।।६।।
तहां केई छोगाला फिरे विचाला सीरणियां वाटंदा है ।
केई मिलकर बाला हुय मतवाला कौतूहल देखन्दा है ।।
केई गणधर मुनिवर बैठा सुखकर केई ध्यान ध्यावन्दा है ।
केई थुंभे पासे आय उल्हासे गुरु कीरति भाखन्दा है ।।७।।
तैं संयमधारी दोष निवारी सुरपदवी पावन्दा है ।
तैं सब से न्यारा किया विचारा रन बन वास रहन्दा है ।।
तैं माया जोड़ी सब ही छोड़ी माया मांही झिलन्दा है ।
तैं गुणदा आगर सेवित नागर सुरतरु जेम फलन्दा है ।।८।।
तूं क्षम्माधारी है अवतारी तेरा जस्स वधन्दा है ।
तूं गच्छ आधारा सांनिधकारा भीड़ पड़्या आवन्दा है ।।
तूं परतिख देवा करुँ तुम सेवा जिन शासन दीपन्दा है ।
तूं हाजर ऊभा अपने थूंभा समर्या साथ दियन्दा है ।।९।।
तूं डायण सायण रोहिण रंकण ताकूँ वेग टालन्दा है ।
तूं वनचर भूचर सबला खेचर दुश्मन कूँ ढाहन्दा है ।।
तूं लक्ष्मी लावे दु:ख में आवे बीछड़िया मेलन्दा है ।
प्रवहण तारे काज सुधारे घर संपत्ति आनन्दा है ।।१०।।
तूं देखी दु:खियां करे अति सुखियां निरधन धन्न लहन्दा है ।
तूं अन्तरगत की सब के मन की अन्तर पीड़ भाजन्दा है ।।
तूं संकट काटे विषमी वाटे तेरा शरण लियन्दा है ।

तूँ तिसियां पाणी पावे आणी जलधर रेल चलन्दा है ॥११॥
तूं दीनदयाला सब रिछपाला रोग शोक काटन्दा है ।
तूं झघड़े झांटे मोटे आंटे बोल ऊपर लावन्दा है ॥
तूं कुमति विडारे आयां द्वारे जातंध नयण जोवन्दा है ।
तूं गुणीयन सुन्दर मेले परिकर मन मोहन देवेन्दा है ॥१२॥
तेरी प्रकट पुण्याई जोति सवाई तेरा तप्प तपन्दा है ।
तो थूम्भा आगे मधुरे रागे नर नारी गावन्दा है ।
मृगमद कर पूरा चन्दन चूरा जहां परिमल महकन्दा है ।
नित अपने हित्ते निरमल चित्ते चरण कमल पूजन्दा है ॥१३॥
तूं श्री संघ रक्खे श्री संघ पक्खे श्री संघ दिल्ल वसन्दा है ।
श्री संघ थूंभ आवे कुशल वधाअे श्री संघ कुशल होवन्दा है ॥
संघ मिल इक चित्त बोले कीरत पारन को पावन्दा है ।
श्री संघ लही ऋधि सिधि पाई नव निधि श्री संघ नित बाधन्दा है॥१४॥
संवत् अठारे वरस चिहुँत्तर कार्तिक मास वहन्दा है ।
पूजन रविवारे गुरु दरबारे मेला खूब सोहन्दा है ॥
तहां मै भी आया दरशन पाया मोकूँ तूँ तूसन्दा है ॥
घग्घर निसाणी कुशल कहाणी 'उदयरतन्न' कहन्दा है ॥१५॥

जयचन्द रचित

१५. जिनकुशलसूरि घग्घर निसांणी

दायक ऋधि सिद्धां सेवा किद्धां परतख सुरतरु कन्दा है ।
परिवारज वाधे गुणे अगाधे छाजहडां कुल चन्दा है ॥
विक्रम गति वच्छर तेर संवच्छर सेतीसे जन्म लहन्दा है ।
कुलमंडण जाणो धन्य विहाणो जेलण जयती नन्दा है ॥१॥
तेरे सेंताले भाग्य विशाले भावे दिक्ख लयन्दा है ।
गुरु योग्य पिछानी बहु सनमानी सैंहथ पाट दियन्दा है ॥
बहु सुख समप्पे दालद कप्पे श्री जिन कुशल सूरिन्दा है ।

सहु लोकज अक्खे इन गुरु पक्खे कुण इच्छा पूरिन्दा है ।।२।।
निज पूरण ज्ञाने आयु पिछाने शुभ ध्याने ध्यावन्दा है ।
चोरासी लक्खं योनिज अक्खं जीवां सूं खामन्दा है ।।
अणसण सागारी करी इकतारी सुखकारी जोवन्दा है ।
वच्छर नव्यासी जे अविनाशी सुरवासी गावन्दा है ।।३।।
थिर थुम्भज थप्पे दालिद कप्पे देरावर दीपन्दा है ।
वीरमपुर वाने बलि बीकाणे अरियन कूं जीपन्दा है ।।
सुर नर गुण गावे शहर सेत्रावे योधपुरे जागन्दा है ।
नागोर नगीनों सहुजन लीनो व्यन्तर भूत भगन्दा है ।।४।।
जे धन नर नारी ऊठ सवारी जाके पाय नमन्दा है ।
उन्है जलनाहे अति उमाहै इति अतीत दमन्दा है ।।
जसु ध्याने जे नर होवे सुधरत तसु ग्रह दुष्ट नसन्दा है ।
अति उज्वल सखरी धोति पहरी कुंकम लेप घसन्दा है ।।
वर बावना चन्दन पाप निकन्दन शुभ भावे पूजन्दा है ।।५।।
खस वोही चंगी रचिये अंगी मधुकर तिहां गुंजन्दा है ।
मलयागर सक्खं बलि कृष्णागर धूपद सूँ धूपन्दा है ।।
कस्तूरी पूरी कपूरी चूरी गोहूँला भेलन्दा है ।
कुल वृद्धा लायक सुक्खां दायक साजन बहु मेलन्दा है ।।६।।
जसु महिमा चावी श्रावक श्राविका जाको जस वाचन्दा है ।
गुण गीतज गावे सीस नमावे नाटक मिल नाचन्दा है ।
झालर कंसाला दे दे ताला वाजित्र बहु वाजन्दा है ।।७।।
इम आलस छारी इकतारी जे मन शुद्ध ध्यावन्दा है ।
ते सघली भांते सयल संघाते मन इच्छा पावन्दा है ।।
रायजादी राणी गुणै वखाणी वदनज ओपम चन्दा है ।
तसु देख्यां मुक्खां जाये दुःखां घुघरीयां रणकन्दा है ।।८।।
कहि सोहे गुज्झां अनोपम वज्झां कटिमेखल झणकन्दा है ।
जोबन वय माती सहू सुहाती तिण सूं केल करन्दा है ।।

वलि घोड़ वयल्लां साथ छयल्लां शिर पर छत्र धरन्दा है ।
इक चित्ते ध्यावे वेग वधावे पद चक्रवर्ती लहन्दा है ।।९।।
तसु हय गय थट्टां बोलत भट्टां मूंह आसीस कहन्दा है ।
खरतर गच्छ ईसर कुशल सूरीसर ताके गुण गावन्दा है ।।
सेवक साधारे शत्रु संहारे तरस्यां तोय पावन्दा है ।
सुख संपति पावे अधिके दावे चंगासीस लहन्दा है ।।
घंग्घर निसाणी सहु बखाणी 'जय मुनि चन्द' कहन्दा है ।।१०।।

यति दौलत रचित

१६. जिनकुशलसूरि घग्घर निसाणी

(र.स १८३५)

सरसती माता जग विख्याता कवियण मात कहन्दा है।
काश्मीरां मण्डण दुक्ख विहण्डण कर वीणा सोहन्दा है ।।
सद्गुरु गुण गाऊं वंछित पाऊं खरतर गच्छ सोहन्दा है ।।
मंत्री जिल्हागर बुधनो आगर सद्गुरु तात कहन्दा है ।।१।।
मात जैतश्री रंभा जिसड़ी तस कूखे उपजन्दा है ।
संवत तेरेसे वर सेतीसे जन्म्यां सुख होवन्दा है ।।
सेताले वरसे दीक्षा हरसे गुरु जिनचन्द दियन्दा है ।
सितहोतरे पाटे श्री सघ थाटे धो धो ढोल घुरन्दा है ।।२।।
नियासि वरसे सखरे दिवसे सुरगपुरी पोचन्दा है ।
पूनम सोमवारे हरख अपारे मेला खूब मिलन्दा है ।।
घस केशर रोलि भरी कचोली कस्तुरी चरचन्दा है ।
लोबान सिलारस अंबर अग्गर धूप सुगन्ध धूकन्दा है ।।३।।
गुरु चरणे आवे मन से ध्यावे वंच्छित सुख पावन्दा है ।
गुलाब चमेली राय वेली गुरु चरणे चाढन्दा है ।।
नारेल पतासा खुरमा खासा सीरणीयां वाटन्दा है ।
नर नारी आवे बहु गुण गावे वीणा ताल वाजन्दा है ।।४।।

वाजे मृदंगा भुंगल भंभा भेरी दुक्कड़ घुरन्दा है ।
नाचे तिहां पातर आवे जातर मुनिवर बहोत मिलन्दा है ॥
सहु मनसा पूरे नवले नूरे एक मना ध्यावन्दा है ।
मांगे सो पावे मन में ध्यावे आशा तास पुरन्दा है ॥५॥
पुर पट्टण ठामें बहुतर गामें थुंभ भला छाजन्दा है ।
देरावल दीपे दुश्मन छीपे जुना पीठ कहन्दा है ॥
मुलतान मरोटे सोहे कोटें गुरु बिकाणे छाजन्दा है ।
नागौर जोधाणे तिवारी थाणे सोजत सुख दियन्दा है ॥६॥
जेसाण बीलाड़े सुख दे सारे मेड़ते मन मोहन्दा है ।
जालोर खंभायत वंडी बिछायत सद्गुरु नित सोहन्दा है ॥
पाटण ने सूरत बहुजन पूजत नित महिमा वाजन्दा है ।
अहमदावादे श्री संघ साधे सद्गुरु दरश दियन्दा है ॥७॥
भुजनयर साचोरे बहुते जारे ऊदैपुर सोहन्दा है ।
इडरगढ़ मंडण दुक्ख विहंडण सब जन मन मोहन्दा है ॥
इत्यादिक ठामें नव नव गामें देश परदेश दीपन्दा है ।
गुरु विषमी वाटे दुश्मन दाटे चोर धाड़ न लगन्दा है ॥८॥
हस्ति मदमाता नाहर चीता सिंह श्याल होवन्दा है ।
प्यासा जल पावे दुरित गमावे अपणा विरुद वहन्दा है ॥
आपे निरधनियां बहुत लिछमियां मणि माणक दियन्दा है ।
अपुत्र्यां पूत दिए घर सूत सद्गुरु दरश दियन्दा है ॥९॥
इम ऐकण जीहां कहुँ गुण केहां पारन को पावन्दा है ।
संवत अढारे से वरस पैंतीसे जेठ मास जाणन्दा है ॥
सातम उजवाली सोम सवारी 'दौलत' जती कहन्दा है ।
सद्गुरु सुपसायां अे गुण गायां कोट मरोट वसन्दा है ॥
नर-नारी गावे वांछित पावे ऋद्धि सिद्धि वाधन्दा है ॥१०॥

जयसागरोपाध्याय रचित

१७. जिनकुशलसूरि चतुष्पदी - सप्तति

(र सं. १४८१)

रिसह जिणेसर सो जयउ । मंगल केलि निवास ।
वासव वंदिय पय कमल । जगह जु पूरइ आस ॥१॥
आसणि तपि जपि जोगि दृढु । जो समरइ सिरिसंति ।
तसु घरि सरवरि हंस जिम । नवनिधि नितु विलसंति ॥२॥
संति करण भवभय-हरण । हरिवंसह सिणगार ।
वन्निहि सामल मनि विमल । नमह सु नेमि कुमार ॥३॥
मार विडारण पासजिण । बलि जाऊं तुय नाम ।
जसु लाणिहिं कलिमलु गलइ । मन्नउ तिसला नारि ।
जसुनंदण सिरि वीरजिण । सलहिज्जइ संसारि ॥५॥
पणमिय गोयम सामि गुरु । अनुगुरु सोहमसामि ।
तसु वंसिहि जे केवि गुरु । तिहि वंदउ सिरि नामि ॥६॥
इणि परि समरिय देवगुरु । महिम महीरुह कंद ।
गाइसु गुरु आणंद भरि । श्रीजिणकुसल मुणिंद ॥७॥
मरुमंडलि समियाणउ गाम । धण कण कंचण कुसुमाराम ।
तहिं निवसइ जेल्हागर मंति । जसु जसु पसरइ दूरि दिगंति ॥८॥
चन्द्र कुलंबर पूनिमचंद । वंदह श्री जिनकुशल मुणिंद ।
नाममंत्रु जसु महिम निवास । जो समरइ तसु पूरइ आस ॥९॥
जइतसिरी सुकलीणी नारि । तसु घर मडिणि अति सुविचारि ।
तासु पुत्र करमण इय नाम । सहजिहिं जसु उत्तम परिणाम ॥१०॥
हसइ हेलि खणि खेलइ गेलि । सयण माइ मण मोहण वेलि ।
जिम जिम सो परिवाधइ बाल।तिम तिम महियलि हरष विसाल॥११॥
देखहु एवडु पुण्य पयोर । वय लहुडउ पुणि बुद्धिहिं धोर ।
अंक दिवसि जिणसंगि गुरुसंगि । कुंयर सुचडियउ संजमरंगि ॥१२॥

तउ घरि आवी जणणी पाय । पणमिय पयड इसो मन भाउ ।
कथनि तुम्हारइ लेयुं दीख । अब मति देज्यो कांई सीख ।।१३।।
ताम जणणी ताम भणइ सुणि वच्छ ।
बलिहारी तुह वयणहुं अच्छ । जीव जीव लावन्न मंदिर ।।
तउं बालउ भोलउ सहियतमि । य चिन्नु -कहकहवि सुन्दर ।
जतउं मग्गइ दिक्खसिरि । इयमह मनि न समाइ ।।
जाइ फूल कह किम रहइ । गयदंतुय सिरि थाउ ।।१४।।
तउं लहुडउ गरुयउ व्रतभार । वच्छ वहंतउ जाणइ सार ।
वृपभभार वृपभ ऊपडइ । वाछरुए ते अधविचि पडइ ।।१५ ।।
रहि रहि कहइ कहावइ लागि । जं तुय भावइ तं तुय मागि ।
परिणाविसु वर उत्तम नारि । सुख भोगवि व्रत पाखइ सारि ।।१६।।
अम्ह हूइं हूंती मोटी आस । इणि परि मेल्हइं कांइ निरास ।
हुयइ पुत्र कुलवंता जेउ । मात पिता मनि चालइ तेउ ।।१७।।
थोड़ा माहि कइयुं मइ घणुं । पूछि वच्छ हिव मन आपणु ।
जयतसिरी तव बोली रही । कुंयरि बात तब निश्चल कही ।।१८।।
अहह दिखाडिय जइं तइं लोभ । तिणि मुझ चित्त न आवइ खोभ ।
पडइ जोह जिणि सुत्तिय वेह । सा किमि पाडइ पत्थर रेह ।।१९।।
लोक माहि जे कहियइ भोग । अंतरंग ते जाण्या रोग ।
नव नव परि जे जगडंत । भवि भवि आपइ दुक्ख दुरंत ।।२०।।
किहा कवणु हउं कुण तुं मात । कुणु परियणु वंधव कुण तात ।
हियइ विचारी जोवउ मात । मायामय सहु देखउ तात ।।२१।।
कूड कपट नट विट संबंध । द्रोह वंच मद मूर्छा वन्ध ।
भवि भगता मइं कीधा सही । दीक्षा विणु तसु ओपध नहीं ।।२२।।
जग आवइ जग जायइ तोइ । आवत जात न पूछइ कोई ।
आहर जाहर ईम्हइ करइं । पुण्य विणु ओडालउ फिरइ ।।२३।।
मइं मन कीधउं दृढ आपणुं । रणि चडिया केहउ कापणुं ।
तोरइ वचनि करी गृह त्याग । काराविसु सुकृतह संभाग ।।२४।।

माइ मनाविय तिणि करि बुद्धि । निश्चय एकमना छइ सिद्धि।
हिव कुंयर ऊतावल थई । तउ सामहणी ततखिणि थई ।।२५।।
ताम धवल मंगल रवर । मन मेल्हइ हरषि अकूर ।
वाजइ ति विल तूर नीसाण । पडइ मोह भूमीपति प्राण ।।२६।।
तरल तुरंगम चडइ कुमार । अंगि अनोपम तसु सिणगार ।
सिरिवरि सीकरि छत्र ऊमाल । पाछइ लूण उतारइ बाल ।।२७।।
माई वधावेष दियइ आसीस । करमण नामइं तसु प्रति सीस ।
क्रमि नरनारी चाल्यूं सहू । तिणि खणि विरलउ हुय घर रहू ।।२८।।
मारगि पगि पगि नाटक रंग । सुपरिहिं पसरइ दातज रंग ।
दान सूर अनुयाचक वृन्द । इहुं बिहुं पूगउ मन आणंद ।।२९।।
जेल्हासुत विस्तरि गुरु पासि । आवइ गरुअइ मन उल्लासि ।
तसु संगसि हरषिउ गुरु सोइ । पात्र लाभि नहु रीजइ कोई ।।३०।।
विविध रूपि तहि मंडिय नंदि । गायइ गायण नव नव छंदि ।
ध्यान जलणि आहुति अन्यान । कीजइ तिल जव सरसव ध्यान ।।३१।।

।। भास ।।

जोसिय सिरि जिणचंद गुरु । लाडण तहिं करमण रूपि सुर ।
सजन मेलावइ आवियउए । संयमसिरि नइ परणाविउए ।।३२।।
कुसलकित्ति तसु नामूए । जगि जंगम सोहग ठामूए ।
नारि दियइ तब चाचरी ए। गुरु गरुअडि दहदिसि संचरीए ।।३३।।
सहज मनोहर सरि करिए । किर कंठिहिं कोइल अवतरीए ।
कडि समसत पटोलडीए । कवि गायइ भंभर भोलडीए ।।३४ ।।
उरलिय लहकइ हारूए । पगि नउर रण झणकारूए ।
बाला ताला रसि रमइए । खलकत करि कंकण चूडमए ।।३५।।
केलिगर्ब्भ सुकूमाल तनु । धन लावन्न धन लीलाभवनु ।
लडहिय रंगेहिं ललियमणि । किवि जोयइ टगमग निय नयणि ।।३६।।
सहूयइ कउतिग देखि करे । तउ पहुतउ आपण आप घरे ।
सुहगुरुवासिहिं महमह्यउए । गुरु हरि इग कुसलिग मुनि रह्यउए।।३७।।

सो लघु मुणिवर शुद्धाचार । विनय विवेक विचाराधार ।
नमइ खमइ खामइ सवि दीस । एवहु पुन्निहिं लाभइ सीस ।।३८।।
ठामि ठामि पामइ सोभाग । तसुवरि लोक धरइ अनुराग ।
गुरु आपइ विद्या आपणी । थानकि कुण न करइ थापणी ।।३९।।
पापभीरु ससि सोमाकारु । जो साधइ तपु किरिया सारु ।
वायणायरिय क्रमि कीधउ सोइ । पुन्निहिं गरुअडि बइठा होइ ।।४०।।
गुरु मनि मानिउ सो गुणवंत । जाणिय निय जीविय पज्जंत ।
पाट सीष आयरियह देइ । आपणि सरगह सुख माणेइ ।।४१।।
गुरु आप सकरण सानंद । श्री राजेन्द्रचन्द्र सूरिंद ।
सूरिमंत्र तसु आपइ ताम । श्री जिनकुशलसूरि इहु नाम ।४२।।
भवजलनिधि ऊतारण घाटि । श्रीजिणचन्द मुणीसर पाटि ।
माणिक जिम नव सोवनघाटि । सोहइ सूरि सुमुनिवर धाटि ।।४३।।
जसु मडिय खडिय बंभंड । खडिय पाखंडिय पापंड ।
जो जगि जागइ तेजि पयंड । मोहराय सिरि पाडइ दंड ।।४४।।
स्वरिरि कवणु मइं मागइ दंड । इम वर वरत लेइय लोहंड ।
झूकतउ जिणि जीतउ मोह । शासन चंग चडाविय सोह ।।४५।।
ताम मान मायाहंकार । लहइ पुलंता ते धिक्कार ।
मूरख कायर जेय असार । कह किम पामइ ते जय वार ।।४६।।
धमधमंत जिणि धरियउ कोप खमा खडगि तसु कीध उलोप ।
इणि परि सुभटएडइं रणखेत्रि । तरुवरपान जेम धुरि चैत्रि ।।४७।।
मयण मल्ल जिणि लेहेलामाटि । हाहा हणियउ हियइ कपाटि ।
ब्रह्मतेज महिमा सा जाणि । लीजइ जं बलवंत विनाणि ।।४८।।
मुहि मूद्रिइ आवइ अन्यान । न्यान लकुटि तसु फेडिउ थान ।
समकितसिरि जिणि कीधउ घाउ । भागउ मिथ्यामत भडवाउ ।।४९।।
इणि परि मोहसेन भंजेवि । दहदिसि जय जय कार लहेवि ।
जयत्रहस्त जगि उदयउ सूर । गच्छ राज परिपालइ पूर ।।५०।।
आचारिज तरुणप्रभसूरि । जिणि थापिउ जिण शासण सूरि ।

किवि वाणारिय किवि उवज्झाय।किवि दिक्खिय उत्तम कुल जाय।।५१।।
संघपत्ति जिणबिंब पतिट्ठा । विजयवंति जिणि विहिय विसिट्ठा ।
मानतुंग सितुंजय संगि । हुय विहार जसु बुद्धि प्रसंगि ।।५२।।
अवरवि कीधा जे उपगार । तिह हुं जाणुं संख न पार ।
जीह सहस जउ मुझ मुख हुंति । तउ तसु गुण परिमाण लहंति ।।५३।।
संयम सिरि उरमंडलिहार । नव कलपियहिं जो करइ विहार ।
खरतरगच्छ रायहुं सिंगार । पालंइ पूरव रिषि आचार ।।५४।।
जुगप्रधान कमला श्रीकांत । उत्सूत्रह परिहार करंति ।
सो मुनिवर पयडतउ तत्तु । सिंधु देश विहरंतु पत्तु ।।५५।।
अंतसमय जाणिय तहि ठाइ । ध्यानि मौनि तपि जपि दृढ थाइ ।
सो सहगुरु मल कसमल धोइ । देराउरि पहुतउ सुरलोइ ।।५६ ।।
तहि थानक थाप्यउ थिर थूंभ । सेव करइ जण बइठा ऊभ ।
रत्नत्रय आरोपी तिहा । जे पूजइ तिहां दूषण किहां ।।५७।।
थूलभद्र वयरादिक जेय । सरगि गया जिम नमियइ तेय ।
थंभ जेम जिण गणहरकेर । ईहां पुण तिम मधरह फेर ।।५८।।
जसु तेरह सतत्री सइ जम्म । सइंतालइ सिरिसंजम धम्म ।
पाटणि सतहुत्तरइ जु पाट । नवासियइ जसु सग्गहवाट ।।५९।।
भूमंडलि सग्गिहिं पायालि । सचराचरि जगि इणि कलिकालि ।
प्रभु प्रताप नवि मानइ जोई । मइ नयणे नहु दीठउ सोइ ।।६०।।
निधन लहइ धण धन्न सुवन्न । पुण्णहीण पामइ वहुपुन्न ।
असुखी पामइ सुखसंतान । एकमना करता प्रभु ध्यान ।।६१।।
प्रभु समरणि आपद सवि गलइ । श्रेय शांति सवि संपद मिलइ ।
आधि व्याधि चिंता संताप । सवि छांडइ नहु मंडइ व्याप ।।६२।।
पाप दोष नवि लागइ तांह । प्रभुदंसणि उतकंठा जांह ।
सेवंतह सुरतरु चिय छांह । दालिद निश्चय मेल्हइ वांह ।।६३।।
विस विसहर विसतर नरनाहु । भूत प्रेत ग्रह व्यंतर राहु ।
प्रभु नामहिं तेह न करइ पीड । भाजइ भवभय भावठि भीड ।।६४।।

रोग सोग सवि नासइ दूरि । अंधकार जिम ऊगइ सूरि ।
मूरख फीटी पंडित थाइ । प्रभु पसाइ सवि दुरिय पुलाइ ॥६५॥
दिनि दिनि जिनशासनि उद्योत । जहि प्रभु छइ भवसागर पोत ।
सो जुगवर मइ भेट्यउ आज । रलिय रहसि सवि कीधा काज ॥६६॥

॥ भास ॥

आज घरंगणि सुरतरु फलियउ । चिंतामणि मइं करयलि कलिउ ।
उदयउ परमाणंद भरे ।
आजं जीह मइं धन्निय गणियइ । जुगपवरागम जइ मइं थुणियउ ।
चंद्रगच्छ महिमा निलउए ॥६७॥
कांइ करहु पृथ्वीपति सेवा । कांइ मनावउ देवी देवा ।
चिंता आणह कांइ मनि ।
वार वार इहु कवितु भणीजइ । श्री जिनकुशलसूरि समरीजइ ।
सरइ काज आयास विणु ॥६८॥
संवत चउद इगासिय वरिसिंहिं । मल्लिकवाहण पुरवरि मन हरसिंहिं।
अजियजिणेस पसाय वसि ।
कियउं कवित इहु मंगल कारणु । विघन हरइ पर पाप निवारणु ।
कोइ म संसउ करह मनि ॥६९॥
जिम जिम सेवइं सुर नर राया । श्रीजिनकुशल मुणीसर पाया ।
'जयसागर'उवझाय थुणे।
इम जो सुह गुरु गुण अभिनंदइ । रिद्धि समृद्धिहिं सो चिरु नंदइ ।
मनवंछित फल तसु हवइए ॥७०॥

अभयसोम रचित

१८. जिनकुशलसूरि छन्द

(छंद पद्धडी)

जिनकुशलसूरि मालम जिहान, सिद्ध मरद आप गणधर सगान ।
खरतरगच्छ जस नवे खंड, अतिशय आप परचौ अखंड ॥१॥
महि व्योम जोति रवी शशी समंद, जिम पाप दोप मिय्यात कंद ।

यहु वीर हुंत चौपन्न पाट, थट मिलै संघ हो ज्योत थाट ॥२॥
चरणारविंद वंदै संसार, सुत वधै द्रव्य सुख लहै सार ।
देवाधिदेव करुणानिधान, गुण आप पूर केवल सुज्ञान ॥३॥
प्रथमादि जोत उज्जल प्रकास, अम्मर पाताल डंबर आकास ।
निरमल सुगंध अतिगंध लीन, चंपक फुलेल चंदण चंदीन ॥४॥
मृगमद सुगंध केशर मिलाय, पूजत संत जिनकुशल पाय ।
मरुधरा देश पाली मझार, गुरुदेव विराजै जैतवार ॥५॥
परताप जाप सोभा पढंत, कवि 'अभयसोम' इस जस कहंत ।
जिन कुशलसूरि मालम जिहान, सिद्ध मरद आप गौतम समान ॥६॥

अमयसोम रचित

१९. जिनकुशलसूरि छन्द

प्रथम जो देरावरै, सुथान सिंध थी उरै ।
जेसाण थुंभ जागतो, सूरीस संधु सावतौ ॥१॥
मुलतांण मीर सेवता, अनेक पीर देवता ।
किसे हार नेकते फुरे, गुरु सदा उदौ करे ॥२॥
मरोट थान मूलगौ, अेक निचिंत अेलगौ ।
बीकाण वान वाधतौ, सुथान थान सावतौ ॥३॥
प्रभावना रिणीपुरे, नीसाण वाजतां घरे ।
नागौर नामे रीबतौ, घणाज देव जीपतौ ॥४॥
तोरण तेम सोहरा, जगत जन मोहरा ।
सरूप मेड़ते सही, अपार लज्यो जालही ॥५॥
महिमा पाल पूरतौ, लाहौर दुःख चूरतौ ।
कला अनेक आगरे, बत्तीस पवन फूलरे ॥६॥
दादा करंति सेव, हिन्दुवां तुरक्कां देव ।
सदा सुख सांगानेर, जालमी करत जेर ॥७॥
अमरसरै अनेक दादा, राखतो तोड़ टेक ।
मालपुरे भुभू मान, खान खान सेवे थान ॥८॥

ब्रिहानपूर राज रीति, जैतारण जगत्र जीति ।
सोभित सुख सद्दयं, बेन्नातटे विरुद्दयं ।।९।।
खेजड़लै खरौ सदा, बाहड़मेर सम्पदा ।
जोधाण जु . ्नातरा, जुडंत देश देशरा ।।१०।।
विरम्मपुर तिम्मरी, करंति नृत्य अम्मरी ।
जालोर जेतिसिंघरी, खम्भाइते खराखरी ।।११।।
प्रगट आप पाटणै, सूरत सुरंवसै घणै ।
अनन्त तेज अहम्मदा, सुमंगलौर सर्वदा ।।१२।।
साचोर भुज सासतो, तुरंत शत्रु भासतो ।
उदैपुरे जइतरे, सेत्रावे कोटड़े गुरे ।।१३।।
गुरु सदा उदौ करे, अेकान्त ध्यान जो धरे ।
भयंति भाण जेतलो, कीरती कोडि तेतलो ।।१४।।
कहुँ कितीक जीभ अेक, कोडि पी कला अनेक ।
दास तारो राख अेक, सुनिजर करो अनेक ।।१५।।
कला अनेक कुशल गुरु, समर्या होत हजूर ।
अलगी टाले आपदा, जिम अंधारे सूर ।।१६।।
सूर तेज जिम सूर, दूर आपद भय टाले ।
मावितां ज्युं दया करे, सेवक प्रतिपाले ।।
मन वांछित माइ बाप, कुशल गुरु कामित दाता ।
पुनिम्म हरजै पाप, रहे जे ध्याने राता ।।
सुप्रसाद सोमसुन्दर सुगुरु, 'अभैसोम' गुण गावरी ।
प्रगटीयो थम्भ मालीपुरे, विजैसिंघ लीलावरी ।।१७।।

अभयसोम रचित

२०. जिनकुशलसूरि छन्द

समरुँ माता सरस्वती, कुमारी कर जोड़ ।
तूं माता कवियण तणी, पूरे वांछित कोड़ ।।१।।
कुशल करण जग कुशल गुरु, दायक वंछित देव ।

अहनिशि तो ओलग करे, सुर नर सारे सेव ।।२।।
पुर पट्टण गामे प्रकट, जग सघले जस वास ।
पुरां वदीतो पालियो, वसे दादो जी वास ।।३।।

(मोतीदाम छन्द :)

दादोजी वास दिये दोलत्त, वधे छत्र छाया सेवक वित्त ।
वधारे मान दशो दिशिवान, धरे इक चित्त जिके गुरु ध्यान ।।४।।
पूनम पूनम पूजे पाय, नवा नवा नेवज पार न पाय ।
चम्पावली केतकी फूल चरच्च, अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ।।५।।
लहे घर सुन्दर लाछ अछेह, सझन्ती सोल वधन्ती नेह ।
लहे घर नारी लोयणवान, लहे वलि पुत्त सुपुत्त सुजाण ।।६।।
लहे भल गांम सुठाम भूपाल, लहे ढिंग गीत भला ढीचाल ।
लहे घर मन्दिर घ्रोड़ा जोड़, लहे भट सेव करे कर जोड़ ।।७।।
लहे हित साजन हल्ल कल्लोल, लहे नित लीला छाका छोल ।
लहे घर कुरला कूर कपूर, लहे घर जीमण मोतीचूर ।।८।।
लहे घर विद्या पुण्य पंडूर, लहे घर सुक्ख उगन्ते सूर ।
लहे घर में गल मद्द मसत्त, लहे घर चीर अनोपम सत्त ।।९।।
लहे घर वंछित भोग रसाल, लहे घर साल कचोलां थाल ।
घरे नित गीत तणां गहगाट, भए नित जय जय चारण भाट ।।१०।।
भल पुत्त सपुत्तिय वांझ फलन्त, विछोहा वाला वेग मिलन्त ।
अनेकानेक विरुद्द अपार, दीठो इस कलु मे तूं आधार ।।११।।
जीहां सहस्स हवे जो मुक्ख, कहूँ इक जीहां केई सुक्ख ।
बड़ा विरुद ताहरा अखियात, नरनारी केई आवे जात ।।
गुणे तूँ गिरुओ समुद्र सरीस, कह्यो मैं कोई न करज्यो रीस ।।१२।।

(दोहा)

रीस न करज्यो कवियणा, मै माहरी मति लार ।
कहियो जग मे कुशल गुरु, खरतरगच्छ सिणगार ।।१३।।

(लघुनाराच छन्द)

श्रृंगार हार सोहअे, सुकाम धेनु दोहअे ।
धरन्ती ध्यान जो सदा, टलन्ती दूर आपदा ॥१४॥
प्रथम्म जो देराउरे, सुथान सिंध थी उरे ।
जेसाण थुम्भ जागतो, सुदिट्ठ संघ सावतो ॥१५॥
मुलताण मीर मेवता, अनेक पीर देवता ।
केरोहरे फतेपुरे, गुरु सदा उदो करे ॥१६॥
मरोट थान मूलगो, एकान्त चित्त ओलगो ।
बीकाण बान बोधतो, सुथान थान शोभतो ॥१७॥
प्रभावना रिणीपुरे, निशान बाजता घुरे ।
भेटो नर भट्टनेर, जगत्र सहु हुवे जेर ॥१८॥
नागोर नाम दीपतो, दाणव देव जीपतो ।
तोरण तेम सोहअे, जगत्र मन मोहअे ॥१९॥
सरूप मेड़ते सही, अपार लच्छि जिहां लही ।
महिम माल पूरतो, लाहोर दुःख चूरतो ॥२०॥
कला अनेक आगरे, छत्तीस पवन झूलरे ।
दादे री करन्त सेव, हिन्दुआं तुरुक्कां देव ॥२१॥
सदा सिद्ध सांगानेर, जालमी करन्त जेर ।
अमरसरे कला अनेक, राखतोज तोड़े टेक ॥२२॥
मालपुरे मुज्झ मान, खान खान सेवे थान ॥
व्राणपुरे राज रीत, जैतारण जग्गतीत ॥२३॥
सोजत सुख सद्दयं, वेनातटे विरुद्दयं ॥
खेजड़ले खरो सदा, वाहड़मेर संपदा ॥२४॥
जोधाण मिले जातरा, जुड़न्त देश देशरा ॥
वीरमपुर तीमरी, करन्त नृत्य अम्मरी ॥२५॥
जालोर जैतसिहरी, खंभायते खराखरी ॥
प्रगट आप पाटणे, सूरत सुख थापणे ॥२६॥

अनन्त तेज अहम्मदा, सुमंगलोर सर्वदा ।।
साचोर भुज सासतो, तुरत्त शत्रु त्रासतो ।।२७।।
जईपुरे ज ईडरे, सेत्रावे कोटड़े गुड़े ।।
गुरु सदा उदय करे, अेकान्त ध्यान जो धरे ।।२८।।
भमन्त भाण जे तले, कीरन्ति कोटि ते तले ।।
कहूँ केता जीभ एक, कोड थी कला अनेक ।।२९।।

(दोहा)

कला अनेक कुशल गुरु, समर्या होय हजूर।।
अलगी टाले आपदा, जिम अधारे सूर ।।३०।।

(कलश)

सूर तेज तिम सूरि दूरि आपद भय टाले ।
मावित्रां ज्यूँ मया करी सेवगां प्रतिपाले ।।
मन वंछित माइ-बाप कुशल गुरु कामित दाता।
पूनम पूजे पाय रहे ध्याने जे राता ।।
सुप्रसाद सोमसुन्दर सुगुरु, 'अभयसोम' ओलग करी ।।
प्रगटियो थुम्भ पाली पुरे । विजयसिह लीला वरी ।।३१।।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

२१. जिनकुशलसूरि छन्द

र स १८९१

(दूहा)

विमलवाहिनी वर दीयै, महिर लहिर करी मात ।
गच्छनायक श्री कुशल गुरु, आखुं जस अवदात ।।१।।
चन्द पटोधर चंद कुल, प्रगट्यो पूनिम चन्द ।
साचा गुरु देखि सकज, सेवै मुनिजन वृन्द ।।२।।
तेरै सैंतीसै समय, अवतरिया गुरु आप ।
सैतालै संयम ग्रह्यौ, पुहवी वध्यौ प्रताप ।।३।।

सूरि मन्त्र सत्तिंतरै, पाम्यौ पुण्य पसाय ।
तखत वखत दीपावियौ, राजै खरतरराय ।।४।।
सकल सूरि सिरसेहरो, मणधारी मछराल ।
भविजन प्रतिबोधी भला, दाता दीनदयाल ।।५।।
सुर सुख लह्या नयासीयै, देरावर पुर देव ।
साची सकलाई निरख, सुरनर सारै सेव ।।६।।
कलियुग मैं चढती कला, निरखी नैं नर नार ।
थांन थांन थिर थापना, पूजै विविध प्रकार ।।७।।

(छन्द-मोतीदाम)

पूजो गुरु पाय सदा धर प्रेम, नमौ षट् मास धरी नै नेम ।
आराध्यां आवै श्री गुरुराज, कृपानिधि कोड सुधारै काज ।।८।।
लहै सुकुलीनी सुन्दर नार, भली सुत जोड लहै श्रीकार ।
लाखीणी लच्छ वधै भंडार, कृपानिध तूं सै जो करतार ।।९।।
आंधा ने आंख दीयै पंगु पाय, सूधै मन सेवै जो गुरु पाय।
तृषातुर देखी पावै तोय, हठीलौ साहिब हाजर होय ।।१०।।
तरी बुड़ंती आणै तीर, न होय कदापि त्यां जोखिम नीर ।
दोषी नर देखी टालै दूर, चिंता नैं भांज करै चकचूर ।।११।।
टालै वध बंधन कष्ट करूर, निरमल तास वधै मुख नूर ।
साचौ गुरु धीगड़ मल्ल सधीर, चोखो जस वास वधारै चीर ।।१२।।
गमाडै रोग महा गुरुराय, पूजै जे पूनिम पूनिम पाय ।
करि अरि केहर दुट्ठ कुद्दाल, महाभय दूर हरै आल माल ।।१३।।
खलां दल हुंत उधार्यो आय, राठोड़ सुजाण बीकांण नो राय ।
सांगा नै पुत्र दीयो श्रीकार, कथुं क्रमचन्द कुलै आधार ।।१४।।
मलेच्छे द्वेष कीयो मुलतांन, मोटौ जिनचन्द नो राख्यो मान ।।
मोदी नें पूत दीयो मन रंग, चोखी चित्त चाह पूरै गुरु चंग ।।१५।।
अनम्मी मानें आंण अखण्ड, पुलायै जायै पाप प्रचण्ड ।

महा रींझवार दातार मुणिद, चावो चिहुं खण्ड पटोधर चन्द ।।१६।।
कहुं इक जीह किता अवदात, इला मज्झ तुम्ह तणी अखियात ।
साचो गुरुराय सादूलो सीह, अहो अतुली बलराज अबीह ।।१७।।
छोरू निज जांणी ने छत्राल, तुम्हे महाराज करो प्रतिपाल ।
अम्हीणे तुज्झ तणों आधार, जपंता जाप करौ जैकार ।।१८।।
अम्हीणां कोड सुधारो काज, नेहे धर नेह गरीबनिवाज ।
साची इकतार तुम्हारो सांम, अम्हीणो तूंहिज आतमराम ।।१९।।
साचो हूॅ दास तुम्हारो खास, सदा सुख संपद दीजै रास ।
करूं अरदास कहूं कर जोड़ि, कृपानिध पूरो वंछित कोडि ।।२०।।

कलश

पूरो वंछित कोड सुगुरु श्री कुशलसूरिंदा,
महिर करो महाराज अधिक मुज देह आणंदा ।
दायक वंछित दान दुति नहि अवर न देवा,
अलवेसर आधार सारीयै निस दिन सेवा ।
अढार इकाणुं आसू ए, मंबुइ बिदर मनरली ।
कुसलेस सुगुरु सुपसाय थी, 'अमरसिन्धुर' आशा फली ।।२१।।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

२२. जिनकुशलसूरि छन्द

र.स. १८९२

थुंभ देरावर जांण, मरोठ सुथांन बहु मांम ।४६।
वधी गुरु शोभा बीकानेर, जपतां शत्रु थई गया जेर ।
मुलत्राणै पावौ सेवंता मीर, साध्यां जिहां पंच नदी पंच पीर ।४७।
किरोहर मालपुरै बहुक्रीत, रिणी नवहर सोहे राज रीत।
भला नर सेव करै भटनेर, सुठांम दिपंतो सांगानेर ।४८।
लुलीने पाय लागंत लाहोर, जागंती जोत गुरु जालोर ।
प्रसीधो पाटन सोहै पाट, शत्रुंजै लाग रह्या गहगाट ।४९।

गुरुनां पाय पूजै गिरनार, खम्भायत तेम महा सुखकार ।
सदा सुखदायी सूरत सांझ, अभोई बिंदर वाधी मांम ।५०।
भलो गुरु थांन सोहे भरवच्छ, कहीजै भुज्ज देसावर कच्छ ।
मोटा गुरु मांडवीय मंडाण, मुदै मुंदरै पुर वाधी वांन ।५१।
जोधांण सुथांन तणी भल जोड़, राजै तिहां राज भलो राठोड़ ।
उदैपुर ईडर आद सुथांन, मोहंतो मालपुरे सुप्रमांण ।५२।
मेडत्तै नागोर सु मो मन्न, चूरु चित्त चाह धरा कहै धन्न ।
गूढै गुरु बाहडमेर विशाल, महिम्मा मालपुरे सुविशाल ।५३।
सोझूत जैतारण सांचो सांम, तौरणपुर तेम सुधारे कांम ।
अहो गुरु खेजडलै सुप्रधांन, देवीकोट देवगढ़े सुप्रमांण ।५४।
अहो इल कीरत आगरै आज, जांणे दुःख नीर नों तीर जिहाज ।
अहो वीरम्मपुरै राज रीत, तवुं तिमरीपुर तेम प्रतीत ।५५।
ओपै भल थांन अहिंमदाबाद, भला भीनमाल महा सुप्रसाद ।
आबू अमरासर कीरत आज, तौरन्ने तेम गुरु सिरताज ।५६।
सांचोर सेव कहै दिल शुद्ध, दिल्लीपुर मांगू वधी बहु वृद्ध ।
आसा भल पुरै आगरै मां भू, वदुं मिरजापुर तेल वखांण ।५७।
काशी सुखराशि पुरंतो प्रेम, विहार विशाला नमूं नितमेव ।
राजै गुरु रंगपुरे भल रीत, पाटलीपुर मांगू वाधी बहु प्रीत ।५८।
बालोचरे अजीमगंज वखांण, कहुं कित्तै कीरत जाण ।
ढाकै हुगलीपुर पूरै प्रेम, दीपै गुरु देरै सांचौ तेम ।५९।
सुरंगे पाटण सांचौ सांम, ब्रह्माणपुरै पिण वखांण ।
आराध्यां आवै श्री गुरुराज, कृपानिध कोड सुधारै काज ।६०।
गुरु गुण गावै गामो गांम, थटांणा थुंद तिणै ठाम ठाम ।
अहो इल मां भू न दूजो देव, सुरिंद मुणिंद करंत सुसेव ।६१।
पूजै गुरु पाय धरि बहु प्रेम, नेहै भल जात करै नित नेम ।
आसा तिहां पूरै श्री गुरुराय, दीयै सुखरास निवास सदाम ।६२।
सदा सकलाई सांची जाण, जात्री मिल आवै राजा रांण ।

घणां ज्यांरै घोडंता रा घमसाण, पुणंता तास न होय प्रमांण ।६३।
प्रणम्मै पाय धरा दीयै धोक, सदा सुख त्यांह न व्यापै शोक।
प्रणम्मै पूंनिम पूंनिम पाय, लीला नै लच्छि मिलै तियां आय ।६४।
जपै जिण काज गुरु नै नेह, तुरत्त मिलावै आणि तेह ।
नहैजे आय नमै नर नार, तिहां घर वाधै जय जयकार ।६५।

कलस कवित्त

जपतां जय जयकार सुगुरु सुखरासि समापै ।
जपतां जय जयकार कष्ट कंदल नै कापै ।
जपतां जय जयकार चित्त नी चिन्ता चूरै ।
जपतां जय जयकार प्रघल मन आसा पूरै ।
संवत अढार बाणुं वरस, मुंबई विदर मन रली ।
कुसलेस सुगुरु गुण गावतां, 'अमरसिन्धुर' आसा फली ।६६।

कविराज रचित

२३. जिनकुशलसूरि छन्द

दोहा

वदन कमल वाणी विमल, दीजे सारद देव ।
बावन अक्षर बूझकर, भणवा लागूं भेव ।।१।।
केई मूरख पण्डित किया, माता ते मेहराण ।।
कालिदास सरखा कवि, जे षट् भाषा जाण ।।२।।
भूतल परतिख भगवती, लसे सदाई लाट ।।
ब्रह्माणी नित प्रति वसे, काश्मीर कर्णाट ।।३।।

(गाहा छन्द)

घर काश्मीर तणी धणियाणी, राजहंस वाहन सुर राणी ।
वदन चन्द छबि कोकला वयणी, निरमल कमल भीभला नयणी ।।४।।
अति उज्ज्वल तन अंबर झीणा, बेहद नाद वजंति वीणा ।
गिरवर रंग रमंती गावे, अविरल वाण पढन्ती आवे ।।५।।

(दोहा)

अविरल वाणी ईश्वरी, सरस्वती उकत समाप ।
गाऊं गच्छपति कुशल गुरु, प्रगट घणे परताप ।।६।।

(छन्द – मोतीदाम)

परताप घणे नर नार पुणे, कथीओ गुण पार बखाण कुणे ।
महीमण्डल मारु देश मही, समियाण गढे प्रथमादि सही ।।७।।
वसे जिहां लोक अठारा वर्ण, सदा सुख संपद धातु सुवर्ण ।
परघल ऋद्धि घणे भरपूर, निरमल नार नरां मुख नूर ।।८।।
जिल्लागर जेथ मंत्रीसर जाण, बहादर जोध महा बुद्धमान ।।
बड़ो धर्मपालक ज्ञान विचार, आस्तिक जैन तणो आचार ।।९।।
दरशण षट थटो थट द्वार, पावे सहु प्रारथिया अणगार ।।
सुकुलीणी गेहणी शीलवती, लछ अंग बत्तीसे लीलवती ।।१०।।
युवती गुण लायक जैतसिरी, भल चौसठ भेद कला सुं भरी ।।
लख कुंखई रे अवतार लियो,कुल जाण के भाण उद्योत कियो।।११।।
जनमत पुत्र थयो जयकार, सघोपे वाजित्र मंगलाचार ।।
अनंग रूपो जिसो उणियार, किलकै कुन्दण देवकुमार ।।१२।।
वधन्ते वेस थयो वड़वीर, सराहे योगीन्द्र शील सधीर ।।
इते जिनचन्द भट्टारक आय, मन्मथजीत महा मुनिराय ।।१३।।
तपे सहु सूरतियां शिरताज, विद्याधर छत्र गरीबनिवाज ।
बलाबल हाजर बावन वीर,भली जेरे चौसठ योगिणी भीर।।१४।।
भयभीत पैगम्बर दूर भजे, फिर पंच नदी पंच पीर सझे ।।
डरे ताय डाइण दानव देव, संकेताय कारण चारण सेव ।।१५।।
अहो तप तेज अभीत ओनाड़, महाव्रत सद्धर मेरु पहाड ।।
पगोतल लोटे छत्रपती, जड़धार इसो महायोग जती ।।१६।।

(दोहा)

गढ समियाण जगत गुरु, आया गच्छपति आप ।।
भेटण आपे भूपती, पुहवी सुण परताप ।।१७।।

मंत्री जेल्हो कुल-मुगट, कूंअर साथ कियाह ॥
विधि हित आयो वान्दवा, लायक संघ लियाह ॥१८॥
श्रीजी री वाणी सुणी, कहे वचन कर जोड़॥
अंक धरूँ सुत आपरे, महिपति गच्छपति मोड़ ॥१९॥
आगे ही सुर आखियो, स्वप्ने वायक साम ॥
कुलदीपक झलहल कमल, जन्म्यो तो घर जाम ॥२०॥
कही जे तो सुत करमसी, जोग सज्जन सिद्ध हत्थ ॥
समये जिनचन्दसूरि ने, कुल मे रहसी कत्थ ॥२१॥
चित हितकर छाजड़ तणां, वचन सुणी वरदाय ॥
अम्हां होसी आषाढ़ सिद्ध, लीनो कंठ लगाय ॥२२॥
भूमण्डल विचरे भमर, पृथ्वी लगे जसु पाय ॥
इतरे श्रावण आवियो, बद्दल गहर बणाय ॥२३॥
धर गुज्जर मंगल धवल, थिस्वौ मासै थाट ॥
पाटण चन्द पधारिया, घणा हुआ गहगाट ॥२४॥
संवत तेर सतहत्तरे, बैठो चन्द विमाण ॥
तपे पाट कुशलेश तिण, ज्योतिवन्त घण जाण ॥२५॥

(छन्द – मोतीदाम)

तिण पाट तपे कुशलेश किसो जिनदत्त बीयो जिनचन्द जिसो ॥
कुल हंस समोपम देव कला,अवतारे थयो शम्भु आप इला॥२६॥
नग नेत्र झलोमल कम्मल नूर, परमल गात्र सुकोमल पूर ।
दीपे घनसार महासुर देह, अनन्त भुजाबल रूप अछेह ॥२७॥
ऋधु जिन धर्म चले सुध राह, बड़ा इन्द्र देव बखाणे वाह ॥
जीता जिणे पांचे इन्द्री जोध,कहे तस काम न व्यापे क्रोध ॥२८॥
पग पग जीव दया प्रतिपाल, ठावीजे रे मोक्ष तणी मन ठाल ।
महासिद्ध योगीन्द्र भूप मरद्द, सझे वपु भूसण शील जरद्द ॥२९॥
वणे सिर ऊपर टोप वेराग, धरे मन धीरज लागो ध्यान ॥
क्षमा खग्ग साहि क्रमा खल खट्ट,जिसो मृगराज कुरंग झपट्ट॥३०॥

करां दृढ़ ढाल विवेक कबाण, भर्‍यो गुण बाण बड़ो भोथाण ।
चमाचम बीजल चारित्र शेल, फबे गज अंग दुआदस फेल
।।३१।।
इसो तप तेज अभंग तुरंग, नवे पद जाप ने जान वरंग ।।
महाभड़ जीत त्रिवंक मदन्न, वधे घण पोरस जोस वदन्न ।।३२।।
जपे ऋषी जोगीन्द्र जय जयकार,वन्दे पग चौविह संघ जि वार ।।
गावे गुण गन्धर्व नागेन्द्र गोम,भणे मुख कीरति सारी भोम।।३३।।

(दोहा)

नव तत्त भेदग जोग युत, पय संजम प्रतिपाल ।।
नव्यासीये सुरवर निडर, हुओ अमर हठिआल।।३४।।
देराउरपुर सिंध दिसी, प्रगटी ज्योति प्रमाण ।।
पग पूजे हिन्दुआणपति, मीर पीर मुगलाण ।।३५।।
कमल कमल चढती कला, इला मनावे आण ।।
गच्छ खरतर कुशलेश गुरु,दादो जैन रो दीवाण।।३६।।

(छन्द मोतीदाम)

दादो जिन धर्म तणो दीवाण, रटे जस राजिन्द रावल राण ।।
दाता मनवंछित दै वरदाय, पृथ्वी सहु हाजर सेवे पाय ।।३७।।
निरमल गंग अनोपम नीर, अरचे चन्दन फूल अवीर ।
घणे घनसार कस्तूरी घोल, चढे रंग केशर कुंकुम चोल ।।३८।।
झिगमिग दीपक ज्योति झलक्क,भली छिब मंडल भाण भलक्क ।।
मिले अठ गंध सुधूप महक्क, गावे उछरंगे गीत गहक्क ।। ३९।।
वधारे श्रीफल उज्जलवान, पूंगीफले चाढी मिठाई पान ।।
करे नव नेवज ढोवे कोडि,जपे मुख जाप बिन्हे कर जोड़ी
।।४०।।
इसी विध तीने ही टंक अभ्यास, खरे मन पूज करे पट मास ।।
जतावे रूप तुरत्तज यार, तू से गुरुदेव तो लाछित यार ।।४१।।

मिले घर संपत मंगल माल, सदा मद भोजन साक रसाल ॥
पीये नित दूध कटोरे पूर, सखी जन उच्छव ऊगे सूर ॥४२॥
तीखा मृगमद लवंग तंबोल, करे अंग न्हाण कपूर कठोल ॥
वामा पतिव्रता नयण विशाल,भलो मुखचन्द विराजे भाल ॥४३॥
पृथ्वी जस कीरति पूत सपूत, अनमी आय करे असतूत ॥
मोती मणि माणक मूंदरडा, कर कंकण हेम जड़ाव कड़ा ॥४४॥
खड़ा अंग ओलग दास खवास, दशो दिश हाजर दासी दास ॥
कर जोड़ घणा नर सेव करे,धर भोगवे चामर छत्र धरे ॥४५॥
सुखासन आसन रथ सहल्ल, महासुख माणे रंग महल्ल ॥
आराहित कच्छी खंग उत्तंग, मदोमत्त घूमत जूथ मत्तंग ॥४६॥
थटी मद महिषी गायां थाट, मथाणे गोरस घूमे माट ॥
भर्या नवनिद्ध अखूट भंडार,कृपा कर आप तूठां किरतार ॥४७॥

(कलश)

कृपा करे करतार आप तूठो अलवेसर,
गणधर गौतम जेम पुहवी दाता परमेसर ।
सोमवार शिरताज, प्रगट पूनम तिथि प्राजी,
सेवे पवन छत्तीस भाव भगतां कर जाझी।
मोजा समंद दातार, मही मण्डल महिमा घणी ।
'कविराज' रीझ वंछित करण, धन हो धन खरतरधणी ॥४८॥

कुशलधीर रचित

२४. जिनकुशलसूरि छन्द

मुझ मन वंछित सहु आस फली, मुँह मांगी कमला आई मिली ॥
जिनकुशलसूरीसर अतुल बली, ए गुरु गुण गातां रंगी रली॥१॥
गुरु दरसणि विहसी प्रेमकली, आरति चित्त चिन्ता दूरि टली ॥
वलि भागदसा मुझ आज फली, सिधि निधि रिधि आई मिली सगली ॥२॥
वंसि छाजहडइ अति विख्यातो, दारिद छेदण दारुण दांतो ॥
जसु मन्त्री जेल्हागर तातो, महिमाधर जइतसिरी मातो ॥३॥

प्रभु श्री जिनचन्दसूरि पटधारी, गुरु खरतर गछ उन्नतिकारी ।
अतिसय गुण पेखी अवतारी,नित नमणि करइं लख नरनारी।।४।।
पूजइं जे श्री जिनकुशल पहू, पामइ ते पुत्रवतीय बहू ।।
वलि पुहवी प्रगटइ सुजस बहु,सुर सम सुख उलसइ तेह सहु।।५।।
गुरु सांनिधि मणि माणिक हीरा, चउ तार सार कसबी चीरा ।।
पाटंबर संवर तन तीरा,नित निरमल करइं करि धरि
कीरा।।६।।

जलवटि थलवटि विषमइ घाटइ, सहु संकट सेवक ना काटइ ।
दोषी दुसमण ततखिण दाटइ,खरतर गुरु एम विरुद खाटई ।।७।।
परदेसइं प्रवहण कांइ लादउ, सेवउ कांइ शाहि अस शाहिजादउ।।
अंग थी आलस परो आछादउ,द्यइ दौलति घर बइठां दादउ।।८।।
सेवक नइं त्रिसीयां द्यइ सादउ, ऊनमण करे करि भरि भादउ ।।
थल पर जल रेलि करइ कादउ,जल दाता गुरु जगि जस वादउ।।९।।
झूझार जुडी जिहां झूझ करइ, हथताल हवाई सुहड भरइ ।।
तिण रिण जिण कुशल२ ऊचरइं,ति वंछित जयतसरि सुवरइ।।१०।।
मन सुध जे सद्गुरु नइं समरइं, सुर सांनिधिकारी तासु घरइं ।
डाइण साइण थी ते न डरइं, हाजरि हुइं आपद सद्गुरु हरइं ।।११।।
पूरब पच्छिम दखिण उत्तरइं, पसरि गुरु कीरति बहुअ परइ ।
खरतर गुरनी मन सुद्ध खरइ,नरपति छत्रपति सिरि आण धरइ।१२।
तेरह सेंतीसे जे जाया, सेंताले संजम चित लाया ।
सूरिमंत्र सतह तरे भुवि पाया, निव्यासे निर्जर पद पाया ।१३।
थिर थानक देराउर थांनइ, वीरमपुर गुरु अधिकइ वानइ ।
जेसलगिर जासु जगत जाणइ,महिमा अधिकी तिम मुलताणइ।।१४।।
साचउरि सहरि वर समीआणइ, जयतारिणि सोझति जोधाणइ ।
नागोर नगरि बलि बीकाणइ, भटनेर महिमसर डीडुआणइ।।१५।।
राधणपुर सरसै जालोरै, पाली पाटण अधिकै तोरै ।
मेडतै मालपुरै जगगुरु जोरै, लीलाधर दीपै लाहोरै ।।१६।।

सूरेत बिंदर सांगानैरे, बीलाडै प्रभु बाहडमेरै ।।
हाजर गुरु हाजीखां डेरै, आगरै च गुरु तिम अधिकेरै ।।१७।।
गुरु नगरि नगरि गरुअडि गाजइ, सेवक नइ सुख संपति काजइ।।
जसु नाम ग्रहणि अरियण भाजइ,सगली ही ओपम जसु छाजइ।।१८।।
गुरु नाम हीयइ धरि गहगहीयै, मृगमद केसरि पगला महीये ।
रंग रास कही ध्याने रहीये, सोभाग सुजस लख सुलहीये ।।१९।।
गुरु आण दाण सिरि पर वहीये, अउ किण ही रोग न वि सहीये।
दुख दोहग दंद दुरित दहीयेक्रूरम सम दृष्टि सगुरु कहीये।।२०।।
जसु जपतां भय सघला जावइ, नेडउ कबहुं संकट नावइ ।
तन ताप सीत नहु संतावइ, इम श्रीसद्गुरु ने सुपसावइ ।।२१।।
भवियण नित पूज करी आवइ,धरि ध्यान सुदृढ अहनिसि ध्यावइ।
गुरु चरणि कमलि निज सिर लावइ,वंछित पद प्रभुता ते पावइ ।।२२।।
पूनिम दिन पूजी पधरावइ, खाजा लाडू नित ते खावइ ।
सुरतरु तसु अगणि सुर वावइ,वहि चउरंग लखमी घरि आवइ।।२३।।
सेवइं समरइं गुरु चित चावइ, छत्रपति तसु चाडइ गज छावइ ।
दिन दिन दीपइ चढते दावइ,इम 'कुशलधीर' मुनि गुण गावइ।।२४।।

खुश्यालचन्द रचित

२५. जिनकुशलसूरि छन्द

रे.स १८२३

(दोहा)

ग्यानामृत गुणसंयुता, अद्भुत रूप अनन्त ।
अक्षय चिद्घन अनुपमी, जय जय हो भगवन्त ।१।
सारद जिन वांणी समरि, वीणा कर संयुत्त ।
सठ जन कुं कविजन करे, जयवन्त हो सरसत्ति ।२।
गुरु गणधर के चरण गहि, धारि हीये तसु ध्यांन ।
पाली मुझ प्रौढो कियो, बहुविध करूं वखांण ।३।
इक दिन इच्छा ऊपनी, मन मो हरख अपार ।

गुण गावुं जिनकुशल के, वदहु सकल सुखकार ।४।
संपत्ति पूरण सुखकरण, चिन्ता दुक्ख भजंत ।
करै सुजस कल्याण गुरु, ऊगत सूरज पंत ।५।

(छन्द भुजंगप्रयात)

जपंता गुरु दूर दालिद्द नासे, महा मंगला संपदा कोडि भासे ।
टले रोग सोगं जरा जंतु केरा,फले आस ध्यावंत साहिब्ब मेरा ।६।
ध्यावे घणों ध्यांन धीणै धरां नै,नवा वैद्य नी भांति दोषी नरां नै।
सिखावै बहू भांति केरी सिधाई,धरंतां गुरु ध्यांन होवै वधाई ।७।
बहू टोलि जात्री तणा चालि आवै,घणी केसरां चंदनां सुं घसावै ।
रली रंग सेती सुं पूजा रचावै, गुरु आगले मीलि नाटक मचावै ।८।
वले मोज सेती सुं सेसां वढंता, जके भाव सेती सधाने जुडंता ।
महक्कंत धूपं महामृग्गमद्दं, चढावंत नालेर चोखा सुसन्धं ।९।
भली माल चम्पा तणी मन्न भावी, उपै मालती जाइ जूही सुहाती ।
गुणी जासु गावे मनै गहगहीनै,करे कोट सोभा सुदादो कहीने ।१०।
नमै राय रांणा भला भाव आंणी,लहे राज माता लहे पूत राणी ।
घरे जातिवंता घणा अश्व हींसे, घुरे नोबतां सोभती वात दीसे ।११।
लहे सुन्दरी नारि रूपे रसाली, वधंते सुनेहे वहे जेह वाली ।
लहे पूत नूरां वडे ग्यांन सूरा,पुजंता गुरू ग्यांन पामेज पूरा ।१२।
लहे जीमणे भोजनं सालि दालं, लहे घृत्त घोलं वले सुव्विसालं ।
भला थाल सोवन्न कच्चोल भारी, लहे खीर गंगा तणो नीर झारी ।१३।
लहे गांम आछा महा ऋद्धिमंता, बड़ा ठांम सुथांन माहे वसंता ।
भला दास दासी परीवार वूठां,भणे जासु कीरत्ति चारण भट्टां।१४।
सदा आसधारी जु सेवे सूरीसं, जके कोडि पांमे जगत्रे जगीसं ।
इसो कोइ नांही जु तो सम्म दाता,
गुणी जांणि तोकुं नर न्नारी ध्याता ।।१५।।

— दूहा —

ध्याता सब नर जगत मे, मांने तुझ बहुमान ।।

खरतरगच्छपति खंतिसुं, धारे सब जन ध्यांन ॥१६॥
इभ केहर अटवी अगनि, अहि राटी जल ईत ॥
रोग बंदि भय अठ टले, कुशल नाम जपि मीत ।१७।

— छन्द त्रोटक —

मय मत्त मयंगल होई बली, पुह जांण पहाड़ समो पुचली ।
लपकावत डोल महाचपला,अति ढूंढ फिरे वन मे इकतावा ।१८।
झरतो मद जासु कपोल सदा, अति सुंड उछालत सोइ मुदा ।
एहवो गज पूठि पड़े उमही, तुम नाम जपंत टले तब ही ॥१९॥

इति गजभयम् ॥

वन मे बलिवंत जु सिंह वसे, गजराज महा उर ते निगसे ।
मरतो बहु फाल जुरी संमरी,सबसे जु अजीत अबीह हरी ॥२०॥
जसु नक्ख विसाजित तीक्ष्ण बड़े, मुख दन्त त्रिसूल ललाट चढे ।
करतो जु अगाज उठै रन मे, गुरु ध्यान धरंत टले छिन मे २१।

इति सिंहभयम् ।

अटवी बहु झाड़ उझाड़ विचे, तरु जाति धनी – छ आग मरे ।
अति झाल उठे जु उद्योत करे,जिहि पंखी घणा जु उडी पकरे ।२२।
उछलंत जिहां बहु आग धुरां, वनरोज कुरंग सिसा जु सुवा ।
वनदाट विचाल जपे कबही, गुरु नांम घने जु बुझे सब ही ।२३।

इति अग्निभयम् ।

विकराल महा कलिकाल जिसो, कर नोफण जोर दुजीह इसो ।
जसु फुंक करी तरुजाल सुके, निस वासर जेह फुकार मुके ।२४।
अतिलाल विराजत लोचनयं, तसु क्रोध जु काल समो मनयं ।
कुसलं जु नाम रिदे धरते,फुल माल समान जु सांपनि है ॥२५॥

इति सर्पभयम् ।

करि साथ महा बहु भूप भिड़े, असवार वडे उमराव अडे ।
जिहि नाल घुटै जु नु वक्क वहे, धरि सीस सुभट्ट जु मारि कहे ॥२६॥
खड्गां करि कीध है रांन घणा, खलके बहु खाल जु लोहु तणा ।
गज घोटक ऊंठ नरां पटके, कुसलेस सहाय सुखं कटके ॥२७॥

इति युद्धभयम् ।

सझि वाहण लोक अनेक चढ़े, जल बीच गये जु कुवाय उड़े ।
घनघोर घटा वरखे गहरं, गडडंत जु मेघ गजे उदधिं ।२८।
झबकंत जु बीज उदोत किधं,
एह बीजलि भीति विचाल जपे, जिणचंद पटोधर दुक्ख कपे ।।२९।।

इति जलभयम् ।

गड़ गुंबड़ गांठ फले तन में, सनिपात तरंग उठे मन में ।
अति खांस खयेन हुरस्स भयं, जिहि कोढ अठार भगंदरयं ।।३०।।
कफ पित्त विकार जु वात कही, जुर के दस मेद जु घात क्षयी ।
बहु वैद इलाजु करे जुर ही, जपतां गुरु रोग गमे जब ही ।३१।

इति रोगभयम् ।

बहु राज विरुद्ध थये जु बड़ा, मछराल मलेछ अनुंछ भड़ा ।
नहि चित्त दया परिपंच करी,नर बांह गहे अति क्रोध धरी ।।३२।।
खलकाय जु नौल सु पीट करे, नर बंदि पड़्या बहु दुक्ख भरे ।
चितलाय ज श्री कुसलेस भजे, दुख छूट जु राज विरुद्ध तजे ।।३३।।

इति वन्दिभयम् ।

ऍं महाय अट्ठज दुट्ठ हरे, सुरु संपति मंगल कोटिरु करे ।
बलि डायण सायण भूत नसे, जसु नांम खुस्याल रिदै जु बसे ।।३४।।

दूहा सोरठा

वैसे जु रिदय विचाल, नाम जु श्री कुशलेसनो ।
मिलै जु मंगल माल, काटे कोटि कलेस ने ।।३५।।
वंस जु बहू विसाल, माय ताय मुखचंदजु ।
गुरु संवत्सर गाम, उतपति कहुं आनंद सुं ।।३६।।

— छन्द गीतम् —

सवि देस विचि वलि जेह सोभत नयन मोहन सुखकरु,
धन धान्य धीणै सुजस लीणै मारिवाड़ मनोहरु ।
बहु रिद्धि नायक जेह लायक वसे लोक महागुणी,

समीयाण गामजु जिहि दीपत कविन महिमा जसु थुणी ॥३७॥
जिहं वसै उत्तमवंस अनुपम न्याति चौरासी भली,
बहु जनन मांहे अधिक कीरति ओसवंस घर घर रली ॥
छाजहड़ छत्रपति गोत गुणवंत साह जेल्हागर भए,
जे दक्ष गुण करि अधिक दीपत सुजस जग में गाजए ॥३८॥
जसु घरणि वरणी रूप रमणी सील सोभा गुण भरी,
पति भक्तिवंती मुख हसंती जैतसिरि भानुसिरी ।
जे मनै रुचिता देव समवडि सुक्ख विलसै दीपती,
अधि रात रयणी सुक्ख सयणी कूंख उपजै महाव्रती ॥३९॥
नव मास पूरे पुत्र प्रसव्यो सुभ मुहूरत सुभ दिने,
संवत तेरेसै सेंतीस वरसै जनम भयो हरखे घणे ।
माय तात संबंधि मिल करि कीया उच्छव बहु रली,
जे वधे दिन प्रति अधिक सह गुरु सुकल पक्षे चंदकली ॥४०॥
इम वधत अनुक्रम कलाभ्यासी जगे पूठि प्रकास ए,
जग स्वार्थता को भाव जांणी तजै ममत विलास ए ।
वैराग आणि ग्रह्यो संयम संवच्छर सेंताल ए,
सवि साधु गुण करि अधिक दीपत सचे व्रतके पाल ए ॥४१॥
जे पढे बहुविध शास्त्र रुचि करि अंग उपंग विचार ए ,
हेय ज्ञेय उपादेय ज्ञायक द्रव्य षट् जिनचंद ए ।
जसु गुणन जांणी चित्त आंणी दीध पट जिणचंद ए,
उणहत्तरे प्रभु पाटधारी भये कुशलसूरिन्द ए ॥४२॥
बहु देस मंडल जेह विचरी भविकजन प्रतिबोधीया,
करी क्रिया तप जप्प पुण्यै पाप मल पुनि सोधीया ।
जसु जगत्र मांहे वधीय कीरति सुजस अति विस्तार ए,
देरावरै प्रभु आप आये करीय जगत विहार ए ॥४३॥
तिहां करिय अणसण सरण च्यारे विध करी मन ऊचर्या,
निज धर्म ध्याने देह छोड़ी देवपद फुनि अवतर्या ।

संवत तेरे अधिक नव असी सुर पदवी देराउरे,
जिहिं थुंभ प्रभुनां आस पूरे सुजस जग जन ऊचरे ॥४४॥
जे पुत्र हीणा पुत्र आपीय अरथ हीणा धन्न ए,
बुद्ध हीणा बुद्धि आपीय करे विबुध ए
रोग सोग टाले विघन जाले दीये भोग विलास ए ॥४५॥

दूहा – जाति परिहा

चित्त धरि अति उल्लास कि चरचै जै सदा,
मन धर गुरु को ध्यान कि समरै जे मुदा ।
पांमै प्रबल प्रताप कि वंछित सवि मिले,
परिहां, जपतां सद्गुरु जाप कि आस्था सहु फले ॥४६॥
तुम महिमा है जोर कि कहीयत न बने,
कहो दिनकर को तेज कि घूघू किम मने ।
तिम मैं मूढ अयाण कि महिमा तुम तणी,
परिहां, कहिनै नां समरत्थ कि जांणे तूं धणी ॥४७॥

(दूहा)

अतिसय तुमचै अधिक सुं, महिमा जगत मझार ।
गांम गांम थुंभ गुरु चरण, पूजित विविध प्रकार ॥४८॥

(छन्द जाति नाराच)

तो प्रकार सार धार नरिंद पाय पूजए,
दिणंद जेम दीपतो वधत चंद दूजए ।
जपे जु ठांम ठांम में गुरु चरण्ण थुंभ ए,
खरी करे जु भक्ति भाव नारि नरह ऊमए ॥४९॥
देरावरै दीयंत सुक्ख दूर टले दुक्ख ए,
हिंगोलजै करे हरक्खु महारिद्ध मुक्खए ।
मुलतान मांहि महामीर पूजै पाय पीर ए,
किरोहरै करंत मीर दीये सुक्ख सीर ए ॥५०॥
हाजीखान स्मालखान थांन थुम्भ सोभ ए,

वन्नू वाग सेवतां अरी अरिष्ठ थाभ ए ।
भेरा गुरु भलै जु भात आत जात दोड ए,
धरीस गांम सिधु देस दिट्ठ नित्ति कोम ए ॥५१॥
फतैपुरै मरोठ मज्झ महा सुक्ख पूरता,
चरन्न तेजवंत जु जेसाण दुक्ख चूरता ।
दिपंत थुंभ कोटडे सरस्स देवकोट ए,
महंत मेर बाहडै गूढै जु थुंभ मोट ए ॥५२॥
सांचोर भुज्ज सेवतां तुरत्त शत्रु त्रास ए,
सुरत्त वाद अहमदा नमंत दुक्ख नास ए ।
राजपुरैं जु राज रिद्ध कीध राज राज ए,
नवोनगर निरक्खतां जु सर्व सिद्ध काज ए ॥५३॥
पूजंत थुंभ पाटणे खंभायते सुपावए,
जालोर सेतराव मै जपंत चिन्त जावए ।
पूजिये फलवद्धिये जु रिद्धि नित्त पामीये,
सेवो सदा पोहकरण सरन्न दिन्त सामीये ॥५४॥
वीरम्मपुर सुक्ख सीर तिम्मरी वदीत ए,
जोधाणै जुडंत जात गावत्त मित्त गीत ए ।
प्रगट्ट थुंभ पाली यै जु मांनीयै जैतारणै,
खेजड़लै जु खांति सु बिनातटे सु वारणै ॥५५॥
बुर्हानपुर सोझतै जु मोजिहै विराज ए,
नागोरै नमंत पाय जाय व्याधि नास ए,
बीकांणै वर दीयंत कीध नाल वास ए ॥५६॥
लहंत नूर लूणकर्ण रिणीपुरे विलास ए,
नव ग्रहीघुरे निसांण भांण ज्युं प्रकाश ए ।
सरसुतीय पत्तने नु जत्त नै सदा जुड़े,
भेट पाय भट्टनेर जेर थइ अरी मुडे ॥५७॥

लाहोरइ लभते लाछ दाख तेज दिल्लीये,
मालपुरै महिमा भूर पूर सुख छल्लीये ।
उदैपुरै अनंत रूप सोम नित्त ईडरै,
अम्मरसरै अपार सार टोडै उदैसरै ॥५८॥
सोभंतो जु सांगानेर ढेर सुक्ख मेटियंत,
आगरै अनन्त आप जाप दुक्ख मेटियंत ।
पट्टणै प्रताप सिद्ध किद्ध पवित्र गात्र ए,
महत जु मकसुदाबाद संत आत जात ए ॥५९॥
वदंत कासमबजार सार काम पूरतो,
ढाकै गुरु करत्त पाल झाल चिंत चूरतो ।
और भी अनेक ठांम ठांम तुज्झ गाजतो,
जपंत कोडि मंगलीक ई तल्लेस भाजतो ॥६०॥
ध्यावतां अधिक्क ध्यान गुरु सदा उदो करे,
पूरवै मनोरथ माल साल पुण्य सुं भरे ।
विच्चरै अरक्क जेथ सेथ वाय विस्तरे,
तेतलि कीरत्ति तुज्झ कोंन पार किही तरे ॥६१॥
ताहरी कला अनेक कहूं केम जीभ एक,
जीभ जो सहस्स होइ तोहि पार नात नेक ।
विरुद बड़ा विख्यात कहै कवी एम वात,
भाव धरि नरन्नारी झूलरा जुडंत जात ॥६२॥

— दोहा —

जुडै जात अति जुगत सुं, निपजावी नेवज्झ ।
वार सोम वलि शनि में, सेवत बहुविध सज्झ ॥६३॥

— कुण्डलियो —

हित करि चित्त उल्लास सुं, समरहु कुशलसूरीस ।
दुख दोहग आरति टले, करे कुशल सुजगीस ।
करहि कुशल सुजगीस ईसनित्त कुशल थुणिज्जहि ।

कुशल विणज व्यापार कुशल घर राज मुणिज्जहि ।
कुशल होइ वन गहन कुशल जल थलै भमंतह ।
कुशल करै कल्याण कुशलै सज्जन ह्वैह ॥६४॥

— दूहो —

गिरुवां नै गंभीर नर, गुणियण कवि गुणवंत ।
भेटै बहु गुरु भाव सुं, नित प्रति तुज्झ नमंत ॥६५॥

— छन्द मोतीदाम —

नमंत धरी इक उज्जह ध्यांन, महितल कोई न तुहि समांन।
जिणै पद तीजइ तो गुरुराज, महानर पूज तेम म्हराज ॥६६॥
जिणंद तणे जु पटे गणधार, वदे तदनन्तर थिवर विचार ।
पछै गछपति अभैदेव सूरि, प्रगट्ट खरतर पुण्य पंडूर ॥६७॥
कीयो जिण थंभण पास प्रतक्ष, वणाय नवंगीय वृत्ति जु दक्ष ।
कर्या जिणवल्लभ दस्स हजार,जैनीय जु बागड देस मझार ॥६८॥
वसी जिणदत्त कें बावन वीर, साध्या जिण पंच नदी पंच पीर ।
श्रावक बहुत कीया ओसवाल,सुतास परंपर चन्द विसाल ॥६९॥
नमो जिणचंद तणा पटधार, नमो भयभंजण अस्ट प्रकार ।
नमो सुख संपति देत सरीर, नमो गुरु सागर जेम गभीर ॥७०॥
नमो वलि दायक वंछित देव, नमो महिपति पूजै नितमेव ।
नमो गच्छनायक तुज्झ गणेस,नमो प्रह ऊठीय ने प्रणमेस ॥७१॥
नमो सवि संघ भणी सुखकार, नमो सहु साधु तणा सिरदार ।
नमो नित देयण वंछित दान,नमो बधतो है तुझ बहुमांन ॥७२॥
नमो लच्छिदाताह दीनदयाल, नमो प्रभु पूरण तूं प्रतिपाल ।
नमो जु खरतर गच्छ शृंगार, नमो सझि सेवक नै जु साधार ॥७३॥
तुही मुझ नाथ तुही वलि तात, साचो मुझ भ्रात वलि गुरुभ्रात ।
करो करुणानिधि वंछित मुज्झ, सदा करहुं मइं सेवन तुज्झ ॥७४॥
भई पद पंकज भेट जु आज, मनोरथ सर्व सध्या मुझ काज ।
गया वलि रोग जु सोग विसेस, हरक्ख धरी धर ध्यांन हमेस ॥७५॥

जिहां समरै इक चित्तजि कोई, तिहां परतिक्ख हुवै नित सोई ।
करो दुख सिंघ तणा तुम दूर,इच्छा नित सेवक नी प्रभु पूर ।।७६।।

- कलस, कवित्त –

धूर ईछा परमांण आंण सिर धरूं आसति ।
सद्‌गुरु कुशल सूरिंद भयभंजण प्रभु भासति ।
करि करुणा सुखकार सार साहिब मुझ किज्जै ।
सेवक वंछित पूर भूरि धन दौलति दिज्जै ।
ताहरो जु नांम साचो जगत, चाहे सुरनर महिपती ।
कातिक्क सुदि रवि पूनमै,भेट्या सह गुरु सुभ मती।।७७।।
ओसवंश उद्योत गोत कातेला विस्तरे ।
पुण्यवंत निस दीस सीस गुरु आज्ञा धारे ।
सोभाचंद सुनांम कांम सम रूप विराजे ।
मोतीचंद जु साह चाह धरी सुभ काजे ।
थाप्यो जु थुंभ सद्‌गुरु तणो, माघ पूनिम कुज दिने ।
वच्छर अठार इकवीस (१८२१) में, सकल सिंघ उच्छव घने ।।७८।।
कीरतिरतन सूरिद इंद सम प्रवल प्रतापह ।
साख परंपर तास भास वाचक गणि आपह ।
सोमनन्दन मुनि सीस नथमल्ल सुलीलह ।
सुखानन्द गुरु दक्ष सिप्य जांण हुजै सीलह ।
वच्छर अठार तेवीस (१८२३) मे, मकसूदवाद दिट्‌ठे चरण ।
पभणै 'खुश्याल' दुक्खह हरण, जयो देव मंगल करण ।।७९।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

२६. जिनकुशलसूरि छन्द

(तर्ज - विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली)

आयो सहु श्री संघ आस धरै, गुरु मौन रह्यां कहो केम सरै ? ।
दरशन वहिलो सद्‌गुरु दाखो,निज सेवक जांण महर राखो ।।१।।

इय विखमी विरियां आय वणी,केहवी करिये तुझ अरज घणी।
हिव अलगा छो तो वेगा आवो,हिव ढील घड़ी भर म करावो ।।२।।
तूं सद्गुरु खरतर गच्छ साचो, कोईय न जांणे तुझ ने काचो ।
इण संकट मे आलस न करो, दादा दुश्मन ने दूर हरो ।।३।।
कोई चूक पड़ी सद्गुरु हम सुं, तो जिम कहसो तिण पर खमसुं।
पिण हिवणा हठ थे मत ताणो,निश्चय पोतानो कर जाणो ।।४।।
आया सब श्री संघ अठां लगे, पाछा किम जावां इणे पगे? ।
इण पर करिये गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करिय खुशी ।।५।।
जिन कुशल सूरीसर जग चावो, अपणायत कर बेगा आवो ।
अगला विरुद थे उजवालो, पर घल निज छोरु प्रतिपालो ।।६।।
गुण गाम गडाले ये गायो, सुणतां सद्गुरु वेगो आयो ।
राजी हुय सगलां रंग रली,'जिनचन्दनी' आसा सफल फली ।।७।।

धर्मवर्धनोपाध्याय रचित

२७. जिनकुशलसूरि छन्द

खरतरगच्छ जाणे खलक, राजे श्री गुरु राज ।
दादो दरशण देखतां, सरे सहु शुभ काज ।।१।।

(छन्द-भुजग)

सरे सव काज सटक्क सटक्क, तूटे दु:ख जाल तटक्क तटक्क ।
मिले मन मेलू मटक मटक्क, लगो गुरु पाय लटक्क लटक्क ।।
खरे मन मेट खटक्क खटक्क, चोखे चित्त चाह चटक्क चटक्क ।
हरो हठवाद हटक्क हटक्क, लगो गुरु पाय लटक्क लटक्क ।।२।।
थुंभे नर थान थटक्क थटक्क, वधारे नारेल बटक्क बटक्क ।
गिलीजे सेस गटक्क गटक्क, लगो गुरु पाय लटक्क लटक्क ।।३।।
गुणो गुण माल गटक्क गटक्क, घणा मिसटान घटक्क घटक्क ।
जुड़े गंज खान झटक्क झटक्क, लगो गुरु पाय लटक्क लटक्क
भगे भय भूर भटक्क भटक्क, अरी रहे दूर अटक्क ~~
कदे न पुकारे कटक्क कटक्क, लगो गुरु पाय लटक्क ~~

छीजे सहु रोग छटक्क छटक्क, पुले खल सीस पटक्क पटक्क ।
झडें सहु पाप झटक्क झटक्क,लगो गुरु पाय लटक्क लटक्क ।।६।।

(कलश)

लटक लटक पाय लगे जगे जस प्रकट पुण्याई ।
गुरु सेवा सुरगवी आप लक्ष्मी घर आई ।
बीकानेर विशेष जागतो सुगुरु गडाले ।
जिनदत्त जिनचंद जिसा आदि विरुदां उजवाले ।।
जिनकुशलसूरि जपतां जुड़ै, विजयहरष सौभाग्यवर ।
उवझाय अेम 'धरमसी' अखे, श्री संघ ने सांनिद्ध कर ।।७।।

माणक रचित

२८. जिनकुशलसूरि छन्द

(तर्ज-विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली)

पुण्य योग से आई दशा जो भली,जिनकुशलसूरीश्वर सेवा मिली।
मनवंछित आशा सुफल फली, आनन्द भयो मन रंगरली ।।१।।
तुम महिमा अगम अपार भला, लिया नाम तिरे पापाण शिला ।
पूजे जे चरण कमल चित्त ला,ते पामे रिद्धि सिद्धि कमला ।।२।।
गुरु ढूंढ फिर्‍यो मैं जग सगला, तुम सम दाता नहीं और मिला ।
तुम नाम की देखी अधिक कला,समरत गुरु संकट विकट टला ।।३।।
गुरुदेव को नाम चित से सुमरे, मनवंछित कारज सकल सरे ।
चित्त धारत आरत तुरत टरे, पूरण निधि से भंडार भरे ।।४।।
तुम महिमा गुरु गुणवान सदा, जे ध्यावे न पावे कप्ट कदा ।
करके दरशन भई अंग गुदा,चित चाहत सेव करूं मै सदा ।।५।।
जाके मन में गुरुदेव रमे, वह नर भव वन में नाहीं भमे ।
गुरु जान के दीनदयाल तुम्हें, राजा राणा नर नार नमें ।।६।।
कर्मो के फंद पड़े हैं घने, गुरुदेव न सेव तुम्हारी वने ।
मेरी करनी अवधारो न मने, दाता मंदिर भर देवो धने ।।७।।
करुणानिधि आपको जो ध्यावे, वह नर मन वंछित फल पावे ।

कोई कष्ट रोग दुःख नही आवे, जो चित्त से नित गुरु गुण गावे ।।८।।
सब भूत और प्रेत पिशाच डरे, डाकिन शाकिन नही पीड करे ।
जो आपद काल तुमे सुमरे, निश्चय सब संकट विकट टरे ।।९।।
कर्मो के प्रहार कहां लो सहें, गुरुदेव बिना अब किसे कहें ।
यही चाहत चित चरनो मे रहे, सुख संपत्ति दौलत सुमति लहे ।।१०।।
राजत गुरु थुम्भ अधिक नूरे, निज दास की सब आशा पूरे ।
दुःख दारिद्र सकल हरे दूरे, वंछित फल दे चिन्ता चूरे ।।११।।
देशे देशे ग्रामे नगरे, गुरु कीर्ति फैल रही सघरे ।
जिनचंदसूरीश्वर पाट धरे, सेवक की आरत सकल हरे ।।१२।।
श्री खरतर गच्छ राजा आगे, नही ठहरे भूतादिक भागे ।
जो सतगुरु के पाये लागे, शुभ भाव दशा उनकी जागे ।।१३।।
सहु देश नगर अरु पट्टन ग्रामे, देवल सोहे ठामे ठामे ।।
गुरु नाम जपे जे हित कामे,मन वंछित वर वह नर पामे ।।१४।।
जे सतगुरु ध्यान हिरदे राखे, वह सेवक शिव सुख फल चाखे ।
दादा जिनकुशलसूरीद साखे, 'मानक' चाकर इम पद भाखे ।।१५।।

उपाध्याय साधुकीर्ति रचित

२९. जिनकुशलसूरि छन्द

विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगे पुण्य दशा सफली ।
जिनकुशलसूरि गुरु अतुल बली,मनवांछित आपे दादो रंग रली ।।१।।
मंगल लील समै विपुला, नवनवा महोच्छव राज्य कला ।
सुपसायै गुरु चढती कला; सुकलीणी पुत्रवती महिला ।।२।।
सबही दिन थायै सबला, सद्वास कपूर तणा कुरला ।
हय गय रथ पायक बहुला, कल्लोल करे मन्दिर कमला ।।३।।
वीझै चमर निशान घूरे, नर वे दरबार खड़ा पहुरे ।
जय जय कर जोड़ी उचरे, सानिद्ध गुरु सब काज सरे ।।४।।
सरसा भोजन पान सदा, दुःख रोग दुकाल न होय कदा ।
अविचल उल्लट अंग मुदा, गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ।।५।।

घम घम मद्दल नाद घुमे, बत्तीसे नाटक रंग रमे ।
प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें ।।६।।
तन सुख मन सुख चीर तणे, पहिरे बेला उर होय रणें ।
ध्यावो कुशल गुरु एक मनै, जृंभक सुर मन्दिर भरय धनै ।।७।।
ततखिन घन खंच्यो आवे, करी श्याम घटा मेह वरसावे ।
तिसियां तोय तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस गावै ।।८।।
लहर्या जल कल्लोल करे, प्रवहण भव सायर मज्झ डरे ।
वूडन्ता वाहन जे समरे, ते आपद निश्चय थी उबरे ।।९।।
खड़ खड़ खड़ग प्रहार वहै, सौदामिनी जिम समशेर सहै ।
कुशल कुशल गुरु नाम कहै, ते क्षेम कुशल रण मज्झ लहै ।।१०।।
थुंभ सकल परचा पूरे, श्री नागपुरे संकट चूरे ।
मंगलोर अधिके नूरे, देराउर भय टाले दूरे ।।११।।
वीरमपुर वाने सुधरे, खंभायतपुर विक्रम नयरे ।
जिनचन्द्र सूरि पाटे पवरे, जसु कीरति गही गंडल पसरे ।।१२।।
पूरव पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सोभागे ।
दह दिशि जन सेवा मांगे, श्री खरतर गच्छ नी महिमा जागे ।।१३।।
पुर पट्टन जनपद ठामे, गाईजे कुशल नयर गामे ।
पूजे जे नर हित कामे, ते चक्रवर्ति पदवी पामे ।।१४।।
श्री जिनकुशल सूरि शाखै, सेवक जन ने सुखिया राखै ।
समर्या गुरु दरशन दाखै, श्री 'साधुकीर्ति' पाठक भाखै ।।१५।।

साधुवर्धन रचित

३०. जिनकुशलसूरि छन्द

।। दोहा ।।

परतिख परचा पूरवे, चूरे संकट कोडी ।
श्री जिनकुशल मुनिन्द वर, वर्णु दोय कर जोड़ी ।।१।।

(छन्द)

कर जोड़ सद्गुरु पाय लागुँ, सकल घर उच्छव घणो ।

वर नयर देरावर वखाणुं, सकल थूँभ सोहामणो ।।
परतिक्ख परचा सयल पूरे, दुरिय चूरे ततखिणो ।
जिनकुशल सूरीसर निरंजन, हियो हरखे अम्ह तणो ।।२।।
निरधना द्यै धन राज रंका, पुत्र देय अपुत्रियां ।
दोभागियां सोभाग अप्पे, सुक्ख संपे जात्रियां ।।
इक चित्त ध्यावे सुगुरु अहनिश, तिहां चिन्तामणि जिस्यो ।
जिनकुशल सूरीसर शिरोमणि, वसुह वडदाता इस्यो ।।३।।
सड सडति सड सड सर विछूटे, जडति जो रव हंडिये ।
खड़ खड़ति खग्ग प्रहार वज्जे, कुन्ति कुंजर खंडिये ।।
हुँकार भण हक्के भड़ो भड़, इस्ये रण सद्गुरु सरे ।
जिनकुशल सूरीसर प्रसादे, जयति निश्चै ते वरे ।।४।।
थल वट्ट घाट पुलन्ति पंथी, पड़े जेह त्रिसालुयां ।
सूकन्त होठ मिलन्त लोयण, लग्ग जीहा तालुयां ।।
गय जीव आसे नाक सासे, सुगुरु नाम जिको कहे ।
जिनकुशल सूरीसर प्रसादे, नीर निर्मल ते लहे ।।५।।
अल्लोल जल कल्लोल माला, मगर मच्छ भयंकरं ।
घणघोर नीर सुतीर सायर, सयल जन धुन्नेसरं ।।
बुडन्ति वाहण मज्झि जे जिन, कुशल नामति उच्चरे ।
जिनकुशल सूरीसर प्रसादे, तारी संकट उद्धरे ।।६।।
वन सिह विसहर विस विसं नर, बन्दिखाना बंधणे ।
डायणि साइणि मोगल मोगा, जक्ख रक्खस भय घणे ।।
समरन्त सद्गुरु नाम धरि जे, मंत्र जे अहनिशि भणे ।
जिनकुशल सूरीसर प्रसादे, मिले नवनिधि अंगणे ।।७।।
मालवे मरहट मेदपाटे, मूलताने मंडले ।
घण घाट लाट कपाट सोरठ, गुज्जराते सिधले ।।
खुरसाण गजनी पमुह देशां, मांहि महिमा जाणिये ।
जिनकुशल सूरीसर शिरोमणि, सुगुरु अेम वखाणिये ।।८।।

बावना चन्दन मेल केशर, सुगुरु पूजा नित करो ।
मृगनाभि अगर कपूर भेली, भोग उग्गाहो खरो ।।
नारेल नेवज ढोई आगल, गीत गावे भामणी ।
जिनकुशल सूरीसर प्रसादे, आस पूगी मन तणी ।।९।।

(कलश)

आस्या पूगी सकल सूरी जिनकुशल पसावे,
देसोरी वर तरुणी गीत मधुर ध्वनि गावे ।
समरथ सद्गुरु राय पाय प्रणमें नित नरवर ।
अड़वडियां आधार सार पीहर पीड़ाहर ।
जिनकुशल सूरी साहिब पूरि सव, मनह मनोरथ अम्ह तणा।
वीनवे 'साधुवर्द्धन' हरख तैं तूठै वधामणा ।।१०।।

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

३१. जिनकुशलसूरि छप्पय

सरव शोभ गुण सकल साधुपति आपै साता,
सिरवंतां सिरि सिखर सील शुभ सीख विख्याता ।
शुद्ध चित्त सुखकार सूरि जिनकुशलसूर दुति,
सेवहि सेवक कोडि सैवमत वात शैलपति ।
सोभन्ति अधिक सोभा जगति, सौम्य रूप सौजन्यवर ।
संघ नै सुख सम्पति दीयण, सदा सेव 'धर्मसी' सधर ।१।

३२. जिनकुशलसूरि छप्पय

कुशल अंग उच्छरंग कुशल विणजे व्यापारे ।
कुशल देव देहरे कुशल घण राज दुवारे ।।
पुण्य पसायें कुशल कुशल श्री संघ भणीजे ।
बाहण आवे कुशल कुशल घर घर गाईजे ।
जिनचन्द सूरि पुह पट्ट धर, नाम मंत्र आरति टले ।
जिनकुशल सूरि पाय पूजतां, नवनिधान लक्ष्मी गिले ।।१।।
कुशल बड़ो संसार कशल सज्जन जन चावे ।

कुशले मंगलमाल लच्छ घर कशले आवे ।।
कुशले घोड़ा थट्ट कुशल पहरिये सुवन्नो ।
कुशले धन वरसन्त कुशल धन धन रवन्नो ।।
ऐसा नाम सद्‌गुरु तणो, कुशल जग रलियामणो
जिन कुशल सूरि जंप्या जगत, घर घर होय वधामणो ।।२।।
मिश्री घृतक्षीर रलाय मिलाय, प्रभात समये गठके गटके ।।
सुख रांस निवास सुधारण कूँ , मन मेल मिले मटके मटके ।।
भली ऋध्दि बड़ी दिल रंजनकुँ , सब आय मिले सटके मटले ।।
रुघपत कहत जगत मिल्यां, गरुदेव नमुं लटके लटके ।।

शिवचन्द्रोपाध्याय रचित

३३. जिनकुशलसूरि भास

(देशी-सुण चतुर सुजाण पर नारी सु प्रीतडी कवहु न कीजिये)

गुरु महिर करी अवधारियै अरदास कि संघ सकल तणी ।
गुरु अशरण शरण चरण धारी, जसु चरणन मे छत्रपति भारी ।
जसु गुण गावे नित नर नारी । गु० १ ।
जिनचन्द्र सूरीसर पटधारी, कलि समय मे गौतम अवतारी ।
गुरुराज तणी जाऊं बलिहारी ।गु०२।
गुरु सूरि सकल के सिरताजा, वर खरतर गच्छ के महाराजा ।
जसु जग में वाजे जस बाजा । गु० ३ ।
नित सफल करण नर भव वासा,सहु सिघना चित्त मे सुविलास ।
गुरु चरण कमल वन्दन आसा । गु० ४ ।
जिम सिखर गिरिंद भेटण सारू, उलसे सद्‌गुरु चित हितकारू ।
तिम तुम्ह भेटण मुझ मनवारू । गु० ५ ।
एह अरज संघनी अवधारी, मुझ पावन करिये सुखकारी ।
तुम्ह दरसण थी जावे अति दुखभारी। गु०६।
जिनहर्षसूरिद युग –(वर) कोडी,चिरंजीवो खिल जन मद मोड़ी ।
'शिवचन्द्र' नमे निज कर जोड़ी । गु० ७ ।

महो. ऋद्धिसार रचित

३४. जिनकुशलसूरि लावणी

(र. सं. १९३२)

(तर्ज—लावणी)

सद्गुरुजी म्हारा, दरशण देज्योजी गच्छपति साहिबा ।।टेर।।
कुशलसूरि वांछित के दाता, देवो बुद्धि विख्याता ।
सद्गुरु महर करीज्यो मुझ पर,ज्युं बालक पर माताजी ।। स० १ ।।
खरतर राज चन्द पटधारी, सेवक जन आधार ।।
विषम वाट मे संकट काटे, संघ सकल सुखकारजी ।। स० २ ।।
जग मांहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार ।
भर दरिया में जहाज उबारी,जिन गुरु की बलिहार जी ।। स० ३ ।।
गुरु चरणांबुज दर्शन सेती, पाप तिमिर हट जाय ।
गुरु परमातम सुगुण सौभागी,गुरु गुण केम कहाय जी ।। स० ४ ।।
मृगनयनी नूपुर ठणकाती, लिये सहेल्यां लार ।
नृत्य भक्ति गुरु अग्र विचक्षण,मृदु समीर झणकारजी ।। स० ५ ।।
मद मस्ती हस्ती वर राजत, श्री सद्गुरु दरबार ।
इन्द्र नरिन्द्र नमें पद-पंकज, हरखित चित्त उदारजी ।। स० ६
।। ऋद्धि सिद्धि के आगर सद्गुरु, जो ध्यावे सो पावे ।
यात्री आवे यात्रा करण कूं, केशर रंग मचावेजी ।। स० ७ ।।
प्रेम पीन अर्चन सद्गुरु को, पुनम पुनम सोमवार ।
वाद्य निनाद तूर पुन झल्लर, करे सुविधि सुविचार जी ।। स० ८ ।।
कर अग्नि वर संवत सुखकर, नन्द चन्द्र शशिवार ।
पौष मास प्रतिपत् दिन भेट्यां, शुक्ल पक्ष अधिकारजी ।। स० ९ ।।
सुर गिरि में नन्दन वन शोभे, तारक मे दिनकार ।
शरद चन्द्र जिनहंससूरीश्वर, कुशल कुशल करतारजी ।। स० १०।।
सद्गुरु धर्मशील परभावे, कुशल होत नित सहाय ।
'ऋद्धिसार' पर महर करीने,अविचल लील बतायजी ।। स० ११ ।।

धर्मवर्धनोपाध्याय रचित

३५. जिनकुशलसूरि सवैया

राजै थूँभ ठौर ठौर ऐसौ देव नांहि और,
दादौ नाम से जगत्र जस गायो है ।
अप्पने ही भाव आय पूजे लोक लक्ख पाय,
प्यासन कुं राण मांही पाणी आण पायौ है ।।
वाट घाट शत्रु थाट हाट पुर पट्टण मे,
देह गेह नेह सुं कुशल वरतायो है ।
'धर्मसिंह' ध्यान धरै सेवकां कुशल करै,
साचौ श्री जिनकुशल सूरि नाम यूं कहायौ है ।।२।।

अगरचन्द रचित

३६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–सुणियो वातां राव सदाशिव)

कुशल गुरुजी अरज सुणीजे, दरशण दीजे महाराजा ।
दासपै महिर करो सद्‌गुरुजी,मन वांछित होवे ताजा ।। कु० १ ।।
सोमवार ने पूनम दिवसे, दरसण कूं श्री संघ आवे ।
एक वार सद्‌गुरु ने समरे, मनचिन्त्या फल वे पावे ।। कु० २
।। पुण्यवान परतापचन्द के, पुत्र पांच पांडव कीना ।
श्री सद्‌गुरु की भक्ति करके, नर नारी लाहो लीना ।। कु० ३ ।।
लंगड़ा लूला पले पांगला, कोढी शरणे आन पड़े ।
एक वार सद्‌गुरु ने समरे, कंचन सी काया सुधरे ।। कु० ४ ।।
डाकण वगतर भूत भयंकर, एवी वाधन आन पड़े ।
उन वेला सद्‌गुरु ने समरे, कदेय न उनका रोम खिरे ।। कु० ५ ।।
जेसलमेर के अमरसागर मे, थूंभज खूब बण्या भारी ।
क्षेमचन्द सिद्ध मुनि 'अगरचन्द'ने,करी लावणी शुभकारी।। ।

अभय रचित

३७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–तेरा ही आधार परम धणी)

कुशल करो रे महाराज कुशल गुरु ॥ कु० ॥ टेर ॥
सेवक ऊपर करुणा करके, दीजै सुख समाज ॥ कु० १ ॥
आधि व्याधि अरु विपत व्यथा सब, दूर करो गुरुराज ॥ कु० २ ॥
आपद उदधि सूं पार उतारो, राखो मेरी लाज ॥ कु० ३ ॥
संकट विकट निकट नहीं आवे, समरण श्री गुरुराज ॥ कु० ४ ॥
तुम गुण नाम जहाज जगत में,अशुभ हरण शिव काज ॥ कु० ५ ॥
'अभय' महा सुख दाई सद्गुरु,सब देवन सिरताज ॥ कु० ६ ॥

अभय रचित

३८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–तिताला वहार)

जिनकुशल सूरिन्द गुरु सदा नमो ॥ टेर ॥
सुख सम्पत्ति ऋद्धि सिद्ध सव हाजर, देश देशान्तर कांई भमो ॥ जि.१॥
वाट घाट अरु विखमी विरियां,विघ्न बुराई दूर गमो ॥ जि. २
॥ अहनिश नाम मंत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित्त रमो रगो॥ जि.३
॥ इक मन ध्यावे वांछित पावे,विपत व्यथा सव दगो दगो ॥जि. ४॥
'अभय' महा सुख संपति पावो, थिर थानक थिति जमो जगो ॥ जि.५ ॥

अभय रचित

३९. जिनकुशलसूरि स्तदन

(तर्ज–केरवा)

सेवो सुगुरु सुखदाय रे ॥ सेवो० ॥ टेर ॥
श्री जिनकुशल सूरीसर साहिव, नव निध वांछित दाय रे ॥ से. १ ॥
आधि व्याधि और दोषी दुश्मन, नाम लियां भग जाय रे ॥ से. २ ॥
केशर चन्दन अक्षत कुमकुम, पूजो चित्त हिय लाय रे ॥ से० ३ ॥
वाट घाट अरु बिखमी विरियां, समर्यां होत सहाय रे ॥ से० ४ ॥

'अभय' महा सुखदाई सद्गुरु, पग पग वांछित थाय रे ।। से० ५ ।।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४०. जिनकुशलसूरि स्तवन

आज आनन्द भयो, सुगुरु मेरे आज आनन्द भयो ।
गणधारी गुरु महिर पसाये, दोहग दूर गयो । सु. आ. १ ।
सूरत बिंदर सोहे मिंदर, आदू एह जयो । सु. ।
बहु नर नारी चित्त हित धारी, दरस सरस उमह्यो । सु.आ.२ ।
पद युग पूजै तसु अघ धूजै, लायक दरस लह्यो । सु. ।
बिरुद बडालो सुगुरु छत्रालो, जग त्रय सुजस जयो । सु. आ.३ ।
सुप्रसन होवै सुनिजर जोवै, तसु दुःख दूर गयो । सु. ।
दौलत दाता तिम सुख साता, 'अमर' आनन्द भयो । सु. आ.४ ।
कुशल कुशल गुरु महिर पसायै, दोहग [illegible] । सु. ।
जे गुरु ध्यावै वंछित पावै, ए जस आद [illegible]यो । सु. आ. ५ ।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - पूरवी बसंत)

ऐसे कुशल सूरिंद नीके रंग, मंडन [illegible] मचाये ।ऐ ।
ताल कंसाल मृदंग मनोहर, वाजित्र चंग बजाए ।ऐ. १।
मिल मिल सुश्रावक सुविवेकी, गहिर वसन्त गवाए ।ऐ. २।
चन्दन चोवा अबर अरगजा, छिड़कत भक्ति सुभाए ।ऐ. ३।
घटा मंडाणी जिम श्रावण घन, अबीर गुलाल उडाए ।ऐ. ४।
हस हस छंदै देत तरोटा, आनंद अंग न माए ।ऐ. ५।
मिल मिल टोरी खेलत होरी, भवि गुरु भक्ति भराए ।ऐ. ६।
'अमरसिन्धुर' चित हित उछंरगे, फाग वसन्त सुहाए ।ऐ. ७।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - वसन्त)

कुशल सूरीसर ध्यावो रे, परमाणंद पावो ।कु०।
इल उदयो सुरतरु अवतारी, वारी जाऊं वार हजारी रे ।पर. १।
परचा साचा जग में पेखी, नमय सदा नर नारी रे ।प. २।
जल दातार विरुद जग चावो, दिन दिन चढता दावो रे ।प. ३।
भविजन मिलनै भावना भावो, गहिर सुरै गुण गावो रे ।प. ४।
'अमर' सेवक नै अपणो जांणी, सुख सम्पदा वधावो रे ।प. ५।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-फाग)

जय बोलो कुशल सूरीसर की, जय बोलो ।
नर नारी मिल फाग राग में, गुण गावो निस दिन हरखी ।ज० १।
जैतसिरी माता भल जायो, सूरत देव कुंवर सरखी ।ज० २।
मंत्री जेल्हागर कुलमंडन, गुण मणि ग्रह्या जिण आकरपी ।ज० ३।
वरस अढार में जिण व्रत लीनो, हित धर के मन में हरखी ।ज० ४।
चन्द पटोधर ए चिरंजीवो, बलिहारी राजेसर की ।ज० ५।
भूमण्डल भविजन प्रतिबोधे, वाणी सुधारस घन वरपी ।ज० ६।
तेर नव्यासी वरषे ततखिण, सुरपति मघवा दुति सहरपी ।ज० ७।
'अमरसिन्धुर' ए अनुपम साहिब, नमो सदा पद युग निरखी ।ज० ८।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-जयतश्री)

जुगवर जग जयो, सेवे श्री कुशल सूरिंद ।।जु०।।
श्रुतसागर महिमा निलो, एतो समता रस नो कन्द ।

पर उपगारी परगड़ौ, एतो खरतर गच्छ नो इन्द ।।जु० १।।
ठाम-ठाम थिर थापना, वारी नमै सदा नर वृन्द ।
पद युग मे प्रेम सुंवारी, गावै भल गुण छन्द ।।जु० २।।
आराध्यां आवै मुदा वारी, फेड़े दोहग फन्द ।
सुख सम्पद दे सेवकां वारी, अधिक धरी आणंद ।।जु० ३।।
देव न दूजो गुरु समो वारी, तेजे जांणि दिणंद ।
'अमरसिन्धुर' ओलग करै, वारी चन्द्रोपम कुलचन्द ।।जु० ४।।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-परभाती)

महिरबान महाराज बड़े है, श्री जिनकुशल सूरिदा ।
मौजी साहिब है मणिधारी, परतिख पूनिम चन्दा ।म० १।
सकलाई साची जग निरखी, नमन करै नर वृन्दा ।
पूजक जन ना वंछित पूरै, कलि मझ सुरतरु कन्दा ।म० २।
अपणां जांणी नै अलवेसर, समपीजै सुख वृन्दा ।
सुनिजर छत्र छांह कर सद्‌गुरु, 'अमर' वधै आनन्दा ।म० ३।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-वसन्त)

मेरे सद्‌गुरु कुशल सूरीसर जू कै, चरण कमल चित्त लावो ।
चरण कमल चित्त लावो सुगुरुजी कै, चरण कमल चित्त लावो ।।
सद्‌गुरु कुशल सूरीसर जू कै, मै चरण कमल चित्त लावो ।
प्रह सम मिल ने पूज रचावौ तो, भावन मन शुद्ध भावो।।मे. स. १।।
परसिद्ध अष्ट सम्पदा पावो, नव निध गेह वधावो ।
सकजा सुत सुन्दर वर नारी, लीला लच्छ लहावो ।मे. स. २।
आराध्यां गुरु ततखिण आवो तो, दरस सरस दरसावो ।
महिर करो साहिब अब मेरा तो, आणंद अधिक वधावो । मे. स. ३।

साता दाता हो सद्गुरुजी, दिन दिन चढते दावो ।
अमरसिन्धुर की आसा पूरो तो, परम सुजस जग पावो । मे. स. ४।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-वसन्त)

श्री जिन कुशल सूरिंदा रे, पूजौ परमाणंदा ।श्री०।
श्री खरतर गच्छ नायक लायक, चन्द पटोधर चन्दा रे ।पू. श्री. १।
आराध्यां गुरु ततखिण आवै, सुनिजर धरिय सूरिंदा रे ।पू. श्री. २।
संकट तिमिर हरेवा साहिब, दीपत तेज दिणंदा रे ।पू. श्री. ३।
चिन्ता चूरै परता पूरै, वर दै वंछित वृन्दा रे ।पू. श्री. ४।
सुत संपत सुन्दर सुखदायक, कलि मझ सुरतरु कन्दा रे ।पू. श्री. ५।
अपणां दास जांणी अलवेसर, दूर हरो दुख दंदा रे ।पू. श्री. ६।
'अमर' समर श्री सद्गुरु सांचौ, अहनिसि होय आणंदा रे।पू. श्री. ७।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-वसन्त)

श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब, चन्द सूरिंद पटधारी ।
विरुद वडाला श्रवण सुणी नै, वारि जाऊं वार हजारी ।श्री. १।
अपणां जांणी नै अलवेसर, मत मूकौ विसारी ।
अरियण जण नां कन्द निकन्दौ, ज्यूं कापै रूंख कुठारी ।श्री. २।
सुख संपत दीजै गुरु मेरे, हेत हियै वहुधारी ।
'अमर' तणी आशा पूरीजै, सुनिजर निजर तिहारी ।श्री. ३।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

४९. जिनकुशलसूरि स्तवन

सुगुरु कुशल सूरिंद सेवो, सुगुरु ० ।
अधिक धर उछरंग अहनिस, नमै जास नरिंद । से० १।

सकल सूरीसर मुकुट सम, देव मझ जिम इंद ।
चन्द नो पटधार चावो, दीपै तेज दिणंद । से० २ ।
आराधीयां गुरु तुरत आवै, वर दीयै सुख वृन्द ।
कष्ट चूरै विघन दूरै, कलै सुरतरु कन्द । से० ३ ।
वर पुत्र संपद कलत्र दायक, गच्छ खरतर इन्द ।
सुभसी संपद दीयै मुनिजन, प्रसिद्ध परमाणंद । से० ४ ।
भूत प्रेत पिशाच नां भय, वले तसकर वृन्द ।
नाम मन्त्रै निकट नांवै, दफय हुए सहु दन्द ।से०५।
सेवक भणी दै सुख संपद, महिर धरीय मुणिंद ।
सकल सुखदायक सुगुरु, ए चवै मुनि इम चन्द ।से०६।

वाचक अमरसिन्धुर रचित

५०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - रेखता)

सुगुरु तै देव साचा है, रिदै तुझ ध्यान राता है ।
दुनी मै देव बहु देखै, गिणंता ज्ञान नहि लेखैं ।१।
चावो पटधार तूं चन्दा, इलायै अवतर्यो इन्दा ।
नमै तउ चरण नर नारी, छाजेड़ां वंश छत्र धारी ।२।
मोटो गुरुदेव मणधारी, वारी जाऊं तोहि बलिहारी ।
कुशल गुरु सकल सुख दीजै, संपदा 'अमर' मोहि दीजै ।३।

अमृत रचित

५१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - मारूजी साथीडा रे साथे, घणे घणे हाथे मद पीवो रे ला)

सद्गुरु श्री जिनकुशल सूरीसर महिमाधीसरु रे लो,
खरतर गच्छ ना राया लो ।स०।
वाटै अरियण थाटै राखण तुं वरु रे लो,
तुझ गुण जन जन गाया लो ।स०१।
अटवी वडीयां प्यासै रलीयां सेवकां रे लो,

सबलै संकट पाडियां लो ।स०।
जलधर धारा कर विसतारा मेहका रे लो,
वरसात विषमी विरीयां लो ।स०२।
भरीये दरीये चलते तरीये अति घणा रे लो,
वाजिन अगन सखाई लो ।स०।
हलचल मांगे भागण लागे प्रवहणां रे लो,
समर्या होत सहाई लो ।स०३।
वनचर भूचर सबला खेचर प्रेतिका रे लो,
झोटिंग सध मझारा लो ।स०।
डायण सायण रोहिण रंगिण बालिरे रे लो,
लोपै कोई न कारा लो ।स०४।
चिन्ता चूरण मन हित पूरण कामना रे लो,
घर घर होत वधाई लो ।स०।
'अमृत' दासै सद्गुण भासै स्वामि ना रे लो,
होज्यो सांमि सहाई लो ।स०५।

आनन्द रचित

५२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - सोरठ)

सद्गुरुजी म्हांरे मन भाया, मन भाया मेरे दिल भाया ।।
जब से दृष्टि पड़ी गुरु चरणे, देखत लयन लुभाया ।।स०१।।
थे म्हारां मे आखर थांरा, यही संयोग बनाया ।
सेवक 'आनन्द' कुशल सुरीन्द को, निरख नवे निध पाया ।।स०२।।

आनन्दचन्द रचित

५३. जिकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - अलिहिया - वेलाउल)

कुशल सूरीन्द सहाई हमारे ।।कु०।टेर।।
मन वांछित सुख सब ही पूरे, यातें फिकर न कांई ।

शिव सुखदायक हो मेरे नायक, गच्छपति नाथ सवाई ।।कु०१।।
परचा पूरण चिन्ता चूरण, श्री गुरु नाम कहाई ।
प्रगट विरुद जग में सद्गुरु को, सेवक को सुखदाई ।।कु०२।।
श्री जिन कुशल सूरीश्वर ध्याऊं, चरण कमल चित लाई ।
मुझ को एक भरोसे तेरो, और न कोई सुहाई ।।कु०३।।
सेवक ऊपर सुनिजर कीजे, या मे नवनिधि पाई ।
'आनन्दचन्द' सदा सुख दीजे, दिन दिन होत वधाई ।।कु०४।।

आलमचन्द रचित

५४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - सारग मल्हार)

कुशल गुरु कुशल करो भर पूर ।
आधि व्याधि चिन्ता सब मोरी, सो अब करिये दूर ।कु.१।
ए जु तुम बिन कौन सहाई, मेरो यातै संकट चूरि ।
कर जोरी 'आलम' वीनवे, मो मन वंछित पूर ।कु.२।

आलमचन्द रचित

५५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - सारंग)

नित कुशल सूरीसर ध्याइये ।।टेर।।

सद्गुरु सेवा मन शुद्ध करके, मन वांछित फल पाईये ।।नित०१।।
चिन्ता संकट कष्ट विडारण, श्रीगुरु नाम कहाईये।नित०।
दीनदयाल दया कर मोपर, दुःख सब दूर गमाइये ।नित०२।।
मकसूदाबाद में थुंभ थप्यो है, शुभ वेला सुखदाइये ।नित०।
राखी पूनम सद्गुरु भेट्या, हरख हरख गुण गाइये ।नित०३।।
प्रहसम सद्गुरु ध्यान धरीजे, चरण कमल चित लाइये ।नित०।
'आलम' कुं निज सेवक जाणी, आनन्द अधिक वधाइये ।नित०४।।

आलमचन्द रचित

५६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(फाग, दधि दूंगी सांवरे बीन बजाय दधि दूंगी, ए राग मे)

मोहि एक भरोसो सद्‌गुरु केरो ।
सुमिरण ध्यान धरूं इक तेरो, हूं चरणन को चेरो ।मो.१।
तन सुख धन सुख दायक सद्‌गुरु, सुनिजर कर सेवक होरो ।मो.२।
दीनदयाल कृपा कर स्वामी, दूर करो दुख मेरो ।मो.३।
श्री जिन कुशल सूरिंद सद्‌गुरु, संकट कष्ट निवेरो ।मो.४।
'आलमचंद' सेवक जानी, दीजे सुख घणेरो ।मो.५।

आलमचंद रचित

५७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - अलहीयो वेलाउल)

श्री जिन कुशल सूरिंद ध्यावो, श्री जिन कुशल सूरिंद ।
सद्‌गुरु ध्यान धरे सोइ, पावे परमाणंद ।श्री.१।
सेवक जन मन वंछित पूरण, सुखदायक सुखकन्द ।
सद्‌गुरु ध्यान धरूं इक तेरो, दूरि करो दुख द्वन्द ।२.।
संकट कष्ट विकट टलि जावे, लहिये सुखं को वृन्द ।
याते सद्‌गुरु शरणें आयो, सेवक 'आलमचन्द' ।श्री.३।

आलमचन्द रचित

५८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी - ढोला रही मनाय मनाय अवोलो म्हासु क्यू लीयोजी)

सद्‌गुरु श्री जिनकुशल सूरिंद सहाई माहरे जी म्हारा राज
सद्‌गुरु खरतर गच्छ सिणगार दास हुं ताहरो जी ।म्हा.१।
सद्‌गुरु मरु मंडल मे गांम समीयाणो सोहतो जी ।म्हा.।
सद्‌गुरु तात जिल्हागर जांण सकल मन मोहतो जी ।म्हा.।
सद्‌गुरु जैतसिरी इण नांम माता जसु जाणीये जी ।म्हा.।

सद्गुरु संवत तेरे सेतीस जनम परमांणिये जी ।म्हा.३।
सदगुरु सेंताले संयम भार वैरागे आदर्यो जी ।म्हा.।
सद्गुरु साधु गुणे संयुक्त, सुजस बहु ...ार्यो जी ।म्हा.४।
सद्गुरु सतहुत्तरे जसु पाट पाटण मे पाइयो जी ।म्हा.।
सद्गुरु श्री जिनकुशल सूरीस सवाई कहाइयो जी ।म्हा.५।
सद्गुरु निव्यासीये सुर पसार लह्यो देरावरे जी ।म्हा.।
सद्गुरु सोभा सरस सुवास सहुकौ ऊचरे जी ।म्हा६।
सद्गुरु निरधनीयां ने धन्न, देवे सुख सम्पदा जी ।म्हा.।
सद्गुरु....... ।म्हा.७।
सद्गुरु ध्यान धरे नित जेह सहु सुख ते लहे जी ।म्हा.।
सद्गुरु समर्या होय हजूर विरुद साचो वहे जी ।म्हा.८।
सद्गुरु सरणागत साधार कि दुख दूरे करे जी ।म्हा.।
सद्गुरु नाम जपे नित जेह सहू सुख ते वरे जी ।म्हा.९।
सद्गुरु महिमा अधिक अपार कहुं हुं किण परे जी ।म्हा.।
सद्गुरु तूं छे दीनदयाल दया कर मो परे जी ।म्हा.१०।
सद्गुरु सहु जग मे परसिद्ध सुजस बहु व्यापीयो जी ।म्हा.।
सद्गुरु मकसुदाबाद मझार थूंभ थिर थापीयो जी ।म्हा.११।
सद्गुरु संवत अठार इकवीसे कीधी थापना जी ।म्हा.।
सद्गुरु माही पूनिम कुजवार पूरी मन कामना जी ।म्हा.१२।
सद्गुरु श्रावक सोभाचंद मोतीचंद जस लीयो जी ।म्हा.।
सद्गुरु मनह मनोरथ जेह तेह सफलो कीयो जी ।म्हा.१३।
सद्गुरु परता पूरणहार जगत जस लीजीये जी ।म्हा.।
सद्गुरु सेवक ने सुखदाय हिव सुनिजर कीजीये जी ।म्हा.१४।

कलश -

इम सुक्ख कारण दुख निवारण श्री जिनकुशल सूरिंद ए ।
ध्यावे गावे जेह नित प्रति ते लहे परमानन्द ए ।
आसकरणजी शिष्य पभणे एम 'आलमचन्द' ए ।
मनह मनोरथ पूर म्हारा संघ सदा चिरनन्द ए ।१५।

उदयरत्न कृत

५९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र.सं.१८७४)

(ढाल - व्रजवासी कांन तैं मेरी गागर चोरी)

आज मच्यो रे उछाह श्री जिनकुशल के थुंभ आगे ।
पहिर पोसाषां नव नव अंग, जात्री आये करत उछरंग ।आ.१।
गहमहि लागि रही इण वार, दादा साहिब कै दरबार ।आ.२।
अति आडंबरै वध्यौ रंगरोल, घणे घुर रहै है जंगी ढोल ।आ.३।
गुहिरी सी नोबत गाजै है जोर, गहरी लगै है नगारां री ठोर ।आ.४।
सरणाइ बोलै सुविसाल, रमझम रमझम वाजै दोय ताल ।आ.५।
धपमप मद्दल करै रे धोंकार, थेइ थेइ गंध्रप नाचै तेवार ।आ.६।
गोरी गावै गीत रसाल, भावै वधावै भर मोतिन थाल ।आ.७।
भामणी लेवै रे भामणा आय, लुलि लुलि वंदै अंग न माय ।आ.८।
चोवा चंदन गंधन अपार, महिकै गुरु कै थंभ मझार ।आ.९।
केसर कस्तूरी मे गरकाब, कीने कुशल सुरिंद के पाय ।आ.१०।
श्रीसंघ वाटे सीरणी आज, श्री सद्‌गुरु के परसण काज ।आ.११।
संवत अठारै सै चिहुतरै वर्ष, गुरु कुं भेट्यो गडालै मै हर्ष ।आ.१२।
वीनवै 'उदयरतन' कर जोड़ि, संघ कुं देज्यो संपति कोड़ि ।आ.१३।

उदयहर्ष रचित

६०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - मल्हार)

जी हो भाव धरी ने भेटीये, जी हो दादो मोटो देव ।
जी हो भटनेरइ महिमा भली, जी हो सारे सुरनर सेव ।।
सुगुरु जी दीजे दरिसण आज, जी हो श्री जिनकुशल सूरीसरु ।१।
जी हो साहिब सुं सिरताज, जी हो नर निरधन धनवंत ।
जी हो पुत्र कलत्र पांमे भला, जी हो गुरु तूठा गुणवंत ।सु.२।
जी हो परतिख परतो पूज्य रो, जी हो जाणे जग सहु लोय ।

जी हो अटवी मांहे ऊधरे, जी हो तिसियां पावे तोय ।सु.३।
जी हो संकट सायर विच पड्यां, जी हो तारे गुरु ततकाल ।
जी हो दूठ दीवाणे झगड़तां, जी हो पिसुन करे पैमाल ।सु.४।
जी हो करि केहर भय उपसमे, जी हो फणिपति होइ फुल माल।
जी हो प्रेत पिसाच भूत शाकिनी, जी हो कसे न कोई जंजाल ।सु.५।
जी हो कहे कवीसर केतला, जी हो इण परि तुझ अवदात ।
जी हो जीह एक मुख जेहने, जी हो तुम गुण तो असंख्यात ।सु.६।
जी हो तिण कारण प्रभु आगले, जी हो अरज करूं कछु एह ।
जी हो प्रारथियां पाहीडो मतां, जी हो हिव वरसावो मेह ।सु.७।
जी हो घटा करी घन ऊमही, जी हो जल वरसावे जोर ।
जी हो तुटी .... कढो काले, जी हो जिम हरखे जीव मोर ।सु.८।
जी हो पूजंतां गुरु पादुका, जी हो घसि केसर घनसार ।
जी हो पवित्र हुइ पूनिम तिथे, जी हो कर नैवेद्य प्रकार ।सु.९।
जी हो सद्‌गुरु तूं सुरतरु समो, जी हो वंछित फल दातार ।
जी हो गुरु तूं मात पिता सही, जी हो सरणागत साधार ।सु.१०।
जी हो जेसांणे जाणे सही, जी हो जोधपुरे जयकार ।
जी हो अहीपुर आस्यां पूरे, जी हो सोझित मांहे सुविचार ।सु ११।
जी हो मालपुरे वलि मेडते, जी हो महिमावंत मुनिराय ।
जी हो देराउर दीपे सदा, जी हो बीकाणे वरदाय ।सु.१२।
जी हो सांगानेरे आगरे, जी हो लाहोरे लही नूर ।
जी हो राजपुरे राजे सदा, जी हो दुक्ख करे सब दूर ।सु.१३।
जी हो नवेनगर नितु निरखतां, जी हो अड सिध आवे आप ।
जी हो मोज दीये मुलताण मे, जी हो सकल टले संताप ।सु.१४।
जी हो खेजडै लेखो करी, जी हो बीलाड़े बहु प्रेम ।
जी हो जैतारण जुहारतां,जी हो कुशल कुशल करे खेम ।सु.१५।
जी हो सांचोरे सोभा धरे, जी हो जालोरे जस वास ।
जी हो गांम नगर पुर पाटणे, जी हो ए गुरु पूरे आस ।सु.१६।
जी हो संपति दीजे संघ ने, जी हो अविचल इम अभिराम ।

जी हो हीरराज वाचक कहे, जी हो 'उदयहरख' तुम नाम ।सु.१७।

उदयहर्ष रचित

६१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - बिदली नी)

श्री जिनकुशल सूरीश गुरु पूजो, इण समवड अवर न दूजो ।
हो दादो सुखदाई, गुरु मेरो सुखदाई, दिन दिन प्रभु तेज सवाई।हो दा.१।
जिनचन्दसूरि पटधारी, दादो परतिख पर-उपगारी ।हो दा.।
जल थल विषमी वाटइ, दादो दुसमण सगला दाटइ ।हो दा.२।
दादो एक मनां आराधो, मन चीन्त्या कारज साधो ।हो दा.।
मृगमद केसर भेली, वलि फूल लेइ रायवेलि ।हो दा.३।
गुरु चरणे पूजा कीजइ, घरि बैठां लील वरीजइ ।हो दा.।
श्री सेत्रावै दादो दीपइ, नवनिध रहे जासु समीपइ ।हो दा.४।
मधुकर जिम पंकज लीनउ, तिणां रो मन प्रभुजी सुं भीनउ ।हो दा.।
वाचक हीरराज पसायइं, श्री 'उदयहरख' गुण गावइ ।हो दा.५।

कनककीर्ति रचित

६२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - वेलाउल)

दादो जी दौलति दाता । दा.
सुख संपति आपे सेवक ने, जे गुरु ध्याने राता ।दा.१।
वाट घाट भय संकट टाले, पाले जिम सुत माता ।
कुशल करो जिनकुशल सूरीसर, 'कनककीरति' गुण गाता ।दा.२।

कमलहर्ष रचित

६३. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिन कुशल सूरीसरु, सुख संपति दाता ।
सांनिधकारी सेवकां, जग मांहि विख्याता ।श्री.१।
कलियुग सुरतरु सारिखो, त्रिभुवन जन त्राता ।
सेवक नें पाले सदा, जिम बालक माता ।श्री.२।

दुख दोहग दूरे हरे, दरसण हुइ साता ।
'कमलहरख' वांछित फले, गुरु के गुण गाता ।श्री.३।

कल्याणविजय रचित

६४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – प्रभाती)

दरशण द्यौ दुःख भाजै दादा, दरशण द्यौ दुःख भाजै ।।टेर।।
साचे मन समरे सद्गुरु कूं , तिणकूं तुरत निवाजै ।।दादा.१।।
नाल नवल गढ़ थान मनोहर, भाव भक्ति अति छाजै ।।दादा.२।।
यात्रा करण श्री संघ उमाह्यो, पंच शब्द धुनि गाजै ।।दादा.३।।
ठोड़ ठोड़ थानक सद्गुरु का, महिमा अधिक विराजै ।।दादा.४।।
'कल्याणविजय' कहे कुशलसूरीन्द गुरु, खरतर गच्छ में विराजै ।।दादा.५।।

कवि रंग रचित

६५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल – अधिक आणदा हो, वदु आदि जिनदजी, एहनी)

चढते दिवाजै हो बाजा जैत रा, दिन प्रति जसु दरबार ।
प्रसिध प्रमाणे हो माने मोटा महीपति, ओलग वरण अढार ।च.१।
सद्गुरु सवाई हो महिमा दिन दिन सोभतो, वरदाई जस वास ।
कीरति कहिवा हो आवै जात्री अति घणा, अंग धरी उल्लास ।च.२।
सुथिर विराजै हो थुंभ समूरत थापना, जेसांणे जयकार ।
प्रगट प्रभावें हो ध्यावे भावे ध्यान सुं, सुख पावे सिरदार ।च.३।
पर उपगारी हो परतिख परचा पूरवे, श्रीजिनकुशलसूरिंद ।
सेवक निवाजे दो गुरु गिरुया गुणे, दीपे तेज दिणंद ।च.४।
थांनिक थांनिक हो थिर जस महिमा ताहरी, सांनिध करण सुचंग ।
सोह चढावे हो साहिब खरतरगच्छ धणी, प्रणमे नित 'कवि रंग' ।च.५।

कविराज रचित

६६. जिनकुशलसूरि स्तवन

हूँ तो अरज करूं कर जोड़ ने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ।

सद्गुरु सुनिजर जोयजो साहबा।
विरुद घणा छे राजरा जी कांई, सूरि सकल शिरताज ।।स. १।।
थांरे रावल राणा राजवी जी कांई, थांरा पूनम पूजे पाय ।।
केशर अगर नै कुमकुमाजी कांई, मृगमद रही महकाय ।।स.२।।
थांरे घुड़ला रा आगल घूमराजी कांई, ढुलत चम्मर गज ढाल ।।स.।।
कारण सेवे कामनी जी कांई, निरख करे जी निहाल ।।स. ३।।
थांरी ठावी ठोडै थापनाजी कांई, उदयापुर आंबेर ।।स.।।
थांरी महिमा भली गुरु मेड़ते जी कांई, सालूड़े बाली सांगानेर ।।स.४।।
थांरी जोत घणी घणु झिगमिगे जी कांई, वधती गढ बीकाण ।।स.।।
आस्या पूरण आवजो जी थे तो, देरावर रा दीवान ।।स.५।।
म्हारी विनतड़ी भल मांनज्यो जी कांई, दादाजी दीनदयाल ।।
कुशल सदा 'कविराज' जी नै कांई, पाटोधर प्रतिपाल ।।स.६।।

कानसुन्दर रचित

६७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल–ऊमादे भटियाणी हो राव मालजी सुं रुसणो, एहनी)

आज भलो दिन ऊगो हो,
मैं भेट्या कुशल सूरिन्दजी खरतरगच्छ सिणगार।
घणां दिलारो हो दिल में देखण रो हूंतो, सो भेट्यो आज दीदार ।आ.१।
मैं हिव मन सुं हो जाण्यो छे निहचल करी, देवां में तूं देव ।
चंद पटोधर हो अंतरजामी माहरो, तिण तुझ कर स्युं सेव ।आ.२।
केसर चंदन सुं हो चरचुं नितप्रति प्रह समें, पद पंकज गुरुराज ।
श्रीफल निरमल हो लेई सद्गुरु भेटणे, सुन्दर सकल समाज ।आ.३।
पूरब देसे हो श्री मकसूदाबाद में, थुंभ थप्यो सुभ ठांम ।
बाग हजारो हो श्री भागीरथी ऊपरे, उत्तर दिस में धांम ।आ.४।
अंब कदम्ब हो सपरी केल सुहावना, मोगरा जायज वाद ।
मालती नींबू हो कटहल श्रीफल बोरडी, फूली वहु फुलवाड ।आ.५।
धन धन आ करणी हो कीधी सोभाचन्द साहजी,लघु भाई मोतीचन्द ।

गोत कातेला हो पृथिवी मांहे परगड़ा, अधिक धरी आनन्द ।आ.६।
संघ सकल मिलि हो मुख से जय एहवो वदे, धन धन श्रावक अवतार ।
हिलिमिलि करते हो दोनूं भाई हरख सुं, सकल कीयो जमवार ।आ.७।
रिधि सिधि नवनिधि हो दादो देवे सेवकां, पूरै वांछित आस ।
भाव सहित सुं हो नव नेवज गुरु आगे धरे, अधिक धरी उल्लास ।आ.८।
संवत अठारे हो बावीसे वरसे सही, श्रावण उज्वल मास ।
पूनिम राखी हो संघ सकल मिली, प्रेम भयो परकास । आ.९।
इण कलिजुग में हो और न कोई देवता, कीरति सुणिये कान ।
दास 'सुन्दर' नी हो साहिब सुणिज्यो वीनती, दीज्यो वंछित्त दान ।आ.१०।

कुम्भ रचित

६८. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्रीजिनकुशलसूरीस, देउ दरसण वर दाता ।
समर्या सांनिध करो, हरो दुख हिव द्यो साता ।१।
परता पूरण प्रगट दुनी, इक साहिब दीठो ।
महिरवान महि मज्झ, महामुनि दरसण मीठो ।२।
दुख रोग पीड दूर करो, सुख संपति द्यो सासता ।
कहे 'कुम्भ' सुगुरु साहिब सुणो, मन वंछित पुरो अच्छता ।३।

कुशलक्षेम रचित

६९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - अपणे घर बैठि लील करो, एहनी)

कुशल करण अब कुशल करो, सेवक ना संकट दूर हरो ।
मन शुद्ध प्रणमुं पाय मुदा, कुशल नांम नित कुशल सदा । कु. १।
वैरी दुसमन दूर हरो, सुखदायक मनैं सुक्ख करो ।
दूर निवारो आपदा, कुशल नांम नित कुशल सदा ।कु. २।
सांनिधकारी सुक्ख करै, सेवक नै संकट देखि हरै ।
समर्या हाजिर वीर मुदा, कुशल नांम नित कुशल सदा ।कु. ३।
विषमी वारे दुख निवारै, अडवडिया नैं आधारे ।

ध्यांने ध्यावे कोई मुदा, कुशल नांम नित कुशल सदा |कु. ४|
अटवी मांहे ध्यांन धरे, सद्गुरु तिणनें सांनिध करे ।
नाम लिये दुख होवे न कदा, कुशल नांम नित कुशल सदा |कु. ५|
तिसीयां तोय पावे नीर, नागा भूखा ने देवे भोजन खीर ।
ध्यांन धरे मन शुद्ध सदा, कुशल नांम नित कुशल सुदा |कु. ६|
समर्या सद्गुरु आय मिले, ततखिण तन रा दुक्ख टले ।
'कुशलक्षेम' मुनि कहे मुदा, कुशल नांम नित कुशल सदा |कु.७|

कुशलक्षेम रचित

७०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(दाल - चिन्तामणि म्हारी चिन्ता चूर, एहनी)

कुशल नांमे संकट दूर, जिम तिम जावे उगते सूर ।
सेवक नी सब चिन्ता चूर ।१।
सद्गुरु देज्यो सुख भरपूर, अलीय विघन आरति हर दूर ।
होज्यो समर्या हाजरा हजूर, जिम जागे मुझ पुण्य अंकूर से. २।
नित करज्यो हमरो प्रताप पंडूर, परिवार सदा हम पोते पूर ।
टालो संकट सगला दूर, सेवक नी सब चिन्ता चूर ।३।
तुम समर्या दुख जावे दूर, पांमे भोजन मोतीचूर ।
तुम नामे सुं दुश्मन दूर, सेवक नी सब चिन्ता चूर ।४।
'कुशलखेम' कर चढतो नूर, मन वंछित मुझ आस्या पूर ।
सदा सुप्रसन जिनकुशलसूर, सेवक नी सब चिन्ता चूर ।५।

कुशलारचित

७१. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्रीजिनकुशल सूरिंद जी हो कि, सेवक अरज सुणो ।
चिन्ता चित मेटो जी कि, आपो सुख घणो ।१।
पूनिम पूजतां हो कि, दादो सुखदाई ।
नमतां सोमवारे हो कि, कुमणा न रहे कांई ।२।
मुझ मने आवे हो कि, रन में अन पांणी ।

बीछड़ियां बालहा जी कि, आइ मिले आंपणी ।३।
सद्गुरु सेवतां हो कि, निरधन धन पावे ।
पूतीये अपूत हो कि, दीपे वड़ दावे ।४।
गुरु पग पूजतां हो कि, मांने राय राणा ।
हरखंतां गावे हो कि, गुरु जस देवांगना ।५।
तुझ नांमे मोटा हो कि, जस जग मे पसरे ।
हीरा लाल मोती हो कि, वर आये सौरे करे ।६।
गुरु गुणवंता जी कि, गौरी मिल गुणवंती ।
सेवक सुखी होवे जी कि, पेखे हंस पूरन्ती ।७।
वल्हाग वंस संघ ने जी कि, सद्गुरु सुखदाई ।
आसू वदि दसमी वंदणा 'कुशला' री, महिर निजर वधारो हो ।८।

क्षमाकल्याणोपाध्याय रचित

७२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - सजम थी सुख पामिये, एहनी)

श्री व्रधमान जिनेसरू, शासन नायक सार ।
सुगुरुजी धन धन तास परम्परा, जिहां एहवा गुणधार,
सुगुरुजी श्री जिनकुशलसूरिसरू ।१।
मरु मंडल मांहे भलो, नगर सिवाणो नांम ।
जेल्हागर मंत्री जहां वसे, रिद्धि समृद्धि सुधांम ।सु. श्री. २।
गुणवंती तसु गेहिनी, जैतसिरी सुपवित्र ।
तसु अंगज सुरतरु समो, छाजेड़ां कुल छत्र ।सु. श्री. ३।
सुविहित संवेगी भला, श्रीजिनचन्द सुरिन्द ।
तसु उपदेस थी ततखिणे, पूज्या बोध अमन्द ।सु. श्री. ४।
यौवन वय संयम ग्रह्यो, वारी विषय विकार ।
बहुविध विद्या संग्रही, पाम्या पदवी सार ।सु. श्री. ५।
देस विदेस विहार थी, प्रतिबोध्यां बहु प्रांण ।
जिनशासन उजवालियो, सेवी श्रीजिन आंण ।सु. श्री. ६।

ज्ञान लैं जाणी करी, निज आयु अवसान ।
देरावर पुर आदर्यो, अणसण अविचल ध्यांन ।सु. श्री. ७।
च्यार सरण चित में धरी, खामिय जीव निकाय ।
सुरलोकें पुहतां सही, गुणवंता गुरुराय ।सु. श्री. ८।
आसू सुदि पूनिम ससी, दरसण पहिलुं दीध ।
तिण तिण दिन महिमा घणी, पुहवी मांहि प्रसिद्ध ।सु. श्री. ९।
गांम गांम थइ थापना, सेवे सब नर नारि ।
समकितवंत सुहामणा, सोहे सुर अवतार ।सु. श्री. १०।
अमृत सम जिन धर्म नो, सेवक जिनधर्म जांण ।
गुण गावे सद्गुरु तणा, एम 'क्षमाकल्याण' ।सु. श्री. ११।

क्षमानन्दन रचित

७३. जिनकुशलसूरि स्तवन

सांगानेर विराजे, गुरु परतिख तिहां राजै रे,
म्हारा सद्गुरु जी नी बलिहारी ।।
मन वांछित पूरो म्हारा म्है तो चरण पखालां थांरा रे ।। म्हा० १ ।।
सोवन भरिय कचोली मांहे वलि मृगमद केशर घोलि रे । म्हा०।
पूजूं सद्गुरु पाया, पूज्यां सब पाप पुलाया रे ।। म्हा० २।।
पूनम नें सोमवारा, थांरे यात्री आवे अपारा रे । म्हा० ।
शुद्ध मन पूजा कीजै, दुःख दोहग दूर हरीजे रे ।म्हा० ३।
इण कलयुग मांहे थांरी कीरती चिहुँ दिशि मांहे सारी रे ।।म्हा०।।
तुम्ह सम अवर न कोई, दीठो मैं परतिख जोई रे ।।म्हा० ४।।
सालूड़े वाली सांगानेरे, जिहां राज करे नितमेव रे ।।म्हा.।।
श्री संघ मिल तिहां आवे, जिहां लूणीया गोठ रचावे रे ।। म्हा० ५।।
ज्ञानसार गुरुराजा, ज्यांरा वाजे सदाई वाजा रे ।।म्हा०।।
'क्षमानन्दन' गुण गावे, कर जोड़ी शीश नमावे रे ।।म्हा० ६।।

क्षमारत्न रचित

७४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग- ठुमरी)

सद्गुरुजी सुनो मोरी अरजी । सद्गुरु०।।टेर।।
पहिले काम किये बहुतेरे, अपना विरुद विचारी ।
पग पग चूक पड़ी सद्गुरुजी, मै मतलब का गरजी ।।सद्०१।।
ध्यान तुम्हारो कबहुं न ध्यायो, पूजा करी नही तेरी ।
तोही सेवक वांछित पूर्या, याही थांरी मरजी ।।सद्०२।।
निश्चय सेती तुम गुण गावे, तुरत कटत दुःख बेड़ी ।
भक्त उधार कहावत जग मे, ताहे करत हूँ अरजी ।सद्०३।।
अवर देव को मै नही ध्याऊं, शरण गही मै तेरी ।
दूर थकी मै भेटण आयो, विपत दशा सब हरजी ।।सद्०४।।
कुशल गुरु का मैं हूं सेवक, लोक जाने सब कोई ।
'क्षमारत्न' की वीनती सुनके, दर्शन दो सद्गुरुजी ।।सद्०५।।

क्षेमरत्न रचित

७५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग- भैरवी-धमार)

कुशल गुरु दरशन दीजे हो ।।टेर।।
खरतर गच्छपति कुशल सूरीन्द गुरु, मुझ पर महर धरीजे हो ।कु०१।।
पतित उधारण विरुद तुम्हारो, इतनी अरज सुणीजे हो ।कु०२।।

आधि व्याधि अरु दोपी दुश्मन, ये सब दूर हरीजे हो ।।कु०३।।
'क्षेमरतन' सेवक कूं निश दिन, सद्गुरु सानिध कीजे हो ।।कु०४।।

क्षेमरत्न रचित

७६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - कालहरा)

पूजवा चाली रे सुगुरु ने, पूजवा चाली ।।टेर।।
सोल शृंगार सझी सहु वनिता, टोली मिल मिल चाली ।।
उज्ज्वल थाल भरी मुक्ताफल, सुन्दर हाथे झाली ।।सु०१।।

गीत गावन्ती बहु गुणवन्ती, सद्‌गुरु शरणे आवे ।
कनक कचोली केशर घोली, चरणां री पूज रचावे ।।सु०२।।
हियड़े उल्लसती नाटिक करती, ठम ठम पाय ठमकावे ।।
पांच सात मिल सरिखी बाला, लुल लुल सीस नमावे ।।सु०३।।
मुखरो मटको हाथां केरो लटको, आंखडली अणियाली ।
हाव भाव कर सहु भविजन ना, चित चोरे मतवाली ।।सु०४।।
श्री जिन कुशलसूरीन्द के आगे, भावना इणविध भावे ।
सब सखियन की भक्त्ति देखि के, 'क्षेमरतन' गुणगावे ।।सु०५।।

क्षेमरत्न रचित

७७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - रंगीली)

मेरे होउ सहाई सद्‌गुरु ।।मेरे हो०।।टेर।।
तुझ समरण थी अड सिद्ध नव निद्ध, कमणा न रहे कांई ।।
अलिय विघन सब दूरे जावे, वांछित फले सदाई ।।मे०१।।
आधि व्याधि अरियण अरु विखमी, वेला सब टल जाई ।
पग पग कुशल सूरीन्द गुरु सानिध, करुणा कर दिखलाई ।।मे०२।।
दुष्ट निकन्दन सेवक रंजन, खरतर गच्छ वरदाई ।
'क्षेमरतन' कूं दरशण दीजे, दिन दिन चढत सवाई ।।मे०३।।

क्षेमरत्न रचित

७८. जिनकुशलसूरि स्तवन

तर्ज सुण सजनी मोरे वैना

सद्‌गुरु विन मोहि कुं पल न परत ही, कोइ उपाय वतावौ री ।सु.१
कुसलगुरु मोकुं वतावै, सोइ साजन होइ रे ।
लाख बधाई तोकुं देऊं, ऐसा न मिलै कोई रे ।सु.२।
सुजस सुण्यौ में सगले जगमे, हुं आयो तुम पासै रे ।
क्षेमरतन की याही वीनति, पूरो मुझ मन आस रे ।सु.३।

क्षेमरत्न रचित

७९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - आशावरी)

हम कूँ शरण तिहारी हो दादा राखो शरण तिहारी ।।ह०।।टेर।।
मन की बात कहुं तुझ आगल, जो हुय सुनिजर थांरी ।
व्याधि मिटावो, कान्ति वधावो, संपत दो सुखकारी ।।ह० १।।
कासूं भर निद्रा मे पोढे, अजहु न बात विचारी ।
आलस छोड़ो करुं निहोरो, सुणिये बीतक सारी हो ।।ह० २।।
माहरे दोला दोषी दुश्मन, लपट्या आण करारी ।
तेहने हणिये, ढील न करीये, अेही अरज हमारी हो ।।ह० ३।।
घणुं घणुं सूं ओलंभो दीजे, सा कीजे मनुहारी ।
अपनाइत कर जाण पतित नी, करिये गुरु रखवारी हो ।।ह० ४।।
अब तो दिवस घणा ही बीता, सुप्रसन्न हुयो गणधारी ।
श्री जिन कुशल सूरीश्वर जी नी, 'क्षेमरतन' बलिहारी हो ।।ह०।।

खुशालचन्द रचित

८०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - धमाल)

कुशल सूरीसर सेवियै हो, मन धरि अधिक उल्लास, वारि जाउं ।
दुक्ख सकल दूरे हरे हो, दीये सुख संपति रास ।
मन शुद्ध कुशल गुरु मांनीये हो, अहो मेरे प्रभुजी मानत आणंद थाय।१।
कुशलै साजन सहु मिले हो, कुशलै दुक्ख मिटाय । वा.।
कुशल थकी वांछित फले हो, नाम जसु सुखदाय ।म.२।
जिनचंद पटधारी जोयो हो, छाजहड़ वंश उदार ।वा.।
जैतसिरि सुत जनमीयो हो, जेल्हागर तात विचार ।म.३।
ज्योति सकल जग जागती हो, परता पूरण हार ।वा.।
नर नारी भावे करी हो, पूजे विविध प्रकार ।म.४।
कुंकुम चन्दन घसि करी हो, गुलाब अबीर मिलाय ।वा.।

अंग विलेपन कीजिये हो, आपद दूर नखाय ।म.५।
मरुयो दमणो मालती हो, चंपक केतक जाय ।वा.।
माल रची बहु कशसनी हो, ठावत कण्ठ दीपाय ।म.६।
कण्ठ सुकंठे प्रभु तणा हो, गावो गीत धमाल ।वा.।
'खुस्याल' भणी प्रभु कीजिये हो, सकल सुक्ख विशाल ।म.७।

खुशालचन्द रचित

८१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-पंचम, तूं आतम गुण जांण रे लाल, ए देशी)

तूं चेतन गुरु मांन रे मांन, तास नांम धरो ध्यान रे ध्यान ।तूं.।
सद्‌गुरु महिमा अनन्त विचार, मै किम कहतां पांमुं पार ।तूं.।
नर नारी पूजे धरी नेह, मन चिन्तित फल पावे तेह ।तूं.१।
वन विपमे गुरु पावे नीर, भूख्या सद्‌गुरु आपे खीर ।तूं.।
विद्या बुद्धि तणो दातार, पुत्र कलत्र धन दे सार ।तू.२।
श्री जिनचन्दसूरि केरो सीस, भेटो सद्‌गुरु आण जगीस ।तू.।
विघन विडारे सारे काज, पूजंता दिन प्रति महाराज ।तू.३।
कुशल मंगल घरि दीठ पडूर, कुशले साजन होइ हजूर ।तू.।
केसर चन्दन कपूर मिलाय,दादो जी पूजो हित चित लाय ।तू.४।
काती सुदि पूनिम सोमवार, जात्रा किनी मन हरख अपार ।तू.।
सेवक परि करो दीनदयाल, महिर निरख मुनि 'खुश्याल' ।तूं.५।

खुशालचन्द रचित

८२. जिनकुशलसूरि स्तवन

मेरे तुम हो स्याम सद्‌गुरु ।मे.।

सुखकरण दुक्ख निवारो, जपि जीहा गुरु नाम ।सद्‌गुरु.मे.।१।
वंछित पूरण चिन्ता चूरण, साधन सुभ मति कांम।
नर नारी बहु भाव धरी ने, पूजत ठामो ठांम ।स.२।
वाटे घाटे दाटे दुसमण, देयण बहु गुरु नांम ।
पुत्र कलत्र राज हय हाथी, नित सब सुख के तुम धांम ।स.३।

अष्ट प्रकार भय जाय दिगंतर, कुशल रिदे धरि नांम ।
परतिख महिमा सद्गुरु केरी, थुम्भ दीपे गांमो गांम ।स.४।
सकल मनोरथ मुझ मन सीधा, दरसण तेरो पांम ।
'खुशालचन्द' मुनि सरण तुम्हारी, चित आठुं ही जाम ।स.५।

खुशालचन्द रचित

८३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - नणदल नी)

श्री जिनकुशल सूरीसरु, साहिब तूं सुविहाण, ।सद्गुरु।
दरसण दीजे कर दया, तुझ दरसण कल्यांण ।सद्.श्री.१।
हूंस मुझ मन अति हुंती, भेटण श्री जगभांण ।स.।
सहू आज सफली थई, देख्या खरतर दीवाण ।स.श्री.२।
दरसण स्वामी रो देखने, मोहि रह्यो मुझ मन्न ।स.।
नयण विकस्वर नित हुवे, ताढक पामे तन्न ।स.श्री.३।
जैतसिरि माता जस लीयो, जेल्हागर सुजांण ।स.।
वंस छाजहड़े वंदीयै, कविजन करय वखांण ।स.श्री.४।
संवत तेरे सेतीस मे, समीयाणे सुखकार ।स.।
जनम भयो जिनकुशल नो, दीयण वंछित दातार ।स.श्री.५।
संवत तेरे सेंताल मे, कीयो परत संसार ।स.।
दीक्षा सद्गुरु आदरी, सफल कीयो अवतार ।स.श्री.६।
संवत तेरे सतोतरे, सूरिपद सुखकार ।स.।
श्री जिनचन्द सूरीसरु, दीपो चित्त उदार ।स.श्री.७।
संवत तेरे नब्यासीये, देरावर दीय सुक्ख ।स.।
सुर पदवी साहिब आदरी, भवियण भंजे दुक्ख ।स.श्री.८।
सकल थुम्भ सद्गुरु तणो, वन्दे नर नारि वृन्द ।स.।
साहिब सांनिध जसु करे, सेवे धरी आणंद ।स.श्री.९।
अरि करि सिह ऊभा रहे, अटवी मांहि उदार ।स.।
सहु सद्गुरु ना नांम थी, सुख पामे श्रीकार ।स.श्री.१०।

संवत अठार इकवीस में, माही पूनिम सोमवार ।
थुम्भ सकल थिर थापीयो, मकसुदाबाद मझार ।स.श्री.११।
सोभाचंद जग जस लीयो, मोतीचन्द करी शक्ति ।स.।
थान थाप्यो सद्गुरु तणो, मन में धरी गुरु भक्ति ।स.श्री.१२।
सेवक नो उदय करो, गच्छ तणो गुरुराय ।स.।
सुखानन्दजी प्रसाद थी, 'खुस्याल' तणो सारो काज ।स.श्री.१३।

खुशालचन्द रचित

८४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - विहाग)

सद्गुरु भेटे कुशल सूरिन्दा ।
आरति चूरण सब सुख पूरण, तेजे नेह दिणंदा ।स.१।
आज घड़ी दिन सफल वखाणो, पायो मैं सुखकंदा ।स.२।
मुझ मनि एक सहारा तैरा, दूरे दिन आव मंदा ।स.३।
सत्यसागरजी शिष्य 'खुसाल' का, काटो तसु दुख दंदा ।स.४।

खेत रचित

८५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - पूरवी गौडी)

कुशल सूरिन्द गुरु महाराजा, महाराजा गुरु महाराजा ।कु.१।
श्री जिनचन्द सूरिन्द पाटोधर, सब देवन के सिरताजा ।कु.२।
सांगानेरैं आप विराजैं, खरतरगछ के गुरुराजा ।कु.३।
जे नर ध्यावें सोई फल पावे, पुत्र कलत्र वंछित काजा ।कु.४।
अष्ट सिधि अरु नव निधि संपति, 'खेत' कुं द्यौ सुखसाजा ।कु.५।

गुणकमल रचित

८६. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिनकुशल सूरीसरु, मन वंछित दाता ।
कामधेनु सुरतरु समा, आपे सुखसाता ।श्री.१।
समर्या संकट चूरवे, जस तेज धराता ।

मुनि गुणकमल नमै सदा, सद्गुरु गुण राता ।श्री.२।

गुणवर्धन रचित

८७. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिन कुशल सूरि सुखदायी । आरति चिन्ता संकट चूरो, वांछित पूरो सदाई ।श्री.१।

भवियण भावे सद्गुरु वन्दो, बहुविध पूज रचाई । 'गुणवर्धन' गणि एम पयंपे, गुरु नामै सुखदाई ।।श्री.२।।

गुणविनयोपाध्याय रचित

८८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - झीझोटी)

दादा पूर हो वंछित मोरा, वली वली करूं रे निहोरा ।
साचो साहिब जग में जाणी, चरण नमूं नित तोरा ।।दादा.१।।
अमरसरे गुरु महिमा जागी, तो सम कोइय न तोले ।
बाल गोपाल सबे मन हरख्या, श्री गुरु ना गुण बोले ।।दादा.२।।
वाट घाट तूं ही साधारे, चोर चक्र भय वारे ।
माता जिम बालक प्रतिपाले, तिम हूँ तोरे सारे ।।दादा.३।।
लखमी लीला संपत्ति सोहे, घर भक्तो के होवे ।
'गुणविनय' कहे साहिब सांचो, सोम निजर कर जोवे ।।दादा.४।।

गुलाब रचित

८९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - तुम्हे नाथ नइयाँ तिरानी पडेगी)

श्री जिन कुशल सूरि गुरु ।।टेर।।

श्री ओम् ओम् श्री श्री जिन कुशल सूरि गुरु ।।ओम्० १।।
जि -- जिम जिम ध्याओ, उत्तम फल पावो ।
न -- नमो नित्य नत निष्कामी गुरु ।।ओम्० २।।
कु -- कुमति कपट के काटन हारो ।
श -- सकल सुख शिव सम्पति सब गुरु ।।ओम्० ३।।

ल -- लख चौरासी को मेटन हारो ।
सू -- सूरज ज्योति समान कुशल गुरु ।।ओम्० ४।।
रि -- रिपु दल जीतन तुमरो नाम है ।
गु -- "गुलाब" तेरी शरण पड़ा प्रभु ।
रु -- रूप अनूप स्वरूप सुखद गुरु ।। ओम्० ५।।

गूजर रचित

९०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग -- गोड-मल्हार, आड़ा चौताला)

कैसे कैसे अवसर मे, गुरु राखी लाज हमारी ।।
मो कूं सबल भरोसा तेरा, चन्दसूरि पटधारी ।।कै०१।।
तुम बिन अवर न कोई मेरा, या जग में हितकारी ।
मेरा जीवन हाथ तुम्हारे, देखो आप विचारी ।।कै०२।।
आगे तो केई बेर हमारी, चिन्ता दूर निवारी ।
अबकी विरियां भूल मत जइ हो, सद्गुरु पर उपगारी ।।कै०३
अब की लाज दास गूजर की, रखियो गुरु यश धारी ।
मेरे कुशल सूरीन्द 'गूरु' तेरा, बड़ा भरोसा भारी ।।कै०४।।

चन्द रचित

९१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - नट्ट)

कुशल गुरु कुशल अति कीजिये ।
सेवक ने सांनिध करज्यो नित, वंछित सुख मुझ दीजिये ।कु.१।
थांन थांन सद्गुरु थुम्भ सोहे, महिमा अति देखीजिये ।कु.२।
'चंद' कुं चरण सेवा दीजे, सुनिजर नित राखीजिये ।कु.३।

चन्द रचित

९२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - थांने सोहे पंचरंगी पाघ, सोने रो छोगलो मारु जी)

मुझ पूर मनोरथ आज, चरणां आवियो दादाजी ।

परचा पूरण देव, जतावत लावीयो दादा जी ।१।
मुझ हियड़े हरख न माई, निसाई दुख री घड़ी दादा जी ।
अन्य देव थी सेव्यां, गरज न का सरी, दादाजी ।२।
तुम द्यौ वंछित दांन क, मुझ परि करि मया, दादाजी ।
झाल्या ताहरा पाय क, सुनिजर कर दया, दादाजी ।३।
'चंद' कहे कर जोड़, तूं ही छे साहिबो, दादाजी ।
संकट कष्ट पुलाय के, तुम्ह ने गायबो, दादाजी ।४।

चन्द वाचक रचित

९३. जिनकुशलसूरि स्तवन

र.सं.१८३३

(तर्ज - सागानेर विराजे)

पूजो रे पूजो पूजो, दादे सम देव न दूजो रे,
भवियां भाव धरीने पूजो ।।टेर।।
परतिख आशा पूरे, दादो संकट सगला चूरे रे ।।भ०१।।
जिनचन्द सूरि पटधारी, दादो खरतरगच्छ अधिकारी रे ।।भ०२।।
समर्या सांनिधकारी, ये अजब कला गुरु थांरी रे ।।भ०३।।
दोनूं राह मन मे धारी, कोई आन न खंडे थांरी रे ।।भ०४।।
चन्दन केशर भेली, वलि मृगमद मांहे रेली रे ।।भ०५।।
चरण कमल इम चरचो, इण गुरु नो मोटो परचो रे ।।भ०६।।
पूज्यां वांछित पावे, सहु दुनिया ए यश गावे रे ।।भ०७।।
छाजेड़ां कुल चन्दो, ए कुशल गुरु चिर नन्दो रे ।।भ०८।।
एहीज पंचम आरे, सेवक जन ने साधारे रे ।।भ०९।।
बांकी रे वेला वारे, जे गुरु नो नाम संभारे रे ।।भ०१०।।
संवत अठार तेतीसे, वदि मिगसर तीज जगीसे रे ।।भ०११।।
धन धन हिमत कोठारी, जिन यात्रा कराई सारी रे ।।भ०१२।।
चौरासी गच्छ मुनि संगे, गुरु पाय नम्या मन रंगे रे ।।भ०१३।।
दान तिहां घणो दीधो, सहु संघ मे ए जश लीधो रे ।।भ०१४।।
'चन्द वाचक' इम ध्यावे, गुरु दादो चढते दावे रे ।।भ०१५।।

चन्द रचित

१४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - इक दिन कोई साथ आयो, ए देशी)

श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिब सुगुण निधान,
श्री खरतर गच्छ नायक लायक जगत प्रधान ।
मनवंछित पूरण वलि चूरण कष्ट करूर,
वंदो भविजन भावे श्री गुरु उगते सूर ।१।
श्रवणे सुभ मति सुगुरु तणी महिमा मंडाण,
उलस्यो अमचो आतम अंगो-वंग प्रमाण ।
ज्युं जलनिधि जलकण नें गिणतां नांवै भांन,
सुगुरुराय ना गुण नो केम कथुं प्रमाण ।२।
संत साधारे आरती वारै भांजै भीड,
परवस सबला अरिजन केरी पाले पीड ।
जन मन मोहन सोहन सुन्दर सुवास,
महिर करी ने श्रीगुरु पूरो अमची आस ।३।
नर नारी ना झूल झूल मिल मिल हरख घणेह,
मोरां ने जिम वल्लभ लागे रितु नो मेह ।
अधिक उमंगे नित बहु रंगे तुझ गुण भाल,
जावे ध्यावे मन्न में, मंदिरीये सुविसाल ।४।
चंद पटोधर चावो चिहुं दिस ज्युं नभ चंद,
निरमल नयणें आज लहय अम्हे परमाणंद ।
जेसलमेर ना संघ सकल नी पूरो आस जगीस,
विधसुं चंद वाचक गुरु चरणें प्रणमें सुसीस ।५।

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

१५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – ए मेरे दिले नादान)

गहराये भँवर गहरा, संकट से घबराऊँ ।

उपक्रम से भरा जीवन, मैं कैसे सुलझाऊँ ।।
घनघोर घटा गरजे, चहूँ दिश बिजली कडके ।
तूफानी लहरों में, उन्माद उठा चढ़के ।
हे कुशल करण गुरुजी, कैसे मै पार जाऊँ ।
जल पे थी कभी नैय्या, अब जल है नैय्या मे ।
जहरीले सागर की, इस भूल भुलैया मे ।
निर्देश कुशल यदि हो, क्षण भर मे तिर जाऊँ ।
जब तेरा सहारा है, फिर भय क्यूं होने लगा ।
विनती यदि तूने सुनी, फिर मै क्यूं रोने लगा ।
गर कुशल हो पतवारे, नाविक मै बन जाऊँ ।
हे कुशल सूरीश्वर ताथ, अब अभयदान देदो ।
भयमुक्त करो जीवन, चरणो मे 'चन्द्र' ले लो ।
तेरी चरण-धूलि पाकर, चरणामृत बन जाऊँ ।

चारित्रसुन्दर रचित

९६. जिनकुशलसूरि स्तवन

तुझ देखन मोहि चाहि चाहिवो ।
कुशल कुशल मै सेवक नित आपरो,
जांणो तूं सहू के है साहिबो ।तु.१।
घणां दिना री मुझ मन हूंती,
आज परम सुख पायबो ।तु.२।
'चारित्रसुन्दर' ने अपणो जाणो,
नित नित तुझ गुण गायबो ।तु.३।

चारित्रसुन्दर रचित

९७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - प्रभाती वेलाउल)

नित उठ कुशल सूरिन्द के, चरणें चित्त ल्यावो ।
पूजो प्रणमो प्रेम सुं, वंछित सुख पावो ।नि.१।

भावे सद्गुरु भेटीये, दोहग दुख जावे ।
दुरजण सहु सज्जन हुवे, जे नर सद्गुरु गावे ।नि.२।
सद्गुरु दीनदयाल छो, सुनिजर मुझ कीजे ।
'चारित्रसुन्दर' दास कुं, अपनौ कर लीजे ।नि.३।।

चारित्रसुन्दर रचित

९८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - बिन्दली नी)

प्रणमुं कुशल सूरिन्दा, प्रह उठी मन आणंदा हो, सद्गुरु सेविये ।१।
चरणां सद्गुरु रहिये, तो मनवंछित सुख लहिये हो ।२।
सद्गुरु तुम सम देवा, इण कलियुग और न एहवा हो ।३।
तिण कारण मन मोरे, नित चरणां के चेरो हो ।४।
निसि दिन ध्यान तुम्हारो मोने, लागे मोहनगारो हो ।५।
माय ताय गुरु मेरो, हुं सरण चरण को चेरो हो ।६।
सुख संपति मुझ दीजे, मुझ ऊपरि सुनिजर कीजे हो ।७।
दरसण थी दुख जावे, 'चारित्रसुन्दर' सुख पावे हो ।८।

जयकीर्त्ति रचित

९९. जिनकुशलसूरि स्तवन

हां हो रे देवा श्री जिनकुशल सूरीस ने, पूजो प्रह सम धर मानू ए ।१।
हां हो रे देवा पूज्यां पातिक भय टले, दुसमण सहु जावे नासू ए ।२।
हां हो रे देवा कामित दायक सुखकरु, सेवां सुरवृक्ष समानू ए ।३।
हां हो रे देवा नांम थकी संपति मिले, आरति सहु भाजूए ।४।
हां हो रे देवा जयकीरति तुमचो अछे, निस दिन सद्गुरु ध्यानू ए ।५।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

१००. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - गजल)

कुशल गुरु क्यो न देते हो, कहो दर्शन मुझे अपना ।
अगरचे दूर रहना था, बनाया दास क्यो अपना ।।१।।

जलीलों को जलाना ही, अगर मंजूर है तुमको ।
विरुद तब दीनबन्धु का, रखा फिर नाथ क्यो अपना ।।२।।
तुमारा मै हुआ जब से, सदा तब से तड़फता हूँ ।।
न तड़फाना तुम्हें लाजिम, शरण दो देव अब अपना ।।३।।
मुसीबत मेट दो मेरी, दरश दो क्यो करो देरी ।।
गुजारिश है 'कवीन्दर' की, निभालो नेह बस अपना ।।४।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

१०१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - महावीर तुम्हारी)

गुरुदेव तुम्हारी कीर्ति सुन, मम तन मन अति हर्षाय ।टेर।।
तुम कीर्ति पुनीत गंगा, फरसे जो भविजन अंगा ।
सर्व पाप ताप होय भंगी रे, गगा से अधिक सुखदाय ।।गुरु०।।१।।
तुम कीर्ति पूरण गीता, अमृत सम जो नित पीता ।
ताको सब होय सुविधा, नर भी दिव्य अमर बन जाय ।।गुरु०।।२।।
तुम कीर्ति सूर्य प्रकाशे, मिथ्यामति घूक विनाशे ।
परमोदय प्रकट प्रकाशे, भविजन हृदय कमल विकसाय ।।गुरु०।।३।।
तुम कीर्ति कल्पलता सी, जिसके चित्त हो विकाशी ।
सब संपदा की दासी, सारे शूल फूल हो जांय ।।गुरु०।।४।।
गुरु कुशल कुशल गुरु आज, है मालपुरा शिरताज ।
हरि पूज्य गरीबनिवाज, तेरी कीर्ति 'कवीन्द्र' सुगाय ।।गुरु०५।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

१०२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - चरण का शरणा देकर जल्दी तारो)

देदो जी देदो दादा दर्शन देदो ।।टेर।।
भक्तन के रखवाल स्वामी विरुद तुम्हारा,विरुद निभालो गुरुदेव ।।दा.१।।
नाल ग्राम धन्य धन्य, दादा तीरथ राजे आया हूँ दर्शन काज ।।दा.२।।
सुरतरु सुरमणि रूप, दर्शन सदा तुम्हारे, पूरण यही विश्वास।।दा०।।३।।
जिनचारित्रसूरिराज-पावनतर उपदेशे, सुअवसर मिला आज ।।दा०।।४।।

मन्दिर पुनीत पुराण-जीर्णोद्धार करावे, विबुधन के मन भाय।।दा०।।५।।
हाकिम कोठारी आज बीकानेर निवासी, भैरुंदान धन भाग ।।दा०।।६।।
मन्दिर देव विमान, सुन्दर कला विराजे, गुरुवर महिमा अपार ।।दा०७।।
रस निधि निधि विधु साल, माधव सुद दशमी को,
वेदी प्रतिष्ठा समारोह ।।दा०८।।
सुखसागर भगवान, जिनहरि पूज्य हमारे,
शरण में आये हम आज ।।दा०९।।
साधर्मीवत्सल आज, पूजा ठाठ अनूपम,
जय जय बोले भक्त समाज ।।दा०१०।।
बलिहारी गुरुदेव, तेरी अजब पुण्याई ।
'कवीन्द्र' करे गुणगान ।।दा०।।११।।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

१०३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - तेरे द्वार खड़ा भगवान भगत भरदे रे झोली)

हे अशरण शरण आधार दरश दे दो रे दादा - दरश०
हे महामहिम अवतार,परम गुरु ज्ञानी गुण भण्डार-दरश०।।टेर।।
धरम मूल मारग दिखलाकर, अधरम दूर भगाया ।
जस जीवन ज्योतिर्मय पावन, शासन जैन जगाया रे ।।शासन०।।
अहिंसक भाव विकास विशेष मिटाया, भव-भय भव कलेश
।।दरश.।।१।। ब्रह्मयोग बलधारी भारी, महिमा अपरंपार ।।
दुखियों को सुखिया कर देते, आप रूप अविकार रे ।।आ०।।
नजर-दौलत गुरु दया निधान, जगत मे मंगल मूल विधान ।।दरश.।।२।।
जब जब पड़े विकट संकट तब, दादा लाज रखी ।।
दुख का आज समय सहायक बन, कीरति रखो अखी रे ।।की०।।
सुनो हे! तारणहार महान, कुशल गुरु जंगम युगपर-धान ।।दरश.।।३।।
आत्म शुद्धि वाले भावी सर्वोदय अधिकारी रे ।।
सद्गुरु चरण शरण पाते जन, धन उनकी बलिहारी रे ।।ध०।।
वही हो सुखसागर भगवान परम गुरु हरि पूज्य गुणवान ।।दरश०।४।।

नित 'कवीन्द्र' गुरु दिव्य कीर्तियां, सुन सुन कर सुख पाऊं ।।
काम बनादो सद्गुरु मेरे, चरणो मै सीस नमाऊँ रे ।।च०।।
हे तीन भुवन सिर भूप- दादा! सुरमणि सुरतरु रूप ।।दरश०।५।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

१०४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - भैरवी - तिताला)

कुशल गुरु कुशल करो भरपूर, परम गुरु दो दर्शन दुःख चूर ।।
सेवक जन मन वांछित पूरन, समर्या होय हजूर ।।कु.।।१।।
परम दयाल प्रेम रस पूरन, अशुभ हरण भय दूर ।
संघ उदय कर सद्गुरु मेरा, विनवे श्री 'जिनचन्दसूर' ।।कु०।।२।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

१०५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - फतमलरी)

गच्छपति खरतरगच्छ सिणगार, कीरत भूमण्डल कहे ।।गच्छ०१।।
देखण तुज्झ दीदार, राजा राणा आगल रहै ।।ग०२।।
रतन कचोलो विसाल, केशर चन्दन घस भलो ।।ग०३।।
गूंथ गूंथ फूल माल, पूजे निर्मल मन करी ।।ग०४।।
देश बंगाला मझार, थुंभ झलाहल दीपतो ।।ग०५।।
परचा पूरणहार, इन कलिकाल ने जीपतो ।।ग०६।।
रहसुं तुमारे पाय, दरशन दीजे मो भणी ।।ग०७।।
पटधर कुशल सूरिन्द, महिमा जस जग जागती ।।ग०८।।
आपे सदा 'जिनचन्द', चरण कमलनी विनती ।।ग०।।९।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

१०६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - तुम पर जाऊ बलिहारी, मै वारी)

तुझ सूरत सुखकारी मै वारी जाऊं ।।तु०।।टेर।।
श्री जिन कुशल सूरीसर साहब, तुम हो पर उपगारी ।।

कलि-युग में गुरु नाम तुम्हारो, है परचो अतिभारी ।।मैं०१।।
पूनम पूनम ने सोमवारे, आय मिले नर नारी ।।मैं०आय०श्री०
केशर चन्दन पुष्प माल सूं, पूजा रचे अति भारी ।।मैं०पू०।।श्री०।।२।।
जो सद्गुरुनो ध्यान धरे मन, नित नित बात करारी ।। मैं०नि०श्री०।।
श्री जिनचन्द अधिक उच्छव सूं, यात्रा करी जयकारी ।।मैं०या०श्री०३।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

१०७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - लूअर की)

दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरशन सदा देवो ।।टेर।।
दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समर्था आपे सुख शाता ।
दादो जग बंधव जग गुरु भ्राता ।।दा०१।।
दादो परचा जग सगले पूरे, दादो सेवक़ना संकट चूरे ।
दादो दूरित हरे सहुनी दूरे ।।दा०२।।
दादो अलगां थी यात्री आवे, दादो देखी नेत्रे सुख पावे ।
म्हारा दादा जी नी जोड कोई नावै ।।दा०३।।
दादो राजनगर मांहे छाजे, जिहां सुयश नगारां नित वाजे ।
दादो छोगालां सेहर छाजै ।।दा० ४।।
दादो घस केशर सूखड़ घोली, हाथे लेई सोवन कचोली ।
पूजो दादाजी ने मिल मिल टोली ।।दा०५।।
दादो आरतियां आरति टालै, दादो सेवक जन नै प्रतिपाले ।
दादो जिन शासन नित उजवाले ।।दा०६।।
दादो महिमावन्त महाराजा, दादो राजै खरतर गच्छ राजा ।
दादो समर्था सफल करे काजा ।।दा०७।।
दादो कुशल सूरीन्द बहु गुणधारी, दादो परतिख सुरुतरु अवतारी ।
जाऊं दादाजी नी हूँ बलिहारी ।।दा०८।।
दादो श्री जिनचन्द सूरीन्द पाटे, दादो गाजै गुणियल गह गाटै ।
जसु थांन सोहे जग थिर थाटे ।।दा०९।।

दादा महिर निजर मुझ पर करिये, दादा आरति पीड़ा दुःख हरिये ।
दादा जिम जग जय कमला वरिये ।।दा०१०।।
दादा सेवक ने सांनिध कर जो, दादा दुश्मन ने दूरे हइ जो ।
'जिनचंद' ना मनवांछित फल जो ।।दा०११।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

१०८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - गाजे जिनकुशल गडाले)

दादो जेसलमेर विराजे, दादो दीठां सहु दुख भाजे हो ।दा.१।
अरियण ना कंद उखेले, मन मांन्या साजन मेले हो ।दा.२।
गाम गाम नगर थिर थांरे, नित होई नवला सनमाने रे ।।दा.३।
दादो खरतर गच्छ सहाई, सेव्यां सद्गुरु सुखदाई रे ।दा.४।
वाघ घाट विषम विष चाले, दादो संकट सगला टाले रे ।दा.५।
परगट सद्गुरु का परचा, घस केसर करिये चरचा रे ।दा.६।
जिनचन्द सूरिन्द पटधारी, निरधारां ने द्यो पटधारी रे ।दा.७।
धन दिन भाव बीज तो जाणुं, गुरु मिलवानुं मिल्यो टाणुं रे ।दा.८।
चउविह संघ सहु सचेलो, मंड्यो जिहां गह गट खेलो रे ।दा.९।
अति आडम्बर सुभ खेमे, 'जिणचंद' नमें बड़ रंगे रे ।दा.१०।

जिनचन्द्रसूरि रचित

१०९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - प्रभाती)

श्री जिनकुशल सूरीश्वर साहिब, तुम हो पर उपकारी ।।टेर।।
खरतरगच्छ नायक गुण लायक, जिनचन्द सूरि पटधारी ।।
प्रत्यक्ष परचा पूरण नायक, हो जग मे यशधारी ।।श्री०१।।
सन्त उधारण सुजश वधारण, भीड़ भंजन अति भारी ।।
नाम तुम्हारो कुशल करण जग, वारी जाऊं वार हजारी ।।श्री०।।२।।
जगवच्छल तुम ही हो जगत गुरु, करुणानिधि करतारी ।।
कहे 'जिनचन्द' मेरे हो सद्गुरु, हमे है आश तुम्हारी ।।श्री०।।३।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

११०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - प्रभाती)

समरण होत सहाई कुशल गुरु । दादा मेरे समरण होत सहाई ।
चिन्ता चूरण मंगल पूरण, अब नहीं ढील रहाई ।।कु०१।।
प्रगट प्रतापी इण जग मांहि, भूतल में जश गाई ।
मेरे अेक तूं ही मन-रंजन, नामें नव निधि पाई ।।कु०।।२।।
विघन विदारण सुखकर स्वामी, अरज अेहि उर लाई ।।
परम कृपानिधि साहिब मेरे, 'चन्द' अक्षय नित दाई ।।कु०३।।

जिनचन्द्रसूरि रचित

१११. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - फतमलरी)

सद्गुरु श्री जिन कुशल सूरीन्द, चावो चन्द पटोधरु ।।स०।।
खरतर गच्छ राजिन्द, विरुद बड़ा अलवेसरु ।।स०।।१।।
परतिख पुहवी मझार, कीरत थांरी कलियुगे ।।स०।।
भला कई रे भूपाल, आगल ऊभा ओलगे ।।स०।।२।।
महिमानो मंडाण, भाण तणी पर झलहले ।।स०
जागतो थुंभ जेशाण, मेला नित गह गह मिले ।।स०।।३।।
दुखियां सुख दातार, निरधनियां वहु धन दिये ।।स०।।
सरणाई साधार, हित वच्छल मोटे हिये ।।स०।।४।।
भले रे ऊगो सुविहाण, सफल दिवस भाई वीज नो ।।स०।।
मिल महाजन महिराण, रंग लीनो घणी रीजनो ।।स०।।५।।
आडम्बर उच्छव रंग, जुग जुहार्या जग गुरु ।।स०।।
सुनिजर धरज्यो सूरीन्द, श्री 'जिनचन्द' सु-सुरतरु ।।स०।।६।।

जिनपद्मसूरि रचित

११२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - नाथ तोरी भेटण दो असवारी)

कुशल गुरु की निरखण दो असवारी ।।टेर।।
केशर चन्दन अंबर कुमकुम, मृगमद महक अपारी ।।
अंबर गुलाब केतकी चम्पो, फूल रही गुलक्यारी ।।कु०।।१।।
देव भवन का इन्द्र भवन है, झिगमिग ज्योति विचारी ।
वांछित फलदायक वरदाई, सुर नारी सुखकारी ।।कु०।।२।।
भला भला भूपत ठाठ मचत है, हय गय भीड़ हजारी ।।
रावल राव सेठ सेनापति, आवत हैं असवारी ।।कु०।।३।।
भेरी शंख मृदंग घन बाजत, सुरनाई सुरसारी ।।
गावत है केई मधुर मधुर धुनि, मानव गगन मझारी ।।कु०४।।
गच्छनायक श्री चन्द्र पटोधर, खरतर गच्छ अवतारी ।।
'पद्‌मसूरि' यूं अरज करत है, कुशल कुशल सुखकारी ।।कु०५।।

जिनभक्तिसूरि रचित

११३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(रसं १७८१)

गाजै जिन कुशल गडालै, सेवकना संकट टालै हो ।।गा०।।
परतिख गुरु परचा पूरे, सेवकनी चिन्ता चूरै हो ।।गा०१।।
छतरी नितरी छबि छाजै, विच मे थिर थुम्भ विराजे हो ।।गा०।।
झुलरे यात्री मिल आवै, दादोजी दीठां सुख पावे हो ।।गा०२।।
केशर घस भरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ।।गा०।।
पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ।।गा०३।।
दादोजी दुःखिया सुख देवे, निरधनियां धन नित देवे हो ।।गा०।।
हय हाथी रथ पत्ति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ।।गा०४।।
सकजा सुत सुन्दर नारी, पामे परिकर सुखकारी हो ।।गा०।।
अलगां थी रोग गमावे, गुरु पूज्यां वंछित फल पावे हो ।।गा०५।।
पावे गुरु तिसियां पाणी, तिण वेला जलधर आणी हो ।।गा०।।
ग्रहगोचर चीर जंजालै, पीड़ा हुवे आले मालै हो ।।गा० ।।६।।
वाजै जग जशना बाजा, राजै खरतर गच्छ राजा हो ।।गा०।।

जसु जैतसिरि वर माता, जिल्हागर मंत्री विख्याता हो ।।गा०७।।
सम्वत सतरे सय इक्यासी, काती पूनम परकाशी हो ।।गा०।।
सहु संघ सहित सुविलासे, अधिके धर हेत उल्लासे हो ।।गा०८।।
गुण अनन्त गुरु तेरा, कहतां नहीं आवे पारा हो ।।गा०।।
इम यात्रा करी आणन्दे, 'जिनभक्ति' यतीश्वर वन्दे हो ।।गा०९।।

जिनभक्तिसूरि रचित

११४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - हरियां मन लागो)

थलवट देश सुहावणो, गाम सुहावे नाल रे, सद्गुरु सुण मोरा ।।
तिहां तूं आप विराजियो, खरतर गच्छ रखवाल रे ।।स०१।।
अकल कला कांई ताहरी, तो सम अवर न कोय रे ।।स०।।
ताहरी कीरत सांभली, मो मन अचरज होय रे ।।स०२।।
परतिख परचो पामियो, श्री बीकाणा नरेश रे ।।सा०।।
अे तो कीरती ताहरी, जाणे देश विदेश रे ।।स०३।।
बिखमी वेला वार तूँ, तूँ अमचो आधार रे ।।स०।।
सुजाणसिंह नरराज ने, अरि भय लियो उबार रे ।।स०४।।
अम्हें तुमीणा ओलगू, तूं अमचो सिरदार रे ।। स०।।
वरदाई तूँ सेवकां, परचो दे निरधार रे ।।स०५।।
भाग्य भले तूँ भेटियो, सुथिर गडाले थान रे ।।स०।।
हिव अम्ह पर कीजे मया, दीजे वंछित दान रे ।।स०६।।
दादाजी दीनदयाल तूँ, देवां सिर हर देव रे ।।स०।।
निज सेवक जाणी करी, दीजो पद पंकज सेव रे ।।स०।।७।।
यात्रा सफल 'जिनभक्ति' नी, मानज्यो गुरुराय रे ।।स०।।
वली अेहवी अे वीनती, करो मुझ सदा सहाय रे ।।स०।।८।।

जिनभक्तिसूरि रचित

११५. जिनकुशलसूरि स्तवन

दरसण देज्यो हो हो खरतर गच्छ ना राया दरसण देज्यो ।

सद्गुरु जी सुनिजर करज्यो हो हो म्हां पर महिर धरे ज्यो ।द.।
थे प्रभु प्रभु मोरा हो, म्हे सेवक छां थांहरां ।द.१।
थे कुल चंदा हो, हो जिन कुशल सुरिदा ।द.।
थे गुणवंता हो, हो गुरुदेव महंता ।द.२।
थे सुखकारी हो, हो अडवडियां आधारी ।द.।
जलदातारा हो, हो तुझ विरुद अपारा ।द.३।
चंद पटधारी हो, हौ प्रभु सांनिधकारी ।द.।
समर्या आज्यो हो, हो मनवंछित फल लाज्यो ।द.४।
तौ छत्र छाया हो, हो देरावर रा राया ।द.।
कुशल सदाई हो, हो 'जिनभक्ति' सहाई ।द. ५।

जिनभक्तिसूरि रचित

११६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - हुं तो जाऊ रे सिखर गिर नी जातरा, एहनी)

दादाजी हो करज्यो दया, हूं छूं ताहरो आधीन रे ।
पावस मेउले राखिज्यो, जिम जलनिधि सरवर मीन रे ।दा.१।
इक ताहरो हेज मो आसरो, इक ताहरो हिज आधार रे ।
पोतांनो परिगट जांण ने, सद्गुरु करज्यो संभार रे ।दा.२।
थे छो खरतरगछ राजीया, हुं छुं थांहरी छत्र छांह रे ।
हिव परवाह मुझ ने केहनी, हुं झुम्यो लांबी बांह रे ।दा.३।
तुझ सुं कोई छांनै नही, हुं सुं कहि दाखूं आप रे ।
जे भोलि पड़े छोरु तणी, तो पिण खमज्यो माय बाप रे ।दा.४।
पोतानो सीच्यो सूखड़ो, पोते करज्यो प्रतिपाल रे ।
आपणा अति आतुर देखिने, दरसण दो दीनदयाल रे ।दा.५।
पग पग परचा सहु देखिये, जल दाता तू नितमेव रे ।
हुं ताहरी आसत उपरां, भांमणडे जाऊं देव रे ।दा.६।
तो गुण माला गुणतो रहूं, हुं हीयड़े राखूं ध्यांन रे ।
साहिब जी तोसुं वीनती, मुझ ने देज्यो सनमांन रे ।दा.७।

तूं जिणचंदजी नो पाटवी, जिनशासन चो दीवांन रे ।
श्रीसंघ तणो करिज्यो उदो, जिनकुशल गुरु महिरबान रे ।दा.८।
सेवक नै जे सुख सम्पदा, सो ताहरो हिज परसाद रे ।
'जिनभक्तिसूरीसर' इम भणे, समर्या गुरु देज्यो साद रे ।दा.९।

जिनभक्तिसूरि रचित

११७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी - म्हारा साहिबा हो अमर वधावो गज मोतीयां, एहनी)

म्हारा साहिबा हो श्री जिनकुशलसूरीसरु, खरतरगच्छ रो राय ।म्हारा.।
आज सहेल्यां भेटीयो, पूरब पुण्य पसाय ।म्हा.१।
आज सुहावो दीहडो, लाखीणी खिण एह ।म्हा.।
आज वधावो माहिरो, नयण भराणां नेह ।म्हा.२।
रात दिवस जपतो रहूं, सद्गुरु ताहरो जाप ।म्हा.।
म्हांरे वरते जे उदो, सो सद्गुरु परताप ।म्हा.३।
म्हां ऊपरि करज्यो दया, राखेज्यो छत्र छांह ।म्हा.।
थां सरिखा ज्यांरे धणी, किसीय विमासण नांह ।म्हां.४।
खिण खिण मुझ मन उल्लसे, सुणि सुणि तुझ अवदात ।म्हा.।
आं सद्गुरु ताहरा नांम थी, भेदाणी गुझ घात ।म्हा.५।
धणीयाप म्हां सुं धारिज्यो, करिज्यो अरज प्रमांण ।म्हा.।
आ संघ तणो कीजै उदौ, श्री सद्गुरु महिरांण ।म्हा.६।
राज गरीबनिवाज छो, सेवक जन प्रतिपाल ।म्हा.।
श्री 'जिनभक्तिसूरीस' ने, सुनिजर नयण निहाल ।म्हा.७।

जिनभक्तिसूरि रचित

११८. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिनकुशल सूरीसरु, दादा सुणि अम्हची अरदासो जी ।
अपणो सेवक जांणि ने, दादा पूरेज्यो मन आसो जी ।श्री.१।
दादा केहने तो कोई सरणो, दादा केहने कोई आधारो जी ।
दादा अम्हचे तो तूंही धणी, दादा अरि अम्ह सुं उपगारो जी ।श्री.२।

दादा जो धणीयापो राखस्यो, दादा तो करिस्यो अम्हची भीरोजी ।
दादा विण उपगारे किम रहे, दादा सांमी सेवक सीरो जी ।श्री.३।
दादा मेवाडी ना रूंखड़ा, दादा तूं वाडी रुखवालो जी ।
दादा तिम अम्हने गिण आपणा, दादा वलि वलि करुं संभारोजी ।श्री.४।
दादा जिम मुंहतां सांगा तणे, दादा तूं सांनिधकारी जी ।
दादा तिम ही आस्या अम तणी, दादा पूरो पूरणहारो जी ।श्री.५।
दादा देरावर थी आवीया, दादा बीकंनयर ने भायो जी ।
दादा आय गडाला वासीयो, दादा श्री संघ ने सुखदायो जी ।श्री.६।
दादा संकट वारो सेवकां, दादा दीजे वंछित दानो जी ।
दादा तुम करतां सहु सोहिलो, दादा थे छो जुगपरधानोजी ।श्री.७।
दादा दूर थकांई अम्ह तणी, दादा करिज्यो भक्ति प्रमाणो जी ।
दादा श्री 'जिनभक्तिसूरीस' नी, दादा नित प्रति वन्दना जांणो जी ।श्री.८।

जिनमहेन्द्रसूरि रचित

११९. जिनकुशलसूरि स्तवन

सुगुरुजी समर्या सानिध कीजो, म्हाने दरशण वहेलो दीजो ।।सुगुरु०टेर।।
श्री जिन कुशल सूरीश्वर साहब, जिनचन्द सूरि पटधारी ।
संघ सकल ने आनन्दकारी, संतजनां सुखकारी ।।सु०।।१।।
सुरतरु सम सेवा सुखदाई, भक्त जनां मन भाई ।
नव निधि ऋद्धि वांछित दाई, भीड़ भंजन अधिकाई ।सु०।।२।।
सकल जनाश्रय समरण साचो, जाण्यौ मै निरधारी ।
समरथ सेवा सफल सदाई, इम भाषै जग सारी ।सु०।।३।।
आपद हरण सरण तुझ सेवा, जग में प्रकट कहीजे ।
कामित दायक कलि मे कीरती, सुणतां सुख लहीजे ।।सु०।।४।।
दीनदयाल सर्व गुण लायक, विरुद बड़ाई लीजे ।
श्री 'जिनमहेन्द्रसूरि' तणी हिवे, आशा सफली कीजे ।सु०।५।।

जिनरंगसूरि रचित

१२०. जिनकुशलसूरि स्तवन

कुशल गुरु तुम साहेब सुखदाई ।।टेर।।
प्रत्यक्ष परचो मै दीठो ताहरो, पल मांहे पीड़ गमाई ।
छिन मांहे पीड़ गमाई ।।कुशल०।।१।।
मालपुरे थारों थान विराजे, युगप्रधान सवाई ।
दानव मानव सब कोही पूजे, दुनियां मांहि दुहाई ।।कुशल.।।२।।
सोमवार पूनम तिम दिन पूजत, तिन घर हरष वधाई ।
आशा पूरण चिन्ता चूरण, 'जिनरंगसूरि' सहाई ।।कुशल०३।।

जिनरंगसूरि रचित

१२१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - भूपाली -झपताला)

कुशल गुरु ध्याइये, कुशल मंगल करण, खरतर गच्छ मे अधिक राजे ।
भाव मन में धरी,अगर केशर करी,पूजतां मन तणा दुःख भाजे।।कु.१।।
विकट संकट टले, सजन आवी मिले, आपणा भक्त नी आश पूरे ।
आण मन धार जे सेव गुरु नी करे, तेहनी आपदा जाय दूरे ।।कु०।।२।।
सकल संसार, दरबार सेवे सदा, दिन दिने जासु महिमा सवाई ।। माहरी
लाज गुरुराज तुमने अछे, इम करो जेम वाधे बड़ाई ।।कु.।।३।।
उदय कर उदयकर, अधिक खरतरधणी, 'सूरि जिनरंग' सेवक तुम्हारो ।।
सदा चढती कला,करो गुरु माहरी,विषम वैरी बुरा दूर वारो ।।कु.४।।

जिनरंगसूरि रचित

१२२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - फाग; मन हरखित भयो लोक मे हो आयो मास वसन्त)

चालो दादै जाइये हो, बैठिये मिलि सब सन्त ।
मन रंगे दादो पूजीये हो, अहो पूजते कुशल आनन्द ।म.१।
केसर चन्दन अरगजा हो, कपूर अबीर गुलाल ।
धूप दीप नेवज धरी हो, गाइये गीत धमाल ।म.२।
डफ बाजे मधुर स्वरे हो, मादल ना दोकार ।
नर नारी आवे घणा हो, पूनिम नें सोमवार ।म.३।

परतिख परचा पूरवे हो, मांने सकल जिहांन ।
देरावर जिम दीपता हो, राजनगर थिर थांन ।म.४।
वाट घाट दरबार मे हो, दादोजी रखवाल ।
कर न सके वैरी कदै हो, जेहनो बांको बाल ।म.५।
दिन दिन अधिकी सम्पदा हो, दिन दिन अधिक पडूर ।
सेवक ने सांनिध करो हो, आय ने होई हजूर ।म.६।
श्री जिनकुशल सूरीसरु हो, खरतर गच्छ सिणगार ।
'जिनरंगसूरि' गुण गावतां हो, मंगल जय जयकार ।म.७।

जिनरंगसूरि रचित

१२३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - मिथिला नगरी नो राजियो, ए जाति)

जी हो श्री जिनकुशल सूरीसरु, दादा वीकमपुर सिणगार ।
जी हो महिर करी मोटा धणी, दादा कामित पूरणहार ।
कुशल गुरु मुझ वीनती अवधार ए ।१।
जी हो सुरतरु सम सेवक भणी, दादा कामित पूरणहार ।कु.२।
जी हो महीयल मइं जस महमहै, दादा कोइ न लोपइ कार ।
जी हो परतखि विरुद वहै बडौ, दादा तिसीयां जल दातार ।कु.३।
जी हो मूल थांन देरावरइ, पाटण तू सुरतान ।
जी हो राजनगर खम्भायतइ, दादा नवैनगर सुप्रमाण ।कु.४।
जी हो जोधपुरइ तिम मेडतइ, दादा अहिपुर नइ साचोर ।
जी हो महिम महेवइ आगरइ, दादा दिल्ली नइ लाहोर ।कु.५।
जी हो सांगानेर अमरसरइ, दादा जेसलमेर वखांण ।
जी हो मालपुरै महिमा घणी, दादा फत्तैपुर मुलतांण ।कु.६।
जी हो चरण कमल प्रभु ताहरा, दादा मुझ मन भमर समान ।
जी हो लीन हुओ तुझ नाम सूं, दादा जिम योगीसर ध्यान ।कु.७।
जी हो नाम जपंता ताहरो, दादा लहीयइ अविचल राज ।
जी हो 'रंगविजय' मिलि चिरजीयो, दादा जग पुडि श्री जिनराज ।कु.८।

जिनरंगसूरि रचित

१२४. जिनकुशलसूरि स्तवन

तुम पूजो श्री जिनकुशलसूरि, गुरु नामें संकट जाये दूरि । तु. १ ।
पूनम पूनम ने सोमवार, दरसण देखीजे बार-बार । तु. २ ।
छाजेहड़ वंशे जग विख्यात, जिल्हागर कहिये तसु तात । तु. ३ ।
जैतसिरी माता तणो रे नन्द, गुरु चन्द कुलम्बर चन्द । तु. ४ ।
प्रभु चरण कमल जिम भमर प्रीति, 'जिनरंग' कहे कर जोड़ि। तु. ५।

जिनरंगसूरि रचित

१२५. जिनकुशलसूरि स्तवन

दादोजी दीठां दौलत थाय, बांकी रे बेला न पडे काय।
पूजो मन रली, हां हो दादा कुशलसूरिंद, पूजो मन रली । टेर ।
दादोजी तुरत गमावे पीड, दादोजी भांजे सगली भीड़ । पू० म० १।
केसर चन्दन अगर कपूर, पूजंता दादाजी होवे हजूर । पू० ।
पूनम पूनम ने सोमवार, आय जुड़े दादा दरबार । पू० २ ।
मुंह मांग्या बरसावे मेह, दादोजी सांधे तूटा नेह । पू० ।
दादोजी राजनगर दीवान, पूज्यां बोल चढे परवांण । पू० ३ ।
दादोजी रा सेवक होय, तेहने गंज न सके कोय । पू० ।
'जिनरंगसूरि' कहे कर जोड़, कवण करे म्हारा दादाजी री होड़। पू०४ ।

जिनरंगसूरि रचित

१२६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – जाति – धमाल)

मन हरखित हुओ लोकनऊ हो, आयो मास वसन्त, दादा ।
चालो दादइ जाईयइ हो, बइसीयइ सब मिलि सन्त, दादा ।
मन रंगइ दादो पूजीयइ हो, पूजतां कुशल आनन्द, दादा ।१।
केसर चन्दन अरगजा हो, कपूर अबीर गुलाल ।
धूप दीप नेवज धरइ हो, गाइयइ गीत धमाल, दादा ।२।
डफ बाजइ मधुर सुरइ हो, मादल ना दोंकार ।

नर नारी आवइ घणा हो, पूनिम नइं सोमवार, दादा ।३।
वाट घाट दरबार मइं हो, दादोजी रखवाल ।
करी न सकइ वइरी कदइ हो, तेहनउ वांकउ बाल, दादा ।४।
दिन दिन अधिकी सम्पदा हो, दिन दिन अधिक पडूर ।
सेवक ने सांनिधि करइ हो, आपण होइ हजूर, दादा ।५।
श्रीजिनकुशल सूरीसरू हो, गच्छ खरतर सिणगार ।
श्री 'जिनरंगसूरि' गुण गावतां हो, मंगल जय जयकार, दादा ।६।

जिनरंगसूरि रचित

१२७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – सिन्धुरा-धमार)

हूँ तो मोही रह्यो जी म्हारा राज, सद्गुरु ने दरबार ।।टेर।।
छत्रपति थांरे पाय नमेजी, सुर नर सारे सेव ।।
जोति थांरी जग जागती दादा, दुनियां मे परतिख देव ।। हूँ. ।। १ ।।
केशर अम्बर केवड़ो जी, कस्तूरी कर्पूर ।।
चम्पो चन्दन राय चमेली, भक्ति करूं भरपूर ।। हूँ. ।। २ ।।
पांगुलिया ने पांव समापे, आंधलियां ने आंख ।।
रूपहीणा ने रूप देवे दादा, पांख हीणां ने पांख ।। हूँ० ।। ३ ।।
चन्द पाटोधर साहिबो जी, श्री जिन कुशल सुरिन्द ।।
आठ पहर थांने ओलगूं दादा, 'रंग' घणे राजिन्द ।। हूँ ० ।। ४ ।।

जिनराजसूरि रचित

१२८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – विहाग-जत)

कुशल गुरु अब मोही दरशण दीजे । टेर ।।
ऐसी भान्ति करो मेरे सद्गुरु, ज्यूं मन मूढ पतीजे ।। कु. ।। १ ।।
जल दातार विरुद अमृत रस, श्रवण अंजली भर पीजै ।।
सुरतरु सम दर्शन विन देखे,कहो नयन किम रीझे? ।। कु० ।। २ ।।
परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुनीजै ।।

परम भक्त जिनराज तुम्हारो, अपनो कर जानीजै ।। कु० ।।

जिनराजसूरि रचित

१२९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - परभाती)

जपउ जिन कुशल गुरु नाम निसि वासरइ, रिद्धि नै सिद्धि आपै सवाई ।
आपदा मांहि ते हाथ दे ऊधरई, तुरत दरिसण दीयै आप आई ।१।
अवर सुर ध्यान धरियै नहिं ध्याइयइ, ध्याइयै जिन कुशिल सूरि साचउ ।
आप वसि कनक नी कोडि छोडि करी, कवण मूरख गहे लोह काचउ।२।
वाट घाटे अइ जाइ अलगा टली, समरतां निरमलो नीर पावइ ।
देस परदेस धन राज कुशले मिलइ, पूजतां मूल योखम न आवइ ।३।
एक मन एक रहणी सुगुरु जे रहइ, तेहना मन वंछित काज साधइ ।
एक मुनि 'राज' प्रभु चरण युग सेवतां,दिन दिन अधिक प्रताप वाधइ ।४।

जिनराजसूरि रचित

१३०. जिनकुशलसूरि स्तवन

जी हो धन वेला धन सा घड़ी, दादा जब भेटे तुम पाय ।
जी हो इम मन मांहि धरतो थको, दादा हूँ आयो मुनिराय ।।१।।
कुशल गुरु पूरो वांछित काज ।।टेर।।
जी हो हूँ सेवक छुं ताहरो, दादा मुझ दुखिये तुम लाज ।।
जी हो तूं तारक छे मांहरो, दादा तरण तारण जहाज ।। कु. ।।२।।
जी हो जग मांहे तू परगड़ो, दादा जाणे इन्द नरिन्द ।
जी हो कस्तूरी केशर करी, दादा नित पूजे नर वृन्द ।। कु. ३ ।।
जी हो दुःख दोहग दूरे टले, दादा जपतां अहनिशि जाप ।।
जी हो सेवक ने सांनिध करे, दादा टाले पाप सन्ताप ।। कु. ।।४।।
जी हो निरधनियां नित धन दिये, दादा ऋद्धि सिद्धि परिवार ।।
जी हो पुत्र दिये अपुत्रियां, दादा निरगुणियां गुणधार ।। कु. ।। ५ ।।
जी हो महियल मांहे दीपतो, दादा देराउर सुविशेष ।।
जो हो जेसल गिरिवर पूजिये, दादो भांजे दुःख अशेष ।। कु. ।।६।।
जी हो वीरमपुर सोवनगिरे, दादा जोधपुरे विलसन्त ।।

जी हो जैतारण वली मेड़ते, दादा लच्छ दिये बहु भंत ।। कु० ।। ७।।
जी हो अहम्मदाबाद खंभायते, दादा पाटण पूरे आस ।।
जीहो श्री सूरत विक्रमपुरे, दादा तोड़े आपद पास ।।कु० ।। ८ ।।
जी हो लाभपुरे तिम आगरे, दादा महिमा मंडोर मझार ।।
जी हो सांगानेर अमरसरे, दादा सेवक जन सुखकार ।। कु० ।। ९ ।।
जी हो इम पुर पुर थुंभ प्रणमिये, दादा नासे सहु विखवाद ।।
जी हो 'राजसमुद्र' इम वीनवे, दादा समर्या दीजो साद ।।कु० १०।।

जिनलाभसूरि रचित

१३१. जिनकुशलसूरि स्तवन

कीजे छै कर जोड़ ने दादाजी, वीनतड़ी विगताय हो !
सद्‌गुरु जी, अरज मोरी सांभलो दादाजी ।
राज विगर किण आगले दादाजी,अन्तर कहीय न जाय हो ।।स.अ.१।।
थांरे तो सेवक घणा दादाजी, म्हांरे थे गुरुराय हो ।। स.अ.।।
तुम्हे अम्ह दिशि कीजो मया दादाजी,ज्ञान निजर सुपसाय हो।।स.अ.।।
आदि युगादि तणा अछे दादाजी,प्रगट थांरा परभाव हो ।। स.अ.।।
गिणती सूं नावे गिण्यां दादाजी,जिम जल कण दरियाव हो ।।स.अ.३।।
म्हांरे समरण राज नो दादाजी,थांरो हीज आधार हो ।। स.अ० ।।
तो थांरा ओलगूं दादाजी, थे म्हांरा करतार हो ।। स.अ.।। ४ ।।
इण गच्छ मे वरते उदो दादा जी,थोक भला भला थाय हो।। स.अ.।।
सो सगलाई राजरा दादाजी,सुनिजर रा गहगाट हो ।।स.अ.।।५ ।।
जिण वेला दरशण हुवे दादाजी,कीजे समरण ध्यान हो।। स. अ.।।
नयण हसे तन उल्लसे दादाजी,विकसे मन आसमान हो।।स.अ.।। ६।।
धन्य धन्य दिन भाई बीजनो दादाजी,आयो भाग्य प्रमाण हो ।।स.अ.।।
भले आडम्बर भेटिया दादाजी,खरतर गच्छ दीवान हो।।स.अ.।।७ ।।
पग पग में सानिध करो दादाजी,रात दिवस इक रंग हो।। स.अ.।।
हूँ छूं सेवक राउलो दादाजी,कदियन छोड़ूँ संग हो ।। स.अ.।। ८ ।।
श्रीजिनकुशल सूरीसरू दादाजी,जिनचन्द सूरि पटधार हो ।।स.अ.।।

श्री 'जिनलाभसूरिन्द'ने दादाजी,महिर निजर अवधार हो ।।स.अ.।।९।।

जिनलाभसूरि रचित

१३२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - अलाहीयो वेलाउल; वासुपूज्य जिन बारमाजी)

जय जय श्री जिनकुशल सूरीसरू, दादा खरतर गछ दीवांण रे ।
तुम्ह भेटण उमाहडो, अम्ह आज चढ्यो परमांण रे । ज० १ ।
दादा ताहरी कीरति अति घणी, दादा ताहरो अति सोभाग रे ।
तिण कारण तुम्ह भेटिवा,दादा मइं लागो मो मन राग रे।ज०२ ।
दादा रण वन में भूलां थकां, दादा मारग दिखावणहार रे ।
तूं त्रिसीयां जल पावणे, दादा अडवडियां आधार रे । ज० ३ ।
दादा जल बरसावण महीयले, दादा इक चित करत आधार रे ।
तूं चिन्तामणि सुरतरु, दादा जग जोवत में लाध रे । ज० ४ ।
दादा दरसण समपण सेवगां, तेंतो कीधो हित बांण रे ।
देरावर रा कोट थी आई, कीयो गडाले थांन रे । ज० ५ ।
दादा तूं तूठो सांगा भणी, एतो जांणे सगला लोग रे ।
राव सुजांण तणो वली, तें टाल्यो दुसमण जोग रे । ज० ६ ।
दादा इम अम्ह भीर पधारिये, कांई कहीये वारंवार रे ।
श्री 'जिनलाभ' भणी प्रु, दादा दे परगट दीदार रे । ज० ७ ।

जिनलाभसूरि रचित

१३३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - जोगण जागे, एहनी)

श्री जिन कुशल सूरीसरू रे, देरावर दीवांण रे सद्‌गुरुजी ।
ठांम ठांम थिर थापनां रे, जयवंतो जेसांण रे सद्‌गुरुजी ।
कीजे कीजे रे सुगुरु कृपा कीजे,दीजे वंछित दांन रे सद्‌गुरुजी।१।
जांणे थारा जग सहु रे, आसति रा अबसाण रे सद्‌गुरुजी ।
परचा साचा पेखिने रे, सेवे राजा रांण रे सद्‌गुरुजी । की० २ ।
इण खोटे कलिकाल में रे, तूं सुरतरु अवतार रे सद्‌गुरुजी ।

धणीयप जांहरे राजवी रे,धन त्यौरा अवतार रे सद्गुरुजी।की०३ ।
म्हांरे पिण इक राज रो रे, साचो छे विसवास रे सद्गुरुजी ।
सो थे जांणो हिज अछो रे,ग्यान तणे परकास रे सद्गुरुजी। की० ४।
जांणी जे मन में तिसो रे, न सझे भगति विधान रे सद्गुरुजी ।
नही तेहवो मन बल जिणे रे,धरिजे निहचल ध्यांन रे सद्गुरुजी ।की०५।
तो पिण किण ही क अवसरे रे, जपीजे जे छे जाप रे सद्गुरुजी ।
कीजे छे समरण तिको रे,आंण ज्यो लिखे आप रे सद्गुरुजी।की०६ ।
जिन सासण रा सैंधणी रे, खरतर गछ महाराय रे, सद्गुरुजी ।
जिणचंदसूरि रा पाटवी रे,राज गरीबनिवाज रे सद्गुरुजी।की०७।
उन्नति करिज्यो गछ तणी रे,श्री संघ नुं सुखकाय रे सद्गुरु जी ।
थांहरो अम्हसुं पिण सदा रे,श्री गुरुराज सहाय रे सद्गुरुजी।की० ८ ।
हाजिर होय जे सिमरतां रे, टालेज्यो दुख दंद रे सद्गुरुजी ।
अरजकरे कर जोडिनै रे, 'श्रीजिनलाभसूरिंद' रे सद्गुरुजी।की०९।

जिनलाभसूरि रचित

१३४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - श्री जिन प्रतिमा हो जिन सारिखी कही, एहनी)

सेवकां निवाजे हो कुशलसूरीसरू, चढत दिवाजे आज ।
भय दुख भाजे हो समरण जिहने, राजे श्री गुरुराज । से० १ ।
इण कलिकाले हो पाले आपरा, टाले संकट देव ।
विरुद निहालि हो एहवा परगड़ा, संभाले ति सेव । से० २ ।
जग सहु आवे हो गुरु नी जातरा, गावे जस गुण गीत ।
थिर मन आणी हो ध्यावे ते सही, पाले वांछित प्रीत । से० ३ ।
पूरब पुण्याई हो जागी माहरी, अधिकाई आहीज ।
पाई सुखसाता हो दरसण पामतां,भले आई भाव थीज। से० ४ ।
धन धन महिमा हो थांरी साहिबा, दिन दिन द्यो आनंद ।
सुप्रसन होज्यो हो सद्गुरु इम भणे, 'श्रीजिनलाभसूरिद'। से ० ५ ।

जिनविजयसेनसूरि रचित

१३५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - आसावरी)

मैं वारि जाऊं वार हजारी, कुशलगुरु, वारि जाऊं वार हजारी ।
नित प्रति सेवा तुमरी साधें, चरणां की बलिहारी ।
जंगम गुरुवर सुरतरु सरिखे, सन्तन गुणगणधारी । मैं० १ ।
जोगी मुनिजन सुरनर पूजित, तुम हो पर उपकारी ।
देव दानव सब करते सेवा, आकर द्वार मझारी । मै० २ ।
जो कोई तुम को चित्त में धारे, दुःख से दूर निवारी ।
दीन दयानिधि तुम सम कोई, वेर वेर सुखकारी । मै० ३ ।
सोमवार दादा दिन उत्तम, पूनम हर्ष अपारी ।
कल्पद्रुम जिम शिवसुखदायक, प्रतिक्षण भवभयहारी । मै० ४ ।
'सूरिविजयसेन' बीनती करता, हो हर्षित हिय भारी ।
तुम हो नित जन जनमन रंजन, राखो टेक हमारी । मैं० ५ ।

जिनविजयसेनसूरि रचित

१३६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-आसावरी)

मैं वारि जाऊं वार हजारी, कुशलगुरु, वारि जाऊं वार हजारी ।
सुरतरु सम तुम वंछित पूरण, तुम हो पर उपकारी ।
दीन हीन जन सब ही ध्यावे, आनन्द हर्प अपारी । मैं० १ ।
योगी मुनि जन सब ही सेवत, अहनिश हिय में धारी ।
नाम तुम्हारो सुमरण करतां, हिय मे ज्योति उजारी । मै० २ ।
देरावर में थम्भ तुम्हारा, कानन बीच मझारी ।
कल्पद्रुम जिम शिवसुखदायक, प्रतिक्षण भवभयहारी । मैं० ४ ।
'सूरिविजयसेन' बीनती करता, हो हर्पित हिय भारी ।
तुम हो नित जन जनमन रंजन, राखो टेक हमारी । मैं० ५ ।

जिनविजयसेनसूरि रचित

१३६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग-आसावरी)

मै वारि जाऊं वार हजारी, कुशलगुरु, वारि जाऊं वार हजारी ।
सुरतरु सम तुम वंछित पूरण, तुम हो पर उपकारी ।
दीन हीन जन सब ही घ्यावे, आनन्द हर्ष अपारी । मै० १ ।
योगी मुनि जन सब ही सेवत, अहनिश हिय मे धारी ।
नाम तुम्हारो सुमरण करतां, हिय मे ज्योति उजारी । मै० २ ।
देरावर मे थम्भ तुम्हारा, कानन बीच मझारी ।
मालपुरे मे दरस दिखावे, जन मन रंजनहारी । मै० ३ ।
विक्रम संवत सहस-यमादि, पूनम कार्तिक भारी ।
जयपुर संघ की वीनती सुनियो, वंछित फल दातारी । मै० ४ ।
मालपुरे में गुरु गुण गाया, देव की शरण विचारी ।
अब प्रभु सेवक दर्शन दीजो, वेर वेर हितकारी । मै० ५ ।
श्रीजिनकुशल सूरीश्वर साहिब, चरणो की बलिहारी ।
श्रीरंगसूरि के निज सन्तानी, 'विजय' ने अरज गुजारी । मै० ६ ।

जिनविजयसेनसूरि रचित

१३७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज-सद्‌गुरु ने पकड़ी बाह, नही तर बह जाते)

सद्‌गुरु ने राखी लाज, सभी नर गुण गाते ।
काल अनादि भमता फिरा रे, मिला न मुझ को पार ।
चउगति संकट मे पड़ा रे, किस विध हो निस्तार । स० १।
कामादिक पीछे लगे रे, ये है दुःख के मूल ।
प्राणी इससे घिर रहा रे, इनको करो निरमूल । स० २ ।
कुशलसूरि गुरु नाम से रे, जग मे है विख्यात ।
सुमरण सांचे मन करो रे, जो जगमे साक्षात । स० ३ ।
देरावर मे देवलो रे, गुण गाते नर नार ।

मालपुरे में दीपतो रे, मन मांहि राखो धार । स० ४ ।
कार्तिक पूनम दिन बड़ा रे, सोम दिवस शुभवार ।
चौवीस सत्तर दोय सुंरे (२४७२), वीर संवत हितकार। स० ५।
जिनरंगसूरि राजीया रे, रत्नसूरि सुखकार ।
'सूरि विजयसेन' वीनवे रे, धर कर चित्त मझार । स० ६ ।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

१३८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – निरमल होय भजले प्रभु प्यारा)

कुशल सूरिन्द गुरु ध्यान हिये ज्यूं,होवै आनन्द अधिक अपारा।।कु.।।
निरमल नीरपखाली जिन तनु,पहिरी क्षीरोदक वस्त्र सुप्यार।।कु.।।१।।
कंचन कलश भरी पंचामृत, चरण पखाले शुद्ध प्रकारा।। कु० ।।
केशर घोली भरीय कचोली,मांहै मृगमद घस घनसारा।।कु.।।२ ।।
धूप दीप बलि अक्षत नैवेद्य,फल पुष्पादिक बहुविध सारा।।कु.।।
अवर द्रव्य सब पूजन केरा, मावै लीजै चित्त उदारा ।।कु।।३।।
गुरु चरणामृत अंगे चरचित,दुष्ट कुष्ट व्रण जाय विकारा।।कु०।।
सद्‌गुरु नाम लिये सब नासे,आधि व्याधि दुःख दोष प्रचारा।।कु.।।४ ।।
घर घर मंगल नव निधि ऋद्धि सिद्धि,हाजर होय हमेश अपारा।।कु.।।
श्री 'जिनसौभाग्यसूरि' सुगुरु पद,सेवत होय सवे सुख कारा।।कु.।।५ ।।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

१३९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – सिन्ध-काफी-दीपचन्दी)

गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, भले हिय भक्ति भराणी ।। टेर ।।
श्री जिन कुशल सूरीश्वर साहिब, खरतर गच्छ राजानी ।।
देश देश में थानक गुरु का, शोभा जग पहिचानी ।।
सदा रवि तेज समानी ।। गु० ।। १ ।।
केशर चन्दन मृगमद मेली, चरणन पूजा रचानी ।।
धूप दीप बलि आगे ढोवो, बहु विध पुष्प चढानी ।।

भले फल भेट धरानी ।। गु० ।। २ ।।
वाट घाट मे परचा पूरक, हाजर होत सहानी ।।
'जिनसौभाग्यसूरि' के साहिब, वांछित काज करानी,
सदा गुरु महर लखानी ।। गु० ।। ३ ।।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

१४०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज पणिहारी)

पाटोधर गुरु गच्छपति, सद्‌गुरु जी हो ।।
कुशल सूरीन्द गुरु राज, वाला छो ।।
नायक श्री जिन धर्मना।।स.।।लायक सुर शिरताज,वाला छो ।।१।।
भक्त वच्छल भगवान छो, स०।। सरण गही साधार,वा०।। ।।
दरसण वहेलो दीजिये, स. । करुणानिधि करतार, ।।वा. २ ।।
वीनतड़ी अवधारिये, स० ।। पूरो वांछित काज, वा० ।।
सेवक पर सुनिजर करो, स०।। महेर करो महाराज,वा०।।३ ।।
खरतर गच्छ ना साहिबा, स० ।। सेवक जन प्रतिपाल, वा० ।।
परचा पूरो परगड़ा, स०।। वर जश जगत विख्यात,वा० ।। ४ ।।
दुरजन जन दूरे करो, स० ।। खरतर हितकार, वा० ।।
उदय करी जिन धर्मनो,स०।। इण पंचम कलिकाल,वा०।। ५ ।।
एक भरोसो आपनो, स० ।। चरण शरण आधार, वा० ।।
महिमा मोटी राजरी, स०।। महियल मे सुखकार, वा०।। ६ ।।
दीनदयाल दया करी, स० ।।, दीजिये वांच्छित दान, वा ।।
'जिनसौभाग्य सूरीन्द' को,स०।। पर उपगार प्रधान, वा०।।७जिन

जिनसौभाग्यसूरि रचित

१४१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – कालिगड़ा)

में बलिहारी गुरु चरणां ।। मैं० ।। टेर ।।
श्री जिन कुशल सूरिन्द साहिब के,चरण कमल का शरणा।।मैं०।।

और न चाहूँ कोई आधारा, एक आपरा सहारा ।।मैं०१।।
केशर चन्दन चरचूं चरणें, फूल चढ़ाऊं शुभ वरना ।। मैं० ।।
भाव विशुद्धे गुरु गुण गावो, ध्यान हिये मांहि धरना।। मैं० २ ।।
सुरतरु सम गुरु वांछित दायक, मन से नांहि विसरना ।। मैं० ।।
चरण कमल को कर आराधन,कलियुग से निस्तरना।। मैं० ३ ।।
सेवक अरज सुणो सद्गुरुजी, वांछित पूरण करना ।। मैं० ।।
दरशण दीजै ढील न कीजै, होत नहीं अब जरना ।। मैं० ४ ।।
गच्छ उदय करदो गुणसंपद, आपद दूरे हरना ।। मैं० ।।
'जिनसौभाग्य सूरीसर' साहिब,विजय सदा सुख करना।।मै० ५ ।।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

१४२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग — कालिगड़ा)

वीनतड़ी सुण लीजिये सद्गुरु जी मोरी ।। वी० ।। टेर ।।
श्री जिनचन्द सूरिन्द पटधारी,मों पर सुनिजर कीजिये।।स०वी०।।
श्री जिन कुशल सूरि यशधारी,भक्तो का दुःख सब भांजिये ।।स०वी.१।।
खरतरगच्छ के प्रभु प्रतिपालक,दरशण वहिलो दीजिये।।स० वी०।।
गच्छ उदय कर साहिबा मेरा,आपद दूर हरीजिये।।स. वी.।।२ ।।
प्रगट प्रतीत परम सद्गुरु की, अवर न आश करीजिये।। स० वी० ।।
छाय रयो कलिकाल जगत मे,किण विध धीर धरीजिये।।स.वी.।।३ ।।
प्रबल प्रमाद नहीं गुण संग्रह,जात न कुल न पतीजिये।। स०वी० ।।
नाव पुराणी नदिया गहरी, बेड़ा पार करीजिये ।। स० वी० ।। ४ ।।
धर्म नाव निर्यामक जग में,गुरु विन कौन कहीजिये।।स० वी० ।।
'जिनसौभाग्य सूरिन्द' के साहिब,जग गुरु विजय करीजिये।।स.वी.५ ।।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

१४३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र सं. १९११)

(राग - रामकली, देसी - आज महोच्छव रंगरली)

श्रीजिनकुशलसुरिंद सुखकारी ।
खरतर गछ नायक सब लायक,
श्रीजिनचंद सूरिंद पटधारी ।। श्री १।।
अंतरजामी हो तुम स्वामी, जग मांहि आशा एक तुमारी ।
गच्छ उदो कर सद्गुरु मेरो,सुणिये साहिब अरज हमारी।।श्री जि.।।२।।
परतिष परचा पूरण प्रभुजी,चरण कमल की मै जाऊं बलिहारी ।
सुरतरु सम मन वंछित पूरै,जस जग थाय रह्यो अति भारी ।।श्री३।।
जो ध्यावै सोई फल पावै,परम पुरुष प्रभु के अविकारी।।श्री जि०।।४।।
संवत उगणीसै इग्यारै, बदि आषाढ पंचमी सुभवारी ।
जिनसौभाग्यसुरिंद प्रतिष्ठा,कीनी संघ सदा जयकारी ।।श्री जि० ।।५।।

जिनसौभाग्यसूरि रचित

१४४. जिनकुशलसूरि स्तवन

समर्यां सानिध कीजै सुगुरुजी।स०।म्हानुं दरसण वहिलो दीजै ।सु०।
श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिब, जिनचंदसूरि पटधारी ।
सिध सकल नै आनंदकारी, संतजनां सुखकारी । सु० । १।
सुरतरु सम सेवा सुखदाई, नव निधि रिधि सिधि वंछित दाई ।
नवनिध रिध सिध वंछितदाई,भीड़ भंजन अधिकाई।। सु० ।।२।।
सकल जनाश्रय समरण साचो, जाण्यो मै निरधारी ।
समरथ सेवा सफल सदाई, इम आखै जग सारी । सु० ।।३।।
आपद हरण सरण तुझ सेवा, जग मे प्रगट कहीजै ।
कामित दायक कलि मे कीरत, सुणतां सुख लहीजै । सु० ।।४।।
दीनदयाल सबे गुण लायक, विरुद वडाइ लीजै ।
'श्रीजिनसौभाग्यसूरि' तणी हिवै,आस्या सफल करीजै । सु० ।।५।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

१४५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – बोल वन्दे मातरम्)

आपके दर्शन बिना गुरुवर! रहा जाता नहीं ।

और दिल का हाल गैरों से कहा जाता नहीं ॥१॥
है परेशानी यही कैसे तुम्हें पाऊँ गुरो ।
पंथ ऐसा एक भी मेरी नजर आता नहीं ॥२॥
है जुदाई के जिगर में जख्म भारी हो रहे ।
उनकी जलन का जोश भी मुझसे सहा जाता नहीं ॥३॥
हैं कुशल गुरु आप फिर क्यों देर इतनी हो रही ।
अबं और आशा में प्रभो मुझसे रहा जाता नहीं ॥४॥
'हरि' पूज्य गुरुवर दास की अरदाश को सुन लीजिये ॥
मुक्ति दाता आप बिन बस और मन भाता नहीं ॥५॥

जिनहरिसागरसूरि रचित

१४६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – गजल)

कुशल करना कुशल करना, कुशल गुरुराज शासन में ॥
तुम्हीं हो शक्तिमय निजभक्त, विध्नों के विनाशन में ॥टेर॥
महा अन्धेर में सोते, निरखलो अपने भक्तों को ॥
उठाकर आप अब जल्दी, लिवा लाओ प्रकाशन में ॥ कु० ॥१॥
अपूरव अपनी ज्योति का, दिखावे आप अब जल्वा ॥
कि जिससे जोश भी फैले, हमेशा खूव तन मन मे ॥ कु० ॥२॥
हैं भूले भक्त पर तुमको, भुलाना यों न लाजिम है ॥
दुआ है आपसे इतनी, बढ़ादो भक्त-जन-धन में ॥ कु० ॥३॥
सदा 'हरि' आपकी स्वामी, दया की वेल भक्तो पे ॥
करे छाया हरे माया, अशान्ति हो न जीवन में ॥ कु ॥४॥

जिनहरिसागरसूरि रचित

१४७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र. सं.१९६९)

(राग - रेखता)

कुशल गुरुदेव हैं जग में, कुशल मंगल करने को ॥

कुशल के दाता है गुरुजी, शुभंकर हो तो ऐसे हो।।१।।
दीन के दुःख को सुनकर, आवे तत्काल कृपा धर कर ।।
दीनबंधु है गुरु मेरे, दयालु हों तो ऐसे हो ।।२।।
निर्बुद्धि को बुद्धि के दाता, निरधन को रिद्धि के दाता ।।
ऐसे दातार हैं गुरुजी, कृपालु हों तो ऐसे हों ।।३।।
मोह के बंध को तज कर, निर्लोभी निर्मानी होकर ।।
करत है जगत उपकारा, परम गुरु हो तो ऐसे हो ।। ४ ।।
निन्दक पूजक सम गणते, सभी प्राणी को सुख देते ।।
छोड़ावे जगत को दुःख से, नेहारी हो तो ऐसे हो ।।५।।
संवत् उन्नीसो गुणहत्तर, वैशाख शुक्ला पूर्णिमा दिन पर ।।
गाया यह भानुपुर मांहि, दादा गुरु हो तो ऐसे हो ।।६।।
दास तुज नाम को सुनकर, आया यह 'हरि' तुम दर पर ।
शरणागत मैं आया तोरे, रक्षाकर हो तो ऐसे हो ।।७।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

१४८. जिनकुशलसूरि स्वतन

(तर्ज - गंजल)

कुशल गुरुराज जय तेरी, बढादो शक्तियां मेरी ।।टेर।।
हृदय मे ध्यान धरता हूँ, उपाधि दूर करता हूँ।
मै गाऊं कीर्तियां तेरी, कुशल गुरुराज जय तेरी ।।१।।
सदा तुझ नाम लेकर के, मै करता काम हूँ जितने।
सफल होते वही देखे, कुशल गुरुराज जय तेरी ।।२।।
है तेरे मंत्र की शक्ति, अजायब विश्व मे रोशन।
मुझे उसका सहारा है, कुशल गुरुराज जय तेरी।।३।।
तूंही सुखसिन्धु है भगवन्! परम 'हरि' पूज्य उपकारी ।
सहज मुक्ति वधू स्वामी, कुशल गुरुराज जय तेरी ।।४।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

१४९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र.सं.१९८७)

(तर्ज - सीता माता की गोदी में हनुमत डारी मूंदडी)

दर्शन दीजो जी सद्गुरु जी अपने दास को जी ।।टेर।।

दर्शन दर्शन करता आया, दर्शन मालपुरे मे पाया ।
दिल में आनन्द हर्ष न माया, आशा सफल करो गुरु राया,
दर्शन दीजियेजी ।।१।।

अबतो पूरो मनसा हमारी, तन मन तुम चरनन पर वारी ।
सिर पर आपकी आज्ञा धारी, दादा राखो लाज हमारी
देर न कीजियेजी ।।२।।

दादा तुम हो पर उपकारी, लीजे अपना विरुद विचारी ।
इच्छा पूरण करो हमारी, सेवक अर्जी को स्वीकारी,
जग जश लीजियेजी ।।३।।

पहले लाखों भक्त उबारे, दुक्खी जन के दुःख को टारे ।
सेवक जन के काज सुधारे, श्री जिन कुशल सूरि रखवारे,
रक्षा कीजियेजी ।।४।।

उन्नीसे सत्यासी आया, निर्वाण दिन में 'हरि' गुण गाया।
मंगल दिन में मंगल छाया, सब के मन का ताप बुझाया,
शिव सुख दीजियेजी ।।५।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

१५०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज-गजल)

शताब्दी चौदहवीं पावन, कुशल गुरुराज की जय हो ।।
विमल यश पुण्य पद दादा-कुशल गुरुराज की जय हो ।।टेर।।

मरुस्थल धन्य समियाणा, सुमंत्री धन्य जिल्हागर।
जयतश्री धन्य गुरु माता, कुशल गुरुराज की जय हो ।।१।।
प्रबोधक चार राजों के, कलि मे केवलि पदवी।।

सुगुरु जिनचन्द्र के पटधर, कुशल गुरुराज की जय हो ।।२।।
कुशलकीर्ति कुशल नीति, यथारथ नाम के धारी ।।
हुअे अणगार पद धारी, कुशल गुरुराज की जय हो ।।३।।
स्व पर आगम के अभ्यासी, महाज्ञानी गुणी होकर ।।
हुए आचार्य पद धारी, कुशल गुरुराज की जय हो ।।४।।
मरु गुर्जर तथा सोरठ, किये पंजाब सिंधादि ।।
विहारों से परंम पावन, कुशल गुरुराज की जय हो ।।५।।
तपोबल योगबल खीचे, सुरासुर सेव करते थे ।।
जगत उपकार-सुखकारी, कुशल गुरुराज की जय हो ।।६।।
विधर्मी जन कई जैनी, हुए उपदेश पा जिनसे ।।
प्रचारक धर्म के नेता, कुशल गुरुराज की जय हो ।।७।।
देराउर फाल्गुनी मावस पधारे स्वर्ग महिमामय ।।
'हरि' गुरु की जयन्ती मे, कुशल गुरुराज की जय हो ।।८।।

वाचक जिनहर्ष गणि रचित

१५१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - सोहला री)

सद्गुरु सुणि अरदास हो, सेवक हो दादाजी
सेवक हो, सेवक कर जोड़े कहै हो ।
पूरौ वंछित आस हो, महियल हो दादाजी
महियल हो महियल जिण भल पण लहे हो ।।१।।
इण कलिकाल मझार हो, तो सम हो दादाजी
तो सम हो, तो सम अवर बीजो नहि हो ।
दीठां देव हजार हो, मनड़ै हो दादाजी
मनड़ै हो, मनड़ै तू मान्यो सही हो ।।२।।
सीस धरुं तुम्ह आण हो, बीजा हो दादाजी
बीजा हो, बीजा सहु अवहील नै हो ।
तूं सांचौ दीवांण हो, आपौ हो दादाजी

आपौ हो, आपौ संपत्ति लील नै हो ।।३।।
भावठि भांजै मांम हो, दरसण हो दादाजी
दरसण हो, दरसण नव निधि पांमीयै हो ।
पूज्यां टलै विरांम हो, सद्गुरु हो दादाजी
सद्गुरु हो, सद्गुरु तिण सिर नामियै हो ।।४।।
जील्हागर जसु तात हो, दाखां हो दादाजी
दाखां हो, दाखां दुनियां दीपतै हो ।
जैतसिरी प्रभु मात हो तिहुअण हो दादाजी
तिहुअण हो, तिहुअण जस ताहरौ हो ।।५।।
कूरम नयण निहार हो, वंछित हो दादाजी
वंछित हो, वंछित सीझै माहरा हो ।
तूं सेवक प्रतिपाल हो, प्रतिपाल हो दादाजी,
प्रतिपाल हो, प्रतिपल पूजे जग पग ताहरा हो ।।६।।
जिणचंदसूरि पटधार हो, खरतर हो दादाजी
खरतर हो, खरतर गच्छ सांनिधि करे हो ।
अड़वड़ियां आधार हो, साचौ हो दादाजी
साचौ हो, साचौ खोटे अरै हो ।।७।।
अवर सुरासुर देव हो, करतां हो दादाजी
करतां हो, करतां मुझ मन ऊमग्यो हो ।
हिव मैं लाधौ देव हो, तिण तुझ हो दादाजी
तिण तुझ हो, तिण तुझ चरणें हूँ लग्यौ हो ।।८।।
श्री जिनकुशल सूरीस हो, हाजरि हो दादाजी
हाजरि हो, हाजरि हुइ देखे किसुं हो ।
साहिब तुझ सुजगीस हो, गावै हो दादाजी
गावै हो, गावै गुण 'जिनहरख' सुं हो ।।९।।

(संवत् १७३५ वर्षे ज्येष्ठ वदि १० दिने लि.)

जिनहर्ष रचित

१५२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल – हुंतो जाऊ रे शिखर गिरि नी यात्रा, एहनी)

हुंतो आयो भाव धरी घणो, सद्गुरु करवा तुझ से वरे ।
मुझ ऊपर करने हित दया, दरसण दे मोटा देव रे ।१।
नितनामतणे जाऊं वारणे।
मनमोहन महिमा ताहरी, तिण आयो ताहरे पास रे ।
मनवांछित पूरो माहरो, वधतो थाये जस वास रे ।नि.२।
जग मांहि विरुद घणा घणी, कहतां नांवे कोई पार रे ।
सुख पूरण सुरतरु सारिखो, दौलत दीठां दीदार रे । नि.३।
हित सुं तुझ नांम हिवे रहे, भेलूं नही जो मेल रे ।
जाणुं रात दिवस जपतो रहूं,भली भावभगत दिल भेल रे ।नि.४।
साहते नहीं सुजस वधावतां, मुसकिल है कीरति काम रे ।
लोही जे तोहीज नीकलै, चीरीजै जो निज चामम रे । नि. ५ ।
तुझ आगल सी मननी कहूं; तुम ही चतुर सुजाण रे ।
अंतरजामी आपणा, अवधारो सेवक वांण रे । नि.६।
जिनकुशल सूरीसर जयो, खरतरगच्छपति गुणवंत रे ।
जग गुरु प्रह अढि जुहारतां, 'जिनहरख' दीये हरखंत रे । नि. ७।

जिनहर्षसूरीरचित

१५३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - प्रभाती)

कुशल करण गुरु कुशल सूरीश्वर, साचा सद्गुरु मेरा रे ।।
सेवक जन सानिध गुरु समर्था,विपत हरण तुम नेरा रे।।कु ०।।१।।
श्री जिनचन्द सूरीन्द पटधारी, सूरि सकल शिर सेहरा रे ।।
निरमल कीरति जग गुरु तेरी, जैसा चन्द उजेरा रे ।।कु०।। २।।
मात तात जग तूं ही परम गुरु, तुं साहिब सुख केरा रे ।।
तुम सम देव नही कोउ जग मे,कह न सकूँ गुण तेरा रे।।कु०।। ३।।

कुमति विडारण सुमति वधारण, वारण विखमी वेरा रे ।
श्री जिनहर्ष गुरु चरण प्रसादे,प्रति दिन शुभ घर तेरा रे ।।कु०।।४।।

जिनहर्षसूरि रचित

१५४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - प्रभाती)

कुशल करण मेरे परम गुरु की, वेर वेर बलिहारी ।।कु०।। टेर।।
श्री जिनचन्द सूरीन्द पटधारी, जिनशासन उजवारी ।।
गाम नगर थिर थुंभ विराजे, वारि जाऊं वार हजारी ।।कु०।।१।।
महिमा मेरु समान है जाकी, कही न सकूँ विस्तारी ।।
श्री जिनकुशल सूरीसर साहिब, सुणिये अरज हमारी ।।कु०।।२।।
सुर सुख मगन लगन लागी जब, तातें दिया विसारी।।
ऐसे सद्गुरु तुम नवी छाजे, लाजे आण तुम्हारी ।।कु०।।३।।
निज गण निज पद लज्या अपनी, रखिये विरुद संभारी ।।
गिरुआ कबहूं छेह न दाखे, राखे मान वधारी ।।कु०।।४।।
मेरी चूक पर निजर न दीजे, कीजे अनुग्रह भारी ।
श्री 'जिनहर्षसूरीसर' सद्गुरु, समर्था सानिधकारी ।।कु०।।५।।

जिनहर्षसूरि रचित

१५५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - खंभायची)

मैं तुमची बलिहारी, श्री जिनकुशलसूरीसर साहिब। मै०।
देख दरस आनंद भयो मेरे,चरण कमल सुखकारी । श्री. १
भर दरीयै बिच तरणी डूबती, सुनिजर कर तुम तारी ।
कलिजुग में गुरु सुरतरु सरिसै, परचा पूरत भारी ।। श्री. २
गांम गांम सब ठाम ठाम में, चरण थापन मनुहारी ।
'श्रीजिनहर्ष' आनंद सुख संपति, करत संघ जयकारी ।। श्री. ३

जिनहर्षसूरि रचित

१५६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – बिहाग)

मोकूं शरण तिहारा, कुशल गुरु मोकुं शरण तिहारा ।।टेर।।
सुपन ही सोवत निशदिन जागत, चरण शरण आधारा ।।
कछुअन चहिये दरशन दीजे, यही है प्राण पियारा ।। कु० १।।
वाट घाट रिछपाल सदाई, आपद विघन निवारा ।।
दह दिशि दीपे महिमा जाकी, परतिख सकल संसारा ।।कु०।।२।।
धन हीनाकूं धन के दाता, आपे बहु परिवारा ।।
सद्गुरु गुण गाये सुखदायक, श्री 'जिनहर्ष' अपारा ।।कु०।।३।।

जिनहर्षसूरि रचित

१५७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - मारु)

श्री जिनकुशल सूरीसरु, गुरु खरतर गच्छ राजान ।
सुण साहिब मुझ वीनती, गुरु अवधारो महिरवान ।।
सुगुरुराय दीजियै रे, दीजियै महिर निवास । सु.१।।
पग पग चूक छै माहरी गुरु, क्षमजो जी क्षमानिधान ।
छो तुम्हे समता सागरु गुरु, परमकृपाल सुग्यान । सु. २।।
अंतरजामी छो माहरा, गुरु तुम्हे छो सबे विध जाण ।
म्हे छां बालक थांहरा गुरु, थे साहिब सुविहाण । सु. ३।।
पूज्यां पातिक परिहरै, गुरु सेव्यां संपति वान ।
दरसण दुख दूरे हरै गुरु, नामै नवे निधान ।। सु. ४।।
संघ सकल मंगल करो गुरु, विरुद पोता नो जाण ।
'श्रीजिनहर्ष' अविचल उदय गुरु,जग जयो जैन दीवाण।।५।। सु.।।

जिनहर्षसूरि रचित

१५८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र.स. १८७२)

(देशी - नीदड़ली हठीली वैरण हुय रही)

साहिबा श्रीजिनकुशल सूरीसरु,
जिनसासन सिंगणार हो साहिबाजी मोरा।
साहिबा श्रीजिनचंदसूरिजी ना पाटोधरु,
सहु सुरगन सिरदार हो साहिबा जी मोरा ।।१।।
साहिबा वंछित पूरण सुरतरु,
खरतर गच्छ महाराज हो साहिबा जी मोरा ।
साहिबा तारक निज गुण चित्त धरी,
तारि जलधि जिहाज हो साहिबा जी मोरा । सा.२।।
साहिबा परतिख परचा गुरु तणा,
पाम न सकै कोइ पार हो साहिबा जी मोरा ।
साहिबा सद्‌गुरु दीनदयाल छो,
सरणागत साधार हो साहिबाजी मोरा । सा. ३।।
साहिबा सबल भरोसो रे गुरु तणो,
रहितो मुझ निस दीस हो साहिबा जी मोरा ।
साहिबा तुमे कीधी तिम प्रभु थे करो रे,
पूरी मनह जगीस हो साहिबा जी मोरा । सा.४।।
साहिबा सद्‌गुरु दरसण देखतां,
उपजत परम आनंद हो साहिबा जी मोरा ।
साहिबा सुगुरु पद युग नमन सै,
दूर हुवै दुख वृंद हो साहिबा जी मोरा। सा. ५।।
साहिबा जे भवियण करै गुरु तणो,
समरण अंतर ध्यान हो साहिबा जी मोरा ।
साहिबा तेहनो सकल विष अपहरै,
वधय अधिक तनु वांन हो साहिबा जी मोरा । सा. ६।।
साहिबा जिहां तिहां प्रभुपद थापना,
पूजै सकल जिहान हो साहिबा जी मोरा ।

साहिबा राव राणा सहु छत्रपति,
करय सुगुरु गुण गान हो साहिबा जी मोरा । सा. ७।।
साहिबा वरस अठारै बहोतरै (१८७२),
आश्विन मास उदार हो साहिबा जी मोरा ।
साहिबा विजय दशमी गुरु भेटतां,
प्रतिदिन जय जयकार हो साहिबा जी मोरा । सा. ८।।
साहिबा थुंभ विराजै गुरुराज नो,
अजीमगंज सुख दाय हो साहिबा जी मोरा ।
साहिबा 'श्रीजिनहर्षसुरिद' नै,
हुइज्यो सदाई सहाय हो साहिबा जी मोरा । सा. ९।।

जिनानन्दसागरसूरि रचित

१५९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – वनजारा)

सुनो सुनो कुशल गुरु प्यारा, तुम जीवन नाथ हमारा ।। टेर ।।
मै दर्शन करने आया, चरणो मे शीस नमाया ।
मुझ आनन्द नयन न माया ।। सुनो० ।। १ ।।
मै कुमति सखी से रमिया, मै भव भव दुःख मे भमिया ।
दुःख नरक निगोद से डरिया ।। सुनो० ।।२।।
तुम बहु जीव को तिराया, गुरु बहु उपकार दिखाया ।
शुद्ध समकित राह बताया ।। सुनो० ।।३।।
मै दीन शरण तुझ आया, शुभ भावना दिल मे भाया ।
गुरु रत्न चिन्तामणि पाया ।। सुनो० ।।४।।
वीर सम्वत् अति मन भाया, चौवीसे अड़तीस छाया ।
वैशाख पूर्णिमा ध्याया ।।सुनो० ।।५।।
त्रैलोक्य गुरु सुखदाया, भानूपुर ठाठ मचाया ।
तुम दास 'आनन्द' गुण गाया, सुनो सुनो कुशल गुरु प्यारा ।।६।।

साध्वी तिलकश्री रचित

१६०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – फूल तुम्हे भेजा...)

अखियां प्यासी तरस रही है, दर्शन दे दो गुरुदेवा ।
तुम हो तारक जग उद्धारक, भव भव चाहुं तुम सेवा ।
मन मंदिर में ज्योत जगा दो, करुणा नजर करो गुरुराज ।
भक्ति रस का पान करूं मैं, आशीष दे दो हे सिरताज ।
आओ गुरुवर दर्श दिखादो, उपकारी जिन कुशल सूरीश ।
मात पिता बन्धु हो तुमही,जय जय हो जयकारी मुनीश।
अखियां प्यासी.।१।।

स्वार्थ भरी यह दुनिया सारी, भटक रहा मैं दीन अनाथ ।
जग उपकारी दीनदयालु, चाहुं भव भव तेरा साथ ।
मोह तिमिर घन दूर हटा दो, दे दो क्षायिक दर्शन दान ।
संत विचक्षण कल्पतरु वर, पूर्ण करो 'तिलक' अरमान ।
अखियां प्यासी ... ।।२ ।।

साध्वी तिलकश्री रचित

१६१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – मीठा मधु ने मीठी मीसरी रे ...)

ऊंचा शिखर ऊंचा देहरा रे लोल,पर सब से ऊंचे गुरू दर्शन के कोड
है सखि (२) दादा की भक्ति मे तेरा मन जोड (टेर)
अजब तेरी शक्ति गुरु ज्ञान तुमारा,जल्दी बता दो भवसिंधु किनारा ।
मूर्ति निहारूं मेरा नाचे मन मोर – हे सखि – ।।१।।
तूं है जीवन धन तूं है आनंदघन, तेरे बिना नहीं कोई भगवन ।
दादा तेरी महिमा की करे नहीं होड – रे सखि – ।।२।।
कुशलगुरु दादा तुम नाम की माला, सचमुच है यह मंगलमाला ।
नाम रटुं चाहुं मुक्ति का रोड – रे सखि – ।।३।।
धन्य जगत में वही बडभागी, संत विचक्षण सेवो सद्भागी ।

विचक्षण मंडल वंदे कर जोड़, -२- हे सखि – ।।४।।
खरतर गच्छ के दिव्य दिवाकर,अब तो प्रगटादो शासन सुधाकर।
त्रिभुवन 'तिलक' भव बन्धन तोड (२) -हे सखि- ।।५।।

साध्वी तिलकश्री रचित

१६२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - जिया बेकरार..)

कुशल गुरु गुणधार छे, भक्तोना आधार छे,
कोई न खाली जावे एवो, दादानो दरबार छे ।
चन्द्रसूरि पटधारी गुरुनी, महिमा जग विख्यात हो ।
कलिकालमां अद्भूत ज्योति चमक रही साक्षात हो ।
जिन शासन शणगार छे, भक्त हृदयना हार छे – कोई ।।१।।
गुरुवरना शुभ दर्शन करवा भक्त अनेको आवे हो ।
केशर चंदन पुष्प सुगंधी इत्र नैवेद्य चढावे हो ।
पूजा ठाठ अपार छे, गीतोना रणकार छे– कोई ।।२।।
'तिलक मंजु' शरणे आई, सुणजो एक अरदास हो ।
संत विचक्षण दर्शन चाहुं, सफल करो मन आश हो ।
कीर्ति ध्वजा लहराय छे पुण्योदय प्रगटाय छे – कोई ।।३।।

साध्वी तिलकश्री रचित

१६३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - लाज्यो (२) चुदडी अे ...)

चमके चमके शासन तारूं चमके छे,
अे तो चमके चारे कोर-शासन चमके छे ।१।

फरके फरके धजाओ फरके छे,दादाबाडीमां बोले मोर-शासन– २
दीपे दीपे अे पाट तारो दीपे छे,अे तो खरतर गच्छ शणगार शा.– ३
माता जैतश्रीने स्वप्नुं आवे छे,त्यारे जनम्या करमन कुमार शा.– ४
कुमार दश वरसना थाय छे, दीक्षा लीधी गुरुजी हाथ - शासन – ५
गुरु तीस वरसना थाय छे, त्यारे थया सूरि सम्राट - शासन – ६

रायाराणा तमने पूजे छे, देव देवी नमे वारंवार -शासन – ७
समयसुंदर नी जहाज तमे पार करी,अमावसनो उगायो चांद -शा.– ८
खरतरगच्छनो पाट दीपावाने, कोई प्रगटावो युगप्रधान - शासन – ९
काजी बहु अभिमानी हतो, अे तो गुरुजीने छलवा जाय-शासन – १०
काजी टोपी उपर उडावे छे, गुरु ओघाथी नीचे लाय - शासन – ११
विचक्षण मंडल तारे शरणे छे, नमी वंदीने पावन थाय-शासन – १२
'तिलक मंजु' तमने विनवे छे, अध्यातम ज्योत जगाय-शासन – १३

साध्वी तिलकश्री रचित

१६४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - चांदसी महबूबा ...)

दादा श्री जिनकुशल गुरु नी, महिमा वरणी न जावे हो ।
दादा गुरु ना दर्शन करवा, भक्तजनो सहु आवे हो ।
देश देश मां दादाबाडी, दत्त कुशल गुरुवरनी हो ।
मालपुरा मां जगमग ज्योति, कुशलसूरि गुरुवर नी हो ।।१।।
संकटचूरण आशापूरण, प्रत्यक्ष परचो बतावे हो ।
सोमवार पूनम दिन पूजो, दर्शनथी दुख जावे हो ।
अष्ट प्रकारी पूजा रचावे, श्रीफल भेट चढावे हो ।
आरती मंगलदीप करीने, भक्ति धूम मचावे हो । दादा. ।।२।।
पुण्योदय थी सुवर्ण दर्शन, पामे जो वडभागी हो ।
ज्ञान विचक्षण 'मंजु तिलकनी', भवनी भावड भागी हो ।
शिवसुखकामी गुरुगुणधामी,कीर्ति ध्वजा फुरकावे हो। दादा. ।।३।।

साध्वी तिलकश्री रचित

१६५. जिनकुशलसूरि स्तवन

पार उतार पार उतार, ओ गुरुदेवा पार उतार ।
जड दृश्योनी फिल्मो जोई, चेतन रामे सुध बुध खोई ।
शिवपथ दर्शक मिला न कोई,पुण्ये मल्यो छे गुरु दरबार- ओ१ –
गुरुवर ज्ञानी जग जयवंता, सुखकर भयहर महा बलवंता ।

शरणे आव्यो गुरु गुणवंता,मुझ दु:खियानो तारणहार– ओ. २ –
अजब गजबनी माया तारी, नर नारीना मन हरनारी ।
भक्तजनोनी विपदाहारी, श्री जिनकुशल कुशल दातार– ओ.– ३
श्वासोश्वासे स्मरण तमारुं, भव भव मलजो शासन प्यारुं ।
गुरु बिन जीवनमां अंधारुं, धन्य बन्यो मारो अवतार– ओ. – ४
शक्ति नथी पण भक्ति करूं छुं, बुद्धि नथी पण विनंति करूं छुं ।
संत विचक्षण नमन करूं छुं,करे 'तिलक' अभिवंदन सार-ओ.- ५

साध्वी तिलकश्री रचित

१६६. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिनवर की आज्ञा धारो, भवजल सागर पार करो ।
जैन जगत ज्योतिर्धर गुरु की, जय बोलो जय विजय वरो ।।१।।
कुमति कदाग्रह संग कुगुरु का, त्यागो महा विषय विष को ।
जैन दीपक श्री गुरुवर महिमा, आलोकित है जग जन को ।।२।।
शमरस पान किया था जिसने, लाखो जैन बनाये थे ।
तन मन व्याधि नाशक गुरुवर, आतम ध्यान लगाये थे ।।३।।
लक्ष्मीपति पद पाता सेवक, निशदिन जाप जपे तेरा ।
पाप ताप संताप मिटाते, पुलकित होता मन मेरा ।।४।।
गुण गरिमा की गाथा गाते, देव देवी और नर नारी ।
चमक रही थी श्रद्धा ज्योति, मन मंदिर मे जयकारी ।।५।।
रूपातीत दशा जो चाहो, ऊं अर्ह पद जपते रहो ।
जड वियोगी जिन पद संगी, निज घर मे ही रमते रहो ।।६।।
कीर्तन पूजन वंदन अर्चन, आत्म समर्पण हो सच्चा ।
आत्मानंदी शिवपद पाता, जो होता सेवक पक्का ।।७।।
तीन भुवन मे कीर्ति ध्वजा, फहराती गुण गान करे ।
भाव पुष्प की माला गूंथी, कर्म जाल से मुक्त करे ।।८।।
अजरामर पदवी को पाना, सहज नहीं अति सरल नही ।
कषाय मुक्ति विषय विरक्ति, क्षपक श्रेणी गत सुलभ सही ।।९।।

मन में मैत्री भाव दीप है, समकित स्वस्तिक जीवन में ।
नयनो में करुणा की धारा, सिंचित हो जग उपवन में ॥१०॥
रम्य रमणता आत्म धर्म की, सौरभ कल्पतरु वर में ।
अद्‌भुत सर्जन दोष विसर्जन, भक्ति तोरण घर घर में ॥११॥
रजनी बीती मोह भाव की, प्रगटी आत्म तेज लाली ।
जैतश्री नंदन नवज्योति, फैलादी अति खुशियाली ॥१२॥
होगी नैया पार कहो कब, संत "विचक्षण" बलिहारी
मोक्ष गमन स्वर्णिम सूर्योदय, "तिलक" जीवन आनंदकारी ॥१३॥

साध्वी तिलकश्री रचित

१६७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – हे किरतार मने ...)

हे गुरुवर तमे तारणहारा, करजो अमारी सहाय – (२)
जन्म लीधो गुरु गढसिवाना, रत्न अमोला छाजेड गोत्रना ।
करमन कुमार नाम थाय – हे... ॥१॥
मंत्री जिल्हागर कुल अजवाल्युं, जिन शासनने खुब दीपाव्युं
जैतश्री नन्द कहाय – हे गुरु – ॥२॥
दश वरसनी बालक वयमां, संयम लीधो गुरु चरणमां ।
नाम कुशल गुरुराय – हे गुरु – ॥३॥
श्री जिनचन्द्र गुरु पाट दीपायो, दुनियामां धर्म डंको वगाड्यो
जय जयकार वरताय – हे गुरु – ॥४॥
गामे गाम पाट सूना तमारा, जोई जोई हैया रडे अमारा ।
हवे सुणो गुरुराय – हे गुरु – ॥५॥
श्रमण संघनी संख्या वधारो, प्रभावशाली कोई गुरु पधारो ।
भक्तोना हैया हरखाय – हे गुरु ॥६॥
बे हजार एकत्रीसनी साल मां, गुरुना दर्शन थया अंजार मां ।
स्वर्ग जयंती उजवाय – हे गुरु – ॥७॥
विचक्षण मंडलनी विनंती स्वीकारजो, शिशु 'तिलक' ने पार उतारजो ।

भक्तिनो रंग छलकाय – हे गुरु – ||८||

दयाभक्ति रचित

१६८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र.सं.१८८५)

(तर्ज – दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरसण सदा देवो)

आज हरख भयो संघ सकल सुखकारी सद्गुरु तूं जयो ।
दादा मरु मंडल मांहे सोहे, दादा नगर सिवाणो मन मोहे ।
जिहां मंत्रि जिल्हागर दुख खोहे । आ. १ ।
दादा गुणवंती सुगेहिनी राजे, जसु जैतसिरि वर नांमे गाजे ।
सुत छाजेड़ कुलें छत्र सम राजे । आ. २ ।
विचरत जिनचन्द सुरिन्द आवे, उपदेश सुणि गुरु गुण हिय लावे ।
यौवन वय संयम तब ध्यावे । आ. ३ ।
तसु पास विविध विद्याधारी, श्रीजिन आंण धरे हितकारी ।
हिव गुरुराय थया तसु पटधारी । आ. ४ ।
प्रतिबोध दीया बहु नर नारी, गुरु नित शासन उन्नतिकारी ।
सुरतरु सम सद्गुरु शिवकारी । आ. ५ ।
गुरु ज्ञान बले निज आयु जाणे, देराउर अनसन शुभ ध्यांने ।
सुरलोक तणा सब सुख आंणे । आ. ६ ।
दरसण धुरि ससि पूनिम दिवसे, ग्रांम नगर गुरु महिमा सिवसें ।
जिम रुचि सेवे तिम सुख विलसे । आ. ७ ।
अजीमगंज से भविजन आवे, हरखे नर नारी गुण गावे ।
फुनि बालूचर संघ वधावे । आ. ८ ।
गुरु चरण फूल सुगंधै छाया, उच्छव करता संघ सवाया ।
गुरुराय करे तिहां छत्रछाया । आ. ९ ।
संवत अठार पच्चासी वरसे, ज्येष्ठ सुकल कवि तृतीया हरषे ।
थइय प्रतिष्ठा जलधर वरसे । आ. १० ।
सुगुरु श्री क्षमाकल्याण पसाये, गुण आनन्द मुझ नित नित थाये ।

'दयाभक्ति' वंछित फल पावे । आ. ११ ।

दयामन्दिर रचित

१६९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – परज)

कुसल गुरु सुरिद सुखकारी हो सुगुरु मेरे । कु० ।
कुसल सुरिंद गुरु परतिष जग मे,परचा पूरत भारी हो । सु० १।
निजकुल मंडन पातिक खंडन,सुरतरु सम जस धारी हो। सु० २।
सुजस सुण्यो तेरो महियल में, आयो सरण तुमारी हो । सु० ३।
'दयामंदिर' की एही अरजी, दरसण द्यो हितकारी हो । सु० ४।

दानविशाल रचित

१७०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग — ठुमरी)

सदा सहाई कुशल सूरिन्द गुरु, द्यौ दौलत गुरुराय जी ।। स० ।।
खाई न खूटे खरची न टूटे, दिन दिन वधे सवाय जी।। स० १ ।।
सकला सुत अरु सुन्दर नारी, शुभ परिकर सुखदाय जी।। स० ।।
मित्र समागम सुजश वधारण,नित प्रति हरख उछाह जी।।स०२।।
राजा प्रजा पाय नमे सहु, गुरु स्मरण सुपसाय जी ।। स० ।।
दोषी दुश्मन नृप भय पड़ियां, सद्‌गुरु करय सहाय जी ।।स० ३।।
विखमी विरियां संकट पड़ियां, समर्या आवे धाय जी ।। स० ।।
भूखां भोजन तिसियां पाणी, निरधनियां धन होय जी ।।स० ४ ।।
संघ सकल ने दो सुख शाता, जिम कीरति जग थाय जी।।स० ।।
थानक थिरता परघल भोजन,पग पग कुशल सहाय जी।।स०५ ।।
अभय महा सुखदाई सद्‌गुरु,नव निधि वांछित थाय जी ।। स० ।।
सुमति सवाई नित घर घर संपत,'दानविशाल' लहाय जी।।स०६।।

दौलत रचित

१७१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - सामेरी)

कुशल गुरु कुशल करो वरदाई ।
रोग सोग चिन्ता दुख चूरण, पूरण वंछितदाई । कु०१।
जल थल जंगल विषमी वाटे, सद्‌गुरु सदाई सहाई ।
पुत्र कलत्र दे रूप स्वरूप नो, नांमे नवनिधि पाई । कु०२।
भूत प्रेत रक्ष जक्ष किन्नर, छल न सके य कदाई ।
एकमना ध्यावे सब कोई तो, 'दौलत' सुख सदाई । कु०३ ।

धर्मचन्द रचित

१७२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र सं १८४९)

(तर्ज – नमो रे नमो शत्रुजय गिरि रे)

श्री जिनकुशल सूरीसरू रे, राजे श्री महाराज रे ।।
तुझ गुण सांभल मन ऊमह्यो रे,दरशण देखण काज रे।।श्री०१।।
दरशण द्यो महाराजजी रे, थांरा गुण अनेक रे ।।
तुझ सम दूजो कोई नही रे, कुशल करो सुविवेक रे ।।श्री०२।।
मिल मिल बहुला मानवी रे, यात्रा करे सुखकार रे ।।
नीर पखाली पगला बिन्हे रे, पूजे विविध प्रकार रे ।।श्री०३ ।।
आगल ऊभा ओलगे रे, गावे गीत रसाल रे ।।
मन वचन कायाये करी रे; चरण नमे त्रिहुं काल रे ।। श्री०४।।
संवत् अठार गुणचास मे रे, कार्तिक शुक्ल उदार रे ।
संघ सहित यात्रा करी रे, पूनम दिन सोमवार रे ।।श्री० ५ ।।
आश धरी हूँ आवियो रे, दौलत द्यो राजान रे ।।
'धर्मचन्द' इम वीनवे रे, यात्रा चढ़ी परमाण रे ।। श्री० ६ ।।

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

१७३. जिनकुशलसूरि स्तवन

कुशल करण जिनकुशलजी, दादोजी परसिद्ध देव रे लाल ।
परगट परता पूरवै, शुद्धे मन करतां सेव रे लाल ।।१।।
पृथ्वी मांहे परगड़ौ, सिवियाणो गढ सुखकार रे लाल ।

जेलागर मन्त्री जेहां, नामे जयतश्री नारि रे लाल ॥२॥
तेरे सैंत्रीसैं समै, जायौ सुभ दिन जयकार रे लाल ।
सेंतालैं संयम लीयौ, सहु अथिर गिण्यौ संसार रे लाल ॥३॥
सद्गुरु जिनचन्दसूरिजी, सघले गुणे देखि सुघाट रे लाल ।
शुभ महोरत सत्योत्तरे, पाटण में दीधो पाट रे लाल ॥४॥
गिरुवो खरतरगच्छ धणी, जिनशासन मे जसवास रे लाल ।
देरावरपुर दीपतो, निव्यासीयें स्वर्ग निवास रे लाल ॥५॥
संकट मांहे समरतां, दादोजी करे दुख दूर रे लाल ।
बेडी राखी बूडती, परसिद्ध ए विरुद पडूर रे लाल ॥६॥
सेवतां सुरतरु समौ, दिन दिन दौलति दातार रे लाल ।
विजयहर्ष वंछित दीयै, वंदै 'धर्मसी' वारंवार रे लाल ॥७॥

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

१७४. जिनकुशलसूरि स्तवन

कुशल करो जिनकुशलजी, दुख दूर निवारौ ।
द्यौ मन वंछित दिन दिनै, विनती अवधारौ । कु० १ ।
तो समरथ साहिब छतें, दास दीन तुम्हारौ ।
सोभा न वधै स्यामीयां, एह बात विचारौ । कु० २ ।
भेट्या में हिव तुम्ह भणी, थयौ सफल जमारौ ।
'धर्मवर्द्धन' कहै मांहरा, मन वंछित सारौ । कु० ३ ।

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

१७५. जिनकुशलसूरि स्तवन

कुशल गुरू नांमे नवनिधि पामै ।
ध्यावै जेह सूधै मन सद्गुरु, दिन दिन शुभ परिणामै ॥१॥
भर दुक्कर अटवी वलि घाटै, बैरी जूथ घणा में ।
कुशल खेम कुशल परसादै, ते पहुंचै निज ठामें ॥२॥
परता पूरण संकट चूरण, चावौ चौरासी गच्छां मैं ।

'धर्मसीह' कहै ध्यायां धावै, करिवा सांनिध कामे ।।३।।

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

१७६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(रस १८४५)

दादौ देरावर दीपै, जसु सेवक सुजसै जीपै हो, सद्गुरु सुखदाई ।
श्रीजिनकुशल सूरिंद, कलियुग मांहे सुरतरु कंदो हो ।।स.१।।
महिमा इण जग मांहे, आवै बहु यात्र उछाहे हो ।
परतिख परता पूरै, चित्तनी सहु चिन्ता चूरे हो ।।स.२।।
विषमी वेला वाटै, करतां समरण दुख काटै हो । स.।
छाजहड़ां कुल छाजै, गुरु महिमा अधिकी गाजै हो ।।स.३।।
परसिद्ध जिणचंद पाटै, खरतर गुरु सोभा खाटै हो ।स.।
सांनिध करण सदाई, वड नामी गुरु वरदाई हो ।।स.४।।
थुम्भ घणा ठाम ठामै, पाय पूजै ते सुख पामै हो ।स.।
थिर देरावर थानै, मुनिवर सहु आसत्ति माने हो ।।स.५।।
मन मोटै मुलताणी, आदर यात्रा मन आणी हो ।स.।
राखी राखेचे रेख, संघ कीधो तिण सुविशेष हो ।।स.६।।
जेसलगढ गच्छराज, जिणचन्दसूरि गुणे जिहाज हो ।स.।
वंदण संघ तिहां आवै, वित्त साते क्षेत्रे वावे हो ।।स.७।।
संघ आदरै समूज, आया यात्रा श्रीपूज हो ।स.।
मोटो संघ मुलताणी, हित मरोटी हाजीखाणी हो ।।स.८।।
जलालपुरे जस लीधो, सीतपुर उच वंछित सीधो हो ।स.।
ए संघ यात्रा आया, श्रीपूज श्रीसंघ सवाया हो ।।स.९।।
सतरेसै पैतालीसै, माह सुदि तीजै सुजगीसै हो ।स.।
यात्रा करी जयकारी, श्री 'धर्मसी' कहै सुखकारी हो ।।स.१०।।

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

१७७. जिनकुशलसूरि स्तवन

दौलति दाता द्यौ सुखसाता, सहु जन मन्न सुहाता राज ।

जे दिन राता तुझ गुण गाता, ते रहै राता माता राज ॥१॥
दादा दादा जग जस वादा, मोह्या सहु नर मादा राज ।
टलइ अल्हादा सहु विषवादा, कुशल कुशल परसादा राज ॥२॥
प्रवहण तार्या कष्ट निवार्या, अटवी मांहि उबार्या राज ।
विरुद संभार्या 'धर्मसी' धार्या, सेवक काज सुधार्या राज ॥३॥

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

१७८. जिनकुशलसूरि स्तवन

प्रेम मन धारि नित पहुर परभात रे,विविध जस वास गुणरास वादौ।
अमल अखियात विख्यात एणै इला,दीपतौ देव जग मांहि दादौ॥१॥
घाट रिपु थाट जलवाट ओघट घणै, हणै सहु आपदा हुइ हजूरै ।
सूरि सिरदार द्यै सकलसुख सेवकां,पूर नितकुशल जिनकुशल पूरै॥२॥
अधिक घण झाड उझाड अवगाहतां,लसकरां तसकरां पड्यां लारै।
धीग गच्छराज रो ध्यानमन ध्यावतां,विकटसंकट सहु निकट वारै॥३॥
बडकती भाजती बूडती बेडीयां, पार उतार जिण विरुद पायौ ।
तूंस सेवक तणां दुक्ख भांजै तुरत,'धरमसी' कुशल गुरु नाम ध्यायौ ॥४॥

उपाध्याय धर्मवर्द्धन रचित

१७९. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिनकुशल सूरीश्वरु, गावो गच्छराया ।
शुद्ध चित्त नित समरतां, सुख होय सवाया ॥ श्री० १ ॥
सेवै कुण सुर अवर कुं, परिहरि प्रभु पाया ।
आलिंगे कुण आक कुं, छंडि सुरतरु छाया ॥ श्री० २ ॥
मन शुद्धे जपतां मिले, मन वंछित माया ।
तेणि 'धर्मवर्द्धन' धर्यो, गुण जिण ही गाया ॥ श्री० ३ ॥

पद्म रचित

१८०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – काफी – अद्धा)

कैसे कैसे गुरु गुण कथ जाय, भनत जेही सुरगुरु लजाय ।
कैसे करूं करूं अल्प बुद्धि, कोई देवे न बताय ।।१।।
श्री जिनकुशल सुरिन्द गुरु तुम सम,दूजो दयाल नही या जग में।।
'पद्म' दुःखिन की सुन पुकार, दुःख हरत धाय ।।२।।

पद्म रचित

१८१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – घाटो – अद्धा)

निश दिन चित्त चावे, कुशल गुरु दरशन रे ।। टेर ।।
दिन चैन नहीं निश निद्रा, अब कहो कैसे बितावे ।। कु० १ ।।
मोने 'पद्म' करो गुरु ऐसो, अब जासो जन सुख पावे ।।कु०२।।

पद्म रचित

१८२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – खमाच – सुरकांक ताल)

श्री जिप कुशल सूरि, खरतर गच्छेश ।।
कुशल करण दहुं दिश, सदगुरु कुशलेश ।।१।।
मन वांछित पूरक, पाप मेरे चूरक ।।
ताप तिमिर दूर करो, 'पद्म' हिये दिनेश ।।२।।

पद्मराज गणि रचित

१८३. जिनकुशलसूरि स्तवन

कुशल गुरु हम वीनती अवधारो ।
सेवक जन ऊपर करुणा कर, संकट वेग निवारो । कु० १ ।
भगतिवच्छल आरति भयभंजन, आपदि उदधि उतारो ।
चिन्ता हरि संपति करि वहिली, वैरी दूर विडारो । कु० २ ।
धूप अनूप नव नेवज करि, गुरु पद कमल जुहारो ।
रोग सोग दुख हरण सुगुरु को, नाम मन्त्र अवधारो । कु० ३ ।
कलियुग भंजन सकल सुखपूरण, साहिब सद्गुरु हमारो ।

'पद्मराज' कहे संघ उदय कर, खेम कुशल विसतारो । कु०४ ।

पद्मराज गणि रचित

१८४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – गूजरी)

सुगुरुजी मच्छर दूर निवार ।

श्रीजिनकुशल कुशल कमलाकर, करि सेवक की सार । सु० १ ।
गरुड जेम विसहर बल गंजइ, तरणि हरइ अन्धकार ।
मयगल मथन सीह तिम ए गुरु, संकट टालणहार । सु० २ ।
सद्गुरु मात तात गुरु बन्धव, गुरु साहिब आधार ।
'पद्मराज' कहइ जे गुरु सेवइ, ते लहइ सुख संसार । सु० ३ ।

पुण्यशील गणि रचित

१८५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – नीन्दड़ली हठीली वैरण हो रही)

श्री जिनकुशल सूरीसरु, सहु देवां सिरताज हो, सद्गुरु मोरा ।।
इण कलियुग सुरतरु सारिखा,खरतरगच्छ महाराज हो।।स.श्री.१।।
जिहां तिहां तुम परचा घणा, पामी न सके कोई पार हो।। स०।।
तुरत सुजाणसिंह भूप ने, कीधो बहु उपगार हो ।। स०श्री०२ ।।
भक्त गरीबनिबाज छो, जिन शासन दीवान हो ।। स० ।।
संकट तिमिर गमाइवा, तेजै झलहल भाण हो ।। स० श्री०३ ।।
गुण गिरुवा गुरुरायना, समरण थी जिन वृन्द हो ।। स० ।।
हय गय सुत धन कामिनी, पामे मन आनन्द हो ।। स०श्री०४।।
थुंभ विराजे गुरुराय नो, सुथिर गडाले सुखदाय हो ।। स० ।।
वाचक 'पुण्यशील' राज ना,प्रह समे प्रणमे पाय हो ।।स०श्री०५।।

प्यारेलाल मूथा रचित

१८६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – क्या-क्या न सहे मेरे हुजूर.)

कब तक मै सहूँ भव के सितम आपके होते?
नाकामियाँ देती है अलम आपके होते ।
पूजा है गुरु आपको भावो मे बसा कर,
आशाओ ने क्यो तोड़ा है दम आपके होते?
इक आप मेहरबाँ हों, फले सारी मुरादे,
हो जाये सफल अपना धरम आपके होते ।
जो दीप कृपाओं के जलाये थे, बुझे है,
क्यो ऐसे हुए मुझ पे करम आपके होते?
चरणो से किया 'प्यार' तो क्या ये ही सजा है?
चाह के भी कुशल मिटते है हम, आपके होते ।

प्यारेलाल मूथा रचित

१८७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – शादी के लिए रजामद कर ली फिल्म देवी)

चरणो के है चाकर खबर कर लो ।
एक दया दृष्टि इधर कर लो ।।
अपना हमे समझो, नजर कर लो ।। एक० १ ।।
प्रीत पराई उड़ती पताका, अन्य सन्तो मे ये ही झांका,
इतना भटका मंजिल न पाई, झूठ जग से प्रीति लगाई,
मुझ पे कृपा मेरे दिलबर कर लो ।। एक० २ ।।
कोई युग अव तुझसा न देगा, नाम तेरा हर एक लेगा,
तू विचक्षण विज्ञानमय है, ज्ञान मे तू हरदम अजय है,
ऐसा गुरु कुशल प्रवर कर लो ।। एक० ३ ।।
एक पल ना तुमको बिसारूँ, सुख मे दु:ख मे तुमको संभारूँ
रूठ न जाना ओ मेरे स्वामी, तुम हो मेरे दिल के विश्रामी,
'प्यारे' मेरे भावो मे घर कर लो ।। एक० ४ ।।

प्यारेलाल मूथा रचित

१८८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – खिलौना जानकर तुम तो... खिलौना)

जो मैंने थामा है दामन तुम्हारा तुम निभा लेना ।
कुशल जी अपने अनुग्रह में मेरी वांछा सजा लेना ।।
तेरे द्वारे पे अरमानों की दुनिया लेके आया हूँ,
तेरे होते हुए गुरुवर मैं किस्मत का सताया हूँ,
तो क्या मेरे मुकद्दर में है गम का आसरा लेना? ।।१।।
मुझे भी देखना है आपकी शक्ति का जलवा नाथ,
जो मैं सच्चा उपासक हूँ तो मुझको दीजिए गुरु साथ,
सहारा आपका है एक उसको मत हटा लेना ।।२।।
सपन के लोक में मुझ को दिखाई दे तेरी झाँकी,
खयालों में या दर्शन में दिखे तेरी ही छबि बांकी,
अगर मिल जाये तू 'प्यारे' मुझे दुनिया से क्या लेना? ।।३।।

प्यारेलाल मूथा रचित

१८९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – तुम अगर साथ देने का... हमराज)

तुम अगर मेरे भावों के वासी रहो,
भव मुसीबत के फेरे संभल जायेंगे ।
शाम का डूबा सूरज नया आये ज्यो,
बिगड़ी किस्मत के नक्शे बदल जायेगे ।।
तेरी यादों के साये में कटते हैं पल,
मेरे नयनों के पलने में सूरत तेरी ।
कितने युग-युग की है साध स्वामी तू ही,
मेरे हिरदय में अंकित है मूरत तेरी ।
तू सदा मेरी राहों का हमदम रहे,

मेरी राहों के कॉटे निकल जायेंगे ॥१॥
भूमि निर्जल में फलफूल, रजनी को दिन,
बात अनहोनी होनी कराये तू ही ।
कहीं निर्धन को धनवान, बैरी को मीत,
बिछड़े प्राणी को प्रियवर मिलाये तू ही ।
जब सभी तेरे गुण से प्रभावित बने,
फिर भला हम ही कैसे बदल जायेगे? ॥२॥
हीनता पर हमारे न जाओ गुरु,
तुम कुशलसूरि अगर कुशलता के हो ।
हम में अपराध, तुममे क्षमाशीलता,
कर दो अनुग्रह, जो भंडार समता के हो ।
हो तुम्हारी कृपा गर बुरे हाल पर,
दीप 'प्यारे' मुरादों के जल जायेगे ॥३॥

प्यारेलाल मूथा रचित

१९०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – अपना मुकद्दर बिगड़े हुए)

भव की मंजिल चलते हुए, एक मुसाफिर हार गया ।
कर्म के कॉटे ऐसे चुभे, प्रेम धरम व्यवहार गया ॥
क्रोध कषाय विषय के, पथ में जाने कितने साथ मिले,
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, कितने ही संताप मिले,
भाग्य से जो हम पा भी गये, मानव भव बेकार गया ॥१॥
चारो गति के चक्कर मे या चौरासी के फेरे मे,
कितनी गलियॉ भटका भव-भव, अठरा पाप के घेरे मे,
चलना बहुत है मुझको अभी, पर जीवन का सार गया ॥२॥
आये तुम्हारे शरणे थककर, पाप हमारे धो देना,
अपनी कृपा का अब इस भव मे, दीप कुशल संजो देना,
'प्यार' तुम्हारा मिलता रहे, वक्त सभी दुश्वार गया ॥३॥

फतहचन्द मुनि रचित

१९१. जिनकुशल सूरि स्तवन

(तर्ज – लूअरकी)

सद्गुरु पूजन जावस्यां, कुशल सूरीन्द गुण गास्यां हे माय ।।
श्री फल भेट चढावस्यां,म्हें तो चरणों री पूज रचास्यां है मांय।।स.१।।
मारू देश में शोभता, एतो नगर बीकाणे राजे है मांय ।। स०।।
गाम गडाले दीपता, एनी महियल महिमा छाजे है मांय।।स०२।।
समर्या संकट चूरता, एतो कुशल करण अवतारी है मांय ।।स०।
सुखदायक श्री संघ ने,दादा खरतर गच्छ अधिकारी है मांय।।स.३।।
दूर देशान्तर थी घणा, एतो हिल मिल यात्री आवे है मांय।।स०।।
लुल लुल सीस नमावतां,एतो सन्त सुयश मिल गावे है मांय।।स.४।।
सझ सिणगार मनोहरु, एतो ठम ठम पॉय ठमकावे है मांय।।स०।।
तन मन प्राण लोभावती, एतो गौरी मंगल गावे हे माथ।।स०५।।
बिछडयां साजन मेलवे, एतो अनमी पाय नमावे है मांय ।।स०।।
मनरा मनोरथ पूरवे, दादा परघल लक्ष्मी लावे है मांय ।।स०६।।
विखमी वेला वाट मैं, समर्या सानिध आवे है मांय ।। स० ।।
भूखां भोजन मेलवे, दादा तिसियां नीर पिलावे है मांय।।स०७।।
यात्री आवे नित नवा, दादा थान आगल थिर थाट है मांय।।स०।।
सीरणीयां नित सामठी, गावे गुण गहगाट है मांय ।। स०८ ।।
कुशल सूरीन्द गुरु आगले,दादा भवि मिल भावना भावे है मांय।।स०।।
'चन्दफते मुनि' नित नमे, दादा परमानन्द सुख पावे है मांय।।स०९।।

वालचन्द्र गणि रचित

१९२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज -चालो खेलिय होरी, ए चाल)

मेरी अरज सुणीजे, सद्गुरु दीनदयाल ।
सुनिजर कर प्रभु साहिब मेरे, सेवक जन प्रतिपाल ।। मे० १ ।।

कुशल करण जग कुशल सूरीसरु, कीजे कुशल कृपाल ।
देरावर गुरु थान विराजै, सहरगलै सुभ नाल ।। मे० २ ।।
दया करी प्रभु दरसण दीजै, कीजै भक्त निहाल ।
जिनसौभाग्यसुरिद कुं थायै, नित प्रति मंगल माल ।। मे० ३ ।।
पर उपगारी परमगुरु को, जस जग मांहि विसाल ।
सेवक नी प्रभु आशा पूरो, करत वीनती 'बाल' ।। मे० ४ ।।

बालचन्द्र गणि रचित

१९३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – काफी)

सुणियो अरज हमारी सुगुरुजी ।। सु० ।। टेर ।।
दीनदयाल कृपानिध साहिब, आशा अेक अम्हारी जी ।।
वांछित दायक वांछित दीजे, इक तुमरी इक तारी जी।। सु०१।।
चन्द पटोधर कुशल सूरीन्दजी, जस जग मे विस्तारी जी ।।
भक्तवत्सल भगवंत प्रभु को,चरण शरण सुखकारी जी।।सु०२।।
सुनिजर कर प्रभु साहिब मेरे, दरशण वहिलो दीजे जी ।।
सद्गुरु अपनो सेवक जांणी, वांछित पूरण कीजे जी ।।सु०।।३।।
परम प्रभु मेरो पर उपगारी, शरणागत साधारी जी ।।
'बाल'कहै मुझ वांछित दीजे, वधती वान वधारी जी ।।सु०४ ।।

भावसागर रचित

१९४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - सोरठ कडखो)

महिर महिर करो जिनकुशल मोटा घणी,
अरज प्रभु माहरी एक मानो ।
आस पूरण सदा कलियुग मे इहां,
वधारीयै साहिबा मुज्झ मानो ।। म० १ ।।
वड वडा विरुद छे जगत मे ताहरा,

श्रवण सुणि आवीयौं तुज्झ पासे ।
मुझ भणी तारिस्यो मामलो वाखिस्यो,
जगत करिवा भणी को बालि आसे ।। म० २ ।।
वाट दुसमन -- जेह निंदा करे,
- कहूं तेहने सुनिजर कीज्यो ।
सुक्ख संपत्ति दीयौ निज तणां सेवकां,
जेम दुख माहरा सहू छीजे ।। म० ३ ।।
भलभली जायगा थंभ सोहे भला,
रह्यो निज सेवकां पूर आसा ।
'भावसागर' भणी जांण सेवक सदा,
दीजिये साहिबा हिव दिलासा ।। म० ४ ।।

भुवनकीर्ति गणि रचित

१९५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल-नच्छ गई के मेरी नच्छ गई, एहनी)

कुशल करे, दादा कुशल करे, दादा कुशल करे ।
कुशल करे जिनकुशल सूरीस,कुशल करण कलि तूं जगदीस।।दा.१।।
बाहिर भीतर सांझ सवार, संकट पड़ियां राखणहार ।। दा० २ ।।
रोग सोग मेटे खिण मात्र, जग सहु आवे ताहरी जात्र ।।दा०३।।
विषम जिके जलथल गिर थाट,तिहां तूं तुरत गमे उ वाट।।दा.४।।
झगड़े झांटे हम दीवांण, ऊपर बोल करे निरवांण ।। दा० ५ ।।
टाले दुरजण केरी फेट, मेल्हे सापुर थां सुण भेट ।। दा ० ६ ।।
राज रिद्धि लीला सनमान, लहीये ताहरो धरतां ध्यान ।।दा०७।।
म्हांरी बाहिर तोइज सीम, कूम कहूं तो ताहरो नीम ।। दा०८।।
कहे 'भुवनकीरति' घर राग, तें तूठें अविचल सोभाग ।।दा०९।।

मगन रचित

१९६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – बंगालो घाटो)

आसा सफल फली, मै पायो परमानन्द ।। आ० ।। टेर
श्रीजिनकुशल सूरीसरू रे, देवां सिर हर देव ।
पुहवी मांहे परगड़ो रे, संघ करे नित सेव ।। आ० १ ।।
हूंस धरी मन हरखियो रे, दीठे दीनदयाल ।
दु:ख दोहग दूरे गया रे, टाल्या दु:ख जंजाल ।। आ० २ ।।
ग्यान तणो गुरु आगरु रे, परतिख गंग प्रवाह ।
मन गमता मित्र मेलवे रे, अति आनंद उछाह ।। आ० ३ ।।
तुम गुण गातां सद्गुरु रे, कहतां नावे पार ।
मगन तनें तुम मन वस्या रे, जपतां जै जैकार ।। आ० ४ ।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

१९७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – तेरे जैसा यार...)

कुशल गुरु दादा हम शरणे आये है ।
आस लिये गुरुवर तेरे दर पे आये है ।। टेर ।।
नहीं देव और कोई, जो संकट से उबारे ।
तेरा ही नाम रटता, तुम ही हो एक सहारे ।
हम महर नजर पाने, तेरे दर पे आये है ।।१।।
महिमा है तेरी ऐसी, तुम भक्तो के रखवाले ।
चरणो मे आकर बैठे, हम भक्त भोले भाले ।
श्रद्धा के फूल लिये, तेरे दर पे आये है ।।२।।
जो भी चरणो मे आता, तेरी करुणा पा जाता ।
इसीलिये तो दादा, कहलाते हो तुम त्राता ।
'मणि' दर्शन चाह लिये, तेरे दर पे आये है ।।३।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

१९८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(गजल)

कुशल गुरुदेव के दर्शन, अमी वरसे मेरे जीवन ।। टेर ।।
मनाऊं रात दिन तुमको, मै ध्याऊं शाम सुबह तुमको ।।१।।
दर्श दो ओ मेरे गुरुवर, खड़ा सेवक तेरे दर पर ।।२।।
गुणावली गा सकूं तेरी, शक्ति ऐसी नही मेरी ।।३।।
देव तुमसा नहीं दूजा, सकल दुनिया करे पूजा ।।४।।
भाव से जो तुम्हें ध्यावे, दर्श सपने तेरे पावे ।।५।।
यही इक है तेरी आशा, रहुं तुझ भक्ति का प्यासा ।।६।।
कान्ति 'मणि' दास है तेरा, तेरे चरणों में है डेरा ।।७।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

१९९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – शान्ति जिनेश्वर .)

कुशल सूरीश्वर है उपकारी, भक्तों के दिल हाजिर दादा ।
मन में बसा तूं,दिल में बसा तूं,तुझ चरणो का चाकर दादा।।टेर।।
जीवन पावन धन बन जाता, तेरा दर्शन पाकर दादा ।।१।।
संकट विकट सभी कट जाते, तेरे द्वारे आकर दादा ।।२।।
तेरा नाम जपे जो निशदिन, ओढे सुख की चादर दादा ।।३।।
तुझ दरिसण का प्यासा हूँ मै, प्यास वुझा करुणाकर दादा ।।४।।
कान्ति 'मणिप्रभ' तेरे सहारे, पावे पद अजरागर दादा ।।५।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

२००. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – दिल लूटने वाले . .)

गुरुदेव कुशल तुझ द्वारे हम, सर्वस्व समर्पण करते है ।
दिल की कलियां सरसाती हैं, दर्शन धन से मन भरते है ।।टेर।।
तुम मालपुरे के राजा हो, सरताज हो तुम सबके गुरुवर ।
सबके दिल में तुम छाये हो, तेरा ही राज है सब दिल पर ।
सबके लब पर है नाम तेरा, तेरा ही नाम सब रटते है ।।१।।
सारे जन दरवाजे तेरे, दौड़े आते बन परवाने ।

वह दृश्य अनोखा लगता है, जब गाते सब बन मस्ताने ।
जब भक्त दीवाने गाते है, भक्ति के झरने झरते है ।।२।।
तुम ही तारक उद्धारक हो, तुम ही हो सबके रखवाले ।
तेरे ही नाम की चाबी से, खुलते संकट के सब ताले ।
कान्ति 'मणिप्रभ' दिल की श्रद्धा को तुझ चरणो मे धरते है।।३।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – होठो से छूलो तुम ..)

गुरुदेव कुशल मेरे, सब संकट हरते है ।
भव भ्रमणा के फेरे, दर्शन से खरते है ।। टेर ।।
इच्छा होती पूरी, जो तुझ मंदिर आता ।
तेरा नाम अमर गुरुवर, खाली न कोई जाता ।
भक्ति की मस्ती मे सब नमन करते है ।।१।।
तेरी महिमा ऐसी, कोई नहीं गा सकता ।
मैं निपट अज्ञानी हूं, भक्ति क्या कर सकता ।
तुतलाती भाषा मे, बस श्रद्धा धरते है ।।२।।
तुम मेरे हो स्वामी, मैं दास तुम्हारा हूं ।
जन्मो से भटक रहा, कर्मो का मारा हूं ।
'मणि' तेरे सहारे ही, भव जलधि तरते है ।।३।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – पावन पुरुषोत्तम)

गुरुवर कुशल देव दरबारे हाजिर मै नित रहता हूं ।
मै नित रहता हूं खुशी की लहरी लहता हूं ।। टेर ।।
चमत्कार है कुशल गुरु का, सारे जग मे भारी ।
दर्शन करने दादाबाडी, दौडे दुनिया सारी ।।१।।
भक्ति रस को पीकर लाखो, भक्त बड़े हरसाते ।

पूजन कर तुझ चरणों का, मन आनंद रस बरसाते ॥२॥
ध्यान करे जो मंत्र जपे, बैठे जो तुझ चरणों में ।
तेरा दर्शन निश्चित पावे, वो अपने सपनों में ॥३॥
छोटी सी इक महर नजर, इस सेवक पर कर देना ।
कान्ति 'मणि' को दर्शन देना, यही अरज सुन लेना ॥४॥

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – घर आया मेरा परदेशी)

घर बैठे गंगा आई, मेरे मन खुशियां छाई ॥ टेर ॥
मालिक तू मेरे मन का, मन का तन का जीवन का ।
गूंज समर्पण की छाई, मेरे मन० ॥१॥
कुशल गुरु है रखवाला, चाह पूरण करने वाला ।
दुनिया तुम शरणे आई, मेरे मन० ॥२॥
मन में मूरत है तेरी, दर्शन दो ये चाह मेरी ।
कलियाँ मन की हरसाई, मेरे मन० ॥३॥
लब पर तेरा नाम अमर, निशदिन जपता हूँ गुरुवर ।
बज गई 'मणि' मन शहनाई, मेरे मन० ॥४॥

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०४. जिनकुशलसूरि स्तवन

जिनकुशल गुरु के चरणो में, मैं नित उठ शीश झुकाता हूँ ।
गुरु कुशल-कुशल बस नाम रटूं,मैं मन में ध्यान लगाता हूँ॥टेर॥
मेरे मन में बसे गुरुदेव कुशल, मेरे दर्द हरे गुरुदेव कुशल।
मैं कुशल भक्ति में मगन बना, बस एक नाम ही ध्याता हूँ ॥१॥
श्रद्धा से जपे जो गुरुवर को, दर्शन देवे गुरुवर हर को,
मैं तुझ चरणों में लीन रहूं, बस तेरे दर पे आता हूँ ॥२॥
सब रोग मिटे संताप मिटे, दु:ख दर्द मिटे सब पाप हटे,
मैं दिल में धरकर श्रद्धा से, गुणगान तुम्हारे गाता हूँ ॥३॥

खुशियाँ छाई हर उर उर मे, गुरुदेव बिराजे पादरू मे ।
कान्ति 'मणिप्रभ' लयलीन बना,गुरुदेव कुशल को मनाता हूँ।।४।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – चादी जैसा रंग .)

मालपुरे की मुकुट मणि है, कुशल गुरु का द्वार ।
मेरे तारणहार गुरुवर, नैया खेवनहार ।। टेर ।।
निर्धन हो धनवान भले हो सारे यहाँ पर आते ।
तुझको अपना देव समझकर अपना हाल सुनाते ।
तेरी अमृत दृष्टि पाकर अपना कष्ट मिटाते ।
खाली कोई न जावे ऐसा कुशलगुरु दरबार ।।१।।
मन की इच्छा पूरी होती जो श्रद्धा से ध्याता ।
कल्पतरु सम तेरी छाया तूं सुखशान्ति दाता ।
जीवन की खुशियाँ मिल जाती दर्शन वैभव पाता ।
तेरी महिमा सुनकर दौड़ा आता है संसार ।।२।।
तेरे पावन चरणो में ही रहता है मेरा मन ।
दिल का राज तुझे है अर्पित, अर्पित सारा जीवन ।
एक बार दर्शन देकर के दिखलादो अपनापन ।
कान्ति 'मणिप्रभ' की है इच्छा, हो जावे दीदार ।।३।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – दुश्मन न करे ...)

मैने तो तेरे द्वार डेरा डाल दिया है ।
जो आ गया उसने खुशी का श्वास लिया है ।। टेर ।।
लाखों भक्त आते है दूर-दूर से ।
दर्शन तेरे करते ही नृत्य करे हिया है ।। १ ।।
डूबे रहते है भक्ति मे रात भर ।

देकर के उन्हें दर्श तूने तृप्त किया है ।।२।।
वो मालपुरा ही है तेरे दर्शन हुए ।
कान्ति 'मणि' ने भक्ति रस का घूंट पिया है ।।३।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(कव्वाली)

श्री जिनकुशलसूरीश्वर, तेरा ही है सहारा ।
तेरे बिना नहीं है, दूजा कोई हमारा ।। टेर ।।
ओ मालपुरा के वासी, देखो जरा इधर भी ।
कर जोड़ तेरे दर पे, सेवक खड़ा तुम्हारा ।।१।।
मैं हूँ गरीब बालक, अज्ञान से भरा हूँ ।
पर दास तो हूँ तेरा, दिल में तुम्हें ही धारा ।।२।।
गहरी लगाके प्रीति, ठुकराओ ना गुरुवर ।
मेरी विनती सुनकर, किश्ती को दो किनारा ।।३।।
जीवन तुम्हारे हाथों, मेरी लाज तेरे हाथों ।
'मणि' मन में गुनगुनाता, तुम नाम का ही नारा ।।४।।

गणि मणिप्रभसागर रचित

२०८. जिनकुशलसूरि स्तवन

हम मिलकर वंदन करते हैं, गुरुदेव तुम्हारे चरणों मे ।
यह भक्त मंडली आई है, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।
जिनकुशलसूरीश्वर उपकारी, तेरी मूरत है मोहनगारी ।
दर्शन की आशा लाये है, गुरुदेव० ।।१।।
अतिभव्य वनी तेरी प्रतिमा, मैं गा न सकूं तेरी महिमा ।
हम श्रद्धा लेकर आये है, गुरुदेव० ।।२।।
गुरु तेरी भक्ति जो करते, उस नर के संकट सब मिटते ।
हम दुखडा मिटाने आये है, गुरुदेव० ।।३।।

जो भी दरबार तेरे आता, जीवन मे शांति पा जाता ।
हम दर्द सुनाने आये है, गुरुदेव० ।।४।।
मेरे मन मे बसे गुरुदेव कुशल, मैं नित्य जपूं गुरुदेव कुशल ।
मेरा तन मन सब कुछ अर्पण है, गुरुदेव० ।।५।।
दादाबाडी मोकलसर में, आनंद बहे हर उर उर मे ।
कान्ति 'मणि' श्रद्धा अर्पित है, गुरुदेव० ।।६।।

मदन रचित

२०९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – जब तुम ही चले परदेश)

श्री उपकारी गुरुदेव, करो भवि सेव, कुशल जो चाहो,
श्री कुशलसूरि को ध्याओ ।। टेर ।।
मनमथ के विजयी श्री गुरु है, आठों कर्मो के जयी गुरु हैं ।
गुणसागर कुल के उजागर के गुण गाओ ।। श्री कुशल० ।।१।।
रुख फेरी गयासुद्दीना की, तज हिसा मन से अहिसा ली।
कुत्सित म्लेच्छो को दे प्रतिबोध सदा हो ।। श्री कुशल० ।।२।।
शशि सम निर्मल शोभा वाले, समियाणा पुर के उजियाले ।
लक्ष्मीधर जेल्हागर के पुत्र कहाओ ।। श्री कुशल० ।।३।।
सूरज सम तेज भरा भारी, है जयतसिरी गुरु महतारी ।
रिपु भी गुरु सन्मुख नत मस्तक होता हो ।। श्री कुशल.।।४।।
महावस्था फाल्गुन मे गुरु की, निर्वाण जयन्ती सद्गुरु की ।
हाजिर हजूर है भवि! गुरु! अब भी आओ ।। श्री कुश० ।।५।।
राजेश्वर सम गुरु जग के थे, कई देवी-देवता वश मे थे ।
जय जय का नारा गुरु का 'मदन' लगाओ ।। श्री कुशल० ।।६।

महिमामेरु रचित

२१०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – वेलावल, मो मन वीर सुहावे, एहनी)

दीपे थुम्भ गडाले ।
श्री जिनकुशलसूरि सूरीसर, समरति संकट टाले ।। दी० १ ।।
सुर नर नारी ना मन मोहे, सोहे सरवर पाले ।
सोम निजर सेवक नें साहिब, कूरम निजर निहाले ।। दी० २ ।।
परगट परता पूरे दिन दिन, दौलति दीये विसाले ।
बाट घाट तिरस्यां जे ध्यावे, वीर लहे ततकाले ।। दी० ३ ।।
संघ उदय कर सद्‌गुरु मेरा, जाग करे सुविसाले ।
'महिमामेरु' सदा गुण गावे, कर जोड़ी सिर माले ।। दी० ४ ।।

महिमाशील रचित

२११. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – तुम तो भले विराजोजी श्री सांवरिया महाराज०)

सुनिजर कीजै जी,श्रीजिनकुशलसूरीसर सद्‌गुरु, सुनिजर कीजै जी।
सुनिजर कीजै, महिर धरीजै, सेवक अरज सुणीजै ।
दादा दीनदयाल दयाकर, दिल भर दरसण दीजै ।। सु० १ ।।
जुगप्रधान गुरु पदवी पाई, प्रगटी पुरब पुण्याई ।
वंछित वर आपै वरदाई, कविजन कीरति गाई ।। सु० २ ।।
नरनारी मिल वंदन आवै, नरपति सीस नमावै ।
भर मोतीयड़ै थाल बधावै, हरख हरख गुण गावै ।। सु० ३ ।।
केस चंदन भरिय कचोली, पूज करै रंग रोली ।
हाव भाव कर बाली भोली, नृत्य करै मिल टोली ।। सु० ४ ।।
परतिष गुरु परचा पूरै, चितनी चिन्ता चूरै ।
दुख दोहग सब नासै दूरै, समर्या होय हजूरै ।। सु० ५ ।।
अरि उचाटै विषमी वाटै, अटवी ओघट घाटै ।
सेवक जन ना संकट काटै, गणधर गुरु गहगाटै ।। सु० ६ ।।
श्रीजिनहर्षसूरीसर राजै, सेवक सुगुरु समाजै ।
विद्यावंत विसाल विराजै, 'महिमाशील' निवाजै ।। सु० ७ ।।

मुनि महेन्द्रसागर रचित

२१२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – छोटी-मोटी बुद्धि रे, विद्या का मेरा सीखना)

कुशलसूरि गुरुदेव, भविक जन तारते ।।टेर।।
कल्याणकारी कुशल गुरु हैं, कुशल गुरु हैं ।।
काटे कर्मकटक, मेरे मन भावते ।। कुशल० ।।१।।
अमर अमरी नृत्य करत हैं, नृत्य करत हैं ।।
सद्गुरु सन्मुख आय, संगीत मधुर गावते ।। कुशल० ।।२।।
मुनि पुरन्दर अनुपम ज्ञानी, अनुपम ज्ञानी ।।
चमत्कारी ऋषिराय, मोह तिमिर वारते ।। कुशल० ।।३।।
फलोदी शहर के शिवसर ऊपर, शिवसर ऊपर ।।
शोभे श्री महाराज, दर्शक अति आवते ।। कुशल० ।।४।।
एकाग्र दिल से ध्यान धरो सब, ध्यान धरो सब ।।
मिट कर संकट सर्व, अक्षय सुख पावते ।। कुशल० ।।५।।
कुशल कृपा से आनन्द आनन्द, आनन्द आनन्द ।
सुरतरु हैं सूरिदेव, 'महेन्द्रो' मिल गावते ।। कुशल० ।।६।।

मुनि महेन्द्रसागर रचित

२१३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - सुनो जगदीश दिल देके, अरज हमने गुजारी है)

कुशल सूरि गुरुवर को, सदा वन्दन हमारा हो ।।टेर।।
मरुधर मेड़तापुर मे, दूधासागर सरोवर है ।।
जहां गुरुदेव की देहरी, सदा वन्दन हमारा हो ।। कु० ।।१।।
दयानिधि ने दया करके, दिखाया पन्थ शिवपुर का ।।
ऐसे मुनिराज चरणों में, सदा वन्दन हमारा हो ।। कु० ।।२।।
निरन्तर ध्यान मै धरता, अपूर्वानन्द को पाता ।।
चमत्कारी सूरीश्वर को, सदा वन्दन हमारा हो ।। कु० ।।३।।
अपार संसार सागर में, डूबती 'महेन्द्र' की नैया ।।

बचादी शीघ्रतर गुरु ने, सदा वन्दन हमारा हो ।। कु० ।।४।।

महेन्द्रसागर रचित

२१४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - धमाल)

भविजन पूजो बड़े भाव सुं हो अहो मेरे ललना ।
श्री जिनकुशल सूरिन्द ।भ.।जाको नित प्रति हे तेज अमन्द ।भ.१।
कनक कलस जल विमल सुं हो, पुण्यवन्त लेहु भराय ललना ।
श्री गुरुपद-पंकज भले हो,न्हवण करो चित नित प्रति लाय।भ.२।
बावना चन्दन घसि करी हो, केसर सरस मिलाय ललना ।
धूप दीप गुरुराज के हो, दरसण मिलि मिलि ले ले जाय ।भ.३।
पूरव देश सुहामणो हो, मकसूदाबाद विख्यात ललना ।
युगप्रधान प्रगट भयो हो, दादोजी गौरे गौरे गात ।भ.४।
ओसवंस कुल दीपतो हो, कातेला गोत नरिंद ललना ।
भ्रात दोऊं बड़े सुजस सुं हो, सोभाचंद मोतीचन्द ।भ.५।
संवत अठारे इकवीसे हो, माघ सुकल शुभवार ललना ।
थुम्भ हजारी बाग मे हो, पूनिम तिथ मंगलवार ।भ.६।
पद थाप्या गुरुराज ना हो, दिन दिन अधिक जगीस ललना ।
श्री जिनचन्द पटोधरु हो, श्री गुरु कुशलसूरीस ।भ.७।
वरण अठारे ओलगे हो, कोई न लोपे कार ललना ।
जग सहू आवे जातरा हो, सवल जुड़े दादे दरवार ।भ.८।
खरतर गच्छ रो राजीयो हो, पूरे मन री आस ललना।
श्री महेन्द्रसागर सदा हो, अंग अंग परम उल्हास ।भ.९।

माणक रचित

२१५. जिनकुशलसूरि स्तवन

कुशल गुरु अर्ज सुन लीजे, कृपा करके दरशन दीजे ।
यही आशा मेरे मन की, करूं सेवा मै चरणन की ।।१।।
न तुम सम देव कोइ दूजा, विपत टारन गुझे मुझा ।

तुम्ही सद्गुरु हो सुखकारी, निवारोगे विपत सारी ।।२।।
शरण लीनी है मै थारी, अरज सुन लीजिये म्हारी ।
विकट संकट ने आ घेरा, है तुम बिन कौन गुरु मेरा ।।३।।
कहे 'माणक' अरज मानो, चरण को दास मोहे जानो ।
कटे भव वन का फेरा, शरण तो चाहूँ मै तेरा ।।४।।

माणक रचित

२१६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - होरी की)

चलो री सखी आज खेले होरी सुगुरु द्वारे द्वारे ।।टेर।।
घस कर्पूर केशर और चन्दन, भर भर लेवो कटोरी ।।
धूप दीप नैवेद्य अरगजा, हरख चरण पूजोरी ।। चलो० ।।१।।
कंचन कलश चलो धर कर पर, लो केशर रंग घोरी ।।
कुंकावटी रजत की लेवो कुंकुम,भर अबीर की लो झोरी।।चलो.।।२।।
श्री जिनकुशल सूरीन्द साहब के, चरण कमल को भेटो री ।।
'माणक'कहे चलो फाग मचाऊं,सम्पत सुख लहो री ।।चलो०।।३।।

माणकचन्द रचित

२१७. जिनकुशलसूरि स्तवन

वन्दो गुरु चरण कमल भवि जन मन लाई ।। टेर ।।
साचे जिनकुशल सूर, ध्यावत दुःख होत दूर ।।
संकट को करत चूर, सद्गुरु सुखदाई ।। वन्दो०१।।
अैसो दादा को नाम, जपत सिद्ध होत काम ।।
समर समर आठो याम, यही नाम भाई ।। वन्दो०२।।
धर चित्त सद्गुरु को ध्यान, छिन मे होवे कल्याण ।।
दादा गुरु दयावान, देत दुःख मिटाई । वन्दो० ।।३।।
श्री सद्गुरु महाराज, राखो आज मेरी लाज ।।
अरज करत 'माणकचन्द,' चाकर गुण गाई ।। वन्दो० ।।४।।

माणक रचित

२१८. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री कुशलसूरि गुरु सुखकारी, जग मांहे तुम महिमा भारी ।।१।।
श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर पटधारी,गुरु हितकारी पर उपकारी ।।२।।
सुरतरु सम वांछित दातारी,और सहस किरण सम अवतारी।।३।।
आचारज छत्तीस गुणधारी, गुरु दूर करी विपता सारी ।।४।।
भट्टारक जंगम युगप्रधान, दाता तुम चिन्तामणि समान ।।५।।
करुणानिधि जान सब गुणनिधान,दीपत है तेज दिनकर समान।।६।।
सब राव राणा सुर नरेश, पूजत हैं चरण थांरो हमेश ।।७।।
पल में दूर करो सगला क्लेश,गुरु समस्त विपद न रहे लेश।।८।।
दादा अब महेर नजर कीजे, इतनी विनती मोरी सुन लीजे।।९।।
गुरु जशधारी यह जश लीजे,'माणक'को वेग दरश कीजे ।।१०।।

माणक रचित

२१९. जिनकुशलसूरि स्तवन

सद्गुरु सुनिये अरज हमारी, विपदा म्हारी कीजे दूर ।।टेर।।
कुशलसूरि गुरु नाम तिहारो । कुशल करो भरपूर ।।
सानिध कीजे ये यश लीजे, दीजे संकट चूर ।।सद्० १।।
गुरु दातार तुम्हें जो ध्यावे, दौलत मिले जरूर ।।
चाकर जान दास 'माणक' को, कर अरज मंजूर ।।सद्० २।।

माणिक्य मुनि रचित

२२०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल - थे म्हांरे आज्यो हो रंगमहिल मे, एहनी)

चंद पटधारी हो पूनिम चंद सो, श्री जिनकुशलसूरिद सद्गुरु राय जी हो।
थें म्हानु देज्यो हो सुख संपति सदा,सुनिजर धरज्यो अमन्द ।थें.१।
नांम तिको हीज मन्त्र मुदे खरो, अतिशयवंत उदार ।सद्.।
जे भुवि भावे हो मन ध्यावे तिके, लाभे लीय संभाळ ।स.थें.२।

इण कलिकाले हो गुरु कमणां विना, साचा मृरतरु रुप ।सद्.।
वंछित पूरे हो दुःख चूरे सदा, सेवे सुर नर भूप ।स.थे.३।
पूनिम दिवसे हो वलि सोमवासरे, आवे सिघ अनेक ।स.।
भाव वधावे हो गुरु गहगाट सुं, अरचे पद अतिरेक ।स.थे.४।
जग हितकारी हो गुरु चरणां तणी, सेव करण एसाण ।
हित धर देज्यो हो 'मुनि माणिक्य' भणी, ज्युं हुवे कोटि कल्याण ।स.थे.५।

मुक्तिमोहन मणि रचित

२२१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - निरखण दो असवारी)

थांरा दरशण की बलिहारी, कुशल गुरु दरशण दो सुखकारी ।
मै तो वारी जाऊं वार हजारी ।। कु० ।।टेर।।
मरु मण्डल समियाणा ग्राम मे, मंत्रि जिल्लागर भारी ।।
जैतसिरी सति कूखे उपना, प्रगट्या जग दिवकारी ।। कु० ।।१।।
संवत तेरे सैतीसे जनम्या, द्वितीय चन्द्र मनुहारी ।।
तेरेसै सेताले संजम, तप जप ध्यान संभारी ।। कु० २।।
श्री जिनचन्द सूरि पट्टे, पाटण मे हितकारी ।।
सूरि पद सतहत्तर वरषे, कुशल सूरिन्द अवतारी ।। कु० ३।।
ग्राम नगर पुर पट्टण विचरी, बहु भवि काज सुधारी ।।
समकित श्रावक केई व्रत धारक, ज्ञान क्रिया चित्त धारी ।।कु०४।।
अद्भुत रूप अनोपम महिमा, वचन कला उपगारी ।।
सत्य शील सन्तोष महागुण, सहु जग आनन्दकारी ।।कु०५।।
फागुण तेरेसे नयांसी, मावस देव- पदधारी ।।
फागुण सुद पूनम दिन संघ ने, दरशण दियो उपगारी ।।कु०६।।
ग्राम नगर सहु संघ ने परतिख, परचा दे मन धारी ।।
देश देश में चरण थापना, कीनी भक्ति प्रचारी ।। कु० ७।।
तुम सेवत सहु संपदा पावे, जश कीरति अधिकारी ।।
विरुद सुणी त्रिकरण शुद्ध प्रणमुं, चरण कमल बलिहारी ।।कु.८।।

दीनदयाल दयानिधि साहब, मनसा पूरो हमारी ।
पाठक श्रीवर ध्यान धरै नित, 'मुक्तिमोहन' जयकारी ।।कु०९।।

मुनिविमल रचित

२२२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - धन्यासिरि)

कुशल गुरु मइं अब सेवक तेरा ।
समरथ साहिब सुरतरु सम जगि, तूं प्रभू साहिब मेरा । कु.१।
राति दिवस तुम्ह चरणि हमारा, चीत अधिक न बेरा ।
परम भगत 'मुनिविमल' तुम्हारा, बंछित दीजइ सवेरा । कु.२ ।

मेरुकुशल रचित

२२३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी - दरसण प्यारो लागे रे)

श्री कुशल सूरिंद सुखकार, दरसण प्यारो लागै रे ।
श्री जिनचंद्रसूरिंद पाटोधर, गच्छ खरतर हितकार ।द.१।
देवन देवल में सब दीठा, पिण इक तुं हिज सार ।द.२।
तू गछ इंद्र समंद सुधारस, पूजत सहु नर नार ।द.३।
'मेरुकुशल' कु वंछित दीजै, तुं हिज इक आधार ।द.४।

रंगविनय रचित

२२४. जिनकुशल सूरि स्तवन

(राग - कहरवा)

मोरी अरज सुनो गुरुराय, तिहारे दरस की चाह रहै । मे०
तिहारे दरस तै आनंद उपजै,रोम रोम विकसाय जी ।ति.मो.।।१।।
और देव सुपनै नही धारुं, तुम विन चित अकुलाय जी ।ति. मो.।।२।।
कुशल कला जग मे वरताइ,तातै कुसल कहाय जी ।ति.मो.।।३।।
परतिष दरसन दीजै मो पै,रिध सिध नवनिध थाय जी ।ति.मो.।।४।।
'रंगविनय'गुरु के गुण गावै, चरण कमल चितलाय जी। ति.मो.।।५।।

रतन रचित

२२५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - अलहिया बेलाउल)

श्री जिनकुशल सूरिन्द गुरु साहिब, पूरण परम दयाला है,
करुणानिधि किरपाला है ।। टेर ।।
अष्ट प्रकारी पूजा भविजन, विधि सुं करत विशाला है ।।
वाकूँ अष्टभीति नहीं आवे, काटे कष्ट कराला है ।।श्री० १।।
हीर चीर पाटंबर अंबर, माणक मोती माला है ।।
पूजो परम गुरु के पगलां, पग पग ऋद्धि रसाला है ।। श्री० २।।
पुत्र कलत्र मित्र मन भावे, दै हाथी मतवाला है ।।
मोटा मन्दिर महल मालिया, सुन्दर रूप रसाला है ।। श्री० ३।।
बिपत विडारण संकट टालन, आपद उधारण वाला है ।
समरथ है साहिब गुरु मेरा, घड़ी घड़ी रिच्छपाला है ।।श्री०४।।
सानिध करत सदाई सेवक, जपे गुरु पद माला है ।।
'रतन' कहत मन राजी हुयके, कबहूँ नाही कसाला है।।श्री०५।।

रत्नसुन्दरोपाध्याय रचित

२२६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र.स.१८७८)

म्हे तो सेवक दादा कुशल गुरु का, सद्‌गुरु पूरी आस ।म्हे.।
रतनागर कोटिक गछ उपजे, चंदकुल भए प्रकास ।
सूरि सिरोमणि तुम्ह कहवाए, वैर साख मुनि वास ।म्हे.१।
निश्चै सेती सद्‌गुरु ध्यावे, कमला जस घर वास ।
नवनिधि रिधि सिधि संपति विलसे, नरपति होय जसु दास।म्हे.२।
दरसन पाया सद्‌गुरु तेरा, पाप गये सब भाग ।
चरणकमल सद्‌गुरु के पूजो, दिन दिन चढते भाव ।म्हे.३।
नर नारी बहु वंदन आवे, भाव भगति चित धार ।
बांह ग्रहे की लाज निवाहे, विरुद बडाइ धार ।म्हे.४।

श्री जिनकुशल सूरीसर साहिब, सुरतरु सम अवतार ।
सेवक घर नित बाजै बाजा, जिन शासन सिणगार ।म्हें.५।
प्रभु तुम भए सहाई मेरे, मिट गए चिंता जाल ।
दुरजन दूर गए सब मेरे, सज्जन भए खुशहाल ।म्हे.६।
संवत अठारे अठहत्तर में, माघ सुकल पूरण मास ।
'रतनसुन्दर' पाठक कहे सद्गुरु, पूरी मुझ मन आस ।म्हे.७।

रत्नसुन्दरोपाध्याय रचित

२२७. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिनकुशल सूरीसरु रे लो, महिमावंत गुरुराज ।
गुरुदेवजी रे लो, वंछित मुझ ने दीजिये रे ।१।
विरुद घणा छे ताहरा रे लो, कहितां नांवे पार । गु.वं.२।
पूज्यां वंछित पूरवे रे लो, सेवक चिन्ता चूर । गु.वं.३।
महिमा सुणी छे ताहरी रे लो, दाता दीनदयाल । गु.वं.४।
पाठक 'रत्नुसुन्दर' कहे रे लो, पूरो मुझ मन आस । गु.वं.५।

रत्नसुन्दरोपाध्याय रचित

२२८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी - देखी चंद चकोर पीवा अमिय धसे री)

श्री जिनचन्दसूरि पटधार, श्री जिनकुशल सूरि री ।
खरतर गच्छ दीपंत, दिन दिन अधिक जयो री ।१।
गांम नगर विख्यात, महिमा अधिक सुणी री ।
आवे यात्री लोक, दरसण भाव धरी री ।२।
अगर चन्दन घनसार, मृगमद केसर घोरी ।
नीर सुगन्ध मिलाय, पूजा भक्ति करो री ।३।
दीप धूप फल लेय, नैवेद्य विविध परें री ।
सेवे गुरु इकचित्त, नव निधि सिद्धि लहे री ।४।
सेवति चम्पक बेलि, गुंजित भ्रमर मिली री ।
मालति कुन्द गुलाब, केतकि गन्ध भली री ।५।

गावो गीत रसाल, वाजित्र मधुर सुरें री ।
वीणा मृदंग मिलाय, भेरी नफेरी बजे री ।६।
कष्ट उपद्रव मांहि, ध्यांन धरे मन सूधे री ।
ततखिण प्रभु संभार, आपद दूर हरे री ।७।
चितामणि सम जेह, चिंता सरव टले री ।
तिम सद्गुरु सुपसाय, विपदा तुरत भगे री ।८।
रेणूचर अभिरांम, संघ सदा उदयो री ।
'रत्नसुन्दर' गुरु पाय, मन वच काय नमे री ।९।

राज रचित

२२९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी - वारी रे छोगाला थारे रूप ने रे लाल)

अलवेसर आज भलो दिन ऊगीयो रे लाल ।
अलवेसर आज घणु उछरंग ।अ.।
हरख भराणो हीयडो रे लाल, आंखडी रंग उमंग ।अ.।
वारी हुं साहिब थांरे नाम ने रे लाल ।अ.१।
आज घड़ी लेखे चढी रे लाल, आज सफल अवतार ।अ.।
भाग बड़े प्रभु भेटीयो रे लाल, कुशल सूरिंद करतार ।अ.२।
विरुदां रे थांरे उंवारणे रे लाल, गणधर गरीबनिवाज ।अ.।
नयण निहाले नेह सुं रे लाल, रिद्धि भरो गुरुराज ।अ.३।
जस थारां जग मे घणो रे लाल, कोड सुधारो काज ।अ.।
वरदायक थांसु वीनती रे लाल, 'राज' करे महाराय ।अ.।४।

राज रचित

२३०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - धन्यासिरी)

कुशल गुरु पूरो आस हमारी ।
सेवक के वांछित पूरण कुं, तुम सुरतरु अवतारी ।कु.१।
सुख संपति संतति करि सेवक, सुखी किये नर नारी ।

भगतिवच्छल कुं वेर हमारी, कठिन हुई प्रकृति तुम्हारी ।कु.।
तुम तो प्रभु मेरे अंतरजामी, जांनत हो विधि भारी ।
अवर देव कुं कब हुं न याचुं, तेरो खिदमतगारी ।कु.३।
जैतसिरि जिल्हागर नन्दन, खरतरगच्छ हितकारी ।
वाट घाट अति विकट में समर्या, होवे सांनिधकारी ।कु.४।
मैं तो तेरी हूँ सरणागत, तोहीं सी हितकारी ।
श्री जिनकुशलसूरि सद्गुरु की, 'राज' सेवक बलिहारी कु. ।५।

राज रचित

२३१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – प्रभाती)

तूं है दाता मेरो कुशल गुरु ।।तूं.।। टेर ।।
तुम बिन और न किणपैं याचूं, कोई दाता अनेरो ।।
ध्यान हृदय विच नित प्रति धारुं, एक भरोसो तेरो ।। तूं.१।।
राज रमण रिद्ध सिद्ध सब हाजर, नाम जपे सहु तेरो ।।
दीनदयाल सेवे सुखदाई, कीरतवन्त बडेरो ।।तूं.२।।
देव दया कर दरशण दीजे, सारो काज सवेरो ।।
'राज' कहत मोंही अपनो जानो, चरण कमल को चेरो ।।तूं.३।।

राज रचित

२३२. जिनकुशलसूरि स्तवन

निरधारां आधार कुशल गुरु निरधारां आधार ।
मो परि करिजे मोहनी, हां जी मांनीजे मनुहार ।
आरतियां आरति हरो, सरणाईय साधार ।कु.१।
नाथ विलंब न कीजिये, हां जी दीजे तुरत दीदार ।
दुखिया सेवक देखिने, स्वामी आप करोने उपचार ।कु.२।
चंद पटोधर राजता, हां जी चंदज ले चिर पार ।
मुनिवर खरतर महीपति, सासण रा सिणगार ।कु.३।

अंतरजांमी आपने, हां जी सेवक सार संभाल ।
'राज' कहे कर जोड़िने, आतम प्राण आधार ।कु.४।

राज रचित

२३३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – प्रभाती)

मेरी पीर हरो गुरु पीर ।
रेंण दिवस तेरो जाप जपत हूं, जैसे चातक नीर ।मे.१।
तुम्ह हो नाथ सेवक प्रतिपालक, ज्युं गो वछीय खीर ।मे.२।
चरण की सेवा छत्रपति चाहत, मानत पूजत मीर । मे.३।
'राज' कुशल गुरु सांम साहिब, वेन को जाने पीर ।मे.४।

राज रचित

२३४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – आशावरी धमाल)

श्री गणधर गुरु कुशलसूरिन्द के, चरण कमल पर वारी ।।टेर ।।
केशर चन्दन अक्षत कुमकुम, जलभर कंचन झारी ।।श्री.१।।
देव के आगे मंगल दीपक, फूल धरो फूलवारी ।।श्री.२।।
ऐसी भान्ति करो विधि पूजा, आनके चित्त इक धारी ।।श्री.३।।
'राज' कहत मेरे परम गुरु की, बेर बेर बलिहारी ।।श्री.४।।

राजसागर (राजहर्ष) रचित

२३५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – विछियानी)

अरे लाला श्री जिनकुशल सूरीसरु,सेवीजे मन शुद्ध भाव रे लाला।
परतिख परचा पूरवो,इन कलियुग मे गुरुराय रे लाला।।श्री जिन१।।
अरे लाला केशर चन्दन घस करी, पूजो मेली घनसार रे लाला।।
पवित्र वस्त्र पहरी करी,नव नेवज करो उदार रे लाला।।श्री जिन.२।।
अरे लाला थुम्भ भलो देराउरे, शोभा बहु जेसलमेर रे लाला, ।।

मुलताने मरोट में, गुरु सोहे बीकानेर रे लाला ।।श्री जिन.३।।
अरे लाला जोधपुर ने मेड़ते, जैतारण ने नागोर रे लाला ।
सोजत ने पालीपुरे, जालोरे श्री सांचोर रे लाला ।।श्री जिन.।।४।।
अरे लाला राजनगर नै सूरते, खंभायत पाटण मांहि रे लाला ।
शत्रुंजय सोहे सदा, नवेनगर उच्छाह रे लाला ।।श्री जिन.।।५।।
अरे लाला पुर पुर में इम दीपतो,दादाजी परतिख देव रे लाला।।
ईहक आशा पूरवे,तिणे जग सहू सारे सेव रे लाला।।श्री जिन.६।।
अरे लाला नामें संकट सवि टले,तिसियां ने पावे नीर रे लाला ।।
रण मे जे समरण करे,सद्‌गुरु होवे तसु भीर रे लाला।।श्री जिन.७।।
अरे लाला इम महिमा जग जेहनी, जाणे को नर नार रे लाला।।
सुख संपत दे सेवकां, बहु पुत्र कलत्र परिवार रे लाला।।श्री जिन.८।।
अरे लाला समर्या दरशन देईज्यो,सेवक नी करजो सार रे लाला।।
'राजसागर' कर जोड़ने, विनती करे बारंबार रे लाला।।श्री जिन.९।।

राजिंद रचित

२३६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – करहे री)

देरावर थांरो देहरो हो साहिब, गढ वीकाणे राज ।
नवला थे नागोर में हो साहिब, मोज समन्द जहाज ।
थांपर वारी हो सद्‌गुरुजी साहिब, मुझरो मानोजी राज ।।टेर १।।
महिमा घणी थांरी मेड़ते हो साहिब, मांने जेसलमेर ।।
तप थांरो सूरज तपे हो साहिब, छत्र धरावो सांगानेर ।। थां.२।।
चरणे चढाऊं केतकी हो साहिब, सूंघोजी अगर गुलाव ।
भमर लपेटी मालती हो साहिब, जाई जुई रे जवाव ।। थां.३।।
दीवलो करुं कपूर रो जी साहिब, महके मैंण मेंताव ।।
धूप उखेवूं करुँ आरती हो साहिब, गंगा जलरो आव ।। थां.४।।
केशर भरुँ कटोरडी हो साहिब, पूजूं जी थांहरा पाय ।।
नव नेवज कर नेतरुं हो साहिव, मिश्री दूध मिलाय ।। थां.५।।

डलो पान पचास रो हो साहिब, नायक नागर बेल ।
हे सुगंधी एलची हो साहिब, मुखड़े परिमल मेल ।। थां. ६।।
मर करो नैंण अमी भरो हो साहिब, श्री जिनकुशल सूरिन्द ।।
ज रमण रींझा करो हो साहिब, अरज करे 'राजिन्द' ।।थां.७।।

राजेस रचित

२३७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – चलित भैरु)

य गणनायक जय वरदायक श्री गुरुदेव गणेसा ।
न्हि कुं निसि दिन ध्यावत सुरनर, सोभा करत सुरेसा ।
न्द्र कान्ति गुण निरमल सोभित, जस गंगा जल जैसा ।ज.१।
म प्रताप ते अठ सिधि नव निधि, हाजर होत हमेसा ।
दा साहिब वंछित दाता, आसा पूरति ऐसा ।ज.२।
जेत चरण पुहप कर हरसित, नायक सकल नरेसा ।
ीजिनकुशलसूरि जगत गुरु सेवित, पावत फल 'राजेसा' ।नि.३।

रामचन्द्र गणि रचित

२३८. जिनकुशलसूरि स्तवन

ो जिनकुशल सूरिसरु, परता पूरण देवो जी ।
रनारी सहु मिल करि, पूज करे नित मेवो जी ।श्री.१।
जी थुम्भ सकल सद्गुरु तणो, राजनगर मे एहो जी ।
जी सब जन आस्या पूरवे, जे चरचे धर नेहो जी ।श्री.२।
जी जलवट थलवट मारगे, दुरघट विषमी वेला जी ।
ाजी समर्या सद्गुरु ततखिणे, होवे आपस मेलाजी ।श्री.३।
ाजी भूत प्रेत वलि डाकिनी, राक्षस ने वैतालो जी ।
ाजी नांमे श्री जिनकुशल ने, नौसते ततकालो जी ।श्री.४।
ाजी नांमे अरि करि केसरी, पुहवै नहीय लिगारो जी ।
ाजी कुशल मन्त्र जे मन जपे, ते लहे सुख अपारो जी ।श्री.५।

हांजी अर्थ विहुणो जे फिरे, द्यै गुरु धन नी कोड़ो जी ।
हांजी पुत्र विहुणा मांनवी, द्यै गुरु पुत्र नी जोडो जी ।श्री.६।
हांजी छाजहडां कुल चिरजयो, जेल्हागर सुवतन्नो जी ।
हांजी जैतसिरि माता भली, जनम्यां पुत्र रतन्नो जी ।श्री.७।।
हांजी इण कल में चिन्तामणि, श्री जिनकुशल सूरिन्दो जी ।
हांजी कामण कमला पूरवे, उदय सहित आणंदो जी ।।श्री.८।।
हांजी कुशले साजन होय नमे, श्री पदमरंग जयकारो जी ।
हांजी 'रामचन्द्र' गणि वीनवे, कुशल सदा हितकारो जी ।श्री.९।।

रामविजयोपाध्याय रचित

२३९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल – मोरी अखियां फरुके हो, एहनी)

देरावर रो राजीयो, ओ तो जिन सासन सिणगार हो,
गुरुदेवा मोरा गाजे हो ।
कुण एहनी समडि करे, ओ तो सहु देवां सिरदार हो । गु० १ ।
देस विदेसे हुं फिर्यो, ओ तो मैं दीठा केई देव हो । गु० ।
पिण ए अधिको सहु थकी, ओ तो तिण सा ही एहनी सेव हो ।गु०२।
जिहां तिहां दादो जागतो, ओ तो परता पूरणहार हो । गु० ।
परखि परखि नें मैं लह्यो, ओ तो सेवक जन साधार हो ।गु०३ ।
जिणचंद सूरिजी रो पटधरु, ओ तो खरतर गछ दीवांण हो।गु०।
ए प्रभु सुरतरु सारिखो,ओ तो सकलाय सदा सुं विहांण हो।गु०४।
एहनी छत्र छाया रह्यां, ओ तो दुख जाये सगला दूर हो । गु०।
तिमिर पराभव किम करे, ओ तो जिहां ऊगो झलहल सूर हो ।गु५।
हिव एहिज मो वीनती,ओ तो सांभलि श्री कुशल सूरिंद हो ।गु०।
अम्हनें जांणी आपणा,ओ तो करज्यो नित नित आनंद हो। गु०६।
गढ जेसांणे गाजतो, ओ तो मै भेट्यो तूं गुरुराय हो । गु० ।
'रामविजय' पाठक तणें,ओ तो गुरु होज्यो सदाई सहाई हो।गु०७।

रूपचन्द (म. रामविजय) रचित

२४०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी – गाजे जिनकुशल गडाले, एहनी)

जग मोहना गुरुराया, सुरनर सेवै तुझ पाया रे । जग० ।
परतिख गुरु परचा पूरै, सेवक ना संकट चूरै रे । जग० १ ।
केसर घसी भरिय कचोली, गुरु पूजो मन रंग रोली रे । जग० ।
सुभ भावे भावना भावो, मन ना वंछित सहु पावो रे । जग०२ ।
जिनचंदसूरि पटधारी, जिनकुशलसूरि हितकार रे । जग० ।
जे ध्यावे नव निध पावै, 'रूपचंद' मुनि गुण गावै रे । जग० ३ ।

रूपचन्द (म. रामविजय) रचित

२४१. जिनकुशलसूरि स्तवन

दादोजी परतिख देवता, दादो जी म्हारा हितकरु ।
करस्यां हो दादाजी री सेव, भेटिस्यां कुशलसूरीसरु । दा० १ ।
करस्यां हो दादाजी री जात्र, उलट धरी आराधस्यां ।
गास्यां हो गुरुजन अवदात, सकल मनोरथ साधस्यां । दा० २ ।
दादो हो दीवांण देराउर रो राजीयो ।
सूडो हो गडाले थांन, जिहां गुरु आप विराजिया । दा० ३ ।
दादो हो सेवक साधार, जिनचन्दसूरिजी स पटधरू ।
दादो हो भयभंजण हार, दादो जी परतिख सुरतरू । दा० ४ ।
उगो हो भलो आजूणो भांण, आजू नी सफली घड़ी ।
भेट्यां हो सुगुरु विहांण, सफल फली मुझ आसड़ी । दा० ५ ।
धन धन हो पारख जगरूप, धन धन पारिख मुकुन्दजी ।
धन धन हो मुहकमसिघ अनूप, विधकर जिन यात्रा सजी ।दा०६।
गिरुवा हो जिनभक्तिसूरिद, साथै सुगुरु जुहारियो ।
वंदे हो थांने मुनि 'रूपचन्द,' दे दरसण दादा सुख दीयो। दा०७।

महो. ऋद्धिसार रचित

२४२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - आज आपे चालो सहियां सिद्धाचल)

आजे आपे चालो बहिनी, कुशल सूरीन्द गुरु पूजो ॥
कुशल सूरीन्द गुरु पूजो बहिनी, इण सम अवर न दूजो ए॥टे
ब्रह्मा विष्णु महेश गजानन, देवी देव मनाया ॥
उभय लोक कारज नहीं सरिया,यों ही जनम गमाया ए॥आ०
प्रतिरूपादिक सूरि सकल गुण, ज्ञान ध्यान का दरिया ॥
चरण करण सुमति गुप्ति सूं, जिन मारग संचरिया ए॥आ०२
रत्न जड़ित सिंहासन ऊपर, सद्गुरु भले विराजे ।
सुर नर किन्नर चामर ढोले, शिर पर छत्तर छाजे ए॥ आ०
जिन वाणी उपदेश सुणावत, सजल जलद ज्यूं गाजे ॥
सुण कर मिथ्यामत तज दीना, भविजन संशय भांजे ए॥आ०
आधि व्याधि मेटन सद्गुरुजी, परतिख परचा देवे ॥
पुत्र संपदा वांछित पूरे, जे सद्गुरु ने सेवे ए ॥ आ०५॥
धर्म दान सद्गुरु ने दीना, उभय लोक सुखकारी ॥
क्रम से सिद्धि संपदा संगम, आराध्यां बलिहारी ए ॥ आ०६॥
केशर चन्दन धूप अरगजा, पुष्प सुगंधी लीजे ॥
गंगा जल से कर प्रक्षालन, गुरु चरणे अरचीजे ए ॥ आ०७॥
भाव स्तवन सद्गुरु ने थुणतां, अन्तर ज्योति जगावे ॥
चारित्रसूरि कृपाचन्द्रसूरि, 'राम' प्रेम गुण गावे ॥ आ०८॥

महो. ऋद्धिसार रचित

२४३. जिनकुशलसूरि स्तवन

आजो आजो जी महाराजा जोऊं वाट रे ।
कीजो कीजो छत्तर छायां थांरे पाट रे ॥आजो०॥टेर॥
आसी आसी रे छोगालो सिर सेहरो रे ।
गुरु ऊभी तो जोऊं छूं थांरी वाट रे ॥

गुरु कर गयो रे खुश नामी सारी दुनियन मे ।
जानी जानी रे गच्छराजा थारी रीत म्हारा तारण रे ।।१।।
आवो आवो रे छोगाला अलबेला रे ।
आजो आजो जी महाराजा जोऊं बाट रे ।।२।।
'राम' पाठक थांरो जस गावे रे ।
आसी आसी रे कुशल धणी तारण आसी रे ।।
दरशन देसी रे, आवो आवो रे छोगाला सिर सेहरो रे ।।३।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२४४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - आवो नेम रह जावो सदन)

आवो सजन करो गुरु का भजन, मत दिवस गमांवो रे ।।टेर।।
क्यूं चेतन कुगुरु संग राचो, कुशल सूरीन्द गुरु है जग साचो ।।
मन मत मिथ्या अर्थ जाल; उजड़ मत जावो रे ।।आवो.।।१।।
जिन आणा शुद्ध संजम धारी, प्रगटे गुरु जग के उपकारी ।।
उभय लोक सुखदाता गुरु सैं, इक लय लावो रे ।।आवो०।।२।।
सुरतरु रवि शशि मेघ उदारी, इनसे अधिक गुरु उपकारी ।।
कुशल कुशल ऋद्धि सिद्धि प्रदायक, वांछित फल पावो रे ।।आवो०।।३।।
इक चित्त ध्यावे संकट जावे, जो शुद्ध मन से ध्यान लगावे ।।
'रामलाल' गुरु भक्तवच्छल से, प्रेम जगावो रे ।।आवो०।।४।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२४५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग - पीलू)

कबलों कहूँ गुरु दुःख की मै बतियां,
बतियां कहत मेरी फाटत छतियां ।।टेर।।
नरय तिरि दुःख रोय गमायो,सुर गति मे पायो सुख रतियां।।क०१।।
पुण्य उदय अब नर भाव पायो, दुःख सन्ताप बहुत आपतियां।।क०।।
ईति उपद्रव भय बहु तेरे,रोग सोग अरिगण से खतियां ।।क०२।।

विषय कषाय जंजाल जाल में,मोह बद्ध रह्यो पूत कलतियां ।।क०।।
तुम समरन कबहूँ नही कीनो,अब मेरी होगी कैसी गतियां।।क०।।३।।
आप सुधारो काज भक्त के,अन्तरगत लिख भेजी पतियां ।।क०।।
तारक आन मिले अव मुझको, कुशलसूरिन्द गुरु जालम जतिया ।।क०४।।
पाठक राम सुधारस चाख्यो,अब तो सुगुरु पद लागी मतिया ।।क०।।
चरण शरण गुरुदेव को राख्यो, सुख पावत हूँ दिन रतियां ।।क०५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२४६. जिनकुशलसूरि स्तवन

सखी-गुलाब-मालती-संवाद

।। दोहा ।।

कहै गुलाब सुन मालती, किधर लगा है ध्यान ।।
मन भंवरा कैसे फिरा, देख रही आस्मान ।। १।।
कहै मालती सुन सखी, तुम हो चतुर सुजाण ।।
मेरा मन उन से लगा, तारन तरन जहान ।। २ ।।
गु० - सुण सुणरी बहना, अखियां तरस रही आज ।।
मा० - किस कारण बहनी, अखियां तरस रही आज ।।
गु० - गुरु दरशण बिनरी, कैसे मिले सुख राज ।
मा० - तू बाली भोली, सहज न मिले गुरु राज ।।
गु० - साचे मन राचे, है गुरु गरीबनिवाज ।। सुण०।।१।।
मा० - अन्तर बिन भक्ति, नहीं मिलेगे महाराज ।
गु० - मन ध्यान धरूंगी, तन मन कर इक साज ।।
मा० - बिन पिउ से राती, कैसे कटेंगी इक साज ।
गु० - सव झूठी दुनिया, है गुरु तरण जहाज ।। सुण ०।।२।।

।। दोहा ।।

मा० - चाखा चाहे प्रेम रस, कैसे बने गुरु ज्ञान ।।
कहो सजनी कैसे रहैं, दो खांडा इक म्यान ।। ३ ।।
गु० - गऊ जात वन चरण कूं, सूरत वाछरु मांहि ।।

ऐसे जाने हे सखी, या मे संशय नाहि ।। ४ ।।
मा० - अन्तर पट खोलो, साफ करो मन मांज ।
गु० - लो लगाओ हमारी, देगे दरश सिरताज ।।
मा० - धन धन तूं जग मे, तैने पाया शिवपाज ।
गु० - प्रगटे वरदाई, कुशल कुशल गुरुराज ।।
मा० - मेरी भी अरजी, भक्तवत्सलजी से आज ।
गु० - गुरु दरिसण दीना, 'राम' सुधारन काज ।

महो. ऋद्धिसार रचित

२४७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - पास पियारो लागे प्यारो फलोधी वालो रे)

कुशल छोगालो लाडलो, तूं गुरु हमारो रे के सद्‌गुरु लागे प्यारो रे।।
जैतसिरी जी के लाड़ला, मन मोहनगारो रे ।। स०१।।
जिल्ला मंत्रीश्वर घरे, प्रगट्यो अवतारो रे ।।
छाजेड़ वंश उजागरु, कुल कियो उजालो रे ।। स०२।।
गढ समियाणे प्रगटिया, दीपे दिनकारो रे ।।
सोवन वरण सोहामणा, सारा ने व्हालो रे ।। स०३।।
नाम दियो तुम करमसी, धन धन जयकारो रे ।।
जिनचन्द गुरु उपदेश से, लियो संयम भारो रे ।। स०४।।
पाट दिपायो गणपति, कियो जग उपगारो रे ।।
जिहाज तिराई डूबती, कोई लोक हजारो रे ।। स०५।।
दुःखिया कई सुखिया कर्या, दे धन भण्डारो रे ।।
देव पीर ने बस कर्या, गुण अपरंपारो रे । स.६ ।।
रोगादिक तप लब्धि से, तू हरणे हारो रे ।।
सेव करूं नित ताहरी, तूँ वर दातारो रे ।। स०७।।
कुशलकरण श्री कुशलसूरीश्वर, है हमरो तूं प्राण पियारो रे ।।
कुशल करो नित संघ के, है 'राम' तिहारो रे ।। स०८।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२४८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र. सं. १९३०)

(तर्ज - श्री सीमंधर-साहिबा)

कुशलसूरिन्द गुरु साहिबा, जिनचन्दसूरि पटधार लाल रे ॥
गुण अनेके शोभता, सेवक जन आधार.लाल रे ॥ कु० ॥१॥
दीनदयाल कृपाल छो, मन वांछित दातार लाल रे ॥
ठोड़ ठोड़ थांरी थापना, परचा अति मनुहार लाल रे॥कु० ॥२॥
देरावर थुँभ दीपतो, उदयापुर आम्बेर लाल रे ॥
राज बीकाणे शोभतां, शोभे जेसलमेर लाल रे ॥ ॥कु०॥३॥
कस्तूरी वलि केशरे, पूजे गुरुना पाय लाल रे ॥
मुनि यति श्रीपति राजवी,लुल २ शीश नमाय लाल रे ॥कु०॥४॥
संवत् उगणीसे तीस में, काती पूनम ज्ञान लाल रे ॥
श्री जिनहंससूरीसरु, खरतर गच्छ राजान लाल रे ॥कु०॥५॥
धर्मशील गुरु राजना, कुशलनिधान उदार लाल रे ॥
पदपंकज में रम रह्यो, नित प्रति गुरु'ऋद्धिसार'लाल रे ॥कु०॥६॥

महो. ऋद्धिसार रचित

२४९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - कोई देख्या रे सांवरियां साहिब प्यारा लागे रे)

कोई देख्या रे सुपने में सद्गुरु ज्योति सवाई रे ॥ टेर ॥
अर्द्ध चन्द ज्यूं भाल झलाहल राजे रे,
नयन कमल दल दोनूं अधिक विराजे रे ॥
श्याम मनोहर भृकुटि महा सुखदाई रे,
हरे हांरे महा सुखदाई रे ॥ कोई०॥१॥
दीप शिखा ज्यूं सरल नाशिका सोहे रे,
लाल प्रवाला अधर सदा मन मोहे रे ॥
दन्त पंक्ति मांनूं मोती युक्ति जमाई रे,

हरे हांरे युक्ति जमाई रे।। कोई० ।।२।।
कंचन वरणी काया सुन्दर दीपे रे,
चन्द सूरज छवि निज तेजे कर जीपे रे ।।
पुष्प माल शिर रत्न तिलक अधिकाई रे,
हरे हांरे तिलक अधिकाई रे ।। कोई० ।।३।।
देव दूष्य पट उज्ज्वल किरण सुहावे रे,
अम्बर तल में दर्शन गुरु दरशावे रे ।।
सिद्ध मनोरथ दीनो वर गुरुराई रे,
हरे हांरे वर गुरुराई रे।। कोई० ।।४।।
चन्द पटोधर भक्त जीव प्रतिपाला रे,
नित उठ जपिये कुशल गुरु की माला रे ।।
'राम' करे अरदास सदा गुण गाई रे,
हरे हांरे सदा गुणगाई रे ।। कोई० ।।५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - वारी जाऊ रे सांवरिया तुमपे वारणा रे)

गाऊं गाऊं मै सुयश गुरु तारणा रे ।। टेर ।।
धन्य मात तुम सो सुत जायो, भविजन के आनन्द वरतायो ।।
निरख निरख सुन्दर छवि लेवे वारणा रे ।। गा०१ ।।
जीता मदन तरुण वय निरमल,दशदिश पसर रहा गुण परिमल।।
. सूरि सकल शिरताज क, विपत विडारणारे ।। गा०।।२।।
तुम दर्शन सुख संपत लीला, सुन्दर अष्ट सिद्धि निधि शीला ।।
ज्ञान भान का उदय के कारणा रे ।। गा०३।।
परम पुनीत परम गुरु पाया, कुशल करण कुशलेश्वर राया ।।
चन्द्रसूरि के लाल भक्तजन पालणा रे ।। गा० ।।४।।
पूरो 'ऋद्धिसार' मन आशा, राखो युगल चरण के पासा ।।
प्रेम सुधारस दान अरज अवधारणा रे ।। गा० ।।५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५१. जिनकुशलसूरि स्तवन

चेत नर क्यूं भूला अज्ञान, धरो जिनकुशलसूरीन्द का ध्यान।।टेर।।
मिथ्या मत कुँ दूर हटा कर, समकित दिया निशान ।।
दया सत्य व्रत अनुभव दीना, दीना अमर विमान ।। धरो०१।।
काल अनन्ते चिहुँ गति भमते, मिले कुशल गुरु यान ।।
इस भव ऋद्धि परभव सिद्धि, मिले अचिन्ते आन ।।धरो०।।२।।
सिद्ध योग है नाम अमोलक, रत्न चिन्तामणि मान ।।
कामधेनु सुरतरु है परतिख, महिमा जपे जिहान ।। धरो० ।।३।।
सोमवार पूनम दिन पूरण, जोति जागती थान ।।
कर अेकाग्र चित्त चरणन मे, देते दरशण आन ।। धरो० ।।४।।
कुशल करण प्रगटे भवि जन, धर्मशील पहिचान ।।
जिनचारित्रसूरि के सद्गुरु, कुशल 'राम' कल्याण ।। धरो०।।५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - गिरनारी जातां राख लीजो है)

छाजेड़ कुलरो सेहरो ए मांय, सहियां ए म्हांरी
जिल्लागर मंत्रीश, सवाई गुरु प्यारा लागे ए ।।
जैतसिरी माता भली ए मांय, सहियां ए म्हारी ।
जायो पूत दिनेश, सवाई गुरु प्यारा लागे ए ।।१।।
नाम करमसी थापियो ए मांय,
सहियां ए म्हारी दूज तणों जिम चन्द ।। सवाई० ।।
सकल कला गुण आगलो ए मांय,
सहियां ए म्हारी वधता अभिनव इन्द ।। सवाई० ।।२।।
देव कहे मंत्रीशने ए मांय,
सहियां ए म्हारी दीजो तुम सुत दान ।। सवाई० ।।
श्रीजिनचन्द्र सूरीश ने ए मांय,

सहियां ए म्हारी तेज झलाहल भाण ।। सवाई०३।।
कुल उजलावन ए सही ए मांय,
सहियां ए म्हारी यश रहसी अखियात ।।सवाई०।।
चन्द्र सूरीश पधारिया ए मांय,
सहियां ए म्हारी गढसमियाण विख्यात ।। सवाई० ।। ।।४।।
नृप मंत्रीश्वर वान्दने ए मांय,
सहियां ए म्हारी चाढे पुत्र उदार ।। सवाई० ।।
लेई शिक्षा दीक्षा लिये ए मांय,
सहियां ए म्हारी मुनि आचार विचार ।। सवाई० ।।५।।
पाट विराज्या चन्द रे ए मांय,
सहियां ए म्हारी जपता सूरि मंत्र जाप ।। सवाई० ।।
देव दानव वश आणीया ए मांय,
सहियां ए म्हारी टाले पाप सन्ताप ।। सवाई० ।।६।।
राजवंश प्रतिबोधने ए मांय,
सहियां ए म्हारी कीधा पचास हजार ।। सवाई० ।।
श्रावक व्रत धर दीपता ए मांय,
सहियां ए म्हारी धन धन तसु अवतार ।।सवाई०।।७।।
वांछित दोनूं भव तणा ए मांय,
सहियां ए म्हारी सार्या मनोरथ काज ।। सवाई० ।।
उपकारी गुरु पूजतां ए मांय,
सहियां ए म्हारी तिरिया भवजल जहाज ।। सवाई० ।।८।।
गच्छ खरतर महिमा घणी ए मांय,
सहियां ए म्हारी श्री जिनकुशल सूरीन्द ।। सवाई० ।।
'राम' कवि कर जोड़ने ए मांय,
सहियां ए म्हारी वन्दे पद अरविन्द ।। सवाई ० ।।९।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - घर आवोजी राम रसिया (सोरठ))

तारो तारो कुशलगुरु रसिया,म्हारे मनमोहन चित्त वसिया जी।।ता०।।
तुम गुण मालती पुष्प भमर में,रोम रोम उल्लसिया जी। ता०१।।
तुम गुण स्वाति बून्द जलधर की, मो मन चातक तिसिया जी ।
शम दम युग तुम चरण कसोटी,मो मन कंचन घसिया जी।।ता०।२।।
तुम वचनामृम तत्त्व नीर से, मुझ तन पातिक नसिया जी ।।ता०३।।
'रामलाल' पट खोल हृदय का,कुशल ध्यान से कसिया जी।।ता०४।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५४. जिनकुशलसूरि स्तवन

तेरा हूँ मैं तेरा हूँ, मोहे भूलना नहीं, गुरु भूलना नहीं।।तेरा०।।
तूं ही है खुश फहम मुझे भूलना नही ।।टेर।।

समझ मुझे खास दास भूलना नहीं,
रखोगे तइनात पास, भूलना नहीं ।।१।।
करुंगा मैं कदम पोसी भूलना नहीं ।
जुदाई न होगी कभी भूलना नहीं ।।२।।
खुदाई तूं दरज है मोहे भूलना नहीं,
जिगर ज्यान मेरा है तूं भूलना नही ।। ।।३।।
जिस कद्र तूॅं मिले मोहे भूलना नही,
वह डगर खोजता हूँ भूलना नहीं ।।४।।
चलूंगा मैं हुक्म तेरे भूलना नहीं,
यही है कलाम मेरा भूलना नहीं ।।५।।
अगर मैं नापाक हूँ तो भूलना नहीं,
आप रंग इकरसी कर भूलना नहीं ।। ।।६।।
तुझ सिवा कस्म मेरे मैं और का नहीं,
कुशल मेरे हीर पीर और का नहीं ।।७।।

नेक नजर देखले मैं और का नही,
आसनाई आप से मैं और का नहीं ।।८।।
'राम' है गरकाब रंग और का नही,
चिरंजियो फूल महक और का नहीं ।।९।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तेरी खिदमत मे मेरा आना हुआ, आना हुआ गुण गाना हुआ)

तेरे दरशन में दिल को जमाना हुआ ।।टेर।।
मेरा सुनले सवाल, मै हूँ बेहाल,
मेरी आफत को टाल, चन्दसुरिन्द के लाल,
दिल नरमी से बन्दगी निभाना हुआ।।ते०।।१।।
तेरा जिगर मे ख्याल, जो रखता संभाल ।
वह होगा निहाल, होगा इल्मी कमाल,
तेरी सूरत पे चश्में लगाना हुआ ।।तेरी०।।२।।
यूं कहती जहान, है आला महरवान,
मैंने सुना है कान आया तेरे दरम्यान,
दिल नेकी से खट पट हटाना हुआ ।तेरी० ।।३।।
तूं सायर सुरतान, मेरी अरजी लै मान,
फिर भी धरता है ध्यान, तन मन से कुरबान,
तेरी आशकी पै दिल को थंभाना हुवा ।। तेरी० ।।४।।
तूं कुशल निवास, मेरी पूरोगे आश,
रखता तेरा विश्वास, करो दुश्मन का नास,
जिनकुशल को कुशल वरताना हुआ ।।तेरी०।।५।।
यह आरजू पेगाम, तेरा पाठक है 'राम'
सिद्ध कर दो तमाम मेरे नेकी के काम,
चिर फूलो की खुशबू फैलाना हुआ ।।तेरी०६।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५६. जिनकुशलसूरि स्तवन

थांरा विरुद म्हें जाणां छां, म्हें खास दास नहीं छानां छां।।थां०।।टेर।।
सुरतरु सम कलि में अवतारी, प्रगट होय कर सानिधकारी ।।
म्हारी सुध-बुध कांई विसारी, म्हे कांई राज विराणां छां।।थां०।।१।।
केई अन धन सुत संपद पावे, केई आशा धर ध्यान लगावे ।।
म्हारो मन थांरी सुनिजर चावे,तन मन सुँ पतवाणां छां।।थांरा०।।२।।
दरशण फरसण करुं मैं पहली, केशर लाल गुलाब चमेली ।
चरचूँ चरण सुगन्धी भेली, आनन्द हरख भराणां छां ।।थांरा०।।३।।
चन्द पटोधर श्री गणधरजी,कुशल कुशल सुणजो म्हारी अरजी ।।
साचे दिल सुं धरजो मरजी, अन्तर घट में मानां छां ।।४।।
साचे मन राचे तुझ संगे, कपट रहित निज आतम रंगे ।।
'ऋद्धिसार' प्रण में उच्छरंगे, थांरे रंग रंगाणां छां ।। थारा० ।।५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - दर्शन देनाजी नन्दलाल, वंशीवट के बजाने वाले)

दर्शन देना जी गुरुराज, भक्त की जहाज तराने वाले ।।टेर।।
खरतर नायक वांछित दायक, श्री जिनचन्द सूरिन्द ।।
तसु पट दीपक संघ सुखाकर, दादा कुशल सूरिन्द ।।द०१।।
गुज्जरमल बोथरा श्रावक, तेरा भक्त कहावे ।।
गया देशान्तर पीछा घिरते, फटी जिहाज घबरावे ।।द०२।।
धरी ध्यान समरथ गुरु तेरा, आप व्याख्यान सुणाते ।।
पंखी रूप हुय उड़ कर धाये, ततखिण जहाज तिराते ।।द०३।।
पीछा ततखिण आये सद्गुरु, श्री संघ अचरज पाते ।।
आदन के दरिया में प्रवहण, डूबन कथा सुणाते ।।द०४।।
अेक मास में पाटण गूजर, आकर शीस नमाते ।।
सब निज वीतक महिमा गाई, तब श्री संघ हरखाते ।।द०५।।

जीवित परचा हुआ गुरु का, सभी दर्शनी पूजे ।।
पुत्र संपदादि बहुतो को, गुरु सम और न दूजे ।।द०६।।
समयसुन्दर की पंच नदी पर, फटी जहाज स्वभावे ।।
श्री संघ युक्त ध्यान तेरा धरतां, नई जहाज बनावे ।।द०७।।
सुखसूरि भरुअच्छ से चढ कर, घोघा बन्दर जावे ।।
वायु जोर फटा जब प्रवहण, गुरु तब पार लंघावे ।।द०८।।
भवजल बीच नाव गुरु मेरी, अधबिच गोता खावे ।।
पार लंघाना हाथ आपके, 'रामकवि' गुण गावे ।।द०९।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२५८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज - छोड़ गोरी छैलरो दुपट्टो)

दादा महिर निजर कर जोय, शोभा थांरी जगत घणी रे ।।टेर।।
दादा साहिब मै हूँ तेरा दास, मेरो दादा तूं ही है धणी रे।।दा०।।१।।
थॉरा सुर नर सेवे पाय, आश पूरण चिन्तामणी रे ।।दा०।।
जग मे नही है थांरे कोई जोड,देख लीनी सारी ही दुनी रे।।दा०।।२।।
दादो देवे अपुत्रियां ने पूत, धन हीना ने रतन मणी रे ।दा०।
निश्चय मन जो ध्यावे थारो ध्यान,जावे आपदा दूर हणी रे।।दा०३।।
राजे दादो चन्दसूरीश्वर पाट, नाम थांरो कुशल धणी रे ।।दा०।।
'राम'तुमारो पूरो मरजीदान, अरजी म्हारी तुरत सुणी रे।।दा०।।४।।

महो. ऋध्दिसार रचित

२५९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – बगालो – घाटो)

देख्या मै दरस तिहारा, श्री सदगुरु महाराज ।। टेर ।।
सफल फली मन आशा, फली मन०। पाया सुरतरु आज ।।दे०१।।
तुम हो चिन्तामणि जैसा, चिन्तामणि जैसा सब सुख साज ।।दे०।।
गंगा अंगण में प्रकटी, अंगण०। मुझ मन निरमल काज।।दे०२।।
गण रिध्दि संपत काजे संपत० । कामधेनु गुरुराज ।।

सब सिध्दि लीला प्रगटी,लीला०। दु:ख दोहग गये भाज ।।दे०३।।
शुभ थान पुर पुर सोहे, पुर पुर०। मुलक बीकाणे राज ।।दे०४।।
वर खरतर गच्छ राजा, खरतर०। धर्मशील रहे गाज ।। दे०।
तुम नाम 'राम ऋध्दि सारी' ऋ०। जपे पाठक सिरताज ।।दे०५।।

महो. ऋध्दिसार रचित

२६०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – मोहे छोड चला वणजारा)

मेरे कुशल गुरु सुखकारा, जिन पार किया संसारा ।। टेर ।।
तेरी कीर्ति मै सुण पाई, है दीनबन्धु गुरुराई रे ।।
है दु:ख का मेटन हारा ।। जि०१।।
मैने लिया आसरा तेरा, तूं कर उद्धार गुरु मेरा रे ।।
तूं समरथ तारण हारा ।। जि०२।।
तेरा शुध्द वचन मैं पाऊं, जिस पर दृढ सरधा लाऊं रे ।।
दो ज्ञान अध्यातम सारा ।। जि० ३ ।।
धन सुत संपद लीला, गुरु नामें सुन्दर शीला रे ।।
तुम समरण से जयकारा ।। जि० ।। ४ ।।
इक मन जो ध्यान लगावे, वो अविचल संपद पावे रे ।।
मै जाऊं तेरी वलिहारी ।। जि० ।। ५ ।।
मैं दर्शन का अभिलाषी, गुरु दीजे प्रकट प्रकाशी रे ।।
तेरी महिमा जग विस्तारा ।। जि० ।। ६ ।।
जिनचन्द सूरिन्द पटधारी, गच्छ खरतर के अधिकारी रे ।।
गच्छ चौरासी का प्यारा ।। जि० ।। ७ ।।
'ऋध्दिसार' तुम्हारा बन्दा, पाठक पावत आनन्दा रे ।।
तेरे गुण है अपरंपारा ।। जि० ।। ८ ।।

महो. ऋध्दिसार रचित

२६१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – सुगुरु मेरा जीवन प्राण आधारा)

मै सीस नमाऊं थांने, परम गुरु दीजो दर्शन म्हांने ॥ टेर ॥
योगी जटिल केई तपिया देख्या, गर्व्व भर्या अधिकाने ॥
निन्दा विकथा करे पराई, निज कल्पित पख ताने ॥पर०॥१॥
शान्त शील जिन के संजम, आत्म ध्यान कूं ठाने ॥
जिन मारग के सत्य प्ररूपक, तुम हो तारण याने ॥ पर०२॥
पीर पेगम्बर भूत बादशाह, दया धर्म पहिचाने ॥
ये उपगार करा गुरु तैंने, कब लग करूं बखाने ॥ पर० ३ ॥
बावन वीर योगणी चौसठ, योग क्रिया बस आने ॥
पर उपकार करे अधिकाई, सारी दुनिया जाणे ॥ पर० ४ ॥
भये प्रभावक जैन धर्म के , देराऊरपुर थाने ॥
धाम होय गुरु दरशन दीना, श्री संघ अति हरखाने ॥ पर०५॥
जो जो ध्यावे परचा पावे, गुरु कीरति सुविहाने ॥
पुर पुर बीच थुम्भ गुरु तेरा, महिमा अधिक बधाने ॥ पर०६॥
खरतर गच्छ शुध्द जिन आणा, छाजेड कुल प्रगटाने ॥
चन्द पटोधर गुरु गुणवन्ते, भक्त जीव सुख दाने ॥ पर० ७ ॥
धर्मशील ज्ञानी गुरु मेरे, प्रगटे कुशलनिधाने ॥
पाठक 'ऋध्दिसार' तुम सेवक, कुशल गुरु मन माने ॥पर०८॥

महो. ऋद्धिसार रचित

२६२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग—मांड)

म्हारा प्राण पियारा, मोहना गुरु आइजो म्हारी भीर ॥टेर॥
ओगुणगारो हूँ सही रे, पग पग में तकसीर ॥
बड़ा बड़ाई ना तजे गुरु, भांज पराई पीर रे ॥ गुरु आ०॥१॥
छील्लर सूं राचुं नहीं रे, किया सायर से सीर ॥
अन्तरजामी साहिबा गुरु, हो रतनागर हीर रे ॥गुरु आ०॥२॥
अपनो विरुद विचार के रे, दीजे सुख समीर ॥
हाथ जोड अरजी करूं गुरु,आप दयाल अमीर रे॥गुरु आ०॥३॥

आप समान मिल्यो नहीं रे, गुरु दूजो साहस धीर ।।
अन्तर तपत बुझायवा गुरु, निरमल गंगा नीर रे।।गुरु आ०।।४।।
चन्द्र वदन छिब सोहनी रे, सोवन वरण शरीर ।।
नयण न धापै निरखतां गुरु,गुण भरिया गंभीर रे।।गुरु आ०।।५।।
समरथ आजो प्राहुणा रे, घडियां न करजो ढील ।।
मनसा पूरो मांहरी गुरु, देख दास दिलगीर रे ।। गुरु आ०६ ।।
वीसरियां सरसी नहीं रे, दीनबन्धु वड वीर ।।
म्हें छां हुकमी रावला रे, जडिया प्रेम जंजीर रे ।गुरु आ०।।७।।
चन्दसूरिन्द के लालजी रे, तारण भवजल तीर ।।
कुशल करण साचो धणी रे, दुश्मन टालन मीर रे ।।गु.आ.८।।
नयणा तरसे दरशकूं रे, जीव धरे नहीं धीर ।।
'राम' हिये रंग आपका रे, साची मंडी लकीर रे ।।गुरु आ.।।९।।

महो. ऋध्दिसार रचित

२७०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – म्हारा गणधर गुरु महाराज, अरजी सुन लीजो)

म्हारे हृदय लिख्या गुरु नाम, चतुर नर सुण लीजो । टेर ।
नित का करुं वधामणा रे, आनन्द उच्छव कोड ।।
इण कलियुग के मांहिने जी,कोइय न आवे थांरी जोड़।।च०।।१।।
गिरुआ गुण थांरा घणाजी, भक्तजनां प्रतिपाल ।
हुँ छुं सेवक रावलो जी, सुनिजर नयण निहाल ।। च० ।। २ ।।
कल्पवृक्ष चिन्तामणी जी, वांछित पूरण देव ।।
आण धरूं शिर ताहरी जी, शुध्द मन साहूं सेव ।। च० ।। ३ ।।
रसना अेक कहूँ मै किस विध? गुरु गुण अपरंपार ।।
भवसागर भमतां थकां जी, वांह पकड़ निस्तार ।। ४ ।।
चौरासी गच्छ सेहरो जी, कुशलसूरि गुरुराय ।। च० ।। ५ ।।
रावल राणा ओलगै जी, सेवे तुम्हारा पाय ।।
पुण्य उदय सद्‌गुरु मिल्या जी. तीन रत्न दातार ।।

अन्तर घट में रम रह्याजी, तार तार मोहे तार ।। च०।। ६।।
दरशण कर परसन हुआ जी, प्रगट्या कुशलनिधान ।।
हाजर हुकमी वीनवे जी, पाठक 'राम' सुजान ।। च०।।७ ।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२६४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – खेमटा ताल)

म्हेतो सेवरा चढाय आई आज, गुरुजी के मन्दिर में ।। टेर ।।
देख देख महिमा मन्दिर की, निन्दक सब रहे दाझ ।। गु० ।।
दरशन कर परसन भया मेरा, हरख रहा दिल गाज ।। गु०१।।
सजधज रूप सजे आभूषण, सखीयन संग समाज ।। गु०।।
केशर चन्दन अबीर अरगजा, ले पूजन का साज ।। गु०२ ।।
चम्पा चमेली हीना मरवा, भर फूलन का छाज ।। गु० ।।
फरसत चरण आनन्द नमाया, मिले गरीबनवाज ।। गु०३ ।।
पूजन से धूजे सब अरिगण, मिला मुक्ति का पाज ।।गु० ।।
गाम गडाले सद्‌गुरु भेट्या, नगर बीकाणे राज ।। गु० ४ ।।
ज्ञान ध्यान सनमान वधारण, गणधर गुरु महाराज ।। गु० ।।
अन्तरगत की तुम सब जानो, रखो हमारी लाज ।। गु० ५ ।।
चन्द्रसूरि के खरतर नायक, तारण तरण जहाज ।। गु० ।।
कुशल कुशल गुरु पाठक जंपे, 'राम' सुधारो काज ।। गु०६।।

महो. ऋध्दिसार रचित

२६५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – शान्ति वदन कज देख नयण, मधुकर मन लीनो रे)

श्री सद्‌गुरु का दरश सरस म्हांनू प्यारो लागे रे ।। टेर ।।
श्री जिनचन्द सूरिन्द पटधारी, जिन शासन के उद्योतकारी ।।
भक्तवत्सल गुण आगर नागर, ज्योति जागे रे ।। श्री स.।।१।।
रावल राणा आणा माने, परचा तेरा सब जग जाने ।।
ऋध्दि वृध्दि सुख संपत आणन्द, गुरु से मांगे रे ।। श्री स.।।२।।

महर निजर मुझ ऊपर कीजे, शुध्द दरसण अब मुझ को दीजे ॥
उदय उदय कर परगट सानिध, अरिगण भागै रे ॥ श्री स.॥३॥
जिनचारित्रसूरि पद वन्दे, भव भय पातिक दुरित निकन्दे ॥
पाठक 'राम' गुरु चिरनन्दे, गावत रागे रे ॥ श्री स. ॥ ४ ॥

महो. ऋद्धिसार रचित

२६६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र.सं.१९५८)

(तर्ज – सीमन्धरजी से अरजी रे—जन्म मरण दुखवारो)

श्री सद्गुरु जी से वीनती रे, आयो शरण तुम्हारी ॥
दादा साहिब जी से वीनती रे, आज सुणो गुरु म्हारी ॥ टेर ॥
दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन शुध्द कर ध्यान लगायो ।
महिर निजर अब कीजिये जी,चरण कमल बलिहारी ॥दा०॥१॥
आधि व्याधि संकट दुःख मेटो, सोमवार पूनम दिन भेटो ॥
अनधन लक्ष्मी चौगुणी रे, वधती संपदा सारी ॥ दा० ॥ २ ॥
नर नारी अपच्छर मिल आवे, अतर गुलाब केवडो लावे ।
पूजै मृगमद पुष्प से रे, खुल रही केशर क्यारी ॥ दा०३ ॥
कलियुग में परचा तूं पूरे, चिन्ता दोषी दुश्मन चूरे ॥
धन धन सद्गुरु जग जयो रे, सहस किरण अवतारी ॥दा०॥४॥
उगणीसे अट्ठावन वरसे, काती पूनम दिन भल सरसे ॥
गच्छपति कीर्तिसूरीश्वरु रे, वन्दे वार हजारी ॥ दा०॥ ५ ॥
अरस परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुझे समझीजे ।
जग में सुरतरु सारिखो रे, कीरति छा रही थारी ॥ दा०॥६॥
प्रगट पणे वरदाता देख्यो, आज सफल दिन मैं कर लेख्यो ॥
श्री जिन कुशल सूरिन्द धणी रे,कहे 'राम ऋध्दिसारी' ॥दा०॥७॥

महो. ऋद्धिसार रचित

२६७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – होरी)

सद्गुरुजी की पूजन कर रे, कर रे, कर रे ।
दुःख दोहग दूरे हर रे ।। सद्०।।टेर।।
ये कलियुग असराल भवोदधि, सद्गुरु बांह पकर रे,३।। स०।।
अगम अगोचर जिन की महिमा, ज्ञान ध्यान चित्त धर रे।।
पूरब पुण्य उदय भये तेरे, मिल गये सद्गुरु वर रे ।।व०३,स०।।१।।
वाट घाट भय संकट-वारण, दुश्मन दोषी हर रे ।।
चन्द्रसूरि के पाट प्रभाकर,उदय भयो दिनकर रे।।क०३,स०।।२।।
कुशलसूरीश्वर कुशल करण कूँ, नित प्रति नाम समर रे ।।
द्रव्य भाव दुय विध तें पूजन,कर भवसागर तर रे।।त०३,स०३।।
स्वर संगीत ताल धुन गुरु गुण, गावत है नर वर रे ।
गाम गाम स्थिर थुम्भ नगर में,परचा गुरु का जबर रे।।ज०३.स.४।।
लाल गुलाल अबीर अतर से, गुरु भक्ति अनुसर रे ।।
जिनचारित्रसूरि पद वन्दन,'राम' चरण अनुचर रे ।।च०स०।।५।।

महो. ऋद्धिसार रचित

२६८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र.सं.१९४८)

(तर्ज–जगमें अमर राजा भरतरी)

सद्गुरु दीनदयाल, गच्छपति दिनकर तुम धणी ।।
सेवक जन प्रतिपाल, दुःखतमहारण दिनमणी ।। स०१ ।।
गढ सवियाणो जी देश, छाजेड कुल उदयाचले ।।
जिल्लासाह पितेश, जयतसिरी अंबा भले ।। स० २ ।।
गच्छपति चन्द मुनिन्द, पाट तिलक किरणावली ।।
खरतर कमल आनन्द, तेज प्रकाशन मन रली ।। स० ३ ।।
पुर पत्तन सब देश, झिगमिग ज्योति झिगमिगे ।।
पूनम ने सोमवार, नर नारी गुरु ओलगे ।। स० ।। ४ ।।
अरचे अतर फुलेल, परिमल फूली मालती ।।
महके चम्पक बेल, सुन्दर आवे मलपती ।। स०५ ।।

शुभ थिर थूंभ बीकाण, बालूचर महिमा घणी ।।
कीरतबाग प्रधान, दुःखभंजन चिन्तामणी ।। स०।। ६ ।।
पूरो वंच्छित आस, छाया तुम सुनिजर तणी ।।
दाता सुख कैलाश, चरण शरण किंकर भणी ।।स०।। ७ ।।
पूजे पद गोविन्द, चन्द्र शिखर जय रास में ।
कौटिक गण कुल चन्द, कुशलसूरिन्द प्रकाश में ।। स० ।।८ ।।
उगणीसय अडताल, मिगसर वदी दशमी करी ।।
दरशण अतही विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ।। स० ।। ९।।
गुरु गुण सरिता नीर, मीर मगन उल्लास में ।।
लक्ष्मी लील समीर, 'ऋध्दिसार' जस रास में ।। स० ।। १० ।।

महो ऋध्दिसार रचित

२६९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – आशावरी)
(र.सं.१९४८)

सुगुरु मेरी नईया पार उतारो, तूँ बण अब मांझी हमारो ।।टेर।।
सरिता भाद्रव नीर जलधि ज्यूं, ये संसार अपारो ।।
ता तट पारंपार अमर पद, ताको बण दातारो ।। सु० ।। १ ।।
राग रंग इक जीरण नौका, तिर रही भर मझधारो ।।
मै बैठो परमारथ खातर, मोह मगर नें उच्छारो ।। सु० ।। २ ।।
भक्त उध्दारण श्री सद्गुरुजी, जल्दी कष्ट निवारो ।।
जाण बाल गणपति करुणानिधि,आवी पतित कुं बारो ।।सु०।।३।।
उल्कापात गगन विपया रस, दीसे अतहि करारो ।।
विरह व्यथादिक निशि अंधियारो, कोण करे निसतारो ।।सु०४।।
ब्रह्मा विष्णु जपे कोई ईशा, अल्ला उमया प्यारो ।
मै ध्याऊं जिन देव कुशल गुरु, अरि गण गंजनहारो ।। सु०।।५।।
सुण अरजी आये गच्छ तमहर, तुरत ही विघन विडारो ।।
राम बाग पुर अजीमगंजे, कुशलनिधान जुहारो ।। सु० ।। ६ ।।

कईक गुरु से लक्ष्मी पावत, हुकम धरे वसुधा रो ॥
मैं इक सेवा चरण कमल की, मांगू गुरु दातारो । सु०॥ ७ ॥
संवत उगणीसे अडतालीश, मेरु त्रयोदशी सारो ॥
नयणा सफल किये गुरु दरशन,है 'ऋध्दिसार' तिहारो॥सु०॥८॥

महो. ऋद्धिसार रचित

२७०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – ख्याली लाल अणवट रग लागो)

सुज्ञानी लाल चरणां सूँ चित लागो ।
लागो रे खरतर गच्छ राज, थांसूँ म्हारो मन लागो ॥ टेर ॥
सुवरण रत्न जडित कलश में, लाऊं गंगा नीर ॥
चरण कमल प्रक्षालू थांरा, पाऊं भवजल तीर ॥ सु० ॥१॥
हीर चीर उज्ज्वल पट लाऊं, अति सुकमाल सुताज ॥
पद पूंछन सद्गुरु जी थांरा, पाऊं मै त्रिभुवन राज ॥ सु०॥२॥
काश्मीर सूं केशर लाऊं, चीनी शुध्द कपूर ॥
मलयागिरी सूं चन्दन लाऊं, पूजा करुं मन धीर ॥ सु०॥३॥
बागां मांहि सूं सरस केतकी, लाऊं पुष्प गुलाब ॥
राय चम्पो आबू सूं लाऊं, अरचूं तुम्हारा पांव ॥ सु० ॥ ४ ॥
कन्नोज से चोवा चन्दन अत्तर, करुं सुगंधी पूर ॥
महके परिमल वासना म्हारा, दुःख दालिदर दूर ॥ सु० ॥ ५ ॥
सुन्दर बन सूं चमर मंगावूं, सुवरण रतन जडाऊं ॥
परम सोभागी सद्गुरु थांपर, चौसठ चम्मर ढुलाऊं ॥ ६ ॥
लंका गढ सूं सोनो लाऊं, वज्रागर सूं हीरा ॥
छत्र जडाऊं थांपर चाढूं, मेटूं मन की पीरा ॥ सु० ॥ ७ ॥
सूरत की बरफी ले आऊं पेडा मथुराजी का ॥
मिश्री मावा जैपुर सेती, चाढूं नैवेद्य नीका ॥ सु० ॥ ८ ॥
काबुल का सब मेवा लाऊं, मिश्री बीकानेर ॥
लंगडा आम्ब बनारस केरा, चाढूं फलों का ढेर ॥ सु० ॥ ९ ॥

आरती मेटन आरती उतारुं, पंच रंग ध्वजा चढाऊं ।।
श्री फल ऊपर मोहर भेट धर, लुल २ शीश नमाऊं ।।सु०।।१०।।
नाटक गायन वीण बजाऊं, गुण गाऊं मैं तेरा ।।
चन्दसूरिन्द के लाल सोभागी, कुशलसूरिन्द गुरु मेरा ।।सु०।।११।।
चारित्रसूरि कृपाचन्द्रसूरि, बड खरतर सुविहाण ।।
पाठक 'राम' लहे नित लीला, निश दिन तेरा ध्यान।।सु०।।१२।।

महो. ऋध्दिसार रचित

२७१. जिनकुशलसूरि स्तवन

सुण सजनी रजनी, सुपने में दरसन दे गयो ।
मन ले गयो, सुख दे गयो ।।
जिनकुशलसूरीश्वर मेरो मन हर के ले गयो ।। सुण० ।। १ ।।
बीते कब रतियां, कहुँ किन से बतियां, मेरी कुरके छतियां।
रात अन्धेरी कुछ कह गयो, वर दे गयो ।। सुण० ।। २ ।।
सुन प्यारी सखियां, कब देखूं अखियां, नही अन्तर रखियां।
परतिख देखे बिन न रहूँ ।। सुण० ।। ३ ।।
चन्द सूर उजाला, मुख शोभा वाला, है अमृत प्याला ।
'राम' तेरी शोभा क्या कहूँ ।। सुण०।। ४।।

महो. ऋध्दिसा र रचित

२७२. जिनकुशलसूरि स्तवन

हेजी मेरे प्यारे पाई दरशन की बहार ।। टेर ।।
आफताब तेरा नूर झलकता, कुशल कुशल करतार ।
करतार, बहार, मेरे प्यारे, पाई दरशन की बहार ।। १ ।।
तेरा गुलबदन है मदन कतल को, तारीफ अपरंपार ।
पार, बहार, मेरे प्यारे पाई दरशन की बहार ।। २ ।।
सुरपति नरपति रंभापति सब, हाजर हजुरी दरवार ।।
दरबार, बहार, मेरे प्यारे, पाई दरशन की बहार ।। ३ ।।
आम खास तेरा बागों मे देखा, अजब बना है गुलजार ।।

गुलजार, बहार मेरे प्यारे, पाई दर्शन की बहार ।। ४ ।।
दिल रोशन गुल खुला चमन है, दरशन से मन को करार ।
करार, बहार, मेरे प्यारे, पाई दर्शन की बहार ।। ५ ।।
तेरी बदौलत सभी इनायत, 'राम' चिरंजीओ दिलदार ।।
दिलदार, बहार, मेरे प्यारे पाई दर्शन की बहार ।। ६ ।।

लक्ष्मीवल्लभोपाध्याय रचित

२७३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – जय जयवन्ती)

आज तो आनन्द मेरे, आई भली भावना ।। आ. ।।
भई जो कुशल गुरु, भेटन की कामना ।।
कलियुग में सुरतरु, दुरित को दावना ।। आ० ।। १ ।।
दादा को दरश पायो, लोचन कूं अधिक भायो ।
सुधा तें लग्यो सवायो, पूज्यां सुख पावना ।। आ० ।। २ ।।
श्री जिनकुशल सूर, सेवक को हो हजूर ।
दुरित हरण दूर, अधिक बधावना ।।आ०।।३।।
कुंकुम चन्दन घसी, सरस गुलाब रसी ।।
उलसी उलसी पूज, गुरु गुण गावना ।।आ०।।४।।
प्यासे कूँ ज्यूं पाणी प्यावे, भूले कूं राह बतावे ।।
बंधन छोडावे दूर, बिछुरे मिलावना ।।आ०।।५।।
'लक्ष्मीवल्लभ' की आस, पूरे सदा सुख वास ।।
कविराज जस वास, जगत सुहावना ।।आ०६।।

लक्ष्मीवल्लभोपाध्याय रचित

२७४. जिनकुशलसूरि स्तवन

म्हांनै वांछित देज्यो, वांछित देज्यो रे राज,
म्हांरी अरज सुणीज्यो । म्हां. ।
पूठे तो ज्यांरे हो दादा तूं पूठी रखो । म्हां. ।
कहेतां केवो बीह रे सुर नर थांने मांने । म्हां. ।

दरसन तौ थाहरै दुख टले । म्हां. ।
ज्यूं गज दरसण सीह रे, गुरु चढते वांने, चढते वांने ।म्हां.१
बंधन तो तोडे रे दादाजी तूं वंदीया । म्हां. ।
निरधनियां धन भूरि रे । म्हां. ।
दबते दत पूरे दबटे टवटे पूरे । म्हां. ।
पुत्र ती तूं दीये रे अपुत्रीयां । म्हां. २ ।
ऊगे सुकृत तणो अंकूर रे । म्हां. ।
सहू संकट चूरे संकटा विकटां चूरे । म्हां. ।
वारे तो वैरी रे दादाजी तू वांकडा । म्हां. ।
सेवक ने साधार हे आराध्यां तूं आवे । म्हां. ३ ।
सेवक ने साधार हे आराध्यां तूं आवे । म्हां. ।
माता तो जैतसिरि दादाजी थांहरा । म्हां. ।
जेल्हागर नो मल्हार रे, गुणियण जस गावे,
हरखे हरखे गुण गावे । म्हां. ४ ।
पाटे तो प्रतपे हो दादा जिणचन्द रे । म्हां. ।
श्री जिनकुशल सूरिन्द रे, नगरे नगरे गांमे । म्हां. ।
सुनिजर तो करिने हो दादा जी थे दीयो । म्हां ।
'लखमीवल्लभ' आणंद रे ठावो ठांमे ठांमे । म्हां. ५ ।

लालचन्द रचित

२७५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–भैरव कडखो)

आज दिन धन्य गिणि भेटीये भाव सुं,
श्री जिनकुशल सूरिंद गुरु दुखहरण ।
सुकल पख अंत तिथि सोम शुभ दिन भले,
जात्र करि पूरवै होंस च्यारूं वरण । आ. १ ।
नीर निरमल करी कनक झारी भरी,
करत पूजा सहू पाप दूरे करण ।

निरधनी धन लहे बुद्धि संतति मिले,
रोग अरु सोग नासे फरसत चरण । आ. २ ।
भूत अरु प्रेत राक्षस असुर व्यन्तरा,
नाम सद्गुरु तणें सबै लागे डरण,
देव एसो नही अवर भूमण्डले,
देव दानव सहू आंन पाले परण । आ. ३ ।
ज्ञान दाता सही तूं ही इण जगत में,
कलपतरु ऊपमा तुंहीज तारण तरण ।
वीनवे 'लालचन्द' अरज परमांण करि,
राखिये आपकी छत्र छाया सरण । आ. ४।

लालचन्द रचित

२७६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – भैरव कडखो)

कीजिये कुशल सम्पत्ति निज सेवकां, सुक्ख दाता सही नांम तेरो।
आंण वरते सही ताहरी जगत में, नहीं य को दिवस तुम्ह सम वडेरो ।की
पार नहीं जेहनो एहवा सिन्धु थी, दूरि करि मुझ भवभ्रमण फेरो।
ताहरा गुण कहा लौं कहो वरणीये,पतित पालन तुंही नहीं अनेरो।की.२।
मन लग्यो माहरो ताहरा चरण सुं,उदधि नावे जिमि खग वसेरो।
बांह गहीय तणी वरग निरबाहीये,'लालचन्द'सहीय तुम चरण चेरो।की.३।

लालचन्द रचित

२७७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – रेखता)

कुशल गुरुदेव के दर्शन, मेरा दिल होत है परसन ।।
जगत में आप समो कोई, न देखा नयण भर जोई ।।१।।
विरुद भूमण्डले गाजे, फरसते पाप सब भाजे ।।
पूजते सम्पदा पावे, अचिन्ती लच्छी घर आवे ।।२।।
एक मुख गुण कहुं केता?, मुझ हिये ज्ञान नहीं एता ।।

'लाल' की अरज सुन लीजे, चरण की सेव मोहे दीजे।।३।।

लालचन्द रचित

२७८. जिनकुशलसूरि स्तवन

चरण सरण तुझ आयो है, हो जी सद्गुरुजी ।
हो जी सद्गुरुजी रो दरसण पायो हे । च. १ ।
चन्द्रकलें राजै सदा हे गुणधारी,
हो जी गणधारी आपे सम्पदा हे ।च.२ ।
ध्यान धरूं इक ताहरो हे मन सुधें,
हो जी मन सुधें सेवक आपरो हे । च.३ ।
पूनिम दिन सोमवारे हे सुखकाजें,
हो जी सुखकाजें संघ जुहारें हे । च. ४ ।
चरण कमल पूजा करे हे नर नारी,
हो जी नर नारी मन वंछित वरे हे । च. ५ ।
सेस चढावे भाव सुं हे गुण गावे,
हो जी गुण गावे हित धर हरख सुं हे । च. ६ ।
'लालचन्द' सद्गुरु तणा हे मन रंगे,
हो जी मन रंगे करे गुण वर्णन हे । च. ७ ।

लालचन्द रचित

२७९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–वेलावल)

श्री जिनकुशल को ध्याइये, त्रिकरण शुद्ध होय ।
निज नर भव सफलो हुवे, पातिक मल धोय । श्री. १ ।
देव दानव हाजर रहे, मानत सव लोय ।
सद्गुरु चरण पूजे सदा, आठै द्रव्य होय । श्री. २ ।
श्री संघ संकट चूरिबा, प्रभु सम नहीं कोय ।
'लालचन्द' को दीजीये, उत्तम पद जोय । श्री. ३ ।

लालचन्द रचित

२८०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – ख्याल में)

श्री जिन कुशल जुहारा मनमोहनगारा । श्री. ।
जनम जीवित मुझ सफल भयो है, पुण्य उदय सुखकारा ।श्री. १।
सद्गुरु ध्यांन धरुं उर अन्तर, ज्युं चातक घन धारा । श्री. २ ।
सेवक दुक्ख हरण चिन्तामणि, सुरतरु सम अवतारा । श्री. ३ ।
'लालचन्द' वाचक कुं दीजे, चरण कमल आधारा । श्री. ४ ।

वसता मुनि रचित

२८१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी – म्हारा सैण पना इन)

म्हांरा सैण वालो सद्गुरु भेटां ।
मन जाई अम्बर चढ्यो रे, सद्गुरु भेटण चाव रे ।म्हां. १।
आयो दिन भाव बीज नो रे. घणुंय हजूर गेह रे ।
अंग अंग आनंद हुवो रे, नवलो जाग्यो नेह रे । म्हां.२।
करी पोसाख सुचंगीयां रे, मिलि आया नरनारी रे ।
अह महिमा किरही घणी रे, म्हांरा सद्गुरु दरबार रे ।म्हां.३।
गुहिरी सी नौबति घुरे रे, बाजे जंगी ढोल रे ।
गावे जस गुण गोरीयां रे, लागि रही हालक होल रे ।म्हां.४।
श्रीसंघ बांटे सीरणी रे, फरसीजे गुरु पाय रे ।
भांमिणी लेवे भांमणे रे, लुलि लुलि अंग न माय रे ।म्हां.५।
खरतर गच्छ रो साहिबो रे, जिनचन्दसूरि पटधार रे ।
सांनिधकारी सेवकां रे, अडबडियां आधार रे ।म्हां.६।
आज भले दिन ऊगीयो रे, मिलीया सद्गुरु आय रे ।
कहे 'वसतो' मुझ सुं सदा रे, धारेज्यो धणी आप रे ।म्हां.७।

प्र. विचक्षणश्री रचित

२८२. जिनकुशलसूरि – अमर कहानी

सुनो सुनो ए दुनियाँ वालो ! गुरुदेव की अमर कहानी ।
कुशलसूरि है नाम गुरु का, नहीं कोई इनका शानी ।।टेर।।
राजस्थान मारवाड में, जन्मभूमि समियाणा।
मंत्री जिल्हागर वहां बसते, माने राजा राणा ।
संवत् तेरह सौ सैंतीस में, गुरुदेव ने जन्म लिया ।
जैतसिरि माता ने गुरु का कुशलचन्द्र शुभ नाम दिया ।
लाड प्यार में बीता बचपन, दश वर्षो की उम्र हुई ।
दादा चन्द्रसूरीश्वर गुरु से, कुशलचन्द्र की भेंट हुई ।
झलक रही थी गुरु मुखड़े पर संयम की मस्तानी ।।सुनो०।।१।।
दर्शन करके हर्षित हो गये, प्रेम से गुरु उपदेश सुना ।
आत्म ज्ञान हुआ जागृत तब, गुरु को ही सिर छत्र चुना ।
मात पिता से आज्ञा मांगी, संयम पथ अपनाऊँगा ।
सत्य धर्म का शंख बजाकर, सोई दुनियां जगाऊँगा ।
दुर्लभ यह मानव तन पाया, विरथा नहीं गमाऊंगा।
नर से नारायण होता है, यही लक्ष्य मैं लाऊँगा ।
विषय भोग के कीच में फंसकर,नहीं खोऊँगा जिन्दगानी।।सुनो.।।२
मात पिता ने प्रेम से पुत्र को बहुत भांति कर समझाया ।
किन्तु कुशलचन्द्र ने उनके कहने को नहीं अपनाया ।
रहे अडिग अपने निश्चय पर मात पिता से यों कहते ।
सुख साधन है धर्म आराधन, अन्तराय यहां क्यों करते ।
सच्चे मात पिता बन करके शीघ्र ही आज्ञा दे देना ।
ठान लिया है मैंने मन में, ब्रह्मचर्य से ही जीना ।
त्याग तपस्या से शुद्ध हो, लूंगा मोक्ष निशानी ।। सुनो०।।३।।
यों समझा दस वर्ष के बालक, कुशलचन्द्र ने जोग लिया ।
मात पिता धन वैभव सबसे, झटपट मुखड़ा मोड़ लिया ।

पारस की संगत से लोहा भी सोना हो जाता है ।
गुरु संगत से अज्ञानी भी, ब्रह्मज्ञानी बन जाता है ।
संवत् तेरह सौ सैतालीस फागुन सुद सातम दिन में।
देखो मंत्रीश्वर के पुत्र ये, सब को तज जा रहे वन में ।
मोह पाया के बन्धन तोड़े, छोड़ी दुनियां फानी ।। सुनो०।। ४ ।।
गुरु आज्ञा पालक बालक मुनि, पढने में मन को जोड़ा ।
अल्प समय में पण्डित बन, अभिमान अनेकों का तोड़ा ।
ब्रह्मचर्य का तेज अनोखा, संयम की शक्ति भारी ।
यौगिक बल और आत्मिक बल से चमका दी दुनिया सारी ।
गयासुद्दीन बादशाह भी, गुरुदेव के भक्त बने ।
चमत्कार को नमस्कार कर, शीश झुकाते चरनन में ।
तेरह सौ सितत्तर में सूरि सम्राट बने ज्ञानी ।।सुनो०।।५।।
एक दिन जहाजों को लेकर, यात्री जाते थे समन्दर में ।
तूफान उठा वहां जोरों से, जहाजें आ गई खतरे में ।
आओ दादा हमें बचाओ, डूब रहे है सागर में ।
कोई नहीं रखवारा अब जो, सहाय करे रत्नाकर में ।
दे रहे थे व्याख्यान सूरीश्वर, फिर भी पुकार सुनी उनकी ।
दौड़े आये सबको बचाये, पार करी नैया सबकी ।
अजब शक्ति गुरुदेव की देखी, कैसी करी महरबानी।।सुनो०।।६।।
वीर प्रभु के पटधर है, पचासवें कुशलसूरि मानों ।
बारह सौ थे शिष्य गुरु के, साध्वी मण्डल भी जानों ।
संघ अनेक निकाले गुरु ने, प्रतिष्ठायें कई करवाई ।
तप उद्यापन शास्त्र निबन्धन, दीक्षायें कई दिलवाई ।
मांस शराब छुड़ा करके, पचास हजार को जैन-किया ।
जीओ और जीनें दो सब को, ऐसा गुरु ने ज्ञान दिया ।
सब मजहबों का यही है कहना, छोड़ो अब खीचातानी।।सुनो०७।।
यों करते उपकार जगत का, गुरु आये देराउर में।

ज्ञान से अन्तिम समय जान, प्रभु ध्यान लगाया अन्तर में ।
त्याग दिया दिन आठ अन्न जल, प्रभु नाम की धुन लगी ।
अन्तिम दर्शन करने को, लाखों जन की वहां भीड़ लगी ।
संवत तेरह सौ नव्यासी, अम्मावस है फागुन की ।
जन्म मरण संसार नियम ने ज्योति बुझा दी गुरु तन की ।
वर्ष बेंतालीस जग वर्पाई, महावीर की वाणी ।।सुनो०।।८।।
भौतिक ज्योति बुझा करके भी, जीवन ज्योति अमर बनी।
छः सौ वर्ष बीतने पर भी, गुण कीर्तन करती अवनी ।
स्वर्ग से मालपुरे में आकर दर्श दिये थे पूनम को ।
तब से यहां गुरुदेव दिखाये, अगणित चमत्कार हमको ।
संवत दोय हजार सोलह इस तीर्थ का जीर्णोद्धार हुआ ।
जयपुर से पैदल संघ आया, गुरुदेव का जय जयकार हुआ ।
फागुन अम्मावस स्वर्ग जयन्ति में मेले का ठाठ लगा ।
देश देश के भक्त जनों के दिल में भक्ति प्रेम जगा ।
पुण्य प्रवर्तिनी सुवर्ण ज्ञान जतन शिष्यायें आई है ।
सकल संघ के साथ जहां, गुरुदेव जयन्ति मनाई है ।
आज भी जो सच्चे दिल से, गुरुदेव का ध्यान लगाते है।
अन्न धन लक्ष्मी आत्म संपदा, मन वांछित फल पाते है ।
हम सब की गुरु अर्ज यही है, सब जगत में शांति करो ।
अध्यातम रस की ज्योति दे 'विचक्षण' की भव भीति हरो ।
कुशलसूरि की जय कहने से मिट जाती है हैरानी ।
जय गुरुदेव ! जय गुरुदेव ! जय गुरुदेव ! जय गुरुदेव !
जय गुरुदेव ! जय गुरुदेव !
कुशलसूरि की जय कहने से मिट जाती है हैरानी ।
सुनो सुनो ए दुनियां वालों! गुरुदेव की अमर कहानी।।सुनो०।।९।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

२८३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – छोड गए बालम)

अर्ज सुनो गुरुदेव, मै द्वार तुम्हारे आन खड़ा ।
सुख शान्ति करो गुरुदेव, मै चरण शरण मे आन पड़ा ।।टेर।।
सच्चे मात पिता हो जग में, बिन स्वार्थ उपकारी ।
दु:ख संकट सब दूर करो गुरु! अपना विरुद विचारी ।।अर्ज०१।।
मालपुरा के राजा हो तुम, चन्द्रसूरि पटधारी ।
कलियुग में भी जागृत ज्योति, मनसा पूरो हमारी ।।अर्ज०२।।
जैतसिरी नन्दन भय-भंजन भव दु:ख मेरा हर दो ।
अधमाधम हूं मै गुरुवर, महर नजर अब कर दो ।।अर्ज०३।।
दोय सहस चौदस वैशाखी, गुरु पूर्णिमा आई ।
जयपुर कोटा टोंक संघ मिल, कीर्ति तुम्हारी गाई ।।अर्ज०४।।
सुखसागर सुवरण तुम सेवा, भव–भव दे गुरुदेवा ।
दर्द भरी है "विचक्षण" विनती, दे संयम सुख मेवा ।।अर्ज०५।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

२८४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – पंछी बावरिया)

कुशल गुरु गुण गाओ, जयन्ती है गुरु की ।
सब मिल आज मनाओ, जयंती है गुरु की ।।टेर।।
मन्त्री जिल्हागर–कुल मण्डन,
माता जैतसिरी के है नन्दन ।
खरतरगच्छ श्रृंगार । जयन्ती० ।।१।।
जन्मभूमि समियाणा धन धन,
तेरह सौ सैंतीस में पावन ।
ओस–वंश अवतारी । जयन्ती० ।।२।।
लाखों जन को जैन बनाया,

सत्य अहिंसा को समझाया ।
गुरु है महा चमत्कारी । जयन्ती० ।।३।।

तेरह सौ नव्यासी संवत्सर।
फागुन वदी अमावस गुरुवर ।
देराउर स्वर्ग मझारी ।। जयन्ती०।।४।।

मालपुरे गुरु परचा पूरे,
सुवरण यत्न से सब दुःख चूरे ।
बुद्धि "विचक्षण" धारी ।। जयन्ती०।।५।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

२८५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – मैं वन की चिड़िया बन कर)

मैं कुशलसूरि गुरु चरणे शीश झुकाऊं रे,
कर दर्शन श्री गुरुदेव के, आनन्द पाऊँ रे ।।टेर।।

गुरु जैतसिरि के नन्दा, काटो कर्मों का फन्दा,
भव पाश–पाश कर नाश–नाश, मै और कुछ नहीं चाहूँ रे ।
शीश झुकाऊँ रे ।। मैं०१।।

कर्मों ने डाला घेरा, लूटा आतम धन मेरा ।
पूरण प्रताप हर दुःख ताप, कीर्ति गुरु तेरी गाऊँ,
शीश झुकाऊँ रे ।। मैं०२।।

लाखों को जैन बनाया. अहिंसा ध्वज फहराया ।
मै चाहूँ चरण तुम दुःख हरण, दुःख जनम मरण का मिटाऊँ,
शीश झुकाऊँ रे ।। मैं०३।।

संवत तेरह नव्यासी, गुरु बने स्वर्ग के वासी ।
फागुन का मास अमावस खास, देराऊर मै गुरु ध्याऊँ,
शीश झुकाऊँ रे ।। मैं०४।।

हम भटक–भटक भव हारे, अब आये शरण तिहारे ।
गुरु तार–तार कर पार–पार, सविनय यह विनय सुनाऊँ,

शीश झुकाऊँ रे ।। मै०५।।

गुरु मालपुरे में राजे, कीर्ति तेरी जग गाजे।
है यह अरदास "विचक्षण" प्यास को यतन से बुझाऊँ,
शीश झुकाऊँ रे ।।मै०६।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

२८६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–सीता माता की गोदी में)

श्री जिनकुशल सूरीश्वर गुरु दर्शन दीजिए जी ।।टेर।।
मेरी बहुत दिनों की आशा, लग रही तुम दर्शन की प्यासा ।
हो गई आज सफल अभिलाषा ।।दर्शन०१।।
अगणित गुण शक्ति है तेरी, वांछा पूरण करदो मेरी ।
झटपट दूर करो भव फेरी ।।दर्शन०२।।
मंत्री जिल्हागर कुल उजियाला, पाया विश्व प्रेम का प्याला
माता जैतसिरि के लाला ।।दर्शन०३।।
गुरुवर तुम हो महा उपकारी, लाखों जन हैं हम आभारी ।
मै भी करुणा चाहूँ तुम्हारी ।।दर्शन०४।।
फागुन अमावस शुभ आई, मालपुरे जयन्ती मनाई ।
तेरी कीर्ति जग में छाई ।।दर्शन०५।।
यत्न से गुरु तुम द्वार आया, अनुपम दर्शन तेरा पाया ।
सुवरण मण्डल साथ में आया ।।दर्शन०६।।
"कोमल" तुम चरणों की सेवा, दीजे शिवपुर का शुद्ध मेवा ।
और न मांगू कुछ गुरुदेवा ।।दर्शन० ७।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

२८७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–तुम्हें नाथ नैया तिरानी पडेगी)

हे कुशल करण गुरु कुशल सुरीन्दा । हे कुशल०।।टेर।।
मालपुरे में यशमय मंदिर,

हाजिर हजूर हैं गुरु राजिन्दा ।। हे कुशल०१।।
परतिख परचा पूरे सद्गुरु,
नाश करें कलिमल दुःख द्वंद्वा ।। हे कुशल०२।।
जिल्हागर मंत्री कुल दीपक
माता जयतश्री के है नन्दा ।। हे कुशल०३।।
तुम बिन शरण नहीं मेरे,
रक्षक तुम बिन कौन मुनिन्दा ।। हे कुशल०४।।
सुखसागर भगवान त्रैलोक्य में,
हरि पूजित दे परमानन्दा ।। हे कुशल०५।।
त्रिनव निधीन्दु मिगसर सुद सुवरण,
वन्दे "विचक्षण" पद अरविन्दा ।। हे कुशल०६।।

विजय रचित

२८८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–विगडी बनाने वाले – विगडी बनादे)

अब तो कुशल गुरु दरश दिखादे–दरश दिखादे,
भवसागर से नईया तिरादे ।।टेर।।
संसार समुद्र विच डोल रहा हूँ, चाहे डुबादे चाहे तिरादे ।अ०१।
सब कर्मो ने घेर लिया है, इनसे दयानिधि फन्द छुडादे ।।अ०२।।
सेवक 'विजय' अर्ज करत है,चरणों के पास मुझ को वुलाले।।अ०३।।

विजय रचित

२८९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–उड उड रे म्हारा काला रे कागला लोक गीत)

सुनो सुनोजी म्हारा, कुशलसूरि दादा,
मनड़ा की बात, म्हारी थे जाणो ।।
यो मन म्हारी , एक न माने, विषयों में ही आनंद जाने
मनड़ा ने थे ही समझाओ, दादा । मनड़ा० ।।१।।
भव सागर में नाव पड़ी है, वीच भंवर में उलझ रही है।

उलझी ने थे, सुलझाओ, दादा। मनड़ा की० ॥२॥
साथी संगाती, सारां ने देख्या, भीड़ पडी जब, दूर सरक्या ।
म्हारे तो थे ही, आडा आया । दादा. मनडा की० ॥३॥
'विजय' की छे, याही अर्जी, अरजी पर थांकी, चाहूं मरजी।
आवागमन, मिटाओ, दादा । मनड़ा की० ॥४॥

विद्याविशाल रचित

२९०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी—नागर नन्दजी के लाल रास रमता मोरी अच्छ नई ए)

बलिहारी तोरे नांम मोरी अरज सुणो, अरज सुणो हो दादा अरज सुणो।
केसर चन्दन घोल कपूर, पगलां पूजां दुख जावे दूर ।ब.१।
भाव धरी भेटे गुरु पाय, दिन दिन तेहनें दौलत थाय ।ब.२।
सुरतरु ने सुरकुम्भ समान, दादोजी आपे वंछित दान ।ब.३।
बांकी रे वेला विषमी ठाम, सांनिधकारी साचो सांम ।व.४।
सद्‌गुरु ना सुण ए अवदात, जग सहू आवे जात ।व.५।
कलियुग मांहे कुशल सूरिंद, साचो साहिब सुखकंद ।ब.६।
खरतर नायक सुरसाल, गुण गावे मुनि 'विद्याविशाल' ।ब.७।

विद्याहेमगणि रचित

२९१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(रस १८६८)

(राग जयतसिरी)

सहाई मेरे श्री जिन कुशल गुरु ।टेर॥
कुशल करण कलि मांहे प्रगट्यो, खरतरगच्छ वरु ॥स०॥१॥
बावनो चन्दन मृगमद भेली, पूजो प्रेम भरु ॥स०॥
चिन्ता चूरण विघन विडारण, दालिद्र दूर हरु ।स०॥२॥
दिन दिन साहिब चढते बाने, ध्यावे ध्यान धरु ॥स०॥
वाजे जेहना जशना वाजा, ठावी ठामें जरु ॥स०॥३॥
संवत् अठारसै में अडसट्ठे, मिगसर मास थिरु ॥स०॥

संघ सहित श्री सद्गुरु भेटे, श्री जिनहर्ष सरु ।।स०।।४।।
गाम गडाले चरण नमन्ता, तूठो कल्पतरु ।।स०।।
पाठक श्री 'विद्याहेम' गणि ने, उदय रतन्न करु ।।स०।।५।।

वाचक विनयमेरु गणि रचित

२९२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–मल्हार)

श्री जिनकुशल सूरीसरु जी हो, खरतर गच्छ नउ इंद ।
मन वंछित सुख पूरवइ जी हो, जेसलमेरु गिरिंद ।१।
कुशल गुरु प्रणमुं मन हि उल्लास, पूरि हमारी आस ।
तुझ दरसण पातक टलइ जी हो, लाभइ लील विलास ।कु०२।
श्री जिनचन्द पाटोधरु जी हो, मन्त्रि जिल्हागर नन्द ।
जयतसिरि उरि हंसलउ जी हो, सेवइ सुर नर वृन्द ।कु०३।
तुं साहिब साचउ सही जी हो, चिन्तामणि तरुराज ।
हुं छुं सेवक ताहरउ जी हो, पूरउ वंछित काज ।कु०४।
केसरि चन्दन घसि करी जी हो, मेल्ही मांहि घनसार ।
पूंनिम पूंनिम पूजीयइ जी हो, भरिय पुण्य भंडार ।कु०५।
भाव धरि मनि आपणइ जी हो, करियइ प्रदक्षिण सार।
च्यारे लोगस उजोगरे जी हो, चिन्तवइ चित्त मझारि ।कु०६।
नेउज प्रमुख पूजीयइ जी हो, गीत गान सुविचार ।
'विनयमेरु' प्रभु सानिधइ जी हो, दिन दिन सुख जयकार ।कु०७।

महो. विनयसागर रचित

२९३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तेरे कूचे में अरमानों की दुनियां ले के आया हूं)

कुशल गुरु जैन शासन के, सितारे हो सितारे हो ।
कुशलकर्ता असुख हर्ता, चांद के से उजारे हो ।कु.१।
सताया कर्म दैत्यों ने, बनाया दीन दुखी मोहिं ।
जानता हूँ गरीबनिवाज, तुम ही मेरे रक्षक हो ।कु.२।

यही मै जानकर गुरुवर, पड़ा हूँ तेरी छाया में ।
निभालो इस अभागी को, मेरे तुम ही खिवैया हो ।कु०३।
न कोई और है मेरा, दादा तुम जानते ही हो।
नीचे भूमि ऊपर है गगन, मेरे तुम ही सहारे हो ।कु०४।
हजारों भक्तों के दिल के, मनोरथ पूर्ण करते हो ।
हृदय में भक्ति रखता हूँ, मेरे नयनों के तारे हो ।कु०५।

विनयहर्ष रचित

२९४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–लाऊल)

सखी री गुरु की सेवा कीजइ ।
श्री जिनकुशलसूरि सुजस निधि, निसि वासर प्रणमीजइ ।स०१।
जेल्हा नन्द जयतसरी माता, सुरतरु एष कहीजइ ।
संकट तिमिर हरण तरणि तेरे, नाम मन्त्र समरीजइ ।स०२।
ठउरि ठउरि सुगुरु जी की महिमा, जागति गुण गाईजइ ।
जिनचन्द्रसूरि पाटि तिलकवर, 'विनयहरख' सुख दीजई ।स०३।

विनीताश्री रचित

२९५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–वीरा–वीरा मैं पुकारु)

कुशल कारक कुशल गुरु की, हो अहर्निश वन्दना ।
विनती स्वीकारो मेरी, दूर करो भव फंदना ।।टेर।।
मंत्री जिल्हागर कुलाम्बर, के हो शरद् चन्द्रमा ।
जैन शासन कमल के, पूरण प्रकाशक अर्यमा । कुशल०१।
त्यागी वीरागी बन गुरुवर, रहते निशदिन घ्यान में,
सर्वस्व अर्पण किया गुरु ने, जैन धर्मोत्थान में ।।कुशल०२।
मालपुरा में पाया दर्शन, हरि पूज्य श्री गुरुराज का ।
आनन्द मंगलमय सदा, समरन करो सरताज का ।। कुशल०४।
पुण्य से सुवरण शरण, पाकर करूँ यह प्रार्थना ।

बुद्धि विचक्षण दे 'विनीता,' की हरो भव फंदना ।।कुशल०५।।

शशिप्रभाश्री रचित

२९६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–छोड़ गये बालम०)

करो कुशल गुरुदेव नैया को अब पार करो ।
करो दादा गुरुदेव, इतना सा उपकार करो ।
भरो दादा गुरुदेव ! भक्तों के भण्डार भरो ।।स्थायी।।
नालस्थान में आप विराजो, कुशल कुशल दातार ।
दादा गुरु प्रत्यक्ष प्रभावी, जाने सब संसार ।।करो०१।।
भक्त जनों को वांछित देते, हरते तीनों ताप ।
ऐसे त्राता और न जग में, जैसे है गुरु आप ।करो०२।
जब-जब भीड़ पड़ी गुरु मुझ पर, तब तव किया उद्धार ।
अब के विषम परिस्थिति है गुरु, सुन लो मेरी पुकार । करो०३।
मेरे इष्टदेव हो स्वामी, नित्य तुम्हें ही ध्याऊँ ।
दो ऐसा वरदान हे दादा, सिद्धि सफलता पाऊँ ।करो०३।
अज्ञान-तिमिर को दूर हटा दो, करो सुबुद्धि विकास।
आत्मज्ञान की चाबी देदो, "शशि" की यह अरदास ।करो०५।

शशिप्रभाश्री रचित

२९७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–मोहन हमारे मधुवन में)

गुरुवर हमारी प्रार्थना स्वीकार कर लेना,
दादा हमारी नाव को, अव पार कर देना ।।स्थायी।।
आप ही माता–पिता सर्वस्व आप हो,
आप ही दाता और त्राता भ्राता आप हो ।
खेवइया बनकर संकट से तो उद्धार कर देना ।।दादा०१।।
आप बिन दूजा नहीं संसार में मेरा,
दीन–बन्धु है मुझे एक आसरा तेरा,

उपकारी है आप यह उपकार कर देना ।। दादा०२।।
मै दीन हूँ बलहीन हूँ, भक्ति विहीन हूँ,
जानूँ नहीं कुछ और मैं चरणों में लीन हूँ,
"शशि" है तुम्हारी कुशल गुरु अब सार कर लेना ।। दादा०३।।

शशिप्रभाश्री रचित

२९८. जिनकुशलसूरि स्तवन

जैनशासन ताज हो! श्री कुशल गुरुराज हो, महिमा जगविख्यात ।
शरणागत प्रतिपाल हो! दादा देव दयाल हो, करने हम प्रतिपाल।
जयतश्री नन्दन तुम्हारा कीर्तिध्वज लहरा रहा,
आओ चरण की शरण लो यों बार-बार बुला रहा ।
और न ऐसा देव है,सुर मनुज करते सेव है,पूजते दिन रात।।१।।
आप सन्त शिरोमणी थे, त्याग तप अनुत्तर रहा,
सुरगुरु से भी सुयश तव गुरु नही जाता कहा ।
क्षुद्रतम हम दास है,एक तुम्हारी आस है,दरस दो साक्षात ।।२।।
आपके इस जगत में, गुरुदेव भक्त अनेक है,
माता पिता रक्षक हमारे, आप ही बस एक है।
"शशि" विनय अवधारिये, कष्ट दूर निवारिये,
तारिये जगतात ! जैनशासन०।।३।।

शशिप्रभाश्री रचित

२९९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज-सावन का महीना)

दादा के चरणों में आये है हम आज ।
संकट दूर करो गुरु अब तो, राखो हमारी लाज ।।स्थायी।।
कुशल गुरु तुम नाम की माला, सचमुच है यह मंगलमाला ।
हो प्रत्यक्ष प्रभावी खरतरगच्छ सिरताज ।। संकट०१।।
भक्तजनों की विपदा हरते, वाँछित सबके पूरण करते ।
हम भक्त है तुम्हारे अब पूरो इच्छित काज ।। संकट०२।।

दादा तुम्हारी महिमा भारी, शरण में आये पूरो आस हमारी ।
हो सज्जनो से पूजित 'शशि' के गुरुराज ।। संकट०३।।

शशिप्रभाश्री रचित

३००. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–चांदसी महबूबा हो तुम)

दादा श्री जिनकुशल गुरु री, महिमा वरणी न जावे है ।
दादा गुरु रे दर्शन ने आ दुनियाँ दौड़ी आवे है ।। स्थायी।।
देश–देश में दादावाडी, दत्त कुशल गुरु दादा री।
मालपुरे में जागृत ज्योति, कुशल सूरीश्वर दादा री ।
संकट चूरण वांछित पूरण, प्रत्यक्ष परचा बतावे है । दादा०१।
केशर चन्दन मृगमद घोली, भरी कचोली लावे है,
हार्दिक भाव भक्तिपूर्वक, बरगां री आंगी रचावे है,
पुष्प सुगन्धी माला गूँथी, चरणां रे ऊपर चढावे है । दादो०२।
सोमवार पूनम रे दिन पूजन आवे नरनारी है,
थाली भर–भर मोदक पेडा, भेट धरे भक्तिधारी है,
अष्टप्रकारी पूजा करने मनवांछित फल पावे है । दादो० ३।
पुण्योदय से दर्शन थाँरो, कुशल गुरु अब पायो है,
"सज्जन" री नैया तारण रो, शुभ अवसर यो आयो है,
"शशि" हे बाला आप री दादा नित–नित गुण थॉरा गावे है ।
दादा गुरु रे दर्शन ने आ दुनियाँ दौड़ी आवे है ।।दादा गुरुरे०४।।

शशिप्रभाश्री रचित

३०१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – बड़ी देर भई नन्दलाला)

मेरी नाव करो भवपारी, मै आयी शरण तुम्हारी ।
बार–बार विनति मै करती, सुनलो करुणाधारी रे ।। स्थायी ।।
जब जब आये संकट हम पर, तब तब तुम्हें पुकारा,
करुणा करके झटपट आकर संकट दूर निवारा ।

आओ आओ देर न लाओ, कुशल गुरु अवतारी रे ।।मेरी०१।।
नाम कुशल है काम कुशल है, अकुशल मेरा हर दो,
करुणा कर मेरे मानस की, चिन्ता दूर कर दो ।
चिन्तामणि और कामकुम्भ नहीं, तुमसा जग हितकारी रे ।।मेरी०२।।
मैं हूँ चरण सेविका तेरी, नहीं और ध्याऊँ,
तेरे ही पदपंकज की मधुकरी तुम्हें ही गाऊँ ।
अब के है गुरुदेव! परीक्षा 'शशि' कीं नही तुम्हारी रे।।मेरी०३।।

शिवचन्द्रोपाध्याय रचित

३०२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(मोरा भोला गुरु रे, पाणी मीतर दे तीन चलू, ए देशी)

दादा कुशल सुरींद, तुम दरसण तै परमाणंद ।दा०।
नित तेरे प्रभु पद अरविंद, वंदे राव राणा ना वृंद ।दा०।१।
तुम दरसण से मुझ मन जोर, हर्ष लहै जिम चंद चकोर ।दा०।
विरुद निसुणि जिम जलधर मोर,मुझ मन नाचत जिहा वन मोर ।दा०।२।
तरणि डूबती जलधि मझार, ते तारी निज गुण संभार ।दा०।
वांछित पूरण अतिह उदार,कलि में गुरु सुरमणि अवतार।दा०।३।
तो सम सुर नही दीनदयाल, तुम हो सरणागत प्रतिपाल ।दा०।
तुम सुमरण ते लहैय विसाल, सेवकजन नित मगलमाल ।दा०।४।
अजीमगंजपुर मे सुखदाय, थुम्भ विराजै सहु मन भाय ।दा०।
श्री जिनहर्षसुरिंद सुपसाय, दरस लह्यो 'शिवचंद' सुहाय ।।दा०।५।।

शिवचन्द्रोपाध्याय रचित

३०३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – होरी)

वलिहारी हूँ कुशल सूरीसर की बलिहारी ।। टेर ।।
सेवक जन मन वांछित पूरण, सुरगवि सुरमणि सुरतरु की।।व०।।१।।
सकट विकट तिमिर भय हरने, तरुण तेज वासरकर की।। व०।।२।।
जिनशासन नित नित उजवालन, श्री जिनचन्द पटोधर की ।।व०।।३।।

सुन्दर खरतर गण गगनांगण, वर'शिवचन्द्र'शोभन कर की।।ब०।।४।।

शिवचन्द्रोपाध्याय रचित

३०४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – प्रभाती)

श्री जिनकुशल सूरीसर सद्गुरु,तुम दरशण बलिहारी।।श्री०।।टेर।।
मन वांछित पूरण इन कलि में, गुरु सुरतुरु अवतारी ।।
करुणानिधि जलनिधि ते तरणी, करुणा कर निस्तारी।।श्री०१।।
तुम हो त्रिदश शिरोमणी साहिब, तुम सहु जग उपगारी ।।
भगते सहु नरपति नित वन्दे, तुम पद कज मनुहारी।।श्री०।।२।।
अति विखमी अटवी ग्रीषम में, तप तरसित कूँ निहारी ।।
जलदायक निज विरुद संभारी, जल पावे सुखकारी ।।श्री०।।३।।
तुम समर्या खेचर अरुव्यन्तर, शाकिनी भय अतिभारी ।।
मिट जावे सहु तिमिर पुलावे, जिम दीठां तिमिरारी ।।श्री०।।४।।
पालीपुर गुरु थुंभ विराजे, संघ उदय जयकारी ।।
शिरनामी 'शिवचन्द'इम जंपे,वारी जाऊं वार हजारी ।।श्री०।।५।।

प्र. सज्जनश्री रचित

३०५. जिनकुशलसूरि स्तवन

अब तो दर्शन दो गुरुदेव चरणों में चाकर कब के खड़े ।।टेर।।
जय जय कुशलसूरि तुम जगमें, कुशल-करण गुरुदेव।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत्ति दाता, दर्शन दो स्वयमेव ।।चरणों०१।।
इस कलियुग में प्रत्यक्ष प्रभावी, तुमसा नहीं कोई और ।
तुम भक्तों के सदा सहायक, सन्तों के सिरमौर ।।चरणों०२।।
शरणागत की लज्जा रख लो, पूरो वांछित आस ।
'सज्जन'की गुरु चरणकमल में,बस यह ही अरदास ।।चरणों०३।।

प्र. सज्जनश्री रचित

३०६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – जाओ जाओ नेमि पिया)

आओ आओ दादा गुरु दर्श दिखाओ रे,
दर्शन प्यासी अँखियाँ प्यास बुझाओ रे ।।स्थायी।।
पुण्य उदय आया मानव भव पाया,
दर्शन नहीं पाया अब दिखलाओ रे ।।१।।
प्रमाद ने आन घेरा, कोई नहीं रक्षक मेरा,
एक भरोसा तेरा देर न लगाओ रे ।।२।।
सुप्त दशा है मेरी, शरण ग्रही मै तेरी,
चेतना की फूँको भेरी आत्म जगाओ रे ।।३।।
अधम अज्ञानी जानी, मत करो आनाकानी,
तुम्हारा न जग में सानी, आन बचाओ रे ।।४।।
कुशल कुशल करो संकट दूर करो,
'सज्जन' सिर कर धरो अपनी बनाओ रे ।।५।।
प्र. सज्जनश्री रचित

३०७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–जिया बेकरार है)

कुशल कुशल–दातार हैं, भक्तों के आधार है,
कोई निराश न जावे ऐसा, दादा का दरबार है ।। स्थायी।।
कुशलसूरि गुरुदेव आपकी , कीर्ति जग विख्यात है,
इस कलियुग में अद्‌भुत ज्योति, प्रकट रही साक्षात है,
खरतरगच्छ श्रृंगार है, महिमा अपरम्पार है । कोई०१।
गुरु चरणों की पूजा करने लाखों पुजारी आते है,
केशर चन्दन पुष्प सुगन्धी, नैवेद्यादि चढाते है,
पढते पूजा पाठ है, वाद्य–यन्त्रों का ठाठ है । कोई०२।
जैन अजैन सभी आते है, दादा तेरे द्वार पर,
मनोकामना पूरी होती, पेडे लाते थाल भर,
कुछ ऐसा चमत्कार है, सब करते नमस्कार है । कोई०३।
ज्ञान मण्डली चरण शरण में, विनति लेकर आई है,

'सज्जन' ने गुरु चरणों में, अपनी अरदास सुनाई है,
पूजा की बहार है, जयन्ती जय जयकार है ।कोई०४।

प्र. सज्जनश्री रचित

३०८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – काफी)

गुरुजी अब होली सो होली, हरदम काहे की होली ।।स्थायी।।
मोह अज्ञान और काम क्रोध की, मिल दुष्टों की टोली ।
बहुत काल से कर रहे मेरे, आत्म गुणों की होली ।१।
पुण्य उदय कुछ आया मेरा, देह मिली अनमोली ।
कुशल करण तुम हो सद्गुरु अब, भर दो मेरी झोली ।२।
मातपिता बन्धु तुम मेरे, बात हृदय की खोली ।
मैं हूँ बालक आपका स्वामी, पर नही करता ठठोली ।३।
आओ संकट दूर करो अब, न करो टालम–टोली,
गुरु चरणों में 'सज्जन' ने यह, विनति हार्दिक वोली ।४।

प्र. सज्जनश्री रचित

३१६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–मारवाडी कुर्जा)

दादा सा म्हाँने दर्शन दीजो हो राज,
सद्गुरु म्हांने दर्शन दीजो हो राज ।।स्थायी।।
गुरु दर्शन की आस में, दौड़ी आई आज ।
चरण शरण मुझ दीजिये, गुरु तुम हो गरीबनिवाज ।दा.१।
कुशलसूरि दादा विश्व में, थांरी कीर्ति गावे नरनार ।
परचा पूरण साँचो देव तूँ, मैं हाजिर खड़ी दरवार ।दा.२।
मालपुरा में जागती थारी ज्योति अपरम्पार ।
यात्री आवें देश–देश रा, थांरी पूजा रचावे सुखकार ।दा.३।
केशर चन्दन मृगनाभिजा, वर घनसार मिलाय।
अर्चे चर्चे प्रेम सूँ कोई, भाव भक्ति मन लाय ।दा.४।

पुष्प गुलाब और केवडा, चम्पो चमेली रायबेल ।
अंग रचना करे मन मोहनी, सुरभित इत्र फुलेल ।दा.५।
सांचे मन से समरण करें, सफल हुए मन आस ।
दासी 'सज्जन' चरण माँ में, कोई आयी करे अरदास ।दा.६।

प्र.सज्जनश्री रचित

३१०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–मेरे साहिब आदि जिनन्द)

मेरे दादा कुशल सूरीन्द्र सद्गुरु तेरी महिमा तीन भुवन में।।टेर।।
मालपुरा में अद्भुत ज्योति, चमके ज्यों भानु गगन में ।१।
कुशल सूरीश्वर प्रत्यक्ष प्रभावी, श्रद्धा ऐसी जन–मन में ।२।
दूर–दूर से यात्री आते, भक्ति भरे मन सदन मे ।३।
स्वर्ग जयन्ति महोत्सव होता, अमावस फागुन में ।४।
कुशल गुरु हे कुशल के दाता, संकट हरे इक छिन में ।५।
ज्ञान मण्डली शरण में आयी, लीन हुई चरण में ।६।
'सज्जन' की विनति है यही, रहो नित स्वान्त सदन में ।७।

सत्यरत्न रचित

३११. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – देव श्री)

आज करो रे उच्छाह श्री जिनकुशल सूरिन्द आगे ।।टेर।।
या आछी वेला ने ओ आछो दाव,इन आछी वेला क्यू करो लाज।।१।।
विविध प्रकार पूजो मन रंग, हिल मिल गावो साजन सग।।आ०।।२।।
धूप दीप करो नैवेद्य सार, फूलवारीनो नहीं जिहा पार ।।आ०।।३।।
अक्षत श्रीफल ढोवे जेह, पुत्र कलत्र पामें संपदा तेह ।।आ०।।४।।
सुर नरनारी उभा कर जोड, कोण करे म्हारे दादाजी नी होड। ।आ०५।।
श्री खरतर गच्छपति सिरदार, रावल राणा सेवे इकतार ।।आ०।।६।।
जर करो श्री गुरुराज,कुशलसूरीन्द गुरु गरीवनिवाज।।आ०७।।
उछरंग, 'सत्यरत्न' मन ज्ञान उमंग ।।आ०।।८।।

'सज्जन' ने गुरु चरणों में, अपनी अरदास सुनाई है,
पूजा की बहार है, जयन्ती जय जयकार है ।कोई०४।

प्र. सज्जनश्री रचित

३०८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – काफी)

गुरुजी अब होली सो होली, हरदम काहे की होली ।।स्थायी।।
मोह अज्ञान और काम क्रोध की, मिल दुष्टों की टोली ।
बहुत काल से कर रहे मेरे, आत्म गुणों की होली ।१।
पुण्य उदय कुछ आया मेरा, देह मिली अनमोली ।
कुशल करण तुम हो सद्गुरु अब, भर दो मेरी झोली ।२।
मातपिता बन्धु तुम मेरे, बात हृदय की खोली ।
मैं हूँ बालक आपका स्वामी, पर नही करता ठठोली ।३।
आओ संकट दूर करो अब, न करो टालम–टोली,
गुरु चरणों में 'सज्जन' ने यह, विनति हार्दिक वोली ।४।

प्र. सज्जनश्री रचित

३१६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–मारवाडी कुर्जा)

दादा सा म्हाँने दर्शन दीजो हो राज,
सद्गुरु म्हांने दर्शन दीजो हो राज ।।स्थायी।।
गुरु दर्शन की आस में, दौड़ी आई आज ।
चरण शरण मुझ दीजिये, गुरु तुम हो गरीबनिवाज ।दा.१।
कुशलसूरि दादा विश्व में, थांरी कीर्ति गावे नरनार ।
परचा पूरण साँचो देव तूँ, मैं हाजिर खड़ी दरवार ।दा.२।
मालपुरा में जागती थारी ज्योति अपरम्पार ।
यात्री आवें देश–देश रा, थांरी पूजा रचावे सुखकार ।दा.३।
केशर चन्दन मृगनाभिजा, वर घनसार मिलाय।
अर्चे चर्चे प्रेम सूँ कोई, भाव भक्ति मन लाय ।दा.४।

पुष्प गुलाब और केवडा, चम्पो चमेली रायबेल ।
अंग रचना करे मन मोहनी, सुरभित इत्र फुलेल ।दा.५।
सांचे मन से समरण करें, सफल हुए मन आस ।
दासी 'सज्जन' चरण माँ में, कोई आयी करे अरदास ।दा.६।

प्र.सज्जनश्री रचित

३१०. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–मेरे साहिब आदि जिनन्द)

मेरे दादा कुशल सूरीन्द्र सद्गुरु तेरी महिमा तीन भुवन में।।टेर।।
मालपुरा में अद्भुत ज्योति, चमके ज्यों भानु गगन में ।१।
कुशल सूरीश्वर प्रत्यक्ष प्रभावी, श्रद्धा ऐसी जन–मन में ।२।
दूर–दूर से यात्री आते, भक्ति भरे मन सदन मे ।३।
स्वर्ग जयन्ति महोत्सव होता, अमावस फागुन में ।४।
कुशल गुरु हे कुशल के दाता, संकट हरे इक छिन में ।५।
ज्ञान मण्डली शरण में आयी, लीन हुई चरण में ।६।
'सज्जन' की विनति है यही, रहो नित स्वान्त सदन में ।७।

सत्यरत्न रचित

३११. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – देव श्री)

आज करो रे उच्छाह श्री जिनकुशल सूरिन्द आगे ।।टेर।।
या आछी वेला ने ओ आछो दाव,इन आछी वेला क्यूं करो लाज।।१।।
विविध प्रकार पूजो मन रंग, हिल मिल गावो साजन सग।।आ०।।२।।
धूप दीप करो नैवेद्य सार, फूलवारीनो नहीं जिहां पार ।।आ०।।३।।
अक्षत श्रीफल ढोवे जेह, पुत्र कलत्र पामें संपदा तेह ।।आ०।।४।।
सुर नरनारी उभा कर जोड, कोण करे म्हारे दादाजी नी होड। ।आ०५।।
श्री खरतर गच्छपति सिरदार, रावल राणा सेवे इकतार ।।आ०।।६।।
महिर नजर करो श्री गुरुराज,कुशलसूरीन्द गुरु गरीवनिवाज।।आ०७।।
श्री जिनहर्ष उछरंग, 'सत्यरत्न' मन ज्ञान उमंग ।।आ०।।८।।

सत्यरत्न रचित

३१२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–जंगलो झींझोटी)

आज मांनु दरसण द्यो जी महाराज । प्र०।
सेवक जन पर महर निजर भर,कुशल करो सब काज।।आ०१।।
जे भवि ध्यावै सो फल पावै, पूरण ऋद्धि सिद्धि राज ।
'सत्यरतन' जिनकुशलसूरीसर, ईश्वर त्रिभुवनराज ।आ०२।

सत्यरत्न रचित

३१३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – कैरवो)

कुशल सूरीन्द गुरु पूजो भवि हित सूं ।। कुशल० ।।
केशर चन्दन कपूर अरगजा, भाव धरी करो पूजा हित सूं ।
मोगरा लाल गुलाब मालती,मन शुद्ध माल करो भवि रुचि सूं।।कु.१।
अशरण शरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो आतम चित्त सूं।।
सेवक जन प्रतिपाल जगत गुरु,आशा पूरे गुरु घणुं दत्त सूं ।।कु०२।।
ध्यान सुधारे ज्ञान वधारे, रूप रंग देवे चित्त हित मति सूं ।।
कुशलसूरिन्द गुरु सानिधकारी, परतिख परचा पूरे सत सूं ।।कु०३।।
जय जय जय गुरुदेव हमारे, आराध्यां सुख देवो निज मन सूं ।।
श्री जिनहर्ष सदा सुविलासी, 'सत्यरत्न' सुख एही छत सूं ।।कु०।।४।।

सत्यरत्न रचित

३१४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–कल्याण)

कुशलसूरिंद सुखकारि भाव धरी, भविजन गुरु सेवो ।कु०।
रिधि सिधि दायक सुर नर नायक, परम पुरुष उपकारी ।
सुरतरु सम महिमा जग सोहे, भीडभंजण अतिभारी ।कु०१।
परतिख परचा जग सहु पूरे, सहु जन मन हितकारी ।
'सत्यरतन' ए गुरु समरण से, लहीये ज्ञान भण्डारी ।कु०२।

सत्यरत्न रचित

३१५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–कल्याण, जेत कल्याण)

कुशल सूरिन्दा गुरु कुशल सूरिन्दा ।
गुरु दरसण होय सहज आनन्दा ।कु०१।
ज्योतीय रूपी तेज दिणंदा, गुरु मुख पूनिम चन्दा ।कु०२।
सुर नर मुनिजन असुर सुरिन्दा, दोनुं कर जोड़ी अरज करन्दा।कु०३।
मिल मिल जात्री सेव करन्दा, गुरु के चरणें पाय पडंदा ।कु०४।
श्री जिनहर्ष करो अधिक आनंदा, 'सत्यरतन' मन परमानन्दा ।कु०५।

सत्यरत्न रचित

३२३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – केदारा–कहरवो)

गणधर सेवो गुरु कुशलसूरि ।।गण०।।टेर।।
अमल विमल शशि मुख छबि सोहे,
निरख निरख नैना हरख भरी ।।गण०।।१।।
नयण कमलदल अधिक विराजे,झलहल भाण ज्यूं भाल धरी।।गण०२।।
नाशा दीप शिखा ज्यूं सुरंगी, लाल प्रवाली अधर परी ।।गण०।। ३।।
गुरु के विरुद को पार न पावे,जो ध्यावे वांकी धन्य घरी।।गण०।।४।।
श्री जिनहर्ष लहे सुख संपत, 'सत्यरत्न' दुःख दूर हरी ।।गण०।।५।।

सत्यरत्न रचित

३१७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–सोरठ)

दरसण दीजे राज, सद्गुरु दरसण दीजे राज ।
सेवक ऊभा वीनवे जी कांई अरज सुनो जी महाराज ।स०१।
सुरतरु सम जस गहगह्यो जी, कांई सारो वंछित काज।
महिमा मोटी ताहरी जी, कांई छाजेहडां सिरताज ।स०२।
फूल चमेली मोगरा जी, कांई भविजन ल्यावै हित काज।

पूजे सद्गुरु भाव सूं जी, कांई पामे रिद्ध समाज ।स०३।
तुमें हमारा साहिबा जी, अमे सेवक तुम काज।
निस दिन महिर निहालिये जी, कांई कुशल गरीबनिवाज ।स०४।
बीकानेरे सोभतां जी, कांई खरतर-पति गुरुराज ।
श्री जिनहर्ष गुरु मन वस्या जी, कांई 'सत्यरतन' मांगे राज ।स.५।

सत्यरत्न रचित

३१८. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग—वेलाउल, इम पूजा भगते करी, एहनी)

भाव भगति धरी पूजतां, श्रावक शुभ ध्यांन ।
कुशलसूरिन्द गुरु अरचीये, लहीये परमनिधान ।१।
परम दयाल परमेस, गुरु ज्ञानी गुणवंत।
ऐसे गुरु महाराज कुं, सेवो धरि रुचिवन्त ।२।
अड विध थाल विसाल ले, मन में धरीय उमंग ।
विविध प्रकार पूजा करो, निर्मल जल भरि गंग ।३।
बहुविध भावो भावना, गावो गुरु गुण राग ।
इणविध गुरु पूजा करे, तेहना मोटा भाग ।४।
'सत्यरतन' गुरु इण कलैं, समता रस ना धांम।
कुशलसूरिन्द सूरीसरु, पूरो मुझ मन काम ।५।

सत्यरत्न रचित

३१९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – बगालो घाटो)

मैं निरख्यां गुरु महाराज छतियां हर्ष भरी ।।मैं०।।टेर।।
अमल अनन्त गुण आगरु रे, समता रसनो धाम ।।
परम परम परमातमा रे, वांछित दायक स्वाम ।।छ०।।१।।
करुणानिधि गुरु दौलती रे, सेवक जन प्रतिपाल ।।
भविजन भक्ते भाव सूँ रे, लावे भर भर थाल ।।छ०।।२।।
केशर चन्दन कुमकुमारे, भरिय कचोली हाथ ।।

पदमण आवे मलपति रे, पूजे सहियर साथ ।।छ०।।३।।
कुशल सूरीश्वर साहिबां रे, श्री जिनचन्द सूरि पाट ।
बलिहारी जिनकुशल नी रे, गाजे घणुं गहगाट ।।छ०।। ४।।
अष्ट सिद्धि सानिध करे रे, सुख सम्पूरण हार ।।
श्री जिनहर्षसूरीश्वरु रे, 'सत्यरत्न' सुखकार ।।छ०।। ५।।

सत्यरत्न रचित

३२०. जिनकुशलसूरि स्तवन

मोतीडे तूठा मे हेली आज म्हांरे है ।मो०।
सुगुण सनेहा साहब मिलिया, करुणासागर मेह ।मो०१।
सरद पूंनिम की चांदणी जी, कांई जात्री आवे अछेह ।
रंग भर पूजे ऊमह्या जी, कांई दिन दिन अधिक सनेह ।मो०२।
लुली लुली लेवे नोंछणां जी, कांई कर जोडी लागे पाय ।
सूहव आवे मलपती जी, कांई हर्ष धरी गुण गाय ।मो०३।
मुझ मन मोह्यो नाम सूं जी, कांई कुशल करो गुरुराज ।
साहिब गरीबनिवाज छो जी, कांई दीजे वंछित काज ।मो०४।
श्री खरतर पति सोभता जी, कांई श्री जिनहर्षसूरीस
'सत्यरतन' गुरु तुम्ह सही जी, प्रणमुं निसि दिन सीस ।मो०५।

सत्यरत्न रचित

३२१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – प्रभाती)

श्री सद्गुरु जिनकुशल सूरीश्वर, साचो नाम धरावे ।।श्री०।।टेर।।
परमानन्द पद परम सुधारस, गुरु पूज्यां घर आवे ।।
गच्छपति राज राजेश्वर साहब, देवो दरशण सुख पावे।। श्री०।।१।।
सेवक जन प्रतिपाल जगत गुरु, जिन शासन उजवाले।।
करुणानिधि करतार परम गुरु, दरशण परतिख आले।।श्री.।।२।।
केशर चन्दन अक्षत कुंकुम, श्रीफल मोदक सोहे ।।
भेट करी गुरु आगल हरखी, पाय परत मन मोहे।।श्री०।।३।।

महियल में विख्यात सकल् गुरु, महिमावन्त सहाई ।।
तिसियां रन में तुम ही पिलाओ, ओपमा अेसी पाई ।।श्री०।।४।।
जिहां जिहां थान विराजे सद्गुरु, तिहां अतुली बल गाजे ।
श्री जिनहर्षसूरि सानिध कर, 'सत्यरतन' सुख काजे ।।श्री०।।५।।

सत्यरत्न रचित

३२२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – प्रभाती)

श्री सद्गुरु महाराज कुशल गुरु, तुम हो पर-उपगारी ।।श्री०।।टेर।।
शिव सुखदायक लायक स्वामी, जिनचन्दसूरि पटधारी ।।
नाम तुम्हारो कुशल कुशल गुरु, करुणा निधि करतारी ।।श्री०।।१।।
वाट घाट घणुं विखमी वारे, समरण कीयां सुखकारी।।
भव भय भांजो दुःख निवारो, नित प्रति रहो हितकारी ।।श्री०।।२।।
प्रति क्षण ध्यान तुम्हारो ध्यावे, पावे ऋद्धि अपारी ।।
तुम ही मात पिता हित-वच्छल,निशदिन याद तुम्हारी ।।श्री।।३।।
केशर चन्दन तगर अगरजा, लावे भर भर नारी ।।
पूज रचावे भक्ति बनावे, गुण गावे अति प्यारी ।।श्री०।। ४।।
नाम लेत गुरु संकट टाले, पाले विरुद सुमारी ।।
श्री जिनहर्षसूरि सुपसाये, 'सत्यरतन' वलिहारी ।।श्री०।।५।।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३२३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–वसन्त)

आज आनंदा हो आज आनंदा ।
भाव भगति परभाते भेट्या, श्री जिनकुशल सूरिंदा ।आ०१।
आरति चिन्ता टालइ अलगी, गुरु मेरो दूर करे दुख दंदा।
जागतो पीठ आवे लोग जातर, नरनारी ना वृन्दा ।आ०२।
साहिब हूँ तोरी करूं सेवा, आठ पहर अरज बंदा ।
'समयसुन्दर' कहइ सानिध करजो, चन्द कुलम्बर चन्दा।आ०३।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३२४. जिनकुशलसूरि स्तवन

आयो आयो जी रे समरंता दादोजी आयो ।।टेर।।
संकट देख सेवक कूं सद्गुरु , देरावर तै धायोजी ।।स०।।१।।
वरसे मेह ने रात अंधेरी, वायु पिण सबलो वायो ।।
पंच नदी हम बैठे बेड़ी, दरिये चित्त डरायो जी ।।स०।। २।।
उच्च भणी पहुंचावण आयो, खरतर संघ सवायो ।
'समयसुन्दर' कहै कुशल कुशल गुरु, परमानन्द सुख पायौ जी ।।स०।।३।।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३२५. पाटन-मंडन जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–मल्हार)

उदय करौ संघ उदय करौ, वीनती करइ श्रीसंघ दादाजी ।उ०।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पदा, द्रव्य भरो भण्डार दादाजी।
मणि माणक मोती बहु, पुत्र कलत्र परिवार दादाजी ।उ०१।
आधि व्याधि आरति चिन्ता, संकट विकट विदार दादाजी ।
दु.ख दोहग दूरइ हरउ, तुम्हे अडवडिया आधार दादाजी ।उ०२।
सद्गुरु समर्या साद द्यउ, सेवकनी करउ सार दादाजी ।
परतिख परता पूरवउ, तुम्हे जागती ज्योत उदार दादाजी ।उ०३।
पूजउ गुरु पगला भला, पूनिम दिन बुधवार दादाजी ।
केसर चन्दन मृगमदा, अगर कुसुम अधिकार दादाजी ।उ०४।
गीत गावे तान मान सुं, मादल ना धोंकार दादाजी।
दान मान आपउ घणा, भावना भावो उदार दादाजी ।उ०५।
श्री जिनकुशल सूरीसरु, मन वंछित दातार दादाजी।
पाटण संघ पूरउ रली,भणै 'समयसुन्दर' सुविचार दादाजी।उ०६।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३२६. नागोर-मंडन जिनकुशलसूरि स्तवन

उल्लट धरि अमे आविया, दादा भेटण तोरा पाय ।
बेकर जोडी वीनं, दादा, आरति दूर गमाय ॥
इण रे जगत्र मइं, नागोर नगीनइं दादो जागतउ ।
भाव भगति सुं भेटतां, भव दुख भागतउ ।इण०१।
को केहनइ को केहनइ, दादा भगत आराधइ देव।
मइं इक तारी आदरी, दादा एक करूं तोरी सेव ।इ०२।
सेवक दुखिया देखतां, दादा साहिब सोभ न होय।
सेवक नइ सुखिया करइ, दादा साचो साहिब सोय ।इ०३।
श्री जिनकुशल सूरीसरु, दादा चिन्ता आरति चूरि ।
'समयसुन्दर' कहइ माहरा, दादा मन वंछित फल पूरि ।इ.४।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३२७. अमरसर-मंडन जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग–मारुणी)

दाखि हो मुझ दरिसण दादा, श्रीजिनकुशल करि सुप्रसादा।
सेवक नइं समरथउ द्यइ सादा, जग सिगलउ जंपइ जसवादा ।दा०१।
असपति गजपति नृपति उदारा, इन्द्र तणा दीसइ अवतारा ।
पुत्र कलत्र अनइ परिवारा, ते सब तेज प्रताप तुम्हारा ।दा०२।
नर नारी आपद निसतारा, अडवडियां नइं तूं आधारा।
परतिख परता पूरणहारा, मनवंछित फल पूरि हमारा ।दा०३।
नयर अमरसर थुम्भ निवेशा, प्रसिद्धि घणी प्रगटी परमेशा।
सेव करइ सद्गुरु सुविशेषा, एह 'समयसुन्दर' उपदेसा ।दा०४।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३२८. जिनकुशलसूरि स्तवन

दादाजी दीजइ दुय चेला ।

एक भणइ एक करइ वेयावच्च, सेवक होत सोहेला ।दा०१।

श्रीजिनकुशलसूरीसर सानिध, आज के काल वहेला ।

'समयसुन्दर' कहइ सीरणी वांटूँ गुन्दवडा गुल भेला ।दा०२।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३२९. अहमदाबाद-मण्डन जिनकुशलसूरि स्तवन

दादो तो चिन्ता चूरइ, दादो परतिख परता पूरइ हो ।दा.१।

दादो तो विछडियां मेलइ, दादो ठीभर दुसमन ठेलइ हो ।दा.२।

दादो तो समर्या आवइ, दादो परघल लक्ष्मी लावइ हो ।३।

दादो तो दुसमण दाटइ, दादो विघन हरै वाट घाटइ हो ।दा०४।

दादो तो साचो जाणइ, दादो बोल ऊपर पिण आणइ हो ।दा०५।

दादो तो हाजरा हजूर, दादो अहमदाबाद पडूरइ हो ।दा०६।

दादो तो कुशल कहावइ,इम 'समयसुन्दर' गुण गावइ हो ।दा०७।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३३०. देरावर-मण्डन जिनकुशलसूरि स्तवन

देरावर दादो दीपतो रे, डिग-मिग कांइ डम डोल रे, जात्रीड़ा ।

परचा दादो पूरबे रे लो, तीरथ को इण तोल रे, जात्रीड़ा ।१।

बोहथ तारे दादो डूबतो रे लो, अडवडियां आधार रे, जात्रीड़ा ।

समर्या दादो साद द्यै रे लो,सेवक अपणां संभाल रे, जात्रीड़ा ।२।

पुत्र पिण आपे अपुत्रियां रे लो, निरधनियां नै धन्न रे,जात्रीड़ा ।

दुखिया ने भाजे दुख सही रे लो, परतिख दादो प्रसन्न रे,जात्रीडा ।३।

चिन्ता चूरे चित्त नी रे लो, ए गुरु अन्तरजामी रे, जात्रीड़ा ।

'समयसुन्दर' कहइ भाव सुं रे लो, नित प्रणमुं सिर नामी रे,जात्रीडा ।४।

कुशल सुगुरु ने नाम गहे हे, रांन वेलाउल होइ ।
झगड़े झांटे रावले हे, गंज न सकै कोई ।म.४।
सद्‌गुरु नो नव धोकीयो हे, पीरी नदी री पाल।
जयतारण में जुगति सुं हे, दीसे अतिही रसाल ।म.५।
आस फली मुझ मन तणी हे, पूज्या सद्‌गुरु पाय।
सुप्रसन हूया सुगुरुजी रे, अवनति न हुवै काय ।म.६।
सद्‌गुरु ने पूठी रखे हे, जयत पताका रे होइ ।
वाचक 'सहजहरख' । म.७।

सुगुण रचित

३३४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – सोरठ)

सद्‌गुरुनी शोभा सवाई ए आज आनन्द वधाई अे ।
श्री जिनकुशल सूरीसर साहिब,वड वखती बरदाई अे ।।स०।।१।।
चन्द पटोधर चावो चिहुँ दिशि, दुनियां में फिरत दुहाई अे ।।स०।।२।।
कनक कचोली केशर घोली, मृगमद मांहि मिलाई अे ।।स०।।३।।
दीप धूप अक्षत फल नैवेद्य, बहुविध पूज वनाई अे ।।स०।।४।।
वाट घाट वलि विखमी वेला, समर्यां होत सहाई अे ।।स०।।५।।
श्री जिनहर्षसुरिन्द गुरु गच्छपति, 'सुगुण' सेवक सुखदाई अे।।स०।।६।।

सुमतिरंग रचित

३३५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – जय जयवन्ती)

मेरी अरज सुनीजे दीजे सुख सम्पदा ।
श्रीजिनकुशलसूरि दुरित करि दूर
हाजर हजूर पूरे नूरे ही जदा तदा ।मे.१।
आराध्यां तुरत आवे धर ध्यांन जेह ध्यावे,
प्यासां कूं भी पाणी पावे विरुद वहे सदा ।मे.२।
बीछडियां वालम मेली मन मान्या मीत मेली,

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३३१. उग्रसेनपुर मण्डन जिनकुशलसूरि स्तवन

पंथी नइं पूछूं वातडी रे, तुमे आया उग्रसेनपुर थी आज रे ।
तिहां दीठा अम्ह गुरु राजीया, श्री जिनकुशलसूरि राज रे ।१।
सुनो नइ गोरी तुम गुरु राजीया,अमे दीठा मारवाड़ मेवाड़ देसरे।
धरम मारग परकास रे, आनंद लील विलास रे ।२।
संघ सह सेवा करई, राय राणा सहु द्यइ मान रे ।
आइ नमइ सहु नर नार रे, महिमा मेरु समान रे ।३।
मेरो अन घणो ऊमह्यो रे, वान्दू मेरे गुरु ना पाय रे ।
समयसुन्दर सेवता रे, श्री जिनकुशलसूरि गुरुराय रे ।४।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३३२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – भैरव)

पाणी पाणी नदी रे नदी, सांनिध करो दादा सदी रे सदी ।पा०१।
ध्यान एक दादेजी रो धरतां,कष्ट न आवइ कदी रे कदी ।पा०२।
'समयसुन्दर' कहै कुशल गुरु, समर्या साद द्यै सदी रे सदी ।पा०३।

सहजहर्ष वाचक रचित

३३३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल – कल्लाली रा मूलजी, गीतमें)

प्रहसम पूजो हरख सुं हे, भाव धरी बहु भेदें ।
गुण गण गावो मन सुधे रे, हीये आणि उम्मेदे ।
भवियण भाव सुं हे, पूजो कुशल सूरिन्द ।
जसु सेवा करता रह हे, सुर नर अधिक आनंद ।१ आंकणी.
दौलत दायक दीपतो रे. दुनियां मे जाको नाम ।
ताको सरण कीजता हे, जग में बाधे मान ।म.२ ।
अटवी विषमे मारगे रे, सिंह करे गुंजार ।
तिण वेला सेवक भणी हे, द्यै सद्गुरु दीदार ।म.३।

वाट घाट रोग सोग चूरे दुख आपदा ।मे.३।
कहत 'सुमतिरंग' अंग धर उच्छंरग,
नव निध सिद्धि पावे गावे गुरु गुण मुदा ।मे.४।

सुमतिरंग रचित

३३६. जिनकुशलसूरि स्तवन

(ढाल–बिन्दली नी)

दादा दरसण दे सुनिजर कीजे,स्वांमी पूरो मनवंछित कामी हो। दा.१।
सुख सम्पति बेल वधारो, साचो परचो छे थांहरो हो ।दा.२।
पूनिम पूनिम पूजो दादा, इण सम देव न दूजो हो ।दा.३।
अमृत हुंती मीठो, दादा को दरसण दीठो हो ।दा.४।
घर घर रंग वधाई, सुगुरु नी सोभ सवाई हो ।दा.५।
मृगनैणी मिलकर आवे, गीत गावे भावन भावे हो ।दा.६।
धूप धाणो अगर उखेवो, श्रावक सद्गुरु नित सेवो हो ।दा.७।
दिन दिन दौलत दाता, सेवक कुं दे सुख साता हो।दा.८।
झिर-झिर झड़ीया लाई, वरसावे मेह सदाई हो ।दा.९।
साची तेरी सकलाई, इम आखे लोक लुगाई हो ।दा.१०।
पूरी आपे प्रभुताई, समरंता होई सहाई हो ।दा ११।
'सुमतिरंग' सुखदाई, गुरु सांनिधि पदवी पाई हो ।दा.१२।

सुवर्ण मण्डल रचित

३३७. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज–रुमझुम वरसे वादरवा)

स्वामी मेरे गुरुदेवा, तुम्हारे शरण में आए ।
दरस दिखादो स्वामी, दरस दिखादो।।टेर।।
जैतसिरि के नन्दन जग रखवारे हो.....वारे०
भक्त अनेकों दुःख सागर से तारे हो..... तारे०
हम को भी तारो रे, अर्ज हमारी मानो,
दुःख मिटाओ स्वामी दुःख मिटाओ ।।स्वामी०१।।

विक्रमपुर के निकट नाल में राजे रे ..... राजे०
कुशलसूरि गुरु महिमा जग में गाजे रे .....गाजे०
धर्म पंथ दिखाओ रे, अर्ज हमारी मानो,
कष्ट मिटाओ स्वामी, कष्ट मिटाओ ।।स्वामी०२।।
फागुन अमावस को स्वर्ग सिधारे हो ..सिधारे०
वीर धर्म के तेजोमय तुम तारे हो ..तारे हो०
दया दिखाओ रे, अर्ज हमारी मानो,
कष्ट मिटाओ स्वामी कष्ट मिटाओ ।।स्वामी०३।।
स्वर्ग जयन्ती को गुरु दर्शन पाए हो... पाए हो०
भक्त अनेकों भक्ति में हर्षाए हो...हर्षाए हो०
'स्वर्ण मण्डल' अपनाओ रे, अर्ज हमारी मानो ।
कष्ट मिटाओ स्वामी, कष्ट मिटाओ ।।स्वामी०४।।

हर्ष रचित

३३८. जिनकुशलसूरि स्तवन

हेली हे सद्गुरु जात मनास्यां, हेली सद्गुरु वेग वधास्यां हे ।
हेली सद्गुरु पूज रचास्यां हे,हेली सद्गुरु गुण जस गास्यां हे।। हे. १।।
हेली सद्गुरु म्हारो बड़भागी हे, हेली सद्गुरु सोभागी है ।
हेली सद्गुरु विरुद वडाला है,हेली सद्गुरु म्हारो रिछपाला हे।। हे.२।।
हेली सद्गुरु निरभय वारे हे, हेली सद्गुरु दुश्मन दाटे हे।।
हेली सद्गुरु म्हारो जशनामी हे, हेली सद्गुरु अन्तरजामी हे।। हे.३।।
हेली सद्गुरु कुशल सूरिन्दा हे, हेली सद्गुरु सेवे सुर वृन्दा है ।।
हेली सद्गुरु म्हारो वरदाई हे,हेली सद्गुरु हर्ष सदाई हे।। हे.४ ।।

हर्षचंद रचित

३३९. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – लूम इकताला)

सद्गुरु करुणानिधान, राखो लाज मोरी ।।स०।।टेर।।
जय जय जिनकुशल सूरि, समरत हाजर हजुर ।।

महकत जिम यश कपूर, महिमा जग तेरी ।।स०।।१।।
जां पर तुम हो दयाल, छिन में करदो निहाल ।।
संकट को चूर देव, दौलत की ढेरी।।स०।।२।।
तुम हो सुरतरु समान, वंछित फल देवो दान।।
सेवक को दीन जान, भेटो भव फेरी ।।स०।।३।।
शरण आये की रखो लाज, वांछित सब पूरो काज ।।
'हर्षचन्द' शरण आयो, कीरति सुण तेरी ।।स०।।४।।

३४०. जिनकुशलसूरि स्तवन

आया रहिजो जी कुशलगुरु आया रहिजो जी ।
हो थाकी देख रह्यों छुं वाट; कुशलगुरु आया ......
वाट देखतां देर हो गई, व्याकुल हुयो शरीर ।
अब तो नाथ पधारो वेगा, म्हाने बंधावो धीर ।कु०१।
दिन नहीं चैन रैन नहीं निंदिया, सदा रहुं बेचेन ।
चरणां रा दर्शन रे ताई, तरस रह्या छे नैन । कुशल ० ।।२।।

३४१. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज—दिल लूटने वाले जादूगर—फिल्म मदारी)

गुरुदेव जगत बोधिदायक, सद्‌मारग आन वताओ हमें
सुख संपदा आतम दबी हुई, कर्मों का बोझ हटावो तुमे ।।टेर।।
अहिंसा सत्य अस्तेय व्रह्मचर्य अपरिग्रह को छोड़ा ।
स्वारथ लोभ कषाय विपय वश मानवता से मुंह मोडा (हां हां हां)
रतन अमोलख मानव भव का भान करावो गुरु हमें ।। गु. १।।
अज्ञान प्रमाद में रचे पचे डौलत हैं इत उत दीन हुऐ।
आतम प्रिय सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र वीर्य तप हीन हुअे (हां)२।
फिर भी तुम भक्ति के मद में हम मस्त उद्धारो गुरु हमें ।। गु.२।।
धर्म प्राण कर्मठ भूमि भारत में भीरुता छाई ।
नास्तिक अरिगण ने जिससे की हिम्मत धर्म नाश ताई (हां हां हां)२।
हे पुरुषसिंह देदो शक्ति नायक निर्भयता के बने ।। गु. ३।।

जेलागर सुत कुलचन्द "कुशल गुरु" छाजेड गोत्र अवतंस हुअे ।
समियाणा भूमि में धन धन रतन अमोलख प्राप्त हुअे (हां हां हा)२ ।
वीर प्रसवनी के "करमण" करो कर्मवीर क्षत्रिय हमें।। गुरु०४।।
सुने विरुद आपके जग यश के है हमने अनेक गुरुजन से ।
सकट मोचन खोलो लोचन हम द्वार खडे है आश से (हां हा हा)२।
गो रत्नत्रयी का दान जिसे मुक्ति सुन्दरियां वरे हमें ।। गु. ५।।
समभाव बन्धुत्व का नाद किया चैत्यवन्दना-कुलक वृत्ति में ।
अनुपम समन्वय दृष्टि के धारक ध्यावो क्षण क्षण में (हा हां हा)२ ।
चारित्र चूडामणि जैतश्री जिनचन्द कुंवर करो पार हमें।। गु. ६।।

३४२. जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – हीरजा की)

गुरुदेव मनावो साची मकलाई दादा देव की ।। टेर ।।
श्री जिनचन्द्र पटोधर साहेव, श्री जिनकुशल मुनीन्दा।।
सुजश प्रगट है थांरो जग गें, जेसे पूनम चन्दाजी ।।गुरु०१।।
अष्ट द्रव्य से पूजा सारुं , तुम देवन के देवा ।।
शरणागत प्रतिपाल जगत में,नित प्रति मागु सेवाजी ।। गुरु०।। २।।
सेवक जन मन वाछित पूरो, चिन्ता चूरो मेरी ।।
अष्ट सिद्धि सुख सम्पत्ति पायो,मैं सेवक हूँ तेरा जी।।गुरु०।।३।।
हृदय कमल मे ध्यान लगावू, और देव नहीं ध्यावूं ।।
पूरण कृपा करो गुरु मुझ पर,जिम वाछित फल पाऊं जी।।गुरु.।। ४।।
सेवक की यह अरज वीनति, अवधारो महाराज ।।
दरशन सद्गुरु वेगा आपो,सिद्ध होय सेवक काज जी।।गुरु०।।५।।

३४३. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र स १८८४)

(देशी – वामा सुत सु मन लागो रे, एहनी)

जिनकुशलसूरिंद गुरुदेवा हो, प्यारी लागै चरणकज सेवा हो ।जि.।

वीनती सुणो वरदाई हो, दीजें दरस सरस सुखदाई हो ।जि.।प्या.।
मरुमंडळ देस में राजै हो,समीयाणो गांम छवि छाजै हो ।जि.।प्या.।१।
जिल्हागर तात विख्याता हो,जसु जैतसिरीजी धन्य माता हो।जि.।प्या.।
तेरे सैंतीसै में जनम्या हो,सैंतालै संजम सिरी रम्या हो।जि.प्या।।२।।
सतहातरै सूरिपद साजै हो, पुर पाटण पाट विराजै हो ।जि. प्या.।
नयासी नवल मती जाणो हो, थिर थाप्यो अमर पद थांणौ हो।जि.प्या.३।।
आज उछव आणंद वधाई हो,गुरु भेट्या कमी नहीं कांई हो।जि. प्या.।
अढारे चउरासी सालै हो,गुरु सोम निजर करि मालै हो।जि प्या ।।४।।
कार्तिक राका शशिवारै हो, जिनहर्षसुरिंद पाउधारै हो ।जि.प्या.।
साधु साध्वी नै श्रावक सगला हो, प्रह ऊठी ने प्रणमै पगला हो।जि.प्या.५।।
दीप धूप अक्षत फल ढोवै हो,गुरु पूज्यां वंछित फल होवै हो।जि.।
सुखसंपति सुगुण संभालै हो,गुरु गाजै छे गाम गडालै हो । जि.।।६।।
विद्या बल बुध्दि विसाला हो,सद्गुरुजी सेवक रखवाला हो । जि.।
श्रीसंघ सकल सुख वासा हो, खास दास नी पूरो आसा हो।जि.।।७।।

३४४. जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग – सारग)

नित नमिये कुशल सूरीन्द जी ।।नि०।।टेर।।
परचा सांचा नवला पूरे, ये देवां सिर इन्द जी ।।नित०।।१।।
अष्ट महाभय विघन निवारै, चिन्ता चूरै मुणीन्द जी ।।नि०।।
सुन्दर सूरत वदन सुहावे, दीठां पूनम चन्द जी ।।नित०।।२।।

३४५. जिनकुशलसूरि स्तवन

(र सं. १८५५)

प्रत्यक्ष दर्शन दीजे दादा प्रत्यक्ष दर्शन दीजे सेवक अपना जान ।।टेर।।
अभिलाषा मुझ लग रही दादा, दो दर्शन कृपाल ।।
इण कलयुग में सुरुतरु सरीखा,देखूँ नयण निहाल ।।दादा० ।।१।।
श्री जिनकुशलसूरि गुरु, खरतर गच्छ आधारी।।
वार वार मैं नमूं चरण में, मनसा पूरो हमारी ।। दादा०।।२।।

भीड पड्यां इण युग में दादा, और न को हितकारी ।।
कर जोड़ करूं ीनति, अपना विरुद संभारी ।। दादा० ।।३।।
ज्यां पर तुम कृपा करी हो, ज्यां ने दर्शन दिया हजूर ।।
इक अवसर मुझ ऊपर दादा,महेर करो भर-पूर ।। दादा०।। ४।।
सम्वत् गुन्नीसे वरष पचावन, आसो शुक्ला सोमवार ।
पंचमी दिन पूरण किया सद्गुरु,मुझ सेवक को तार ।। दादा०५।।

३४६. जिनकुशलसूरि स्तवन

श्री जिनकुशल सूरीसर साहिब, मै तुमची बलिहारी ।
देख दरस आनन्द भयो मेरे, चरण कमल सुखकारी ।श्री.१।
भर दरिये बिच तरण डूबती, सुनिजर कर तुम्ह तारी ।
कलिजुग में गुरु सुरतरु सरिखो, परचा पूरत भारी ।श्री.२।
गांम गांम सब ठांम ठांम मे, चरण थापना मनुहारी ।
फागुन मास में अठाइ महोछव, करत संघ जयकारी ।श्री.३।

जयरंगोपाध्याय रचित

३४७. जिनकुशलसूरि वधाई

जगनायक के आज आनन्द वधैया, गुरु के आज०।
श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब, तुम्ह दरसण सुख पैया ।गु.१।
नर नारी सब मंगल गावे, ठाढे अरज करैया ।गु.२।
सोमवारे पूनिम नित पूजित, सो सब वंछित पैया ।गु.३।
श्रीजिनचंद पटोधर साहिब, कुशलसूरिनाम कहैया ।गु.४।
ऐसे गुरु से जयरंग वाचक, मन वंछित फल पैया ।गु.५।

मुक्तिमोहन रचित

३४८. जिनकुशलसूरि स्तवन

आज की घड़ी म्हारे हर्ष बधाई,गुरु दर्शन पायो सुखदाई ।।आ०।।१।।
गुरु जगनायक वांछित दायक,गुणगणालंकृत सहु मन भाई ।।आ.।।२।।
उत्तम धर्म प्रभाव करीने,जैनी कुल की रीत दिखाई ।।आ०।।३।।
गुरु प्रत्यक्ष सहु संघ सुखदायक,देश देश में प्रगट रहाई ।।आ०

धन दिन आज सफल थयो माहरे,सुरतरु सम मिलियो फलदाई ।। आ०५।
वांछित पूरण संकट चूरण,सहु भवि मात पिता वरदाई ।।आ०।।६।।
कलकत्ता पुर मंडन साहिव,कुशल गुरु का मोहन गुण गाई।।आ०७।।

हर्ष रचित

३४९. जिनकुशलसूरि बधाई

आज आनन्द बधाईयां, कुशल गुरु, आज आनन्द वधाईयां ।
गुरु भेटे महाराज, दादा गुरु आज आनन्द वधाईयां ।।टेर।।
चिन्ताचूरण आशा पूरण, अेहि विरुद धराईयां ।।कृ०।।
दानव मानव सहु कोई पूजत,मन वांछित फल पाईयां ।।कृ०।।१।।
नाम लेत नवनिध सुख पावे, दरशन दुरित पुलाईयां ।।कु०।।
आज की घडीयां सफल भई है,गुरु दर्शन मै पाईयां ।।कु० ।।२।।
ऋद्धि सिद्धि सम्पति दीजे, चरण सेवा सुख दाईयां ।।कु०।।
सेवक कर जोड़ी इम वीनवे,'हरख' हरख गुण गाईयां।।कु०।।३।।

जिनलाभसूरि रचित

३५०. जिनकुशलसूरि आरती

जय जय सद्‌गुरु आरती कीजे, श्री जिनकुशलसूरि समरीजे ।।जय०।।
पहली आरती दादाजी नी कीजे, दुःख दोहग सव दूर हरीजे ।ज.१।
बीजी बीज पडंती वारी, भय वारण तूं ही सुखकारी ।।ज०।।
तीजी परचा पूरण तेरी, दूर हरो सव दुरमति मेरी ।।ज०।।२।।
चौथी मुगल पूत जीवदायक, सुर नर हुकम धरे ज्यूं पायक ।ज०।
पांचमी पंच नदी जिन साधी, संघ सकलनो संकट वारी ।।ज०।।३।।
छठी थांभो वज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी ।ज०।
सातमी चौसठ योगिणी साधी,सूरि मंत्र कर सुर आराधी ।।जय०।।४।।
इण विधि सात आरती कीजे,मन वंछित सुख संपति लीजे।जय०।
'जैनलाभ' खरतर गणधारी,सद्‌गुरु चरण कमल वलिहारी।जय०।।५।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

३५१. जिनकुशलसूरि आरती

जय जय गुरुदेवा, सुखमेवा, ओम् जय जय गुरुदेवा ।।टेर।।
आरति हरणी आरति गुरु की, पावन पद देवा ।।
परम कुशल करणी गुण भरणी, सद्गुरु पद सेवा ।। ओम्०१।।
गुरु दीपक गुरु रवि शशि ज्योति, जगत मे सुख देवा ।
हृदय तिमिर भर दूर निवारे, दिव्य नूर चमकेवा । ओम्०२ ।।
'जिनहरि' पूज्य कुशल गुरु दादा निर्भय समरेवा ।
वांछित पूरे संकट चूरे, सब देवी देवा ।। ओम्०३।।

दयामेरु रचित

३५२. जिनकुशलसूरि आरती

चंद पटोधर कुसल सुरिंदा, वाकूं सेवत होत है परमाणंदा ।च.१।
संघ सकळ संकट तुम चूरो, भक्त जना मन वंछित पूरो ।च.२।
महिमा इक मुख किम कर दाखूं,निस दिन नाम हृदै विचै राखूं।च.३।
जल चंदन वलि पुष्प सुगंधा, दीपा अक्षत नेवज ढोवंता।च.४।
फल अडविध इम आरती कीजे, अरत उपद्रव दूर हरीजै ।च.।५।
मन सुध मंगल आरती भावै, 'दयामेरु' सद्गुरु गुण गावैं ।च.६।

३५३. जिनकुशलसूरि आरती

आरति कीजे कुशल सूरिन्द की,नर भव जनम सफल कर लीजे ।आ १।
भवि विध पूज करो गुरुचरण की,सुनिजर निजर महिर कर कीजे।आ २।
जोगण चौसठि सब मिल आवे, पंच नदी पंच पीर बोलावे ।आ.३।
वीर बावन गुरु चरण नमाया,सहु संघ सकल मे उदय करावे ।आ.४।
सुध मन थी सेवक गुरु ध्यावे,मन वंछित सुख वहितो पाये।आ.५।

३५४. जिनकुशलसूरि आरती

जय जय आरती सत्गुरु तेरी, कर पूरण आशा मन मेरी ।
जिल्हागर गजेन्द्र विख्याता, जयतिश्री वर सद्गुरु माता ।।१।।
संवत तेर सेंतीसे जाया, निव्यासी देव पद पाया ।।२।।

वीर जिनेश्वर चौपन ठामे, श्रीजिनकुशलसूरीश्वर नामे ।।३।।
छाजेहड गोत्रीए कहंदा, पटधारी जिनचन्द मुनीन्दा ।।४।।
कर जोड़ी सेवक गुण गावे, पूजत मन वांछित फल पावे ।।५।।

३५५. कनक सोम रचित
जिन कुशल सूरि स्तवन

मुर पन-मंडल मल उ जी, मद समीयाणउ गाम ।
छाज हडां कुल चांदलउजी, जेप्हागर इजिं नांम । सोमाजी हो ।
सोमाजी मुनिवर मेटिरयइ जी, श्री जिनकुशल सूरिंद ।। १ ।।
जइतश्री घरणी तिह्यणइं जी, जायउ पुत्र रतन्न ।
कुशल नाम सब जग मणइजी, सकल कला पडिपुन्न । सो. २ ।।
तेरह सइंतीसइं समइ जी, जनम हुथउ सुम वेलि ।
गुरु आगल देवांगणउजी, वास दियइ संघ मेलि । सो. ३ ।
श्री जिनचन्द्रसूर दीखियाजी, तेरह सइं सइंतालइं ।
पाटण सतहतईइ समइयइ जी, पाटि थाण्यउ मन भावि । सो.४।
सउ जोयण जिम केवली जी, जाणइ सघली वात ।
निव्यासइ संवच्दरइ जी , कर अणसण दिल सात । सो. ५ ।
सरगि भुवनयति देवता जी, जे समरइ ततकालि । सो. ६ ।
ःराउद थानकि थया जी, थूम अनूप विशाल ।
तिहां थकी गुरू आवीया जी, थूंम तणा रखपाल । सो.७ ।
पावइ नीर निजल थलइ जी, निरघनीयां घन सोड़ि ।
पूत सपूत अपूतियां जी, बंदिया वंघण छोड़ि । सो. ८ ।
संत साठि कराबियउ जी, ठ (? व) हरा गोत्र श्रीगाल ।
छीतर थानसिंघ वंघवइ जी, करय प्रतिष्ठ रसाल । सो. ९ ।
मालपुरा मंडण जयउ जी, श्री जिनकुशल सुयांल ।
'कनकसोम' वन्दन करइजी, सुप्रसन जुगहप्रधान । सो. १० ।

३५६. महेन्द्रप्रभाश्री रचित
जिनकुशलसूरि स्तवन

आया शरण तेरी, आया शरण, गुरुवर जी ओ ऽ ऽ गुरुवरजी ।
मालपुरा ऽ ऽ दर्शन दिखा ऽ ऽ मन की प्यास बुफा,
दादा हितकारी गुरुवर, दादा सुखकारी गुरुवर, दादा गुरु हो ऽ ऽ
माता जय श्री का तू प्यारा, पिता जैल्हागर का दुलारा ।
आज आनन्द हो ऽ ऽ २ जन जन में फैला,छाजे हड गोत्र चमका।
हो दादा गुरुवर हो ऽ ऽ ऽ । १ ।
आत्म त्याग तपोबल चमका,दुनियां में तेरा नाम है फलका ।
संकटहारी हो ऽ ऽ २ तेरी महिमा भारी, तेरी शान निराली ।
हो दादा गुरुवर हो ऽ ऽ ऽ । २ ।
प्रत्यक्ष प्रभावी दादा महिमा है भारी,दर्शन को आवे सव नरनारी।
तन मन से हो ऽ ऽ २ उनका ध्यान लगावे, मनवंछित पावे
हो दादा गुरुवर हो ऽ ऽ ऽ । ३ ।
धन्य धन्य दादा कुशल सूरीश्वर,परचा पूरण तारक गुरुवर।
'महेन्द्रप्रभा' हो ऽ ऽ तेरे चरणे आवे, शत शत शीष फुकावे
हो दादा गुरुवर हो ऽ ऽ ऽ । ४ ।

लक्ष्य पूर्णा श्री रचित
३५७ जिन कुशल सूरि स्तवन

सुण मनवा गुरु को भज ले, भक्ति में मन को रंग ले ।
मानव चेत. अज्ञान में क्यो सो रहा सुण ० ।। १ ।।
काम-क्रोध मोह-माया, यह नश्वर तेरी काया ।
मानव कर्म, मल को क्यां नहीं धो रहा सुण ० ।। २ ।।
न तेरा किसी से नाता, इसमें तू क्यों भरमाता ।
मानव व्यर्थ, में निज जीवन क्यां खो रहा सुण ० ।।३।।
क्यों करता अपना अपना, दुनियां का झूठा सपना।
मानव पापों की गठ्ड़ी क्यों बोघ रहा सुण ० ।। ४ ।।

तू मन से भक्ति का ले, और आतम ज्योति जगा ले।
मानव "लक्ष्यपूर्ण" तेरा हो राह सुण ॥ ५ ॥

लक्ष्यपूर्णाश्री रचित

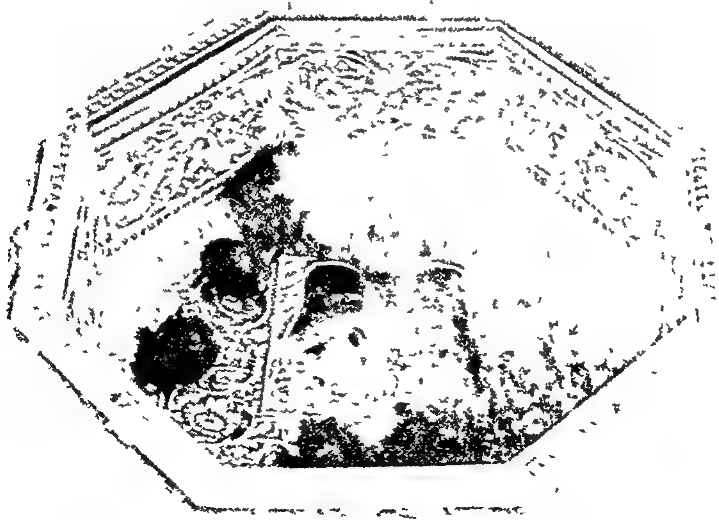
३५६. जिनकुशल सूरि स्तवन.

(तर्ज-जिन्दगी मां केटलु कमाया)

जयंति मनावो कुशल सूरि की, मिल जयंति मनावो
सब मिल मंगल गावो रे, मिल
हाजेहड़ गोत्र में जन्म तुम्हारा,
मंत्री जैल्हागर का है तू प्यारा।
जयतश्री का तू दुलारा रे ऽ ऽ मिल जयंति ० ॥ १ ॥
संसारिक मोहमाया को छोड़कर
अपनी माता को समझा बुझाकर।
परिवार से मुख मोडा रे ऽ ऽ मिल जयंति ० ॥ २ ॥
कर्मण तुम्हारा नाम रखा था,
दस वरप में संयम लिया था।
नाम रखा कुशल कीर्ति रे ऽ ऽ मिल जयंति ० ॥ ३ ॥
वाणी में तेरे अमृत भरा था,
लगता तू सबको प्यारा प्यारा था।
किया जगत का उध्दार रे ऽ ऽ मिल जयंति ० ॥ ४ ॥
जिनचन्द्र सूरि ने मन में विचार कर,
अन्तिम काल को ज्ञान से जानकर।
सूरि पद तुमको दिया रे ऽ ऽ मिल जयंति ॥ ५ ॥
जैन शासन को ऊँचा उठाया,
जीयो और जीने दो पाठ पढाया।
गिरते समाज को थामा रे ऽ ऽ मिल जयंति ० ॥ ६ ॥
फाल्गुन वदी अमावस आई,
दुख की लहर सब संघ में आई।

उदित सूर्य अस्त्र हुआ रे ऽ ऽ मिल जयंति ० ।। ७ ।।
तेरा चमत्कार दुनिया में फैला,
'महेन्द्र प्रभा' ने तेरी महिमा को गाया ।
'लक्ष्य' ने सीस झुकाया रे मिल जयंति ० ।। ८ ।।






चतुर्थ खण्ड

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि

अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि

खरतरगच्छ की परम्परा में चौथे दादा के नाम से विश्रुत युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि के पिता रीहड गोत्रीय साह श्रीवंत थे, जो तिमरीनगर के निकटस्थ बडली गांव में रहते थे। माता श्री सिरियादेवी की कुक्षि से संवत् १५९५ में आपका जन्म हुआ और संवत् १६०४ में केवल ९ वर्ष की अवस्था में ही, पूर्व-पवित्र संस्कारों के द्वारा तीव्र वैराग्य उत्पन्न होने के कारण दीक्षा ग्रहण करली। आपके दीक्षा गुरु श्री जिनमाणिक्यसूरिजी थे। आपका पूर्व नाम सुलतान कुमार था और दीक्षा नाम था सुमतिधीर। आचार्य जिनमाणिक्यसूरि का देराउर से जैसलमेर आते हुये मार्ग में ही स्वर्गवास हो गया था। अत: संवत् १६१२ भाद्रपद शुक्ला १ गुरुवार को जैसलमेर नगर में राउल मालदेव द्वारा कारित नंदिमहोत्सव पूर्वक आपको आचार्य पद प्रदान कर, जिनचन्द्रसूरि नाम प्रख्यात कर श्री जिनमाणिक्यसूरि का पटट्धर गच्छनायक घोपित किया गया। यह काम बेगडगच्छ-खरतरगच्छ की ही एक शाखा के आचार्य श्रीपूज्य गुणप्रभसूरिजी के हाथों से हुआ। उसी दिन रात्रि में श्री जिनमाणिक्यसूरिजी ने प्रकट होकर समवसरण पुस्तक और जिनआम्नाय सहित सूरिमंत्र पट्ट श्री जिनचन्द्रसूरिजी को दिखाया। आपका चित्त संवेग वासना से वासित था। गच्छ में शिथिलाचार देखकर आप सब परिग्रह का त्याग करने मन्त्री संग्रामसिंह तथा मन्त्रीपुत्र कर्मचन्द्र बच्छावत के आग्रह से बीकानेर पधारे। वहां का प्राचीन उपाश्रय शिथिलाचारी यतियों द्वारा रोका हुआ देखकर मंत्री ने अपनी अश्वशाला में ही आपका चातुर्मास कराया और बडी भक्ति प्रदर्शित की। वह स्थान आजकल रांगडी चोक में बड़ा उपाश्रय के नाम से प्रसिद्ध है।

गच्छ में फैले हुए शिथिलाचार को देखकर आप सहम गये।

जिस आत्म-सिद्धि के उद्देश्य से चारित्र-धर्म का वेश ग्रहण किया गया ; उस आदर्श का यथावत् पालन न करना लोकवंचना ही नहीं, अपितु आत्मवंचना भी है। गच्छ का उध्दार करने के लिये गच्छनायक को क्रिया उध्दार करना अनिवार्य है - इत्यादि विचारों के साथ ही आपके हृदय में क्रियोद्वार की प्रबल भावना उत्पन्न हुई । तदनुकूल संवत् १६१४ चैत्र कृष्णा सप्तमी को आपने क्रियोद्वार किया । उसी दिवस प्रथम शिष्य रीहड गोत्रीय पं० सकलचन्द्र गणि की दीक्षा हुई । बीकानेर चातुर्मास के पश्चात् संवत् १६१५ का चातुर्मास महेवा नगर में किया । और, श्री नाकोडा पार्श्वनाथ प्रभु के सानिध्य में छम्मासी तपाराधन किया । तप-जप के प्रभाव से आप में योग शक्तियाँ विकसित होने लगीं।

तदनन्तर स्वसमान सदाचारी स्वधर्मपरायण साधुओं के साथ वहां से विहार करके, मार्ग में स्थान-स्थान पर प्रतिमोत्थापक मत का उच्छेदपूर्वक स्वसमाचारी की दृढता से स्थापना करते हुये क्रम से गुर्जरदेश में आये । वहां अहमदाबाद में ककडी के व्यापारी, जैनेतर कुल में उत्पन्न हुये प्राग्वाट ज्ञाति के शिवा सोमजी नामक दो भाइयों को प्रतिबोध देकर सकुटुम्ब श्रावक बनाया । संवत् १६१७ में पाटण में जिस समय तपागच्छीय प्रखर विद्वान किंतु कदाग्रही उपाध्याय धर्मसागरजी ने गच्छ विद्वेषों का सूत्रपात किया, उस समय आचार्यश्री ने उसको शास्त्रार्थ के लिये आव्हान किया, किन्तु उसके न आने पर तत्कालीन अन्य समस्त गच्छों के आचार्यों के समक्ष धर्मसागरजी को उत्सूत्रवादी घोषित किया । इतने पर भी वह कुचेष्टा से विरत नहीं हुआ । फिर उसके भ्रम को - नवांगी वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरिजी खरतरगच्छ में नहीं हुये - दूर करने के लिये आपने चौरासी गच्छ के आचार्यों के सामने सिद्ध कर दिया कि

श्री अभयदेवसूरि खरतरगच्छीय ही थे ; जो सब ने एकमत होकर, पत्र पर हस्ताक्षर कर स्वीकार किया।

संवत् १६१७ में ही पाटण में आचार्य जिनवल्लभसूरि रचित पौषधविधि प्रकरण पर विस्तृत टीका की रचना की । इस टीका का संशोधन महोपाध्याय पुण्यसागर और उपाध्याय साधुकीर्ति जैसे विद्वान गीतार्थो ने किया था ।

पाटण से विहार कर खम्भात पधारे । संवत् १६१८ का चातुर्मास खम्भात करके १६१९ में अहमदाबाद पधारे । यही मंत्रीश्वर सारंगधर सत्यवादी के साथ आये हुए अभिमानी विद्वान भट्ट की समस्या पूर्ति कर उसे पराजित किया । संवत् १६२० में वीसलनगर और १६२१ का चातुर्मास बीकानेर किया । संवत् १६२२ वैशाख वदि तीज को प्रतिष्ठा कराकर चातुर्मास जैसलमेर किया । १६२३ में खेतासर पधारे और मानसिंह को मिगसर वदि पांचम को दीक्षित किया, इनका नाम महिमराज रखा; जो कि आगे चलकर इन्हीं के पट्टधर जिनसिंहसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुये ।

संवत् १६२४ नाडोलाइ, संवत् १६२५ बापडाउ, संवत् १६२६ बीकानेर, संवत् १६२७ महिम, १६२८ आगरा, संवत् १६२९ रोहतक, संवत् १६३० से १६३२ तक चातुर्मास बीकानेर में किये । संवत् १६३३ में फलौदी पार्श्वनाथ तीर्थ पर विपक्षियों द्वारा लगाये गये तालों को हाथ के स्पर्श मात्र से खोल कर तीर्थ के दर्शन किये । संवत् १६३३ जैसलमेर चातुर्मास कर देरावर पधारे और संवत् १६३४ का चातुर्मास वहीं किया । संवत् १६३५ जैसलमेर, संवत् १६३६ बीकानेर, संवत् १६३७ सेरुणा, संवत् १६३८ बीकानेर, संवत् १६३९ जैसलमेर और संवत् १६४० का चातुर्मास आसनीकोट कर जैसलमेर पधारे । माघ सुदि पांचम को अपने मुख्य शिष्य महिमराज को वाचक पद

से विभूषित किया। संवत् १६४१ पाटण, संवत् १६४२–४३ अहमदाबाद और संवत् १६४४ का चातुर्मास खंभात में कर अहमदाबाद पधारे। इसी वर्ष संघपति सोमजी शाह के संघ सहित शत्रुंजय आदि तीर्थों की यात्रा की। संवत् १६४५ सूरत में चातुर्मास कर संवत् १६४६ में अहमदाबाद पधार और विजयादशमी के दिन हाजा पटेल की पोल में स्थित शिवा सोमजी द्वारा निर्मापित शांतिनाथ जिनालय की बड़ी धूमधाम से प्रतिष्ठा कराई। संवत् १६४७ का चातुर्मास पाटण कर अहमदाबाद होते हुए खम्भात पधारे।

एक समय तत्कालीन सम्राट अकबर के आमंत्रण से आप खम्भात से विहार कर संवत् १६४८ फाल्गुन शुक्ला द्वादशी के दिवस महेपाध्याय जयसोम, वाचनाचार्य कमकसोम, वाचक रत्ननिधान और पं० गुणविनय प्रभृति ३१ साधुओं के परिवार सहित लाहोर पधारे और वहां सम्राट से मिले। स्वकीय उपदेशों मे सम्राट को प्रभावित कर आपने तीर्थो की रक्षा एवं अहिंसा के प्रचार के लिये आषाढी अप्टान्हिका एवं स्तम्भ तीर्थीय जलचर रक्षक आदि कई फरमान प्राप्त किये थे।

एक बार नौरंग खान द्वारा द्वारिका के मंदिरों के विनाश की वार्ता सम्राट ने अपने कश्मीर प्रवास में धर्मगोप्ठी व जीवदया प्रचार के लिए वाचक महिमराज को साथ भेजने की प्रार्थना की। मंत्रीश्वर और श्रावक वर्ग साथ में थे ही अतः सूरिजी ने लाभ जानकर मुनि हर्पविशाल और पंचानन महात्मा आदि के साथ वाचक जी को भी भेजा। मिती श्रावण शुक्ल १३ को प्रथम प्रयाण राजा रामदास की वाडी में हुआ। उस समय सम्राट, सलीम तथा राजा, महाराजा और विद्वानों की एक विशाल सभा एकत्र हुई जिसमें सूरिजी को भी अपनी शिष्य-मण्डली सहित निमंत्रित किया। इस सभा में समयसुन्दरजी ने "राजानो ददते

सौख्यं" वाक्य के १०२२४०७ अर्थ वाला 'अष्टलक्षी' ग्रन्थ पढकर सुनाया। सम्राट ने उसे अपने हाथ में लेकर रचयिता को समर्पित करके प्रमाणीभूत घोषित किया ।

कश्मीर विजय के पश्चात् आपके सामयिक अनन्त चमत्कारों, विशुद्ध गुणों और वैदुष्य को देखकर सम्राट अकबर अत्यन्त प्रभावित हूए और बड़े महोत्सव के साथ संवत् १६४९ फाल्गुन वदि दशमी के दिन अपनें हाथों से जिनचन्द्रसूरि को युगप्रधान पद से अलंकृत किया । इसी दिन महिमराज को आचार्य पद देकर जिनसिंहसूरि नाम रखा और जयसोम एवं रत्ननिधान को उपाध्याय पद तथा पं० गुणविनय व समयसुन्दर को वाचनाचार्य पद से सुशोभित किया । युगप्रधान गुरु के नाम पर इस महोत्सव में महामंत्री कर्मचन्द्र बच्छावत ने एक करोड रुपये व्यय किये थे । सम्राट ने लाहोर में तो अमारी उद्घोषणा की ही, पर सूरिजी के उपदेश से समुद्र के असंख्य जलचर जीवों को भी वर्ष-पर्यन्त अभयदान देने का फरमान जारी किया था । सम्राट अकबर के आग्रह पर सूरिजी ने संवत् १६५२ मे पंच नदी की साधना कर पांचों पीरों को वश में किया था ।

संवत् १६५३ का चातुर्मास जैसलमेर में किया । वहां से अहमदाबाद आकर माघ सुदि दशमी को धना सुथार की पोल में, श्यामला की पोल में और टेमला की पोल में बड़े समारोह पूर्वक प्रतिष्ठाये करवाई । संवत् १६५४ ज्येष्ठ सुदि ग्यारस को मोदी टूंक विमलवसही सभा मण्डप में दादा जिनदत्तसूरि एवं जिनकुशलसूरि की चरण पादुकाएं प्रतिष्ठित की । तत्पश्चात् भिन्न–भिन्न स्थानों में चातुर्मास करते हुए संवत् १६६२ में बीकानेर पधारे और चैत्र वदि सातम के दिन नाहटों की गवाड स्थित शत्रुंजयावतार आदिनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा करवाई । संवत् १६६४ वैशाख सुदि सातम को बीकानेर में पुनः प्रतिष्ठा

७२ । तत्पश्चात् १६६४ का लवेरा, संवत् १६६५ का मेडता, संवत् १६६६ का खम्भात, संवत् १६६७ का अहमदावाद और १६६८ का चातुर्मास पाटण में किया ।

इस समय एक ऐसी घटना हुई जिससे सूरिजी को वृद्धावस्था में भी सत्वर विहार कर आगरा आना पड़ा। वात यह थी कि एक समय सम्राट जहांगीर ने जब सिद्धिचन्द्र नामक व्यक्ति को अन्तःपुर में दूपितं कार्य करते देखकर, कुपित होकर समग्र जैन साधुओं को कैद करने तथा राज्य सीमा से वाहर करने का हुक्म निकाल दिया था तब जैन शासन की रक्षा के निमित्त आचार्यश्री ने वृद्धावस्था में भी आगरा पधार कर सम्राट जहांगीर (जो उनको अपना गुरु मानता था) को समझाकर इस हुक्म को रद्द करवाया ।

संवत् १६६९ का चातुर्मास आगरा में किया और इस चातुर्मास में सूरिजी का सम्राट जहांगीर से अच्छा संपर्क रहा और शाही दरबार में भट्ट को शास्त्रार्थ में पराजित कर सवाई युगप्रधान भट्टारक नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की । चातुर्मास के पश्चात् विहार कर मेडता होते हुए विलाडा पधारे और संवत् १६७० का चातुर्मास वहीं किया । पर्युषण के पश्चात् सूरिजी के शरीर में व्याधि उत्पन्न हुई । उन्होने अपना अंतिम समय निकट जानकर अनशन ग्रहण किया और आश्विन वदि दूज के दिन इस नश्वर देह को त्यागकर स्वर्ग की ओर प्रयाण कर गये । अग्नि-संस्कार के स्थान पर स्तूप बनवाकर आपके चरणों की प्रतिष्ठा की गई । वर्तमान समय में समाज की असावधानी एवं कमजोरी के कारण यह पवित्र स्थान विशाल भूखण्ड के साथ अनधिकृत रूप से मुस्लिम समाज के अधिकार में चला गया है । वहां से प्राचीन चरणों को विलाडा में नवीन दादावाडी का

निर्माण कर स्थापित किये गये हैं ।

महान प्रभावक होने से आप जैन समाज में चौथे दादाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए । आपके चरणपादुका, मूर्तियां जैसलमेर, बीकानेर, मुलतान, खंभात, शत्रुंजय आदि अनेक स्थानों में प्रतिष्ठित हुई । सूरत, पाटण, अहमदाबाद, भरोंच, भाइखला आदि गुजरात में अनेक जगह आपकी स्वर्ग-तिथि "दादा दूज" कहलाती है और दादावाडियों में मेला भरता है ।

सूरिजी का विशाल साधु-साध्वी समुदाय था । उन्होंने ४४ नंदियों में दीक्षायें दी थी, जिससे २००० साधुओं के समुदाय का अनुमान किया जा सकता है। इनके स्वयं के शिष्य ९५ थे । प्रशिष्य समयसुंदरजी जैसों के ४४ शिष्य थे । और, इनके आज्ञानुवर्ती साधु सारे भारत में विचरते थे । उस समय खरतर गच्छ की और भी कई शाखाएं थी जिनके आचार्य व साधु समुदाय सर्वत्र विचरता था साध्वियों की संख्या साधुओं से अधिक होती है अतः समूचे खरतरगच्छ के साधुओं की संख्या उस समय पांच हजार से कम नहीं होगी ।

आप स्वयं गीतार्थ विद्वान थे, आपका शिष्य समुदाय भी असाधारण वैदुष्य का धारक था । आपके धर्म साम्राज्य मे अद्वितीय प्रतिभा संपन्न श्रमणों ने जो साहित्य सेवा की है वह वस्तुतः अभूतपूर्व है । तत्कालीन प्रमुख–प्रमुख विद्वानों के नाम इस प्रकार है :– महोपाध्याय धनराज, महोपाध्याय पुण्यसागर, उपाध्याय साधुकीर्ति, उपाध्याय जयसोम, उपाध्याय ज्ञानविमल, उपाध्याय हीर कलश, उपाध्याय सूरचन्द्र, उपाध्याय श्रीवल्लभ, उपाध्याय समयसुन्दर, उपाध्याय गुणविनय, उपाध्याय कुशललाभ, उपाध्याय सहजकीर्ति, पद्मराज, कनकसोम, चारित्रसिंह आदि ।

हुई । [illegible] १५५० का [illegible], संवत् १६६५ का मेडता, संवत् १६६६ का खम्भात, संवत् १६६७ का अहमदाबाद और १६६८ का चातुर्मास पाटण में किया ।

इस समय एक ऐसी घटना हुई जिससे सूरिजी को वृद्धावस्था में भी सत्वर विहार कर आगरा आना पड़ा। बात यह थी कि एक समय सम्राट जहांगीर ने जब सिद्धिचन्द्र नामक व्यक्ति को अन्तःपुर में दूषित कार्य करते देखकर, कुपित होकर समग्र जैन साधुओं को कैद करने तथा राज्य सीमा से बाहर करने का हुक्म निकाल दिया था तब जैन शासन की रक्षा के निमित्त आचार्यश्री ने वृद्धावस्था में भी आगरा पधार कर सम्राट जहांगीर (जो उनको अपना गुरु मानता था) को समझाकर इस हुक्म को रद्द करवाया ।

संवत् १६६९ का चातुर्मास आगरा में किया और इस चातुर्मास में सूरिजी का सम्राट जहांगीर से अच्छा संपर्क रहा और शाही दरबार में भट्ट को शास्त्रार्थ में पराजित कर सवाई युगप्रधान भट्टारक नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की । चातुर्मास के पश्चात् विहार कर मेडता होते हुए विलाडा पधारे और संवत् १६७० का चातुर्मास वहीं किया । पर्युपण के पश्चात् सूरिजी के शरीर में व्याधि उत्पन्न हुई । उन्होने अपना अंतिम समय निकट जानकर अनशन ग्रहण किया और आश्विन वदि दूज के दिन इस नश्वर देह को त्यागकर स्वर्ग की ओर प्रयाण कर गये । अग्नि-संस्कार के स्थान पर स्तूप बनवाकर आपके चरणों की प्रतिष्ठा की गई । वर्तमान समय में समाज की असावधानी एवं कमजोरी के कारण यह पवित्र स्थान विशाल भूखण्ड के साथ अनधिकृत रूप से मुस्लिम समाज के अधिकार में चला गया है । [illegible] से प्राचीन चरणों को विलाडा में नवीन दादावाडी का

निर्माण कर स्थापित किये गये है ।

महान प्रभावक होने से आप जैन समाज में चौथे दादाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए । आपके चरणपादुका, मूर्तियां जैसलमेर, बीकानेर, मुलतान, खंभात, शत्रुंजय आदि अनेक स्थानों में प्रतिष्ठित हुई । सूरत, पाटण, अहमदाबाद, भरोंच, भाइखला आदि गुजरात में अनेक जगह आपकी स्वर्ग-तिथि "दादा दूज" कहलाती है और दादावाडियों में मेला भरता है ।

सूरिजी का विशाल साधु-साध्वी समुदाय था । उन्होंने ४४ नंदियों में दीक्षायें दी थी, जिससे २००० साधुओं के समुदाय का अनुमान किया जा सकता है। इनके स्वयं के शिष्य ९५ थे । प्रशिष्य समयसुंदरजी जैसों के ४४ शिष्य थे । और, इनके आज्ञानुवर्ती साधु सारे भारत में विचरते थे । उस समय खरतर गच्छ की और भी कई शाखाएं थी जिनके आचार्य व साधु समुदाय सर्वत्र विचरता था साध्वियों की संख्या साधुओं से अधिक होती है अतः समूचे खरतरगच्छ के साधुओं की संख्या उस समय पांच हजार से कम नहीं होगी ।

आप स्वयं गीतार्थ विद्वान थे, आपका शिष्य समुदाय भी असाधारण वैदुप्य का धारक था । आपके धर्म साम्राज्य मे अद्वितीय प्रतिभा संपन्न श्रमणों ने जो साहित्य सेवा की है वह वस्तुतः अभूतपूर्व है । तत्कालीन प्रमुख–प्रमुख विद्वानों के नाम इस प्रकार है :– महोपाध्याय धनराज, महोपाध्याय पुण्यसागर, उपाध्याय साधुकीर्ति, उपाध्याय जयसोम, उपाध्याय ज्ञानविमल, उपाध्याय हीर कलश, उपाध्याय सूरचन्द्र, उपाध्याय श्रीवल्लभ, उपाध्याय समयसुन्दर, उपाध्याय गुणविनय, उपाध्याय कुशललाभ, उपाध्याय सहजकीर्ति, पद्मराज, कनकसोम, चारित्रसिंह आदि ।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

१. यु. जिनचन्द्रसूरि - कपाटलोहश्रृंखलाष्टक

श्रीजिनचन्द्रसूरीणां, जयकुंजरश्रृंखला ।
श्रृंखला धर्मशालायां, चतुरे किमसौ स्थिता ।१।
श्रृंखला धर्मशालायां, वासिनां पापनाशिनाम् ।
शिवसद्मसमारोहे, किमु सोपानसन्तति ।२।
पा पठ्यमानं मुनिभिः प्रकांम ।
श्रुत्वा श्रीपार्श्वनामप्रगुणप्रकाममृस्वंनाथोऽत्र ततः समागात्,
सेवाकृतेहिः किल श्रृंखलाच्छलात् ।३।
वर्यसंयमसुन्दर्याः, केशपाशः किमद्भुतः ।
वरांगस्थितिराभाति, श्रृंखला श्यामलद्युतिः ।४।
कपाटे कृष्णवल्लीव, श्रृंखला शुशुभेतराम् ।
स्थापितेयं महामोह – नागपाशाय नित्यशः ।५।
पापपाशचरातंक – रक्षार्थ साधुमन्दिरे ।
ध्रुवं धर्म मरुद्धेनो – रियं बन्धनश्रृंखला ।६।
महामोहमृगादीनां, पाशपाताय मण्डिता ।
श्रृंखला पाशलेखेव, धर्मशब्दातिघोषणात् ।७।
सर्वतः छेद्यभेद्यादि – भीत्यैषा लोकश्रृंखला ।
धर्मस्थानस्थसाधूनां, शरणं समुपागता ।८।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

२. यु. जिनचन्द्रसूरि अष्टक

एजी सन्तन के मुख वाणी सुणी, जिनचन्द मुणीन्द महन्त जती ।
तप जप्प करइ गुरु गुर्ज्जर में, प्रतिबोधत है भविकुं सुमति ।
तब ही चित्त चाहन चूंप भई, समयसुन्दर के प्रभु गच्छपति।
पठइ पतिसाहि अजब्ब की छाप,बोलाअे गुरु गजराज गति ।।१।।
एजी गुर्ज्जर तें गुरुराज चले, बिच में चउमास जालोर रहै ।

मेदनीतट मंत्रि मंडाण कियो, गुरु नागोर आदर मान लहै ॥
मारवाड़ रिणी गुरु वन्दन कूं, तरसै सरसै विच वेग वहै ।
हरष्यो संघ लाहोर आये गुरु, पतिसाह अकव्वर पांव गहै ॥२॥
एजी साहि अकव्वर वव्वर के, गुरु सूरत देखत ही हरखे ।
हम योगी जति सिद्ध साधुव्रती , सव ही पट दर्शन के निरखे ॥
तप्प जप्प दया धर्म धारण कुं, जग कोई नहीं इनके सरखे ।
समयसुन्दर के प्रभु धन्य गुरु, पतिसाहि अकव्वर जो परखे ॥३॥
एजी अमृत वाणि सुणी सुलतान, ऐसा पतिसाहि हुकम्म किया ।
सव आलम मांहि अमारि पलाय, वोलाय गुरु फरमाण दिया ॥
जग जीव दया धर्म दाखण तें, जिनशासन मइं जु सोभाग लिया ।
समयसुन्दर कहे गुणवन्त गुरु,दृग देखत हरखित होत हिया॥४॥
एजी श्री जी गुरु धम्म गोष्ठ मिले,सुलतान सलेम अरज्ज करी ।
गुरु जीवदया नित चाहत है, चित्त अन्तर प्रीति प्रतीत धरी ॥
कर्मचन्द वुलाय दियो फरमाण छोड़ाई खंभाइत की गच्छरी ।
समयसुन्दर कहइ सव लोकन मइं,जु खरतरगच्छ की ख्याति वरी॥५॥
एजी श्रीजिनदत्त चरित्र सुणी, पतिसाहि भयौ गुरु राजिय रे ।
उमराव सवे कर जोड़ खड़े, पभणों अपनो गुख छाजिय रे॥
युगप्रधान दिये गुरु कुं, गिगड्दूं धूं धूं वाजिय रे ।
समयसुन्दर तूं ही जगत्र गुरु, पतिसाहि अकव्वर गाजिय रे ॥६॥
एजी ज्ञान विज्ञान कला सकल गुण, देख मेरा मन रीझिये जी ।
हूंमायुं को नन्दन एन अक्खे, मानसिंघ पटोधर कीजिये जी॥
पतिसाहि हजूरि थप्यो सिंहसूरि, मंडाण मंत्रीसर कीजिये जी ।
जिनचन्द्र पटे जिनसिंहसूरि, चन्द सूरिज ज्यूं प्रतापीजिये जी ॥७॥
एजी रीहड वंश विभूषण हंस, खरतरगच्छ समुद्र ससी ।
त ओ जिनमाणिक्यसूरि के पाट प्रभाकर ज्यूं प्रणमुं उलसी ।
न शुद्ध अकव्वर मानतू है, जग जाणत है परतीति इसी ।
जिनचंद मुणिंद चिरं प्रतपो, 'समयसुन्दर' देत आसीस इसी ॥८॥

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

३. यु. जिनचन्द्रसूरि छन्द

(आर्या छन्द)

पणमिय पासजिणिंदं , साणंदं मयललोयणाणंदं ।
श्रीजिणचन्दमुणिंदं, थुणामि भो भविय भावेण ।१।
सा धन्ना कयपुण्णा, जणणी जीवम्मि सयललोयम्मि ।
जं कुच्छीए पवरो, उप्पन्नो एरिसो पुत्तो ।२।
जह चंदस्स चकोरा, मोरा मेहस्स दंसणं पवरं ।
इच्छन्ति जस्स गुरुणो, सो सुगुरु आगओ इत्थ ।३।

(छन्द गीता)

सिरिवंत साहि सुतन्न माता सिरियादेवी नंदणो,
वइरागि लहुवय लिद्ध संजम भवियजण आणंदणो ।
सुभ भाव समकित ध्यान समरण पंच श्री परमिट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।४।
श्री जैनमाणिकसूरि सद्गुरु पाटि प्रगट्यउ दिनकरो,
सुविहित खरतरगच्छ नायक धर्म भार धुरन्धरो ।
तप जप सुजयणा जुगति पालइ मात प्रवचन अट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।५।
जसु नयरि जेसलमेरि राउल मालदे महुच्छव किय,
उद्धरि किरिया नयरि विक्कमि वंश सोह चढाविय ।
निरखत दरसण सुगुरु केरउ दूरित दोहग नट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।६।
चारित्र पात्र कठोर किरिया नाण दंसण सोहए,
मुनिराय महियलि मनहि नाणइ माण माया लोहए ।
आरति चिंता सयल चूरइं पूरइं भम इट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।७।

जो चउद विद्या पारगामी समय जण मण मोहए,
अति मधुर देसण अमृतधारा अबुह जिय पडिबोहए ।
कलिकाल गोयमसामि समवडि वयण अमृत मिट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।८।
पुर नयर गामइं ठाम ठामइं गुरु महोच्छव अतिघणा,
कामिनी मंगल गीत गावइं रलिय रंगि वधामणां ।
गुरुराज चरणे रंग लागउ जाणि चोल मजिट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि घन्न नयणे दिट्ठओ ।९।
इक दियइ पाठक पद प्रधानं वलिय वाचक गणिपदं,
इक दियइ दीक्षा सुगुरु शिक्षा एक कुं सुख सम्पदं ।
इक मालरोहण भविय बोहण जाणि सुरतरु तुट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।१०।
इक दिन अकबर भूपति इम भाखइं,मन्त्रीसर कर्मचन्द सु दाखइं।
तुम्ह गुरु सुणियइ गुज्जर खण्डइ,सिद्ध पुरुष सुप्रताप अखण्डइ।११।
वेगि बोलावउ लिखि फरमाणं, आदर अधिक देइ बहुमाणं ।
सुणि जिणचन्दसूरि सुवखाणं, जिम हम जैन धरम पहिछाणं ।१२।
तब मन्त्रीसर वेगि बुलाए, आडम्बर मोटइ गुरु आए ।
नर नारि मन रंगि वधाए, पातिसाहि अकबर मनि भाए ।१३।

(छन्द – गीता)

आवतां आदर अधिक दिद्धउ पातिसाहि परसिद्धओ,
लाहोर नयरि महा महोच्छव सुजस श्रीसंघ लिद्धओ ।
श्रीपूज्य आया हुआ आणंद जाणि जलधर वुट्ठओ ,
सो गुरु श्रीजिणचंदसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ १४।
प्रतिदिवस अकबर साहि पुच्छइ जैन धरम विचारओ,
प्रति बूझवइ गुरु मधुर वाणी दया धरमह सारओ ।
प्राणातिपातादिक महाव्रत रात्रिभोजन छट्ठओ,
ो गुरु श्री जिणचन्दसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।१५।

रंजियउ अकबर साहि बगसइ दिवस सात अमारि के,
वलि मच्छ छोरे नगर खम्भाइत्त दरिया वारि के ।
जो कियहु जुगहप्रधान पद दे सबहि महिं उक्किट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचन्दसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।१६।
जिण जाणि जुगतउं शिष्य जिणसिंघसूरि पाटइ थप्पिओ,
सइं हत्थि आचारिज्ज पद दे सूरिमंत समप्पिओ ।
अवलिया अकबर साह हुकमइ हुयउ सुजस गरिट्ठओ,
सो गुरु श्री जिणचन्दसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।१७।
संग्राम संभ्राम मन्त्रि कर्मचन्द कुलदिवाकर दिप्पिओ,
गुरुराज पद ठवणउ करायउ सवा कोडि समप्पिओ ।
आणंद बरत्या हुया उच्छव वसु मांहि वरिट्ठओ,
सो गुरु श्रीजिणचन्दसूरि धन्न नयणे दिट्ठओ ।१८।

—कलश— (छप्पय)

आज हुआ आनंद आज मन वंछित फलिया,
आज अधिक उछरंग आज दुख दोहग टलिया ।
श्री जिणचंद मुणिंद सूरि खरतरगच्छनायक,
रीहड कुलि सिणगार सार मन वंछित दायक ।
लाहोर नयर उच्छव हुया, चिहुं खंडि जस वित्थारिया ।
कर जोड़ि 'समयसुन्दर' भणइ,श्रीपूज्य भलइं पधारिया।१७।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

४. यु. जिनचन्द्रसूरि छन्द

अवलियउ अकबर तास अंगज सवल साहि सलेम,
सेख अबुल आजम खानखाना मानसिंह सुं प्रेम,
रायसिंघ राजा भीम राउल मूर नये सुरतान ।
बड़ा बड़ा महीयल वयण मानइ देय आदर मान ।
गच्छपति गाइये जी जिनचन्दसूरि मुनि महिराण,
अकबर थापियो जी युगप्रधान गुण जाण । गु. १ ।

काश्मीर काबुल सिन्ध सोरठ मारवाड़ मेवाड़,
गुजरात पूरब गौड दक्षिण समुद्र तट पयलाड़ ।
पुर नगर देश प्रदेश सगले भमइ जेति भांण,
आषाढ मास अमीय वरसे सुगुरु पुण्य प्रमांण । गु.२।
पंच नदी पांचे पीर साध्या खोड़ियउ खेत्रपाल,
जल बहइ जेथ अगाध प्रवहण थांभिया ततकाल ।
किल किता कहूं वखांण,
परसिद्ध अतिशय कला पूरण रीजवण रायांण ।गु.३।
गच्छराज गिरुयो गुणे गाढो गोयमा अवतार,
बड़ वखतवंत बृहत्खरतर गच्छ कौ सिणगार ।
चिरजीवउ चतुरविध संघ सांनिध करइ कोडि कल्याण,
'गणि समयसुन्दर' सुगुरु भेट्या सफल आज विहाण ।गु.४।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

५. यु. जिनचन्द्रसूरि छन्द

सुगुरु जिणचन्द सौभाग्य सखरो लियौ,
चिहुँ दिशैं चन्द्र नामौ सवायौ ।
जैन शासन जिके डोलतौ राखियौ,
साखियौ जगत सगलै कहायौं ।।१।।
अेक दिन पातिशाह आगरे कोपियौ,
दर्शनी अेक आचार चूकौ ।
शहर थी दूरि काढौ सबै सेवडा,
मेवडा हाथ फुरमाण मूक्यौ ।।२।।
आगरैं शहर नागौर अरु मेडतैं,
महिम लाहोर गुजराति मांहै ।
देश दन्दोल सबलौ पड्यौ तिहां किणे,
तुरत ना पंथिया तुंब वाहै ।।३।।
केई परद्वीप मइं चढि गया,

केइ नाशी गया कच्छ देसे ।
केइ लाहोर केइ रह्या भूंहि मां,
दरसनी केइ पाताल पैसे ।।४।।
तिण समय युगप्रधान जगि राजियौ,
श्रीजिनचन्द्र तेजै सवायौ ।
पूज्य अणगार पाटण थकी पांगुर्या,
आगरै पातिसाहि पासि आयौ ।।५।।
तुरत गुरुराय नइ पातिसा तेडिया,
देखि दीदार अति मान दीधा ।
अजब की छाप फुरमाण करि आखिया,
केडला गुनहु सहु माफ कीधा ।।६।।
जैन शासन तणी टेक राखी खरी,
ताहरै आज कोई न तोलै ।
खरतर गच्छ नइं शोभ चाढी खरी,
'समयसुन्दर विरुद सांच बोलै ।।७।।

समयराजोपाध्याय रचित

६. यु. जिनचन्द्रसूरि रास

श्री जिण सासण चिरजयउ, श्री खरतर गणधारो रे ।
श्री जिणचंदसूरीसरु, गाइसुं इणि अधिकारो रे ।।श्री.१।।
सोहम-सामि परंपरा, सूरि अनेक प्रकारो रे ।
चउसठि मइं पाटइ जयउ, जुगप्रधान जयकारो रे ।।श्री.२।।
श्री जिनमाणिक-मुणिवर, पाट उदयगिरि सूरो रे ।
थाप्या राउल मालदे, प्रतपइ पुण्य पंडूरो रे ।।श्री.३।।
नाण चरण गुण निरमला, चंदकुलइ गुरु सोहइ रे ।
देस विदेसइ विहरतां, भवियण नर पडिबोहइ रे ।।श्री.४।।
अनुपम अतिसय गुण भला, श्रवणि सुण्या जिण वारइ रे ।
अकबर साहि नरेसरु, रंज्यउ चित्त मज्झारइ रे ।।श्री.५।।

आदर करि गुजराति थी, वेगइ सुगुरु बोलाया रे ।
गाम नगर पुरि विचरतां, लाभपुरइ गुरु आयारे ।।श्री.६।।
वंदी गुरु देसण सुणी, रंज्यउ अकबर जाणी रे ।
सात दिवस अम्मारि ना, दीधा धरम पिछांणी रे ।।श्री.७।।
जुगप्रधान विरुदइ वर्या, जलचर जीव उगार्‍या रे ।
अउर लाभ वलि धर्म ना,दीधा जस विस्तार्‍या रे।।श्री.८।।
श्री जिणसिंघसूरीसरु, श्री आचारिज कीधारे ।
कर्मचंद मंत्रीसरु, उच्छव करि जस लीधा रे ।।श्री.९।।
अन्न दिवसि मुलताण नउ, संघ घणउ तिहां आइ रे ।
वंदीनइं उच्छव करी, आदर करि बोलावइ रे ।।श्री. १०।।
मंत्रीसर क्रमचंद नइं, संघ सहू अणुसारी रे ।
शुभ शकुनादिक जोईया,लाभ विशेप विचारी रे ।।श्री.११।।
अकबर साहि विदा लही, संघ सहित गुरु चालइ रे ।
सिंधु देस साधण भणी, चोरड अरि पालइ रे ।।श्री.१२।।
पतिसाही तिणि मेवडा, हुकमइं साथइं आवइ रे ।
जिहां जिहां सह गुरु संचरइ,जीव दया वरतावइ रे।।श्री.१३।।
क्रमि क्रमि सह गुरु विचरतां, आया श्री मुलताणइ रे ।
अति उच्छव आडम्वरइ,जय जयकार वखाणइ रे।।श्री.१४।।
पोरवाड नानिग तणा, राजा सीमा रंगइ रे ।
पंच नदी साधण तणी, देई खमासण चंगइ रे ।।श्री.१५।।
सुभ दिवसइ मुलताण थी, पांगुरिया गुरुराया रे ।
संघ सहित हिव अनुक्रमइं, पंच नदी तटि आया रे ।।श्री.१६।।
चंदवेली पत्तन भलइ, ऊतरिया सुभ ठामइ रे ।
गुणरागी श्रावक भला, सावधान गुरु कामइ रे ।।श्री.१७।।
हाजी फते आलमखांन, समाइलदेर रे ।
फतेपुर किहरार ना, उच्च्व मरोट संमेला रे ।।श्री.१८।।

सीतपुरी उबा वडा, घल्लू जज्जै वाहण रे,
जेसलगिरि देराउरा, भरकर भुट्टे वाहण रे ।।श्री.१९।।
पइंचीसां गामां तणा, संघ सहू तिहां मिलिया रे ।
सहगुरु आवइ वांदतां, संघ मनोरथ फलिया रे ।।श्री.२०।।
आंबिल तप जप साधना, करि आतम सुधि सारु रे ।
पूरन विधि सवि साचवी,करि अट्ठम तप वारु रे।।श्री.२१।।
सोलह सइ बावन समइ, माह सुदिइ सुभ मासइ रे ।
बारसि तिथि पुष्यारकइ,सुंदर मन उल्लासइ रे ।।श्री.२२।।
धूप जाप बलि बाकुला, श्रावक सयल करेई रे ।
पाठक वाचक मुणिवरु, श्रावक साथइ लेई रे ।।श्री.२३।।
जपतां निजगुरु देवता, बइठा बेडी मांहे रे ।
बेडी हिव चालती, आई नदी प्रवाहइ रे ।।श्री.२४।।
पंच नदी विच पामिनइं, मंत्र जपइ तिणि वेला रे ।
सूरवीर साहस पणइ, श्रावक साधु समेला रे ।।श्री.२५।।
भीम भयंकर अधरातइ, पंच नदी जल पूरइ रे ।
निरधारी बेडी तिहां, राखी लोक हजूरइ रे ।।श्री.२६।।
पंच पीर तिहां साधीया, पंच नदी ना सामी रे ।
सह गुरु नइं सुप्रसन्न थया,संघ उदय सुखकामी रे ।।श्री.२७।।
तिहां थी बेडी वालि नइ, आया गुरु निज डेरइ रे ।
ढोल दमामा सरणाई, वाजइ सबद घणेरइ रे ।।श्री.२८।।
सद्‌गुरु सवि विधि साचवी, सघला संघ वंदाया रे ।
उच्छव रंग विनय करी,नर नारी य वधाया रे ।।श्री.२९।।
याचक जन संतोषिया, दान घणा तिहां दीया रे ।
साहम्मी-बच्छल करी,लाहणि विधि जस लीया रे।।श्री.३०।।
सुर नर जस कीरति कहइ, जिण सासण जयकारा रे।
उच्छव रंग वधामणा, संघ उदय अधिकारा रे ।।श्री.३१।।
कुशल खेम आनंद सुं, पांगुरि उच्च्व पधारइ रे ।

अधिक महोच्छव अनुदिनइ,संघ करइ धन सारइ रे।।श्री.३२।।
तिहां मुलताण प्रमुख सहू, सिंधु महाजन वलिया रे ।
वंदी गुरु निजि थानकइ,पहुंचइ मन नी रलियां रे।।श्री.३३।।
उच्च थकी गुरु पांगुरी, देराउरि गुरु भेट्या रे ।
श्रीजिनकुशलसूरीसरु, नमतां पातक मेट्या रे ।।श्री.३४।।
देराउर थी पांगुरी, म्राणिकसूरि जुहास्या रे ।
नवहरि देव नमीं करी, जेसलमेरि पधास्या रे ।।श्री.३५।।
संघ सह मिली मन रली, राउल भीम नरिंदो रे।
वंदइ सुह गुरु भाव सुं,अधिक मनइ आणंदो रे ।।श्री.३६।।
अति उच्छव रंगइ करी, आया श्री जिणचंदो रे ।
पास जिणेसर भेटिया, सेवक सुरुतरु कंदो रे ।।श्री.३७।।
श्री जिणमारग उपदिसइ, कुमत कदाग्रह टालइ रे।
जुगप्रधान गुरु राजीयउ,रीहड कुल उजुवालइ रे ।।श्री.३८।।
'समयराज' गुरु मानतां, पुरइ मनह जगीसो रे ।
श्री जिणचंद सूरीसरु, प्रतपउ कोडि बरीसो रे ।।श्री.३९।।

७. यु. जिनचंद्रसूरि सवैया

मसूर पठाण गरव्व कियो, भइ या वाद वदूं कोई पंडित जागे ।
साह सलेम बुलाय श्री पूज्य कुं, मोहि भरोसा चन्दन भागे ।।
भट्ट हार गयो इक चोट सबद्द की,जीत भई यूं जैन के तागे ।।
वाद जीतो जिनचन्द भट्टारक,यूं पतसाह दिल्लीपति आगे ।।१।।
सबे मृग नयण चले गुरु वन्दन, छूट मांनू गजराज घटा ।।
कर कंकण ने उरहार वण्यो, गलमाल बती विच छूट लटा।।
गौरी गावत गीत सुहागण मंगल पूरत मोतिय चोक छटा ।।
भट्टारक तो जिनचन्द भट्टारक, सनमुख जीके वादी हटा ।।२।।

कनकसोमगणि रचित

८. यु. जिनचंद्रसूरि स्तवन

मन धरीय सासण माइ, तूं मुझ करि सुपसाउ ।
मन वच दृढ करि काय, चिदानन्द सुं लय लाय ।
गाइवा श्री गच्छराउ, मुझ उपज्यौ बहु भाउ ।१।
धन धन खरतरगछ मडण, श्री जिनचन्द्रसूरि पय-वंदण ।टेर।
मारवाडि देस उदार, जिहां धरम को विस्तार ।
तिहां खेतसर मंझारि, ओसवंश कउ सिणगार ।
सिरिवंत साह उदार, तसु सिरीयदेवी वार ।धन.२।
सुख विलसतां दिन दिन, पुण्यवंत गरभ उपन्न ।
नव मास जिहां पडिपुन्न, जनमीया पुत्र रतन्न ।
तिहां खरचीया बहु धन्न, सब लोक कहइ धन धन्न ।धन.३।
नाम थापना सुलतान, नितु नितु चढते वान ।
जग मांहे अमली मान, सूरिज तेज समान ।
मतिमंत सब गुण जांण, रूप रंजवइ राय रांण ।धन.४।
तिहां विहरता माणिकसूरि, आविया आनंद पूरि ।
देसणा दिद्ध सनूरि, निसुणइ भवियण भूरि ।
पूरब पुण्य पडूरि, मोहनी कर्म करि चूरि ।धन.५।
सुलताण मनहि विचार, लेइवा संयम भार ।
सुणि मात निज परिवार, यहु अथिर सब संसार ।
अनुमति द्यो सुविचार, हम होहिंगे अणगार ।धन.६।
सुणि पूत तूं सुकुमाल, तेरो नवयौवन सुरसाल ।
यह मदन अति असराल, क्या जाणही तूं बाल ।
आपणि मति संभाल, तब पीछइ चारित्र पाल ।धन.७।
अब निसुणि मोरी मात, ए छोड़ि जूठी बात ।
चारित्र कउ व्याघात, नहु कीजइ कहि तात ।

संजम्म लेइ विख्यात, लइ जु नीकी भांति । धन. ८।
भणिया इम इग्यारह अंग, मन माहि आणि रंग ।
गुरु भालि अतिहि उत्तंग, गुरु रूपि विजित अनंग ।
परवादि वाद अभंग , गुरु वचन गंग तरंग । धन. ए ।
सोलसइ संवत बार, जिनमाणिकसूरि पटधार ।
जिणि सूरिमन्त्र उच्चार, पामीयो पुण्य अवतार ।
सिरिवंत साह मल्हार, सब लोक मानइ कार ।धन.१०।
सुख करउ श्री जिणचंद, सब साधु के रे वृन्द ।
जा लगि रवि ध्रू चन्द, तां लग तूं चिरनन्द ।
कहइ 'कनकमोम' मुणिंद, करउ संघ कूं आनंद ।धन.११।

कमलकल्याण रचित

९. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग – धन्यासिरी मारुणी)

सुगुरु मेरइ चिरि जीवउ चउसाल ।
खम्भायत दरिया की मछली, बोलत बोल रसाल ।सु.१।
भाग हमारइ तिहां जावत हइ, लाभपुरइ भय टाल ।
श्रीजी कुं अइसी अरज करेज्यो, जलचर कूं प्रतिपाल ।सु.२।
एह अरज निसुणी पूज्यां तइ, रंज्यु वर भूपाल ।
हुकम करि नइ छाप पठाइ, हरख्या बाल गोपाल ।सु.३।
युगप्रधान जिनचन्द यतीसर, छइ जसु नाम विशाल ।
शाहि अकबर तसु फरमाइ, तिणि झाड़ायाला जाल ।सु.४।
निश भरि नींद अबइ आवत हइ, मरण तणु भय टाल ।
जय जय जय आशीस दियत हइ, मिलि जीवन की माल।सु.५।
धन धन धीर हुमाऊं कुं नन्दन्, जीवतदान दयाल ।
धन धन श्री खरतर गछ नायक, षट् काया रखवाल ।६।
धन मन्त्री कर्मचन्द बछावत, उद्यम कीउ दरहाल ।
।हब इ साचइ सुप्रसादइ, अलीय विघ्न सब टालि ।सु.७।

धन ते संघ इणइ जे अवसर, परघल खरचइ माल ।
तसु 'कमलकल्याण' नी सम्पद, आपद न हुवइ बाल ।सु.८।

कुशललाभकृत

१०. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग – आसावरी)

पहिलो प्रणमुं प्रथम जिण, आदिनाथ अरिहंत ।
नाभि नरेश्वर कुलतिलक, आपइ सुख अनंत ।।१।।
चक्रवर्ती जे पांचमो, सरणागत साधारि।
शांतिकरण जिन सोलमो, शांतिनाथ सुखकार ।।२।।
ब्रह्मचारी सिर मुकटमणि, यादव वंश जिणिद ।
नेमिनाथ भावइ नमूं, आणी मन आणंद ।।३।।
श्री खंभायत मंडणो, प्रणमुं थंभण पास ।
एक मना आराधतां, पूरइ जन नी आस ।।४।।
शासननायक समरीयइं, वर्द्धमान वर वीर ।
तीर्थंकर चौवीसमो, सोवन वर्ण शरीर ।।५।।
च्यारि तीर्थंकर शाश्वता, विहरमाण जिन वीश ।
त्रिण चोवीशी जिन तणा, नाम जपूं निश्दीस ।।६।।
श्री गौतम गणधर सधर, नमिसुं लब्धिनिधान ।
केवलिकमला करि वशइ, महिमा मेरु समान ।।७।।
समरुं शासनदेवता, प्रणमुं सदगुरु पाय ।
तासु प्रसादे गाइस्युं, श्री खरतरगच्छ राय ।।८।।
सतर भेद संयम धरइ, गिरुआ गुण छत्तीस ।
अधिकी उत्कृष्टी क्रिया, ध्यान धरइ निसदीस ।।९।।
सूयगडांग सूत्रे कह्या, वीर स्तव अधिकार ।
भव समुद्र तारण तरण, वाहण जिम विस्तार ।।१०।।
आ भवसागर सारिखुं, सुख दुख अंत न पार ।
सद्‌गुरु वाहण नी परइ, ऊतारइ भवपार ।।११।।

(राग – सामेरी)

भवसागर समुद्र समान, राग द्वेष वि नेऊ धाण?।
ममता तृष्णा जल पूर, मिथ्यात मगर अति क्रूर ।।१२।।
मोजा ऊँचा अभिमान, विषयादिक वायु समान ।
संसार समुद्र मंझारि, जीव भम्या अनंत वारि ।।१३।।
हिव पुण्य तणइ संयोग, पाम्यो सहगुरु नो योग ।
भवसागर तारण हार, जिन धर्म तणउ आधार ।।१४।।
वाहण नी परि निस्तारइ, जीव दुर्गति पडितो वारइ ।
कालरि जलि किहां न छीपइ,परवादी कोइ न जीपइ।।१५।।
इहनइ तोफान न लागइ, सुखि वायु वहइ वैरागइ।
जल थल सविहुं उपगारइ,भवियण जण हेलां तारइ ।।१६।।

(राग – हुसेनी धन्यासिरी)

श्रीजिनराय नीपाइयउ ए,वाहण समुं जिनधर्म,भविक जन तारवा ए।।१७।।
तारइ तारइ श्रीवंत शाह नो नन्दन वाहण तणी परइ ।
तारइ तारइ सिरियादे नो सुत कि, वाहण सिलामती ए।
तारइ तारइ श्रीपूज्य सुसाधु, श्रीखरतरगच्छ गच्छपति ए ।।आ.।।
अविहड वाहण ए सहीए,सविहुं सुख व्यापार,धर्म धनदायकू ए।।१८।।
तारइ तारइ श्री समकित अति निर्मलो ए ।
पहलउ ते पयठांण, सुमति सूत्रे धर्यो ए ।।१९।।
तारइ तारइ गुण छतीस सोहामणा ए।
बिहू दिसि बांक मंडाण, सुकृत दल मेलिवा ए ।।२०।।
तारइ तारइ कूया थुंभ चारित्र तरणउ ए ।
जयणा जोडी संधि, सबल सढ तप तणउ ए ।।२१।।
तारइ तारइ डबू सो सोभतो ए।
ले मत सुगुरु वखाण,दया गुण दोरडो ए ।।२२।।
तारइ तारइ कलमी ते शुद्धी क्रिया ए,
पुण्य करणी पंतांस, संतोष जलइ भर्यउ ऐ ।।२३।।

तारइ तारइ दशविध धर्म वेडूं गवी ए ।
संवर तेह जना रखि मासरि छत्रडी ए ॥२४॥
तारइ तारइ सतर भेद संयम तणा ए,
ते आउला अपार संवेग सुं पंजरी ए ॥२५॥
तारइ तारइ आज्ञा नालु अणी समो ए ।
पंच समिति परवांण कीर्तिधज जह लहइ ए ॥२६॥
तारइ तारइ विजइ बारह भावना ए ।
दाढा शुभ परिणाम, नागर नवतत्व तणा ए ॥२७॥
तारइ तारइ करुणा कीलइ लेवीउ ए,
ज्ञान निरुपम नीर झोलउ समरस भर्यो ए ॥२८॥
तारइ तारइ शासन नायक हू (कू) यउए,
मालिम श्री गुरुराज कराणि मुनिवरु ए ॥२९॥
तारइ तारइ जिन भाषित मारग वहइ ए,
वाजित्र नाद सिझाय सुसाधु खलासीयए ॥३०॥
तारइ तारइ ए मारग जिनधर्म तणउ ए,
को डोलइ नहीं लगार सदा सुखियां करइए ॥३१॥
तारइ तारइ मल (चा?) बारी ते काठीया ए,
कुमती चोर हीनोर सहु भय टालताए ॥३२॥
तारइ तारइ पुण्य क्रियाणे पूरीया ए,
बहुरति वस्तु अनेक सुजस पाखर खरी ए ॥३३॥
तारइ तारइ कपाय डूंगर जालवहए,
वहतउ ध्यान प्रवाह सिलामति आवीयो ए ॥३४॥

(राग – रामगिरी)

धर्ममारग उपदेशता, करता २ विधइ विहार रे ।
आव्याजी नगर त्रंबावती, श्रीसंघ हर्प अपार रे ॥३५॥
पूज्य आव्या ते आसा फली, श्री खरतरगच्छ गणधार रे ।
श्री जिनचंद्रसूरि वांदीयइ,साथइ साथइ साधु परिवार रे।

आगम सूत्र अर्थे भर्या, सुकृत क्रियाण ते सार रे ।
चारित्र वखारि अति भली,व्रत पचखाण विस्तार रे।।पू.३७।।
वस्त अपूर्व बहुरिवा, मिल्या मिल्या भविक नर-नार रे ।
विनय करि पूज्य नइ वीनवइ,आपउ आपउ वस्तु उदार रे।।पू.३८।।
मोटा मोटा श्रावक श्राविका, करइ मंडाण अनेक रे ।
महोत्सव अधिक प्रभावना,जाणइ जाणइ विनय विवेक रे।।पू.३९।।
ज्ञान दरशण चारित्र तणा, अमोलक रत्न महंत रे ।
पुण्य व्यापारि आवि मिल्या,बहुरतां लाभ अनंत रे।।पू.४०।।
दान गुण मोतीय निर्मला,पंच आचार ते पांच रे ।
दश पचखाण ते कहरवउ,अगर ते शातन वाच रे।।पू.४१।।
सूध ते सद्दहणा खरी, सगुरु सेवा सिकलात रे ।
पात सुरासुर पोसहा, मकमल प्रवचन मात रे ।।पू.४२।।
हीर पेटी महोत्सव घणा, इ श्रा (त्रा?) मी ते सूत्रनी साख रे ।
भाव(जाच)परिवार लिय अति भलो,निवृति ते किसमिस दाख रे।।
श्रीफल श्रीगुरु देशणा, वरश थानिक कमखाव रे ।
नांदि उछव मलयागरउ,पूज्यनी भगति गुलाब रे ।।पू.४४।।
देशविरति ते कचकडउ, चोली (ल) यां ते उपधान रे ।
दांत(न?)शीलांगरथ उजलउ.राती जगु तेह कंताणरे।।पू.४५।।
शीतल सुकडि भावना, स्नात्र ते कपूर बरास रे ।
कतीफउ कल्याणिक जाणीयइ,कंस वण्यो सह उपवास रे ।।पू ४६।।
मासखमण मसझारे समुं (भलुं), लारीते लाख नवकार रे ।
सूत्र ना भेद हीरा खरा, उचित नुं दान दीनार रे।।पू.४७।।
पाखर कमण बरीया विसइ, लवंग ओ (उ) ली विश्वा वीस रे।
नाम आलोयण वाडीया,छठ तप बिसय गुणतीस रे।।पू.४८।।
संसार तारण दु कांबली, चउथो व्रत तेह दस्तार रे ।
अखोड आंबिल निम जाणवी,कल य वेयावच सार रे।।पू.४९।।
०म तप ते टोक (प)रां, अठाही ते सव खजूर रे ।

समवसरण तप ते मिरी,सोपारी सामायिक पूर रे ।।पू.५०।।
लाहिण माल पहिरावणी, उत्तम क्रियाण ते जोइ रे ।
परखीय वस्त जे संग्रही, लाख असंखित होइ रे ।।पू.५१।।
श्री गुरु शासनदेवता, वाहण ना रखवाल रे ।
भगति भणी सानिध करइ,फलइ मनोरथ माल रे ।।पू.५२।।

(राग – केदार गौडी)

दिन दिन महोत्सव अति घणा, श्रीसंघ भगति सुहाइ ।
मन शुद्धि श्रीगुरु सेवीयइ,जिणि वेव्यइ शिवसुख पाइ ।।५३।।
भविक जन वंदो सहगुरु पाय, श्री खरतर गच्छराय ।।आं.।।
प्रभु पाटिए चउवीसमइ, श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि ।
उद्योतकारी अभिनवी, उदयो पुण्य अंकूर ।।५४।।भ.।।
शाह श्रावक भंडारी वीरजी, साह राका नइ गुरुराग ।
वर्द्धमान शाह विनयइ घणो,शाह नागजी अधिक सोभाग।।५५।।भ.।।
शाह वछा शाह पदमसी, देवजी ने जैतशाह ।
श्रावक हरखा हीरजी, भाणजी अधिक उच्छाह ।।५६।।भ.।।
भंडारी माडण नइ भगति घणी, शाह जावड ने घणा भाव ।
शाह मनुआ ने शाह सहजीया,भंडारी अमीउ अधिक उछाह रे ।।५७।।
नित मिलइ श्रावक श्राविका, संभलइ पूज्य वखाण ।
हीयडउ ऊलसइ, एम जीव्यो जन्म प्रमाण ।।५८।।भ.।।
आगह देवी श्री संघनो, पूज्यजी रह्या चउमास ।
धर्मनो मार्ग उपदिसइ, इम पहूंतौ मननी आश ।।५९।।भ.।।
प्रतिमा प्रतिष्ठा थापना, दीक्षा दीयइ गुरुराज ।
इम सफल नर भव तेहनो,जे करइ सुकृत ना काज रे।।६०।।भ.।।

(राग – गुड मल्हार)

आव्यो मास असाढि झबूके दामिनी रे ।
जोवइ जोवइ प्रीयडा वाट सकोमल कामिनी रे ।।
चातक मधुरइ सादिकि प्रीऊ प्रीऊ उचरइ रे ।

वरसइ घण वरसात सजल सरवर भरइ रे ।।६१।।
इण अवसरि श्रीपूज्य महा मोटा जती रे ।
श्रावक ना सुख हेत आया त्रंवावती रे ।
जोवउ २ जम गुरु रीति प्रतीति वधइ वली रे ।
दीक्षारमणी साथ रमइ मननी रली रे ।।६२।।आ.।।
संवेग सुधारस नीर सबल सरवर भर्या रे ।
पंच महाव्रत मित्र संजोइ संचर्या रे ।
उपशम पालि अंतरं तरंग वैरागना रे ।
सुमति गुप्ति वर नारि संजो सौभाग्यना रे ।।६३।।
प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरवर घणा रे,
कोकिल कामिनी गीत गायइ ओ गुरु तणा रे ।
गाजइ गाजइ गगन गंभीर श्री पूज्यनी देशना रे ।
भवियण मोर चकोर थायइ शुभ वासना रे ।।६४।।
सदा गुरु ध्यान स्नान लहरि शीतल वहइ रे ।
कीर्ति सुजस विसाल सकल जग मह महइ रे ।
साते खेत्र सुठाम सुधर्मह नीपजइ रे ।
श्री गुरु पाय प्रसाद सदा सुख संपजइ रे ।।६५।।
सामग्री संयोग सुधर्म सहुइ सुणइ रे ।
फलीया पुण्य व्यापार आचार सुहामणा रे ।
पुण्य सुगाल हवंति मिल्या श्री पूज्यजी रे ।
वाहण आव्या खेति बर वाइहर ? रमजी रे ।।६६।।
जिहां २ श्रीगुरु आण, प्रवर्ते जिह किगइ रे ।
दिन २ अधिक जगीस जो थाइज्यां तिइ किणइ रे ।
ज्यां लग मेरु गिरिन्द गयणि तारा घणा रे ।
तां लगि अविचल राज करउ गुरु अम्ह तणा रे ।।६७।।
परता पूरण पास जिणेसर थंभणउरे ।
श्रीगुरु ना गुण ज्ञानहर्ष भवियण भण्यउ रे ।।

"कुशललाभ" कर जोडि श्रीगुरु पय नमइ रे ।
श्रीपूज्य वाहण गीत सुणतां मन रमइ रे ।।६८।।

गुणविनयोपाध्याय रचित

११. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

राउल श्री भीम इम कहइ जी, जादव वंसि वदीत रे ।
पूजजी पधारो जेसलमेरु नइ जी,प्रीति धरी निज चित्त रे ।रा.१।
वसत बड़ा गुजराति ना जी, पूज्य पधार्या जेथ रे ।
धन धन लोक सहु वलि रे, जेह वसइ छइ तेथ रे ।रा.२।
पूज तणइ जे श्रीमुखइ जी, निसुणइ अमृत वाणि रे ।
सेव करइ गुरुनी शाश्वती रे, तेहनो जन्म प्रमाणि रे ।रा.३।
दिवस घणा विचि वउलिया जी, आवण केरी आस रे ।
हुसि अछइ माहरइ हियइ जी,इहां जइ करउ चउमासि रे ।रा.४।
श्री जेसलगिरि संघ नी जी, अधिक अछइ मन कोड़ि रे ।
गुरुजी चरणइ लागिवा रे, त्रिकरण शुद्ध कर जोड़ि रे ।रा.५।
साधु नी संगति जउ मिलइ रे, तउ पूजइ मन नी आसरे ।
चिन्तामणि करि जउ चढ्यइ रे,तउ चित्त थाइ उल्लास रे ।रा.६।
मुझ मन हरख घणउ अछइ जी, तुम्ह मिलवानुं आज रे ।
तुम्ह आव्यां सवि साध्यस्यां रे,अधिक धरम तणा काज रे ।रा.७।
इहां विलम्ब नवि कीजियइ जी, श्री खरतर गणधार रे ।
श्रीजिनचन्द्र गुण भणइ रे, 'गुणविनय गणि' सुखकार रे ।रा.८।

गुणविनयोपाध्याय रचित

१२. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदउ, सुललित करइ रे वखान ।
युगप्रधान जिन शासनि सोहइ, अकबर शाहु दियउ सन्मान।श्री.१।
गुर्जर मण्डल ते बोलाये, संतन मुखि सुनि जसु गुण गान ।
बहुत पडूरि सुगुरु पाउधारइ, वखत योगि लाहोर सुथान ।श्री.२।
अरथ विचार पूछि सब विध विध, रीझे अकबर सांहि सुजान ।

बहुत बहुत दरशनि मइ देखे, कौन कहुं या सुगुरु समान |श्री.३|
भाग सोभाग अधिक या गुरु कउ,सूरति पाक अमृत सम वानि |
ऐस करइ अकबर अणमांग्ये, सब दुनियां महिं अभयादान |श्री.४|
श्रीजिनमाणिकसूरि पटोधर, रीहडवंश चढावत वांन |
कहइ 'गुणविनय' पूजजी प्रतपउ,खरतर गच्छ उदयाचल भांन|श्री.५|

गुणविनयोपाध्याय रचित

१३. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–सामेरी)

सुगुरु कइ दरसन कइ बलिहारी |
श्री खरतरगच्छ जंगम सुरतरु, जिनचन्द्रसूरि सुखकारी | सु.१||
अकबर शाहि हरख करि कीनउ, युगप्रधान पदधारी |
खम्भायत मइं शाहि हुकम तइं, जलचर जीव उबारी |सु.२|
सात दिवस जिनि सब जीवन की, हिंसा दूर निवारी|
देश देशि फुरमान पढाए, सब जग कुं उपगारी |सु.३|
जिनमाणिकसूरि पाट प्रभाकर, कलि गौतम अवतारी |
कहइ 'गुणविनय' सकल गुण सुन्दर, गावत सब नरनारी |सु.४|

गुलाब रचित

१४. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – घणी घणी घणी खमा रे–कंवर अजमाल ने)

श्री–श्री जिनचन्द सूरि की जय हो, गुण गाऊं सुख पाऊं जी,
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ||टेर||
जि–जिम २ ध्याऊं तिम कर्म खपावूं, नरभव सफल वनाउं जी ||
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ||१||
न–नमें नर नारी महिमा अपारी, भव हारी सुखकारी जी ||
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ||२||
चं–चन्दन केशर पुष्पादिक लावूं, पूज रचावूं हर्पावूं जी ||
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ||३||

द–दयालू कृपालु कुमति विनाशक, सुमति प्रकाशक युगपतिजी ।।
अकबर बोधक सूरिश्वरजी ।।४।।
सू–सूना जंजाल करे मदलोभी, माया त्याग गुरु पाअे जी ।।
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ।।५।।
रि–रिपु काटन हारे,गुरु भक्तों के है प्यारे,केई जीव तारे जी।।
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ।।६।।
की–कीया उपकार दीपाया शासन, डंका अहिंसा बजाया जी ।।
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ।।७।।
ज-जवां पे तुम्हारा नाम,दिल में तुम्हारा ध्यान,तुमरे शरण चित्त लाऊंजी।।
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ।।८।।
य-यही अभिलाप पूरो,दीन"गुलाब"तेरो मुक्ति नगरीया दिखाओजी ।।
अकबर बोधक सूरीश्वरजी ।।९।।

म. चन्द्रप्रभसागर रचित

१५. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – जहाँ डाल डाल पे सोने की)

शेर : चन्द्रसूरि गुरुदेव की, महिमा करूँ बरवान ।
स्वीकारो शत वन्दना, हे जीवन हे प्राण ।
जिसने घनघोर अमावस को, पूनम का चॉद उगाया
श्री चन्द्रसूरि गुरुराया ।
जिस चमत्कारी को श्रद्धावश, अकबर भी शीष नवाया
श्री चन्द्रसूरि गुरुराया ।
जब जाति-पाती के झगड़ो से,मानव भूला मानवता।। गुरुदेव.१।।
जब रक्त-क्रान्ति फैली जग मे और हावी थी दानवता ।
हे मानव! तुम मानवता पूजो, मानव को समझाया ।। श्रीचन्द्र०।।
सावन की बरखा आग बनी, फूलों के दल अंगारे । गुरुदेव-२ ।।
आपस की खींचातानी से, घर-घर मे खीची दिवारे ।
तब गॉव-गॉव और गली गली में,प्रेम का पाठपढाया।।श्रीचन्द्र।०।

तुम गौरव हो जिनधर्म के, तुम ही हो जग के उजियारे।गुरुदेव-३।।
इतिहास के पन्ने तेरी गरिमा, गुरुवर नित्य उचारे ।
जहाँ चरण-कमल से कल्पतरु सम,मिलती शीतल छाया।श्रीचन्द्र०।।
हे ज्योतिपुं! हे मणिमाला, हे कौस्तुभ मुकुट हमारे। गुरुदेव-४।।
सुनलो पुकार मन वीणा की, हे साँसो के इकतारे ।
गुरु-चरण की सेवा करने को,ये 'चन्द्र' शरण में आया।।श्रीचन्द०५।।

जयसोम मुनि रचित

१६. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

सब नमइ चक्रवर्ती जिनचन्दसूरि ।
चतुरविध संघ चतुरंग सेन सजि, वारे विघन अरि दूरि ।स.।
चवद विद्या गुण रतन संग करि, नीकउ निलवट नूरि ।स.१।
पंच महाव्रत महल श्रमण गुण, हइ दरबार हजूरि।
दरसण ज्ञान चरण तिन्ह तीरथ, साधि सकति अरि चूरि ।स.२।
मरुधर गूजर सोरठ मालव, पूरव सिन्ध संपूरि ।
पट खण्ड साधि परम गुरु सानिधि, घुरे सुजस के तूरि ।स.३।
निरमल वंस उदय फुनि पाए, दरसन अंगि अंकूरि ।
मुनि 'जयसोम' वदति जय जय धुनि,सुगुरु सकति भरपूरि।स.४।

जिनहरिसागरसूरि रचित

१७. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – महावीर तुम्हारी मोहन मूरति देखी मन)

जय जय हो चौथे दादा, जग उपकारी श्री गुरुराय ।।टेर।।
पावन पद युगपरधाना, जिन शासन ज्ञान खजाना।।
ज्यों निर्धन पुण्यनिधाना, श्री जिनचन्द्र सूरि गुरुराय ।ज.।।१।।
रीहड वर गोत्र गुणाकर, श्रीवंत पिता धन सुखकर ।।
सिरिया माता सुत भयहर, त्रिभुवन हितकारी गुरुराय ।।ज.२।।
जिनमाणिकसूरि गुरु सेवा, योगीश्वर गुण प्रकटेवा ।।
गावे कीरति जश देवा, अद्भुत जीवन श्री गुरुराय ।।ज.३।।

अकबर गुण महिमा जाने, दर्शन हित विनय विधाने ।।
भेजे जिनको फरमान, दया तणो बोध करें गुरुराय ।।जय.४।।
पतिशाह सलिम प्रतिबोधे, तत् कृत आज्ञा प्रतिशोधे ।।
करें साधु विहार अविरोधे, प्रभावक पूरे श्री गुरुराय ।।जय.५।
गुरुपद-सेवा परभावे, शिवसोम विपुल धन पावे ।।
चउमुख उद्धार करावे, खरतर वसही धन गुरुराय ।।जय.६।।
सुखसागर श्री भगवाना, 'हरि' पूज्य परम गुणवाना।।
चौथे दादा युगपरधाना, श्री जिनचन्द्रसूरि गुरु राय ।। जय.७।।

साध्वी तिलकश्री रचित

१८. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

आंखलड़ी रे दर्शन की मारी प्यासी,
गुरुजी ने कहेजो होजी रे आंखलडी ।
रात ने दीये तारुं नाम जपुं वहाला,
सुणजो रे मारी विनतड़ी रे आंखलड़ी ।।१।।
संसारमां हवे मने नथी गमतुं,
दादागुरुनी प्रीतलड़ी रे आंखलड़ी ।।२।।
जैन दीपक गुरु चन्द्रसूरीश्वर,
धर्मनी वागे वांसलड़ी रे आंखलड़ी ।।३।।
वर्ग जयंती उजवीए आजे,
विकसे मन पांखलड़ी रे आंखलड़ी ।।४।।
जामनगर रुडी ज्ञान शालामां,
सुणी मधुरी वातलड़ी रे आंखलड़ी ।।५।।
संत विचक्षण त्रिभुवन 'तिलक' छो,
दूर करो दुःख रातलड़ी रे आंखलड़ी ।।६।।
विचक्षण मंडल मस्त थई ने,
गुरु गुण गाओ साहेलड़ी रे आंखलड़ी ।।७।।

साध्वी तिलकश्री रचित

१९. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – हुं तने भजु छुं रविवारे)

दादा चन्द्रसूरि गुण गावो, मन वांछित फल शुभ पावो ।
गुरुनी महिमा छे भारी, त्रिभुवनमां जय जयकारी ।
गुरु भक्ति रंग वरसायो, मन० ॥१॥
संकट मोचन बिरुद खरूं आशा पूरण ध्यान धरूं ।
भवजलथी पार लगाओ, मन०॥२॥
मने कर्म रिपुगण मारे छे, अरे आतमने फटकारे छे ।
झट आवो नाथ बचाओ, मन० ॥३॥
गुरु संत विचक्षण यशधारी, मांगु शिवपद सुखकारी ।
कहे 'तिलक' नहीं तरसाओ, मन० ॥४॥

साध्वी तिलकश्री रचित

२०. यु. जिनचनद्रसूरि स्तवन

(राग–नगरी नगरी)

युगप्रधान जिनचन्द्र सूरीश्वर, जय तुमारी जय जय ।
परम प्रभावक शासन दीपक, जय तुमारी जय जय ।
खेतसर नगरी जन्मे गुरुजी, श्रीवंत कुल श्रृंगार हो ।
माता सिरिया कुक्षिरत्ने, प्रगट्यां तेज दिनार हो ।
वंदन करी सहु साथे बोलो, –जय– ॥१॥
अमावसनो चांद उगायो, बकरी भेद बताया हो ।
काजीनी टोपी वश कीनी, शासन डंका बजाया हो ।
अकबर नृप प्रतिबोधक गुरुवर, –जय– ॥२॥
कर्मचंद बच्छावत मंत्री, गुरु महिमा गुणरागी हो ।
शासन काम कर्या बहु भारी, भाग्यदशा अम जागी हो ।
अतिशय मंत्र तपो बलधारी, –जय– ॥३॥
माणक सूरीश्वर पटधारी, संयम खूब दीपाया हो ।

धर्म अहिंसा ध्वज फरकावी, संत विचक्षण गाया हो
दर्शन प्यासी 'तिलक' दुःखहारी, –जय– ॥४॥
साध्वी तिलकश्री रचित

२१. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर गुरुवर दर्शन दीजीयेजी।
माता सिरिया देवी जाया, मंत्री श्रीवंत कुल दीपाया।
खेतसर नगरी जन्म कहाया –दर्शन० ॥१॥
अकबर नृपको धर्म बताया, जग में अहिंसा ध्वज लहराया।
दादा जैन धर्म चमकाया –दर्शन० ॥२॥
हम सब आये शरण तुमारी, गुरुवर सुणजो अर्ज हमारी।
विपदा दूर करो दुःखहारी – दर्शन० ॥३॥
सोलहसो सित्तर आया, बिलाडा में स्वर्ग सिधाया।
नैया पार करो गुरुराया –दर्शन० ॥४॥
पुण्यसे सुवर्ण दर्शन पाया, वंदे विचक्षण हर हो माया।
दासी 'तिलक' गुरु गुण गाया दर्शन दीजियेजी ॥५॥
साध्वी तिलकश्री रचित

२२. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज–तेरी प्यारी)

हे चन्द्रसूरि युगधारी दादा दर्शन दो एक वार – गुरु दादा०।
यह दुःखिया तेरा दास भटकता, कर देना अब पार–गुरु मारा०।
पाप भरी यह काया है, झूठी जग की माया है।
भव में भटकते रोते विलखते, तेरे चरण की छाया है।
आधि उपाधि दूर हटा दो,हे समता भण्डार–गुरु मारा०१।
अकबर को प्रतिबोध दिया, सच्चा धर्म स्वीकार किया।
सत्य अहिंसा प्रेम भाव का, जग में खूब प्रचार किया।
सरल शान्त और तत्व विचारी,संयम का सिणगार-गुरु मारा०२।
भक्तों की नैया पार करी, मेरी वेर क्युं देर करी।

पल पल ध्याऊँ क्षण क्षण समरूं, मानुं मारी धन्य घरी ।
दुःख संकट सब दूर करो गुरु,हे मेरे आधार-गुरु मारा० ३।
सन्त विचक्षण की सेवा, भव भव दे जो गुरुदेवा ।
सौम्य सुशोभित मोहक मुद्रा, सेव करत है सहु देवा ।
कहे 'तिलक' मन मन्दिर आवो, भक्ति की झणकार-गुरु मारा० ४।

पद्मराज गणि रचित

२३. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(ढाल—विक्कम नयरे श्री संघ हरखियो, एहनी)

श्री गोयम गणधर प्रणमी करी, आणी उल्लट अंग ।
गुरु गुण गावन मुझ मन गहगहे, थायइ अति उछरंग ।१।
धन श्री जिनशासन सलहियै, खरतर गच्छ सिणगार ।
युगप्रधान जिनचन्द जतीसरु, गुरु गोयम अवतार ।ध.२।
लाभपुरे जिनधर्म सुणाविनैं, बूझव्यो पातिसाह ।
श्रीगुरु पंच नदीपति साधिवा, कीधा मनहि उछाह ।ध.३।
संघ साथि मुलताण पधारिया, पइसार्यो सविशेष ।
देख हरख्या सवि जन पय नमे, खान मलिक तिम सेख ।ध.४।
ठामि ठामि हुकमइं श्रीशाहि नै, कहतां धर्म विचार ।
अभयदान महियल वरतावतां, संघ उदय जयकार ।ध.५।
आया पंच नदी तट पट्टणई, चन्द्रबेलि अभिधान ।
आंबिल अट्ठम तप गुरु आदरी, वैठा निश्चल ध्यान ।ध.६।
सोलसय बावने वच्छरे, पुष्य सहित रविवार ।
माह धवल वारस तिथि निरमली, शुभ महूरत तिणि वार।ध.७।
बेड़ी पइसी पहुंता जिहां मिलै, पंचनदी भर नीर ।
अधरति निश्चल नाव तिहां रही, ध्यान धरै गुरु धीर ।ध.८।
शील सत्त तप जप पूजा वसै, माणिभद्र प्रमुख सुमन्न ।
यक्ष सहु जिनदत्तसूरि सांनिधै, तेह थया सुप्रसन्न ।ध.९।
प्रह समि गुरुजी पत्तणि आविया, वाज्या जेत्र निसांण ।

ठाम ठाम ना संघ मिल्या घणा, आपै दान सुजाण ।ध.१०।
पोरवाड वंशे परगड़ा, नानिग सुत राजपाल ।
सपरिवार तिहां बहु धन खरचिनै, लीधो यश सुविशाल ।ध.११।
तिहां थी उच्चनगर गुरु आविया, वन्द्या शान्ति जिणंद ।
देरावर प्रणम्या जगदीपता, श्री जिनकुशल मुणिंद ।ध.१२।
हिव तिहां थी मारग विचि आवतां, सुन्दर थुम्भ निवेश ।
पदपंकज जिनमाणिकसूरिना, भेट्या तिणे प्रदेश । ध.१३ ।
नवहर पास जुहारी पधारिया, जेसलमेरु मझार।
फागुण सुदी बीजे सहु हरखीया, राउल संघ अपार ।ध.१४।
श्री जिनचन्द यतीश्वर गुणनिलो, प्रतपो युगप्रधान ।
'पद्मराज' इम पभणइ मन रसइ, दिन दिन वधते वान ।ध.१५।

भद्रमुनि (सहजानन्दधन) रचित

२४. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

चन्द्रसूरि गुरुदेव, दादाजी अद्भुत योगी ।
अद्भुत योगी विभाव वियोगी ।चं. ।
श्रीवन्त शाह सिरियादे दम्पति ना, कुलदीपक वीतरोगी ।दा.१।
राय राणा केई मंत्रीओ पूजे, गच्छपति पद भोगी ।दा.।
अहिंसा रंगे अति रंगायो, अकबर आप प्रसंगी ।दा.२।
आषाढी अट्ठाइ पडह अमारी, अभयदान अभंगी ।दा.।
युगप्रधान पद अकबर थापे, दिव्य स्वरुप अनंगी ।दा.३।
साधु विहार बन्ध कीयो सलीमे, कीधा साधु जेल भंगी ।दा.।
बोध्यो तेने करी संघ तीर्थो नी, रक्षा गौ मच्छादि अंगी ।दा.४।
कडीआ पींचादि जैनो बनाव्या, रत्नत्रयी ना रंगी ।दा.।
'भद्र' श्रमण बे हजारो मुकी ने, नाथ थया सुर संगी ।दा.५।

रत्नतिलक कवि रचित

२५. यु. जिनचन्द्रसूरि (निर्वाण) स्तवन

सरस वचन दीय सरसती, कुशल करि कुशल कल्याण रे ।

युगपवर सुगुरु गुण गावतां, हरखीया सहु राय राण रे । स.१॥
जिनदत्त विरुद उजवालीयउ, जंगम युगपरधान रे ।
श्री जिनचन्द्र-सूरीश्वरु, दरसण तिलक समांण रे । स.२ ॥
ईति नइ मारि तिहां कणि नहीं, डम्मर कहि वलिय दुकाल रे ।
समर संकट सहु भय टलइ, सकल गुण जाण रसाल रे । स.३ ।
अकबर साह लाहोर मइं, थापिया युगपरधान रे ।
उछव करमचंद तिहां करइ, हाथी दियइ गुरु नाम रे । स.४।
गाम बगसीस नव दीपता, हेतूयां हयवर सय पंच रे ।
दान सवा कोड इक दिन दियइ,पुण्य अनन्त तिहां संच रे ।
स.५।
सनमुखइ सूर नवि को रह्यउ, मयण वलि वलीय विशेष रे।
सूरि को नहीं संसार मइं, जिनचन्द्रसूरि सम देख रे । स.६।
कलियुगइं चक्रवर्ति सारिखउ, साह सलेम भूपाल रे ।
हुकम कीयउ दरसणी तणउ,नवि रहउ हम अश्व वाल रे। स.७।
गढ-मढइ सूर सवि संचर्या, जीव गहि आपणउ हाथ रे ।
सरभर जम सम कुण करइ, केसरी कुण गहइ बाथ रे । स.८।
सांमहइ पाणीय चालवउ, अतुल बल कवण संसार रे ।
जिणचंदसूरि तिहां संचरइ, साह तणइं दरवार रे । स.९।
दरसणी सकल छोड़ाविया, निरखवा सयल सुसकार रे ।
आंवीया नयर बीलावड़ इ, संजम सुं पटधार रे । स.१०।
सुमति करि गुपति करि शोभता, रवि तलइं भुवन अमार रे ।
सकल सुणी जीव रक्षा करी, गुणे छत्तीस गुणधार रे । स.११।
संवत सोल कही सत्तरइ, कुशल गुरु वचन परसाद रे ।
आतमा अरथ जिम सावजो, बड़ वड़ा मुनिवर आद रे । स.१२।
आडखउ आपणउ जाणीयउ, प्रहर वलि च्यारि परमाण रे ।
अणसण श्रीमुखइं ऊचरइ, सूत्र संभालिया जाण रे । स.१३।
२.।'। बीज आसूय अंधारड़ी, हुयउ हुयउ सुगुरु निरवांण रे ।

सुरपुरी नयर बीलावड़इ, थापना सूर सुरतांण रे । स.१४।
राय श्रीमाल मूसल सही, पितर कहि थिरा परसिद्ध रे ।
सामि सीमंधर पूछीयउ, पामी पामी किहां कणाइ रिद्ध रे।स.१५।
सामि सीमंधर श्रीमुखइं, भुवण बीजर इसाण रे ।
सुरपति अति सबल तिहां हुयउ,जिनचन्द्रसूरि जहांण रे । स.१६।
हरख धरि सुगुरु गुण गावसइ, तिहां घरइं नवे निधान रे ।
पुत्र कलत्र गृह संपदा, भोग संजोग सुख खांण रे । सं.१७।
सुरमणी सुरगवी सुरतरु, कमला करइ कलोल रे ।
'रत्नतिलक' आणंद भणी, दरसण करउ सुबोल रे । स.१८।

रत्ननिधानोपाध्याय रचित

२६. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज–भर्तृनी)

जुगवर श्रीजिनचन्दजी, जगि जिन शासन चन्द रे।
प्रह समि उठी पूजिये, कामित सुरतरु कन्द रे ।। जुग० १।।
संवति पनर पंचाणुये, श्रीवन्त शाह मल्हार रे ।
मात सिरियादेवी जनमीयो, रीहड कुल सिणगार रे ।। जुग० २।।
संवत सोल चिडोतरे (१६०४) जाणी जेणे अथिर संसार रे ।
हाथे जिनमाणिकसूरि ने संग्रह्यो संजम भार रे ।। जुग० ३।।
वयर कुमार तणी परे, लघुवये बुद्धि भण्डार रे ।
गुरुकुलवासे वसि पामियो, प्रवचन सागर पार रे ।। जुग० ४।।
संवत सोल बारोत्तरे, जेसलमेरु मझारी रे !
भाग्य बले सूरि पदवी लही,हरखिया सवि नर नारी रे।।जुग०५।।
कठिण क्रिया जेणे ऊधरी, मांडियो उग्र विहार रे ।
सूरि जिणवल्लभ सारिखो,चरण करण गुणधार रे ।। जुग० ६।।
पाटण सोल सतरोत्तरे, च्यार अेंसी गच्छ साखि रे ।
खरतर विरुद दीपावियो, आगम अक्षर दाखी रे ।। जुग०७।।
सोरिपुरे हथिणाउरे, विमलगिरि गढ गिरनारि रे

तारंग अर्बुद तीरथे, यात्रा करि बहु वारि रे ।। जुग०८।।
अकबर शाहि परखियो, कसवटी कंचण जेम रे ।
पूज्यनी मधुर देशना सुणी, रंजियो शाही सलेम रे ।। जुग०९।।
सात दिवस वरताविियो, मांहि दुनिया अभयदान रे ।
पंच नदीपति साधिया,वाधियो अति घणो वान रे ।। जुग० १०।।
राजनगर प्रतिष्ठा करी, सबल मंडाणी गुरुराई रे ।
संघवी सोमजी लाछिनो, लाह लिये तिणी ठाई रे ।। जुग० ११।।
सुप्रसन्न जेहने मस्तके, गुरु धरे दक्खिण पाणि रे ।
तेह घरि केलि कमला करे,मुख वसे अविरल वाणि रे।।जुग०१२।।
दरसनी जिणे मुगता करी, साल सित्तर वरसे रे ।
आविया नयर बिलाडए, सुगुरु रह्या चउमासि रे।। जुग० १३।।
दिवस आसू वदि बीज ने, उचरी अणसण सार रे ।
सुरपुरि सुगुरु सिधारिया,सुर करे जय जयकार रे ।। जुग० १४।।
नाम समरणि नवनिधि मिले, सवि फले संघनी आस रे ।
आधि ने व्याधि दूरे टले, संपजे लील विलास रे ।। जुग० १५।।
केशर चन्दन कुसुमसुं, चरचतां सह गुरुपाय रे ।
पुत्र संतान परिघल हुवे, दिन दिन तेज सवाय रे ।। जुग० १६।।
श्रीजिनचन्दसूरीसरु, चिर जयउ जुगहप्रधान रे ।
इणि परे गुरु गुण संथुणे, 'पाठक रत्ननिधान' रे ।। जुग० १७।।

रत्ननिधानोपाध्याय रचित

२७. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज—भवजल पार करो दयानिधि)

सुगुरु मेरो कामित कामगवी ।।

मन शुद्ध साही अकब्बर दीनी, युगप्रधान पदवी ।।सु०१।।
सकल निशाकर मंडल सम सूरि, दीपत वदन छवी ।।सु०।।२।।
महिमंडल मइं महिमा जाकी, दिन प्रति नवी नवी ।।सु०।।३।।

जिनमाणिकसूरि पाट उदयगिरि, श्री जिनचन्द्र रवि ।।सु०।।४।।
पेखत ही हरखित भयो मन मइं, 'रत्ननिधान' कवी ।।सु०।।५।।

म. ऋद्धिसार रचित

२८. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

जैन अयन उदयकार, जय जय गुरुराजा ।जैन०।
रीहड वर ओसवंश, खरतर गण कमल हंस ।
दत्त कुशल चन्द्र अंश, प्रगटे सुख काजा ।जै.१।
श्रीजिनमाणिक्य पाट, संकट सब विघ्न दाट ।
दया ज्ञान सुघट घाट, भविजन शिव पाजा ।जै.२।
दिल्लीपति यवन वंस, अकबर सुण के प्रशंस ।
तुम वच से हो अहिंस, मति गति सुख भाजा।जै.३।
युगप्रधान पदवी दीन, जैन धर्म तत्व चीन ।
दर्शन शुध नियम लीन, बादशाह ताजा ।जै.४।
अहिंसा फुरमाण लेख, लिख कर दीनो विशेष ।
उदय जिन धर्म रेख, चिंहु दिसि में गाजा ।जै.५।
जगगुरु श्री जिन सूरि चन्द, पूज पूज भविक वृन्द ।
'ऋद्धिसार' नित आनन्द, बजे सुजस बाजा ।जै.६।

म. ऋद्धिसार रचित

२९. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(चाल—पास पियारो लागे प्यारो)

पूज पूज जिनचन्द्रसूरीश्वर, क्यों जग भूला भटके है ।टेर।
शासन वीर जिणिंद प्रभावक, खरतर गच्छ गुण गटके है ।पू.१।
पंच महाव्रत शुद्ध संजम धर, तरण तारण भवि तटके है ।पू.।
जिनमाणिक्यसूरि पट्ट प्रभाकर, मिथ्यातम कुं झटके है ।पू.२।
साह अकबर गुरु उपदेशे, जीव—हिंसा से अटके है ।पू.।
लिख फुरमाण दिया सब जनपद, अमारि घोषण चटके है ।पू.३।
जिनशासन की श्रध्दा कीनी, ऐसे गुरु के लटके है ।पू.।

अम्मावस की पूनिम कर दी, चन्द्र उजाला छिटके है ।पू.४।
वकरी भेद बताया तीनों, काजी टोपी पटके है ।पू.।
युगप्रधान पद दिया अकव्बर, पूर्ण ज्ञान जसु घटके है ।पू.५।
भस्मरासि ग्रह उतरा जब ही, धर्म उदय थिर थटके है ।पू.।
धूम्रकेतु ग्रह का सुत प्रगटा, जिनमत-लोपक खटके है ।पू.६।
चैत्य अर्थ प्रत्यनीक सूत्र के, न्याय बचन सें हटके है ।पू.।
जो पूजे गुरु चरण हमेसां, दुख दारिद्र तसु सटके है ।पू.७।
कहे 'पाठक ऋद्धिसार राम' कवि, ध्यान अमर पद रटके है ।पू.८।

मुनि लब्धि रचित

३०. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग—गूजरी)

अब मइं पायउ सव गुण जांण ।
साहि अकबर कहइ ए सुहगुरु, जिन शासन सुलतांण ।अ.।
यतीय सती मइं वहुत निहाले, नहीं को एह समान ।
के क्रोधी के लोभी कूडा, केइ मन धरइ गुमान ।अ.१।
गुरु जी वांणी सुणि अवनीपति, वूझ्यउ द्यइ सन्मान ।
देस विदेस जीऊ हिंस्या दली, भेजी निज फुरमांन ।अ.२।
श्री जिनमाणिकसूरि पटोधर, खरतर गछ राजान ।
चिरजीवो जिनचन्द यतीश्वर, कहइ 'मुनि लब्धि' सुजान ।अ.३।

मुनि लब्धि रचित

३१. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग—गूजरी)

दुनिया चाहइ दौ सुलतान ।
इक नरपति इक यतिपति सुन्दर, जाने हइ रहमांन ।दु.।
राय राणा भू अरिजन साधी, वरतावो निज आंण ।
बर्बर वंस हुमाऊ नन्दन, अकबर साहि सुजांण ।दु.१।
विधि पथ हीलक दुरजन जनके, गाली मद अभिमान ।

श्रीवन्त सुत अब सूरि शिरोमणी, जग मांहि जुगप्रधान ।दु.२।
बइठ सिंहासण हुकुम सुनावति, कौ नावे खंडत आंण ।
मीर मलक बहु उनकूं सेवति, इनकुं मुनिराजान ।द.३।
इक छत्र सिरुवरि मथाडम्बर, धारति दोऊ समान ।
कहति 'लब्धि' जिनचंद धराधर, प्रतपो जहां दोऊ भांन ।दु.४।

मुनि लब्धि रचित

३२. यु.जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–धवल धन्याश्री)

नीकौ नीकउ री जिनशासनि ए गुरु नीकौ ।
युगप्रधान जगि जंगम एही, दीयउ जसु अकबर टीकउ री ।नी.।
राज आज हम सुन्दर, सफल भयउ अब नीको ।
साहि अकंबर कहइ जो मोकुं, दरसण थो गुरुजी कउ री ।नी.१।
मोहन रूप सुगुरु बडभागी, लह्यौ मान श्रीजीउ कौ ।
जे गुरु ऊपर मद मच्छर धरता,हुउ मुख तिहकु फीकउ री ।नी.२।
श्रीगुरु नामि दुरति हरि भाजइ, नाद सुणी जिउ सीह कौ ।
साह श्रीवन्त सुतन चिर जीवउ, साहिब 'लब्धिमुनी' कौ ।नी.३।

लब्धिकल्लोल रचित

३३. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–सोरठी)

आज उछरंग,आणंद अंगि ऊपनौ,आज गच्छराज ना गुण थुणीजइ।
गाम पुरि पाटणइ रंगि वधावणा,नव नवा उच्छव संघ कीजइ।आ.।
हुकम श्री साहि नइ पंच नदी साधि नइ, उदय कीयउ संघ नो सवायौ ।
सघपति सोमजी सुणउ मुझ वीनती,सोय जिणचन्द गुरु आज आयौ ।१
साहि प्रतिवोधतां पंच नदी साधतां, सुजस मइ जास जगि भेर वागी ।
'लब्धिकल्लोल' मुनि कहइ गुरु गावतां,आज मुझ परम मनि प्रीत जागी।२

लब्धिशेखर रचित

३४. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–मल्हार)

पूज्य आवाजउ सांभलउ सहिए, हरख्या सगला लोक ।
मोरउ मन पिण उलस्यउ सहिए, जिम हरि दंसण कोक ।
इण रे सुगुरु जी जग मांहि, जस पडहउ बजाइयउ ।१।
पहिलुं अकबर मान्या सहिए, ए गुरु हीरा खाणि ।
युगप्रधान पद तिण दियउ सहिए, पय लागइ राय राणि ।इ.२।
गच्छ अनेक मइं जोइया सहिए, तुम सम अवर न कोइ ।
हेलइ मयण वसी कीयउ सहिए, शीलइ थूलभद्र जोइ ।इ.३।
अनुक्रमि श्री गुरु विहरता सहिए, आव्या पाटण मांहि ।
चउमासउ प्रभु तिहां करइ सहिए, मन आणी उच्छाह ।इ.४।
लेख आयउ आगरा थकी सहिए, जाणी सगली बात ।
साहि सलेम कोपइ चढयइ सहिए, कुमती बांध्या राति ।इ.५।
चउमासो करि पांगुर्या सहिए, करता देस विहार ।
उग्रसेनपुर आवीया सहिए, वरत्या जय जयकार ।इ.६।
श्री पातिशाह बोलाविया सहिए, जंगम जुगहप्रधान ।
धरम मरम कहि वूझव्यउ सहिए, तुरत दीया फुरमान ।इ.७।
जिण शासन उजवालियउ सहिए, सा श्रीवन्त कुलचन्द ।
साधु विहार मुगता कीया सहिए, खरतरपति जिणचन्द ।इ.८।
सिरियादे उरि हंसलउ सहिए, तेजइ दीपइ मांण ।
'लब्धिशेखर' मुनि इम भणइ सहिए,सेवक आपणउ जाणि ।इ.९

प्र. विचक्षणश्री रचित

३५. यु. जिनचन्द्रसूरि गीत

(तर्ज – तेरी प्यारी...)

तेरी भक्ति देती भक्तों को है, मनवांछित वरदान, चन्द्रसूरि
आनंद मंगल और हर्ष बधाई, नित घर नवे निधान, चन्द्रसूरि
ओसवाल रीहड गोत्री, श्रीवंत शाह प्रधान है ।
सिरिया माता खेतसर जन्मे, नाम दिया सुल्तान है ।
माणकसूरीश्वर पटधर प्यारे, सुमतिधीर मुनि नाम । चंद्र०।।१।।

बादशाह अकबर भारी, दिल्ली बुलाये गुणरागी ।
आत्मधर्म का बोध कराया, गुरुदेव की बलिहारी ।
अेक वर्ष में छ महीने हिंसा, बंदी का लिया फरमान ।चंद्र०।।२।।
सूरसिंह जोधाणा नृप, रायसिंह बीकानेरी ।
कर्मचन्द्र बच्छावत मंत्री, भक्त गुरु के थे भारी ।
विज्ञान 'विचक्षणता' दिखलाकर,पाया था शुभ नाम ।चन्द्र०।।३।।

प्र. विचक्षणश्री रचित

३६. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज–चाद सी महबूबा)

दादा श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर, जग में महिमा है भारी ।।
सुनकर हर्षित आई हूँ मैं, पूरो आस हमारी ।दादा०।
मोह राजा के फंदे में गुरु, मैं तो खूब जकड़ाई ।
अव तो राह बता दो मुझ को भव-वन में भटकाई ।(२)
खोज लिया जग सारा गुरुवर ! नही मिला तारणहारी ।दादा०१।
प्रतिबोधि अकवर बादशाह को सन्मारग वतलाया ।
जिन-वाणी का पीयूष पिलाकर पूर्ण अहिंसक बनाया ।(२)
धन्य हो गया जीवन उसका मिल गये सद्गुणधारी ।दादा०२।
अज्ञानी काजी का मान मिटाकर, धर्म-ध्वज फहराया ।
भूले राही को पथ दर्शाकर करुणा रस बरसाया ।(२)
जिन-शासन का रागी वना वह गुरु दादा शरण स्वीकारी।दादा०३।
शुद्ध संयम वर देना 'विचक्षण' तुम चरणों मे आई ।
मिथ्यातम को नाश करूं यह विनती तुम पास लाई ।(२)
मुक्तिनगर मिल जाये गुरुवर यह आशा दिलधारी ।दादा०४।

प्र. विचक्षणश्री रचित

३७. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–बार बार हम क्या कहें स्वामी)

वार वार अभिनंदन करते, लेना गुरु स्वीकार ।

उपकारी दादा चन्द्रसूरि जयकार !

भारत भूमि पर अवतारी आया था,

नव जीवन निर्माण का धर्म रस लाया था,

जीवो और जीने दो सब को आत्म समान स्वभाव. –उप–॥१॥

बादशाह अकबर को जिसने ज्ञान दिया.

प्राणी मात्र है खुदा नूर यह जान लिया.

धर्म अहिंसा सुगंध फैली, बादशाह दरबार. –उप–॥२॥

मैत्री भावना प्रेम भावना जहां नहीं,

महावीर फरमाते धर्म भी वहां नहीं,

अब तो सोचो वीर के पुत्रों, करो फूट परिहार, –उप–॥३॥

मेरो दादा की आज जयंति मना रहे.

सारा श्री संघ मिल गुण गा रहे,

विमल 'विचक्षण' बुद्धि देकर, करना भवसे पार. –उप–॥४॥

प्र. विचक्षणश्री रचित

३८. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–फूल तुम्हें. .)

श्रद्धा सुमन समर्पित करने, आज आये है हजारों जन।

चौथे दादा चन्द्रसूरीश्वरजी, मेरा भी लेना वंदन ॥श्रद्धा.॥टेर

श्रीवंत शाह के हो कुलदीपक, श्रिया देवी के नंदन ।

नौ वर्ष की बालक वय में, तोड़े तुमने सब बंधन ।

माणिक्यसूरि से दीक्षा पाकर, जिनशासन के बने मंडन ।

बिलाडा में स्वर्ग सिधारे, भक्त जनों के जीवन धन ॥१॥

अकबर को प्रतिबोध दिया था, धर्म अहिंसा का भगवान ।

बडे गुरु के पद से अलंकृत, किया था तुमको गुणवान ।

आज महान महोत्सव दिन धन्य, संघ सकल मिल करे वंदन ।

अर्ज 'विचक्षण' करती चरण में, मुझे भी देना सत् दर्शन ॥२॥

प्र. विचक्षणश्री रचित

३९. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

हे चन्द्रसूरि गुरुदेव तुम्हारी जीवन ज्योति महान, गुरु दादा
भारतभूमि में जन्म लिया, दिया मानव को सद्ज्ञान, गुरु दादा
श्रीवंत शाह पिता कुल दीपक, ओशवंश अवतार ।
माता श्रिया देवी नंदन, खरतर गच्छ शणगार ।
अंग सुलक्षण बुद्धि विचक्षण, नाम कुमार सुलतान –गुरु० ॥१॥
माणकसूरि सत्संग पाकर, प्रगटे ज्ञान प्रकाश ।
नौ वर्ष की बालक वय में, तोड़ दिया मोह पाश ।
बने ब्रह्मचारी, संयमधारी, साधे आत्म विज्ञान–गुरु० ॥२॥
उत्कट संयम पथ विचरे, जन जन में जिनवाणी भरे ।
ज्ञान 'विचक्षण' देकर गुरुवर, लाखों का अज्ञान हरे ।
जिन शासन के सूर्य तुम्हारा, विलाडा निर्वाण –गुरु० ॥३॥

विनयहर्ष रचित

४०. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

कल्याण मेरुउ गुरु अनुवम समरस भरियउ ।
जंबू थूलभद्र जगि कहइ ते, इसी उपम अनुकरीयउ ।१।
अमृत समान वखाण करत ही, सुणत भविक चित ठरीयउ ।
महिमा मेरु अधिक गुण राजति, नीके मुनि परिवरीयउ ।२।
श्री खरतर गच्छ तिलक श्रीवंत सुत, सिरियादे उरि धरीयउ ।
'विनयहरख' कहइ प्रभुकइ दरसणि, अष्ट महासिधि वरीयउ ।३।

विनयहर्ष रचित

४१. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–वेलाउल)

माई श्री जिनचन्दसूरि सद्गुरु नीकउ।
सोल कला संपूरण शशि समान, सोहइ मुख गुरुजी कउ।मा.१।
सम दम उपशम धरण, सब गच्छ सिरि टीकउ ।मा.२।

श्रीजिनमाणिकयसूरि पाट प्रभाकर,एणइ कीउ मणमथ झीकउ ।मा.३।
'विनयहर्ष' कहइ वंछित दायक, नायक सकल यतीकउ ।मा.४।

वाचक श्रीसुन्दर रचित

४२. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग—मल्हार)

भलइ री भलइ आज पूज्य पधारइ,विहरंता गुरु साधु विहारइ।भ.।
जुगवर श्री जिन शासनि जागइ, महियल मोटइ भाग सोभागइ।भ.१।
सूरिमन्त्र गुरु सानिध सोधिउ, पातिसाहि अकबर प्रतिबोधिउ ।भ.२।
सहु दुनिया मांहे कीध भलाइ, हफतह रोज अमारि पलाइ ।भ.३।
परतिख पंचे पीर आराधी, संघ उदय काजि पंच नदी साधी ।भ.।
वाणी अमृत वखाण सुणावइ,सूत्र सिद्धान्त ना
अरथिजणावइ।भ.३।
बलिहारी म्हारा पूजजी ने वयणे, बलिहारी अणियाले नयने ।भ.।
श्रीवन्त नन्दन सकल सनूरइ,उदयवन्त गुरु अधिक पडूरइ ।भ.४।
श्रीजिनमाणिकसूरि पटधारी, वाचक 'श्रीसुन्दर' सुखकारी ।भ.५।

वाचक श्रीसुन्दर रचित

४३. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग—सारंग)

सरसति सामिणी वीनवुं, मांगु एक पसाय सखी री ।
उल्लट आणी गाइसुं, श्री खरतर गच्छ राय सखी री ।१।
श्री जिणचन्दसूरीश्वरु, कलि गौतम अवतार सखी री ।
सूरि शिरोमणि गुण भर्यो, सकल कला भण्डार सखी री।श्री.२।
ओसवंस सिरि सेहरउ, रीहड कुलि सिणगार सखी री ।
सिरियादे उरि जनमीया, श्रीवन्त शाह मल्हार सखी री ।श्री.३।
श्री जिन शासन परगडउ, वड खरतर गच्छ ईस सखी री ।
नर नारी नित जेहनउ, नाम जपइ निशदीस सखी री ।श्री.४।
श्रीजिनमाणिकसूरिनइ, पाटइ प्रगट्यउ भाण सखी री ।

राय राणा मुनि मण्डली, मानइ मोटा जाण सखी री ।श्री.५।
सोभागी महिमा निलउ, महियल मोहनवेलि सखी री ।
अबूझ जीव प्रतिबूझवइ, वाणि सुधारस रेलि सखी री ।श्री.६।
जग सगले जस पामीयउ, प्रतिबोधी पातिशाह सखी री ।
खंभाइत उदधि माछली, सखी अधिक उच्छाह सखी री ।श्री.७।
आठ दिवस आसाढ के, अट्ठाही निरधारी सखी री ।
सब दुनियां मांहे सासती, पालावी अमारी सखी री ।श्री.८।
शील सुलक्षण सोहतउ, सुन्दर साहस धीर सखी री ।
सुविधि सुपरि करि साधीया, पंच नदी पंच पीर सखी री ।श्री.९।
सूधउ मारग उपदिसी, पाय लगाड्या लाख सखी री ।
दरसण ज्ञान क्रिया धर,सवि गच्छ पूरइ साख सखी री ।श्री.१०।
सइं हथि अकबर थापीया, सद्गुरु युगहप्रधान सखी री ।
'श्रीसुन्दर' प्रभु चिरजयउ,दिन दिन चढतइ वान सखी री।श्री.११।

समयप्रमोद गणि रचित

४४. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

र.स. १६४९

(दोहा—उल्लाला)

अकबर भूपति मानीया, तिण मानइ सहु लोइ ।
जिनचन्दसूरि सूरीश्वर, वन्दे वंछित होइ ।
वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखता चित हीसए,
श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि समवडि, अवर कोई न दीसए ।
सम्पत्तिकारक दुखनिवारक, धर्मधारक महाव्रती,
मन भाव आणी लाभ जाणी, नमइ अकबर भूपती ।१।
असुरां गुरु प्रतिबोधीउ, दाखी धरम विचार ।
शासन सोह चढावीयउ, माणिकसूरि पटधार ।
पटधार माणिकसूरि नइ ए, रीहड वंसइ दिनमणी,
श्रीवंत श्रीयादेवी नन्दन, सुविहित साधु सिरोमणी ।

गुणरयण रोहण भविय मोहन, कम्म सोहण व्रत लीउ,
सुविचार सार उदार भावइ, असुरां गुरु प्रतिवोधीयउ ।।२।
एहवो गुरु वन्द्यो नहीं, इणि जगि ते अकयत्थ।
अकब्बर श्रीमुख इम कहइ, खरतर गच्छ मणिमत्थ ।
मणिमत्थ खरतर गच्छ केउ, अभिनवेरउ सुरतरु,
मन तणा कामित सयल पूरइ, रूप जेम पुरन्दरु ।
जसु तणइ दरसणि दुरित नासइ, रिद्धि वासइ घर सही,
इम कहइ अकवर तेह अकयथ, जेणि गुरु वन्द्यो नहीं ।३।
युगप्रधान पदवी भली, आपइ अकवर राज ।
मइं मुख हरखै इम कहइ, ए गुरु सव सिरताज ।
सिरताज सव गछ एह सद्गुरु करइ वगनिस इम वली,
गुजरात खंभायत वंदरि, करउ निरभय गाछली ।
वर्धमान सामि तणइ शासनि, करी उन्नति इम रली,
आपइ अकवर अधिक हरखे, युगप्रधान पदवी भली ।४।
जां लगि अम्वर रवि शशि, जां सुर शैल नदीस ।
तां नंदउ ए राजियो, मानइ आण नरेस ।
जसु आण मानइ राव राणा, भाव वहु हियडै धरी,
नन्द वुधि रस शशि वरसि चैत्रह, नवमि तिहि अति गुण भरी।
इग विमल चित्तइ भणिइ भत्तिइ, 'समयप्रमोद' समुल्लसी,
युगप्रवर जिनचन्द्रसूरि वन्दो, जांम अम्वर रवि शशि ।५।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

४५. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

आसू मास वलि आवियउ पूजजी, आयो दीपावलि पर्व ।
काती चौमासो आवियउ पूजजी, आया अवसर सर्व ।पूजजी।
तुम आवो रे सिरियादे का नन्दन पूजजी
तुम विन घडिय न जाय, तुम बिन अलजउ जाय ।पू.तु.१।आं.।
साहि सलम अने वलि उमरा.पू०, संभारइ सहु कोय ।पू.।

धर्म सुणावो आविनइ पूजजी, जीव दया लाभ होय। पू.।तु.२।
श्रावक आया वांदिवा पूजजी, ओसवाल नइ श्रीमाल पूजजी ।
दरसण द्यो एक वार तो पूजजी,वाणी सुणावो रसाल पूजजी।तु.३।
बाजोट मांड्यउ बइसणे पूजजी, कमली मांडी सुघाट पूजजी ।
वखांण नी वेला थइ पूजजी, श्री संघ जोवइ वाट पूजजी ।तु.४।
श्राविका मिली आवी सहु पूजजी, वांदण देकर जोडि पूजजी।
वंदावी धर्मलाभ द्यउ पूजजी, जिम पहुचे मन कोडि पूजजी।तु.५।
श्राविका उपधान सहु वहइं पूजजी, मांडयउ नन्दि मंडाण पूजजी।
माळ पहिरावो आवि ने पूजजी,जिम हुवे जनम प्रमाण पूजजी।तु.६।
अभिग्रह वांदण अम्हरै पूजजी, कीधा हुता नरनारि पूजजी ।
ते पहुंचावो तेहना पूजजी, वंदावो एक वार पूजजी ।तु.७।
पर्व पजूसण वही गयउ पूजजी, लेख वांचे सहु कोय पूजजी ।
मन मान्या आदेश द्यो पूजजी,शिष्य सुखी जिम होय पूजजी ।तु.८।
तुम सरिखउ संसार में पूजजी, देखु नहीं को दीदार पूजजी ।
नयण तृप्ति पामै नहीं पूजजी, संभारुं सो वार पूजजी ।तु.९।
गुण गिणवा अलजउ घणो पूजजी,तुम तो अकल अलख पूजजी ।
सुपनि में आवि वंदाविजो पूजजी हुं जाणिस परतक्ष पूजजी।तु.१०।
युगप्रधान जगि जागतो पूजजी, श्री जिनचन्द सूरिंद पूजजी ।
सांनिध करजो संघने पूजजी, 'समयसुन्दर' आणंद पूजजी ।तु.११।

समयसुन्दरोपाध्याय कृत

४६. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

र.सं. १६५२

(६राग,३६रागिणी नाम गर्भित)

कीजइ ओच्छव संता सुगुरु केरउ,सुललित वयण सुणि नन्दि मेरउ।
कहउ री संदेसा खरा गुरु आवतिया,तिण वेला-उलसो मेरे छतिया।१।
आए सखी श्रीवन्त मल्हारा, खरतर गच्छ शृंगारहारा ।आंकणी।
अइसा-रंग वधावन कीजइ गुरु अभिराम-गिरा अमृत पीजइ।
अइसे गुरु कू नित उल-गउरी,सुन्दर शिरीरा-गच्छपति अउरी।२।

दुख केदार सुगुरु तुम हउरी, गाऊं गुरु गुण केदारा गउरी।
सोरठ गिरि की जात्रा करण कुं आपण री गुरु पाय परओ।
भाग्य फल्यो ओच्छव लोकपरओ।३।
तूं कृपा पर-दउलति दे मोहि सूं तेरउ भगत हुं री।
गुरुजी तूं ऊपर-जीऊ राखी रहुं री।
इहु-सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी,हुं चरण लागुं-डर डमर वारी।४।
अहो निकेत नट-नराइण के आगइ,अइसइ नृत्य करत गरु के आगइ।
अइसे शुद्ध-नाटक होता गावत सुन्दरी,
वेणु वीणा मुरज वाजत घुमई घुघरी।५।
रास मधु-माधवइ देति रम्भा, सुगुरु गायन्ति वायन्ति भम्भा।
तेज पुंज जिम सोभइ-रवि, जुगप्रधान गुरु पेखउ भवि।६।
सवहि ठउर वरी जयतसिरी, गुरु के गुण गावत, गुजरी।
मारुणी नारी मिली सव गावत, सुन्दर रूप सोभागी रे,
आज सखी पुण्य दिसा-मेरी जागी रे।७।
तोरी भक्ति मुझ मन मेमां वसी रे,
साहि अकवर मानइ जस बाबर वंसी।
गुरु के वंदण तरसइ सिन्धुया, इया-सारी गुरु की मूरतिया।८।
गुरु जी तूंहिज कृपाल भूपाल, कलानिधि तुंहिज सबहि सिरताज,
आवइ-ए- रीतइ गुरु राज।
संकराभरण लंछन जिन सुप्रसन्न,जिनचन्दसूरि गुरु कु नति करुं।९।
मालवी-गउड मिश्री अमृत थइ, वचन मीठे गुरु तेरे हइ हाथइ।
करउ वंदणा गुरु कुं त्रिकालइ-हरउ पंच प्रमाद रे,
सवइ कुं कल्याण सुख सुगुरु प्रसाद रे।१०।
वहु परभांति वउ उच्छव सार, पंच-महाव्रत धर गुरु उदार।
हुं आदेस कार प्रभु तेरा,जुगप्रधान जिनचंद मुनीसरा,तू साहिव मेरा।
दुरित मे-वारउ गुरुजी सुख करउ रे, श्री संघ पूरउ आशा।
नाम तुमारइ नव निधि संपजइ रे, लाभइ लील विलासा।१३।
धन्यासरी रागमाला रची उदार,

छः राग छत्तीसे भाषा भेद विचार ।
सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरु वार ।
थंमण पास पसायइ त्रम्बावती मझार ।ध.१४.।
जुगप्रधान जिनचन्द सूरीन्द सार,चिरजयउ जिनसिहसूरि सपरिवार।ध.।
सकलचन्द मुणीसर सीस उन्नतिकार,'समयसुन्दर'सदा सुख अपार।१५।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

४७. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–आस्या सिन्धुडो)

थिर अकबर तूं थापियउ, युगप्रधान जग जोइ ।
श्री जिनचन्दसूरि सारिखो, सारिखो कलिमइं न दीसइ कोइ ।१।
ऊमाह धरीने तात जी हुं आवियो रे, हो एकरसउ तूं आवि।
मन रा मनोरथ सहु फले माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिखाउ।ऊ.२।
जिणशासन राख्यो जिणे, डोलतउ डमडोल ।
समुझायो श्री पातिसाह सद्गुरु, खाट्यो तइं सुबोल ।ऊ.३।
आलेजो मिलवा अति घणो, आयो सिन्ध थी एथ ।
नगर गाम सहु निरखिया, कहो क्यूं न दीसइ पूज केथ ।ऊ.४।
साहि सलेम सहु अम्बरा, भीम सूर भूपाल ।
चीतारे तूनइं चाह सुं हो, पूज्य जी पधारउ किरपाल ।ऊ.५।
बाबा आदिम बाहुबली, वीर गौतम ज्युं विलाप ।
मेल्हउ म सरज्यो माहरो, ते तो रह्यउ पछताप ।ऊ.६।
साह वडउ हो सोमजी, राख्यउ कर्मचन्द राज ।
अकबर इन्द्रपुरि आणियउ, आस्तिक वादी गुरु आज ।ऊ.७।
मूयइ कहे ते मूढ नर, जीवइ जिणचन्दसूरि ।
जग जंपइ जस जेहनउ, हो पुहवी कीरत पडूरि ।ऊ.८।
चतुरविध संघ चीतारस्ये, ज्यां जीविस्यइ तां सीम ।
वीसार्या किम वीसरइ, हो निरमल तप जप नीम ।ऊ.९।
पाटि तुम्हारइ प्रगटियो, श्री जिनसिंहसुरीश ।

शिष्य निवाज्या तें सहु रे, जतीयां पूरी जगीश ।।ऊ.कृ।।

अपूर्ण

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

४८. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग आसावरी)

पूज्यजी तुम चरणे मेरउ मन लीनउ, ज्युं मधुकर अरविन्द ।
मोहन वेलि समइ मन मोहिउ, पेखत परमानंद रे । पू.१।
सुललित वाणि वखाण सुणावति, श्रवति सुधा मकरन्द रे ।
भविक भवोदधि तारण बेडि, जन मन कुमुदिनी चन्द रे । पू.२।
रीहड वंश सरोज दिवाकर, साह श्रीवन्त कउ नन्द रे ।
'समयसुन्दर' कहइ तूं चिर प्रतपे, श्री जिणचन्द मुणिंद रे । पू.३।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

४९ यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग आसावरी)

भलेरी माई श्री जिनचन्द्रसूरि आए ।
श्री जिनधरम मरम सूझणकुं, अकबर साहि बुलाए । भ.१।
सद्गुरु वाणि सुणी साहि अकबर, परमानन्द मनि पाए ।
छ:तइ रोज अमारि पालन कुं, लिखि फुरमाण पठाए । भ.२।
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी, दुरजन दूरि पुलाए ।
'समयसुन्दर' कहइ श्री जिनचन्दसूरि,सब जन के मनि भाए।भ.३।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

५०. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(ढाल—चन्द्राउला नी)

श्री खरतर गच्छ राजियउ रे, माणिकसूरि पटधारो ।
सुन्दर साधु सिरोमणि रे, विनयवन्त परिवारो ।
विनयवन्त परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखि आज हमारउ ।
चन्द्राउलउ छइ अतिसारउ, श्रीपूज्य जी तुम्हे वेगि पधारउ ।१।

जिनचन्दसूरि जी रे, तुम्हे जगि मोहनवेलि सुणज्यो वीनति रे ।
तुम्हे आवउ अम्हारइ देसि, गिरुया गच्छपति रे ।आंकणी।
वाट जोवतां आविया रे, हरख्या सहु नर नारो रे ।
संघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि मंगलाचारो ।
घरि घरि मंगलाचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ वहिनी मोरी ।
ए चन्द्राउलउ सांभलज्यो री, हुं वलिहारी पूज जी तोरी ।२।
अमृत सरिखा वोलडा रे, सांभलतां सुख थायो ।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि जायो ।
अलिय विघन सवि जाय रे दूरइ, श्रीपूज्य वांदूं उगगते सूरइ ।
ए चन्द्राउलउ गाऊं हजूरइ. तउ मुझ आस फलइ सवि नूरइ ।३।
जिण दीठां मन ऊलसइ रे, नयणे अमिय झरन्ति ।
ते गुरु ना गुण गावतां रे. वंछित काज सरन्ति ।
वंछित काज सरंति सदाई, श्री जिणचन्दसूरि वांदउ गाई ।
ए चन्द्राउला भास मई गाई, प्रीति 'समयसुन्दर' गनि पाई ।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

५१. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग—आसावरी)

सुगुरु चिर प्रतपे तूं कोडि वरीस ।
खंभायत बंदर साहलडी, मत्र निति देत आसीस ।सु.१।
धन धन श्री खरतर गच्छनायक, अमृत वाणि वरीस ।
साहि अकबर हम कूं राखण कूं, जासु करि वक्सीस ।सु.२।
लिखि फुरमाण पठावत सव ही, धन कर्मचन्द्र मन्त्रीश ।
'समयसुन्दर' प्रभु परम कृपा करि. पूरउ मनहि जगीश ।सु.३।

समयसुन्दरोपाध्याय रचित

५२. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

सुपन लह्युं साहेलडी रे, निसि भरि सूती रे आज ।
सुन्दर रूप सुहामणा रे, दीठा श्री गच्छराज ।

ुन्दर रूप सुहामणा रे, दीठा श्री गच्छराज ।
सुगुरुजी मूरति मोहनवेलि,श्रीपूज्य जी चालइ गजगति गेलि ।आं.।
गाम नगर पुर विहरता रे, आव्या जिणचन्दसूरि ।
श्रीसंघ साम्हउ संचरइं रे, वाजइ मंगल तूरि ।सु.२।
आव्या पूज्य उपासरइ रे, सुललित करइ रे वखाणि ।
संग सहु ध्रम सांभलइ रे, धन जीव्युं परमाण । सु.३।
संख सबद सखि मइं सुण्यउरे , ऊभी जोऊं रे वाट ।
आंगणि मोरी आविया रे, परिवर्या मुनि घाट ।सु.४।
धवल मंगल गायइ गोरडी रे, हियडइ हरख न माय ।
नारि करइ गुरु न्युंछणा रे, पडिलाभइ मुनिराय ।सु.५।
सुपन एह साचउ हुज्यो रे, सीझइ वंछित काज ।
श्रीजिनचन्द्रसूरि वांदियइ रे, 'समयसुन्दर' सिरताज ।सु.६।

सुमतिकल्लोल गणि रचित

५३. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

श्री अकबर बहुमान, कीधलउ युगप्रधान ।
कर्मचन्द बुध्दिनिधान, मीर मलिक खोजा सांन ।
काजी मुला परधान।
पय नमइ करि गुणगान, दिन चढते वांन ।
सब दिन मुझ मन खंति घणी, श्रिय जिणचन्दसूरि सेव तणी ।१।
मारवाड गुजर बंग, मेवाड सिन्धु कलिंग ।
मालव अपूरव अंग, पूरव सुदेस तिलंग ।
सब देस मिलि मनरंग, गावइ सुगुरु गुण चंग ।
जिम केतकि वन भृंग, तिम सुगुरु सुं मुझ रंग ।स.२।
कलि गौतमा अवतार, तजि मोह मदन विकार ।
निरमाय निरहंकार, धन धन ए अणगार ।
माणिकसूरि पटधार, अतिरूप वयरकुमार ।
।वंत शाह मल्हार, 'सुमतिकल्लोल' सुखकार ।सु.३।

सुमतिकल्लोल गणि रचित

५४. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

सारद पाय प्रणमी करी, गाइसुं श्री जिणचन्द ।
भाव भगतिय भोलीय करी, मनि आणि मनि आणिरे अधिकउ आणन्द।।
वन्दउ रे,गच्छराया रे,गच्छया रे – श्री जिणचन्द सूरि की ।।१।।
संवत् सोलह अडतालीसइ, अकबर गुरु ना गुण सुणि गुरु विहरइ गुजराति।
गुरु दरसणि रे गुरु दरसणि रे, चाहइ दिन राति की ।।२।।
अकबर कहइ करमचन्द भणऊ, कहा तुम्हचे गुरु होइ ?
मन्त्री कहइ साहिब सुणउ, गुजरातइ रे गुजरातइं बरे,
विचरइ अब सोइ की।।३।।
दे फरमाण बुलाविया, श्री जिणचन्द मुणिन्द ।
बात सुणी गुरु पांगुर्या, साथइ भला रे साथइ भलारे,
मुनिवरना वृन्द की ।।४।।
श्री सीरोही आविया, तिहां राज सुरतान ।
गुरु नइ लाभ दिया घणा,पुनिम दिन रे पुनिम दिन रे,
जीव अभय दान की ।।५।।
गुरु जालउरि पधारिया, तिहां किणि रह्या चउमासि।
श्री जिनइ वचनइं करी पूरइ, भवियण रे भवियण रे,
मन केरी आस की ।।६।।
तिहां थी पाटण पांगुरिया गुरु करइ साधु विहार ।
अबूझ जीव प्रति बूझवई,कलिजुग मइं रे कलिजुग भइं रे,
श्री गौतम अवतार की।।७।।
फागुण सुदि बारसि दिनइ,शुभ जोगइ गुरु चन्द ।
श्री लाहोरि पधारिया, भवियण जाणे रे भवियण जाणे रे,
हुआ उच्छरंग की ।।८।।
तिणही दिनि अकबर ऋणि, सरी गुरु मिलवा जाइ ।
दूर थकी देखी करी, अकबरजी रे अकबरजीरे ,

जसु सनमुख, आइ की ।।९।।

गुरु दरसण देखी करी, करइ निज मुख गुण गान ।
नेह मुणी सवि उंबरा, मन मोहे रे मन मोहे रे,
हुया हयरानकी ।।१०।।

गुरु नइ हुकुम दिया इसा, नित नित तुम्हे इहां आई ।
धरग की बात कह्यउ मुझे, इतनउ गुरु रे इतनउ गुरु रे,
हम करउ उपकारु की ।।११।।

एकन्तइ श्रीजी भणी, गुरु कहइ धरमनी वात ।
कुमत मति जनमति थरहरइ, घूहड नइ रे घूहड नइ रे,
नइ सुहाई प्रभात की ।।१२।।

श्रावण सुदि पडिवा दिनइ, श्री श्री सुणिया सेख ।
साधु इसा तुगको देख्या, जिण राखी रे जिण राखी रे,
जग मांही रेख की ।।१३।।

नरपति सुसेखजी भणइ, सुणि साहिवा इक त्रोल ।
इन ही कइ तोल की ।।१४।।

इम सुणि अकवर हरखिया, आवइ सुह गुरु पासि ।
आदर मान देइ घणा, इम बोलइ रे इम बोलइ रे,
मंन कइ उल्लास की ।।१५।।

जु कछु चाहउ स दीजियइ, तव पभणइ गुरुराय ।
सव दुनिया हम तजि रहे, हम चाहुँ रे, हम चाहुँ रे,
जीव दया कउ उपाय की ।।१६।।

करइ बगसीस अे गुरु भणी, श्री अकबर पतिसाहि ।
सात दिवस अम्मारि नउ, पडह उदीयाउ रे उदीयाउ रे,
सात पृथिवी मांही की ।।१७।।

गुरु ना गुण देखी घणा, श्री अकबर भूपाल ।
जुगप्रधान पदवी दीनी,जाणह जगमइं रे जगमइं रे,।
सहु बाल गोपाल की ।।१८।।

गुरु गुरु नइ उपदेश थी, न मारि खंभाइत मांहि ।
जलचर जीव ऊगारिया, हुकुमइ करी रे हुकुमइ करी रे,
श्री अकबर साहि की ॥१९॥
वधतइ वानइ दिन दिनइ, खरतर गच्छी अवतंस ।
तुम्ह ही वड़े गुरु इणि जुगइ, इम अकबर रे, इम अकबर रे,
जसु करइ प्रशंस की ॥२०॥
मात सिरियादे उरि धरिया, श्रीवंत शाह मल्हार ।
इणि जग अे सम को नहीं, जसु नामइ रे जसु नामइ रे,
हुवइ जय जयकार की ॥२१॥
रीहड वंशइ अतिभलउ, जिण सासण सिणगार ।
अे गुरु ना गुण अतिघणा, कवियण जण रे, कवियण जय रे,
कुण पामइ पार की ॥२२॥
जां लगी मेरु महीधर, जां सायर जां चन्द ।
'मुनतिकल्लोल' सेवक भणइ, तां प्रतपउरे तां प्रतपउ रे,
गुरुआ जिणचन्द की ॥२३॥

उपाध्याय साधुकीर्ति रचित

५५. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

ए मेरउ माजणीयउ सखि सुन्दर सोइ, जो मुझ वात जणावइरे ।
किणि वाटडियइ मेरउ पूज्य पधारइ. श्री गुरु सवहि सुहावइ रे ॥
गुरु सवहि सुहावइ, जिणि पुरि आवइ, तिणि पुरि सोह चढावइ ।
गुरु सोभागी, गुरु विधि आगी, पुण्य उदय स चढावइ,
गच्छराउ गुणी, जिणचन्द मुणी, जिण कार न लोपइ कोइ ।
आवाजउ गुरु, कउ जो जांणइ, मेरउ साजण सोइ ॥१॥
ए जिम मइगलीयउ,वण वीज वीनोदी, जिम घन दरसण मोरा रे।
रवि दंसणियइ, कोक सुरंगी, दरसण चंद चकोरा रे ॥
जिम चंद चकोरा रे, तेम अघोरा, देखि दरसण तोरा ।
हित संतोषइ, पुण्यइ पोषइ,अति हरखित मन मोरा ।

निरदन्दी श्री जिनचन्द पधारउ, बेगइ होइ प्रमोदी ।
तुम्हि देखि सहुजण, जिम वीझावण, मइगलीयउ सुविनोदी ।।२।।
ए गुरु जोवणीयइ,विधि मारगि लीणउ,इणि गुरि लोह न माया रे।
कसि कंचणीयइ, जेम परीखा, दिनि दिनि वान सवाया रे ।।
नितु वान सवाया, मोह न माया, मन्मथ आण मनाया ।
पद सोहाया, कोमल काया, श्रीखरतर गच्छराया ।
लय लागी रंगी, रसि जिउं रमतउ, अलि मकरन्दइ पीणउ ।
भाग बली, गुणि वय जोवणि, जो विधि मारग लीणउ ।।३।।
ए मनि आणंदियइ, 'साधुकीरति', बोलइ ए गुरुशील उदारा रे ।
गुरु सूहवदे, कूखि मराला, श्रीवन्त साह मल्हारा रे ।।
सिरिवन्त मल्हारा, श्री जयकारा, रीहड कुलि सिणगारा ।
जग आधारा, नितु अविकारा, माणिकसूरि पटधारा ।
चउरासी गण महि, गणी निहाल्या, कोइ नहीं इणि तोलइ ।
चिरनन्दउ, जिणचन्द मुनीश्वर, 'साधुकीर्ति' इम बोलइ ।।३।।

उपाध्याय साधुकीर्ति रचित

५६. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

बनी है सद्गुरु की ठकुराई ।
श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु बन्दो, जो कुछ हो चतुराई ।ब.१।
सकल सनूर हुकम सब मानति, तै जिन्ह कुं फुरमाई ।
अरु कछु दोष नहीं दिल अंतरि, तिमि सबहीं मनि लाई ।व.२।
माणिकसूरि पाट महिमा बरी, ल्रइ जिण स्युं वितणाई ।
झिगमिग ज्योति सुगुरु की जागी, साधुकीरति सुखदाई ।ब.३।

वादी हर्षनन्दनोपाध्याय रचित

५७. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(राग–धन्याश्री)

नमो सूरि जिनचन्द दादा सदा दीपतउ, जीपतउ दुरजण जण विशेष ।
रिद्धि नव निद्धि सुख सिद्धि दायक सही,

पादुका प्रह समइ उठि देख ।न.१।
सधवट मोटिकउ बोल खाटयउ खरउ, शाहि सलेम जस कीध सेवा।
गच्छ चउरासी ना मुनिवर राखिया, साखीया सूरिज चन्द देवा ।न.२।
भाग सोभाग वरराग गुण आगला,जीवता कलियुगि जीव जाण्यउ।
अन्त लगि आतम धरम कारिज करी,
स्वर्ग पहुतां पछी सुर वखाण्यउ ।न.३।
खरतर सेवकां सुरतरु सारिखउ, कष्ट संकट सवि दूर कीजइ ।
'हर्षनन्दन' कहइ चतुर्विध श्रीसंघ,दिन दिन दौलति एम दीजइ ।न.४।

५८. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज–तेरे द्वार भगवान, खडा भक्त भर दे रे झोली)

गुरु चरण शरण मन धार भवि शिवसंपद पावो रे ।
दुःख दोहग दूर पलाय किरती यश जगमें अधिक सवाय।। भवि०।।टेर।।
वडली ग्राम श्रीवन्त शाह दीपे, गात्र रीहड ओशवाल ।
सिरिया देवी सति शिरोमणी, शील शुचि रखवाल रे-शील शुचि हो हो
रत्न कुक्षि जग भाण प्रगट भयो श्री सुलताणकुमार ।।भवि०।।१।।
शासन रसिक स्वभाव बाल, माणिक मुख बोधि पावे ।
सुमतिधीर नाम से दीक्षित,वज्र शील शुभ भावे रे–वज्र शील हो हो
शिथिलाचार से खिन्न मुनिश्री शुद्ध संयम चित्तधार।।भवि०।।२।।
बुद्धिनिधान शास्त्र पारंगत, चूडामणि सोहे ।
मुनिजन नायक सिह सरीखे, संघ सकल मन मोहे रे–संघ सकल हो हो
राउल जैसलमेर सकल संघ माणिकसूरि पट्ट थापे ।।भवि.।।३।।
सूरिमंत्र के साधन गुरु, जिनचन्द्र नाम अवधारी ।
शासन प्रभावना काजे कीनो,क्रियोद्धार भवपारी रे-क्रियोद्धार हो हो ।
शिथिलाचार हटावी मुनिजन कीना शुद्ध आचारी ।।भवि.।।४।।
सुधर्मा स्वामी पाट परम्परा–इगसठ में गुरु छाजे ।
असत्य मिथ्या प्ररूपक धर्मसागर मद भांजे रे - धर्मसागर हो हो
राजा प्रजा राव रंक सभी, गुरु दर्शन को तरसे ।।भवि०।।५।।

अतिशय संयम तप वलधारी, समता रस भंडारी ।
दरश पाय अकवर चित हरख्यो, जीव दया फरमाणी रे-जीव दया हां हो।।
अम्मावस को चान्द उगायो जिन शासन बलिहारी ।।भवि.।।६।।
वीर धर्म प्रभावना काजे, संयम बल प्रगटावे ।
वकरी संख्या तीन जताकर,शाहनशाह चमकावे रे–शाहनशाह हो हो
ओघा से टोपी ताडन कर, काजी मद चूर करावे ।।भवि.७।।
हुमायुं सुत गुरु संगत से, मधुर देशना पावे ।
संत महंत मुनीश की आशीस,पाने को तरसावे रे–पाने को हो हो
युगप्रधान पदवी से भूपित करतो शाहनशाह ।।भवि०।।८।।
श्रावक कर्मचन्द मंत्रीश्वर, धर्म वुद्धि वलहारी ।
गुरु आज्ञा शिर धरता करता, धर्मोत्सव अति भारी रे– धर्मोत्सव
हो हो वीर धर्म का गर्म समझ के,जनम कृतारथ कीना।।भवि०।।९।।
शत्रुंजय रक्षा की आज्ञा, शाह करग को देवे ।
शिवा सोगजी संघपति धन्य,खरतर वसी निर्मावे रे– खरतर वसी
संघ चतुर्विध साथ गुरु ने यात्रा की शुभ भावे ।।भवि०।।१०।।
साधु विडम्वना जहांगीर ने कीनी शाही हुकम से ।
द्रुतगति पाटन से गुरुवर आगरा पहुँचे झट से – आगरा हो हो
हुक्म शाह से रद्द कराया–चरचा भट्ट हराया ।।भवि०।।११।।
संवत पन्नर पंचाणुअे जन्मे, सोल चिडोत्तरे (१६०४) दीक्षा।
सोल वारोत्तरे आचारज पद,सितेर अनशन सिधारे–सिधारे हो हो
नगर विलाडा धन धन भूमि,समता शान्त रस भीना।।भवि०।।१२
युगप्रधान विन वीर धर्म की, गूढता कौन वतावे ।
दया धर्म उपनाम भीरुता ग्रंथी कौन हटावे रे–ग्रंथी कौन हो हो
त्रिशला कुंवर के नामी पटोधर दर्शन निर्मल देना ।।भवि०।।१३।।

५९. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

देखउ माई आसा मेरइ मन की;
सफल फली रे उलटि अंगि न माइ ।
सुजस जसु देसंतरइ रे, नव खण्डि दीपायउ नाम रे ।

गाम मोटी महिमण्डले, सब जन करइ प्रणाम रे ।१।
जीतउ श्री खरतरगच्छ राजीयउ, श्रीजिनचन्द मुणिंद रे।
मान मोड्यो कुमति तणउ, त्रिभुवन हुओ आनंद रे ।जी.२।
पाटणि भूप दुर्लभ मुखे, वरस दस सइ असी मानि रे ।
सूरिगण पमुह तिहां चउरासी, मठपति जीपी आसाणि रे ।जी.३।
दिवस सुभ थान पंचासरइ, करीय परणाम विसार रे ।
सूरि जिणेश्वर पामीयो, खरतर विरुद उदार रे ।जी.४।
संवत सोल सतरोत्तरइ, पाटण नयर मझार रे ।
मेली दरसण बहुलम्मत, ग्रन्थनी साखि माधार रे ।जी.५।
पूर्व विरुद उजवालियउ, साखि दाखइ सहु लोक रे ।
तेज खरतर सद्गुरु तणउ, ऋषिमती ते थयउ फोक रे ।जी.६।
रिग गती जे हुंतउ कंकली, बोलतो आल पंपाल रे ।
खम्ट कीधउ खरतर गुरे, जाणइ बाल गोपाल रे ।जी.७।
निलवट नूर अतिसउ घणउ, खरतर सींह सम जोड़ि रे।
जम्बुक रिगगता जे भिड़इ, जय किम पामइ सोइ रे ।जी.८।
माणिकसूरि पाटइ तपइ, रीहड कुल सिणगार रे ।
श्रीजिनचन्दसूरि गुणधा निलउ, सेवक जन सुखकार रे ।जी.९।

६०. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(दूहा सोरठा)

महा मुनीसर मुगुट मणि, दरसणीयां दीवाण।
चउरासी गछ सेहरो, सासण नो सुरताण ।१।
अतिशय आगर आदि लगि, झूठ कहूं तो नेमि।
जिम अकबर समझानीयो, तिम वलि साहि सलेम ।२।

(ढाल—जति नी)

पतिसाहि सलेम सटोप, कीयो दरसणि सुं कोप।
ए कामणगारा कामी, दरबार थी दूर हरामी ।३।
एकन कुं पाग बंधावौ, एकन कुं बांधि मंगावौ ।
एकन कुं देसवटो दीजै, एकन कुं पखालि कीजे ।४।

ए साहि हुकम सांभलीया, तसु कोप थकी खलभलीया।
जजमान मिली संयतना, दर हाल करै गुरु जतना ।५।
केइ नासि हींदू पुठि पडीया, केइ जाइ मेवासै चढीया ।
केई जंगल जाई बैठा, केइ दौड़ि गुफा मांहि पैठा ।६।
केइ नासता जवने झाल्या, ते आणी भापसी घाल्या ।
पाणी नै अन्न ज पाल्या, वैरीडां वैरज साल्या ।७।
इम सांभलि सासण हीला, जिनचन्द सूरीस सुंसीला ।
गुजरात धरा थी पधारइ, जिनशासन वान वधारइ ।८।
अति आसति वलि गुरु चाली, असुरां भय दूरै पाली ।
उग्रसेनपुरइ पउधारइ, पूज्य साहि तणै दरवारइ ।९।
पूज्य देखि दीदारैं मिलीया, पतिसाह तणा कोप गलीया ।
गुजरात सुं कहो कब आए, पतिसाह गुरु वतलाए ।१०।
पतिसाह कुं देण आसीस, हम आए साहि जगीस ।
काहे पाया दुक्ख सरीर, जाओ जौप करो गुरु पीर ।११।
इक साहि हुकम जो पावां, बंदीयडां बंद छोडावां ।
पतिसाहि खइरात सुं कीजैं, दरसणीयां दूउ दीजैं ।१२।
पतिसाहि हुतो जे रूठो, पूज्य भागबलइ ते तूठो ।
जाओ विचरउ देस मझारि, तुम्ह फिरतां कोइ न वारइ ।१३।
धन धन खरतर गछ राया,दरसणीयां दंद छुडाया ।
पूज्य सुज ।। १४ ।।

अपूर्ण

६१. यु. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(सोरठ–तेवडा)

श्री जिनचन्दसूरि दयाल, मुझ पर महेर करो मयाल ।।
जन सुनि ढरंत सहज ही, दुःख हरत ततकाल ।।१।।
कृपा मौजु दीन पर किये, वरद परम कृपाल ।।
दिल्लीपति होइ कर्यो उत्सव, गुरु प्रवेश तिहिं काल ।।२।।

पद्म धनपालादि कितने ही, वेग किन निहाल ॥
हम हुँ पर जब परत संकट, देत ततखण आवी टाल ॥३॥

६२. जिनचन्द्रसूरि स्तवन

सरस वचन सरसति सुपसायइ, गाइसुं श्री गुरुराय री माई ।
युगप्रधान जिनचन्द यतीश्वर, सुर नर सेवे पाय री माई ।
कलियुग कल्पवृक्ष अवतरियो, सेवक जन सुखकार री माई ।१।
जिनशासन जिनचन्द तणो यश, प्रतपे पुहवि मझार री माई ।
प्रह सम नित नित श्री गुरु प्रणमो,श्री खरतर गणधार री माई।क.२।
संवत पनर पंचाणुं वरसे, रीहड कुल मनु भांण री माई ।
श्रीवन्त शाह गृहणी सिरियादे,जनम्या श्री सुरताण री माई ।क.३।
संवत सोल चडोत्तर वरसे, लीधो सयम भार री माई ।
जिनमाणिक्यसूरि सइंहथि दिक्षा,शिष्यरत्न सुविचार री माई।क.४।
लघु वय बुद्धि विनाणे जाण्यो, श्रुतसागर नो सार री माई ।
अभिनव वयरकुमर अवतारैं, सकल कला भण्डार री माई ।क.५।
वखत संयोगे सोल बारोत्तर, जेसलमेर मझार री भाई।
पाम्यो सूरीश्वर पद प्रकट्यो,श्रीसंघ जय जयकार री माई ।क.६।
उग्र विहार आदरियो श्रीगुरु, कठिन क्रिया उद्धार री माई ।
चारित्रपात्र महन्त मुनीश्वर, रत्नत्रय आधार री माई ।क.७।
सतरोत्तर वरसे पाटण में, अधिक वधारी माम री माई ।
च्यार असी गच्छ साखै खरतर,विरुद दीपायो नाम री माई ।क.८।
हथणाउर सौरीपुर नामे, तीरथ विमलगिरिन्द री माई ।
आबूगढ गिरनार सिखर तिहां,प्रणम्या श्रीजिनचन्द री माई ।क.९।
आरासण तारंगे तीरथ, राणपुरै गुरुराज री माई ।
वरकाणा संखेश्वर ग्रामे, प्रणम्या श्रीजिनराज री माई ।क.१०।
अवर तीर्थ पण श्रीगुरु भेट्या, प्रतिवोध्यो पातिसाह री माई ।
अकबर अधिको आसति निरखी,दीधौ मोटौ लाहरी माई ।क.११।
खम्भायत नी खाड़ी केरा, राख्या जीव अनेक री माई ।

वरस एक लग श्रीगुरु वचने,पाम्यो परम विवेक री माई। क.१२।
सात दिवस लगि नित आणा में, वरतावी अमारि री माई ।
अकवर अवर अपूरव कारिज,कीधा गुरु उपकार री माई ।क.१३।
पंच नदी पति परतिख साध्या, माणभद्र विख्यात री माई ।

– अपूर्ण –

जिनहरिसागरसूरि रचित

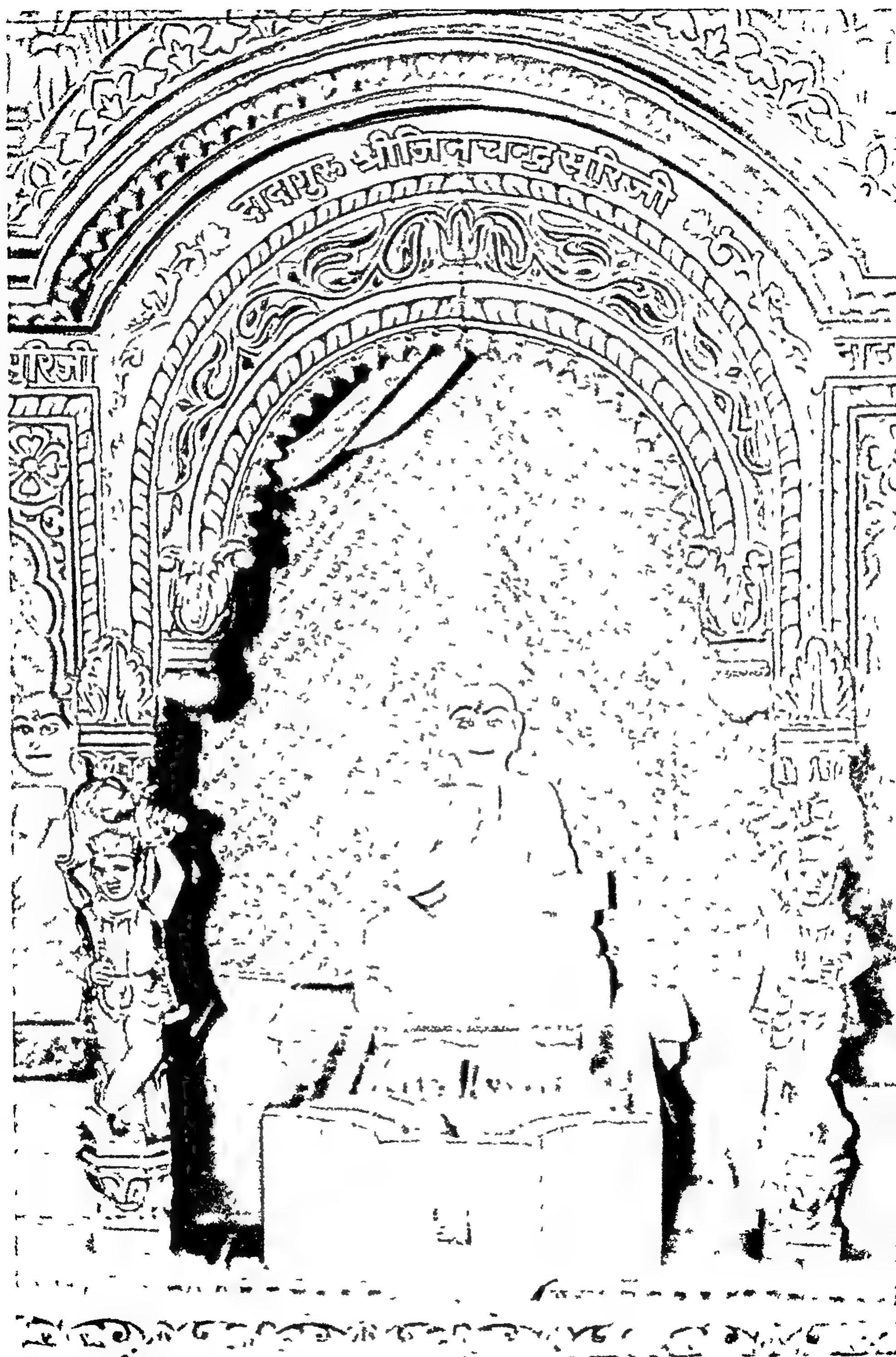
६३. यु. जिनचन्द्रसूरि आरती

जय जय गुरु राया, पुण्योदय से पाया ।
ओम् जय जय गुरु राया ।।टेर।।

अकबर भाव अहिंसक हेतू, सब जग सुखदाया ।
आरती गुरु गुण आरतीकारी, गावो तज माया ।
ओम् जय जय गुरुराया ।।१।।

परम प्रभावक सद्गुरु, श्रावक कर्म योग गाया ।
सिद्ध और साधक की जोड़ी कार्य सिद्ध पाया ।।
ओम् जय जय गुरुराया ।।२।।

जग ठाम गुरु थुंभ विराजे, भवी पूजे पाया ।
जिनहरि पूज्य परम गुरु पूजो मन चाह्या।।
ओम् जय जय गुरुराया ।।३।।


श्रीजिनचन्द्रसूरिजी

पंचम खण्ड

महो. चन्द्रप्रभसागर रचित

१. जिनदत्त जिनचन्द्रसूरि स्तवन

(तर्ज – एक, दो, तीन)

रुन-झुन झूम नाचो सभी श्रावक, रुन-झुन झूम नाचो सभी ।
झूम-झूम गाओ सभी बार-बार, खुशियो की छाई बहार ।।
होते ना दुनिया मे गुरुवर अगर, लुट जाती दुनिया न मिलती डगर ।
होता समन्दर मे गहरा भँवर छा जाता जीवन पे कैसा कहर ।
पाया मगर, गुरुओं से जो स्नेह-प्यार ।। खुशियो ...... ।
दादा गुरु खुशियाँ बाँटे यहाँ, मस्ती मे झूमे ये सारे जहाँ ।
पूजा का केशरिया रंग बहा, दिल का समन्दर ये लहरा रहा ।
चरणो से अमृत झरे, बेशुमार ।। खुशियो ...... ।
भक्ति का हम सबने प्याला पिया, मस्ती के आलम मे झूमे
जिया.
सांसो की मुरली मे तू ही बसा,सब तेरे चरणो पे अर्पित किया ।
करते हैं हम मिन्नंते, ओ दातार ।। खुशियो ...... ।
दिन बने हफ्ते रे हफ्ते महीने, महीनें बन गये साल ।
भक्ति के रंगो मे डूबे रहे, रखना हमारा खयाल ।
तेरे ही रंगो मे रमते है, दत्त गुरु चन्द्र गुरु जपते है ।
सोचे सभी काम बनते है ।
नाचो गाओ झूमो आओ, भक्ति के झरने झरते है –
रुन-झुन झूम नाचो सभी श्रावक ।

विजय रचित

२. जिनदत्तसूरि–जिनचन्द्रसूरि स्तवन

दादाओ-दादा, श्री जिनचंद ओ शासन के सितारे,
आये है हम श्रीदत्त, गुरुजी चरणों में तुम्हारे,
तुमने ही लज्जा दी, अजैनी जैन बनाये,
है संघ पर अगणित, गुरुजी उपकार तुम्हारे। आये है हम ...।१।

कई सूर सूरीश्वर बस किये, मंत्रादि के ज्ञाता,
जाहिर जगत में खूब, चमत्कार तुम्हारे। आये हैं हम...।२।
जब जब तुम्हारे भक्तों पर, उपसर्ग आये थे,
तब तब तुम्हीं ने संकट से,सब को ही उबारे। आये हैं हम...।३।
हम भी शरण में आये हैं, नैया का तार दो,
दुखियों के नाथ आप हो, जीवन को सहारे। आये हैं हम...।४।
हो ज्ञानमय उपयोग, ऐसा आत्म को जाने।
पद पंकजों में 'विजय' की,अरदास को सुन लीजिये।आये हैं हम...।५।

३. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि कवित्त

विघ्नहरण मंगलकरण, श्री जिनदत्तसूरिन्द ।
कुशल गुरु का थानका, कुशल करो गाइत्त ।
बालकने प्रतिपालज्यो, कहि ज्यों ताइत्त ।
श्री गुरुदेव प्रसादने, होत मनोरथ सिद्ध ।
जिन घन तरुवर वेल, फूल फूलन की वृद्धि ।
कल्पवेलि चिन्तामणि, कामधेनु गुण खान ।
अलख अगोचर अगम गति, चिदानन्द भगवान।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

४. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – जे मे राकृतथा ....)

तेरे दरपे खड़ा, अपनी आन अड़ा
दुःख पाऊं दादा कह दो कहां मैं जाऊं –टेर–
सब स्वारथ के है साथी, साथ देते न मैं हुं अनाथी ।
मैंने पाया तुझे, है सुनाया तुझे, दुःख पाऊं –दादा–१
तेरी कीर्ति कथायें बड़ी हैं, मेरे सिर पे विपदाएँ खड़ी हैं।
दादा दूर करो, कुछ ध्यान धरो, दुःख पाऊं–दादा–२
डूबी नैया को तुमने तिराई, मरी गैया को तुमने जिलाई ।
डूबने मरने न दो, लाज खोने न दो, दुःख पाऊं –दादा–३

चाहे मानो न मानो कहूंगा, दादा दास तुम्हारा रहूंगा ।
चाहे जल्दी करो, चाहे देरी करो, दुःख पाऊं —दादा—४
गुण गाते हरि 'कवीन्द्रा', गुरु काटो मेरा भव फंदा ।
दादा दत्त कुशल, करो काम कुशल, दुःख पाऊं —दादा—५

जिनरंगसूरि रचित

५. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि स्तवन

(राग—बेलाउल)

दादो सेवकां सुख पूरइ ।
श्री जिनदत्त-कुशल गुरु पूजो, केसर अगर कपूरइ ।दा.१।
श्री खरतरगच्छ नायक लायक, चित की चिन्ता चूरइ ।
भाव भगति मन जो नर ध्यावइ, तिणकुं होइ हजूरइ ।दा.२।
नाम मन्त्र मन मांहि जपतां, संकट नासइ दूरइ ।
'जिनरंगसूरि' प्रभु के गुण गावत, दीपइ अधिकइ नूरइ ।दा.३।

जिनहर्षसूरि रचित

६. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि स्तवन

(देशी—पालवीया पास जी रे एहनी री)

श्रीजिनदत्तसूरीसरु रे, साहिबा श्री जिनकुशल सुरिन्द ।
दरस मोहि दीजिये।
गुरु समरण संकट हरे रे, साहिबा दरसण परमाणंद ।द.१।
तुम्ह पद दरसण द्रिग हसे रे, साहिबा जिम लखि चंद चकोर ।द.।
सुगुरु सुगुण गरजित सुणी रे, साहिबा नाचत मुझ मन मोर ।द.२।
इक ताहरी गुरुराज जी रे, साहिबा पैधारी निरधार ।द.।
सद्गुरु मूरत ऊपरे रे, साहिबा वारी जाऊँ वार हजार ।द.३।
सुरवर विषय विलास में रे, साहिबा मगन भया ततकाल ।द.।
निज पदनी प्रतिपालना रे, साहिबा छोडी परम दयाल ।द.४।
निज गण निज पदनो उदो रे, साहिबा करिये हृदय विचार ।द.।
'श्रीजिनहर्षसूरीसनी' रे, साहिबा एह अरज अवधार ।द.५।

साध्वी तिलकश्री रचित

७. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – नाचे छे आज)

आव्यो छुं आज तारे द्वार, भक्तिनो थाल भरी ।
श्रद्धाना फूल अपार, हैयामां हेत भरी –टेर–
दत्त कुशल गुरुराजनी, महिमा अपरंपार ।
जगमा न जोया कोई, भवजल-तारणहार ।
पुण्ये मल्या गुरुराज, मानुं मारी धन्य घड़ी ।।१।।
सत्य अहिंसा धर्मनी, ज्योत जगावी जयकार ।
नूतन जैन बनावीया, एक लख तीस हजार ।
आत्मानो तेज अपार, मोक्षाभिलाष खरी ।।२।।
साचे मन समरे सदा, फले मनोरथ माल ।
रोग शोक दूरे टले, घर घर मंगल माल ।
धर्मध्वजा फरकाय, जय जयकार करी ।।३।।
भक्तवत्सल करुणानिधि, भव भव देजो साथ ।
संत विचक्षण हीरलो, नाम अमर जगनाथ ।
सुनो 'तिलक' अरदास, आव्यो छुं आश धरी ।
आव्यो छूं आज तारे ।।४।।

साध्वी तिलकश्री रचित

८. जिनदत्त - जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – खम्मा मारा)

खम्मा मारा ज्ञानी गुरुराज, त्याग केरी वांसड़ी वगाड़ी ।
शब्द बिना हुं केम करी बोलुं, उपमा शुं आपूं हैयु शुं खोलुं
जीवन तारु अणमोल, त्याग केरी वांसड़ी वगाड़ी ।।१।।
सूर्य कहुं तो तापे तपावे, चंद्र कहुं तो कलंक देखाये ।
सागरना नीर खारा होय, धर्मनी ज्योत जगावी ।।२।।
।नु।' जीवन गुरुजी तमारुं, दत्त कुशल नाम लागे छे प्यारुं ।

हैयुं मारुं झुकी झुकी जाय, धर्मनी ज्योत जगावी ॥३॥
श्रद्धानो दीवडो दिलमां प्रगटावजो,करुणा नजरथी भक्त निहारजो।
आतम निर्मल थाय, धर्मनी ज्योत जगावी ॥४॥
शध्द समकितना साथिया पुराव्या, भाव भक्तिना तोरण बंधाव्या । आवो पधारो गुरुराज, धर्मनी ज्योत जगावी ॥५॥
भूल चूकनी हूं क्षमा मांगू छुं, गुरु चरणमां जीवन अर्पू छुं ।
'तिलक' हैयाना हार, धर्मनी ज्योत जगावी ॥६॥

साध्वी तिलकश्री रचित

९. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज : अखण्ड सौभाग्यवती)

मारा मनमां वसो गुरुराज, खसो नहीं एक घड़ी ।
पल पलमां रटुं गुरु नाम, विसरुं नहीं एक घडी –टेर–
मारा अवगुण सामुं जोशो नहीं, अति पामर पापी अज्ञानी सही ।
भवतारक जीवन प्राण, विसरुं० ॥१॥
हूं छूं दीन अनाथ सनाथ करो, मारो हाथ ग्रहो भवपार करो ।
तारा शरणे आव्यो छे नादान, विसरुं० ॥२॥
जिनदत्त कुशल आधार खरो, भव दरियें डूबी नैया पार करो ।
आपो सम्यग् दर्शन ज्ञान, विसरुं० ॥३॥
भक्त हैये वस्या भक्ति रंग लाग्यो,मिथ्या रग गयो आतमराम जाग्यो
अंत समय रहे तारुं ध्यान, विसरुं० ॥४॥
मल्या संत विचक्षण उपकारी, धन्य धन्य जीवन थयुं जयकारी ।
त्रिभुवनमां 'तिलक' समान, विसरुं० ॥५॥

साध्वी तिलकश्री रचित

१०. जिनदत्त – जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – शाम तेरी बंशी)

शीतल छे दादा गुरुवरनी छांव,

तारी पासे आवुं, मारा दुःख दूर थाय।
आव्यो तारा चरणे, गुरु करजो सहाय,
जीवननी नैया मारी क्यांये ना अथडाय -टेर-
हो..... गुरु तारी प्रीतिना गीतो हुं गाऊं,
भक्तिनी मस्तीथी तुझने मनाऊं,
याद करुं ..... तुझने मन मारुं मलकाय -तारी- १
हो ..... अंतरथी गुरुवरने जे संभाले,
कष्ट एना सवलाये दूर निवारे ।
दुनियानी ..... मायागां ते ना ल्पटाय -तारी- २
हो ..... मधुर कंठे भावभर्या कुशल गुण गावे,
आधि अने व्याधि एने कोई ना सतावे,
गुरु तारा ..... नयनोगां अमी उभराय -तारी- ३
विचक्षण मंडलना कोड पूरा करजो,
शिशु 'तिलक' नी आश पूरी करजो,
दत्त कुशल भक्तिथी हैयुं छलकाय -तारी- ४

पंकज नाहटा रचित

११. जिनदत्त - जिनकुशलसूरि स्तवन

हे मेरा जीवन साफल्य, दादा गुरु के दर्श किये।
शुभाशीष पाकर के मैंने, भव-भ्रमणा को दूर किये ।है. १ ।
मानव जीवन लाखों पाने, पर वीतरागता प्राप्तिजहाँ ।
काल लब्धि के विन आये, सद्बोधि उत्पन्न कहाँ । है. २ ।
चरण कमल मैं शीष फुका, गुरुदेव कृपा फल प्राप्त किया ।
भाव दयासागर पद 'पंकज' पा सदा सन्मार्ग लिया ।
सम्यक् मारग पा भव वन्धन शेष किये । हे. ३ ।

महिमराज गणि रचित

१२. जिनदत्त - कुशलसूरि स्तवन

(राग – नट)

दीपे वडली मे गुरु थांरो देहरो ।।दीपे०।।टेर।।

जिहां जिनदत्त कुशल गुरु मोहत,खरतरगच्छ को सेहरो ।।दीपे०।।१।।

रमणी रंग वधावो सुगुरु को, मस्तक धरणी को वेवरो ।।दीपे०।।

पाटण संघ सहित जिनचन्द सूरि,यात्रा करत वांध्यो नेहरो।।दीपे.।।२।।

जाकूं सानिधकारी सद्गुरु, कवण ग्रहे वांको छेहरो ।।दीपे०।।

'महिगराज' ऊपर सु निजर करो,वूठो सुधारस सेहरो ।।दीपे०।।३।।

महिमाभक्ति रचित

१३. जिनदत्त - जिनकुशलसूरि स्तवन

र.सं.१८८५

(राग–कहरवा)

वन्दो भवि नित प्रति सूरिपति ।वं.।

मिथ्यातम गुरु दरसण से भागे, उदय हुवे ज्यूं सूर्य द्युति ।वं.१।

कामित पूरण संकट चूरण, चरण कमल नमें छत्रपति ।वं.२।

कलिजुग मे गुरु परचा पूरे, तिण सव पूजे साधु सती ।वं.३।

वालूचर गुरु थुम्भे सोहे, गुरु श्री जिनदत्त सूरिपति ।वं.४।

श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिव, संघ सकल पूजे शुध्दमती ।वं.५।

सवत अठार पच्यासी वर्षे, ज्येष्ठ सुकल कवि तीज तिथि ।वं.६।

'श्रीजिनहर्षसूरीश्वर' राज्ये,दास करत 'महिमाभक्ति' यति ।वं.७।

मुनि महेन्द्रसागर रचित

१४. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – मैं तो जिगर से चाहती हूँ, वचपन से तेरी प्रीत)

जिनदत्त कुशल गुरु वन्दन करके, मेरा मन हरषाय ।।टेर।।

लोहावट नगर विराजे, शुभ कीर्ति जग में गाजे ।।

गुरु तीन रतन से छाजे, दैविक वाजिंत्रों वाजे रे,

सुर नर वर दर्शन आय ।। जिनदत्त०।।१।।
गुरु दिव्य शक्तिधारी, सर्वोत्तम गुण अधिकारी ।।
गुरु महिमा है अति भारी, जय २ वंदे नर नारी रे ।।
शान्ति निकेतन पाय ।। जिनदत्त०।।२।।
गुरु सेवा से सुख पावे, दारिद्र निकट नहीं आवे ।।
सन्ताप सकल भग जावे, मुक्ति कमला मिल जावे रे ।।
सब सज्जन गुण को गाय ।। जिनदत्त०।।३।।
गुरु सुख शान्ति से भरिया, संसार समुद्र से तरिया ।
निर्मल आनन्द को वरीया, फिर सखि समता से रमिया रे ।।
'महेंद्रो' के मन भाय ।। जिनदत्त०।।४।।

महो.ऋद्धिसार रचित

१५. जिनदत्त – जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज – आपे चालो सहेल्यां–शत्रुंजय भेटवा है)

चालो चालो हे सहेल्यां सद्गुरु पूजवा है ।।चालो०।।टेर।।
सद्गुरु राजे बागां मांह, मच रही केल आम्ब की छांह।
सदगुरु म्हारी पकड़ी बांह ।।चा०।।१।।
खुल रहा चम्पा चमेली कन्द, खिल रहा मरुआ और मुचकुन्द ।
चल रही शीतल पवन सुगन्ध ।।चा०।।२।।
जिस में जल के चले फुंवार, चिहुं दिशि भमरा करे गुंजार ।
गह मह मच रही सद्गुरु द्वार।।चा०।।३।।
गुरु पर चमर ढुले लख चार, शिर पर तीन छत्र की बार ।
झिगमिग ज्योति जगे दरबार ।।चा०।।४।।
विच में शोभे दीनदयाल, पल में कर देते हैं निहाल।
सद्गुरु भक्तों के प्रतिपाल ।।चा०५।।
सझलो सोले ही सिणगार, मुखड़ा चन्द वदन आकार ।
गावो गुरु गुण की ललकार ।।चा०।।६।।
लीजो केशर घस घनसार, जिसमें कस्तूरी है सार।
चोवा चन्दन अपरंपार ।।चा०।।७।।

पूजो दत्त कुशल गण इन्द, पूजन करतां सुख आनन्द ।
बगसे लीला लहर समन्द ॥चा०॥८॥
गच्छपति जिनचारित्रसूरिन्द, पाठक 'राम' करे गुण छन्द ।
भागे दुश्मन दोषी फन्द ॥चा०॥९॥

म. ऋद्धिसार रचित

१६. जिनदत्त-जिनकुशलसूरि स्तवन

(तर्ज—पास पियारो लागे प्यारो)

दत्त कुशल गुरु सुरतरु, भवितारण वालो रे,
चतुर शिव पंथ निहालो ॥टेर॥
शुद्ध आचारी खरतरां, सब वन्दन चालो रे ॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म में, गयो अनन्तो कालो रे ॥च०॥१॥
नरक निगोद में फंस, दुःख मरण उचालो रे ॥
करत निर्जरा अकाम से, बहि रास रभालो रे ॥च०॥२॥
बिकलेंद्रि का भव कर्या, केई संख्या कायालो रे ॥
पुण्य संयोगे आवियो, नर भव सुकमालो रे॥च०॥३॥
निद्रा विकथा विषय में, व्यापक विकरालो रे ॥
भक्षाभक्ष न जाणिया, बिन ज्ञान गोटालो रे ॥च०॥४॥
सुकृत वस सद्गुरु मिल्या, अनुभव उजियालो रे ॥
काल अनादि संग को, मिथ्यामति टालो रे ॥च०॥५॥
तत्व पिछाना सत्य का, तज वन्ध जंजालो रे ॥
शुद्ध दरशण शुद्ध ज्ञान से, शुद्ध विरति पालो रे ॥च०॥६॥
पूजन कर गुरुदेव की, समकित उजवालो रे ॥
चरण शरण पाठक भणी, 'ऋद्धिसार' निहालो रे ॥च०॥७॥

महो. ऋद्धिसार रचित

१६ जिनदत्त कुशल सूरि स्तवन

(तर्ज - आपे चालां हे सहेल्यां-शत्रुंजय भेटवा है)

चालो चालो हे सहेल्यां सद्‌गुरु पूजवा है ।।चालो.।।टेर।।
सद्‌गुरु राजे बागां मांह, मच रही केल आम्ब की छांह ।
सद्‌गुरु म्हारी पकड़ी बांह ।। चा०।। १।।
खुल रहा चम्पाचमेली कन्द, खिल रहा मरुआ और मुचकुन्द।
चल रही शीतल पवन सुगन्ध ।। चा ०।। २।।
जिस में जल के चले फुंवार, चिहुं दिशि भमरा करे गुंजार।
गह मह मच रही सद्‌गुरु द्वार ।। चा ० ।। ३।।
गुरु पर चमर ढुले लख चार, शिर पर तीन छत्र की बार ।
झिग-मिग ज्योति जगे दरबार ।। चा ० ।। ४।।
विच में शोभे दीन दयाल, पल में कर देते है निहाल ।
सदगुरु भक्तों के प्रतिपाल ।। चा ० ।। ५।।
सझलो सोले ही सिणगार, मुखड़ा चन्द वदन आकार । गावो
गुरु गुण की ललकार ।। चा ०।। ६।।
लीजो केशर घस घनसार, जिसमें कस्तूरी है सार ।
चोवा चन्दन अपरंपार ।। चा ०।। ७।।
पूजो दत्त कुशल गण इन्द, पूजाः करतां सुख आनन्द ।
बगसे लीला लहर समन्द ।। चा ० ।। ८।।
गच्छपति जिनचारित्र सूरिन्द, पाठक राम करे गुण छन्द ।
भागे दुश्मन दोसी फन्द ।। चा ०।। ९ ।।

महो. ऋद्धिसार रचित

१७ जिनदत्त - कुशलसूरि स्तवन

तर्ज - पास पियारो लागे प्यारो

दत्त कुशल गुरु सुरतरु, भवितारण वालोरे,
चतुर शिव पंथ निहालो ।। टेर ।।
शुद्ध आचारी खरतरा, सब वन्दन चालो रे ।।
कुगुरु कुदेव कुधर्म में, गयो अनन्तो कालो रे।।च०।।१।। नरक-
निगोद में फंस रह्यो दुःख, मरण उचालो रे ।
पुण्य संयोगे आवियो, नर भव सुकमालो रे ।। च०३।।
निद्रा विकथा विषय में, व्यापक विकरालो रे।।
भक्षाभक्ष न जाणिया, बिन ज्ञान गोटालो रे ।। ४।।
सुकृत वस सद्गुरु मिल्या, अनुभव उजियालो रे ।।
काल अनादि संग को, मिथ्या मति टालो रे ।। च० ५।।
तत्व पिछाना सत्य का, तज बन्ध जंजालो रे ।।
शुद्ध दरशण शुद्ध ज्ञान से, शुद्ध विरति पालोरे ।।च० ६।।
पूजन कर गुरुदेव की, समकित उजवालो रे ।।
चरण शरण पाठक भणी, 'ऋद्धिसार' निहालोरे ।।च०७।।

महो. ऋद्धिसार रचित

१८ जिनदत्त - कुशलसूरि स्तवन

तर्ज - तुम तो भले विराजोजी

धर्म कूँ अधिक दीपायाजी, मेरे जिन शासन सिणगार।।ध०।।
तुम तो भले विराजोजी गच्छ चौरासी सिरदार।।
संघ में भले विराजोजी ।। संघ ० ।। टेर ।।
केई सूरि भये धर्म प्रभावक, उन में तुम अधिकाई ।।
सब जल में शीतलता दरसे, गंगा नीर बड़ाई । ध.सं.१।।
तारागण मे चन्द विराजे, देव सभा मे इन्द्र ।।

'दत्त' कुशल गुरु संघ में राजे, तेज प्रताप दिनेन्द्र ।।ध.सं.२।।
कमला कर में लक्ष्मी राजे, असुरों में नागेन्द्र ।।
खरतरगच्छ में गुरु विराजे, ग्रहगण में जिनचन्द ।।ध.सं.३।।
मृगपति देखत पशुगण नासे, निन्हव ज्यूँ भग जाय ।।
'दत्त' 'कुशल' की वाणी सुधारस,सुविहित मार्ग दिखाय।।ध.सं.४।।
जिन शासन के उदय करण को, आतम बल दरशाया ।।
राजन विप्र माहेश्वर जणकूं, श्रावक धर्म धराया ।।ध.सं.५।।
देश देश से श्री संघ आवे, मेला खूब भरावे ।।
केशर चन्दन पुष्प धूप से, पूजा भक्ति रचावे ।।ध.सं.६।।
इस भव आश्री कष्ट मिटा कर, वांच्छित पूरण कीना ।।
सुरनर सुख श्रावक व्रत साधन शिवपुर-सा धन दीना।।ध.सं.७।।
अैसे गुरु कूॅं जो नित पूजे, इक मन सेती ध्यावे ।।
सर्वसिद्धि उसके घर प्रगटे, 'राम' प्रेम से गावे ।।ध.सं.८।।

१९ जिनदत्त-कुशलसूरि स्तवन

तर्ज – गजल

मुल्क में मशहूर यारो, सिंध में लाहौर है ।।
हाल यह बीता था जहां पर,गुरु महिमा जोर है ।।मु.१।।
अेक लड़की थी सोनार की, सौबत रही बनियात की ।।
बालपन से लौ लगी है,दत्त कुशल गुरु ध्यान की।।मु.२।।
खूबसूरत वो पीर थी, नूर उसका चान्द था ।।
खान इक आशक हुआ, वो काबुली बेईमान था ।।मु.३।।
रात दिन फिरता रहे वो, उस परी की ताक में ।।
अकेली कब पाऊं इसको, दिल मेरा मुस्ताक है ।।मु.४।।
नेक थी वो खानदानी, शील से दिल पाक है ।।

क्यों फिरे हेवान नाहक, इस काम की तलाक है ।।मु.५।।
इक दिन अकेली सोम-पूनम, थी चली गुरुद्वार पे ।।
काबुली छकबक में था, पकड़ी उसे उस बार पे ।।मु.६।।
छोड़ दे रे असुर मुझ को, जान खतरा खायगा ।।
मान काफर बात मेरी, पीर दादा आयगा ।।मु.७।।
कहां है वो पीर तेरा, जबर वक्षकारी करुं ।।
अै गुरु ! कर सहाय मेरी, इस असुर से मै डरुं ।।मु.८।।
शील मेरा खोयगा यह, इस वखत तूं कहां गया ।।
राखो अब मर्यादा मेरी, सुनके अर्जी कर दया ।।मु.९।।
लेके बावन वीर जोगन, आये गुरु आसमान से ।।
वीर ने पकड़ा असुर को, चोरंग किया आसान से।।मु.१०।।
गुरु से कर जोड़ कहती, धन्य गुरु अब आप हो ।।
मेरी रक्षा ते करी ओ, तुम मेरे मां बाप हो ।।मु.११।
वीर ने पहुॅचाई घर पर, कहा जो आफत पड़े।।
याद करते होंगे हाजर, हुक्म से हाजर खड़े ।।मु.१२।।
दास तेरा अर्ज करता, आप गुरु साक्षात है ।
दीनबन्धु नाथ मेरा, विश्व मे प्रख्यात है ।।मु.१३।।

क्षमाकल्याणोपाध्याय रचित

२० जिनदत्त– जिनकुशल – जिनभद्रसूरि स्तवन

(देशी– धीज धरे सीता सती रे लाल)

श्रीजिनदत्तसूरीसरु रे लाल,गुण गिरुआ गणधर रे सुज्ञानी।
जुगप्रधान जग परगडारे लाल, समरतां सुखकार रे सुज्ञानी ।१।
इग्यारे बत्तीस मे रे लाल, जास जनम जयकार रे सुज्ञानी ।
इगताले संयम लीयो रे लाल, गुहत्तरे पद धार रे सुज्ञानी ।२।

बहुल भव्य प्रतिबूझव्या रे लाल, लीधो लाभ अपार रे सुज्ञानी ।
जिनशासन उजवालिया रे लाल,पंचम काल मझार रे सुज्ञानी।३।
बारे से इग्यार में रे लाल, सुदि आषाढ सुभास रे सुज्ञानी ।
इग्यारस अणसण करी रे लाल,पहुंता सुर आवास रे सुज्ञानी।४।
तास पट्टोधर परगड़ारे लाल,मणिधर जिनचन्द्र सूरि रे सुज्ञानी ।
जिनपति गुरु तरु पटोधरु रे लाल,
तदनु जिनेश्वरसूरि रे सुज्ञानी ।५।
जिनप्रबोधसूरिश्वरु रे लाल, श्रीजिनचन्दसूरिन्द रे सुज्ञानी ।
तार पटोधर बहुगणी रे लाल,श्रीजिनकुशल मुणिंद रे सुज्ञानी।६।
तेरे सेंतीसे समेरे लाल, जास जनम सुपवित्र रे सुज्ञानी ।
सैंताले संयम लीयो रे लाल,छाजेड़ां कुल छत्र रे सुज्ञानी ।७।
पाटणपुर सतहुत्तरे रे लाल, सुगुरु कथा पदधार रे सुज्ञानी।
देरावर निवयासिये रे लाल, पहुंता स्वर्ग मझार रे सुज्ञानी ।८।

(ढाल – श्री चन्दाप्रभु पाहुणो रे एहनी)

तास परम्पर में भया रे श्री जिनभद्रसूरिंद रे ।
गुणवंता गुरु प्रणमिये रे, दीपे जेम दिणंद रे ।९।
ठांम ठांम पुस्तक तणा रे, थाप्या जिणभंडार रे ।
पनरेसे चउदोत्तरे रे, कुम्भलमेर मझार रे ।१०।
करि अणसण सुरलोक मे रे, पहुंता श्री गुरु भाण रे ।
गुण गावे सद्गुरु तणां रे, साध 'क्षमाकल्याण' रे ।११।

भद्रमुनि (सहजानन्दघन) रचित

२१ जिनदत्त-कुशल-चन्द्रसूरि स्तवन

ओम् ह्रीं दत्त कुशलचन्द्रसूरि ।

युगप्रधान शक्तिभूरी, ध्यावुं दादा सहज नूरी ।

भिन्नता विभाव चूरी, करो संघ विघन दूरी । ओम्१।
डाकिनी शाकिनी प्रेत भूत, यक्ष राक्षसो विद्युत ।
करत दूर काल दूत, समरत नाम मन्त्र युक्त । ओम्२।
अमने युगप्रधान आपो, शासन ना सहु संकट कापो ।
श्री जिनरत्न त्रयी आलापो,भद्र मंगल घर घर थापो ।३।

महो. ऋद्धिसार रचित

२२ जिनदत्त कुशल चन्द्रसूरि संवाद स्तवन

[स्त्री भरतार - संवाद]

(दोहा)

बुद्धिमती तूं श्राविका, भर्म भुलानी आज ।।
कहां चली मेरी प्रिया, क्यूं तज के गृह काज ।।१।।
सोमवार पूनम दिवस, मै जाती गुरुद्वार ।।
आप पधारो कन्तजी, ज्यूं पावो भवपार ।।२।।
पत्थर पूजन क्यों चली, कहां तेरे गुरु राय ।।
सुख भोगो संसार का, यह परतिख सुखदाय ।।३।।
देव गुरु के दरश बिन, मिले न सुख संसार ।।
नास्तिक बुद्धि त्याग कर, गुरु भक्ति लो धार ।।४।।

तर्ज – मांड

स्त्री – मेरे कान्त सनेही अरजी अेही, पूजन दो गुरुराज।।
भरतार–तू सुन्दर प्यारी है मतवारी, नही परतिख गुरुराज।।
स्त्री – कुगुरु के भरमाये प्रीतम, ऐसी मत करो बात ।।
दत्त, कुशल, जिनचन्द्र सूरीश्वर, दीप रहे साक्षात रे ।।मेरे.।।
भ.– धातु काष्ट पाषाण की रे, मूरती चरण देखात ।।
भोले नर कई भरम गये रे । कहते गुरु साक्षात रे ।।तू.सु.।।

स्त्री—किसको सूझे आरसी पिया, किसको तवा और छाज।।
जैसी जिसकी भावना पिया, फले मनोरथ काज रे ।। मेरे. ।।
भ. - कोई पीछा आया नहीं रे, जल बल हो गई खाक ।।
क्यूं भ्ली तूं कामिनी रे, मेरा वचन चित्त राख रे ।।तूं.सु.।।
स्त्री – नास्तिक मत के मानवी रे, नहीं माने परलोक ।।
जिन वचनामृत मैं पीया रे, मेरे तो सारे ही थोक रे।। मेरे.।।
भ. – तेरा वचन जब मान लूँ रे, मुझे मिले गुरु आय ।।
फिर तो कभी पलटूँ नहीं रे,ऐसा ध्यान लगाय रे ।।
सुन सुन्दर प्यारी मद मतवारी, नहीं परतिख गुरुराज ।।
स्त्री – देव भवन गुरु राजते पिया, भक्तों के आधीन ।।
विपत विदारण संपत कारण,मन वंच्छित मोहे दीन रे ।।मेरे.।।
भ. – टेर सुनी गुरुराजजीरे, प्रगटे मांझल रात ।।
मांग मांग मुख उच्चरेरे । देखा गुरु साक्षात रे ।।
सुन सुन्दर प्यारी मद मतवारी,है परतिख गुरुराज ।।
स्त्री—अन धन सुत सुख संपदा रे,मन वांच्छित गुरु दान ।।
मैं सेवक माफी करो रे, तुम सेवा इक ध्यान रे ।।मेरे.।।
भ – शंका तज गुरु को भजो रे, चाढो फूल सुवास ।।
चिरंजीव गुरु राज जी रे, राम चरण का दास रे ।।
सुन सुन्दर प्यारी मद मतवारी,है परतिख गुरुराज।।

।। दोहा ।।

गच्छ चौरासी शिरोमणी, श्री जिनदत्त-सूरिन्द ।
मणिधारी जिनचन्द गुरु, कुशल करो सुख कन्द ।।१।।
अकबर बोधक चन्द्र गुरु, मुनियों में विख्यात ।
चन्द्र उगायो गगन में, अम्मावस की रात ।।२।।

श्रीजिनहरिसागरसूरि रचित

२३ चतुर्दादा स्तुति

सद्गुरु सुखसागर परम पूज्य भगवान,
जिनदत्तसूरीश्वर दादा युगपरधान ।
मणियाले दादा कुशल कुशल गुणधाम,
जिनचन्द्रसूरीश्वर गुरु 'हरि' करो प्रणाम ।।

श्री गोपाल रचित

२४ दादा गुरु इकतीसा

दोहा

श्री गुरुदेव दयाल को, मन में ध्यान लगाय ।।
अष्ट सिद्धि नव निधि मिले,मन वांच्छित फल पाय।।१।।

चोपाई

श्री गुरु चरण शरण में आयो,देख दरस मन अति सुख पायो ।।
दत्त नाम दु:ख भंजन हारा, बिजली पात्र तले धरनारा ।।१।।
उपशम रस का कन्द कहावे,जो समरे फल निश्चय पावे।।
दत्त सम्पति दातार दयालु, निज भक्तन के है प्रतिपालु।।२।।
बावन वीर किये वश भारी,तुम साहिब जग मे जयकारी।।
जोगणी चौसठ वश कर लीनी, विद्या पोथी परगट कीनी ।।३।।
पांच पीर साधे बलकारि, पंच नदी पंजाब मझारी ।।
अंधो की आखे तुम खोली, गूंगो को दे दीनी बोली ।।४।।
गुरु वल्लभ के पाट विराजो, सूरिन मे सूरज सम साजो ।।
जग मे नाम तुम्हारो कहिये,परतिख सुरतरु सम सुख लहिये ।।५।।
इष्ट देव मेरे गुरुदेवा, गुणिजन मुनिजन करते सेवा ।।
तुम सम और देव नही कोई, जो मेरे हितकारक होई ।।६।।

तुम हो सुरतरु वांच्छित दाता, मैं निश दिन तुमरे गुण गाता।।
पार ब्रह्म गुरु हो परमेश्वर,अलख निरंजन तुम जगदीश्वर।।७।।
तुम गुरु नाम सदा सुख दाता, जपत पाप कोटी कट जाता ।।
कृपा तुम्हारी जिन पर होई, दुःख कष्ट नहीं पावे सोई।।८।।
अभयदान दाता सुखकारी, परमातम पूरण ब्रह्मचारी ।।
महाशक्ति बल बुद्धि विधाता,मैं गुरु नित उठ तुम्हें मनाता ।।९।।
तुम्हारी महिमा है अतिभारी, टूटी नाव नई कर डारी ।।
देश देश में थम्भ तुम्हारा, संघ सकल के हो रखवारा ।।१०।।
सर्व सिद्धि निधि मंगल दाता,देव परी सब शीष नमाता ।।
सोमवार पूनम सुखकारी, गुरु दर्शन आवे नर नारी ।।११।।
गुरु छलने को किया विचारा,श्राविका रूप जोगणी धारा ।।
कीली उज्जयनी मझधारा,गुरु गुण अगणित किया विचारा ।।१२।।
हो प्रसन्न दीने वरदाना, सात जो पसरे मही दरम्याना ।।
युग प्रधान जय जन हितकारा,अंबड़ मान चूर्ण कर डारा।।१३।।
मात अम्बिका प्रकट भवानी, मंत्र कला धारी गुरु ज्ञानी ।।
अम्मावस को चांद उगायो,देख अचम्भो सब को आयो ।।१४।।
मणिधारी जिनचन्द कहावे, जांकी सुनजर मुझ मन भावे।
अकबर को अभक्ष छुड़ाया,मुगल पूत को तुरत जिलाया ।।१५।।
पूजे देहली में जो ध्यावे ! संकट नही सुपने में आवे ।
ऐसे दादा साहब मेरे, हम चाकर चरणन के चेरे।।१६।।
निश दिन भैंरू गोरे काले, हाजिर हुकम खड़े रखवाले ।।
कुशल करण लीनो अवतारा,सद्गुरु मेरे सानिधकारा ।।१७।।
डूबती जहाज भक्त की तारी, पंखी रूप धर्या हितकारी ।।
संघ अचम्भो मन मे लावे,गुरु तव शुभ व्याख्यान सुनावे ।।१८।।

गुरु वाणी सुन सब हरखाये, गुरु भव तारण तरण कहाये।।
समयसुन्दर की पंच नदी मे,फट गई जहाज नई की छिन मे ।।१९।।
अब है सद्गुरु मेरी बारी, मुझ सम पतित न और भिखारी ।।
श्री जिनचन्दसूरि महाराजा,चौरासी गच्छ के सिर ताजा ।।२०।।
शास्त्र सिद्धान्त महोदधि सारे,जंगम युग प्रधान जयकारे ।।
भट्टारक पद नाम धरावै,जय जय जय जय गुणिजन गावे ।।२१।।
फरक सहित गुरु अंक बतावे, भूखा भोजन आन खिलावे।।
प्यासे भक्त को नीर पिलावे,जल धर उण वेला ले आवे।।२२।।
अमृत जैसा जल बरसावे, कभी काल नही पड़ने पावे ।।
अन धन से भरपूर बनावे, पुत्र पौत्र बहु सम्पत्ति पावे ।।२३।।
चामर-युगल ढुले सुखकारी, छत्र किरणीया शोभा भारी ।।
राजा राणा शीश नमावे, देव-परी सब ही गुण गावे ।।२४।।
पूरब पश्चिम दक्षिण ताई, उत्तर सर्व दिशा के मांही ।।
जोत जागती सदा तुम्हारी, कल्पतरु सद्गुरु गणधारी ।।२५।।
विजयइन्द्र सूरीश्वर राजे, छड़ीदार सेवक संग साजे ।।
जो यह गुरु इकतीसा गावे, सुन्दर लक्ष्मी लीला पावे ।।२६।।
जो यह पाठ करे चितलाई, सद्गुरु उनके सदा सहाई ।
बार एकसौ आठ जो गावे, राज-दण्ड बंधन कट जावे ।।२७।।
संवत आठ दोय हजारा, आसो तेरस शुक्कर वारा ।
शुभ मुहरत वर सिंह लगन मे,पूरण कीनो बैठ मगन मे।।२८।।

दोहा

सद्गुरु का समरण करे, धरे सदा जो ध्यान ।।
प्रातः उठी पहिले पढ़े, होय कोटि कल्याण ।।२९।।
सुनो रतन चिन्तामणि, सद्गुरु देव महान ।।

वन्दन श्री गोपाल का, लीजे विनय विधान ॥३०॥
चरण शरण में मैं रहूँ, रखियो मेरा ध्यान ॥
भूल चूक माफी करो, हे मेरे भगवान ॥३१॥

गणि महिमाप्रभसागर रचित

२५ दादागुरु स्तवन

(तर्ज-चांदसी मेहबूबा)

दादासा री महिमा मोटी म्हासू वरणी न जावे है ।
सारे जग में चमके दादो, बेड़ो पार लगावे है ।
जिणदत्तगुरु री महिमा जग में, भायां ! किणसूं है छानी ।
अजमेर नगर में जोत जले है, दुनियां जिणरी दीवानी ।
जिण चरणां में सारी दुनिया, नित उठ शीष नमावे है ॥
महरौली में जो दरशण पायो, दूर हुयो दुखड़ो म्हारो ।
इण चरणां में जो शीष झुके, तो बेड़ो पार लगे सारो ।
मणियालो मणिधारी दादो, संघ रा प्राण बचावे है ।
मालपुरे में दरशण दीनो, जय हो दादासा थांरी ।
म्हें डुब रह्या भव सागर में, अब लाज रखो दादा म्हौंरी ।
आंधाने आँख्यां दे दादो, कुशल कुशल बरतावे है ।
ओ गाँव बिलाड़ो दीप रह्यो, जिनचन्द्र रो परचो भारी है ।
अम्मावस री पूनम कीनी, आ थोंरी 'महिमा' न्यारी है।
ऐ लोग-लुगाया थांने पूजे, लुळी लुळी धोक लगावे है॥

मेघराज नाहटा रचित

२६ चतुर्दादा गुरु गुण स्तुति

दादा जिनदत्त, मणिधारी जिनचन्द्र सूरि, कुशल गुरु,
जिनचन्द्र सूरि चारों का गुण गान वंदन करें शुरु ।

कार्य के प्रारम्भ में दादा गुरुदेव की जय बोलिए,
अंत:करण के दृढ़ कपाटों को सहज ही खोलिए ।
प्रत्येक हृदय में सतत दादा गुरु ही रहने लगे,
उनके लिए सद्भक्ति की नदियां सरस बहने लगे।
आचार्य कैसे थे हमारे, ध्यान से सुन लीजिये,
फिर महापुरुषों का सदा गुणगान सादर कीजिये,
थी एक दिन शोभित मही आचार्य श्री गुरुदेव से,
सिद्धान्त-ज्ञाता, विकट आचार्य श्री युग-प्रधान से।
उनकी तपस्या में अनूठी आश्चर्यकारी शक्ति थी,
इहलोक विषयों में कभी उनकी नही आसक्ति थी ।

साध्वी चन्द्रयशश्री रचित

२७ चतुर्दादा स्तवन

(तर्ज - माढ)

दादा अन्तरयामी,शिव सुख कामी,नामी हो गुरुदेव।।टेर।।
श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहेब, मणिधारी जिनचन्द्र।
दादा कुशल सूरीश्वर साहेब,मुनिगण में जिम चन्द्र रे।।दादा०१।।
अकबर प्रति बोधक सूरीश्वर, श्री जिनचन्द मुणिन्द ।
नभ मण्डल में चन्द्र उगायो,प्रत्यक्ष पूनम चन्द्र रे ।। दादा० ।। २।।
अगम अगोचर सदगुरु प्यारा, महिमा का नहीं पार ।
सुर नर वृन्द करे तोरी सेवा,हो जावे भव पार रे।। दादा०।। ३।।
भीड़ भंजन गुरुदेव हमारे, भक्तों के प्रतिपाल ।
निखिल जनाश्रय दादा हमारे, करिये हमारी संभाल रे।।दादा०।।४।।
कर जोड़ी विनय युत वन्दन, स्वीकारो गुरुराज ।
'चन्द्रयशा' के तुम हो स्वामी,तारो भव जल पार रे।।दादा०।।५।।

चरित्र रचित

२८ चतुर्दादा स्वतन

तर्ज-सरोता ० कहां भूल गये

दया कर दरस दीजे, प्यारे गुरुदेवा ।
चरणों में मुझको शरण दीजे, प्यारे गुरुदेवा ।। टेर ।।
चिन्तामणि और कामधेनु सम; मेरे तुम हिज देवा ।
राजा राणा भरे हाजरी, करे तुम्हारी सेवा ।।दया०।।१।।
गुलसन गुल का हार बनाऊं, धूप सुगंधी खेवा ।
सुर नर गुणी जन करे आरती, भोग लगावे मेवा ।।२।।
जिनदत्त जिनचन्द कुशल सूरिगुरु, तुमसे लगाऊं नेहा ।
पड़ी नाव मझधार बीच में, पार लगावे देवा ।।३।।
श्री गुरुराज लाज रख साहिब, देत तुम्हारी दूवा।
और देव सब छोड़ के दादा, चरण आपका छूवा ।।४।।
चरित्र की अब वीनती सुनीजे, दरशन वहिलो दीजे ।
सब कष्टों को दूर हटाकर,मन वंच्छित फल दीजे ।।५।।

जिनविजयसेनसूरि रचित

२९ चतुर्दादा स्तवन

गुरुदेव अब तो दर्शन दीजो जी महाराज ।
बहुत काल से भटक भटक कर, आयो तुमरे पास ।
दीन दुखी के संकट भंजक, दत्तसूरि सिरताज जी । गु. १।
भवसागर से पार उतारे, हो जल यान समान ।
जो कोइ आपका सुमरण करते, सारे पूरे काजजी ।गु.२।
श्री जिनचन्द्र मणीधर साहिब, जो करते उपकार ।
वैसे ही श्री कुशलसूरीश्वर, राखें सब की लाज जी ।गु.३।

दादा श्री जिनचन्द्रसूरि को, मन धारे नर नार ।
राखो करुणा सूरिविजय पर,शरण पड़ा है आज जी।गु.४।

साध्वी तिलकश्री रचित

३० चतुर्दादा स्तवन

राग - एक शासन देव मारा वटवाला

गुरु तारी वाणीनो घंट वाज्यो,
मारो सुतेलो आतमा, जाग्यो गुरुराज । तारी ० ।
गुरु मोक्षनो मार्ग बतावे छे, मोह मायानी नींद भगावे छे।
जागो जागो आतमराम, वाणीनो ... ।। १ ।।
प्रभु वाणी नुं अमृत जे पीतां, तेना नाम अमर जग थई जाता ।
ऐनो धन्य थयो अवतार, वाणीनो ... ।।२ ।।
जिनदत्त गुरुजी अजमेर मां,
मणिधारी बिराजे दिल्ही मां ।
मालपुरा कुशल गुरुराज, वाणीनो ... ।।३ ।।
जिनचन्द्र अहिंसा अवतारी,गुरु वन्दन करो सहु नरनारी।
गुरु भक्तिथी बेड़ो पार, वाणीनो ... ।। ४ ।।
गुरु संत विचक्षण हिरलो छे,अे तो खरतरगच्छ नो दीवड़ो छे ।
शिशु तिलक नुं हैयुं हरखाय,वाणीनो रंग लाग्यों ।। ५ ।।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

३१ चतुर्दादा स्तवन

(तर्ज-बोल राधा बोल)

मै हूँ तेरा बालक, और तू है मेरा पालक,
बोल दादा बोल सुधियॉ लोगे या नहीं ।।टेर।।
कितनी सदियॉ बीत गई हैं, नाथ ! तुम्हें समझाने में,

मेरे जैसा दु:खिया प्राणी, है नहीं और जमाने में ।
क्रोध मान का जोर कभी कम होगा या नहीं । बोल ० १।
पुण्य पाप की पोट उठाये, भव में नाथ ! भटकता है,
पुद्गल प्रीत के विषमय प्याले, प्रतिपल नाथ! गटकता है।
उल्टी जीवन गतियाँ, सुलटी होंगी या नहीं । बोल ०२।
श्री जिनदत्त, मणिधारी जिनचन्द्र कुशल अकुशल हरना ।
आत्म ज्ञान से रिक्त हृदय में, ज्ञान "विचक्षण" ता भरना
"भ्रमर" प्रार्थना स्वीकृत सम्यग् होगा या नहीं ।बोल०३।

गणि मणिप्रभसागर रचित

३२ चतुर्दादा स्तवन

तर्ज - जय जगदीश हरे

हम वंदन करते है, गुरु वंदन करते हैं, दादा ०
थाल भरी श्रद्धा का दिल में धरते हैं, ।। टेर ।।
सूरिजिनेश्वर खरतर अधिपति,जग में जयकारा ।
अभयदेव विख्याता, कीना उपकारा ।। १ ।।
जिनदत्त चन्द्र कुशलसूरीश्वर,चन्द्र गुरु ध्याऊं ।
चारों दादा साहब के,मैं गुण गाऊं ।। २ ।।
लाखों नर को जैन बनाया, गोत्र लिखे सारे ।
उपकारी तुम सम ना, तुम तारणहारे ।। ३ ।।
तुम हो मेरे सच्चे स्वामी, तुम मेरे त्राता ।
हरदम दादा दादा, तुमको ही ध्याता ।। ४ ।।
नाम तुम्हारा कष्ट निवारे, संकट मिट जावे ।
श्रद्धा से जो ध्यावे, सुख संपद पावे ।। ५ ।।
आनंदघन वर देवचन्द्रजी,खरतर के चन्दा ।

कान्तिसूरीश्वर चरणे, वंदन सुखवन्दा ॥ ६ ॥
वंदन हो तन मन भावों से, दादा को ध्याओ ।
मणिप्रभ गुरु गुण गाता, अक्षय सुख पाओ ॥ ७ ॥

महोपाध्याय ऋद्धिसार रचित

३३ चतुर्दादा स्तवन

(देरजे - पनजी मूंढे वोल)

चाल चाल म्हारा मित्र आलीजा,
सद्गुरु पूजां रे, आज मित्र चालो रे । टेर ।
हीनाचार्या ने गुरु जीत्या, पाटण नगर उमंगे रे ।
दुर्लभ राजा श्रावक हूओ, गुरु प्रसंगे रे । आज ०१।
सूरि जिनेश्वर नाम कहावे, खरतर पद जिन पायो रे ।
चन्द्रसूरि संवेगरंग में, पाट कहायो रे । आज ०२।
कर्म उदय सुं कोढ़ रोग जिन, भक्ति संग मिटायो रे ।
देवी वचन सुं नव अंग टीका, करी दरसायो रे ।आज०३।
अभयदेव सूरीश्वर तसु पट्ट, जिनवल्लभ सूरि रायो रे ।
चामुंडा देवी वश करके, पद जिन पायो रे । आज ०४।
बावन गोत्र राजवंश्यां सुं, प्रतिबोध्या सुखदायो रे ।
ग्रन्थ अनेक रच्या सद्गुरुजी, धर्म दीपायो रे । आज०५।
श्री जिनदत्तसूरि तसु पाटे, उदय भयो दिनकारो रे ।
सबा क्रोड सूरिमन्त्र जप से,
हुओ सक्ति उजालो रे ।आज०६।
देव अनेक करे जसु सेवा, प्रतिबोध्या केई राजा रे।
तीस हजार एक लख श्रावक, कीया ताजा रे ।आज ०७।
बावन वीर जोगणियां चौसठ, आणा गुरु की माने रे ।

पांच पीर वश किया सिन्ध में, सब जग जाने रे । आज ०८।
पर-प्रवेश विद्या के बल से मुगल पूत जीवाया रे ।
बिजली कुं वस करी पात्र तल, नाम सवाया रे ।आज०९।
दादा पीर कहाये सच्चे, ऋद्धि सिद्धि के बरदाई रे।
हिन्दू मुसलमान सब पूज्या, महिमा गाई रे। आज ०१०।
रोग दोष विष सभी मिटाया, जुगपरधान कहाया रे ।
साढी तीन कोटी सब विद्या, सिद्धि पाया रे । आज ०११।
मणिधारी जिनचन्द्र सूरीश्वर, दत्त पाट पर राजे रे ।
दिल्लीपति हुआ दास गुरु का,महिमा गाजे रे ।आज०१२।
कुशल सूरीश्वर कुशल बरण कुं, प्रगटे गुरु अवतारी रे ।
पचास सहस श्रावक प्रतिबोध्या, गुरु सुखकारी रे ।आज०१३।
बादशाह अकबर कुं परचा, प्रतिबोधे जिनचंदा रे ।
उदय करो गुरु जैन धर्म का,दया पटह वाजिंदा रे।आज० १४।
करो कृपा सद्गुरुजी संघ पर, मै गुरु आज्ञाकारी रे ।
कहे राम पाठक गुरु महिमा, अपरंपारी रे । आज०१५।

महो. ऋद्धिसार रचित

३४ चतुर्दादा स्तवन

(तर्ज – जल्ले की)

हूं तो थारा दर्शन करवा आयोजी, सुखकारी गुरुराज ।।
दर्शन कर-कर चित्त मे आनन्द पायोजी, दयाल ।।
थुम्भ तुम्हारो बागां मांही सोहे हो, सुखकारी गुरुराज ।।
चिहुँ दिसि परिमल भमरतणा मन मोहे हो, दयाल ।।१।।
चंपा चमेली मरु ओ वेलो फूल्यो हो ।।सुख.।।
केशर क्यारी देखत चितड़ो झूल्यो हो ।।दयाल ।।

द्रव्य सुगंधी भाव सुगंधी भासे हो ।।सुख.।।
तुम गुण परिमल भक्त हृदय परकाशे हो ।।दयाल ।।२।।
अध्यातम रस आतम रंग रंगीजे हो ।।सुख.।।
तुम उपदेशे जिन वच अमृत पीजे हो ।।दयाल ।।
दुःख दरिद्रता मेटण संपदा लीनी हो ।।सुख.।।
सुर-सुख सिद्धि दायक ज्ञान रसीला हो ।।दयाल ।।३।।
दान दया दम तीन तत्व तुम भाख्या हो ।।सुख ।।
भवजल तरसी जे भविजन रस चाख्या हो ।।दयाल ।।
तूं उपकारी तारण तरण विराजे हो ।।सुख.।।
भाव स्तवन वन्दन सूं पातिक छीजे हो ।।दयाल ।।
'जिनदत्त' 'जिनचन्द्र' 'कुशल' सुरिन्द गुरु राजा हो ।।
समकित थांरो म्हारे मन मे ताजा हो ।। दयाल ।।५।।
शुद्ध क्रिया खरतर जिन आज्ञा पाले हो ।।दयाल ।।
धर्मशील गुरु कुशल-निधान सौभागी हो ।।सुख.।।
राम पाठकनी उदय दशा अब जागी हो ।।दयाल ।।६।।

लक्ष्मीचन्द भंसाली रचित

३५ चतुर्दादा स्तवन

(तर्ज – आएगा आएगा (फिल्म मेहरवान))

आयेगा, आयेगा जो द्वार तुम्हारे आयेगा ।
भूल जायेंगे सब दुखड़े जो दर्श तुम्हारा पायेगा ।।
लब पे नाम तुम्हारा लेते, बिजली भी थर्रा जाए ।
डाकन शाकन भूत वयन्तर, वे भी है सब घबराये ।
दिल्ली, अजमेर, मालपुरा, सांगानेर मे,
जो दर्श आपका पायेगा ।।१।।

अन्धे को आंखे मिल जाये, निर्धन भी धनवान बनें,
पंखी को भी पंख मिले और, बिगड़े जिनके काम बने।
कोटा, मद्रास और बीकानेर खास में, दर्श तुम्हारा पायेगा ॥२॥
सोमवार और पूनम के दिन, महिमा तेरी निराली है।
द्वार तुम्हारे मेला लगता, हर कोई तेरा सवाली है।
आये तेरे पास, सब पूरी होगी आस,
बस दिलमें तुम्हें बसायेगा ॥३॥
चारों दादा-पर उपकारी, पूरे आस हमारी यह।
'लक्ष्मी' की यह सुनो विनती, आया शरन तिहारी यह।
खुशियों के साथ जो संघ लाये साथ,
वह मनकी मुरादें पाएगा ॥४॥

३६ चतुर्दादा स्तवन

(तर्ज – तेरी सूरत है अति प्यारी,

देश बंगाला सूरत तुम्हारी, नर नारी सहु पाय पड़े॥
दूर देश से आये दादा, मौन कियां कहो केम सरे ॥१॥
केशर चन्दन भरी कचोली, दादासा के अंग चढ़े॥
चम्पो चमेली और मोगरो, दादासा के चरण चढ़े ॥२॥
संकट पड़ियां सहाय करो दादा, हम तुमरे हैं भक्त खरे॥
आवो पधारो दर्शन देदो, तुम हमरी अब सहाय करें ॥३॥
भव दरिया से पार उतारो, निज सेवक तुम पांव परे॥
चरण का शरणा देकर तारे, तो मेरा निज काज सरे ॥४॥
जंगम युग प्रधान भट्टारक, दादा श्री जिनदत्त खरे॥
चन्द्र सूरि मणियाले दादा, श्री जिनकुशल सूरि ही वरें ॥५॥
नरपति सुरपति खगपति दादा, सब युग में तुम ध्यान धरे॥

श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर दादा, अम्मावस को चन्द्र करे ।।६।।
तुम सम दाता और न जग में,सुरतरु जैसा कोई न मिले।।
दास तुम्हारा अरज करत है, तुम देखे मेरा हृदय खिले ।।७।।

३७ चतुर्दादा स्तवन

(तर्ज – क्या करते हो साजना .....)

आ करते है वन्दना गुरुवर के, द्वार आ के ।
मूरत बसा ऽऽ के दिलो मे, गुरु को नमन करते है ।
आ दादा के गीत गा भक्ति मे, झूम कर के ।
दरस मिलेगे रे गुरु के, शरण जो आया आया करते है ।
दत्त गुरु की महिमा भारी, पहले दादा जग उपकारी ।
इन चरणो मे शीश झुका ले, मन की मुरादे होगी पूरी।।
ज्योत जला ऽऽ प्रीत लगा ऽऽ ,
दादा दिलों मे आते हैं ।।१।।
मणिधारी जिनचन्द्र सूरीश्वर, दादा दूजे ज्योति-निर्झर ।
लाखो आते इन चरणो में, महरौली है पाबन मंजर ।
ले के श्रद्धा ऽऽपुष्प चढा ऽऽ , आशा के दीप जलते है ।।२।।
करते कुशल नित, कुशल सूरीश्वर,जिनशासन की शान गुरुवर।
ग्रंथ लिखे कई, जैन बनाए, कल्पतरु है जैन दिवाकर ।
ध्याये जा ऽऽ सुख पाएगा ऽ ऽ , आ हम सुमरन करते है ।।३।।
चन्द्रसूरीश्वर, गुरुमतवाले, अमावस की पूनम वाले ।
अमर रहेगा, नाम धरा पर, भक्तों के है गुरु रखवाले ।
सुख मे ध्या ऽ ऽ, दुख में ध्या ऽ ऽ, जनम
सफल करते है ।।४।।

यति सूर्यमल्ल रचित

३८ गुरुदेव-अष्टक

महाज्ञानी ध्यानी तुम विदित दानी प्रवर थे ।
धरा धारा के थे तुम तरुण तैराक मतिमन् ॥
तुम्हे ध्याता हूँ मैं विमल मन से प्राणपण से ।
दयाब्धे ! दु:खो का दमन अब आचार्य ! करदो ॥१॥
पता क्या था ? पीताम्बर युगल धारी न गुरु हैं ।
बड़े मायी वे हैं कपट रचना पूर्ण पटु हैं ॥
बतायी थी सच्ची शरण तुमने नाथ मुझको ।
दयाब्धे ! दु:खों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥२॥
रहेंगे संसारी भ्रमण करते नित्यतम में ।
भला ! होगा कैसे गुरु प्रवर ! उद्धार उनका ॥
कृपा भिक्षा दे के परम करुणागार अपनी ।
दयाब्धे ! दु:खों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥३॥
सुनेंगे स्वादेंगे गुरु वचन सानन्द मन से ।
उन्हें गारण्टी है निखिल सुख निर्वाण पद की ॥
गुरो ! स्वामी मेरे मन सदन में शान्ति भरदो ।
दयाब्धे ! दु:खो का दमन अब आचार्य ! करदो ॥४॥
चिदात्मन् ! जा जा के नगर वसती ग्राम जन में ।
दिखाया लोगों को परम पद का मार्ग तुमने ॥
मुझे भी आशा है चरम गति की नाथ ! तुमसे ।
दयाब्धे ! दु:खों का दमन अब आचार्य ! कर दो ॥५॥

बिछाया माया ने सृजन करके जाल तग का ।
दृगों के होते भी मनुज बन अन्धे फंस रहे ।
तुम्हारी सेवाये मन नयन का मंजु सुरमा ।
दयाब्धे ! दु:खो का दमन अब आचार्य ! कर दो ॥६॥
सुनाता मै स्वामिन् ! तव गुण कथा जैन कुल मे ।
तुम्हें ध्याता जाता प्रणत शिर, हे रत्न जिन ! मे ।
तुम्हारा चेला है सफल करना सूर्यमल को ।
दयाब्धे ? दुखो का दमन अब आचार्य ! करदो ॥७॥
प्रतीक्षा भिक्षा है मम, तव परीक्षा समय की ।
तुम्हारा ही सारा प्रभुवर ! सहारा भुवन मे ॥
कहो, बोलो, होगी परम पद की प्राप्ति मुझको ।
दयाब्धे ! दु:खो का दमन अब आचार्य ! करदो ॥८॥

रुधपति रचित

३९ गुरुदेव सवैया

मिश्री घृत क्षीर रलाय मिलाय प्रभात समे गटके गटके ।
सुखरास निवास सुधारण कूं मन मेल मिले मटके मटके ।
भली ऋद्धि बड़ी दिल रंजन रु सब आय मिले सटके सटके ।
रुवपत्त कहत्त जुगत्त मिल्यां, गुरुदेव नमूं लटके लटके ॥१॥

आनन्द रचित

४० गुरुदेव स्तवन

गुरुदरसण दीजै, मोपे महिर करी ।
चलत चलत मै तुम चरणै आयो, अतिही चाह धरी ॥१॥
संपति योग बन्यो सब अबही, सगरी विपत टरी ।
रोम रोम आनंद भयो मेरे, मनकी आस पुरी ॥गुरु. २॥

आलमचन्द रचित

४१ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – सोरठ)

सद्‌गुरु मेरे तूं ही प्यारा है ।।स.।। टेर ।।
माता पिता सबही स्वारथ के,तेरा एक सहारा है।।स.१।।
मेरो मन तुम्ही सूँ अटक्यो, सो क्यूं होवत न्यारा है ।।स.२।।
दुश्मन दाटे काटे चाटे, बिघन हरण सुखकारा है।।स.३।।
विरुद अनेक कहुँ मैं केता, महिमा अधिक अपारा है ।।स.४।।
ताते जश शोभा सुख दीजे । आलम दास तिहारा है ।।स.५।।

कंचन रचित

४२ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज–जब तुमही चले परदेस, लगाकर ठेस हो प्रीतम प्यारा)

अब हम जाते हैं घर, झुका कर सर, हो दादा प्यारा
आशिष का करो, इशारा ।
दिल तो जाने को नही करता,
पर गये बिना भी नहीं सरता ।
अब करुं तो कौन उपाय, नहीं कोई चारा ।। आशीष. १।
आवे तब हृदय हर्ष होवे, जाते समय नयन रोवे ।
बिछड़न से नयन में बहती आंसू धारा ।। आशीष. २।
कुछ हुई नहीं पूजा भक्ति, नहीं धन लगाने की शक्ति ।
सिर्फ हाथ जोड़ कर छोड़ रहा हूं द्वारा ।। आशीष. ३।।
फिर जल्द बुला दर्शन देना, खबर मेरी लेते रहना ।
निश्चिन्त रहूँ मैं तुझ पर हर प्रकारा ।। आशीष. ४।।
गल्ती यदि कुछ हुई मेरी, कर देना माफ सुनकर ।

रहे 'कंचन' आपके, हुकम का हलकारा ।।आशीष. ५।।

क्षमाकल्याणोपाध्याय रचित

४३ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - म्हारा वालजी)

सद्गुरु ने पकड़ी बांह, नहींतर बह जाते ।।स.। टेर ।।
भवसागर के बीच पड़े रे, काम महागन दाह ।
मच्छ गलागल जहां लगी रे, दुःख जल पूर अगाह ।।न.१।।
देव असुर सुर नर वर बड़े रे, जामे बहत निहार ।
तन मन मेरो थरहरे रे, और न को आधार ।।न.२।।
निर्यामक सद्गुरु मिले रे, तारक भव्य जहाज ।
धर्म पोत के बिच धरे रे, कहत क्षमाकल्याण ।।न.३।।

चन्द रचित

४४ गुरुदेव स्तवन

(ढाल – लूहर नी)

सद्गुरु गुण गावूं हो, चरणां जाय रहूं ।
नित दरसण पावुं हो, वीतक बात कहूं ।।१।।
सुणि सद्गुरु मोरा हो, तोरा चरण ग्रहूं ।
मुझ आस तिहारी हो, सुणिज्यो साच कहूँ ।।२।।
थे कीरति धारी हो, सहु को साय सदा ।
पूजे नर नारी हो, प्रणमें पाय मुदा ।।३।।
निरमल गुण गावे हो, पावे सुख सदा ।
दुख दोहग जावे हो, नावे रोग कदा ।।४।।
भय आठुं जावे हो, सद्गुरु नाम लियां ।
चरणे मुझ राखो हो, चोखा चंददास कियां ।।५।।

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

४५ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज : अफसाना लिख रही हूँ)

अमृत की वर्षा हो रही, दादा के द्वार पे ।
स्वर गूंजते मल्हार के, वीणा के तार से ।।
थोड़ा-सा स्वाद तुम चखो, इस परमानन्द का ।
दादा का नाम सत्य है, नश्वर संसार में।।
ज्यूं अन्त तक भी प्राण का, न मोह -त्याग हो ।
वैसी ही चाहत धार लो, दादा के प्यार से ।।
डरना नहीं तुम मौत से, दादा का नाम लो।
मृत्यु खुद ही मर जायेगी, सत्कर्म भार से।।
जब 'चन्द्र' रंगा हो केशरी, भय-मुक्त हो सभी ।
कोई भी रंग ना चढ़ सके, केशर फुहार पे ।

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

४६ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज : केशरिया, केशरिया)

केसरिया केशरिया, गुरु - मन्दिर है केशरिया ।।
प्रेम-रंग की पिचकारी से, उड़े फुहारें केशरिया ।
सुर नर किन्नर गुरुपद पूजे, घन-नन-घन-नन घंटे गूंजे ।
लहर-लहराये देखो, धर्म-ध्वजा ये केशरिया ।।
गंगा-जल से स्नान करायें, कामधेनु का दूध चढ़ायें ।
स्वर्ण-कलश अभिषेक करायें, गुरु-मूरत है केशरिया ।।
ऐसा रूप कहाँ है दूजा, मानवता को जिसने पूजा ।
गुरुओं के सान्निध्य में छाया, भक्ति का रंग केशरिया ।।

जो भी आये गुरु के द्वारे, उनका सारा कष्ट निवारे ।
हर पल गुरु की करुणा बरसे, स्नेहामृत बन केशरिया ।।
चरण-कमल से चन्दन गमके, दिव्य छवि का तेज ये चमके ।
जगमग 'चन्द्र' की ज्योत जगाकर, करें आरती केशरिया।।

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

४७ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज : राम तेरी गंगा मैली)

शेर : गुरुओं की महिमा जग को सुनाने
आये हैं तेरे दर पे दिवाने ।
चरणों की सौरभ दिल में बसाने
चैन की बंशी मधुर बजाने ।।

मनवा पुकारे गुरुवर ! मेरी आश पुराओ ।
कब तक तरसेंगे नैना, दर्शन-जल बरसाओ ।।
जनम- मरण की गरम हवाएँ, जीवन तरु झुलसाए ।
सूख रही है मन की बगिया, पतझड़ पेड सुखाए ।
मेरे जीवन-माली , तेरे दर पे सवाली,
कैसे जायेगा रे खाली, तेरी महिमा निराली ।
करो रखवारी, रितु फिर से बसन्त ले आओ ।।
पुष्प-पल्लवी जीवन-तरु की, गुरुदर अब मुरझाई ।
पग-पग पर काँटे बिखरे है, गुरुजी करो सहाई ।
तेरा ही है सहारा, तूने लाखों को तारा ।
मैंने तुमको पुकारा, तू ही मेरा किनारा ।
सुनो अविनाशी गुरु, भव से पार लगाओ ।।
विष का प्याला दुनियादारी, फिर भी मै पीता हूँ ।

सिसक-सिसक कर रोए मनवा, फिर भी मै जीता हूँ।
छोटी-सी है जिन्दगानी, मेरी करुण कहानी।
दादा गुरुओं की वाणी, सारे जग ने बखानी।
'चन्द्र'-प्रकाशी गुरु, जिन-गंगा अवगाहो ॥
जय गुरुदेवा, जय गुरुदेवा। जय गुरुदेवा, जय गुरुदेवा।

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

४८ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज : दर्शन दो घनश्याम)

दर्शन दो गुरुदेव ! हमें, दर्शन सुखकारी रे।
करुणा-सागर ! करुणा करजो, चाह तिहारी रे ॥
नैनों को नैनों से समझो, नैनों की भाषा को बूझो।
गूंगे नैना बोल रहे है, बातें सारी रे ॥
एक सहारा तुम अवनी में, तुम ही रोशनी हो रजनी में।
लाखों तारे तूने फिर क्यों हमें विसारी रे ॥
'चन्द्र'-चकोर दरश-जल चाहे, खोलो अब बेसुलझी राहें।
मन-मन्दिर में ज्योत जलाये, तेरी खुमारी रे।

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

४९ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज : बाबुल की दुवाएँ लेती जा)

दादा गुरु तेरे मन्दिर में, ज्ञानोदय का नव दीप जले।
हो आत्म-बोध हर प्राणी को, गुरुदेव तिहारे चरण तले ॥
कोई अपनाए कोई ठुकराये, कोई मुस्काये कोई मुरझाये।
राजा हो चाहे रंक कोई, इस कटुता से ना बच पाये।
संयोग-वियोग का कालचक्र, जग में किंचित टाले न टले॥

ज्यूं चन्द्र चाँदनी बरसाता, तुम ज्ञानामृत बरसाते हो ।
रीते घट अमृत से भरके, सूखी बगिया महकाते हो ।
सूखी जीवन नदिया मेरी चल गुरु-गंगा की ओर चलें ।।
मै कैसे अपनी बात कहूँ जब स्वयं भरा हूँ भूलों से ।
अन्तर की चादर मैली है, मैं दूर खड़ा हूँ कूलो से ।
बस एक झलक तेरी पाने, अन्तस् में कितनी प्यास पले ।।
जितनी भी विपदाएँ आये, घनघोर अंधेरा छा जाये ।
गुरुदेव तुम्हें ही हम ध्यायें, सन्मार्ग पे हम बढ़ते जायें ।
ये 'चन्द्र' करे अरदास तुम्हे जन-मानस का हर स्वप्न फले!

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

५० गुरुदेव स्तवन

(तर्ज : चन्दन-सा बदन)

भींगे है नयन, बरसे सावन, क्यों दूर खड़े हो मनभावन !
साँसों का इकतारा बोले, सुनलो टूटे दिल की धड़कन ।।
पतवारों से नदिया लाँघे, नैय्या के खेवैय्ये तारे ।
तेरी कमली ही पतवारों बिन, नदिया लाँघे खेवनहारे ।
चाहूँ मुझको भी मिल जाये, कमली जैसा ही आश्वासन ।।
भगतों की बगिया सरसाई, दुश्मन पर अंगारे बरसे ।
जोगनियाँ छलने को आई, पर स्वयं छलीं वो गुरुवर से ।
जब भी कोई दानव गुर्राये,भयभीत न हो किंचित् ये मन।।
अमृत बाँटा, विषपान किया, मुरझा दी बिजली की गर्जन।
मुर्दों में प्राण भरे तुमने, रोशन कर डाला जन-जीवन ।
अब 'चन्द्र' करे आह्वान तेरा,उज्ज्वल कर दो प्रभु पथ पावन।।

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर रचित

५१ गुरुदेव स्तवन

श्री सद्गुरुवर के समान, अपना कोई नहीं,
परम तत्व खोजि समान, दाता कोई नहीं ।
दिया मुझे परमात्म रूप, श्री सद्गुरु भगवंत,
नख-शिख तक हूं समर्पित, नमन करूँ अनंत ।
परम-ज्ञान किया प्रदान, ज्ञान-चक्षु को खोल,
त्रिविध योग में भावना, गुरु उपकार अमोल ।
किया आक्रमण विकृतियों का, कालदूत भक्षक ।
अधमाधम मुझ दीन के, आप बने रक्षक ।
द्वैत भावना त्यागकर, करो सिद्धात्म समान,
समझाओ मुझको स्वरुप, सद्गुरु देव महान ।
शब्द-बाण को खींचकर, मारा लक्ष्य वेध,
आशा-तृष्णा मारकर, हुआ हृदय में छेद ।
आत्मविजेता परम गुरु, परम ज्ञान सुखधाम,
करो स्वीकार सद्गुरु,शत-शत मेरा प्रणाम ।

चारित्रसुन्दर रचित

५२ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – सोरठ)

नित चरणो में चित्त लीनो है ।।नि.।।टेर ।।
बैठत उठत नाम तुम्हारो, लेता मुझ मन भीनो है ।।नि.१।।
माता पिता सद्गुरु तूं म्हारे ,
शरण सदा तुम्ह लीनो है ।।नि.२।।
चारित्रसुन्दर दास तुम्हारो, तुझ गुण गावा लीनो है।।३।।

चारित्रसुन्दर रचित

५३ गुरुदेव स्तवन

(ढाल – ढोला नी)

सद्‌गुरु छो बड़भागी, तुम्ह चरणां सु लय लागी हो,
अरज सुणीजे मोरी ।
सेवक दरसण काज, आयो द्यो दरसण आज हो । स.१।
ताहरी महिमा गाजे, ठकुराई ए तुम्ह छाजे हो । स.२।
दीदार तणी बलिहारी, घूरन मुझ लागे प्यारी हो । स.३।
विषमी अरी सहु जावे, तुम्ह नांम करी गुण गावे हो ।स.४।
ठांम ठांम थुम्भ सोहे, सद्‌गुरु भवियण ना मन मोहे हो । स.५।
मकसूदावाद मांहि, थुम्भ थाप्यो, अधिक उछांहे हो ।स.६।
सोभाचन्द सुज्ञानी, भाई मोतीचन्द सुभध्यानी हो । स.७।
संवत अठार इकवीसे,कार्तिक सुदि पूनिम दिवसे हो।स.८।
सद्‌गुरु सुगुरु कहावे, नर नारी जात्री आवे हो । स.९।
जस सद्‌गुरु नो गुण गावे,सुणतां मुझ अधिक सुहावे हो। स.१०।
दुखियां नां दुख जावे, आंधा ने नयण दिलावे हो।स.११।
बुद्धिहीणां बुद्धि ओपे,सबही दुख सद्‌गुरु कापे हो ।स.१२।
हे सद्‌गुरु ! तुम्ह नांमे,
शिष्य सुविनत सोभा पामे हो । स.१३।
सफल घड़ी मुझ आज,वंछित सरीया सहु काज हो।स.१४।
सत्यसागर सुपसाया, चारित्रसागर गुण गाया हो ।स.१५।

चुन्नीदास रचित

५४ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – भैरवी खेमटा)

गुरुदेवजी का ध्यान सदा चित्त में लाइये ।।
भव-भव के सकल पातक छिन मे मिटाइये ।। गु.१।।
निरुपम स्वरूप जिनका, अमीरस से है भरा ।
निर्मल गुणों को देख के, आनन्द सुख पाइये ।। गु.२।।
साहिब सुजाण जिन के, चरण की शरण गही ।
जागी सुमति सुघर से परम पद को ध्याइये ।। गु.३।।
दाता दयाल इन के, सिवा जग में कौन है ?
जिन की कृपा से बोध, हिया में जगाइये ।। गु.४।।
गुरु भक्ति आन अपने हृदय बीच चुन्नीदास ।।
सेवा में मन को दीजे, सुजश मुख से गाइये ।। गु. ५।।

छोटेलाल रचित

५५ गुरुदेव स्तवन

(राग – मांड / तर्ज – नाकोड़ा स्वामी)

गुरुदेव हमारे, दु:ख सब टारे, करदे बेड़ा पार ।
करदे बेड़ा पार गुरुवर, करदे बेड़ा पार ।
जब जब भीड़ पड़ी गुरु मुझ पर, आप ही कीनो उबार ।
अब क्यों करते देरी गुरुवर, सुनलो मेरी पुकार । गु.१।।
भीड़ पड़ी जब लक्ष्मीपति पर, दीनी हुण्डी सिकार ।
थानमल ने लक्ष्मी पाई, महिमा अपरम्पार । गु.२।
जो कोई ध्यावे सच्चे मनसे, पावे सुख अपार ।
डूबती जहाज भक्त की तारी, बहोत कीये उपकार ।गु.३।
विनती करुं मैं शीश नमा कर स्वीकारो गुरुराज ।
'छोटेलाल' की नैया के गुरु, आपही खेवनहार । गु.४।

जिनकवीन्द्रसागरसूरि रचित

५६ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – प्रभु पूजा करवा जाइये)

सुण मनवा गुरु गुण गाना । गुरु गुण मे ही रम जाना ।।
खूब खजाना, अन्तर धन का खुल जायगा ।। सु.१।।
जो तूं है गुरु का बन्दा ! तो नही रहे दुःख दन्दा ।।
सूरज चन्दा, सम तू स्वयं बन जायेगा ।। सुण.२।।
गुरु ज्ञान बिना तूं अन्धा, करता है ऊंधा धन्धा ।।
कर्म निबन्धा, खाली तू गोता खायगा ।। सुण.३।।
लोहा सुवरन बन जावे, पारस पर संग मे आवे ।।
गुरु बन जावे, जो तूं गुरु संग पायगा ।। सुण. ४।।
हरि कावेन्द्र का है कहना, गुरु सेवा मे चित्त देना ।।
हित सुन लेना, भव पार तू हो जायगा ।। सुण.५।।

जिनकान्ति सागरसूरि रचित

५७ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम)

पर उपकारी दादा तुमको लाखो प्रणाम ,
तुमको लाखो प्रणाम ।। टेर ।।
शुद्धि का मारग दिखलाया, जैनेतर को जैन बनाया ।
चरित्र गुण की खान, तुमको लाखो प्रणाम ।। पर.१।।
दीनजनो के दुःख के चूरक,
योग शक्ति के हो परिपूरक ।
भूमण्डल यश धाम, तुमको लाखो प्रणाम ।। पर.२।।
जैन समाज को जागृत करदो, मिथ्या रुढी तिरस्कृत करदो ।

गुरुवर विरुद प्रमाण, तुमको लाखो प्रणाम ।। पर.३।।

मन शुद्ध कर जो तुमको ध्यावे,
मन चिन्तित फल शीघ्र ही पावे ।
शुभ दृष्टि तुम पाम, तुमको लाखों प्रणाम, ।। पर.४।।
स्वामी चरण शरण मे आया, श्री हरि पूज्य परमपद पा
कान्तिसागर अभिराम, तुमको लाखों प्रणाम ।। पर.५।।

जिनलाभसूरि रचित

५८ गुरुदेव स्तवन

दादोजी परतिख देवता, दादोजी देस दिवाण, म्हांरा सद्
परतिख जग जस्त परगडो, वाचौ सहु ए वखाण म्हा.१
वाट घाट संकट हरै, तारै जलधि जिहाज म्हा.।
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, समरण श्री गुरुराज म्हा.२
तुम्हे अम्हीणा साहिवा, अमे तुम्हीणा दास म्हा. ।
कमणा हिवै न रहै कदे, ईहक पूरण आस म्हा.३
नगर नगर गाम गाम में, थिर वरतै गुरु थान म्हा.
पूजै अरचै पादुका, नर नारी राय राण म्हा. ४
सोभै सूरत बिंदरे, गुणधारी गच्छराज म्हा.
श्री जिनलाभसूरीश ना, सरज्यो सगला काज म्हा.५

जिनहरिसागरसूरि रचित

५९ गुरुदेव स्तवन

(कव्वाली)

क्या है अपूर्व दर्शन, गुरुदेवजी तुम्हारे ।।
दुःख दूर कीजिये सब, हम भक्त है तुम्हारे ।। टेर ।।

गुरु के बिना जगत् मे, है कौन मार्ग दर्शक ।
आया शरण मे स्वामी, गुरुदेवजी तुम्हारे ।।१।।
चिन्तामणी से बढ़ कर, मन इच्छितार्थ दानी ।
सानी न और जग में, गुरुदेवजी तुम्हारे ।।२।।
हरि पूज्य जैन शासन, पावन प्रकाशकारी ।
चाहूँ सदैव दर्शन, गुरुदेवजी तुम्हारे ।।३।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

६० गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – जय बोलो रे पास जिनेसर की)

दर्शन दो श्री गुरुदेव, हमे दर्शन दो ।। टेर ।।
गुरु दर्शन बिन तरस रहे हम,
दो दर्शन गुरुदेव हमे ।। दर्शन.।।१।।
तुम पथ के हम पथिक सभी है,
निज पथ देव दिखा दो हमे ।। दर्शन. ।।
चन्द्र चकोर मोर जिम बादल ,
तिम तुम दर्शन चाह हमे ।। दर्शन.।।३।।
विकसित होत कमल रवि दर्शन,
तिम तुम दर्शन हर्ष हमे ।। दर्शन. ४।।
हरि जिन शासन भाव-प्रकाशन,
आत्म प्रकाश दिखादो हमे । दर्शन ५।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

६१ गुरुदेव स्तवन

तर्ज – वीर बनानेवाले तुम को लाखो प्रणाम ।

दादा देव दयालु तुमको लाखो प्रणाम

श्री गुरुदेव दयामय तुमको लाखों प्रणाम ।।टेर ।।
मिथ्यामऩ का मैल मिटा कर, बोधिलाभ शुभ हमको देकर।
जैन बनाने वाले तुमको लाखो प्रणाम ।।१।। दा.।।
नाम मन्त्र की महिमा भारी, विपति विदारण संपत्तिकारी ।
योगीश्वर गुणवाले तुमको लाखों प्रणाम ।।२।। दा.।।
युगवर सुखसागर उपकारी, हरि जिन शासन में जयकारी ।
दर्शन देने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।।३।।दा.।।

वाचक जिनहर्ष गणि रचित

६२ जैतारण स्तूप गुरुदेव स्तवन

(देसी)

मनड़ौ उमाह्यउ दादा माहरउ, हो दादा
जाणु हो हुंतो भेटुं थांरा पाइ, थां परि वारी हो साहिबजी ।
अलजौ तउ दादा थारौ अति घणौ, हो दादा
दरसण हो देखुं हियडै हरख न माइ । थां परि.१।।
केसर चन्दन दादा अगरजउ, हो दादा
माहे हो कस्तूरी मेल कपूर ।
पगला हो पूजूं दादा प्रेम सुं, हो दादा
संकट हो सघला जायइ दूर । थां. २।।
आरति चिन्ता दादा अपहरउ, हो दादा
वंछित हो वासू मनड़ा केरा पूर ।
सेवक सुखीया दादा कीजियइ, हो दादा
आराध्यां आवौ आवौ वेग हजूर । था.३।
एकण जीभइ दादा ताहरउ, हो दादा
किण परि हो गाऊं गाऊं जस सोभाग ।

मोटा तो विरुदइ दादा नहिं कदे, हो दादा
सेवक हो ऊपरि राखौ राखौ राग । थां.४।
तो सुं तो दादा माहरो मन मिल्यौ, हो दादा
बीजउ हो कोई नांवइ नांवइ दाइ ।
भ्रमर विलुधौ दादा केतकी, हो दादा
कहौ नइ किम अरणी फूलै जाइ । थां.५।
सीस नवाऊं दादा तुम भणी, हो दादा
गाऊं हो तुझ गुण आगे गुण गीत ।
सुनिजर जोवौ दादा सांमुहो, हो दादा ।
मुझ सुं हो पूरी पालौ पालौ प्रीत । थां.६।।
परचौ तो दादा ताहरो अति घणो, हो दादा
खरतरसंघ केरी पूरउ पूरउ आस ।
कहे जिनहरख उम्मेद सुं, हो दादा
थुंभ बण्यो थांहरो जैतारण मे खास । थां.७।।

ज्ञानसार प्रणीत

६३ गुरुदेव स्तवन

(राग-सोरठ)

गुनहे माफ करो, सुगुरु मेरे गुनहे माफ करो ।
मै तो खूनी खूनी खूनी, तो भी दास खरो । सु.१।
नहिं हूं जोगी नहिं संसारी, ऐसे कूं उधरो । सु.२।
नहिं हूं इनका नहिं हू उनका, जैसे धोबी को कुकरो।सु.३।
मै हूं सद्गुरु गुण का भूखा, मेरी भूख हरो । सु.४।
ज्ञानसार कहै गुरुदेवा, मोसु महिर धरो । सु.५।

साध्वी तिलकश्री रचित

६४ गुरुदेव स्तवन

(राग – हुंतो छोड़ चली)

गुरुराजनी मूर्ति जोइ, हैयुं मारु हरखी उठे ।
अेनी शीतल छायामां, रहीए के, हैयुं मारु.
मूर्ति सोहामणी लागे रलीयामणी, पावनकारी लागे मने प्यारी ।
हो नीरखी नीरखीने पावन थई अे के, हैयुं. । १।
अमूल्य अवसर नहीं मले आवो, गुरु भक्तिनो लई ऐ ल्हावो ।
हो अेना दर्शन थी दुःखड़ा हरिए के. हैयुं. २।
आतम - ज्योतना दीवा प्रगटाव्या, आगम सुधाना पान कराव्या ।
हो तारी मूर्ति तारी मूर्तिनी जाऊं बलिहारी के हैयु. ३ ।
संत विचक्षण बेड़ो पार छे, धर्म तिलकनुं तेज अपार दे ।
हो गुरु भक्तिथी भवजल तरीए के, हैयुं. ४।

साध्वी तिलकश्री रचित

६५ गुरुदेव स्तवन

(राग – अखंड सौभाग्यवती)

शासन वागमां गुरुजी सोहाय, करुं कोटी वंदना ।
दया धर्मनो झंडो लहेराय, करुं कोटी वंदना ।
खरतरगच्छनो जगमग दीवडो हतो,
आजे अस्त थयो सूर्य जलहलतो ।
सहु संघ करे छे पोकार । करुं ।।१।।
आजे संघ सहु निराधार थयो, खाली पाट कोई आघात थयो ।
हवे कोण करशे उपकार । करुं ।।२।।
राज राणाने प्रतिबोध आप्यो, घोर पापीना दिलमां धर्म स्थाप्यो ।

वरतायो जय जयकार । करुं. ।।३।।
सेवो संत विचक्षण ज्ञान फले, तिलक नाम रटे सहु आश फूले
तमे साचा तारणहार । करुं. ।।४।।

गुरुदेव स्तवन

ओ दादा देव महान, सब दूर करो अज्ञान ।
अंधकार में डूब रहे, गुरु थाम लो अपना जान ।। टेर।।
मतलब की दुनियां को, हम अपना समझ बैठे ।
तुम सच्चे जो रक्षक थे, ये बात भुला बैठे ।
अब गौर करो भगवान, निसहाय को लो पहिचान।ओ०१।।
तुम ठुकरा दिये हमको, हम किस से बोलेंगे ।
दर तेरे खड़े होकर, चुप चुप के रो लेंगे ।
तेरे होकर रोये, तुम हो जावोगे बदनाम । ओ०।।२।।
तुम सबके सहायक हो, हमें तेरा सहारा है ।
हमें ज्ञान उजाला दो, ये दिलसे पुकारा है ।
यह दत्त मंडल कहता, संदेश तेरे है महान ।ओ०।।३।।

धर्ममाणिक्य रचित

६७ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - अरथी चढजो रे

महिमा तो प्यारी हो दादा महीयले,
म्हांरा सद्गुरु जांणे तो सकल जिहांन रे ।
जाणे विधे जाकी जाणे विधि
जांची म्हांने वांछित दे ज्यो ।
आगलि तो ऊभा होदा थांहरे,

ऊं लगे म्हारा सद्गुरु राउ जाणा राजा नरे ।
कीरति तोरी साची कीरत तोरी साची
म्हांने वांछित दे ज्यो वांछित दे ज्यो रे राजि ।
खरतर गच्छ ना राजा बाजै जस वाजा,
वाचा ना साचा सेवक ना प्रतिपालक
मुन ध्रम रा मांणिक दौलित रा दरिया ।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

६८ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - वादा किया वो निभाना पड़ेगा)

गुरु तुम्हें आना, आना पड़ेगा..... रोके रुकोगे कैसे?
भक्तों के संकट हरने, आना पड़ेगा ।।टेर०।।
तू ही है मेरा अन्तर्यामी,
नाथ प्रभु तू ही जीवन स्वामी।
पाऊं मैं कैसे तेरी, कैसे तेरी
करुणा नजर ये बनाना पड़ेगा ।१।
जैसा भी हूँ मैं दास तेरा,
तेरे से जुड़ गया, प्रभु नाम मेरा ।
जैसे बनेगा वैसे, बनेगा वैसे तुम को तो
मुझ को स्वामी निभाना पड़गा ।।२।
पूर्ण पुरुप तूँ सद्गुरु स्वामी,
सारी दुनियां तेरी कृपा कामी ।
नाथ "विचक्षण" नैया "भ्रमर" से
तुम को पार लगानी पड़ेगी ।।३।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

६९ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - चन्दन सा वदन)

श्रद्धा के सुमन, शत-शत वन्दन, हे परम कृपालु गुरुवरा ।
मेरी भूल को भूल सदा स्वामी, तुम दौड़े आना गुरु वरा।।टेर।।
संभव है संकट में, पड़कर, मै याद भुला जाऊँ तेरी।
पर ध्यान बेध्यान न कर देना, हे नाथ! दया पाऊं तेरी।
हर संकट में तुम साथ रहो,है संकट मोचन नाम धरा।।१।
है माया ममता दल बल से, आबद्ध किया है अब मुझको।
तुम देख रहे हो क्यों गुरुवर! भक्तों की लाज सदा तुम को ।।
दुनियॉ ने मुझ को जकड़ा है, तूँ ही है मेरा दुःखहरा ।।२।
तेरी एक करुणा दृष्टि से, हो मेरा जीवन स्वर्णोदय।
तो का लगता है मोल गुरो,
दो ज्ञान "विचक्षण" ज्ञानोदय ।
जैसी भी हूँ तेरी गुरुवर! तूँ ही मेरा भव "भ्रमर" हरा ।।

भंवरीबाई रामपुरिया रचित

७० गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - चांदी की दीवार न तोडी)

हाल हुए बेहाल हमारे, तुम ने मुखड़ा मोड़ लिया ।
मै तो था अपराधी लेकिन,तुम ने भी क्यों छोड़ दिया ।। टेर ।।
जग की माया में भरमा कर, मैंने तुम्हें विसार दिया ।
पर यह कैसी बात हुई जो, तुम ने मुझ को टार दिया।
मै तो था एक पामर प्राणी, माया ने भरमा लिया।
अधमोद्धारक सद्गुरु देवा, मुझसे मुखड़ा मोड़ लिया ।। १ ।।

क्रोध मोह मद मान लोभ तज, तू भवसागर पार गया।
मैं इनकी उलझन में उलझ भवसागर की धार गया।
तू सुख सिधु, तू करुणाकर, लाखों का निस्तार किया।
खूब "विचक्षण" तू है भगवन! "भ्रमर" जीवन उद्धार लिया ।।२।।

मनोहर रचित

७१ गुरुदेव स्तवन

तर्ज – करती हूँ तुम्हारा व्रत मै

अरदास हमारी सुनलो, दादा गुरु महाराज ।
चरणों में आन पड़ा हूँ पार लगा दो मुझको नाथ ,
दादा गुरुमहाराज श्री कुशलसूरिजी, श्री चंद्रसूरिजी ।।
कहते है तुमको दादा जग के तारणहारे ,
मेरे भी कष्ट निवारिये, हो संसार के तारे ।
कब लोगे सुध तुम मेरी,
भव पार करो नाथ चरणों मे आन ।। १।।
अंधों को देदी ऑखे, और गूंगो को बोली,
पंगु गिरी पार लगाये, सबने जय जय है बोली ।
संकट में है यह धरती उद्धार करो नाथ चरणों मे आन ।।२।।
जो कोई तेरे द्वारे पर, शुद्ध मन से है आया,
और ध्यान तुम्हारा धर के मन वांछित फल है पाया,
अब दास 'मनोहर' की विनती,स्वीकार करो नाथ, चरणो।।३।।

मनोहर रचित

७२ गुरुदेव स्तवन

तर्ज – लाल अली बेड़ा पार लगा

कोई नहीं दादा तेरे सिवा, तू है तारण हारा,तू है पालन हारा,

जयपुरवाले हो दिल्ली वाले, दादा गुरु तेरा दरबार निराला,
है सब द्वारो से आला ।। कोई नही ।।
कितने अधम और पापी तारे, कितने पतित दुखियो को उवारे,
हम भी खड़े है दादा दर पे तेरे, दादा द्वार तेरे, जयपुर वाले,
दादा गुरु ..... तेरा १।।
जिसने भी आके तेरी जोत जगायी,
मन की मुरादे उसने उस दम पायी,
जैन मण्डल तेरे द्वार खड़ा, लिये विनती भला,
जयपुर वाले, अजमेर वाले,मालपुरा वाले दादा गुरु तेरा.....२।।
चारों दादा हैं उपकारी, दास 'मनोहर' शरण तिहारी,
मेरी बार क्यूँ देर करी, सुनलो अर्ज मेरी,
हो जयपुर वाले, अजमेर वाले, दिल्ली वाले,
दादा गुरु, दादा गुरु, तेरा दरबार निराला ....३।।

मनोहर रचित

७३ गुरुदेव स्तवन

तर्ज – अल्लाह को प्यारी है कुर्बानी

गुरुवाणी, गुरुवाणी, गुरुवाणी हम सव को प्यारी है गुरुवाणी ।।
सुन ले ऐ नादां इन्सान – यह सद्गुरुओ का फरमान ।
यह दुनिया सारी फानी,मत फंस इसमे अज्ञानी ।। गुरुवाणी १।।
कौन क्या यहां लाया है – कौन संग ले जायगा,
कौन हरदम है रहा, क्या कोई यह बतलायेगा, कोई यह.. .२।।
हो ऽऽऽ यह जग झूठी माया है, क्यो इसमे भरमाया है ।
मत कर ऐसी नादानी, दो दिन की है जिंदगानी।। गुरुवाणी.. ३।।
रिश्ते-नाते झूठे है, झूठे है महलो मकां,

कुछ भी संग नहीं जायेगा,कहते हैं गुरुवर महान,कहते हैं....४।।
हो ऽऽऽ गुरु चरणों में आकर देख,इक पल ध्यान लगा कर देख
मन में पायेगा विश्राम,सुनले 'मनोहर' ए नादां।। गुरुवाणी...५।।

मनोहर रचित

७४ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – बम्बई से आया मेरा दोस्त)

दादाजी के आये हम द्वार, सब मिल नमन करो,
हो जाओगे भव से पार, सब मिल नमन करो ।। टेर ।।
कर्मों के चक्कर में प्राणी, भव भव के गोते खाये,
कोई न दूजा सहारा, जो इनसे हमको छुड़ाये,
ये ही करेंगे भव पार, सब मिल नमन करो ।। दादाजी ।।१।।
जो तेरे द्वार पे आये, दुखड़ा है अपना मिटाया,
सुनले समझले बन्दे, यह जग है झूठी छाया
करले तू आत्म सुधार, सब मिल नमन करो ।। दादाजी ।।२।।
यह जग है झूठी माया, क्यों इसमें है भरमाया,
कहता 'मनोहर' ये नाते, कोई नहीं संग जाते,
करले तूं गुरुवर से प्यार,सब मिल नमन करो।। दादाजी ।।३।।

मनोहर रचित

७५ गुरुदेव स्तवन

तर्ज – मैं आया मैं आया शेरा वाली ए ।

मै आया मैं आया दादाबाड़ी में, गुरुवर दर्शन पाये दादाबाड़ी में ।।
बिलाड़ा वाले आ, हो दिल्ली वाले आ, मालपुरा वाले आ ...
जिसने भी आके तेरी जोत जगाई,मन की मुरादें उसने उस दमपाई,
इस दर से कोई जाये न खाली बिन मांगें सब पाये,दादाबाड़ी में..१।

पांच पीर को बस में कीना, मरी गाय को जीवित कीना,
दीन दुखी धनवान सभी जन तेरा ही गुण गाते दादाबाड़ी मे ...२ ।
आया 'मनोहर' शरण तिहारी, कर दे नैया पार हमारी,
कैसे तुझको भूलूं दादा एक झलक दिखलादे दादाबाड़ी मे ....
मै आया ...३।

माणक रचित

७६ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – भैरवी)

सद्‌गुरु चरण कमल पूजन की,लग रही आशा मन की ।।टेर।।
गुरु दरबार चलो भविजन सब,भई किरपा दर्शन की ।। सद्.।।१।।
भेटो चरण चन्दन कर्पूर से,तपत मिटे सब तन की ।। सद.२।।
बहुत वार तुमने गुरुदाता,टाली विपत भवियण की ।। सद्.३।।
राखो लाज दास माणक की,लीनी शरण चरण की ।। सद्.४।।

मुक्ति मोहन रचित

७७ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - हिरंजा की)

सद्‌गुरु जी म्हारां, शरणे आया की लज्जा राखजो ।
पतित उद्धारण विरुद सुणीने, आयो तुम्हारे पास ।
अब मन वांच्छित पूरो मेरा,एहिज दिल की आशजी ।।१।।
काम क्रोध मद लोभ तजी ने, तज दियो सब संसार।
नवपद नो एक ध्यान धरीने,पाया सहु गुण पारजी ।।२।।
देश देश में थुम्भ विराजे, परचा जग विख्यात ।
इण कलि मांहे सुरतरु सरिखा, प्रगट रह्या साक्षात्‌जी ।।३।।
चिन्तामणि और कामधेनु सम मेरे तुमहीज देव ।

आंण धरुं हूँ ताहरीजी, करूं तुम्हारी सेवजी ॥४॥
मात-पिता बन्धु तुम जग में, हितकारी गुरुराय ।
राजा राणा सहु जग मांहे, सेवे तुम्हारा पायजी ॥५॥
आज प्रभु तुम चरण पसाये सीधा वांच्छित काज ।
लक्ष्मी प्रधान तुम्हारा दर्शन,मोहन गुण का राजजी ॥६॥

महो.ऋद्धिसार रचित

७८ गुरुदेव स्तवन

इस दुनिया में तेरो यश छाय रह्यो रे,
छाय रह्यो, छाय रह्यो रे ॥ इस.॥ टेर ॥
अनुपम महिमा कान सुनी तुम,
मन वांच्छित फल पाय रह्यो रे ॥ इस.१॥
राज राज गुरुराज चिन्तामणि,
सुरतरु छाया छाय रह्यो रे ॥ इस.२॥
सजन मेघ ज्यूँ अमृत बून्दें,
भक्त हृदय बरसाय रह्यो रे ॥ इस.३॥
चरण न छोडूं मुख नही मोडूं
तेरी लगन, लय लाय रह्यो रे ॥ इस.४॥
राम धाम तू ही है सद्गुरु,
घट में ज्योति जगाय रह्यो रे ॥ इस.५॥

महोपाध्याय ऋद्धिसार रचित

७९ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - जय बोलो पास जिणेसर की)

सद्गुरु जी के द्वार मची हेरी । स ० ।
आये श्रीसंघ सब हिल मिलके, संग लिये बाला जोरी।स०।

दीनदयाल के सम्मुख ढाढे,पठत मधुर धुन गुण गौरी । स०१।
केसर घोली भरी कचोली, पूजत है बाली भोरी । स ०।
रंग गुलाल मच्यो सद्‌गुरु के,अबीर उड़ावत भर झोरी ।स०२।
धन धन भाग्य हमारे प्रगटे, सद्‌गुरु नें पकड़ी डोरी । स०।
अति मनरंजन दुश्मन गंजन, बलिहारी चरणां तोरी । स०३ ।
कामित दाता जग के भ्राता, अरजी यह सुनले मोरी । स० ।
कहत राम ऋद्धिसार सुपाठक,वन्दन है दुय कर जोरी । स०४।

महोपाध्याय ऋद्धिसार रचित

८० गुरुदेव स्तवन

(होरी)

होरी खेलो भविक सद्‌गुरुके संग,
नित आनन्द उच्छब होत रंग । हो ०।
मस्त महीना फागुण आया,श्री संघ से हिल मिल के संग।हो०१।
कोयल शब्द करत स्वर झीणा, अली कली के संग रंग। हो ०।
ऋतु वसन्त आनन्द पिया संग, गौरी गावत बाजत संग। हो०२।
ऐसे साज समाज भक्ति से,गुण गुलाल लिये गुरु के अभंग।हो०।
निरमल मन मकरन्द सुधाकर,अतर पुष्प सें चरचो अंग।हो०३।
ध्यान पिचकारी अजब सुधारी,छिड़को महकत सुरभि गंग ।हो०।
करत चैन दरसण सै नैण, ऋद्धिसार के मन उमंग ।हो०४।

प्र. विचक्षणश्री रचित

८१ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - तेरे हुश्न की क्या तारीफ करुं)

ओ निरंजन निर्ग्रन्थ गुरो! तेरे दर्शन बिन अकुलाये हैं,
भव अटवी में हम एकाकी, पथ-दर्शक विन भटकाये हैं।

मोहे बॉह पकड़ कर पार करो, हम निराधार बिलखाये है,
ले तेरे आश्रय की आशा, हम नाथ चरण लपटाये है ।१।
मै मात बिना के बालक ज्यूँ सेना सेनानायक बिन ज्यों,
गिरता-पड़ता, उठता-चलता, यह राह कटेगी कैसे यों ।
तूँ पतितों का पावन करता, दीनोद्धारक कहलाता क्यों,
भव-अटवी में हम एकाकी,पथदर्शक बिन भटकाये है।।२।
तुम -सा है नाथ मेरे सिर पर, दुनियाँ तेरा यश गाती है,
मेरा जो होना होवेगा, संग लाज तुम्हारी जाती है।
दरगुजर करो मेरी स्वामी, विचक्षण शीष नमाती है,
भव-अटवी में हम एकाकी,पथदर्शक बिन भटकाये हैं।।३।

प्र. विचक्षणश्री रचित

८१ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज- तूँ प्यार का सागर है।)

तूं ज्ञान का बादल है, दया बूँदें बरसेंगी कब ?
चातक से तरसते है, अरे! आओगे धरा पर कब ? टेर।।
सुखा चमन यह उजड़ी बगिया, बिन अमृत जलधार ।
प्यासा प्राण पपैया तड़पै, इस उस डाली पार ।
अरे ! जो तुम न बचाओगे,शरण किसकी पाएँगे तब। तूँ०।१।
सूखे सागर ताल तलैया, उजड़े हैं सारे खेत।
सूखा वीराना बाग पड़ा है, प्रेम हरियाली समेत।
अरे ! जिनशासन की वह शान, बचेगी तुम ही
बचाओ जब। तूँ०। २।
आओ जलधर ताप शमाओ, हाल हुए बेहाल ।
टूट पड़ी है, फूट यह घर में, द्वन्द्व मचा विकराल ।

"विचक्षण" ता मन में भर दो,
अरे दादा ! भ्रम हरलो सब । तूँ०।।३।

प्रवर्तिनी विचक्षण श्री रचित

८२ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज- अखण्ड सौभाग्यवती)

तेरे दर्शन को गुरुदेव ! द्वार पर कब से खड़ा ।
तेरे और मेरे बीच कर्म का भेद पड़ा ।।टेर ।।
तेरा बाहर रूप दिखाया है, मैंने अन्तर भेद न पाया है।
करो कर्म-पटल-घन दूर । द्वार ।।१।
मन काम कषायों की आंधी है, तृष्णा का वेग तूफानी है ।
कैसे जले ज्ञान की ज्योत । द्वार ०।।२।
दादा तेरी कृपा जो हो जाए, मेरा अन्तर रूप प्रगट पाए ।
दिल एक विचक्षण प्यास । द्वार ० ।।३।

प्र. विचक्षणश्री रचित

८३ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज- गंगा मैया में जब)

देवा ओ गुरुदेवा देवा ओ ओ
गुरुदेव ! मै तुम दर पे कबसे खड़ी
अब आओ न करो तुम देर बड़ी २ देवा... ओ । १ ।
जब भक्तों पे संकट आये, तब तुमने ही आकर बचाये
कर करुणा अपार, सुन भक्त पुकार
चिहुं दिश ए किरन फैली तेरी २ देवा... ओ । २ ।
अब टेर सुनो गुरु मेरी विरुद संभारो अरज है मेरी
भक्त-वत्सल भगवान मिट जाये अज्ञान

हो जाऊँ मै तुम पद- कज की चेरी २, देवा... ओ । ३ ।
संत संगत विचक्षण पाऊँ, आत्म स्वभाव में रमजाऊँ
शुद्ध सम्यक् ज्ञान, प्रकटा दो महान
मिट जाये मेरी भव-भव की फेरी २ देवा.... ओ । ४ ।

प्र. विचक्षणश्री रचित

८४ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज- घर आया मेरा परदेशी)

भवसागर है तूफानी, मैं हूँ बालक नादानी ।।टेर।।
कोई नहीं बलदाता है, शक्ति बुद्धि प्रदाता है ।
हरो भव भव की हैरानी ।मै०।।१।
दुख के बादल मण्डराए, हम है भगवान घबराए,
नूर भरो हे सुखदानी ! मै०।।२।
अज्ञान -घटा उमड़ाई है, ज्ञान की ज्योति ढंकाई है,
दीप- मालिका प्रगटानी ।मैं ०।।३
सम्यग् बुद्धि दो दादा ! कर लो दर्शन का वादा ।
ज्ञान विचक्षण वरदानी । मै ० ।।४

प्र. विचक्षणश्री रचित

८५ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज- तेरी शहनाई बाजे)

मै हूँ दुखिया अनादि, दे दो आत्म-आजादी।
मेरी विपदा हरो गुरुदेव रे ।। टेर।।
कर्म बीज से बनी भव खेती, मेरी आत्मा अब भी न चेती ।
शुभ अशुभ परमाणु लेती, भरे प्रतिपल आसव रेती ।
मेरी भूल मिटा दो, मुझे राह बात दो,

कर्म मुक्त करो तत्खेव रे । मै ० १

सुख दु:ख से उठता गिरता, मोह नीद से मै नहीं हिलता ।
संसार घाणी में पिलता, पलभर भी चैन न मिलता ।
मेरा चैतन्य जगा दो, मोहराय भगा दो,
मेरी दूर करो कुटेव रे । मै०२।

राग द्वेष विषय वश भटका, माया ममता भरे चट चटका।
अज्ञान निशा में पटका, लख चौरासी में लटका।
आत्म विवेक जगा दो, अविवेक हटा दो,
मैं 'विचक्षण' बनूं स्वयमेव रे ।। मैं०३।

प्र. विचक्षण श्री रचित

८६ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज- हे प्रभो तेरी निराली शान है)

हे गुरु तेरी कृपा अनिवार्य है,
बिन कृपा तेरी न दु:ख परिहार्य है।
क्रोध माया मान ममता घेर कर,
घात में बैठे हैं अवसर हेर कर । हे ० १।

आत्मधन मेरा लुटेरे लूटते,
शुद्ध सम्यग् पुष्प कलियां चूटते । हे ०२।

ले बचाले नाथ भव ये जा रहा,
मरण शत्रु पास प्रतिपल आ रहा ।हे०३।

दो विचक्षण ता इन्हें मै जीत लूँ,
मरण से अमरत्व का रस खीच लूँ । हे ० ४।

विजय रचित

८७ गुरुदेव स्तवन

तर्ज - ओ दूर जाने वाले वादा न भूल जाना)

गुरुदेव मेरी किश्ती, उस पार लगा देना ।। उस०।।टेर।।
मैं नाथ कहा करता, तुम पार किया करते।
मुझे इक तेरा सहारा, यह ध्यान दिल में लाना ।।गुरु० १।।
अवगुण अनेक मुझ में, तो भी शरण पड़ा हूँ।
अब तो हमारी किश्ती, भव पार ही लगाना ।।गुरु० ।।२।।
सेवक "विजय" की अर्जी, अब तो स्वीकार करना।
दर्शन की आश पूरो, झट दर्श दिखा देना ।।गुरु० ।।३।।

विजय रचित

८८ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - मोहब्बत के धोके में कोई न आये)

गुरुवर गुरुवर जपलो प्यारो - जपलो प्यारे
गुरु सेवा भव पार उतारे- पार उतारे ।।टेर।
भवसागर में डेरा मेरा -
राग द्वेष मद ग्राहों ने घेरा - ग्राहों ने घेरा-
नईयां भंवर में-जाति बचादो-जाति बचादो ।।गुरु० १।।
आठ कर्म ये दुष्ट हैं भारी - दुष्ट हैं भारी
इसने मुझको किया भीखारी - किया भीखारी -
समकित दान दें भय से छुड़ा दें,
भय से छुड़ा दो ।।गुरु०२।।
विजय को तेरा सहारा- तेरा सहारा
जो हरदम जपता- नाम तुम्हारा- नाम तुम्हारा

आकर मुझको - दरश दिखादो-
दरश दिखादो ।।गुरु० ।।३।। इति ।।

विजय रचित

८९ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - गजल)

गुरुवर तुम्हारी - मूर्ति देखी- शर झुके मुझ
लली लली ने ।। गुरु।। १।।
दर्शन करने हम सब आते,
गुरु गुण गाते पांव पड़ी ने ।। गुरु० ।।२।।
केशर चन्दन घिसकर लाते-,
अंगीयां रचाते हसी हसीने ।।गुरु ०।।३।।
नैवेद्य लाते सब मिल करके -,
धूप को करते घसी घसी ने ।।गुरु ०।।४।।
आरती करते मंडल मिलकर,
नृत्य नाचते मिली मिली ने ।।गुरु० ।।५।।
विजय कहे गुरुवर की पूजा,
श्रद्धा थाल को भरी भरी ने ।।गुरु० ६।।

विजय रचित

९० गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - रेखता)

गुरुवर द्वार पे तेरे, मै दर्शन करने आया हूँ।
तुम्हारे चरणों में रहने की,
आशा दिल में लाया हूँ ।।टैर।।
तुम्हारे दर्श की खातिर, मैं फिरत दर दर ठोकरे खाता।

न भटकाओ मुझे दर दर,
मैं तुमरे पास आया हूँ ।।गुरुवर।। १।।
अनेकों तारते हो तुम, गुरुवर संसार सागर से।
विजय को पार अब करदो,
शरण मै तेरी आया हूँ ।।गुरुवर० ।।२।।

विजय रचित

९१ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज - चले जाना नहीं नयन मिला के)

दर्शन देना हमें, दर्शन देना मोहे;
गुरुवर आके हमें दर्श दिखादे ।। टेर।।
आपके चरणों में; ध्यान लगाया है,
उन्ही मुनीश्वरों ने दर्शन पाया है,
उनको तारे हैं, वैसे मुझे तारो । दर्शन।।१।।
सेवक विजय तोरी, शरण में आया है,
चरणों में आपके शर को झुकाया है
मेरी नईयां को भव तरादो - मोहे पार लगादो ।।दर्श०।।२।।

सत्यरत्न रचित

९२ गुरुदेव स्तवन

।।तर्ज - होरी लहुरी ।।

भाया भक्ति से पूर रहो, दुर्जन सब दूर हरो ।। टेर।।
मेरे मन में वैरागी, चित्त परिणित लगन सुं लागी ।
मेरी भाग्य दशा अब जागी, जिया हो।। भा० ।।१।।
सब सज्जन मिल कर आवो, गुरु चरणे चौक पूरावो ।
बलि अक्षत थाल वधावो,जिया हो ।।भा०।। २।।

गुरु महिमावन्त सवाई, गुरु नाम सदा सुखदाई।
गुरु सेवा पाप पुलाई, जिया हो ।।भा० ।।३।।
घस केशर भर भरिय कचोली, मांहे मृगमद घोली।
गुरु पूज रचो भर झोली; जिया हो ।।भा० ४।।
जिन हर्ष सूरीश्वर राजा, वाजे जग जशना बाजा।
सत्य रत्न करे शुभ काजा; जिया हो ।।भा ०।।५।।

सत्यरत्न रचित

९३ गुरुदेव स्तवन

(देशी - मिरजा सरक पर क जारे तूं तो नागर वांमनी, एहनी)

सद्गुरु दरसण दीजे रे, हुंतो अरज करुं कर जोड़ी ।स.।
केसर चन्दन भर के कचोली, मांहि मृगमद कुंकुम घोली।
सद्गुरु पूजो भर भर झोली, सद्गुरु सुनिजर कीजे रे ।स.१।
सेवक ऊपर करुणा कीजे, महिर निजर सुं पावन कीजे ।
भेंट करूं सो हित कर लीजे, गुरु को सिमरण कीजे रे ।स.२।
गुरु के चरणे जात्री आवे, भर भर मोती थाल वधावे ।
नर नारी मिल मंगल गावे, गुरु के सरण रहीजे रे ।स.३।
सद्गुरु सेवा नवनिध मेवा, गुरु के मिल मिल आवे देवा ।
गुरु कों पूजे कुंवर कलेवा, गुरुजी निज गुण दीजे रे ।स.४।
श्री खरतर पति गुण हितकरी, श्री जिनहर्षसूरि हर्ष अपारी ।
सत्यरत्न मनि आनंद भारी, सद्गुरु मेवा दीजे रे ।स.५।

सोभागचन्द नाहटा रचित

९४ गुरुदेव स्तवन

तर्ज - पराई हूं पराई, मेरी आरजू न कर

आए गुरुवर आए, हम तो तेरे द्वार पर ।

सुन लो अर्ज हमारी, नैया भव से पार कर ।। आए ....
वह धन्य धरती, जहां जन्म तुमने पाया था ।
वह धन्य मात, जिसने तुमसा लाल जाया था ।
झूठे संसारिक सुखों से, न मन लुभाया था ।
जगत उपकार में, जीवन सारा लगाया था ।
तुम योगी बन गए थे, घर बार छोड़ कर ।। आए....१।
भक्तों की डूबती, नैया तुमने तिरायी थी ।
जो फैला रोग था, पीड़ा तूने मिटाई थी ।
गूंगो ने बोली और अन्धों ने ऑख पायी थी ।
उगाया चांद, अम्मावस पूनम बनायी थी ।
हजारों भक्त बने, तेरे चमत्कार पर ।। आए .....२।
मरी पड़ी थी गाय, जिन्दा तू ने किया था ।
गिरी बिजली तुमने पात्र में ढक दिया था ।
बकरी का भेद सुन, अकबर ने शरण लिया था ।
जैन धर्म का तब, डंका बजा दिया था ।
वाणी अमृत सी तेरी, जिसमें जादू का असर।।आए...३।
अमर है नाम तेरा, याद तेरी आती है ।
तेरे गुणों के गीत, आज दुनियां गाती है ।
कहीं गुरु मन्दिर, कहीं बनी समाधि है ।
सदा लगते मेले, भक्तों की भीड़ आती है।
सुभाग कहे विपदा, हमारी दूर कर।। आए ....४।

हर्ष रचित

९५ गुरुदेव स्तवन

।। तर्ज-प्रभाती ।।

आज की घड़ियां सफल भई है,गुरु दर्शन मैंने पाया रे ।।आज०।
रोम रोम आनन्द भयो मेरो,मन में हरख भरायरे।।आज०।।१।।
आशा पूरण संकट चूरण, एहि विरुद धराया है।
नाम लेत नवनिधि सुख पावे, दर्शन दुरित पुलाया है।।आज ०।।२।।
आरति चूरो वांच्छित पूरो, रिद्धि सिद्धि सुख दाया है।
दिन दिन मुझ घर होत वधाई,आनन्द हर्ष समाया है ।।आज०।।३।।
दूर देश में महिमा तेरी, सुनके हर्ष न माया है।
मन वच काया एकान्त करीने,तुम से ध्यान लगाया है।।आज०।।४।।
और देव मैं कभी न ध्याऊं गुरु चरणे चित्त लाया है।
सेवक कर जोड़ी इम विनवे,हरख हरख गुण गाया है ।।आज०।।५।।

हर्ष विशाल शिष्य रचित

९६ गुरुदेव स्तवन

।। तर्ज-कहरवो।।

अरज सुणो गुरु एक हमारी ।।अ० ।। टेर।
तुम दरशन बिन हूँ बहु भटक्यो,आयो अब शरणागत थारी।।अ०१।।
पतित उधारण विरुद तुम्हारो।राखो सद्गुरु मोंहिनिरधारी।।अ०।।२।।
अहर्निश ध्यान तुम्हारो ध्याऊं,राखूं चित्त हित सें इकतारी।।अ०।।३।।
परचा पूरण कलियुग में गुरु,शोभा जग में बहु विस्तारी ।। अ०४।।
हर्ष विशाल शिष्य इम भाखे,चरण कमल की मै
जाऊं बलिहारी ।।अ०५।।

९७ गुरुदेव स्तवन

।।तर्ज - चाल।।

गुरु दर्शन पायो मैं आज, मन में हर्ष घणो । टेर।।
रोम-रोम आनन्द भयो मेरे, दुःख संकट गयो भाज ।

रण में ध्यावे जय जय पावे,तारे जलधि जहाज ।।मन० ।।१।।
आज की घड़ियां सफल भई है, समर्यां वांच्छित काज।
रिद्धि सिद्धि सुख सम्पति दीजे, महेर करी महाराज ।।मन०२।।
तुम विन देव अवर नहीं ध्याऊं,पाऊं सुख समाज ।
सेवक जाणी सदा सुख दीजे, राखो हमारी लाज ।।मन०३।।

९८ गुरुदेव स्तवन

(तर्ज–हीरा जड़ाऊं थारी पोथी रे साचा जोसी, गुरुसा मिलन कब होसी)

गुरुदेव मेरा, तुमही करोगे निसतारा,
दादासा मेरा, तुम ही करो निसतारा,
दादासा मेरा आप करोगे भवपारा ।। टेर ।।
ऋद्धि वृद्धि सुख संपति दायक,रत्न चिन्तामणी सम उपकारक।।
सूरि सकल में हो तुम नायक,युगवर वीर उच्चारा ।। गुरु.१।।
अनुपम कीरती तेरी पायी, श्री गुरुदेव बनो मेरे सहाई ।।
जीव रह्यो तुम चरण लुभाई,क्यों कर मुझको बिसारा।।गुरु.२।।
दुखिया ने जब अरज गुजारी,लीनी खबर जब टेर संभारी ।।
चन्द्र सूर्य ज्यों ज्योति तुम्हारी,लाखों जन को उबारा ।।गुरु.३।।
राय राणा तुम आणा ज माने,कुमती कदाग्रह तुम को न जाणे।
वन्दन करत है हम इक ध्याने, रखिये लक्ष हमारा ।।गुरु.४।।

गुरुदेव स्तवन

दिल्ली से उठी-दादा, काली घटाये ।
मालपुरे से आई, ठंडी हवायें ।।
ऐसा मेह बरसाना सतगुरु भूल ना जाना ।१।
अकबर कहे तेरी,शान बहुत है, सारी दुनिया में,दादा धूम मची है,
मुझको ना बिसराना, सतगुरु भूल ना जाना ।२।

दत्त सूरी के, नाप जपेगे । जाप जपे से, दादा कष्ट मिटेगे,
नैया पार लगाना, सतगुरु भूल ना जाना ।३।
तुमना सुनोगे दादा कौन सुनेगा,दीन जान कर, महर करेगा,
बिगड़ी बात बनाना, सतगुरु भूल ना जाना ।४।
दत्तसूरी अपने दर पे बुला लो,अपने दर्श का, जाम पिला दो,
पीकर हो मस्ताना, सतगुरु भूल ना जाना ।५।
नव युवक पड़े दादा, शरण तिहारी, पार करो दादा किश्ती हमारी,
संघ को पार लगाना, सतगुरु भूल ना जाना ।६।

१०० गुरुदेव स्तवन

नईया मेरी दादा तुम ही खेवइया ।
तुम्हारे नाम बेड़ा पार लंघइया ।।न.१।।
गहरी नदिया नाव पुराणी, जोर ही बाय चलइया ।।न.२।।
उवार वार कच्छु सूझत नाहीं, तुमरो ही नाम जपइया ।।न.३।।
संकट देख सेवक कुँ सद्गुरु,देरावर ते अइयाँ ।।न.४।।
संकट दूर हरो इस छिन मे, तुरत ही पार लंघइया ।।न.५।।
सेवक शरणे आयो तुम्हारे, तुम चरणन कूँ गहिया ।।न.६।।
जावजीव अे चरण न छोडूं तूँ मेंडा सुखदइया ।।न.७।।

गुरुदेव स्तवन

(तर्ज – राग काफी होरी)

सद्गुरु ने मोहे भंग पिलाई, मोरी अंखियन मे आगई लाली
नयनन मे छा गई अंखियन मे आ गई-नयनो मे छा गई ।।सद.टेर।।
काय की भंग, काय की मिर्चे, काय की कुन्डी वनाई ।।सद्.१।।
भाव की भंग मरम की मिरच,घोटन वाला मेरा शाही।।सद् २।।
क्रिया की कुन्डी ज्ञान का घोटा,शियल की साफी वनाई।।सद.३।।

ऐसे भंग पीये जो सुगुणनर,अजर अमर पद पाई ।।सद्.४।।
दादा गुरु कहता, मेरे मन गमतां,मोक्ष मारग पहुँचाई ।।सद्.५।।

जिनहरिसागरसूरि रचित

गुरुदेव अष्टक

(तर्ज – सुखंसर्वासंपद् – शिखरिणीवृत्त)

गुणी ज्ञानी दाता शिव सुख विधाता भुवन मे ।
नहीं है कोई भी गुरुवर तू ही देव तुम ही ।।
तूं ही माता तातानुपम गुण भ्राता हितु सखा ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ।।१।।
तजे मैने सारे कुपथ मतवाले कुगुरु जो ।
महा मायावी हैं विषय रसरागी मलिन है ।।
मिला स्वामी तूं ही सुविहित-हितैषी यतिपते ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ।।२।।
तु ही ज्ञाता त्राता जिनमत यशो विस्तृत विधि ।
प्रभावी नेता है खरतरवराचार विदिता ।।
महापापी हूँ मैं पतित पथगामी तदपि हे ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ।।३।।
सुनी ज्ञानी तेरी परम उपकारी सुमहिमा ।
पुरे ग्रामे देशे मम विनय भी एक सुन लो ।।
न होऊं दुःखों से विचलित यही नाथ बल हो ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ।।४।।

हटाये लोगो को व्यसन गण से देव तुमने ।
सुशिक्षा दे स्वामी महिर मुझ पे भी अब करो ।।
समर्थों को जो भी विकट विधी है वे सहज है ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ।।५।।
उपेक्षा जो मेरी कथमपि करोगे युगवर ! ।
सहारा कोई भी फिर न मुझ को है जगत मे ।।
सुनाता हूँ याते प्रभुवर ! सुनो कान धर के ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ।।६।।
न है कोई ज्योति हृदयतम भेदी गुरु बिना ।
न है कोई दानी परमपददायी गुरु बिना ।
अपापी पापो को सुगुरु हरते हैं इस लिये ।
गुरो दादा नित्य चरण शरणं ते भवतु मे ।।७।।
सुखाम्भोधे स्वामी परम करुणा सिन्धु भगवन् ।
रहूं सेवा मे, मै यह बस मुझे नाथ ! वर दो ।।
कही भी होऊं मै प्रणत 'हरि' पूज्य प्रभुवर ।
गुरो दादा नित्यं चरण शरणं ते भवतु मे ।।८।।

हरख रचित

गुरुदेव बधाई

आज आनन्द बधाइयां, गुरु मेरे महाराज, आनन्द बधाइयाँ ।
चिन्ता चूरण आशा पूरण, एहि विरुद धराइयां ।आ.१।
नाम होत भव निधि सुख पावे, दरशन दुरित पुलाइयाँ ।
आज की घड़ियाँ सफल भई है, गुरु दर्शन मै पाइयां ।आ २।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत्ति दीजे, मनवंछित सुख दाइयाँ ।
सेवक कर जोड़ी इम विनवे, हरख हरख गुण गाइयां ।आ.३।

महोपाध्याय ऋद्धिसार रचित

चतुर्दादा आरती

जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल मेवा ।
आनन्द सुख लेवा, जय जय गुरुदेवा ।।टेर.।।
एक व्रत, दोय व्रत, तीन चार व्रत, पंचम व्रत सोहे ।
भविक जीव निस्तारण, सुरनर मन मोहे ।।जय.१।
दु:ख दोहग सब हर कर सद्‌गुरु राजन प्रतिबोधे ।
सुत लक्ष्मी वर देकर, श्रावक कुल सोधे ।।जय.२।।
विद्या पुस्तक धरकर सद्‌गुरु, मुगल पूत तारे ।
बस कर जोगण चौसठ, पांच पीर सारे ।। जय.३।।
बीज पडंती वारी सद्‌गुरु, समन्द जहाज तारी ।
पीर किये वश बावन, प्रगटे अवतारी ।।जय.४।।
'जिनदत्त-जिनचन्द-कुशलसूरीश्वर,' खरतरगच्छ राजा ।
चौरासी गच्छ पूजे; मन वांछित ताजा ।।जय.५।।
मन शुद्ध आरती, कष्ट निवारन, सद्‌गुरु की कीजे ।
जो मांगे सो पावे, जग में यश लीजे ।।जय.६।।
विक्रमपुर में भक्त तुम्हारो, मंत्र कलाधारी ।
नित उठ ध्यान लगावत,फल पावत; 'रामऋद्धिसारी' ।।७।।

महोपाध्याय ऋद्धिसार रचित

मंगल दीपक

मंगल दीपक गुरु का कीजे
मन वंछित फल कारज सीजे ।।मं.टेर ।।

मंगल दीप मंगल अड़भासे,
घर घर मंगल भाव प्रकाशे ।।मं.२।।
करे करावे मंगल माला,
अन्न धन लक्ष्मी लहे सुविशाला ।।मं.३।।
अलिय विघ्न हर मंगल दीवो,
'ऋद्धिसार' भविजन चिरंजीवो ।।मं.४।।

षष्ठम् खंड

दादा गुरु पूजा

राम ऋद्धि सार रचित

दादा गुरुदेव की पूजा

(पहले स्थापना करके नीचे लिखा आह्वान का श्लोक पढे)

।। श्लोक।।

सकलगुणगरिष्ठान्सत्तपोभिर्वरिष्ठान्
शम----दम---यम--पुष्टाचारुचारित्रनिष्ठान्।
निखिल-जगत-पीठे दर्शितात्मप्रभावान्
मुनिप-कुशलसूरीन् स्थापमाम्यत्र पीठे।।१।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनदत्त, श्रीगणिधारीजिनचन्द्र, श्री जिनकुशलसूरि, श्री जिनचन्द्रसूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ।।
ॐ ह्रीं श्री श्री जिनदत्त, श्री मणिधारी जिनचन्द्र, श्री जिनकुशल, श्री जिनचन्द्रसूरि अत्र तिप्ठ ठ ठ ठ स्वाहा।। इति प्रतिप्ठापन।।२।।
ॐ ह्रीं श्री श्री जिनदत्त, श्री गणिधारी जिनचन्द्र, श्री जिनकुशल, श्री जिनचन्दसूरि गुरो अत्र मग सन्निहितो भव वषट्। इति सनिधिकरणं।।३।।

१- अथ न्वहण पूजा

(स्नात्रिया शुचि होकर जल का कलश लेकर खडा होवे)

।।दोहा।।

ईश्वर जग चिन्तामणि, कर परमेष्ठी ध्यान।
गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान।।१।।
सौधर्म्मा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट।
मिथ्यामत तम हरन को, भव्य दिखावन वाट।।१।।

सुस्थित सुप्रतिबद्ध गुरु, सूरि मंत्र को जाप।
कोटि कियो जब ध्यान धर, कोटिक गच्छ सुथाप।।३।।
दश पूर्व्वी श्रुत केवली, भये वज्रधर स्वाम।
तादिन से गुरु गच्छ को, वज्रशाख भयो नाम।।४।।
चन्द्रसूरि भये चन्द्र सम, अतिहि वुद्धि निधान।
चन्द्रकुलि सब जगत मे, पसर्यो बहु विज्ञान।।५।।
वर्द्धमान के पाट पद, सूरि जिनेश्वर भास।
चैत्यवासि को जीत कर, सुविहितपक्ष प्रकाश।।६।।
अणहिलपुर पाटण सभा, लोक मिले तहा लक्ष।
खरतर विरुद सुधा निधि, दुर्लभ राज समक्ष।।७।।
अभयदेवसूरि भये, नव अंग टीकाकार।
थंभण पारस प्रकट कर, कुष्ठ मिटावन हार।।७।।
श्रीजिनवल्लभसूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक।
प्रतिवोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष।।६।।
हुंवड़ श्रावक बागड़ी, अट्ठारे हजार।
जैन दया धर्मी किये, वरते जयजय कार।।१०।।
दादा नाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास।
दत्तसूरि गुरु पूजतां, आनन्द हर्ष उल्लास।।११।।
मदनपाल दिल्लीश ने, हुक्म उठाया शीस।
मणिधारी जिनचन्द गुरु, पूजो विश्वा बीस।।१२।।
ताके पट्ट परम्परा, श्री जिनकुशलसुरिंद।
अकबर को परचा दिया, दादा श्री जिनचन्द।।१३।।
ऐसे दादा चार को, पूजो चित्त लगाय।
जल चन्दन कुसुमादि कर, ध्वज सौगंध चढ़ाय।१४।।

(चाल--दादा चिरजीवो)?

गुरुराज तणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी लच्छि घणी।। टेर।।
गुरुदत्त सूरि जग उपकारी, गुरु सेवक ने सानिधकारी।

गुरु चरण कमलनी बलिहारी, गु० ।।१।। .
सवत इग्यारे बार शशि, बत्तीसे जनम्या शुभ दिवसी।
श्रावक कुल हुम्बड ने हुलसी, गु० ।।२।।
जसु बाछगसा पितु नाम भणे, बाहडदे माता हर्ष घणे।
इकतालीसे दीक्षा पभणे, गु० ।।३।।
गुणहतरे वल्लभ पटधारी, गुरु माया बीजनो जाप करी।
गुरु जग मे प्रगट्या तरण तरी, गु० ।।४।।
मणिधारी जिनचन्द उपगारी, जिनदत्त सुरिंद के पटधारी।
भये दादा दूजा सुखकारी, गु० ।।५।।
राशल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र वोधन शाता।
दिल्ली पतिशाह सुगुण गाता, गु० ।।६।।
जसु चौथे पाट उद्योत करी, जिनकुशलसूरिंद अति हर्ष भरी।
तेरे सैतीसे जनम धरी, गु० ।।७।।
जसु जिल्ला जनक जगत्र जियो, वर जैतश्री शुभ स्वप्न लियो।
छाजेहड गोत्र उद्धार कियो गु० ।।८।।
धन सैतालीसे दीक्षा धरी, जिनचन्द सूरीश्वर पाट वरी।
गुणहतरे सूरि मन्त्र जापकरी, गु० ।।९।।
सेवा मे बावन वीर खरा, जोगनिया चौसठ हुक्म धरा।
गुरु जग मे कई उपकार करा, गु० ।।१०।।
माणिकसूरीश्वर पद छाजे, जिनचन्द्रसूरि जग मे गाजे।
भये दादा चौथा सुखकाजे, गु० ।।११।।
जिन चाद उगायो उजियालो, अम्मावस की पूनम वालो।
सब श्रावक मिल पूजन चालो, गु० ।।१२।।
जिन अकबर को परचा दीना, काजी की टोपी बस कीना।
वकरी का भेद कहा तीना, गु० ।।१३।।
गधोदक सुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सदगुरु चरण परी।
या पूजन कवि 'ऋद्धिसार' करी, गु० ।।१४।।

।।श्लोक।।

सुरनदीजलनिर्मलधारकैः, प्रबलदुष्कृत दाघनिवारकैः।
सकलमंगलवांछिदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राण प्रतिवोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय जलं निर्वपामिते स्वाहा।।१।।

२-- अथ केशर-चन्दन-पूजा

।।दोहा।।

केशर चन्दन मृगमदा, कर घनसार मिलाप।
परचा जिनदत्तसूरि का, पूज्यां छूटे पाप।।१।।

(चाल--बीन वाजे की)

दीन के दयाल राज सार सार तूं।।टेर।।
आये भरुअच्छ नग्र धाम धूम धूं।
वाजते निशान ठौर, हर्ष रंग हू।।१।।
मुसलमान मुगलपूत; फौज मौज मूं।
फौत गौत हो गया, हाय कार सूं।।२।।
सघ्न विघ्न देख आप, हुक्म दीन यूं।
लाओ गेरे पास आस जीव दान दूं।।३।।
मृतक पूत मत्र से उठाय दीन तूं।
देख के अचंभ रंग दास खास कूं।।४।।
करत सेव-भाव पूर, तुरक राज जूं।
छोड़ के अभक्ष खाण, हाजरी भरूं।।५।।
बीज खीज के पड़ी, प्रतिक्रमण के मूं।

हाथ से उठाय पात्र, ढांक दीन छू।।६।।
दामनी अमोल बोल, सिद्ध राज तूं।
देऊँ वरदान छोड़, बन्द कीन क्यूं।।७।।
दत्त नाम जपत जाप, करत नाहि चूं।
फेर मे पडूंगी नांहिं छोड़ दीन फूं।।८।।
करोगेनिहाल आप, पाव पलक नूं।
राम ऋद्धिसार दास, चरण छांह लूं।।६।।

।।श्लोक।।

मलयचन्दनकेशरवारिणा, निखिलजाड्यरुजातपहारिणा।
सकलमंगलवाञ्छितदायक, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय केशरचन्दन निर्विपामिते स्वाहा।।२।।

३-- अथ पुष्प पूजा

।।दोहा।।

चपा चमेली मालती, मरुआ अरु मचकुन्द।
जो चाढे गुरुचरण पर, तिन घर होय आनन्द।१।

(राग माडवाल--नीद तो गई रे बादीला म्हारी)

गुरु परतिख सुरतरु रूप सुगुरु सम दूजो तो नहीं।
दूजो तो नही, म्हारा चेतन दूजो तो नही, म्हारा चेतन दूजो तो नही।
गुरु परतिख सुरतरू रूप, सुगुरुने पूजो तो सही।।टेर।।
चित्तौड़ नगरी वज्र खम्भ मे, विद्या पोथी रही।
मन्त्र यन्त्र विद्या से पूरी, गुरु निज हाथ ग्रही।।१।।
पुर उज्जयनी महाकाल के, मदिर थम्भ कही।

सिद्धसेन दिनकर की पोथी, विद्या सर्व लही।।२।।
उज्जयनी व्याख्यान बीच में, श्राविका रूप ग्रही।
जोगनियां छलने कूं आई; सबकूं कील दई।।३।।
दीन होय जोगनियां चौसठ गुरु की दास भई।
सात दिया वरदान हरख सें, पसर्या सुयश मही।।४।।
पुष्प-माल गुरु गुण की गूंथी, चाढो चित्त चही।
कहे 'राम ऋद्धिसार' सुयश की बूंटी, आप दई।।५।।

।।श्लोक।।

कमल-चम्पक-केतकी-पुष्पकैः, परिमलाहृतषट्पदवृन्दकैः।।
सकलमंगलवाञ्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।
ॐ ह्री श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय, मणिमण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय, अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय पुष्पं निर्विपामिते स्वाहा।।३।।

४- -अथ धूप पूजा

धूप पूज कर सुगुरु की, पसरे परिमल पूर।
यश सुगंध जग में बढ़े, चढ़े सवाया नूर।।१।।

(राग सोरठा चाल-कुबजाने जादू डारा)

अंबिका विरुद बखाने, गुरु तेरो अम्बिका विरुद बखाने।
तुम युगप्रधान नही छाने, गुरु तेरो० ।।टेर।।
गढ गिरनार पे अम्बड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाने।
युगप्रधान इस युग में कोई, देखूं जन्म प्रमाने।।गु०१।।
कर उपवास तीन दिन वीते, प्रगटी अम्वा ज्ञाने।
प्रगट होय कर में लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने।।२।।
या गुण संयुक्त अक्षर बांचे, ताकूं युगवर जाने।
अम्बड़ मुलक मुलक में फिरता, सूरि सकल पतियाने।।३।।
आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने।

वासक्षेप का ऊपर डाला, चेला बांच सुनाने।।४।।
सर्व देव है दास जिन्होंके, मरुधर कल्प प्रमाने।
युगप्रधान जिनदत्तसूरीश्वर, अम्बड शीश झुकाने।।५।।
उद्योतनसूरीने निज हाथे, चौरांसी गच्छ ठाने।
वह सब तुमरी सेवा सारे, आन तुम्हारी माने।।६।।
भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्तन, कीनी ग्रन्थ प्रमाने।
युगप्रधानप्रकीर्ण गडिका, गणधर-पद-वृत्ति म्याने।।७।।
जो जन तुमको भक्ति से पूजे, हो उनके मन माने।
कहे 'राम ऋद्धिसार' गुरु की, पूजा धूप कराने।।८।।

।।श्लोक।।

अगरचन्दनधूपदशांगजै; प्रसरिताखिलदिक्षुसुधूम्रकै।
सकलमंगलवाछितदायक, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।
ॐ ह्री श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय, मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय धूप निर्विपामिते स्वाहा।।४।।

५- -अथ दीप पूजा

।।दोहा।।

दीप पूजकर सुगुण नर, नित नित मगल होत।
उजियालो जग मे जुगत, रहे अखडित जोत।१।

(राग--कलिगडा)

पूजन कीजो जी नरनारी, गुरु महाराज का हो।।टेर।।
सिधु देश मे पंच नदी पर, साधे पाचो पीर।
लोई ऊपर पुरुष तिराये, ऐसे गुरु सधीर।।१।।
प्रगट होय कर पाच पीर ने, सात दिये वरदान।
सिधु देश मे खरतर श्रावक, होवेगा धनवान।।२।।
सिधु देश मुलतान नगर मे, बडा महोत्सव देख।

अम्बड चैत्यवास का श्रावक, गुरु से कीना द्वेष।।३।।
अणहिलपुर पत्तन में आओ, तो मैं जानूं सच्चा।
धर्म ध्वजा फहराते आवें, देख लीजियो बच्चा।।४।।
पत्तन वीच पधारे दादा, डंका धर्म बजाया।
निर्धन अम्बड़ सन्मुख आया, अहंकार फल पाया।।५।।
मन में कपट किया अंवड़ ने, खरतर महिमाधारी।
जहर दिया उन अशन पान में, गुरु विधि जानी सारी।।६।।
भणसाली मुखबर श्रावक से, निर्विष मुद्री मुंगाई।
जहर उतारा तव लोगों मे, अंबड़ निंदा पाई।।७।।
मरकर व्यन्तर हुआ वो अंवड़, रजोहरण हर लीना।
भणशाली व्यन्तर वचनो से, गोत्र उतारा कीना।।८।।
सज्ज होय गुरु ओघा लेकर, गोत्र बचाया सारा।
'ऋद्धिसार' महिमा सद्‌गुरु की, दीपक का उजियारा।।६।।

।।श्लोक।।

अतिसुदीप्तमयैखलु दीपकैः, विमलकंचनभाजनसंस्थितैः।।
सकलमंगलवांच्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुपाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय, मणिगण्डितभाल-स्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अकवर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय दीपं निर्विपामिते स्वाहा।।५।।

६--अथ अक्षत पूजा

।।दोहा।।

अक्षत पूजा गुरु तणी, करो महाशय रंग।
क्षति न होवे अंग में, पाओ सुख अभंग।।

(राग—आसावरी)

रतन अमोलक पायो; सुगुरु सम रतन०।
गुरु संकट सव ही मिटायो।।टेर।।

विक्रमपुर नगरी लोकन को, हैजा रोग सतायो।
बहुत उपाय किया शांति का, जरा फरक नही आयो।।१।।
योगी जगम ब्रह्म सन्यासी, देवी देव मनायो।
फरक नहीं किनही ने कीना, हाहाकार मचायो।।२।।
रतन चितामणि सरिखो साहिब, विक्रमपुर मे आयो।
जैन संघ का कष्ट दूर कर, जय जयकार करायो।।३।।
महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण, सब ही शीश नमायो।
जीवितदान करो महाराजा, गुरु तब यो फरमायो।।४।।
जो तुम समकित व्रत को धारो, अबही करदू उपायो।
तहत्त वचन कर रोग मिटायो, आनन्द हर्ष बधायो।।५।।
जो कोई श्रावक व्रत को न धार्यो, पुत्री पुत्र चढायो।
साधु पाच सौ दीक्षित कीना, साधविया समुदायो।।६।।
मंत्र कला गुरु अतिशय धारी, ऐसो धर्म दिपायो।
'ऋद्धिसार' पर कृपा कीनी, साचो पथ बतलायो।।७।।

।।श्लोक।।

सरलतदुलकैरति निर्मलै., प्रवरमौक्तिकपुजवदुज्वलै ।।
संकलमगलवाछितदायक। कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।
ॐ ह्री श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्री जिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय अक्षतं निर्विपामिते स्वाहा।।६।।

७--अथ नैवेद्य पूजा

।।दोहा।।

नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव।
गुरुगुण अगणित किम गिने, गुरु भवतारणनाव।१।

(राग--कल्याण चाल--तेरी पूजा बणी है रस मे)

हो गुरु किया असुर को वश मे।।टेर।।

बड़नगरी में आप पधारे, सामेला धसमस में।
ब्राह्मण लोग करी पंचायत, मिलकर आया सुसमें।।१।।
महिमा देख सके नहीं गुरु की भर गए वो तो गुस में।
मृतक गऊ जिन मन्दिर आगे, रख दी सन्मुख चस में।।२।।
श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरु से कसमे।
चिंता दूर करी है संघ की, गऊ उठ चाली डस मे।।३।।
मरी गऊ को जीती कीनी, लोक रहे सब हंस में।
जाके गाय पड़ी रुद्रालय, संघ भया सव खुश में।।४।।
ब्राह्मण पांव पड़े अब गुरु के, देख तमाशा इसमें।
हुक्म उठावेगे सिर ऊपर, तुम संतति की दिश में।।५।।
नमस्कार है चमत्कार को, कीनी पूजा रस मे।
कहे 'राम ऋद्धिसार' गुरु की, आनन्द मंगल यश मे।।६।।

।।श्लोक।।

बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः, प्रचुरसर्प्पिषिपक्वसुखज्जकैः।।
सकलमंगलवाछितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।
ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणि-मण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय, अकवर असुरत्राणप्रतिवोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय नैवेद्यं निर्विपामिते स्वाहा।।७।।

८--अथ फल पूजा

।।दोहा।।

फल पूजा से फल मिले, प्रगटे नवे निधान।
चहुं दिश कीरत विस्तरे, पूजन करो सुजान।१।

राग--ठुमरी

(चाल--रथ चढ यदुनन्दन आवत है)

चलो संघ सब पूजन को, गुरु समर्या सन्मुख आवत है।।टेर।।
आनन्दपुर पट्टन को राजा, गुरु महिमा सुन पावत हैं।

भेजा निज प्रधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत है।।१।।
लाभ जान गुरु नगर पधारे, भूपत आय बधावत है।
राजकुमार को कुष्ट मिटायो, अचरज तुरत दिखावत है।।२।।
दस हजार कुटुम्ब सग नृप को, श्रावक धर्म धरावत है।
प्रतापगढ को पमार राजा, पुर मे गुरु पधरावत है।।३।।
दया मूल आज्ञा जिनवर की, बारह व्रत उचरावत है।
चौहान भाटी पमार ईंदा, पुन राठोड सुहावत है।।४।।
सिसोदिया सोलकी नरवर, महाजन पदवी पावत है।
ऐसे सात राज समकितधर; खरतर सघ बनावत है।।५।।
कुष्ट जलन्धर क्षयन भगन्दर, कई एक लोक जीवत है।
ब्राह्मण क्षत्री अरु माहेश्वर, ओस वश पसरावत है।।६।।
तीस हजार एक लख श्रावक, खरतर सघ रचावत है।
कहत 'राम ऋद्धिसार' गुरु की, फल पूजा फल पावत है।।७।।

।।श्लोक।।

पनसमोचसदाफलकर्कटै:, सुसुखदै किलश्रीफलचिर्भटैः।।
सकलमगलवाछितदायक, कुशलसूरिगुरोंश्चरणौ यजे।।१।।
ॐ ह्री श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभाल स्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय फल निर्विपामिते स्वाहा।।८।।

६-अथ वस्त्र इत्र पूजा

।।दोहा।।

वस्त्र इत्र गुरु पूजना, चोवा चदन चपेल।
दुश्मन सब सज्जन हुए, करे सुरगा खेल।।१।।

(चाल--मनडो किमही न बाजे)

लक्ष्मी लीला पावे रे सुन्दर ल०।
जे गुरुवस्त्र चढावे रे सुन्दर ल०।।

सुयश अतर गहाकावे रे सुन्दर, ल०।
दुश्मन शीश नमावेरे सुन्दर, ल०।।टेर।।
दरिया वीच जहाज श्रावक की, डूबन खतरे आवे।
साचे मन सुमरे सद्गुरुको, दुःख की टेर सुनावे रे सुन्दर।।१।।
वाचंता व्याख्यान सूरीश्वर, पंखी रूपे थावे।
जाय समुद्र मे जहाज तिरायो, फिर पीछा जव आवे रे सुन्दर।।२।।
पूछे संघ अचरज मे भरिया, गुरु सव बात सुनावे।
ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट देखावे रे सुन्दर।।३।।
बोथरा गूजरमल श्रावक को, दादा कुशल तिरावे।
सुखसूरि गुरु समयसुन्दर का, जहाज अलोप दिखावे रे सुन्दर।।४।।
वारहसौ इग्यारे दत्त सूरि, अजमेर अणसण ठावे।
उपज्या सोधर्मा देवलोके, सीमंधर फरमावे रे सुन्दर।।५।।
इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगर मे जावे।
ऐसे दादा दत्त सूरीश्वर, तारण तरण कहावे रे सुन्दर।।६।।
मणिधारी दिल्ली में पूज्यां, संकट सपने न आवे।
रथी उठी नही देख नरेश्वर, वांही चरण पधरावे रे सुन्दर।।७।।
कुशलसूरि देराउर नगरे, भुवनपति सुर थावे।
फागुन वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरश दिखावे रे सुन्दर।।८।।
जल चंदन फल फूल मनोहर, आठो द्रव्य चढावे।
वस्त्र इतर पूजा सद्गुरु की, 'ऋद्धिसार' मन भावें रे सुन्दर।।६।।

।।श्लोक।।

अखिलहीरशुचिः नवचीरकै प्रवर प्रावरणै. खलु गथत·।
सकलगगलवाछितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।
ॐ ह्रीं श्रीं परगपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितनालरनल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय। अकबर उ सु र त्रा ा ण ा प ति वो ध का य श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय वस्त्र चोवा चन्दन पुष्प फल निर्विपामिते स्वाहा।।८।।

१०--अथ ध्वज पूजा

।।दोहा।।

ध्वज पूजा गुरुराज की, लहके पवन प्रचार।
तीन लोक के शिखर पर, सो पहुचे नर नार।।१।।

श्री राग

(चाल--जिनगुणगान श्रुति अमृत)

ध्वज पूजन कर हरख भरी रे, ध्वज०।।टेर।।
सज सोलह सिणगार सहेल्या, श्री सद्‌गुरु के द्वार खडी रे।
अपछर रूप सुतन सुकुलीनी, ठम-ठम पग झणकार करी रे।।१।।
गावत मगल देत प्रदक्षिणा, धन-धन आनन्द आज घडी रे।
निर्धन को लक्ष्मी बखसावत, पुत्र विना जाके पुत्र करी रे।।२।।
जो जो परतिख परचा देखा, सुणो भविक चित चाव धरीरे।
फतहमल्ल भडगतिया श्रावक, पहली शका जोर करीरे।।३।।
देखूं परतिख तब मै जानूं, प्रगट्या तत्क्षण तरण तरीरे।
पुष्पमाल सिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाक धरीरे।।४।।
'माग माग वर' बोले बानी, फरक बताओ गुरु मेघ झरीरे।
फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्य हरीरे।।५।।
ज्ञानचद गोलेच्छा को गुरु, प्रत्यक्ष दीना दरस फरीरे।
बीकानेर मे थभ तुम्हारा, चित्र करावत गुरसुन्दरीरे।।६।।
थानमल्ल लूनिया पर किरपा, लक्ष्मी लीला सहज वरीरे।
लक्ष्मीपति दूगड की साहिब हुण्डी की भुगतान करीरे।।७।।
जो उपकार करा तुम मेरा, दीनी सन्मुख अमृत जडीरे।
तेरी कृपा से सिद्धि पाई, जागे यश अरु भाग भरीरे।।८।।
भूखा भोजन तिसिया पानी, भरत हाजरी देव परीरे।
विषम समय पर सहाय हमारे, 'ऋद्धिसार' की गरज सरीरे।।६।।

।।श्लोक।।

मृदुमधुर ध्वनि किकिणी-नादकै, ध्वज-विचित्रितविस्तृतवासकै ।

सकलमंगलवांछितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे।।१।।
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राण प्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा।।१०।।

११--अथ अर्घ पूजा

।।दोहा।।

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द।
कंठ विराजे सरस्वती, जग में श्रीजिनचन्द।।१।।

(राग--आसावरी तथा धन्याश्री)

पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पूजन०।
तेरे चरण कमल वलिहारी सुगुरु०।।टेर।।
साह सलेम दिल्ली को बादशाह, सुनी है शोभा तिहारी।
भट्ट हरायो चर्चा करके, भट्टारक पदधारी।।१।।
अम्मावस की पूनम कीनी, चान्द उगायो भारी।
चढ़के गगन करी है चर्चा, सूरज से तपधारी।।२।।
उगणीसौ चौदह संवत में, लखनऊ नगर मझारी।
गोरा फिरंगी टोपी वाला, दिल में ये वात विचारी।।३।।
जैन श्वेताम्बर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी।
वाणी निकली सौ वर्षो तक, होवेगा अधिकारी।।४।।
अंधे की खोली आंख सूरत में, पूजे सव नर नारी।
कहां लग गुण वरणूं मै तेरा, तू सुरतरु जयकारी।।५।।
उगणीसौ संवत्सर त्रेपन, मंगसिर मास गंझारी।
शुक्ल दूज जिनचंद सूरीश्वर, खरतर गच्छ आचारी।।६।।
कुशलसूरि के निज संतानी, क्षेमकीर्ति मनुहारी।
प्रतिवोध्या जिन क्षत्री पांच सौ, जान सहित अणगारी।।७।।
क्षेमधाड़ शाखा जव प्रगटी, जग मे आनन्दकारी।

धर्मशील साधु गुण पूरे, कुशलनिधान उदारी।।८।।
ये पूजन करतां सुख आनद, अन्न धन लक्ष्मी सारी।
कहत 'राम ऋद्धिसार' गुरु की जय जय शब्द उचारी।।६।।

(यह पूजा पढकर चारो दिशा मे अर्घ दीजिए)

अथ आरती

जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल मेवा। आनन्द सुख लेवा, जय जय गुरुदेवा।।टेर।।
एक व्रत, दोय व्रत, तीन चार व्रत, पचम व्रत सोहे।
भविक जीव निस्तारण, सुरनर मन मोहे।।१।।
दु:ख दोहग सब हरकर सद्गुरु, राजन प्रतिवोधे।
सुत लक्ष्मी वर देकर, श्रावक कुल सोधे।।२।।
विद्या पुस्तक धर कर सद्गुरु, मगल पूत तारे।
वस कर जोगण चौसठ, पाच पीर सारे।।३।।
बीज पडती वारी सद्गुरु, समन्द जहाज तारी।
वीर किये बस बावन, प्रगटे अवतारी।।४।।
जिनदत्त जिनचंद कुशल सुरीश्वर, खरतर गच्छ राजा।
चौरासी गच्छ पूजे, मन वछित ताजा।।५।।
मन शुद्ध आरती कष्ट निवारन, सद्गुरु की कीजे।
जो मागे सो पावे, जग मे यश लीजे।।६।।
विक्रमपुर मे भक्त तुम्हारो, मत्र कलाधारी।
नित उठ ध्यान लगावत, मनवछित फल पावत, 'रामऋद्धिसारी'।।७।।

मगल दीपक

मगल दीपक गुरु का कीजे, मन वछित फल कारज सीझे।।म० टेर।।
मगल दीप मगल अड भासे, घर घर मगल भाव प्रकाशे।।म०२।।
करे करावे मगलमाला, अन धन लक्ष्मी लहे सुविशाला।।म० ३।।
अलिय विघ्न हर मगल दीवो, ऋद्धिसार भविजन चिरजीवो।।म० ४।।

सद्गुरु अष्ट प्रकारी पूजा

(र. सं. १८५३, राजनगर, अहमदाबाद)

१. अथ जल पूजा

स्मृत्वा गुरुपदाम्भोजं, नत्वा स्तुत्वा विशेषतः।
विधीयते गुरोरर्चा, द्रव्यभावप्रकाशत ।।१।।

।।दूहा।।

रवीरोदधि जल अमृत निधि, गंगा गोमती वार।
कंचन कामित कलस भरि, चरण न्वहण करै सार।।२।।

(ढाल)

सेवक सारण वारण धारण श्री गुरुराज।
चरण करण सुख न्वहण चरण लहै भविक समाज।
राजत किन्नर रूपै कुमरि रमणि सिरताज।
श्रेणी समान अमान गुणी घणु मगल काज।।३।।

(चाल)

अमल जल कलस भरि कुमर आवै,
मधुर सुर रमणि गुण गीत गावै।
असुभ मल विमल कल विकल काजै,
सुगुरु-क्रम-कमल-स्नाने विराजे।।४।।

(काव्यम्)

विदधेस्तपन तपनोत्करिमा, भरिभासित-सत्क्रमणस्य गुरो.।
वरवारिभिरादरितत्वरितं, तरुपुष्पकलाप-सुवास-रसैः।।५।।
ओम् ह्री श्रीं श्रीसद्गुरोर्जलं निर्वपामिते स्वाहा।
इति जल पूजा

२. अथ चंदन पूजा

(दूहा)

कुंकुम चंदन चरचियै, कस्तूरी घनसार।
सरस सुरभि द्रव्य मेलियै, कीजै विधि विस्तार।।६।।

सद्गुरु चरचित चरण कमल विधि वारवार,
केसर घोली भरीय कचोली पूजौ सार।
पूरण अनुभव प्रगटे आतम कुमति नसाय,
उपगारी श्री सद्गुरु चरण नमुं चित लाय।।७।।

(चाल)

मोटका पाप सताप कापै, परम आणद कल्याण आपै।
सूरि जिनकुशल जिणचद पाटै, पूजियै पूज गहगाट थाटैं।।८।।

(काव्य)

सुरभिमिश्रित-कुकुम-चन्दनै,
सुगुरु-पाद-महाम्वुज-सेवते।
भविक पुण्यफल लभते सदा,
प्रवलभक्तिवशादचिर मुदा।।६।।
ओम् ह्री श्री श्रीसद्गुरोश्चन्दन निर्वपामिते स्वाहा।।

इति चन्दन पूजा

३. अथ पुष्प पूजा

(दोहा)

चपक जाई मोगरा, केतकि फूल गुलाब।
सद्गुरु चरणै ल्याइयै, भर भर सुदर छाव।।१०।।

(ढाल)

पूरण परमल आद्रत जाग्रत भ्रमर भुयंग।
निपट लपट नित लक्ष सहसदल कमल सुचग।।
माळ कलावल विकसत ते किम छाये एह।
भविजन आवै भावै, पावे सुख अछेह।।११।।

(चाल)

चरण पर निज कर सहस फूले, भविजना भक्ति सु धर अगूले।
सकल मन वछित काज सारे, जेह गुरुचरण नयणे निहाले।।१२।।

(काव्यम्)

संपूरिता दश दिशो धवलाभिरूपैः,
संमोहितालिगुणगीत-युतैश्च पुष्पैः।
तेभ्यः समर्चित-पदं परमं लभन्ते,
श्रीजैनचन्द्रगुरुपाद-विलास-लीलाम्।।१३।।
ओम् ह्रीं श्रीं श्रीसद्गुरोः पुष्पं निर्वपामिते स्वाहाः।

इति पुष्प पूजा।।

४. अथ धूप पूजा

(दूहा)

अगर तगर अंवर सुरभि, चंदन नदन मोद।
श्रीजिनकुशल सूरिंद गुरु, वासित परम प्रमोद।।१३।।

(ढाल)

जे गुरु चरण सुवासै, वासित तेहना अंग।
गंध सुगंध सुचंग लहै, नित नित देह अभंग।।१४।अ।।
पूरव करम प्रवल दल, अशुभ उदय जे थाय।
ते पिण दुरे टरे जिन कुशल सुरिंद पसाय।।१४।व।।

(चाल)

पूजतां धूप गंधे सुगधे, नव नवा स्वामि ने उच्छरंगे।
दुर्मता दुर्गता दूर नासे, सुमति सद्भाव हीयडे प्रकासे।।१५।।

(काव्यम्)

गुरुराजपदे वरवासमयं, भविक किल पूजयते प्रथितम्।
निजदेहरुज-व्रजयन्त खलु, वहुबुद्धिसगृद्धिनिधिप्रथितग्।।१६।।
ओम् ह्री श्री श्रीसद्गुरोः धूप निर्वपामिते स्वाहा।।

।।इति धूप पूजा।।

५. अव दीप पूजा

(दूहा)

रजत जडित कचन मई, थाल ग्रहि कर माहि।
मंगल दीप भलो धरो, अशुभ टरे छिन माहि।।१७।।

(ढाल)

अजलि मध्ये त्रिकरण शुद्धे करिये एह।
ज्योति प्रकासै निज घट भासै भासन रेह।
मदमती गुण कूडा कुमति फाटै तेह।
एकमना थई ध्यानालम्बी रूपी जेह।।१८।।

(चाल)

चरणयुग निरखतां जेह प्राणी, विध रचे पूज मन भाव आणी।
प्रगट गुण पूर्ण गुण आत्म हेते, स्वजन साधर्म सर्वे समेते।।१६।।

(काव्यम्)

विशालरूपादिसुवर्णपात्रै., निधाय दीप च वरास-खड्ये।
श्रावका दीपमयी सुपूजा, भृश विधाय सुतरा क्रमेण।।२०।।
ओम् ह्री श्री श्रीसद्गुरो दीप निर्वपामिते स्वाहा।

इति दीप पूजा

६. अथ अक्षत पूजा

(दूहा)

अक्षत थाल रसाल भरि, स्वस्तिक पूज करेह।
स्वस्तिक भली विध नीपजै, दोहग दूर टरेह।।२१।।

(ढाल)

अमल अखडित अक्षत रक्षित भाव भरेय,
सद्गुरु आगल अक्षत थाल भरि करेय।
नद्यावर्तक पाप पडल दूर करत नितमेव,
सेवक लोक आनन्द विधायक दावक सेव।।२२।।

(चाल)

समर कर चरण मनसुध सुभावै,
स्वस्तिक पूर मगल वधावै।
तेह निज गेह सुख श्रेणि ल्यावै,
पुत्र पोत्रादि सपत्ति पावै।।२३।।

(काव्यम्)

अमूल्य-मुक्ताफलकैरखण्डनैः,
सिते धनैरक्षतकैः विधायति।
श्रीसद्गुरूणां पुरतः सुभक्तितः,
प्रशत्तयं स्वस्तिक-काम-मंगलम्।।२४।।
ओम् ह्रीं श्रीं श्रीसद्गुरोरक्षतं निर्वपामिते स्वाहा।।

इति अक्षत पूजा

७. अथ नैवेद्य पूजा

(दोहा)

मोदक केसरिया प्रमुख, पांचे ही पकवान।
सारा मधुर सोहामणा, परम अमीय समान।।२५।।

(ढाल)

व्यंजन रंजन भंजन वदन सरोज विसाळ,
नैवेद्य सद्य समुद्यत रचिय रसाल सुवास।
परमानंद प्रकासक दायक वछित काज,
लीला लहिर गहिर गुरु सागर सार समाज।।२६।।

(चाल)

ढोकता ढोक नैवेद्य सार,
सकल दुख ग्रह तणो करै पार।
सेवकां सांनिध करणहार,
जपे जे गुरु चरण वार वार।।२७।।

(काव्यम्)

मधुर-शोधक-मोदक-भोजनं, विदधते तनु ढोकयते गुरो।
सकल सौख्यभरं क्षुधितो जनः, सुलभमेव लगेते पुरः पुरः।।२८।।
ओम् ह्री श्री श्रीसद्गुरोः नैवेद्यं निर्वपामिते स्वाहा।
इति नैवेद्य पूजा।

८. अथ फल पूजा

(दूहा)

तरुवर फल वलि विमल नव, आवा करुंगा गार।
नारंगी नीबू प्रमुख, ढोवो ए निरधार।।२६।।

(ढाल)

विरचै श्रावक भाव फल थी पूजे जेह।
लाभ क्रियाणों पग पग परतिख पामै तेह।।
मगल रग सुचंग सदा निज गेह अमद।
ध्यावै पावै भविजन भावे परमानद।।३०।।

(ढाल)

अर्चता फलभरी पूर्ण भावै,
सुकृत फल सोभ सोभै सुभावै।
सकल मन वछिता पूर्ण भावै,
सुगुरु जिन कुशल सूरिंद नामै।।३१।।

(काव्यम्)

सरस-सार-रसा-विरला कुलै,
विमल-कोमल-भाव-समुद्भवै।
कलकलाकलितै फलमण्डलै,
भविजना प्रकरोतु गुरोऽर्चनम्।।३२।।
ॐ ह्री श्री श्रीसद्गुरो फल निर्वपामिते स्वाहा।

।।इति फल पूजा।।८।।

इत्थ सेवित-लोकसायकवसूर्वी-पूरिते वन्धुरे।
मासे फाल्गुनिके सिते शुभदिने षष्ठ्या कविर्वासरे।
स्तभे स्थापितमेव राजनगरे श्रीपादयुग्म गुरो
श्रीमच्छ्रीजिनचद्रसूरिभिरिद सत्सस्तवे सस्तुतम्।।३।।
इति श्री सद्गुरोरष्टप्रकारी पूजा।

परिशिष्ट-1

भजनों के आदि पदों का अकारानुक्रम

क्रमांक	आदि पद	स्तवन का नाम	कर्ता	पृष्ठांक
1.	अकबर भूपति	यु. चन्द्र. स्तवन	समयप्रमोदगणि	441
2.	अखियां प्यासी	कुशल स्तवन	तिलकश्री	284
3.	अतिपुण्य नाम	दत्त स्तवन	जिनहरिसागरसूरि	65
4.	अब तो कुशल	कुशल स्तवन	विजय	358
5.	अब तो दर्शन	कुशल स्तवन	प्र. सज्जनश्री	366
6.	अब मइं पायउ	यु. चन्द्र. स्तवन	लब्धि	434
7.	अब हम जाते हैं	गुरुदेव स्तवन	कंचन	492
8.	अभयसूरि सिरि	मणि. छन्द		115
9.	अमृत की वर्षा	गुरुदेव स्तवन	चन्द्रप्रभसागर	494
10.	अम्ह घर रंग	दत्त स्तवन	खुशालचन्द	48
11.	अरज करूं कर	दत्त स्तवन	जिनहर्षसूरि	69
12.	अरज सुणउ	दत्त स्तवन	जिनरंगसूरि	64
13.	अरज सुणीजे	कुशल स्तवन	सुमतिरंग	379
14.	अरज सुणो	गुरुदेव स्तवन	हर्षविशाल	525
15.	अरदास हमारी	गुरुदेव स्तवन	मनोहर	510
16.	अरे लाला श्री	कुशल स्तवन	राजसागर	321
17.	अर्ज सुनो गुरुदेव	कुशल स्तवन	प्र. विचक्षणश्री	355
18.	अलवेसर आज	कुशल स्तवन	राज	319
19.	अवलियउ अकबर	यु. चन्द्र. स्तवन	उ. समयसुन्दर	408
20.	आए गुरुदेव आए	गुरुदेव स्तवन	सोभागचंद नाहटा	523
21.	आओ आओ	कुशल स्तवन	प्र. सज्जनश्री	366
22.	आओ मनायें	दत्त स्तवन	जिनकवींद्रसागरसूरि	52
23.	आ करते हैं वंदना	चतुर्दादा स्तवन		489
24.	आखलडी रे	यु. चन्द्र. स्तवन	तिलकश्री	425
25.	आज आणंदा हो	कुशल स्तवन	उ. समयसुन्दर	374
26.	आज आनंद भयो	कुशल स्तवन	अमरसिंधुर	219
27.	आज आनंद	कुशल बधाई	हर्ष	386
28.	आज आनन्द	गुरुदेव बधाई	हरख	529
29.	आज उछरंग	यु. चन्द्र. स्तवन	लब्धिकल्लोल	435
30.	आज करो रे	कुशल स्तवन	सत्यरत्न	369
31.	आज की घड़ियां	गुरुदेव स्तवन	हरख	524